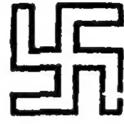
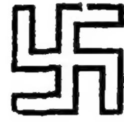
મળવાનું ઠેકાણું :
શ્રી. અ. ભા. શ્વે. સ્થાનકવાસી
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ,
ઠે. ગરેડિયાકૂવા રોડ, ગ્રીન લૉજ
પાસે રાજકોટ (સૌરાષ્ટ્ર)

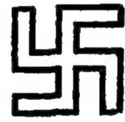
Published by:
Shri Akhil Bharat S. S.
Jain Shastroddhara Samiti,
Garedia Kuva Road, RAJKOT
(Saurashtra) W Ry, India.



ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां,
जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैष यत्नः।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा,
कालोह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥ १ ॥



हरिगीतच्छन्द



करते अवज्ञा जो हमारीं यत्न ना उनके लिये ।
जो जानते हैं तत्त्व कुछ फिर यत्न ना उनके लिये ॥
जनमेगा मुझसा व्यक्ति कोई तत्त्व इससे पायगा ।
है काल निरवधि विपुल पृथ्वी ध्यान में यह लायगा ॥ १ ॥

મૂલ્ય રૂ. ૨૦-૦૦

પ્રથમ આવૃત્તિ : પ્રત ૧૨૦૦
વીર સંવત્ : ૨૪૯૨
વિક્રમ સંવત ૨૦૨૨
ઈસિવીસન ૧૯૬૬

: મુદ્રક :
જાદવજી મોહનલાલ શાહ
નીલકમલ પ્રીન્ટરી, ઘીકાંટારોડ
અમદાવાદ.



श्रीमान् सेठ सा. चीमनलालजी सा. ऋषभचंदजी सा. अजीतवाले (सपरिवार)

श्रीमान् सेठ साहब चिमनलालजी-रिखबचन्द्जी 'जीरावलाका' परिचय

भारतीय संस्कृति के निर्माण में ओसवाल जाति का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। इस जाति की बुद्धिमत्ता. दूरदर्शिता, शूरवीरता और आत्मबलिदान के कारण भारत के उज्ज्वल इतिहास का निर्माण हुआ है। भारतीय स्वतंत्रता के संग्राम में भी इस जाती ने असाधारण योग प्रदान किया है। उदयपुर, जोधपुर बीकानेर सिरोही, किसनगढ आदि रियासतों के इतिहास इस जाति द्वारा प्रदर्शित दूरदर्शिता, राजनीतिज्ञता और वीरता से भरी हुई गाथाओं से ओतप्रोत है। इस जाति के वीरोने अपने देश समाज और धर्म के प्रति जिस भक्ति का परिचय दिया है वह इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षर से अंकित है! अपने देश और स्वामी के प्रति वफादार रहनेवाले और उनके लिए सर्वस्व अर्पण करनेवाले व्यक्तियों की नामावली में सर्व प्रथम नाम भामाशाह का आता है। इस जैनमंत्री की विपुल सम्पत्ति की सहायताने महाराणा प्रताप को नया जीवन प्रदान किया था, और मेवाड के गौरव की रक्षा की थी।

इसी गौरव पूर्ण जाति में श्रीमान् चिमनलालजी एवं रिखबचन्दजी का जन्म हुआ। आप प्रसिद्ध दोसी परिवार के हैं। दोसी यह ओसवाल जाति का एक गोत्र है। कहा जाता है कि वि. संवत् ११९७ में विक्रमपुर में सोनागरा राजपूत हरिसेन रहता था। आचार्य श्री जिनदत्तसूरिने इसे जैन-धर्म का प्रतिबोध देकर ओसवाल जाति में मिलाया और दोसी गोत्र की स्थापना की। इस गोत्र के नाम को समुज्ज्वल करने वाले अनेक नररत्न हो गये हैं। दोसी परिवार में श्रीमान् भिक्खूजी बडे प्रसिद्ध हुए। आपने महाराणा राजसिंहजी (प्रथम) का प्रधानपद सम्भाला था। आपकी निगरानी में उदयपुर का मशहूर राजसमुद्र नामक तालाब का काम जारी हुआ एवं पूर्ण हुआ। इस तालाब के बनवाने में १०५०७६०८) रुपये खर्च हुए। इस तालाब का पूर्ण होने पर महाराणाराजसिंहजी ने राजसमुद्र के उद्घाटन उत्सव के अवसर पर दोशी भिक्खुजी को एक हाथी और सिरोपाव प्रदान कर उनका सम्मान बढाया था। दोसी पन्नोजी ने धर्मस्थानों का उद्धार किया ऐसा। बादशाह के फरमान

में उल्लेख है। कहने का सारांश यह है कि दोसी परिवार पहले से ही धार्मिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय कार्यों में उदारतापूर्वक तन, मन, धन से सेवा करता आ रहा है। श्रीमान सेठ चिमनलालजी एवं रिखवचन्दजी सा. को इसी गौरवशाली गोत्र में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इन सीधे सादे दोनों भाईयों को देखकर यह कभी अनुमान नहीं लगाया जा सकेगा कि ये—एक वडे श्रीमन्त होंगे। तथा श्रीमन्ताई के साथ वडे दानवीर भी होंगे। मारवाड के इस दानी परिवार की प्रसिद्धि अन्य श्रीमन्तों की तरह चाहे न हो पाइ हो पर सेठ साहब चिमनलालजी एवं रिखवचन्दजी जैन समाज के 'गुदडी में छिपेलाल' है। अपनी सम्पत्ति का उपयोग परोपकारी कार्यों के करने में परम उदार है।

श्रीमान् चिमनलालजी सा० के पूर्वजों का राजघराने के साथ अच्छा सम्बन्ध रहा है। आप के दादा श्रीमान गुलाबचन्दजी जोधपुर के समीप सिवाना तहसील के कोटडी नामक गांव में रहते थे। आप ठिकाने के कोठार के काम को सम्भालते थे, राजकीय जीम्मेदारी के पद पर रहते हुए भी धार्मिक व सामाजिक जनसेवा के कार्यों में भी पूर्ण सहयोग प्रदान करते रहते थे। आपकी राजघराने में एवं समाज में अच्छी प्रतिष्ठा थी। आप 'जीरावला' के उपनाम से प्रसिद्ध थे। आप बडे मधुरभाषी एवं मिलनसार प्रकृति के उदारचेता सज्जन थे। आपको एक पुत्र हुआ जिसका नाम प्रेमचन्द रखा। प्रेमचन्दजी की उम्र अभी कोई ज्यादा नहीं हुई थी कि पिताजी की मृत्यु हो गई। पिताजी के अचानक स्वर्गवास से इनपर सारे परिवार के निर्वाह की जिम्मेदारी आ पडी। ये वडे बहादूर थे। पिता के परंपरानुसार चलने वाले कुशल व्यापारी थे। इन्होंने अल्प समय में ही पिता की जैसी प्रतिष्ठा प्राप्त करली और कोठार का काम भी सम्भाल लिया वि. सं. १९६४ में इनका शुभलग्न जूनाडा निवासी श्रीमान् सायबलालजी की सुपुत्री खेतुबाई के साथ सम्पन्न हुआ। खेतुबाई एक आदर्श महिला एवं सती साध्वी स्त्री है। खेतुबाई जैसी आदर्श पत्नी को पाकर श्रीमान् प्रेमचन्दजी बडे सुखी थे। इनके दो पुत्र हुए श्री चिमनलालजी और रिखबचन्दजी। किन्तु इस सुख को विधाता नहीं देख सका जब चिमनलालजी पांच वर्ष के थे एवं श्री रिखबचन्दजी १॥ डेढ वर्ष के थे तब अचानक ही प्रेमचन्दजी साहब का स्वर्गवास हो गया। इनके स्वर्गवास से

सारा परिवार शोक निमग्न हो गया। बालक और परिवार के सदस्य विलाव विलाव कर रोने लगे। श्रीमती खेतुबाई पर पति वियोग का वज्रपात हुआ। ऐसे भयंकर संकट के समय खेतुबाईने असाधारण धैर्य का परिचय दिया। रोने देने में अपना बहुमूल्य समय नष्ट न कर दोनों बालकों के भविष्य को उज्ज्वल बनाने का विचार करने लगी। इधर पति के मृत्यु से आर्थिक स्थिति अत्यन्त शोचनीय हो गई। कोठार के काम से जो थोडी बहुत आमदनी होती थी वह भी अब समाप्त हो गई। कर्म कीग ति बडी गहन है। एक आपत्ति का अन्त नहीं हुआ था कि यह दूसरी आपत्ति का आरंभ हो गया। ऐसी विकट स्थिति में भी खेतुबाईने हिम्मत न छोडी किन्तु बडे लाड प्यार से बच्चों का लालनपालन करने लगी। अपने चन्द्र जैसे आनंदप्रद बच्चों को देख कर अपना सारा दुःख भूल जाती थी। यह अपने का अपने बच्चों के सुनहरे स्वप्न में खोजाती थी।

ये दोनों बालक बडे होते जा रहे थे। माता की ये ही आशा थे। बच्चों का पढना लिखना भी परिस्थिति के अनुकूलतानुरूप होता था। जब श्रीमान् चिमनलालजी दस वर्ष के हुए तब इन्हें अपने पारिवारिक जीवन का भान हो आया। इन्होंने माता के इस बोझ को हलका करने का विचार किया। कोठडी एक छोटा गांव है इसलिये इसमें व्यापार की कोई गुंजाइश नही थी। अतः बालक चिमनलालने बाहर जा कर अर्थ उपार्जन का निश्चय किया। माता की आज्ञा प्राप्त कर दस वर्ष के चिमनलाल जी अपने सम्बन्धियों के साथ व्यापार करने के लिए चल पडे। ये कर्णाटक के 'हिराकेरी' गांव में पहुंचे। इतनी छोटी उम्र में माता का वात्सल्य को छोडकर अकेलेही अनजाने प्रदेश में पहुंच जाना कम हिम्मत का काम नहीं है। ये वहां की कन्नडी भाषा से अनभिज्ञ थे। बात बात पर मुश्किले आती थीं किन्तु इन्होंने हिम्मत नहीं छोडी अल्प समय में ही इन्होंने स्थानीय कन्नडी भाषा सीख ली। नोकरी से व्यापार में लगे खूब श्रम किया किन्तु भाग्यदेवताने इनका साथ नहीं दिया अन्ततः निराश होकर अपने गांव कोठडी चले आये। यहां भी आपने कम परिश्रम नहीं किया। कई तरह के व्यापार करने पर भी आप पल्ले असफलता ही पडी। अशुभ कर्म का अभी उदय था। अन्त में हार थक कर पुनः कर्नाटक के हलगेरी नामक गांव में जाकर कपडे की दुकान करली। इस दुकान से आपको लाभ नहीं मिला। कमाने के स्थान में आपको लाभ में

आपकी दैनिक जीवनचर्या में सामायिक प्रतिक्रमण व्रत, पच्चक्खाण मुनिदर्शन आदि आवश्यक अंग हैं। इन कामों में आप कभी प्रमाद नहीं करते। प्रतिवर्ष बाहर जाकर मुनिदर्शन का भी समय समय पर लाभ लेते रहते हैं। आप की उदारता सर्वतोमुखी है। आप अपनी जन्मभूमि कोठडी में निजी खर्च से अस्पताल बनाकर सरकार को अर्पण करने की भी उत्कट इच्छा रखते हैं। आपका इस समय निवास मारवाड में अजित गांव जि. जोधपुर में है। आपने वि.सं. २०१३ की साल में कोठडी छोड दिया था। आपकी धार्मिक भावना इसी प्रकार उत्तरोत्तर बढती रहे यही शुभ कामना है।



આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ



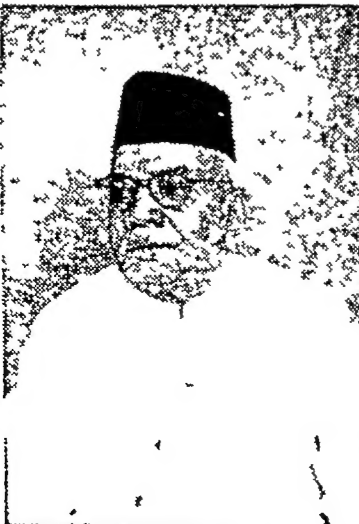
શેઠશ્રી શાંતિલાલ મંગળદાસભાઈ
અમદાવાદ.



(સ્વ) શેઠશ્રી શામજીભાઈ વેલજીભાઈ
વીરાણી-રાજકોટ.



(સ્વ.) શેઠશ્રી છગનલાલ શામળદાસ ભાવસાર-અમદાવાદ.



શેઠશ્રી રામજીભાઇ શામજીભાઈ
વીરાણી-રાજકોટ.



વચ્ચે બેઠેલા
લાલાજી કિશનચંદજી સા. જોહરી
ઉભેલા સુપુત્ર ચિ. મહેતાબચંદજી સા. જૈન
નાના-અનિલકુમાર જૈન (દીયત્તા)

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ



શ્રી વૃજલાલ દુર્લભજી પારેખ
રાજકોટ.



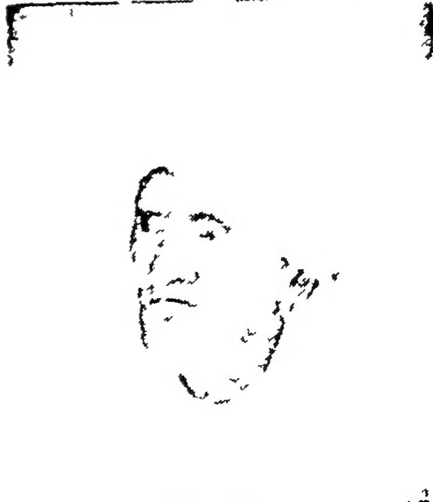
કોઠારી હરગોવિંદ જેચંદભાઇ
રાજકોટ.



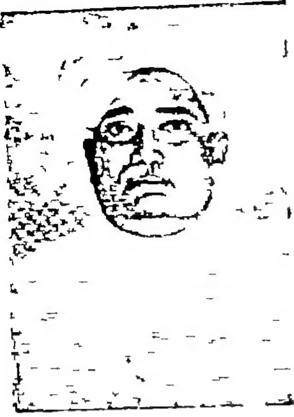


શેઠશ્રી મિશ્રીલાલજી લાલચંદજી સા. લુણિયા
તથા શેઠશ્રી જેવંતરાજજી લાલચંદ સા.





આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ



(સ્વ.) શેઠશ્રી હરખચંદ કાલીદાસ વારિઆ
ભાણવડ.



(સ્વ.) શેઠ રંગજીભાઈ મોહનલાલ શાહ
અમદાવાદ.



શ્રી વિનોદકુમાર વીરાણી
રાજકોટ.



(સ્વ.) શેઠશ્રી દિનેશભાઈ કાંતિલાલ શાહ
અમદાવાદ.

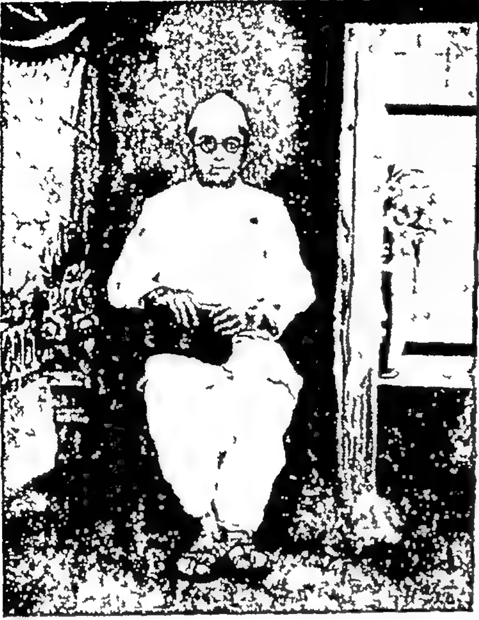


શેઠશ્રી જેસિંગભાઈ પોચાલાલભાઈ
અમદાવાદ.

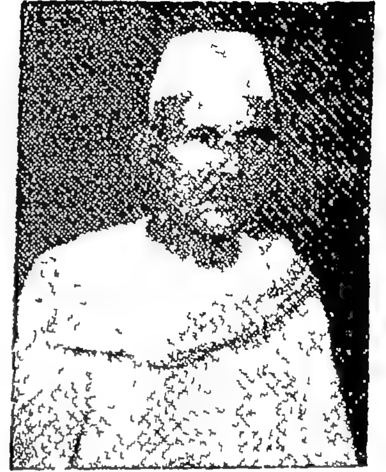


સ્વ. શેઠશ્રી આત્મારામ માણેકલ
અમદાવાદ.

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ



સ્વ. શેઠશ્રી હરિલાલ અનોપચંદ શાહ
ખંભાત.



स्व. शेठ ताराचंदजी साहेब गेलडा
मद्रास.



૧ વચ્ચે બેઠેલા મોટાભાઈ શ્રીમાન મૂલચંદજી
જવાહીરલાલજી બરડિયા
૨ બાજુમાં બેઠેલા ભાઈ મિશ્રીલાલજી બરડિયા
ઉભેલા સૌથી નાનાભાઈ પૂનમચંદ બરડિયા



श्रीमान शेठश्री
भीमराजजी सा. चोरडिया

राजप्रश्नीय सूत्र भाग दूसरे की

विषयानुक्रमणिका

॥ समाप्त ॥



शुद्धि पत्र

सुज्ञ पाठकगण,

सविनय निवेदन है कि शास्त्रों में प्रुफ और प्रिंटिंग सम्बन्धी कई गलतीयां होना संभवित है, जो सुज्ञ वाचकवृन्द नीरक्षीरन्याय से समझ कर पढलेगे, पर जो शास्त्रीय गलती रह गई है जो देखने में अगर सुज्ञ वाचकजन द्वारा दृष्टिगोचर हुई हैं, इनका शुद्धिपत्र देने में आता है।

सूत्र का नाम	पृष्ठ	पङ्क्ति	अशुद्ध	शुद्ध
समवायङ्ग सूत्र	१६४	५	रामः खलु बलदेवो द्वादशवर्ष सहस्राणि सर्वायुषं	रामः खलु बलदेवो द्वादशवर्षशतानि सर्वायुषं
,,	,,	१६	बारह हजार वर्ष	बार सौ वर्ष
,,	,,	२८	બાર હજાર વર્ષ	બારસો વર્ષ
ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र भा. २	२६१	१	पहली पंक्ति पूरी होने पर	'त्रैमासिकीं' पद छूट गया है सो 'त्रैमासिकीं' यह पद बढाके पढें
,,	,,	११		आठवीं भिक्षु प्रतिमा के अनन्तर 'प्रथम सात दिनरात प्रमाणवाली नववीं भिक्षु प्रतिमा' यह पाठ छूटा है सो 'नववीं भिक्षु पडिमा' वहां इतना झोड के पढें
ज्ञातधर्मकथाङ्गसूत्रभा.३,	३९७	१७	प्रवचनसिद्ध	प्रवचनविरुद्ध
,,	,,	२१	પ્રવચનસિદ્ધ	પ્રવચન વિરુદ્ધ
ज्ञातधर्मकथाङ्गसूत्रभा.२	१४७	१७	मद्यपान में आसक्त—	निद्राजनक द्रव्य में आसक्त
,,	,,	२९	મધપાનમાં આસકત	નિદ્રાજનક દ્રવ્ય માં આસકત
ज्ञातधर्मकथाङ्गसूत्रभा-३	३३४	३	भगवताऽऽवश्यके—	भगवताऽनुयोगद्वारे
,,	,,	१७	आवश्यक सूत्रमें—	अनुयोगद्वारसूत्रमें
,,	,,	१९	આવશ્યક સૂત્રમા—	અનુયોગદ્વાર સૂત્રમાં

अन्तकृद्दशाङ्गसूत्र	२९५	१०	दसदस	दसअट्ठ
,,		११	- -	'सत्तमवग्गे तेरसउद्देसगा' इतना पाठ छूट गया है सो वहां समझ लेवें
आचाराङ्गसूत्रभा. २	१९२	८	नेत्तपरिण्णाणा अपरिहीणा फरस परिण्णाणा अपरिहीणा	नेत्तपरिण्णाणा अपरिहीणा जीहपरिण्णाणा अपरिहीणा फरिस परिण्णाणा अपरिहीणा
आचाराङ्गसूत्रभा-२	२८१	१४	निन्यानवे	अट्ठानवे
,,		२९	નવ્વાણુ	અઠ્ઠાણુ
दशाश्रुतस्कध	४३०	२०	कालकर के ग्रैवेयक—आदि	कालकरके देवलोकमें से
,,		२९	કાલકરીને ગ્રૈવેયક આદિ—	કાલકરીને દેવલોકમાંના
ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रभा. २	७३०	२१	ગુણશિલક ચૈત્ય (જૈન દેરાસર)	ગુણશિલક ચૈત્ય (ઉદ્યાન બગીચો)
उत्तराध्ययनसूत्रभा. ३	१८०	१-२	...तृतीय देवलोके—गतः ततश्च्युतो महाविदेहे केवलिभूत्वा सिद्धिगतिं गमिष्यति	मोक्षं गतः
,,		१२,१४,१५	...वे चक्रवर्ती तृतीयदेवलोकमें गये वहांसे चवकर महाविदेहमें केवलीहोकर सिद्धि पदको प्राप्त करेंगे	वे चक्रवर्ती मोक्ष गये
,,	,,	२३-२४	..તે ચક્રવર્તી મરીને ત્રીજા દેવલોકમાં ગયા અને ત્યાંનુ આયુષ્ય પુરૂં કરી ત્યાંની ચવીને મહાવિદેહમા કેવલી થઇને સિદ્ધિ પદ પ્રાપ્ત કર્યું	તે ચક્રવર્તી મોક્ષમા ગયા
उत्तराध्ययनसूत्रभा. ४	९२	१४	संयमयोगोंका उल्लंघन होताहै—	संयम योगों का उल्लंघन नहीं होता है
,,		२४	સંયમ યોગોનુ ઉલ્લંઘન થાય છે	સંયમ યોગોનુ ઉલ્લંઘન થતું નથી

भगवतीसूत्रभा.३	८९९	३	त्रिभागोन	त्रिभागोन
,,	,,	३-४	पल्योपमं	पल्योपमद्वयं
,,	,,	१३	तृतीयभागकम एक पल्योपम की	तृतीयभाग कम दो पल्योपम की
,, ,,		२८	...એક પલ્યોપમ કરતાં ત્રિભાગ ન્યૂન છે	તૃતીય ભાગ કમ બે પલ્યોપમની છે
भगवतीसूत्रभा.३	८९९	२९	બે પલ્યોપમ કરતાં ત્રિભાગ અધિક	તૃતીય ભાગ અધિ બે પલ્યોપમ
उत्तराध्ययन	४४८	२	...तपःकृत्वा तृतीयभवे मुक्तिं गतः	तपः कृत्वा तस्मिन्नेव भवे मुक्तिं गतः।
,,	,,	१३	तृतीय भव में मुक्ति लाभ किया	उसी भव में मुक्ति लाभ किया
,,	,,	२५	ત્રીજા ભવમાં મુકિત નો લાભ કરેલ છે	તેજ ભવમા મુકિત નો લાભ કરેલ છે.
दशाश्रुतस्कन्ध	१७४	२	यतस्तै रुत्कृष्टार्द्ध पुद्गल	यतस्तैरुत्कृष्टदेशोनार्धपुद्गल
,,	१७४	१२	देशऊन पुद्गल	देशऊन अर्ध पुद्गल
,	१७४	१२	દેશઉન પુદ્ગલ	દેશઉન અર્ધ પુદ્ગલ

दशाश्रुत स्कंध के दसवें अध्ययनमें हिंदी एवं गुजराती में दशों निदानों के प्रकरण में जहां-जहां ग्रैवेयक शब्द है वहां वहां 'सौधर्म' ऐसा पाठ सुधारकर पढना चाहिए.

राजप्रश्नीयसूत्र भा. २ दूसरेका शुद्धि पत्रक

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पंक्ति
मडंबसि	मडंबंसि	१	१२
कर्वटे	कर्बटे	२	२
જેને	જેની	२	२७
વસ્તીમ	વસ્તીમાં	२	२८
देवज्जई	देवज्जुई	३	१३
भग्यतामुपगता	भोग्यतामुपगता	४	३
कबट	कर्बटे	४	९
सबन्धिकं	संम्बन्धिकं	४	१७
अमंतेत्ता	आमंतेत्ता	४	२२
जणयए	जणवए	५	१
नयरा	नयरी	५	१
सेयावयाए	सेयविया ए	५	२
दुप्पयचउप्पय मियपपसु	दुप्पयचउप्पयमियपसु	५	१२
भगवतम्	भगवंतम्	५	१५
के शिवामी	केशिस्वामी	६	७
निवास्थानभूत	निवासस्थानभूत	६	११
चडे	चंडे	८	२४
અપહ	આ	८	२९
उत्कोच-लांच	उत्कोचन	९	४
ઉત્કોચ લાચ	ઉત્કોચન	૯	૧૯
पटं जइ	पउंजइ	१०	१९
वह्-वेन	वहुत्वेन	११	२
व्यापारतेन	व्यापारस्तेन	१२	३
इष्ठान्	इष्टान्	१२	२५
तस्स ण	तस्स णं	१२	२९
अनुरद्धा	अनुरक्ता	१३	७
प्रमयुत्ता	प्रेमयुक्ता	१३	७
पुत्त	पुत्ते	१३	११
यावत् शब्द प्रकट	यावत् शब्द यह प्रकट	१४	१२

અ તપુરનુ'	અ'તઃપુરનુ'	૧૫	૨૬
शास्हामति	शास्त्रेहामति	१०	१
કમજ	કર્મ'જા	૧૦	૨૬
નિશ્ચયોમ	નિશ્ચયોમાં	૧૭	૩૧
कार्या में	कार्यों में	१८	१०
कृथा	कथा	१८	१७
નિશ કપણે	નિઃશ કપણે	૧૮	૨૫
સકલાર્ધ'નો	સકલાર્થ'ને।	૧૯	૨૫
आयागप्रयोगः	आयोगप्रयोगः	२०	२
सम्प्रयुक्तः	संप्रयुक्तः	२०	४
भोज्जनावशिष्ट	भोजनावशिष्टे	२०	५
शुश्रषादि	शुश्रूषादि	२१	१७
અદૃષ્ઠ	અદૃષ્ટ	૨૧	૨૫
तेण	तेणं	२२	१
समृद्धं	समृद्ध	२२	१८
जितशत्रुं र्नाम	जितशत्रुर्नाम	२३	२
उत्तरपोरस्त्ये	उत्तरपौरस्त्ये	२३	१०
जियसत्	जियसत्त	२३	१७
जितशत्र	जितशत्रु	२३	१९
जसा	जैसा	२३	२१
अन्तेवासाव	अन्तेवासीव	२४	१
जियसत्तस्स	जियसत्तुस्स	२४	८
सूत्रर्थ—	सूत्रार्थ	२४	१८
जितशत्राः	जितशत्रोः	२५	२
रायकज्जाणय	राजकज्जाणिय	२५	२०
वयासा	वयासी	२६	८
पच्चप्पिणहा	पच्चाप्पिणह	२६	१०
महत्थ जाव	महत्थं जाव	२७	८
अब्भितरिया	अब्भितरिया	२७	८
त महत्थं	तं महत्थं	२७	११
चाउग्घंट	चाउग्घंटं	२८	१६
અનેત	અનેક	૩૦	૨૫
પરમ સૈમનસ્યિત	પરમ સૌમનસ્યિત	૩૨	૨૫

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पंक्ति
काटुम्बक पुरुषान्	कौटुम्बिकपुरुषान्	३३	२
सकङ्कठावतंसकं	सकङ्कटावतंसकं	३३	८
शरशतद्वात्रिंशतत्तूण	शरशतद्वात्रिंशत्तण	३३	२०
		,,	३०
दोनों और"	दोनों ओर"	३४	१
स तारणवर युक्त	स तोरणवरयुक्त	३४	२
सा है	ऐसा है	३५	१४
થારે	જ્યારે	૩૫	૨૪
दूध्यक्षत दर्वाङ्कुरादीनि	दध्यक्षतदुर्वाङ्कुरादीनि	६६	२
आरापण किया	आरोपण किया	३६	११
आयुध दसे	आयुध पदसे	३७	१३
यत्रैत्र	यत्रैव	३८	३
केकयाद्ध	केकयार्द्ध	३८	१३
जितश	जितशत्रू	३८	२१
जियसत्तस्स	जियसत्तुस्स	३९	४
सावत्थाए	सावत्थीए	३९	६
०'१०६	विहरइ सू०	३९	१४
स्य	तस्य	४०	१
श्रावस्त्या	श्रवस्त्या	४०	४
उपांग ति	उपागच्छति	४०	५
आंद	आदि	४०	६
कुशॅल प्रश्नादि	कुशलप्रश्नादि	४०	८
सारहि	सारहिं	४०	२१
चउग्घंटं	चाउग्घंटं	४०	२९
जिमितभुक्तात्तराग	जिमितभुक्तोत्तराग	४१	२
प्रतोच्छति	प्रतीच्छति	४२	२२
एवं	एव	४२	२२
ટીકાર્થ	ટીકાર્થ	૪૨	૩૧
पञ्चविधन्	पञ्चविधान्	४३	३
जियम	जियमाए	४३	९
जेणव	जेणेव	४३	१७

ओयसी	ओयंसी	४४	१२
विद्या धानो	विद्याप्रधानो	४५	२
श्रावस्ती गरी	श्रवस्तीनगरी	४५	५
यत्रव	यत्रैव	४५	६
क्षान्तिप्रधन	क्षान्तिप्रधान	४५	९
सत्यपधान	सत्यप्रधान	४	१३
सुहणं	सुहेणं	४५	३०
तृको	पैतृको	४६	८
श्रावती	श्रावस्ती	४६	१२
तथ	तथा	४७	७
निकपटः	निष्कपटः	४८	१
वय	वयं	४९	८
लपरहित्यं	लेपराहित्यं	५१	७
व्य	द्रव्य	५१	३१
શૌચ છે	શૌચ છે	૫૧	૩૨
सिघाडग	सिंघाडग	५४	६
ઉદપયાવસ્થા	ઉદયાવસ્થા	૫૪	૨૧
ધાદિકોને	ક્રોધાદિકોને	૫૪	૨૩
महापथपथ-षु	महापथपथेषु	५५	१२
जनात्कलिकेति वा	जनोत्कलिकेति वा	५५	१३
जनोर्मिरितवा	जनोर्मिरिति वा	५५	१४
सारथि तं	सारथिस्तं	५६	१
लगों के	लोगों के	५६	७
નિમિ	નિમિત્તે	૫૭	૨૮
महर्द्धिर्महर्द्धि	महर्द्धिर्महर्द्धि	५८	१
चतुपथ	चतुष्पथ	५९	११
मनुयों	मनुष्यों	५९	२०
લાયે	લાગ્યે	૫૯	૨૦
इत्यारभ्थ	इत्यारभ्य	६०	१
पजलि	पंजलि	६०	१२
गतोग्रोग्रषु	गतोग्रेग्रेषु	६१	४

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पंक्ति
वदाविदएहिं	वंदावंदएहिं	६४	४
करतलषरिगृहीतं	करतलपरिगृहीतं	६४	१०
श्रावत्यां	श्रावस्त्यां	६४	११
देवनुप्रिय !	देवानुप्रिय !	६५	२
व्गाख्यातपायमिति	व्याख्यातप्रायमिति	७०	२
सव्व ओ	सव्वाओ	७०	६
दिसि	दिसिं	७०	८
सव्वओ	सव्वाओ	७०	१८
सव्वओ	सव्वाओ	७०	१८
सव्वओ	सव्वाओ	७०	१९
सव्वओ	सव्वाओ	७०	१९
श्रूत्वा	श्रुत्वा	७२	६
अवितहमेय	अवितहमेयं	७३	३
धन्न	धन्नं	७३	८
चत्त सारही	चित्ते सारही	७३	१७
केशिन	केशिनं	७३	२२
गिहिधम्म	गिहिधम्मं	७३	१६
पाव्वयणं	पावयणं	७४	२९
विच्छर्ध	चिच्छंद्य	७६	१
शक्रोमि	शक्नोमि	७६	३
मैं ता	मैं तो	७६	१७
सातत शिक्षा	सात शिक्षा	७६	१८
न्देहारतम्	सन्देहसहितम्	७९	१
एव	एवं	७९	१०
अश्वदिको	अश्वादिको	७९	१९
परिस्थिति	परिस्थिति	८०	१८
प देशाशिक	देशावकाशिक	८१	१३
પ્રાણુતપાતથી	પ્રાણાતિપાતથી	८१	२२
ઇચ્છા પરારમાણુ	ઇચ્છા પરિમાણ	८१	૨૩
अश्वरथस्त व	अश्वरथस्तत्रव	८२	१०

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पङ्क्ति
गधव्व	गंधव्व	८२	२
अट्ठिमजपेमाणु-	अट्ठिमिज्जपेमाणु-	८२	१०
अय	अयं	८२	११
षुछणेणं	पुंछणेणं	८२	१५
जियसत्तणा	जियसत्तुणा	८२	१७
श्रमणापासको	श्रमणोपासको	८३	१
ગથુ ं	ગથુ ं	८३	२६
षावथणाआ	पावयणाओ	८३	२८
निर्ग्रंथ	निग्रंथ	८४	२६
परिपुष्णं	परिपुण्णं	८५	१३
फासुएसाणिज्जेणं	फासुएसणिज्जेणं	८५	२७
पौषधोपयासैः	पौषधोपवासैः	८६	१
काङ्क्षारहितः	काङ्क्षारहितः	८८	६
चतुर्दश्यष्टमी पौणमास्यः	चतुर्दश्यष्टमी पौर्णमास्यः	८८	३
षौषध	पौषध	९१	१८
मुहुर्मुहुरवलाकयन्	मुहूर्मुहुरवलोकयन्	९२	६
विहरात	विहरति	९२	६
कयाइ	कयाइं	९२	७
सारहा	सारही	९२	११
छत्तणं	छत्तेणं	९२	१६
अ भंते	अहं भंते !	९३	१६
पसिस्स	पएसिस्स	९३	१९
पाउग्गहण	पाउग्गहणं	९४	२०
पुरसवग्गु	पुरिसवग्गु	९५	५
षहिले	पहिले-	९७	१७
महत्थ	महत्थं	९९	५
हता	हंता	९९	१०
अभिगमणिज्ज	अभिगमणिज्जे	९९	१०-११
परिवसति	परिवसंति	९९	१२
भहार्थं	महार्थं	१००	२

अढाइ	आढाई	१००	७
पयेसिस्स	पएसिस्स	१००	१२
योग	योग्य	१०१	१३
	हंता	१०१	२६
हे चित्ते	हे चित्र	१०२	१०
रीसृपों	सरीसृपों	१०२	११
सो सग्गे	सोपसग्गे	१०२	१४
અભિમમનાય	અભિગમનીય	૧૦૨	૨૩
	बहूनां द्विपदचतुष्पद- मृगपशुपक्षिसरीसृपाणाम्	१०४	१
	द्विपदादयः	१०४	१
पक्षसरीसृपणा	पक्षिसरीसृपाणां	१०४	७
तद्वनप्रवेशरूपाऽर्थः	तद्वनप्रवेशरूपोऽर्थः	१०४	१०
कुगारसमणं	कुमारसमणं	१०४	२०
पज्जुवासिस्सति	पज्जुवासिस्संति	१०४	२३
उधामिष्ठः	अधार्मिष्ठः	१०४	२८
पीठलगसेज्जासंफ	पीठफलकसेज्जासं	१०५	१
युमकं	युष्माकं	१०५	५
नमंशियष्यंति	नमंसिष्यंति	१०५	७
प्रतिहारिकेण	प्रातिहारिकेण	१०५	८
ब्तुभं	तुब्भं	१०५	१२
त	तत्र	१०६	१२
सम्मानयियन्ति	सम्मानयिष्यन्ति	१०६	२९
खाद्यं खाद्यं	खाद्यं स्वाद्यं	१०७	३
मज्झ	मज्झ	१०७	१५
थत्रैव	यत्रैव	१०८	६
कुमारमणस्स	कुमारसमणस्स	१०८	२३
કેકર્યાર્દ્ધભા	કેકયાર્દ્ધભા	૧૦૯	૨૯
दुइज्जमाणे	दूइज्जमाणे	११०	६
पडिहारिएणं	पाडिहारिएणं	११०	२७
इत्थादि	इत्यादि	१११	१

मृगवगम्	मृगवनम्	१११	१३
विणयेणं	विणएणं	१११	२६
नयरि	नयरिं	११२	१४
यत्रव	यत्रैव	११५	१
वरतरनी संपउत्तेहिं	वरतरुणी संपउत्तेहिं	११५	१८
गह	गिहे	११५	२४
वरतरणी संपउत्तेहिं	वरतरुणी संपउत्तेहिं	११५	३०
तत्रव	तत्रैव	११६	२
श्रावस्ती	श्रावस्तीं	११६	३
समापात्	समीपात्	११७	१
ससुपविष्टः	समुपविष्टः	११७	१२
	कामभोगान्	११७	१७
	अत्यनुभवन्	११७	१७
सावत्थाआ	सावत्थीओ	११८	२
केशीकुमार मणः	केशीकुमारश्रमणः	११८	७
वस्त्या	श्रावस्त्या	११८	८
श्वेताविका	श्वेतविका	११८	९
कंसिकुमारसमणे	केसिकुमारसमणे	११८	२१
कौ०ठ३	कै०ठ३	११८	२४
कुमार मणो	कुमार श्रमणो	११९	४
व्याखया	व्याख्या	११९	१८
केशाकुमार श्रमण	केशीकुमारश्रमण	११९	१८
कैकयाद्धं	कैकयाधं	११९	२२
श्रङ्गाटक	शृङ्गाटक	१२०	१४
णामं गायं	णामं गोयं	१२१	१४
अवकमंति	अवक्कमंति	१२१	१४
पूर्वानुपूर्वी	पूर्वानुपूर्वी	१२३	४
जस्णं	जस्सणं	१२३	१५
विहरइ	विहरइ	१२३	२९
विउल	विउलं	१२४	९
[illegible]	[illegible]	१२४	११

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पङ्क्ति
सज्झय	सज्झंय	१२४	१३
प्रा दपीठा	प्रासादपीठा	१२५	२
पण	पग	१२५	१८
હૃદયમા	હૃદયમાં	૧૨૫	૨૩
હુષ્ઠ	હૃષ્ટ	૧૨૫	૨૪
पडिविसज्जे	पडिविसज्जेइ	१२६	१८
ભૃગવનોયદ્યાન	ભૃઅવનોદ્યાન	૧૨૬	૨૫
ि उलं जीवियारिहं	विपुलं जीवियारिहं	१२६	३०
ग सने	उसने	१२७	७
पच्चाप्पिणेह	पच्चप्पिणेह	१२७	१०
घंटोंवाले	घंटोंवाले	१२७	१४
हिजए	हियए	१२७	३०
घटोंवाला	घंटोंवाला	१२८	१२
હુષ્ટ	હૃષ્ટ	૧૨૮	૨૦
કય	કર્યું	૧૨૯	૮
वहुणं	वहूणं	१३०	१३
परमसौमनस्थितः	परमसामनस्यितः	१३०	१९
वहुगणतरम्	वहुगुणतरम्	१३१	१०
आरामगय वा	आरामगयं वा	१३२	३
त चेव	तं चेव	१३२	८
ना लभइ	नो लभइ	१३२	१२
केवलिपन्नत धम्म	केवलिपन्नत्तं धम्मं	१३२	२१
केवलिपन्नत	केवलिपन्नत्तं	१३२	२३
वाद्यस्वाधेन	खाद्यस्वाद्येन	१३५	१
छत्तण	छत्तेण	१३५	१८
महणं	माहणं	१३५	२१
ण	णं	१३५	२९
आरामगत	आरामगतं	१३६	२
उवस्सगयं	उवस्सगयं	१३६	१९
પ્રયુતાસના	પર્યુપાસના	૧૩૬	૨૫

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पङ्क्ति
भर्थो	अर्थो	१३७	२७
विजानाहि	विजानीहि	१३८	३
त्र	तत्र	१३८	५
जीवा जावादि	जीवा जीवादि	१३९	९
पर्दाथों	पदार्थों	१३९	१७
श्रमण	श्रमण	१४०	१३
देवत	दैवतं	१४१	१
महानेन	माहनेन	१४१	८
उसका	उसकी	१४१	१३
मरणतार्थ	श्रवणतायै	१४२	१
चित्त	चित्ते	१४३	१२
टीकार्थ	टीकार्थ-	१४३	२८
च्चाउग्घटे	चाउग्घंटे	१४४	४५
दिसि	दिसिं	१४४	५
मानेप्याम	मानेष्यामि	१४४	१०
प्रढेशी	प्रदेशी	१४५	११
सारहिं	सारहिं	१४५	१२
धन्मणाइकखमाणा	धम्ममाइक्खमाणा	१४५	१९
अयश्य	अवश्य	१४७	१९
नि सस्थाने	निवासस्थाने	१४७	२७
एयमाणत्तिय	एवमाणत्तियं	१४८	१-२
ए होउ	एवं होउ	१४८	१२
एत खलु	एतत्खलु	१४९	५
तं एहणं	तं एएणं	१४९	१८
तं आसे	ते आसे	१४९	१८
तं एइणं	तं एएण	१४९	३०
तं आमे	ते आसे	१४९	३०
रा क्रि	रात्रिकं	१५३	१०
रा	रात्रिक	१५३	१९
दव्व	दव्वं	१५३	२९

शुद्धप्रावे ।	शुद्धप्रावेश्यानि	१५४	१६
चि सारथी	चित्र सारथी	१५४	२०
ગથો	ગયો	१५४	३०
ख स	खलु स	१५५	२
अत्रय	अत्रैव	१५५	१०
अज्झत्थिए	अज्झत्थिए	१५७	३१
निविणणाणा	निव्विण्णाणा	१५८	२७
निर्विण्णाणं	निव्विण्णाणं	१५८	२७
चि सारथिमेव	चित्रसारथिमेव	१५९	३
मूर्वा	चित्रसारथिमेव	१६२	४
हाता है	हाता है	१६२	८
जा	जो	१६२	१४
મસ્તર વાળા	મસ્તકવાળા	१६२	२७
करेति	करोति	१६३	६
जढ	जड्	१६४	१६
વચ	વચ્ચે	१६४	२४
पहीसी राया	पएसी राया	१६५	१४
खल	खलु	१६६	२
पुरि	पुरिसं	१६६	१७
अण्ण जवियत्तं	अण्ण जीवियत्तं	१६६	२१
जीि तं	जीवितं	१६७	३
अन्नजीवितत्वम्	अन्नजीवितत्वं	१६७	११
पवि चयं	परिच्चियं	१६७	१५
ज्जड ज्ञु पवासद्दि	जडं पज्जुवासति	१६८	२
केशा	केशी	१६८	५
एसे	एसे	१६८	१४
केसा कुमारसमणे	केसी कुमारसमणे	१६८	१८
प्रासुकैपणीयान्नमात्र विनः	प्रासुकैपणीयान्न मात्र जीविनः	१७०	५
श्रतज्ञान	श्रुतज्ञान	१७२	१३
प्ररार	प्रकार	१७४	११
केवलंवाणे	केवलणाणे	१७४	१८

त था	तद्यथा	१७५	११
आभिनिवो ज्ञानम्	आभिनिवोधिकज्ञानम्	१७६	४
अ विष्टम्	अङ्गप्रविष्टम्	१७६	५
श्रतज्ञान विषयक	श्रुतज्ञानविषयकं	१७६	५
प्रज्ञप्तं	प्रज्ञप्तं	१७६	९
भिनिवोधिक ज्ञान	आभिनिबोधिक ज्ञान	१७६	१३
अवधि न	अवधिज्ञान	१७६	१९
क्षायोपशमिक	क्षायोपशमिक	१७६	२९
श्रुतज्ञानम्	श्रुतज्ञानम्	१७७	४
तत्	तत्	१७७	६
एतद्रूपं	एतद्रूपं	१७७	८
उवविसामि	उवविसामि	१७८	१३
च्चित्तण	च्चित्तेण	१७८	२७
हेतुः	हेतुः	१७९	२
केसीकुमारश्रम	केशीकुमारश्रमण	१८०	१५
मनाऽमः	मनोऽम	१८५	१
करभरवृत्ति	करभरवृत्ति	१८५	५
त	तं	१८६	२२
अधर्मि ए	अधम्मिए	१८६	२२
स्वभ्यापि	स्वस्यापि	१८७	१०
शरार	शरीर	१८७	२२
सरीर	सरीरं	१८७	२९
ना	नो	१८८	१३
मनाऽम	मनोऽम	१८८	१७
विशेषणाविशिष्टो	विशेषण विशिष्टो	१८९	५
खल	खलु	१८९	६
पएसि	पएसिं	१८९	१४
राय	रायं	१८९	१४
एव	एवं	१८९	१४
सूरियकता	सूरियकंता	१८९	१६
तुम	तुमं	१८९	१५

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पङ्क्ति
ण्हाय	ण्हायं	१८९	१६
च्छित्त	च्छित्तं	१८९	१७
सव्वालंकार भूसिय	सव्वालंकार भूसियं	१८९	१७
तुम	तुमं	१९०	२
पारियणं	परियणं	१९०	४
त	तं	१९०	६
सम	सम्मं	१९०	११
ण	णं	१९०	१२
लागं	लोगं	१९१	५
पएसि	पएसिं	१९१	१३
पएसि	पएसिं	१९१	१५
देवि	देविं	१९१	१७
प्रदेशन्	प्रदेशिन्	१९२	४
हंडं	डंडं	१९२	१०
हत्थविन्नगं	हत्थ भिन्नगं	१९२	२५
व्यपरापय	व्यपरोपयेत्	१९३	१
शक्नोति	शक्नोति	१९४	६
शाघ्रमागन्तुं	शीघ्रमागन्तुं	१९५	१
शक्नाति	शक्नोति	१९५	१
शक्नाति	शक्नोति	१९६	३
"	"	"	५
तुम सवात्	तुम इम वात	१९६	१२
सूर्यकाता देवा	सूर्यकान्ता देवी	१९८	१
नि क	निजक	१९९	४
मगर्यामधार्मिको	नगर्या मधार्मिको	२००	२
करभरवृत्ति	करभरवृत्ति	२००	३
ना शक्नाति	नो शक्नोति	२००	८
शरारया	शरीरयो	२०१	१
वयासा	वयासी	२०१	५
अह	अहं	२०१	१३

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पङ्क्ति
आज्ञया	अज्जिया	२०२	४
सरीर	सरीरं	२०२	६
आगतु	आगंतुं	२०२	६
अन्न	अन्नं	२०२	८
ना	नो	२०२	१४
वृत्ति	वृत्ति	२०४	१
सा क्वाभवादति	सा क्वाभवदिति	२०६	७
इत्यात्राह	इत्यत्राह	२०८	३
वौच	पौत्र	२०८	७
वृत्ति	वृत्ति	२०८	९
,,	,,	,,	१३
त माद्	तस्मात्	२०९	३
दिव्वेहि	दिव्वेहिं	२१०	१४
कामभोगेहि	कामभोगेहिं	,,	१४
,,	,,	,,	१७
अज्झावववण्णो	अज्झोववण्णो	२१०	१७
गधे	गंधे	२११	५
ठाणेहि	ठाणेहिं	२११	७
भिगार कडुच्छुय	भिंगार कडुच्छुय	२११	१९
धार्मिकी	धार्मिको	२१२	२०
पडिसुणेज्जा	पडिसुणेज्जासि	२१२	२५
शीघ्रमागन्तम्	शीघ्रमागन्तुम्	२१३	३
विशेषणोंसे	विशेषणोंसे	२१३	७
देवलाक	देवलोक	२१३	११
हुणोववन्नए	अहुणोववण्णए	२१३	३०
उहे	उन्हे	२१४	१४
दिव्वेहि	दिव्वेहिं	२१४	१८
शक्नाति	शक्नोति	२१५	२
अधुनापपन्नक	अधुनोनोपपन्नक	२१६	२
केश	केशी	२१७	१४

लामं	लोगं	२१७	१७
सधिवालेहिं	संधिवालेहिं	२१९	१२
जीवित	जीवितं	२१९	१४
णिग्गए	णिग्गए	२१९	२२
अन्न	अन्नं	२१९	२३
भते	भंते	२२०	१
अउकुभीए	अउकुंभिए	२२०	१
अन्न	अन्नं	,,	३
अयामयेन	अयामयेन	२२१	३
वैारिक	दौवारिक	२२०	८
किचित्	किंचित्	२२२	२
जओ ण	जओ णं	२२२	१२
अवादित्	अवादीत्	२२२	५
राएज्जा	रोएज्जा	२२२	२२
समपन्नाः	सम्पन्नाः	२२४	३
माडम्वक	माडम्बिक	२२४	१५
प्रवाव	प्रवाल	२२४	१८
पोयगु	पोषणु	२२४	२७
नाम्त	नास्ति	२२८	१
काञ्चत्	किञ्चित्	२२८	१
सुण्ठु	सुष्ठु	२२८	३
भेरिच	भेरिं च	२२९	२६
से तेणं	से णूणं	२३०	२८
वहया	वहिया	२३०	२८
वा जाई	जाव राई	२३०	३१
अंकुण्ठितगतिः	अकुण्ठितगतिः	२३१	१६
सद्दहाहि	सद्दहाहि	२३१	२७
सरीर	सरीरं	२३२	१७
ऐ ।	ऐसा	२३२	६
भते	भंते !	२३३	११
जीवयाओ	जावियाओ	२३२	१५

तामयस्कुम्भी	तामयस्कुम्भीं	२३४	१
कृमि कुम्मीं मिव	कृमि कुम्भी मिव	२३४	१
जण्हाणं	जम्हाणं	२३४	३०
पश्यमि	पश्यामि	२३६	४
प्रतज्ञा	प्रतिज्ञा	२३६	१३
सु तिष्ठि	सुप्रतिष्ठिता	२३६	१३
के'सकु ारसमणं	केसिकुमारसमणं	२३९	२३
सादृरश्यम्	सादृश्यम्	२४१	२४१
अचमें ण्टक दुदुघण	अचमें ष्टकद्रुघण	२४३	१६
ता पभू	हंता पभू	२४४	४
अपः जत्तो	अपज्जतत्तो	२४४	८
नायमर्थसः मर्थंः	नायमर्थः समर्थः	२४५	३
ोरिल्लएणं	कोरिल्लएण	२४५	२४
जैंसे	जैसे	२४६	१३
एग	एगं	२४९	९
प्रज्ञा	प्रज्ञा	२४९	१८
ाथी	नथी	२४९	२६
म ं	महं	,,	२७
परिहिवत्तए	परिवहित्तए	२५०	३२
जएणं	जइणं	२५१	२४
कथर	कथन	२५१	३०
प्रभु	प्रभुः	२५२	९
जैंसा	जैसा	२५२	१७
पएसि	पएसि	२५३	१९
तरुणा	तरुणो	२५५	१
शिल्पापगतः	शिल्पोपगतः	२५५	१
ना	नो	२५६	२
रोजामम्	राजानम्	२५७	२
वाहयायामुपस्थानशालाया	बाहयायामुपस्थानशालायां	२६२	१६
वाहयायामुखस्थानशालायां	बाहयायामुपस्थानशालायां	२६२	२८
पएास	पएसिं	२६३	१७

अशुद्ध	शुद्ध	पेज	पङ्क्ति
जीयस्स	जीवस्स	२६३	२१
खल	खलु	२६५	२
पएसा	पएसी	२६६	१
एव	एवं	२६६	१
वयासा	वयासी	२६६	१
पदाना	पदानां	२६८	७
अम्ह	अम्हं	२६९	१०
पा इ	पासइ	२७०	४
तसि	तंसि	,,	९
एगत	एगंते	२७०	११
सकपो	संकप्पे	२७०	१३
संकप्प	संकप्पं	२७०	१५
झियायमाण	झियायमाणं	२७१	१
तेसि	तेसिं	२७१	१
उवएमलद्दे	उवएसलद्धे	२७१	१
खाइम	खाइमं	२७१	९
राथं	रायं	२७१	२२
कचित्	केचित	२७२	१
वनापजीविन !	वनोपजीविन !	२७२	१
ज्यातिश्च	ज्योतिश्च	२७२	२
ज्यातिर्भाजनं च	ज्योतिर्भाजनं च	२७२	२
केइ पुरिसो	केइ पुरिसा	२७२	८
विज्झवेत्त	विज्झवेत्ता	२७३	६
झियाइ	झियायइ	२७५	१२
वधइ	वंधइ	२७८	१६
कराति	करोति	२७९	१
अरणि	अरणिं	२७९	१
आर	और	२७९	७
तएण	तएणं	२७९	१४
,,	,,	२७९	२६

त्वाणन्छसि	त्वमिच्छसि	२८०	५
अग्निपात्	अग्निपात्रे	२८२	१६
पारकरं	परिकरं	२८५	१५
पि वेशयति	परिवेशयति	२८६	२
षरिष ो	परिषदो	२८७	४
मझे	मज्झे	२८७	१५
वर्तव्यावर्तव्यनिर्णायिकार्ना-	कर्तव्याकर्तव्यनिर्णायिकानां	२८८	३
वक्तम्	वक्तुम्	२८८	९
अवहेलहितुम्	अवहेलयितुम्	२८८	१०
योग्याऽ ्मि	योग्योऽस्मि	८८	१२
भा :	भावः	२८८	१३
जाणाम	जाणामि	२८८	१९
अवरुज्झ	अवरज्झइ	२८८	१९
पाडलोमं	पडिलोमं	२८९	१०
वामवामेन	वामं वामेन	२९२	१
अनष्ट	अनिष्ट	२९२	९
स्य	यस्य	२९३	४
ऋपपरिषदि	ऋषि परिषदि	२९३	१९
विरुद्धेनत्यर्थः	विरुद्धेनेत्यर्थः	२९३	२९
त	तं	२९४	७
अयमे द्रूप	अयमेतद्रूप	२९४	११
यात्	यावत्	२९५	१
काणेन	कारणेन	२९५	३–४
यावच्छे न	यावच्छेदेन	२९६	४
प्रतिलाम प्रतिलोमेन	प्रतिलोम प्रतिलोमेन	२९६	५
भङ्गत्रयाक्त	भङ्गत्रयोक्त	२९९	१३
कि	किं	३०३	२
पएसा	पएसी	३०३	१६
व्यजने	व्यंजते	३०४	३
हस्तामलकव	हस्तामलकवत्	३१२	२३
नातिनिपुणाः	नीतिनिपुणाः	३०८	३

थुकुंथू	कुंथू	३१२	२३
हत्ती	हस्ती	३१३	१
णिच्छिड्‌इ	णिच्छिड्डाइं	३१४	८
सर	सतर	३१८	१२
कार शालाथाः	कार शालायाः	३१९	३
काट शालायाः	कार शालायाः	३१९	७
त	तं	३२१	१
अह	अहं	३२१	१
एव	एवं	३२१	३
मोक्ष्मामि	मोक्ष्यामि	३२१	७
समासरणं	समोसरणं	३२१	२७
एव	एवं	३२३	४
अइगाढबंधणवद्ध	अइ गाढबंधणबद्धे	३२३	१९
करोंत	करेंति	३२४	५
तए ण	तए णं	३२५	७
विस्तारवली	विस्तारवाली	३२६	१३
पासति	पासंति	३२७	२५
जाघ	जाव	३२७	२८
सुवहं	सुवहुं	३२८	८
प्रडिसुणेति	पडिसुणेंति	३२८	१०
तउययारं	तउयभारं	३२८	१३
तत्थण	तत्थणं	३२८	१४
बंध त्तए	बंधित्तए	३२८	१५
वहुाह	वहूहिं	३२९	३१
ग्रारंभ	आरंभ	३३०	१०
दासीदासगाम हिगवेलकं	दासीदासगोमड्सिगवेलकं	३३१	१
प्राथश्चित्ताः	प्रायश्चित्ताः	३३१	२
मानु कान्	मानुप्यकान्	३३१	४
पचविहे	पंचविहे	३३१	३०
लाह	लोह	३३२	५
उ ागच्छाइ	उवागच्छइ	३३२	१९

प,थ्ये।	पाश्र्वे।	३३३	२४
अग्राभिकायाः	अग्रमिकायाः	३३५	३
समपि	समीपे	३३६	५
सङ हो	सङ्ग्रहो	३३६	११
वर्णन	वर्णनं	३३७	५
प्रासादावन्तंसकान्	प्रासादावतंसकान्	३३७	१२
प्रा श्चित्ताः	प्रायश्चित्ताः	३३७	१६
घृतदध्यक्षताः	घृतदध्यक्षताः	३३७	१६
घिलास्यमानाः	विलास्यमानाः	३३७	२२
प्रत्यनुभवता	प्रत्यनुभवन्तो	३३७	२३
अल्पमल्ये	अल्पमूल्ये	३३७	२६
द्वात्रिंशद्बद्धैः	द्वात्रिंशद्बद्धैः	३३७	३०
तित्मयः	विस्मयः	३३८	२
दुष्टा सानम्	दुष्टावसानम्	३३८	५
अहममि	अहमस्मि	३३८	६
तमाद्धेतोः	तस्माद्धेतोः	३३८	११
अन्तराक्तः	अनन्तरोक्तः	३३८	१३
न	तं	३३८	१७
इच्छाम	इच्छामि	३३८	१७
देवानुप्रि णामन्तिके	देवानुप्रियानामन्तिके	३३९	१
णमंसेज्जा	णमंसेज्जा	३३९	९
सत ार	सत्कार	३३९	१२
त्र णामाचार्याणां	त्रयाणामाचार्याणां	३४२	२
जनामि	जानामि	३४२	२
धृत्ति	धृत्ति कल्पयेत्	३४२	५
मदन	मर्दन	३४२	१५
अक्षमर्ि त्वा	अक्षमयित्वा	३४२	४
णमंसेज्जा	णमंसेज्जा	३४२	९
सत ाार	सत्कार	३४२	१२
केशाकुमारश्रमणः	केशीकुमारश्रमणः	३४४	१
प्रदेशा	प्रदेशी	३४४	१

कीदृशीं	कीदृशी	३४४	७
खादिमेन	स्वादिमेन	३४५	३
केसि	केसिं	३४५	१३
ए	एवं	३४६	१
कनलं	कल्ठं	३४६	२५
अंतेउर	अंतेउर	३४८	७
परिणनो	परिणतो	३४९	२
म सि	मनसि	३४९	३
इ थमेव	इत्थमेव	३४९	३
प्र लोम	प्रतिलोम	३४९	६
व्याख्‍ ा	व्याख्या	३४९	७
श्रे :	श्रेयः	३४९	७
शयन नन्तरं	शयनानन्तरं	३५०	४
ि शुक	किंशुकः	३५०	७
सौमस्यितः	सौमनस्यितः	३५१	१०
वोध्यमिति	वोध्यमिति	३५१	१३
स्वकृत तिकूल	स्वकृत प्रतिकूल	३५१	२२
महातिमहालायां	महाति महालयायां	३५२	११
यङ्ग	सङ्ग	३५२	१५
उपदेय	उपदेश	३५२	२२
सुरिकं प मुहाणं	सुरिकंतप्पमुहाणं	३५२	२८
पएसिराय	पएसिरायं	३५३	२५
पहात्रेथ	पहारेत्थ	३५३	२५
उवसोमेमाणा	उवसोभेमाणा	३५४	४
हासज्जइ	हसिज्जइ	३५४	७
भदन्द	भदन्त	३५५	२
णट्टसरलाइवा	णट्टमालाइवा	३५५	२२
रमणिज्जे	रमणिज्जे	३५५	२३
वनपण्डा	वनपण्डो	३५६	१
ना	नो	३५६	६
ना फन्हिए	नो फन्हिए	३५६	८

णा	णो	३५६	८
उवसोममाणे	उवसोभमाणे	३५६	९
तयाण	तयाणं	३५६	१६
,,	,,	,,	२८
जयाण	जयाणं	३५६	२९
तयाण	तयाणं	३५७	२५
तजा	तया	३५७	२६
पुाव्व	पुव्वि	३५८	२९
केशाने	केशीने	३५९	९
हरितक ा ाज्य	हरितकराराज्य	२५९	२५
जनेक	अनेक	३६१	१६
खादिमं	खादिमं	३६३	१०
अतेउरं च	अंतेउरं च	३६४	८
खल्ल	खलु	३६५	२
विमक्त,नि	विभक्तानि	३६६	१
यद्दनारभ्य	यद्दिनारभ्य	३६६	८
अतेउरं	अंतेउरं	३६६	१३
रज्ज	रज्जे	३६६	१६
रायं	राज्यं	३६७	१२
जपभियं	जप्पभियं	३६७	२४
केणा सत्थ	केणविसत्थ	३६७	१९
राज्यश्रिय	राज्यश्रियं	३६८	२
सेय	सेयं	३६९	७
विपय	विप	३६९	११
पूर्व सूत्रे	पूर्वसूत्रे	३७०	७
न सत्र	इन सत्र	३७०	१७
पडेजागरमाणी	पडिजागरमाणी	३७०	२२
अज्झत्यिए	अज्झत्थिए	३७०	२९
वलं= न्यं	वलं=सैन्यं	३७१	१
धा य थापनगृहम्	धान्यस्थापनगृहम्	३७१	२
विहरते	विहरति	३७१	४

शस्त्र योगेन	शस्त्रप्रयोगेन	३७१	५
मारयिवा	मारयित्वा	३७१	७
स्थापयेत्वा	स्थापयित्वा	३७१	८
कार नया	कारयन्त्या	३७१	९
कोप	कोषं	३७१	२३
जनपद	जनपदं	३७२	१
आ मगतो	आत्मगतो	३७२	९
पाल तो	पालयतो	३७२	४
सुरियकं । देपी	सुरियकंता देवी	३७३	९
निठुरा	नि ुरा	३७४	६
दाहक्कं ते	दाहवक्कते	३७४	७
विहइ	विहाइ	३७४	७
दुरध स	दुरध्यास	३७४	१५
पाउब्भू ।	पाउब्भूया	३७४	१८
त्रित्तज्जर परिगयसरीरे	पित्तज्जर परिगयसरीरे	३७४	२०
डुया	कडुया	३७४	१९
ि हरइ	विहरइ	३७४	२०
करिमश्चित्	कस्मिश्चित्	३७४	२
तस्य	तस्य	३७५	७
नमो थुणं	नमोत्थुणं	३७७	१२
त थ यं	तत्थ गयं	३७७	१४
संपलियंकनिसने	संपल्यिंक निसन्ने	३७७	२२
अ तिए	अंतिए	३७७	३२
त सेव	तस्सेव	३७८	७
प्रा ातिपात	प्राणातिपात	३७८	८
उ०	उण्णा	३७८	१७
परिया	परित्याग	३७८	१९
त ड ाणिं	तं इयाणिं	३७८	२१
प्र याख्यान	प्रत्याख्यान	३७९	१०
उ हें	उन्हें	३७९	१२
सतारक	संस्तारक	३७९	२१

सपल्यङ्क	संपल्यक	८०	१
श न	शब्देन	३८०	३
नमर ा	नमस्कार	३८०	१६
भवान्	भगवान्	३८०	१६
वें	सर्वे	३८१	३
समत	समस्त	३८१	१२
याव ीव	यावज्जीव	३८१	१७
अतिचा ाः	अतिचाराः	३८३	२
सामाथिकः	सामायिकः	३८३	४
सूर्यामे	सूर्याभे	३८३	४
देव वेन	देवत्वेन	३८३	५
माप्तम्	समाप्तम्	३८३	६
अधुनपपेन्नक	अधुनोपपन्नक	३८३	१३
भाषाननः पर्याप्त्या	भाषामनः पर्याप्त्या	३८४	१
सूर्यामदेवेन	सूर्याभदेवेन	३८४	८
उपार्जि :	उपार्जितः	३८४	१०
इंदि पज्जत्तीए	इंदियपज्जत्तीए	३८४	१२
इन्द्र्य	इन्द्रिय	३८४	१३
भते	भंते	३८५	१
सेण	से णं	३८५	१८
ण	णं	३८५	२१
सूर्याभ स	सूर्याभस्स	३८५	२२
भवन्त	भवन्ति	३८६	१
आयोगप्रयोगसं युक्तानि	आयोगप्रयोगसंप्रयुक्तानि	३८६	३
ि च्छर्दित	विच्छर्दित	३८६	३
अन मस्मिन्	अन्यतमस्मिन्	३८६	४
कुलणि	कुलाणि	३८६	८
अङ्काइ	अड्डाइ	३८६	८
दित्ताइ	दित्ताइ	३८६	८
आ ोग	आयोग	३८६	१४
चा।	चार	३८७	१३

गब्भगयंसि	गब्भगयंसि	३८९	३
विइक्कताणं	विइक्कंताणं	३८९	६
सुकुमाल पाणपाय	सुकुमालपाणिपाय	३८९	६
पियदंसण	पियदंसणं	३८९	८
दारय	दारयं	३८९	८
भवि॰ त	भविष्यति	३८९	१०
व्यतिक्रातेषु	व्यतिक्रान्तेषु	३८९	११
दारगेसि	दारगंसि	३८९	१५
दारगस	दारगस्स	३८९	१८
द्दिवसे	दिवसे	३९०	६
त	तं	३९१	१
मित्तणाइ	मित्तणाइ	३९१	३
मगल	मंगल	३९२	२७
भोयणमंडवसि	भोयणमंडवंसि	३९३	९
करेगे	करेंगे	३९३	१२
परिभुजेमाणा	परिभुंजेमाणा	३९३	२७
परमसुइभू ।	परमसुइभूया	३९३	३१
वन्धि परिजनस्य	सम्बन्धिपरिजनस्य	३९४	१
मित्र—ज्ञात	मित्र—ज्ञाति	३९४	११
त सेव	तस्सेव	३९४	१०
धम्मे	धम्मे	३९४	२५
करिसति	करिस्संति	३९५	२७
सम्प्राप्ते	संप्राप्ते	३९६	४
फिरने	फिर वे	३९६	२०
ायश्चित्तौं	प्रायश्चित्तौ	३९७	१
म आस्वादन्तौ	आस्वादयन्तौ	३९७	१०
आद	आदि	३९७	१५
द रेके	दूसरे के	३९७	२०
कथयतः	कथयिष्यतः	३९८	८
जिनप्ररूपिते	जिनप्ररूपिते	३९८	१०
दृढ प्रतिज्ञ	दृढप्रतिज्ञस्य	३९८	२१

वेल	वे लोग	३९८	२१
वगृहात्	स्वगृहान्	३९९	२
वडभियाह	वडभियाहिं	४००	२
पदिभुजमाणे	परिभुजेमाणे	४००	९
परां गज्जमाणे	परंगिज्जमाणे	४००	१२
खीर धाइ ए	खीरधाइ ए	४००	२३
वर्वरीभः	वर्वरीभिः	४०१	२
वकुशिका भः	वकुशिकाभिः	४०१	२
हे–वहलीहिं	वहलीहिं	४०१	२७
ध कञ्चुकि	धरकञ्चुकि	४०२	२
अवपाहिज्जमाणे	अवयासिज्जमाणे	४०२	२७
रिक्षिप्तः	परिक्षिप्तः	४०३	२
वडुप्रकारामिः	वहुप्रकारामिः	४०३	८
गिरिकंदरमल्लीण	गिरिकंदरमल्लीणे	४०३	२६
युवति मूहः	युवति समूहः	४०४	८
ह ताद्	हस्तात्	४०४	१२
अन्यया	अन्यस्या	४०४	१४
	गिरिकन्दरालीनः	४०५	२
पाडचारे	पडिचारं	४०६	१
वृह	वूहं	४०६	१
दढप्रतिज्ञ	द्रढप्रतिज्ञं	४०६	८
दढपइण्णं	दढपइण्णं	४०६	११
दढप्रतिज्ञ	द्रढप्रतिज्ञ	४०६	१२
तिहिकरणकुखत्त	तिहिकरणणकुखत्त	४०६	२३
नेप :	नेप्यतः	४०७	१
दारकं	दारकं	४०७	१
कणतश्च	करणतश्च	४०७	२
नगण	नगणं	४०७	८
गणि ? हाणाओ	गणियप्पहाणाओ	४०७	९
वयवाहि	वन्धूगीहिं	४०७	३०
वधू ज्जं	वन्धूविज्जं	४०८	१४

दढमतिज्ञ	द्रढप्रतिज्ञ	४०९	१६
तयाहि	तथाहि	४१२	८
नगरमानन्	नगरमानम्	४१५	२
दृढ ि ज्ञं	दृढप्रतिज्ञं	४१८	२
संमाणेस्संति	सम्माणिस्संति	४१९	२२
”	”	”	३०
ज्जोव्वणगमणुपत्ते	जोव्वणगमणुपत्ते	४२०	२
परिपक्क	परिपक्कं	४२२	३
उम्मुक्कबालभाव	उम्मुक्कबालभावं	४२४	१४
खइयं	खाइयं	४२५	१७
पद्मात्पलमिति	पद्मोतपलमिति	४२६	३
दर्ढप्रतिज्ञ	द्रढप्रतिज्ञ	४२६	९
पउमेइवा	पउमेइवा	४२६	२५
भेत्स्यते	भोत्स्यते	४२७	१
अ गारितां	अनगारितां	४२७	२
ईर्य्या मिता	इर्य्या समितो	४२७	२
तगा । ओ	अगाराओ	४२७	९
आजंवसे	आजिवसे	४२७	१७
वद्धित	वर्धित	४२७	१९
भग्गेणं	मग्गेणं	४२७	२९
दृढ कुमार	द्रढकुमार	४२८	१०
भणवयण कायजोगे	मणवयण कायजोगे	४२८	३०
वस्त्रभोगेप	वस्त्रभागेषु	४२९	२
मविष्यति	भविष्यति	४२९	४
ना	नो	४२९	४
श सहस्र	शतसहस्र	४२९	५
ने पलिप्तं	नोपलिप्तं	४३०	१
सव्वआ	सव्वओ	४३१	४
वृती ।	तृतीया	४३२	८
सवथा	सर्वथा	४३३	२
कायात्सर्ग	कायोत्सर्ग	४३३	२१

कायगुप्तिनिंगद्यते	कायगुप्तिर्निगद्यते	४३३	३३
हां गे	होंगे	४३५	१२
दोनां	दोनां	४३५	१५
समुपपादके	समुपादके	४३७	२
नर्हीं	नहीं	४३९	१७
कुन्जर	कुञ्जर	४३९	१०
अर्थात् ईप	अर्थात्—कषाय	४३९	१७
निररवसानम्	निरवसानम्	४४०	८
तजनाः	तर्जनाः	४४३	३
जस्सद्धाए	जस्सट्ठाए	४४३	२१
वेयचेरवासे	बंभचेरवासे	४४३	२२
चरिमेहिं	चरिमेहिं	४४३	३३
आमनः	आत्मनः	४४४	३
कदे गे	करदेंगे	४४४	१७
इत्यादिकवचनरूपा	इत्यादि वचनरूपा	४४५	७
यस्य कुते	यस्य कृते	४४६	३
सेव भंते !	सेवं भंते !	४४७	१
माग	मार्ग	४४८	१०

॥ समाप्त ॥

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

श्री–जैनाचार्य–जैनधर्मदिवाकर–पूज्यश्री–घासीलाल
व्रतिविरचितया सुबोधिन्याख्यया व्याख्यया
समलङ्कृतम् ।

श्री राजप्रश्नीयसूत्रम्

(द्वितीयो भागः)

गौतमस्वामी पुनः पृच्छति—

मूलम्—सूरियाभेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुई किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता ? किण्णा अभिसमन्नागया ?, पुव्वभवे के आसी ? किं नामए वा किं गोत्ते वा ? कयरंसि वा गामसि वा नगरंसि वा निगमंसि वा रायहाणीए वा खेडंसि वा कव्वडंसि वा मडंबसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहसि वा आगरंसि वा आसमंसि वा संवाहसि वा संनिवेसंसि वा किं वा, दच्चा, किं वा भोच्चा, किं वा किच्चा, किं वा समायरित्ता कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सुच्चा निसम्म सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढि दिव्वा देवज्जुई लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ? ॥ सू० ३८ ॥

छाया—सूर्याभेण भदन्त ! देवेन सा दिव्या देवर्द्धिः सा दिव्या देवद्युतिः कथं लब्धा कथं प्राप्ता कथम् अभिसमन्वागता ? पूर्वभवे क आसीत् ?

'सूरियाभेण भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(सूरियाभेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुई किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमन्नागया ?) हे भदन्त !

सूरियाभेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा' इत्यादि

सूत्रार्थ—(सूरियाभेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुई किण्णा लद्धा ? किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमन्नागया ?) हे भदन्त'

किन्नामको वा? किं गोत्रो वा? कतमस्मिन् वा ग्रामे वा नगरे वा निगमे वा राजधान्यां वा खेटे वा कर्वटे वा मडम्बे वा पत्तने वा द्रोणमुखे वा आकरे वा आश्रमे वा संवाहे वा सन्निवेशे वा किं वा दत्त्वा; किं वा

सूर्याभदेवने वह दिव्यदेवर्द्धि वह दिव्य देवद्युति, कैसे लब्ध की, कैसे प्राप्त की, अर्थात् किस प्रकार से उपार्जित की? किस प्रकार से उपार्जित की गई वह उसने अपने आधीन की, और कैसे उसने अपने आधीन होने के बाद उसे अपने भोग के योग्य बनाया? (पुव्वभवे के आसी? किंनामए वा? किं गोत्ते वा? कयरंसि वा गामंसि वा? नगरंसि वा निगमंसि वा रायहाणीए वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा मडंबंसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आगरंसि वा आसमंसि वा संवाहंसि वा) तथा पूर्वभव में वह किस जाति का था? क्या इसका नाम था? गोत्र से वह कौन था? तथा किस ग्राम में–वृतिवेष्टितस्थान में, किस नगर में–अष्टादशकरवर्जित-वस्ती में, किसनिगम में–प्रभूततर वणिग्जननिवासस्थान में, किस राजधानी में–राजाके निवास से युक्त स्थान में किस खेट में धूलिप्राकारप-रिवेष्टितस्थान में किस कर्वट में क्षुल्लकप्राकारपरिवेष्टित स्थान में, किस मडम्ब में सार्द्धक्रोशद्वयान्तर्ग्रामान्तररहित स्थान में, किस पत्तन में जलमार्गयुक्तस्थान में, किस द्रोणमुख में–जलस्थलमार्गोपेत जननिवास में, किस आकर में–सुवर्णरत्ना

સૂર્યાભદેવે તે દિવ્ય દેવર્દ્ધિ તે દિવ્ય દેવદ્યુતિ કેવી રીતે ઉપાર્જિત કરીને તેને પોતાને અધીન બનાવી. અને સ્વાધીન બનેલી દિવ્યદેવર્દ્ધિ વગેરેને તેણે ભોગ યોગ્ય કેવી રીતે બનાવી? (पुव्व भवे के आसी? किं नामए वा? किं गोत्ते वा? कयरंसि गामंसि वा नगरंसि वा निगमंसि वा रायहाणीए वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा मडबंसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आगरंसि वा आसमंसि वा संवाहंसि वा) અને પૂર્વભવમાં તે કઈ જાતિનો હતો? તેનું શું નામ હતું? તેનું ગોત્ર શું હતું? તે કયા ગામમાં–વૃત્તિ વેષ્ટિત સ્થાનમા, કયા નગરમાં–અઢારકર જેમાં લેવામાં આવે નહિ તે વસ્તિમા, કયા નિગમમાં–વણિગ્ લોકો જેમાં વધારે સંખ્યામાં રહેતા હોય તે નિવાસસ્થાનમાં, કઈ રાજધાનીમાં–રાજા જે નગરમાં રહેતો હોય અને શાસન ચલાવતો હોય તે સ્થાનમાં, કયા ખેટમાં માટીની દીવાલ જેને ચોમેર બનેલી છે તેવી વસ્તીમ, કયા કર્બટમાં–નાની દીવાલથી પરિવૃત્ત સ્થાનમાં, અઢિ ગાઉ સુધી દૂર દૂર બીજી કોઈ વસ્તી હોય નહીં તેવા સ્થાનમાં કયા પટ્ટનમા–જલમાર્ગ યુક્ત સ્થાનમા, કયા દ્રોણમુખમાં જલસ્થલ માર્ગોપેતજન-

भुक्त्वा, किं वा कृत्वा, किं वा समाचर्य कस्य वा तथारूपस्य श्रमणस्य वा माहनस्य वा अन्तिके एकमपि आर्यं धार्मिकं सुवचनं श्रुत्वा निशम्य सूर्याभेण देवेन सा दिव्या देवर्द्धिः दिव्या देवद्युतिः लब्धा प्राप्ता अभिसमन्वागता ? ॥ सू० ९८ ॥

'सूरियाभेण' इत्यादि।

टीका--हे भदन्त ! सूर्याभेण देवेन सा दिव्या=देवसम्बन्धिनी देवर्द्धिः=देवसम्बन्धिनी सातिशयविमानादि ऋद्धिः कथं=केन प्रकारेण लब्धा=

दिक की उत्पत्तिवाले स्थान में, किस आश्रम में-तापसनिवास स्थान में, किस संवाह में-किसानों द्वारा धान्य की रक्षा के निमित्त निर्मित दुर्गभूमिस्थान में, अथवा किस संनिवेश में-समागतसार्थवाहादि के निवासस्थानमें, किंवा दच्चा, किं वा भोच्चा, किं वा किच्चा, किं वा समायरित्ता कस्स समणस्स वा तहारूवस्स माहणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई, लद्धा, पत्ता, अभिसमण्णागया) अभयदान, सुपात्रदान, करुणादानादिकों में से कौन से दान को देकर, आचाम्ल आदि तपों में अथवा अन्य किसी समय में कौन से अरस विरस आदि आहार को खा करके, प्रतिक्रमण, प्रमार्जन आदि किस कृत्यको करके अथवा किस प्रकार के शीलादिक का समाचरण करके किस तथारूप श्रमण-निर्ग्रन्थ साधु के, अथवा किस द्वादशव्रतधारी श्रावक के, पास में एक भी तीर्थंकर प्रतिपादित पापनिवृत्ति-निरवद्य वचन सुनकरके एवं उन वचनों को आदेयरूप मानकर हृदय में

निवसमां, क्या आकरमां-सुवर्णरत्न-वगेरे ज्यांथी नीकळे छे तेवा स्थानमां, क्या आश्रममां-तापस निवास स्थानमां, संवाहमां-धान्यनी रक्षा माटे खेडूतोए जे स्थान विशेष पर दुर्ग रचना करी होय ते वस्तीमां, अथवा क्या संनिवेशमां-सार्थवाहो ज्यां आवीने रहे ते स्थान विशेषोमां. (किंवा दच्चा, किंवा भोच्चा, किंवा किच्चा किंवा समायरित्ता कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आयरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई लद्धा, पत्ता अभिसमण्णागया) अभयदान [illegible]

उपार्जिता ? कथं=केन प्रकारेण प्राप्ता=उपार्जिता सती स्वायत्ती भूता! कथं=केन हेतुना अभिसमन्वागता अभिमुख्येन सम्=साङ्गत्येन अनु=पश्चात्-स्वायत्ती भवनानन्तरम् आगता=भोग्यतामुपगता ?, तथा-सा दिव्या देव-द्युतिः=देवसम्बन्धिनी शरीराभरणादिकान्तिः कथं लब्धा ? कथं प्राप्ता ? कथम् अभिसमन्वागता ?, तथा-पूर्वभवे=पूर्वजन्मनि स कः=किञ्जातीय आसीत् ? किन्नामको वा स आसीत् ? किं गोत्रः=गोत्रेण वा स क आसीत् ? तथा--कतमस्मिन् वा ग्रामे-वृत्तिवेष्टिते नगरे-अष्टादशकरवर्जिते, निगमे-प्रभूततर वणिग्जननिवासस्थाने राजधान्याम्=राज्ञो निवासोपलक्षिते स्थाने वा खेटे-धूलिप्राकारपरिवेष्टिते, कर्बटे-क्षुद्रप्राकारपरिवेष्टिते, मडम्बे-सार्द्धक्रोशद्वयान्त र्ग्रामान्तररहिते, पत्तने,-जलमार्गयुक्ते स्थाने, द्रोणमुखे-जलस्थलमार्गोपेते जननिवासे. आकरे=सुवर्णरत्नाद्युत्पत्तिस्थाने, आश्रमे तापसनिवासस्थाने, संवाहे-कृषीवलैर्धान्यरक्षार्थं निर्मिते दुर्गभूमिस्थाने, सन्निवेशे-समागतसार्थवाहादिनिवासस्थाने, किं वा-अभयदानसुपात्रदानकरुणादानादिकं दत्त्वा, किं वा आचामाम्लादितपस्सु अन्तप्रान्तमयेऽपि च अरसविरसादिकं भुक्त्वा, किं वा-पौषधप्रतिक्रमणप्रमार्जनादिकं कृत्वा, किं वा-शीलादिकं समाचर्य=विधाय, कस्य वा तथारूपस्य श्रमणस्य=निर्ग्रन्थसाधो र्वा माहनस्य=द्वादश-व्रतधारिश्रावकस्य वा अन्तिके=समीपे एकमपि आर्यम्=आर्यसम्बन्धिकं-तीर्थकरप्रतिपादितमित्यर्थः, सुवचनं=पापनिवृत्तिरूपं निरवद्यवचनं श्रुत्वा=आकर्ण्य, निशम्य=तद्वाक्यमादेयतया हृद्यवधार्य सूर्याभेण देवेन सा दिव्या देवर्द्धि दिव्या देवद्युतिर्लब्धा प्राप्ता अभिसमन्वागता ? इति ॥ सू. ९८

मूलम्—'गोयमाइ' समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं अमंतेत्ता एवं वयासी

एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे केयइअद्धे नामे जणवए होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं

धारण करके इस सूर्याभदेव ने वह दिव्य देवर्द्धि, दिव्य देवद्युति उपार्जित कि है ? अपने आधीन की है ? और अपने भोग के योग्य बनाई है ? ॥

टीकार्थ इसका स्पष्ट है ॥ सू० ९८ ॥

આદેયરૂપથી સ્વીકારીને હૃદયમાં ધારણ કરીને સૂર્યાભદેવે, તે દિવ્ય દેવર્દ્ધિ દિવ્ય દેવ-દ્યુતિ મેળવી છે ? પોતાને આધીન બનાવી છે ? અને પોતાના માટે ભોગ યોગ્ય બનાવી છે." ટીકાર્થ:—આનો સ્પષ્ટ છે. ॥ ૯૮ ॥

केयइअद्धे जणयए सेयवियाणामं नयरी होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा। तीसे णं सेयवियाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थणं मिगवणे णाम उज्जाणे होत्था सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे सायलाए सुभसुरभिसीयलाए छायाए सव्वओचेव समणुबद्धे पासाईए जाव पडिरूवे। तत्थ णं सेयवियाए णगरीए पएसी णामं राया होत्था, महया हिमवंत जाव विहरइ। अधम्मिए अधम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्माणुए अधम्मपलोई अधम्मपजणणे अधम्मसीलसमुयायारे अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे 'हणछिंदभिंद'—पवत्तए लोहियपाणी पावे चंडे रुद्दे खुद्दे साहसिए उक्कंचण—वंचण—माया—नियडि—कूड—कवड—साइ संपओगबहुले निस्सीले निव्वए निग्गुणे निम्मेरे निपच्चक्खाणपोसहोववासे बहूणं दुप्पयचउप्पयमियपसुपक्खीसिरिसिवाणघायाए वहाए उच्छेयणयाए अधम्मकेऊ समुट्ठिए, गुरूणं णो अब्भुट्ठेइ. णो विणयं पउंजइ, सयस्स वि यणं जणवयस्स णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ।सू.९१।

छाया—गौतम! इति श्रमणो भगवान् महावीरो भगवन्तं गौतमम् आमन्त्र्य एवमवादीत्—

'गोयमाइ' समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(गोयमाइ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी) हे गौतम! इस प्रकार से श्रमण भगवान महावीरने भगवान गौतम को संबोधित करके इस प्रकार कहा—(एवं खलु गोयमा!

'गोयमाइ' समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(गोयमाइ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी) हे गौतम! [illegible] गौतमने [illegible]

एवं खलु गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव जम्बूद्वीपे-द्वीपे भारते वर्षे केकयार्द्धं नाम जनपद आसीत् ऋद्धस्तिमितसमृद्धः। तत्र खलु केकयार्द्धे जनपदे श्वेतविका नाम नगरी आसीत्, ऋद्धस्तिमितसमृद्धा यावत् प्रतिरूपा।

तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जम्बूदीवे दीवे भारहे वासे केयइअद्धे नामे जणवए होत्था) हे गौतम! मैं इस विषय में तुम से कहता हूं सो तुम उसे सुनो-बात ऐसी है-इस अवसर्पिणीकाल के चतुर्थ आरकरूपकाल में और केशि स्वामी के विहरण के समय में इस जम्बूद्वीप नामके मध्यजम्बूद्वीप में भरतक्षेत्र में केकयार्द्ध नामका जनपद-देश था. तात्पर्य कहने का यह है कि केकयदेश का आधाभाग आर्यजनों का निवासस्थानरूप था और आधाभाग अनार्यजनों का निवासस्थानरूप था इस तरह आर्य अनार्य के निवास्थानभूत होने से केकयदेश को यहां आधे आधेरूप में पृथक् पृथक् जनपद कहा गया है (रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा) यह केकयार्द्ध ऋद्ध-नभस्तलस्पर्शी अनेक भवनादिकों से युक्त था, एवं बहुजनसंकुल था, स्तिमित-स्वचक्र परचक्र के भय से रहित था, एवं समृद्ध-धनधान्यादि से परिपूर्ण था यावत प्रतिरूप था (तत्थणं केयइअद्धे जणवए सेयविया णामं णयरी होत्था) उस केकयार्द्ध जनपद में श्वेतविका नामकी नगरी थी. (रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा) यह नगरी भी ऋद्ध, स्तिमित और समृद्ध थी. एवं प्रतिरूप-सर्वोत्तम थी (तीसे णं सेयवियाए नयरीए बहिया

પ્રમાણે કહ્યું-(एवं खलु गोयमा। तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे अद्धे नामे जणवए होत्था) હે ગૌતમ ! આ વિષે જે કંઇ હું તમને કહું તે તમે સાંભળો. વિગત આ પ્રમાણે છે કે-આ અવસર્પિણી કાળના ચોથા આરકરૂપ કાળમાં અને કેશિસ્વામીના વિહરણના સમયમાં આ જંબૂદ્વીપ નામના મધ્ય જંબૂદ્વીપમાં ભરતક્ષેત્રમાં કેકયાર્દ્ધ નામે જનપદ-દેશ-હતો. તાત્પર્ય એ છે કે કેકય દેશના અર્ધા ભાગમાં આર્યજનો નિવાસ કરતાં હતા અને અર્ધા ભાગમાં અનાર્યજનો રહેતા હતાં. એથી જ આર્યો અનાર્યોના નિવાસસ્થાનરૂપ તે કેકયપ્રદેશને અહીં અર્ધા રૂપમાં જુદા જુદા જનપદોના નામે સંબોધિત કરવામાં આવ્યો છે (रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा) આ કેકયાર્દ્ધ દેશ ઋદ્ધ નભસ્તલસ્પર્શી ઘણાં ભવનો વગેરેથી યુક્ત હતો, અને બહુજન સંકુલ હતો, સ્તિમિત-સ્વચક્ર પરચક્રની બીકથી રહિત હતો અને સમૃદ્ધ ધનધાન્ય વગેરેથી પરિપૂર્ણ હતો યાવત્ પ્રતિરૂપ હતો. (तत्थणं केयइअद्धे जणवए सेयविया णामं णयरी होत्था) તે કેકયાર્દ્ધ જનપદમાં શ્વેતવિકા નામે નગરી હતી. (रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा) આ નગરી પણ ઋદ્ધ સ્તિમિત અને સમૃદ્ધ હતી અને પ્રતિરૂપ-સર્વોત્તમ હતી. (तीसे णं सेयवियाए

तस्याः खलु श्वेतविकाया नगर्याः बहिः उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे अत्र खलु मृगवनं नाम उद्यानम् आसीत्-सर्वर्तुकपुष्पफलसमृद्धं रम्यं नन्दनवनप्रकाश-शुभसुरभिशीतलया छायया सर्वत एव समनुबद्धं प्रासादीयं यावत् प्रतिरूपम्। तत्र खलु श्वेतविकायां नगर्यां प्रदेशी नाम राजा आसीत्-महाहिमवद्-यावद् विहरति। अधार्मिकः अधर्मिष्ठः अधर्मख्यातिः अधर्मानुगः

उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे एत्थ णं मिगवणे णामं उज्जाणे होत्था) उस श्वेतविका नगरी के ईशान कोने में मृगवन नामका उद्यान था (सव्वोउयपुप्फ-फलसमिद्धे रम्मे, नंदणवणप्पगासे सुभ सुरभिसीयलाए छायाए सव्वओ चेव समणुबद्धे पासाईए जाव पडिरूवे) यह उद्यान छहों ऋतुओं के पुष्पों एवं फलों से युक्त था. अतः मनोरम था नन्दनवन के जैसा था. शुभ-सुखावह होने से अच्छी, एवं सुरभि-मनोज्ञ एवं शीतस्पर्शवाली ऐसी छाया से सर्वत्र यह समनुबद्ध-युक्त था. प्रासादीय था यावत् प्रतिरूप था (तत्थ णं सेयवियाए णगरीए पएसी णाम राया होत्था) उस श्वेतविका नगरी में प्रदेशी नामका राजा था. (महया हिमवंत जाव विहरइ) इसमें महाहिमवान, महामलय, मन्दर-(मेरुपर्वत) एवं महेन्द्र के जैसा था (अधम्मिए, अधम्मिट्ठे, अधम्मक्खाई, अधम्माणुए अधम्मपलोई, अधम्म पजणणे अधम्मसीलसमुयायारे, अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे) परन्तु वह धार्मिक नहीं था अधर्माचारी था, अतिशयरूप से अधर्माचरणशील था, अतएव अधर्मद्वारा ही वह जगत में प्रसिद्ध हुआ था अधर्मानुयायी

नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे एत्थ णं मिगवणे णामं उज्जाणे होत्था) ते श्वेतनगरीना ईशान कोणमां मृगवन नामे उद्यान हतुं. (सव्वोउय पुप्फफलसमिद्धे रम्मे. नंदणवणप्पगासे सुभसुरभिसीयलाए छायाए सव्वओ चेव समणुबद्धे पासाईए जाव पडिरूवे) आ उद्यान षड्ऋतुओना पुष्पो तेमज फळोथी समृद्ध हतुं. तेथी नन्दनवन जेवुं मनोरम हतुं. शुभ-सुखावह होवा बदल सारी, अने सुरभि-मनोज्ञ-अने शीतस्पर्शवाळी छायाथी ते सर्वत्र समनुबद्ध-युक्त हतुं. प्रासादीय हतुं. यावत् प्रतिरूप हतुं. (तत्थ णं सेयवियाए णगरीए पएसी णामं राया होत्था) ते श्वेतविका नगरीमां प्रदेशी नामे राजा हतो. (महया हिमवंत जाव विहरइ) तेओ महाहिमवान, महामलय, मंदर (मेरुपर्वत) अने महेन्द्र जेवडा हता. (अधम्मिए. अधम्मिट्ठे. अधम्मक्खाई, अधम्माणुए. अधम्मपलोई. अधम्मपज्जणे. अधम्मसीलसमुयायारे. अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे) ते धार्मिक हुते नहि अधर्माचारी हतो, पूर्ण ज अधर्माचरणमां प्रवृत्त रहेतो

अधर्मप्रलोकी अधर्मप्रजननः अधर्मशीलसमुदाचारः अधर्मेणैव वृत्तिंकल्पयन् 'जहि छिन्धि भिन्धि' प्रवर्त्तकः लोहितपाणिः पापः चण्डो रौद्रः क्षुद्रः साहसिकः उत्कञ्चन-वञ्चन-माया-निकृति-कूटकपटसातिसम्प्रयोगबहुलो निश्शीलो निर्व्रतो निर्गुणो निर्मर्यादो निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवासो बहूनां द्विपदचतु-

था, अधर्म का ही निरन्तर चिन्तवन किया करता था, प्रजाजनों में भी वह केवल प्रकर्षरूप से अपने उपदेशों द्वारा अधर्म को ही भरा करता था, उसे ही प्रोत्साहित किया करता था, कूटर कर इसके स्वभाव में अधर्म भाव भरा हुआ था, और कार्य भी यह इसी प्रकार के किया करता था- यहांतक कि यह अपनी जीविका भी अधर्म से ही चलाया करता था. तथा ('हण-छिंद-भिंद'-पवत्तए लोहियपाणी पावे चंडे, रुद्दे, खुद्दे, साहसिए, उक्कंचण, वंचण, माया-नियडि-कूड-कवड-साइ संपओगबहुले, निस्सीले, निव्वए, निग्गुणे, निम्मेरे, निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे बहूणं) मारो, काटो, दो टुकडे करदो इत्यादि वाक्यों द्वारा जीवों के हिंसादिक कार्यो में अपने आश्रित जनों को प्रवृत्तिशील बनाया करता था, इसके हाथ सदा रक्त से भरे रहते थे, यह साक्षात् पापका अवतार था, क्यों कि पापकर्म में यह सदा परायण बना रहता था, यह बहुत अधिक क्रोधी था, रौद्र-क्रूररूप होने से भयानक था, तुच्छ बुद्धिवाला होने से क्षुद्र था. सहसाकर्मकरणशील

હતો. એથી તે અધર્મીના રૂપમાં જ જગતમા પ્રસિદ્ધ થઈ ગયો હતો. તે અધર્માનુયાયી હતો તે રાતદિવસ અધર્મનું જ ચિંતન કર્યા કરતો હતો. પ્રજાની સામે પણ તે અધર્માચરણ તરફ પ્રવૃત્ત થવાના ઉપદેશો આપતો રહેતો હતો. તે અધર્મને જ પ્રોત્સાહિત કરતો રહતો હતો. તેના અણુ અણુમાં અધર્મ જ વ્યાપક થઈ રહ્યો હતો. તેના બધા કાર્યો પણ અધર્મથી પ્રેરાઇને થતાં હતાં તે પોતાનું ભરણ પોષણ પણ અધર્મના આધારે જ કરતો હતો. તેમજ ("हणछिंद भिंद पवत्तए लोहियपाणी पावे चंडे, रुद्दे, खुद्दे साहस्सिए, उक्कंचण, वंचण, मायानियडि-कुड-कवडे साइसंपओगबहुले. निस्सीले, निव्वए, निग्गुणे, निम्मेरे. निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे बहूणं) મારો, કાપો, બે કકડા કરી નાખો વગેરે વાક્યો વડે તે જીવોના હિંસા વગેરે કાર્યોના પોતાના આશ્રિતોને પ્રવૃત્તિશીલ રાખતો હતો. તેના હાથો સદા રક્તથી ખરડાએલા રહેતા હતા. તે સાક્ષાત્ પાપનો અવતાર હતો. કેમકે તે સદા પાપ પરાયણ જ રહેતો હતો. અપહ બહુજ ક્રોધી હતો, રૌદ્ર-ક્રુરરૂપ હોવાથી ભયાનક હતો, તુચ્છબુદ્ધિવાળો હોવાથી ક્ષુદ્ર હતો, સહસાકર્મકરણશીલ

मृगपशुपक्षिसरीसृपाणां घाताय वधाय उच्छेदनाय अधर्मकेतुः समुत्थितः, गां नो अभ्युत्तिष्ठति नो विनयं प्रयुङ्क्ते, स्वकस्यापि च जनपदस्य नो रक करभरवृत्तिं प्रवर्त्तयति ॥ सू० ९९ ॥

र से अर्थात् विना विचारे कार्य करनेवाला होने से साहसिक था, उत्कोच- व, वंचन-परप्रतारण, माया-परवंचनबुद्धि, निकृतिगूढमाया, कूट-गूढमाया ढंकने के लिये अन्यमाया करना, कपट-वेष भाषा आदिको बदलना- रीत बना लेना, इन सब का जो सातिसंप्रयोग-प्रकर्षरूप से व्यापार व्यापार से यह व्याप्त था, तथा, निश्शील-शीलवर्जित था, निर्व्रत- ादिककुकृत्यरूप पापों से विरति का अभाववाला होने से व्रतरहित था, र्गुण-क्षान्त्यादिक गुणों के अभाव से युक्त होने के कारण निर्गुण था, निर्मर्याद-मर्यादा रहित था, परस्त्री वर्जनादिरूप मर्यादा से रहित होने के रण निर्मर्याद था, प्रत्याख्यान, पौषध और उपवास इनसे रहित था, ा अनेक (दुप्पयचउप्पयमियपसुपक्खी सिरिसिवाणघायाए वहाए उच्छेय- ाए, अधम्मकेऊ समुट्ठिए) द्विपद-मनुष्य वगैरह, चतुष्पद-मृगादि वगैरह -ग्राम की गाय वगैरह, सरीसृप-भुजपरिसर्प एवं उरःपरिसर्प-नकुल र्प आदि इन सब की हत्या करने, इन्हें मारने में-चोट पहुंचाने और प्राण रहित करने के लिये अधर्मरूप केतुग्रह के जैसा उत्पन्न मा था, अर्थात् केतुग्रह के उदित होने पर लोक में जिस प्रकार से

'गोयमा !-इति--

टीका--गौतमस्वामिनः प्रश्नं श्रुत्वा श्रमणो भगवान महावीरो भगवन्तं गौतमस्वामिनं 'गौतम' इति आमन्त्र्य=सम्बोध्य एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्-हे गौतम ! एवं खलु त्वम् जानीहि-तस्मिन् काले=अस्या अवसर्पिण्याश्चतुर्थारकलक्षणे काले, तस्मिन् समये केशिस्वामि विहरणोपलक्षिते समये इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे=मध्यजम्बूद्वीपे भारते वर्षे=भरतक्षेत्रे केकयार्द्ध नाम जनपदो=देश आसीत् । अत्रेदं बोध्यम्-केकयदेशस्य अर्द्धम् आर्यजननिवासस्थानम्, अर्धं च अनार्यजननिवासस्थानम् । आर्यानार्ययो र्निवास भूतत्वात् केकयस्य अर्द्धद्वयं पृथक्पृथग्जनपदत्वेन विवक्षितमिति । स केकयार्द्ध जनपदऋद्धस्तिमितसमृद्धः-तत्र-ऋद्धःनभःस्पर्शिबहुलप्रासादयुक्तो बहुल जनसंकुलश्च, स्तिमितः स्वचक्रपरचक्रभयरहितः, समृद्धः=धनधान्यादिपरिपूर्णः, पदत्रयस्य कर्मधारयः। तत्र खलु केकयार्द्धे-जनपदे श्वेतविका नाम नगरी आसीत् । सा नगरी ऋद्धस्तिमितसमृद्धा यावत्-प्रतिरूपा । यावत्पदेन-औपपातिकसूत्रोक्तचम्पानगरीवर्णनपरः पदसमूहोऽत्रापि बोध्यः। प्रतिरूपा= सर्वोत्तमा च आसीत् । तस्याः खलु श्वेतविकायाः नगर्या बहिः बाह्यप्रदेशे उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे=ईशानकोणे अत्र खलु मृगवनं नाम उद्यानम् आसीत् । तत् उद्यानं सर्वर्तुकपुष्पफलसमृद्धम्=षड्ऋतुसम्बन्धिपुष्पफलसमन्वितं रम्यं=

अनेक विप्लव (उपद्रव) होते हैं, उसीप्रकार से इस राजा के शासन होने पर देशभर में त्रास था, (गुरूणं णो अब्भुट्ठेइ, णो विणयं पउंजइ, सयस्स वि य णं जणवयस्स णो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेइ) आते हुए मातापितादिरूप गुरुजनों को देखकर यह उनका आदर करने के लिये खडा नहीं होता था, उनके विषय में वह विनययुक्त नहीं होता था, तथा अपने जनपद केकयार्द्ध जनपद के प्रजाजनों की कर लेकर भी पालनरूपवृत्ति यथार्थरूप से नहीं करता था. ।

વિપ્લવો (ઉપદ્રવો) થાય છે, તેમજ આ રાજાના શાસનકાળમાં સમસ્ત દેશમાં ત્રાસ અને અશાંતિનું વાતાવરણ પ્રસરી રહ્યું હતું (गुरूणं णो अब्भुट्ठेइ, णो विणयं पउंजइ, सयस्स वि य णं जणवयस्स णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ) માતાપિતા વગેરે ગુરુજનોને આવતા જોઈને પણ તે તેમનો આદર કરવા માટે ઉભો થતો ન હતો. તેમની સામે તે વિનયશીલ થઈને રહેતો ન હતો તેમજ પોતાના જનપદ કેકયાર્દ્ધ જનપદની પ્રજા પાસેથી ટેક્સ લઈને પણ તે સરસ રીતે તેમનું પાલન રક્ષણ કરતો ન હતો.

मनोरम नन्दनवनप्रकाश=नन्दनवनसदृश, शुभसुरभिशीतलया शुभा=सुखा वहत्वेन शुभा सुरभिः=मनोज्ञा शीतला=शीतस्पर्शयुक्ता, पदत्रयस्य कर्मधारयः तथाभूतया छायया सर्वत एव=सर्वप्रदेशावच्छेदेनैव समनुबद्धा=युक्तां प्रासादीयां यावत् प्रतिरूपां चासीत्। तत्र खलु श्वेतविकायां नगर्यां प्रदेशी नाम राजा आसीत्। स प्रदेशी राजा महाहिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्रसारो यावद् विहरति। प्रदेशिराजस्य सकलं वर्णनमौपपातिकसूत्रोक्तकूणिकराजवद् बोध्यम्। स प्रदेशी राजा तु–अधार्मिकः–धर्मेण चरति धार्मिकः, न धार्मिकोऽधार्मिकः–अधर्माचारी, अधार्मिकस्तु सामान्यधर्माचरणेनापि भवति, अत आह—अधर्मिष्ठ इति। अधर्मिष्ठः=सातिशयाधर्माचरणशीलः, अधर्मख्यातिः–अधर्मेण ख्यातिर्यस्य स तथा अधर्मद्वारेण जगति प्रसिद्धिं गतः, अधर्मानुगः–अधर्मम् अनुगच्छतीति–अधर्मानुगः–अधर्मानुयायी, अधर्मप्रलोकी–अधर्ममेव प्रलोकते=निरन्तरं विचारयति यः सः–अधर्मविषयकविचारपरायणः, अधर्मप्रजननः–अधर्ममेव प्रकर्षेण जनयति=उत्पादयति लोकेषु यः सः प्रजास्वपि अधर्मभावोत्पादक इत्यर्थः, तथा अधर्मशीलसमुदाचारः– अधर्म एव शीलं=स्वभावः समुदाचारः=अनुष्ठानं च यस्य स तथा अधर्मस्वभावयुक्तः अधर्मानुष्ठानपरायणश्चेत्यर्थः, तथा–अधर्मेणैव वृत्तिं=जीविकां कल्पयन=कुर्वन, तथा–जीवान प्रति जहि=मारय, छिन्धि=विदारय भिन्धि=द्विधाकुरु इत्यादि वाक्यैः प्रवर्तकः=स्वाश्रितान जनान प्रवर्तयिता, अतएव–लोहितपाणिः=रक्तखरण्टितहस्तः, पापः=पापस्वरूपः–सर्वदा पापपरायणत्वात्, चण्डः=चण्डस्वरूपः–तीव्रतरकोपावेशात् रौद्रः=भयानकः=क्रूरस्वरूपत्वात्, क्षुद्रः=तुच्छबुद्धित्वात् साहसिकः=साहसकरणशीलः–असमीक्षितकारित्वात्, तथा–उत्कञ्चन–वञ्चन–माया–निकृति–कूट–कपट–सातिसम्प्रयोगबहुलः–तत्र–उत्कञ्चनम्=उत्कोचग्रहणम्, 'उत्कोच'–'लाञ्च' इति भाषा

टीकार्थ—स्पष्ट. सूत्रार्थ – जैसा ही है–श्वेतविका नगरी का वर्णन औपपातिक सूत्र में किये गये चम्पानगरी जैसा ही जानना चाहिये–यही बात वनखण्ड के विषय में भी है तथा प्रदेशी राजा का भी वर्णन औपपातिक सूत्र में किये गये कूणिक राजा के जैसा ही समझना ॥ सू. ९५ ॥

प्रसिद्धः । वञ्चनं=परप्रतारणं मायाः=परवञ्चनबुद्धिः, निकृतिः=गूढमाया, कूटम्=गूढमायाच्छादनार्थमन्यमायाकरणम्, कपटं=वेषभाषाविपर्ययकरणम्, एषां यः सातिसम्प्रयोगः=प्रकर्षेण व्यापारः तेन बहुलः-व्याप्तः, तथा-निश्शीलः= शीलवर्जितो ब्रह्मचर्यरहितत्वात्, निर्व्रतः=व्रतरहितो हिंसादिविरत्यभावात्, निर्गुणः=गुणरहितः-क्षान्त्यादिगुणाभावात्, निर्मर्यादः=मर्यादारहितः-परस्त्री-परिवर्जनादिरूप मर्यादारहितत्वात्, निष्प्रत्याख्यानपौषधोपवासः=प्रत्याख्यान-पौषधोपवास वर्जितः, तथा-बहूनां द्विपद-चतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणां, तत्र-द्विपदाः=मनुष्या-दासीदासादयः, चतुष्पदाः ये मृगाः=आरण्याः, पशवो=ग्राम्या गवादयश्च ते-चतुष्पदमृगपशवः, पक्षिणः-प्रसिद्धाः, सरीसृपाः=भुजोरुभ्यां सर्पण शीला गोधादयः, एषां पदानामितरेतरयोगद्वन्द्वः, तेषां घाताय=विनाशनाय वधाय=ताडनाय उच्छेदनाय=निर्मूलनाय अधर्मकेतुः=अधर्मरूपकेतुग्रह इव समुत्थितः=समुद्गतः। केतुग्रहे समुदिते सति लोके विप्लवो भवति, तथैवा-स्मिन् नृपतौ शासके सति जनपदे त्रासो वर्त्तते। तथा-स गुरूणां नो अभ्युत्तिष्ठति=आगच्छतो गुरून्=मातापित्रादीन् दृष्ट्वा तेषामादरं कर्तुं न अभ्युत्थाता भवति, तेषु=पित्रादिगुरुजनेषु विनयं नो प्रयुङ्क्ते=विनययुक्तो न भवति. तथा-स प्रदेशी राजा स्वकस्यापि च जनपदस्य=केकयार्द्धजनपदस्य खलु करभरवृत्तिं-करात्=करं गृहीत्वा यो भरः प्रजानां पालनं तद्रूपा या वृत्तिस्तां सम्यक्=याथातथ्येन न प्रवर्त्तयति=न विदधाति। स्वजनपदस्यापि रक्षणकर्मणि समुद्युक्तो न भवतीत्यर्थः ॥सू० ९९॥

मूलम्—तस्स णं पएसिस्स रन्नो सूरियकंता नाम देवी होत्था, सुकुमालपाणिपाया धारिणी वण्णओ। पएसिणा रन्ना सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्दे रूवे जाव विहरइ ॥ सू० १०० ॥

छाया—तस्य खलु प्रदेशिनो राज्ञः सूर्यकान्ता नाम देवी आसीत्, सुकुमालपाणिपादा धारिणीवर्णकः। प्रदेशिना राज्ञा सार्द्धम् अनुरक्ता अविरक्ता इष्टान् शब्दान् रूपाणि यावद् विहरति ॥ सू० १०० ॥

'तस्स णं पएसिस्स रन्नो' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तस्स णं पएसिस्स रन्नो) उस प्रदेशी राजा की (सूरियकंता नाम देवी होत्था) सूर्यकान्ता नामकी रानी थी (सुकुमालपाणिपाया

'तस्स ण पएसिस्स रन्नो' इत्यादि।

सूत्रार्थ,—(तस्स णं पएसिस्स रन्नो) ते प्रदेशी राजानी (सूरियकंता नाम देवी होत्था) सूर्यकांता नामे राणी हती. (सुकुमालपाणिपाया धारिणी वण्णओ)

टीका-'तस्स णं' इत्यादि—

तस्य=पूर्वोक्तस्य खलु प्रदेशिनो राज्ञः सूर्यकान्ता नाम देवी=राज्ञी आसीत्। सा सूर्यकान्ता देवी सुकुमालपाणिपादा-सुकुमालं=सातिशयकोमलं पाणिपादं=हस्तौ पादौ च यस्याः सा तथाभूताऽऽसीत्। सूर्यकान्तायाः सर्वं वर्णनं धारिणीवद् बोध्यम्। एतदेव सूचयितुमाह=धारिणीवण्णओ' इति औपपातिकसूत्रोक्तधारिणीवद् बोध्यम्। सा सूर्यकान्ता देवी प्रदेशिना राज्ञा सार्द्धं=सह अनुरक्ता=सातिशयप्रेमयुक्ता अविरक्ता=प्रातिकूल्यं गतेऽपि पत्यौ स्वयं सदा प्रसन्नवदना सती इष्टान्=अभिलषितान्, शब्दान् रूपाणि यावद्=गन्धान् रसान् स्पर्शांश्चेति पञ्चविधान् मनुष्यान्=मनुष्यसम्बन्धिनः कामभोगान् प्रत्यनुभवन्ती=उपभुञ्जाना विहरति ॥सू० १००॥

मूलम्—तस्स णं पएसिस्स रण्णो जेट्ठे पुत्ते सूरियकंताए देवीए अत्तए सूरियकंते नामं कुमारे होत्था. सुकुमालपाणिपाए जाव पडिरूवे। से णं सूरियकंते कुमारे जुवराया वि होत्था, पएसिस्स रन्नो

धारिणीवण्णओ) इसके हाथ पैर आदि अवयव बड़े ही सुकुमार थे. इसका पूर्णवर्णन धारिणी रानी के जैसा ही है. धारिणी का वर्णन औपपातिक सूत्र में दिया गया है। (पएसिणा रन्नो सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्दे रूवे जाव विहरइ) प्रदेशी राजा के साथ यह सातिशय प्रेम युक्त बने होकर अभिलषित मनुष्य संबंधि कामभोगों को भोगती थी, यदि राजा कभी प्रतिकूल भी हो जाता तो उस समय यह उससे प्रतिकूल नहीं बनती. प्रत्युत सदा प्रसन्नवदन ही रहती. यहां 'शब्दरूप' से रूप गंध, रस और स्पर्श ये पांच प्रकार के कामभोग गृहीत हुए हैं।

टीकार्थ स्पष्ट है ॥ सू० १०० ॥

रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ॥सू० १०१॥

छाया—तस्य खलु प्रदेशिनो राज्ञो ज्येष्ठः पुत्रः सूर्यकान्ताया देव्याः आत्मजः सूर्यकान्तो नाम कुमार आसीत्, सुकुमालपाणिपादो यावत् प्रतिरूपः। स खलु सूर्यकान्तः कुमारो युवराजोऽप्यासीत्, प्रदेशिनो राज्ञो राज्यं च राष्ट्रं च वाहनं च बलं च कोशं च कोष्ठागारं च पुरं च अन्तःपुरं च स्वयमेव प्रत्युत्प्रेक्षमाणः प्रत्युत्प्रेक्षमाणो विहरति ॥ १०१ ॥

'तएणं पएसिस्स रण्णो' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं पएसिस्स रण्णो जेट्ठे पुत्ते सूरियकंताए देवीए अत्तए सूरियकंते नामं कुमारे होत्था) उस प्रदेशी राजा के पुत्र था, जिसका नाम सूर्यकान्त था यह सूर्यकान्तादेवी से उत्पन्न हुआ था (सुकुमालपाणिपाए जाव पडिरूवे) इसके हाथ–पग बडेही सुकुमार थे. यावत् यह प्रतिरूप–सर्वोत्तम था. यहां यावत् शब्द प्रकट करने के लिये प्रयुक्त हुआ है कि औपपातिक सूत्रोक्त धारिणी के वर्णन में आगत पदसमूह में पुल्लिङ्ग की विभक्तियां लगाकर सूर्यकान्त का वर्णन करना चाहिये. (से णं सूरियकंते कुमारे जुवराया वि होत्था) यह सूर्यकान्त कुमार युवराज भी था. अतः वह पएसिस्स रन्नो रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोट्ठागारं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे२ विहरइ) प्रदेशी राजा के राष्ट्रादिसमुदायरूप राज्यका, जनपदरूप (देश राष्ट्रका, सैन्यरूप बल का, हस्त्यादि एवं शिबिकादिरूप वाहन

'त एणं पएसिस्स रण्णो' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(त एणं पएसिस्स रण्णो जेट्ठे पुत्ते सूरियकंताए देवीए अत्तए सूरियकंते नाम कुमारे होत्था) (ते प्रदेशी राजाने पुत्र हतो. सूर्यकांत नाम हतुं. ते सूर्यकांता देवीना गर्भथी उत्पन्न थयो हतो. (सुकुमालपाणिपाए जाव पडिरूवे) तेनां हाथ पग बहुज सुकोमळ हतां. यावत् ते प्रतिरूप–सर्वोत्तम हतो. अहीं यावत् शब्दनो प्रयोग एटला माटे करवामां आव्यो छे के औपपातिक सुत्रना धारिणीना वर्णनमां जे पदो आव्यां छे तेमां पुल्लिंगनी विभक्तिओ लगाडीने सूर्यकांतनुं वर्णन समजवुं जोइओ. (से णं सूरियकंते कुमारे जुवराया वि होत्था) ओ सूर्यकांत कुमार युवराज पण हतो अेथी (पएसिस्स रन्नो रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे २ विहरइ) प्रदेशी राजाना राष्ट्रादि समुदायरूप राज्यनुं, जनपदरूप राष्ट्रनुं, सैन्यरूप बळनुं, हस्ति वगेरे अने शिबिका वगेरे वाहननुं, भांडागाररूप

टीका—'तस्य णं' इत्यादि—

तस्य खलु पूर्वोक्तस्य प्रदेशिनो राज्ञो ज्येष्ठः पुत्रः सूर्यकान्तायाः देव्या आत्मजः=अङ्गजातः सूर्यकान्तो नाम कुमार आसीत्, स कुमारः सुकुमालपाणिपादो यावत्प्रतिरूपश्च आसीत्। यावत्पदेन औपपातिकसूत्रोक्त-धारिणीवर्णकग्रन्थः पुंलिङ्गत्वेन विपरिणमय्यात्र ग्राह्य इति। स खलु सूर्य-कान्तकुमारो युवराजोऽपि आसीत्। स सूर्यकान्तो युवराजः प्रदेशिनो राज्ञो राज्यं=राष्ट्रादिसमुदायात्मकं च, राष्ट्रं=जनपदं, बलं=सैन्यं, वाहनं=हस्त्यादिकं शिबिकादिकं च, कोशं=भाण्डागारं कोष्ठागारं=धान्यगृहं पुरं=नगरं, अन्तःपुरं च स्वयमेव प्रत्युत्प्रेक्षमाणः प्रत्युत्प्रेक्षमाणः निरीक्षमाणो विहरति–राज्यराष्ट्रादि सर्वव्यवस्थां पश्यतीत्यर्थः ॥सू० १०१॥

मूलम्—तस्स णं पएसिस्स रन्नो जेट्ठे भाउयवयंसए चित्ते णामं सारही होत्था अड्ढे जाव बहुजणस्स अपरिभूए साम-दंड-भेय-उवप्पयाणअत्थसत्थईहामइविसारए उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मयाए पारिणामियाए चउव्विहाए बुद्धीए उववेए, पएसिस्स रण्णो बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे मेढीपमाणं आहारे आलंबणभूए चक्खुभूए सव्वट्ठाण सव्वभूमियासु लद्धपच्चए विइण्णवियारे रज्जधुराचिंतए यावि होत्था ॥ सू० १०२ ॥

छाया—तस्य खलु प्रदेशिनो राज्ञो ज्येष्ठ भ्रातृवयस्यश्चित्रो नाम सारथि-रासीत्। आढ्यो यावत् बहुजनस्य अपरिभूतः साम-दण्ड-भेदोपप्रदानार्थ

धन, भाण्डागाररूप कोश का, [illegible] कोष्ठागार का [illegible] अन्तःपुर का अपने आप ही स्वयं [illegible] निरीक्षण [illegible]

टीकार्थ [illegible] ॥ १०१ ॥

'तस्स णं पएसिस्स रन्नो जेट्ठे भाउयवयंसए' इत्यादि।

राजा का जेष्ठ भाइ के जैसा एवं अधिक उमरवाला (चित्ते णामं सारही होत्था) चित्र नाम का सारथी था. (अड्ढे जाव बहुजणस्स अपरिभूए साम-दंड-भेय-उवप्पयाण अत्थसत्थ ईहा मइविसारए) यह चित्र सारथी आढय-समृद्ध था. यावत् बहुजनों द्वारा भी अपरिभूत था. यहां यावत् शब्द से 'दित्ते वित्थिण्णविउल-सयणासण जाण-इण्णे, बहुधण-बहुजायरूव-रयए, आओगसंपओगसंपउत्ते, विच्छड्डियविउलभत्तपाणे, बहुदासीदासगोमहिस-गवेलयप्पभूए' इसपाठ का संग्रह हुआ है इसका अर्थ इस प्रकार से है-यह चित्र सारथि दीप्त-तेजस्वी था, इसके बडे २ अनेक मकान थे, बडेर अनेक तल्प (शय्या) थे, बडेर अनेक पीठकादिक आसन थे शकटप्रभृति (गाडी वगैरह) यान थे, अश्वादिकों से यह सदा आकीर्ण-युक्त बना हुआ था, विपुल धन का-गणिम आदि द्रव्य का, यह स्वामी था. इसके पास विपुल स्वर्ण था, तथा रजत-चांदी थी. आयोगप्रयोग से यह संप्रयुक्त था, द्विगुणादिलाभके लिये रुपया आदि को कर्ज लेने वालों के लिये देना इसका नाम आयोग है, और इसका उपाय चिन्तन करना सो प्रयोग है. अथवा अपने द्रव्य को दूना आदि करने की लिप्सा से अधमर्ण-कर्ज लेने वालों को उसे देना इसका नाम आयोगप्रयोग संप्रयुक्त है. यह चित्र सारथि इस अधिक द्रव्यों

મોટાભાઇ જેવો ઉંમરમાં તેના કરતાં વધારે (चित्ते णामं सारही होत्था) ચિત્ર નામે સારથિ હતો. (अड्ढे जाव बहुजणस्स अपरिभूए साम-दंड-भेय उवप्पयाण अत्थ सत्थ ईहा मइ विसारए) એ ચિત્ર સારથિ આઢ્ય-સમૃદ્ધ-હતો. યાવત્ અનેક લોકોથી અપરિભૂત હતો, અહીં યાવત્ શબ્દથી "दित्ते वित्थिण्णविउलसयणासण जाण-वाहणा-इण्णे. बहुधण-बहु जाय-रूव-रयय, आओगसंपओगसंप उत्ते, विच्छड्डियविउलभत्तपाणे, बाहुदासीदासगोमहिसगवेलयप्पभूए' આ પાઠનું ગ્રહણ થયું છે આનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે તે ચિત્ર સારથિ દીપ્ત-તેજસ્વી હતો, ઘણાં મોટા મોટા તેને મકાનો હતાં. મોટી મોટી અનેક શય્યાઓ (તલ્પ) હતી. પીઠક વગેરે મોટા મોટા ઘણા આસનો હતાં. શકટ-ગાડી વગેરે ઘણાં વાહનો હતા. હય-ઘોડાઓ-વગેરેથી તે સદા પરિવેષ્ટિત રહેતો હતો. વિપુલ ધનનો-ગણિમ વગેરે દ્રવ્યનો એ સ્વામી હતો. તેની પાસે પુષ્કળ સ્વર્ણ હતું, અને ચાંદી પણ હતી. આયોગ પ્રયોગથી એ સંપ્રયુકત હતો, બમણા લાભની અપેક્ષાએ જે રૂપિયા વગેરે સિક્કાઓ બીજાને વ્યાજે આપવામાં આવે તેને આયોગ કહે છે અને એના માટે જે યુક્તિ પ્રયુક્તિઓનું ચિંતન કરવામાં આવે છે તેને પ્રયોગ કહે છે અથવા તો પોતાના ધનને બમણું વગેરે કરવાની ઇચ્છાથી અધમર્ણ-કર્જ લેનારને આપવું તેનું નામ આયોગ પ્રયોગ સંપ્રયુકત છે. એ ચિત્ર સારથિ અધિક દ્રવ્યોપાર્જનરૂપ ક્રિયામાં

शास्त्रे ईहामतिविशारदः औत्पत्तिक्या वैनयिक्या कर्मजया पारिणामिक्या चतुर्विधया बुद्ध्या उपपेतः. प्रदेशिनो राज्ञः बहुषु कार्येषु च कारणेषु च कुटुम्बेषु च मन्त्रेषु च गुह्येषु च रहस्येषु च निश्चयेषु च व्यवहारेषु च आपृच्छनीयः प्रतिपृच्छनीयो मेढिः प्रमाणम् आधार आलम्बनम् चक्षुर्भूतः सर्वभूमिकासु लब्धप्रत्ययो वितीर्णविचारो राज्यधुराचिन्तकश्चापि आसीत् ॥१०२॥

पारंभरूप क्रिया में प्रवृत्त था. तथा विपुल मात्रा में इसके यहां भोजन पान आदि देने पर भी बचा रहता था दासी, दास, गो, महिष एवं गवेलक, मेष ये सब इसके यहां प्रचुरसंख्या में थे. तथा यह चित्र सारथि साम, दंड, भेद और दान इन चार राजनीतियों में अर्थप्राप्ति के साधनों का प्रतिपादन करने वाले शास्त्र में एवं ईहाप्रधान बुद्धि में, विशारद-निपुण था (उप्पत्तियाए, वेणइयाए, पारिणामियाए, चउव्विहाए बुद्धिए उववेए) औत्पत्तिकी-स्वाभाविक, वैनयिकी, कर्मजा तथा पारिणामिकी अवस्था इन चार प्रकार की बुद्धियों से युक्त था (पएसिस्स रण्णो बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य, कुडुंबेसु य, मंतेसु य, गुज्झेसु य, रहस्सेसु य, निच्छएसु य, ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे) प्रदेशी राजा के अनेक कार्यों में, कार्यसंपादक हेतुओं में, कुटुम्ब के विषय में, कर्तव्यनिश्चयार्थ राजमंत्रणाओं में, गुह्यों में—लज्जा से गोपनीय बातों में, रहस्यों में प्रच्छन्नव्यवहारों में, एवं निश्चयों में—पूर्णनिर्णयों में, एवं व्यवहारों में—परस्परवादियों द्वारा समाचरित विपरीत आदि क्रियाओं के पारखने में अच्छी तरह से यह

राजा का जेष्ठ भाइ के जैसा एवं अधिक उमरवाला (चित्ते णामं सारही होत्था) चित्र नाम का सारथी था. (अड्ढे जाव बहुजणस्स अपरिभूए साम-दंड-भेय-उवप्पयाण अत्थसत्थ ईहा मइविसारए) यह चित्र सारथी आढय-समृद्ध था. यावत् बहुजनों द्वारा भी अपरिभूत था. यहां यावत् शब्द से 'दित्ते वित्थिण्णविउल-सयणासण जाण-इण्णे, बहुधण-बहुजायरूव-रयए, आओगसंपओगसंपउत्ते, विच्छड्डियविउलभत्तपाणे, बहुदासीदासगोमहिस-गवेलयप्पभूए' इसपाठ का संग्रह हुआ है इसका अर्थ इस प्रकार से है- यह चित्र सारथि दीप्त-तेजस्वी था, इसके बडे २ अनेक मकान थे, बडेर अनेक तल्प (शय्या) थे, बडेर अनेक पीठकादिक आसन थे शकटप्रभृति (गाडी वगेरह) यान थे, अश्वादिकों से यह सदा आकीर्ण-युक्त घना हुआ था, विपुल धन का-गणिम आदि द्रव्य का, यह स्वामी था. इसके पास विपुल स्वर्ण था, तथा रजत-चांदी थी. आयोगप्रयोग से यह संप्रयुक्त था, द्विगुणादिलाभके लिये रुपया आदि को कर्ज लेने वालों के लिये देना इसका नाम आयोग है, और इसका उपाय चिन्तन करना सो प्रयोग है. अथवा अपने द्रव्य को दूना आदि करने की लिप्सा से अधमर्ण-कर्जलेने वालों को उसे देना इसका नाम आयोगप्रयोग संप्रयुक्त है. यह चित्र सारथि इस अधिक द्रव्यों

મોટાભાઇ જેવો ઉંમરમાં તેના કરતાં વધારે (चित्ते णामं सारही होत्था) ચિત્ર નામે સારથિ હતો. (अड्ढे जाव बहुजणस्स अपरिभूए साम-दंड-भेय उवप्पयाणं अत्थ सत्थ ईहा मइ विसारए) એ ચિત્ર સારથિ આઢ્ય-સમૃદ્ધ-હતો. યાવત્ અનેક લોકોથી અપરિભૂત હતો, અહીં યાવત્ શબ્દથી "दित्ते वित्थिण्णविउलसयणासण जाण-वाहणा-इण्णे. बहुधण-बहु जाय-रूव-रयय, आओगसंपओगसंप उत्ते, विच्छड्डियविउलभत्तपाणे, बाहुदासीदासगोमहिसगवेलयप्पभूए' આ પાઠનું ગ્રહણ થયું છે આનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે તે ચિત્ર સારથિ દીપ્ત-તેજસ્વી હતો, ઘણાં મોટા મોટા તેને મકાનો હતાં. મોટી મોટી અનેક શય્યાઓ (તલ્પ) હતી. પીઠક વગેરે મોટા મોટા ઘણા આસનો હતાં. શકટ-ગાડી વગેરે ઘણાં વાહનો હતા. હય-ઘોડાઓ-વગેરેથી તે સદા પરિવેષ્ટિત રહેતો હતો. વિપુલ ધનનો-ગણિમ વગેરે દ્રવ્યનો એ સ્વામી હતો. તેની પાસે પુષ્કળ સ્વર્ણ હતું, અને ચાંદી પણ હતી. આયોગ પ્રયોગથી એ સંપ્રયુકત હતો, બમણા લાભની અપેક્ષાએ જે રૂપિયા વગેરે સિક્કાઓ બીજાને વ્યાજે આપવામાં આવે તેને આયોગ કહે છે અને એના માટે જે યુક્તિ પ્રયુક્તિઓનું ચિંતન કરવામા આવે છે તેને પ્રયોગ કહે છે. અથવા તો પોતાના ધનને બમણું વગેરે કરવાની ઇચ્છાથી અધમર્ણ-કર્જ લેનારને આપવું તેનું નામ આયોગ પ્રયોગ સંપ્રયુકત છે. એ ચિત્ર સારથિ અધિક દ્રવ્યોપાર્જનરૂપ ક્રિયામાં

शास्त्रे ईहामतौ विशारदः औत्पत्तिक्या वैनयिक्या कर्मजया पारिणामिक्या चतुर्विधया बुद्ध्या उपपेतः, प्रदेशिनो राज्ञो बहुषु कार्येषु च कारणेषु च कुटुम्बेषु च मन्त्रेषु च गुह्येषु च रहस्येषु च निश्चयेषु च व्यवहारेषु च आमच्छनीयः प्रतिप्रच्छनीयो मेढिः प्रमाणम् आधारआलम्बनभूतश्चक्षुर्भूतः सर्वभूमिकासु लब्धप्रत्ययो वितीर्णविचारो राज्यधुराचिन्तकश्चापि आसीत ॥१०२॥

पार्जनरूप क्रिया में प्रवृत्त था. तथा-विपुल मात्रा में इसके यहा भोजन पान खालेने पर भी बचा रहता था. दासी, दास, गो, महिष एवं गवेलक-मेष ये सब इसके यहां प्रचुरसंख्या में थे. तथा यह चित्र सारथि साम, दंड, भेद और दान इन चार राजनीतियों में अर्थप्राप्ति के साधनों का प्रतिपादन करने वाले शास्त्र में एवं ईहाप्रधान बुद्धि में, विशारद निपुण था (उप्पत्तियाए, वेणइयाए, पारिणामियाए, चउव्विहाए बुद्धिए उववेए) औत्पत्तिकी-स्वाभाविक, वैनयिकी, कर्मजा तथा पारिणामिकी अवस्था इन चार प्रकार की बुद्धियों से युक्त था (पएसिस्स रण्णो बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य, कुडुंबेसु य, मंतेसु य, गुज्झेसु य, रहस्सेसु य, निच्छएसु य, ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे) प्रदेशी राजा के अनेक कार्यों में, कार्य संपादक हेतुओं में, कुटुम्ब के विषय में, कर्तव्यनिश्चायार्थ गुप्तमंत्रणाओं में, गुह्यों में—लज्जा से गोपनीय कामों में, रहस्यों में प्रच्छन्नव्यवहारों में, एवं निश्चयों में—पूर्ण निर्णयों में, एवं व्यवहारो में—बान्धवादिकों द्वारा समाचरित लोकविपरीत आदिक्रियाओं के प्रायश्चित्तों में अच्छी तरह से यह

પ્રવૃત્ત હતો. તેમજ એને ત્યાં પુષ્કળ માણસો લોકો ભોજન–પાન કરતા હતાં છતાંએ ભોજન સામગ્રી ખૂબ પડી રહેતી હતી. દાસી, દાસ, ગાય મહિષ અને ગવેલક–મેષ આ બધા એનેત્યા પ્રચુર સંખ્યામા હતા. એ ચિત્ર સારથિ સામ. દંડ, ભેદ અને દાનઆ ચારે ચાર રાજનીતિ-એમા, અર્થ પ્રાપ્તિના સાધનોનું પ્રતિપાદન કરનારા શાસ્ત્રોમાં અને ઈહા પ્રધાન બુદ્ધિમા વિશારદ-નિપુણ હતો. (उप्पत्तियाए, वेणईयाए. परिणामियाए, चउव्विहाए बुद्धिए उववेए) ઔત્પત્તિકી–સ્વાભાવિક, વૈનયિકી, કર્મજ અને પારિણામિકી આ ચાર પ્રકારની બુદ્ધિઓથી- તે યુક્ત હતો. (पएसिस्स रण्णो बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य, कुडुंबेसु य, मंतेसु य. गुज्झेसु य, रहस्सेसु य, निच्छएसु य, ववहारेसु य, आपुच्छणिज्जे, पडिपुच्छणिज्जे) પ્રદેશી રાજાના અનેક કાર્યોમા, કાર્ય સંપાદક હેતુઓમા, કુટુંબની બાબતમા, કર્તવ્ય નિશ્ચયાર્થ ગુપ્ત મંત્રણાઓમા, ગુહ્યોમા૦શરમને લીધે ગોપનીય કામોમાં, રહસ્યોમા— પ્રચ્છન્ન-વ્યવહારોમાં અને નિશ્ચયોમાં પૂર્ણ નિર્ણયોમાં અને વ્યવહારોમાં બાંધવો વગેરે વડે લોક વિપરીત આચરણ કરવા બદલ તેમને પ્રાયશ્ચિત્ત કરાવવામા. ચારે ઘડીએ

टीका—'तस्स णं' इत्यादि—

तस्य खलु प्रदेशिनो राज्ञो ज्येष्ठभ्रातृवयस्यकः=ज्येष्ठभ्रातृतुल्यो वयस्यकः: स्वस्य परमादरणीयत्वात् चित्रो नाम=चित्रनामा सारथिः आसीत्। स चित्रसारथिः आढ्यः=समृद्धः 'जाव-यावत्-यावत्पदेन-दित्ते वित्थिण्ण विउल-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णे बहुधण-बहुजायरूव-रयए आओग-संपओगसंपउत्ते विच्छड्डिय विउलभत्तपाणे बहुदासीदासगोमहिसगवेलय-

---

बार बार पूछा जाता था-विशेषरूप से पूछा जाता था (मेढीपमाणं आहारे आलंबणभूए, चक्खुभूए, सव्वट्ठाणसव्वभूमियासु लद्धपच्चए विइण्णवियारे रज्जधुराचिंतए यावि होत्था) जिस प्रकार मेधि को आश्रित करके बैल घूमते हैं उसी प्रकार उसे आश्रित करके मंत्रिमंडल मंत्रकरनेरूप कार्यों में प्रवृत्त होता था. अतःवह मेंढीरूप था, तथा प्रत्यक्षादिक प्रमाणों की तरह वह हेयोपादेय पदार्थों में प्रवृत्तिनिवृत्तिशाली होने के कारण संशयरहित होकर पदार्थोंका परिच्छेदक था. इसलिये वह प्रमाणरूप था. आधारभूतपदार्थोंकी तरह वह सब का आश्रयदाता था. रज्जु स्तंभादिकों की तरह वह विपत्तिरूप कूप में पतित जनों का उद्धारक होने के-कारण अवलम्बनरूप था. यहां यह शंका हो सकती हैं आधार और अवलंम्बन मे क्या भेद है! इस का उत्तर यह कि जिसके सहारे से मनुष्य अपनी उन्नति करता है या स्वरूपावस्थ होता है उसका नाम आधार है तथा जिसके अवलम्बन से विपत्तियां दूर होती है उसका नाम अवल-

---

એની સાથે મંત્રણા કરવામાં આવતી હતી. અને સવિશેષ રૂપમા એને પૂછવામાં આવતું હતું. (मेढीपमाणं आहारे आलंबणभूए, सव्वट्ठाणसव्वभूमियासु लद्धपच्चए विइण्णवियारे रज्जधुराचिंतए यावि होत्था) મેઢિના આધારે જેમ બળદ ફરે છે તેમ એને આધાર માનીને મંત્રિમંડળ મંત્રણા વગેરે કાર્યોમાં પ્રવૃત્ત થતું હતું. એથી તે મેઢીરૂપ હતો. પ્રત્યક્ષાદિક પ્રમાણોની જેમ તે હેયોપાદેય પદાર્થોમાં પ્રવૃત્તિ નિવૃત્તિશાલી હોવા બદલ પદાર્થોનો તે નિશંકપણે પરિચ્છેદક હતો. એથી તે પ્રમાણરૂપ હતો. આધારભૂત પદાર્થોની જેમ તે સૌ કોઈનો આશ્રયદાતા હતો. રજ્જુ સ્તંભાદિકોની જેમ વિપત્તિરૂપ કૂપમાં પડેલાઓનું રક્ષણ કરનાર હોવાથી તે અવલંબનરૂપ હતો. અહીં આધાર અને અવલંબનના અર્થ વિષે શંકા ઉત્પન્ન થઈ શકે છે કે એઓ બન્નેમાં શો તફાવત છે? તો સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે કે જેના આધારે-આશ્રયે માણસ ઉન્નતિ કરે છે કે સ્વરુપાવસ્થ હોય છે તેનું નામ આધાર તેમજ જેના અવલંબનથી વિપત્તિ દૂર થાય છે.

प्पभूए' छाया—दीप्तो विस्तीर्णविपुलशयनासनयानवाहनाकीर्णो बहुधन-बहुजातरूप-रजतआयोगसंप्रयोगसंप्रयुक्त विच्छर्दितविपुलभक्तपानो बहु दासीदास गोमहिष गवेलकप्रभूतः इतिसंग्राह्यम्, तत्र-दीप्तः=तेजस्वी विस्तीर्ण विपुलभवनशयनासनयानवाहनाकीर्णः-विस्तीर्णानि=विस्तृतानि विपुलानि बहूनि भवनानि=गृहाः. शयनानि=तल्पानि आसनानि=पीठकादीनि, यानानि=शकटप्रभृतीनि, वाहनानि=अश्वादयस्तैराकीर्णः=व्याप्तः समुपेतो वा, बहुधन बहु-जातरूपरजत -बहु=विपुलं धनं=गणिमप्रभृति यस्य स बहुधनः, बहु=विपुलं जातरूपं=सुवर्णं रजतं=रूप्यं च यस्य स बहु जातरूपरजतः-बहुधनश्चासौ बहुजातरूप रजतश्चेति-बहुधनबहुजातरूपरजतः, तथा आयोगसंप्रयोग-संप्रयुक्तः आसमन्तात् योजनं=द्विगुणादिलाभार्थं रूप्यादीनामधमर्णा-

म्बन है। नेत्र जैसे अपने विषयभूत होने योग्य पदार्थों का प्रदर्शक होता है उसी प्रकार से यह सब सबके लिये सकलार्थ का प्रदर्शक था यदुक्तम्—

"मेधिः प्रमाणं आधारः, आलम्बनं चक्षु"

इस बात की स्पष्ट प्रतिपत्ति के लिये उपमावाचक भूतशब्द इनके साथ जोड कर सूत्रकार ने पुनः इनकी इस प्रकार से आवृत्ति की है—यह मेढि भूत, प्रमाणभूत, आधारभूत एवं चक्षुभूत था अतःसर्वस्थानों में—सन्धि, विग्रह आदिरूप सब जगहों में एवं मन्त्रि—आमात्यादि स्थानरूप सर्वभूमिकाओं में यह यथार्थवादीरूप से माना जाता था और राजा ने भी इसी कारण अन्तःपुरादि जैसे स्थानों में आने जाने की इसे छूट देरखी थी. इसतरह राजा का अतिविश्वास पात्र बना हुआ यह चित्रसारथि सकल राज्यकार्य का प्रेक्षक भी बन गया था.

तेनुं नाम अवलेखन छे नेत्र जेम पोताने विषयभूत थवा योग्य पदार्थोना प्रदर्शक होय छे तेमज ते पण सौ माटे सकलार्थनो प्रदर्शक हतो.

जेमके—"मेढिः प्रमाणं आधारः, आलम्बनं चक्षुः"

ए ज वातने वधारे स्पष्ट करवा माटे सूत्रकारे उपमावाचक 'भूत' शब्द एमने लगाडीने फरी आ शब्दोनी आ प्रमाणे आवृत्ति करी छे–ए मेढिभूत, प्रमाणभूत आधारभूत, अने चक्षुभूत हतो एथी बधे–संधि, विग्रह वगेरे रूप बधी जग्याए अने मंत्रि अमात्यादि स्थानरूप सर्वभूमिकाओमां ते साची सलाह आपनार गणातो हतो. एथी राजाए पण अंतःपुर जेवा स्थानोमां पण तेने प्रवेशवानी छूट आपी दीधी हती राजानो अतिविश्वासपात्र बनेलो ए चित्र सारथि आम समस्त राज्य-कार्यनो प्रेक्षक पण बनी गयो हतो

दिभ्यो नियोजनमायोगः, तस्य प्रयोगः–प्र=प्रकर्षेण योजनम्=उपायचिन्तनम् आयोगप्रयोगः, यद्वा-आयोगेन=द्विगुणादिलिप्सया प्रयोगः=अधमर्णानां सविधे द्रव्यस्य वितरणम् आयोगप्रयोगः, स संप्रयुक्तः=प्रवर्त्तितो येन, तस्मिन् वा सम्प्रयुक्तः=संलग्नो यः स आयोगप्रयोगसम्प्रयुक्तः=द्रव्योपार्जनप्रवृत्त इत्यर्थः, तथा-विच्छर्दितविपुलभक्तपानः-विच्छर्दिते वि=विशेषेण छर्दिते=भोजनावशिष्टे भक्तपाने=भक्तं च पानं च यस्य सः, तथा–बहुदासीदासगोमहिषगवेलक-प्रभूतः–दास्यश्च दासाश्च गावश्च महिषाश्च गवेलकाः=उरभ्राश्चेति–दासीदास-गोमहिषगवेलकाः, बहवः=प्रचुरा दासीदासगोमहिषगवेलका यस्य सः, तथा–बहुजनस्य=जातिविवक्षयैकवचनं संबन्धसामान्ये षष्ठी, तेन बहुजनैरित्यर्थो-बोध्यः, अत्र अपीत्यध्याहाराद् बहुजनैरपि अपरिभूतः=पराभवरहितश्चासीत्। तथा–स चित्रसारथिः–सामदण्डभेदोपप्रदानार्थशास्त्रेहामतिविशारदः–तत्र–साम =सान्त्वं, दण्डो=दमः, भेदो=द्वैधीकरणम्, उपप्रदानं=दानम्–इत्येतासु चतसृषु राजनीतिषु तथा–अर्थशास्त्रे=अर्थप्राप्तिसाधनप्रतिपादके शास्त्रे, ईहा-मतौ ईहा= विमर्शस्तत्प्रधाना मतिः=बुद्धिस्तस्यां च विशारदः=निपुणः, तथा औत्पत्तिक्या=स्वाभाविक्या–अदृष्टाश्रुताननुभूतविषयया स्वतः समुत्पन्नया, वैनयिक्या= गुरुसमाराधनसंप्राप्तशास्त्रार्थसंजनितया कर्मजया=कृषिवाणिज्यादिकर्मसंप्राप्तया, पारिणामिक्या=वयःपरिणामजनितया चेति चतुर्विधया=चतुष्प्रकारया बुद्धया उपपेतो=युक्तश्च आसीत्। तथा–स चित्रसारथिःप्रदेशिनो राज्ञो बहुषु कार्येषु=कर्तव्येषु प्रयोजनेष्विति यावत्, कारणेषु=कार्यजातसम्पादकहेतुषु कुटुम्बेषु=कुटुम्बविषये मन्त्रेषु=कर्तव्यनिश्चयार्थं गुप्तविचारेषु गुह्येषु=लज्जया गोपनीयेषु व्यवहारेषु रहस्येषु=रहसि=एकान्ते भवा रहस्यास्तेषु प्रच्छन्न-व्यवहारेष्विति यावत्, निश्चयेषु=पूर्णनिर्णयेषु, व्यवहारेषु=व्यवहारप्रष्टव्येषु, यद्वा–बान्धवादि समाचरितलोकविपरीतादिक्रिया प्रायश्चित्तेषु च आपृच्छनीयः–आ=ईषत् सकृत् प्रच्छनीयः=प्रष्टव्यः, परिप्रच्छनीयः–परि–सर्वतोभावेन असकृत् प्रच्छनीयः=प्रष्टव्यः, तथा स चित्रसारथिः–मेधिः=यथा मेधिमाश्रित्य गोमण्डलं भ्रमति, तथैव तमाश्रित्य सकलं मन्त्रिमण्डलं मन्त्रकार्येषु प्रवर्त्तते, अतः स मेधिः, तथा–प्रमाणम्=प्रत्यक्षादिप्रमाणवद्धेयोपादेयप्रवृत्तिनिवृत्तिरूपतया संशयराहित्येन पदार्थपरिच्छेदकः, आधारः=आधारवत्सर्वेषामाश्रयभूतः, आलम्बनं=रज्जुस्तम्भादिवद् विपत्कूपेपतज्जनोद्धारकतयाऽवलम्बनम्। ननु–आधारालम्बनयोः को भेदः? इति चेत्, यमधिष्ठाय जन उन्नतिं गच्छति स्वपदस्थो वा भवति स आधारः, यदवलम्बनेनच विपदो विनिवर्त्तते

तदालम्बनम्—इति भेदं गृहाण। चक्षुः=चक्षते-पश्यन्त्यनेनेति चक्षुः=नेत्रं, तद्वत् सर्वेषां सकलार्थप्रदर्शकः। यदुक्तम्—

"मेधिः प्रमाणम् आधारः आलम्बनं चक्षुः" इति, तदेव स्पष्टप्रतिपत्तये औपम्यवाचि-भूतशब्दसम्मेलनेन पुनरावर्त्तयति—'मेधिभूतः प्रमाणभूतः आधारभूतः आलम्बनभूतः चक्षुर्भूतश्चासीत्: तथा-स चित्रसारथिः सर्वस्थानसर्वभूमिकासु—सर्वस्थानानि=सन्धिविग्रहादिरूपाणि सकलकार्याणि च सर्वभूमिकाः=मन्त्रमात्यादिस्थानरूपाश्च तासु लब्धः उपलब्धः प्रत्ययः=प्रतीतिः यथार्थवादितया येन स तथाभूतः, तथा-वितीर्णविचारः-वितीर्णः=राज्ञा प्रदत्तः विचारः=विचरणम् अन्तःपुरादिषु सर्वत्र यस्मै स तथा राज्ञोऽति विश्वासपात्रमित्यर्थः, तथा-राज्यधुराचिन्तकः=सकलराज्यकार्यप्रेक्षकश्चापि आसीत् ॥सू० १०२॥

इसकी टीका का अर्थ इसी मूलार्थ के साथ कर दिया गया है. फिर भी जिन पदों का अर्थ मूलार्थ में नहीं किया गया है—उनका अर्थ इस प्रकार से है—विमर्शप्रधान मति का नाम ईहामति है. स्वाभाविक बुद्धि का नाम कि-जो अदृष्ट अननुभूत, अश्रुत आदि पदार्थों को विषय करती है और उनमें स्वयं ही उत्पन्न हो जाती है वह औत्पत्तिकी बुद्धि है। इसका नाम "हाजिर जवाबी" भी है. गुरुजनो की सेवा शुश्रूषादि करने से प्राप्त शास्त्रार्थ के चिन्तन से जो बुद्धि प्राप्त होती है उसका नाम वैनयिकी बुद्धि है। कृषिवाणिज्य आदिकर्म करते२ जो बुद्धि प्राप्त होती है उसका नाम कर्मजा बुद्धि है। जैसे२ उमर बढती जाती है वैसे२ जो बुद्धि प्राप्त होती है उसका नाम पारिणामिकी बुद्धि है। अर्थात् वयः परिणाम जनित बुद्धि का नाम ही पारिणामिकी बुद्धि है ॥सू०१०२॥

આનો ટીકાર્થ મૂલાર્થમાં જ સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે. છતાએ કેટલાક પદોનો અર્થ મૂલાર્થમાં સ્પષ્ટ થયો નથી તેમનો અર્થ સ્પષ્ટ કરવામાં આવે છે વિમર્શ પ્રધાનમતિનું નામ ઇહામતિ છે. અદૃષ્ટ, અનનુભૂત, અશ્રુત વગેરે પદાર્થોને વિષયભૂત બનાવનારી અને તેમાં પોતાની મેળે જ ઉત્પન્ન થનારી સ્વાભાવિક બુદ્ધિનું નામ ઔત્પત્તિકી બુદ્ધિ છે આને 'હાજિર જવાબી' પણ કહે છે ગુરુજનોની સેવા શુશ્રૂષા વગેરેથી પ્રાપ્ત થયેલી અને શાસ્ત્રાર્થ ચિંતનથી પ્રાપ્ત થયેલી બુદ્ધિ વૈનયિકી કહેવાય છે. કૃષિ વાણિજ્ય વગેરે કર્મો કરતા કરતા જે બુદ્ધિ પ્રાપ્ત થાય છે તેનું નામ કર્મજા બુદ્ધિ છે. આયુષ્યની વૃદ્ધિ સાથે સાથે જે બુદ્ધિ પ્રાપ્ત થાય છે તે પારિણામિકી બુદ્ધિ છે. એટલે કે વય પરિણામ જનિત બુદ્ધિનું નામ જ પારિણામિકી બુદ્ધિ છે. ॥સૂ૦૧૦૨॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं कुणाला नामं जणवए होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे। तत्थ णं कुणालाए जणवए सावत्थी नाम नगरी होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा। तिसे णं सावत्थीए णगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए कोट्ठए नाम चेइए होत्था, पुराणे जाव पासाईए ४। तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पएसिस्स रन्नो अंतेवासी जियसत्तू नाम राया होत्था, महया हिमवंत जाव विहरइ ॥ सू० १०३ ॥

छाया—तस्मिन् काले तस्मिन् समये कुणाला नाम जनपद आसीत्, ऋद्धस्तिमितसमृद्धः। तत्र खलु कुणालाया जनपदे श्रावस्ती नाम नगरी आसीत् ऋद्धस्तिमितसमृद्धा यावत् प्रतिरूपा। तस्याः खलु श्रावस्त्या नगर्याः बहिरु-

---

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल में–अवसर्पिणी के चौथे आरे में और केशिस्वामी के विहार से उपलक्षित उस समय में (कुणालानामं जणवए होत्था) कुणाला इस नामका देश था (रिद्धत्थिमियसमिद्धे) यह देश ऋद्ध, स्तिमित एवं समृद्ध था यावत् प्रतिरूप –सर्वोत्तम था (तत्थ णं कुणालाए जणवए सावत्थी नाम नयरी होत्था) उस कुणालादेश में श्रावस्ती नामकी नगरी थी (रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा) यह नगरी भी ऋद्ध स्तिमित एवं समृद्ध थी और यावत् प्रतिरूप थी (तीसे णं सावत्थीए णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए कोट्ठए नाम चेइए होत्था) उसश्रावस्ती नगरी के बाहिर में ईशानकोने में

"तेणं कालेणं तेणं समएणं" इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते काळे–અવસર્પિણીના ચોથા આરામાં અને કેશિસ્વામીના વિહારના સમયે (कुणाला णाम जणवए होत्था) કુણાલા નામે દેશ હતો (रिद्धित्थिमियसमिद्धे) આ દેશ ઋદ્ધ સ્તિમિત અને સમૃદ્ધ હતો યાવત પ્રતિરૂપ–સર્વોત્તમ હતો (तत्थ णं कुणालाए जणवए सावत्थी नाम नयरी होत्था) તે કુણાલદેશમાં શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી. (रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा) આ નગરી પણ ઋદ્ધ સ્તિમિત અને સમૃદ્ધ હતી અને યાવત્ પ્રતિરૂપ હતી. (तीसे णं सावत्थीए णयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए कोट्ठए नाम चेइए होत्था) તે શ્રાવસ્તી નગરીની બહાર ઈશાન કોણમાં

त्तरपौरस्त्ये दिग्भागे कोष्ठको नाम चैत्यमासीत्, पुराणं यावत् प्रासादीयम् ४। तत्र खलु श्रावस्त्यां नगर्यां प्रदेशिनो राज्ञोऽन्तेवासी जितशत्रुर्नाम राजा आसीत् महाहिमवदूविहरति ॥ सू० १०३ ॥

टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि—

तस्मिन् काले=अस्या अवसर्पिण्याश्चतुर्थारकलक्षणे काले तस्मिन् समये= केशिस्वामिविहरणोपलक्षिते समये कुणाला नाम जनपदः=कुणालाभिधो आसीत्। स जनपद ऋद्धस्तिमितसमृद्धः आसीत्। तत्र खलु कुणालायां जनपदे श्रावस्ती नाम नगरी आसीत्। सा नगरी ऋद्धस्तिमितसमृद्धा यावत् प्रतिरूपा चासीत्। यावत्पदेनात्र—औपपातिकसूत्रोक्तचम्पानगरीवर्णनं सर्वं संग्राह्यम्। तस्याः खलु श्रावस्त्या नगर्याः बहिः=प्रदेशे उत्तरपौरस्त्ये उत्तरपूर्वयोरन्तराले दिग्भागे=ईशानकोणे कोष्ठको नाम चैत्यमासीत्. तच्चैत्य पुराणं यावत् प्रासादीयं दर्शनीयम् अभिरूपं प्रतिरूपं चासीत्। यावत्पदेनात्र—औपपातिकसूत्रोक्तं सर्वमनुसन्धेयम्। तत्र खलु श्रावस्त्यां नगर्यां प्रदेशिनो राज्ञः अन्तेवासी अन्ते=समीपे वसतीत्येवं शीलोऽन्तेवासी=

कोष्ठक नामका चैत्य था। (पुराणे जाव पासाईए४) यह चैत्य प्राचीन था यावत् प्रासादीय था, दर्शनीय था, अभिरूप था और प्रतिरूप था (तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पएसिस्स रन्नो अंतेवासी जियसत्तू नाम राया होत्था, महया हिमवंत जाव विहरइ) उस श्रावस्ती नगरी में प्रदेशी राजा का अन्तेवासी जितशत्रु नाम का राजा था. जो महाहिमवान् आदि के जैसा बलवाला था.।

टीकार्थ इसका स्पष्ट है—श्रावस्ती नामकी नगरी का वर्णन औपपातिक सूत्र में कथित चंपानगरी के वर्णन जैसा है. चैत्य—उद्यान के वर्णन में भी औपपातिक सूत्रोक्त वर्णन यहां पर ग्रहण करना चाहिये. अन्तेवासी

કોષ્ઠક નામે ચૈત્ય હતું (पुराणे जाव पासाईए४) આ ચૈત્ય પ્રાચીન હતું યાવત્ પ્રાસાદીય હતું. દર્શનીય હતું, અભિરૂપ હતું અને પ્રતિરૂપ હતું. (तत्थ णं सावत्थीए नगरीए पएसिस्स रन्नो अंतेवासी जियसत्तू नाम राया होत्था, महया हिमवंत जाव विहरइ) તે શ્રાવસ્તી નગરીમાં પ્રદેશી રાજાનો અન્તેવાસી જિતશત્રુ નામે રાજા હતો. તે મહાહિમવાન્ વગેરે જેવો બળવાન હતો.

ટીકાર્થ—આ સૂત્રનો ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે. ઔપપાતિક સૂત્રમાં ચંપાનગરીનું જે પ્રમાણે વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તેમજ શ્રાવસ્તી નગરીનું વર્ણન પણ સમજવું જોઈએ. ચૈત્યનું વર્ણન પણ ઔપપાતિક સૂત્રના વર્ણનની જેમ સમજવું જોઈએ

शिष्य अन्तेवासीव-अन्तेवासी-सम्यगाज्ञापालक इति भावः, तथा सूत्रे जितशत्रुर्नाम राजा आसीत्। स जितशत्रू राजा महाहिमवद्-यावद् विहरति। 'जितशत्रो राज्ञः सर्वं वर्णनमौपपातिकसूत्रोक्तकूणिकराजवद् बोध्यमिति ॥सू० १०३॥

मूलम्--तएणं से पएसी राया अन्नया कयाइ महत्थं महग्धं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं सज्जावेइ सज्जावित्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छ णं चित्ता! तुम सावत्थिं नगरिं जियसत्तुस्स रण्णो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि जाइं तत्थ रायकज्जाणि य रायकिच्चाणि य रायनिईओ य रायववहारा य ताइं जियसत्तु ॥ सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे विहराहिंत्ति कट्टु विसज्जए ॥ सू० १०४ ॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा अन्यदा कदाचित महार्थं महार्घं महार्हं विपुलं राजार्हं प्राभृतं सज्जयति, सज्जयित्वा चित्रं सारथिं शब्द-

---

शब्द का अर्थ शिष्य है. वह अन्तेवासी के समान अन्तेवासी था अर्थात उसकी आज्ञा का अच्छी तरह से पालक था. जितशत्रु राजा का सर्ववर्णन औपपातिक सूत्रोक्त कूणिक राजाकी तरह से है ऐसा जानना चाहिये ॥सू०१०३॥

'तएणं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं से पएसी राया अन्नया कयाइ महत्थं महग्धं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं सज्जावेइ) एक दिन की बात है कि प्रदेशी राजा ने महार्थ-विपुल प्रयोजनवाला—सातिशयप्रयोजनयुक्त, महार्घ-बहूमूल्य, महार्ह—अतिशोभायुक्त, विपुल—बहुत बडा ऐसा राजा के योग्य प्राभृत—भेंट

અન્તેવાસી શબ્દનો અર્થ શિષ્ય છે. તે અન્તેવાસીની જેમ અન્તેવાસી હતો એટલે કે તે સરસ રીતે તેની આજ્ઞાનું પાલન કરતો હતો. જિતશત્રુ રાજાનું બધું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રોકત કૂણિક રાજાની જેમજ સમજવું જોઈએ. ॥ સૂ૦ ૧૦૩॥

'तएणं से पएसी राया' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(तएणं से पएसी राया अन्नया कयाइ महत्थं महग्धं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं सज्जावेइ) તે પ્રદેશી રાજાએ એક દિવસે મહાર્થ વિપુલ પ્રયોજનવાળી—સાતિશય પ્રયોજન યુકત, મહાર્ઘ—બહુમૂલ્યવાળી, મહાર્હ અતિશોભાયુકત, વિપુલ—પુષ્કળ પ્રમાણમા રાજાઓના માટે યોગ્ય એવી ભેટ (પ્રાભૃત) તૈયાર કરી.

यति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु चित्र ! त्वं श्रावस्तीं नगरीं जित-शत्रोः राज्ञ इदं महार्थं यावत् प्राभृतम् उपनय, यानि तत्र राजकार्याणि च राजकृत्यानि च राजनीतयश्च राजव्यवहाराश्च तानि जितशत्रुणा सार्द्धं स्वयमेव प्रत्युत्प्रेक्षमाणो विहरेति कृत्वा विसर्जितः ॥सू० १०४॥

टीका—'तएणं इत्यादि--

ततः खलु स प्रदेशो राजा अन्यदा कदाचित्=अन्यस्मिन्=कस्मिंश्चित् समये महार्थं-महान्=विपुलः अर्थः=प्रयोजनं यस्य स तथा तत्-सातिशयप्रयोजनयुक्तम् महार्घं=बहुमूल्यं महार्हम्=अतिशोभनं विपुलं=बृहत् राजार्हं=नृपयोग्यं प्राभृतम्=उपहारम् सज्जयति=कल्पयति, सज्जयित्वा चित्रं सारथिं शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे चित्र ! त्वं खलु श्रावस्तीं नगरीं गच्छ, तत्र-जितशत्रोः राज्ञः कृते इदं महार्थं यावत् प्राभृतम् उपनय=प्रापय यानि तत्र=श्रावस्त्यां राजकार्याणि=राज्ञो राज्यसम्बन्धीनि कर्त्तव्यानि राजकृत्यानि=राज्ञःस्वविषयाणि प्रतिदिवससम्बन्धिकर्त्तव्यानि, राजनीतयः=साम-दण्ड-भेदोपप्रदानरूपाः राज-

---

सजाया (सज्जावित्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ) सजाकर फिर उसने चित्र सारथि को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उससे ऐसा कहा (गच्छणं चित्ता ! तुमं सावत्थिं नयरिं जियसत्तुस्स रण्णो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि) हे चित्र ! तुम श्रवस्तीनगरी में जाओ वहां जितशत्रु के लिये यह महाप्रयोजन साधक यावत् भेंट दे आओ तथा (जाइं तत्थ रायकज्जाणि य रायकिच्चाणि य रायनीईओ य रायववहारा य ताइं जियसत्तुणा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे विहराहि त्ति कट्टु विसज्जिए) जो वहां पर राजा के राजसंबंधी कर्तव्य हों राजा के अपने प्रतिदिवस के कर्तव्य हो, राजनीति साम, दंड, भेद एवं उपप्रदानरूप हों एवं राजव्यवहार हों

(सज्जावित्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ) તૈયાર કરીને તેણે ચિત્ર સારથીને બોલાવ્યો (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું, (गच्छ णं चित्ता ! तुमं सावत्थिं नयरिं जियसत्तुस्स रण्णो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि) હે ચિત્ર ! તમે શ્રાવસ્તીનગરીમાં જાવો અને જિતશત્રુને આ મહાપ્રયોજન સાધક યાવત્ ભેટ આપી આવો, તથા (जाइं तत्थ रायकज्जाणि य रायकिच्चाणि य रायनीईओ य रायववहारा य ताइं जियसत्तुणा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे विहराहि त्ति कट्टु विसज्जिए) ત્યાં રાજાના રાજ્ય સંબંધિ જે કંઈ કર્તવ્યો હોય. રાજનીતિને લગતી સામ, દંડ, ભેદ અને ઉપપ્રદાન રૂપ-બાબતો હોય, રાજ્યન

व्यवहाराः=राजकृतन्यायाश्च भवन्ति, तानि सर्वाणि जितशत्रुणा नृपेण सार्द्धं स्वयमेव प्रत्युपेक्षमाणो=निरीक्षमाणो विहर=तिष्ठ इति कृत्वा=इत्युक्त्वा स चित्रसारथिस्तेन विसर्जितः ॥ सू० १०४ ॥

मूलम्—तएणं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठ—जाव पडिसुणेत्ता तं महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ, पएसिस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, सेयविया नयरीए मज्झंमज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं महत्थं जाव पाहुडं ठवेइ, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणहा तएणं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेंति, ताभाणत्तियं पच्चप्पिणंति। तएणं से चित्ते सारही कोडुंबिय-पुरिसाण अंतिए एयमट्ठ जाव हियए ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सन्नद्धबद्धवम्मियकवए उप्पालियसरासणपट्टिए पिणद्धगेविज्जविमलवरचिंघपट्टे गहियाउहप्पहरणे तं महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटं आसरहं दुरुहेइ, बहुहि पुरिसेहिं सन्नद्धजाव गहियाउहपहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं

राजकृत न्याय हों, उन सब का जिनशत्रु राजा के साथ निरीक्षण करते रहो. इस प्रकार कहकर चित्रसारथि को उसने विसर्जित करदिया।
टीकार्थ स्पष्ट है ॥सू०१०४॥

ન્યાય હોય આ બધાનું જિતશત્રુ રાજાની પાસે રહીને તમે નિરીક્ષણ કરતા રહો, આ પ્રમાણે કહીને તેણે ચિત્ર સારથિને જવાની આજ્ઞા કરી,
આ સૂત્રનો ટીકાર્થ સ્પષ્ટ છે, ॥૧૦૪॥

धरेज्जमाणेणं महया—भडचडगररहपहकरविंदपरिक्खित्ते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, सेयवियाए णयरीए मज्झं मज्झेणं णिग्गछइ, सुहेहिं वासेहिं पायरासेहिं नाइविकिट्ठेहिं अंतरावासेहिं वसमाणे वसमाणे केइयद्धस्स जणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव कुणाला जणवए जेणेव सावत्थी नयरी तेणेव उवागच्छइ, सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ, जेणेव जियसत्तुस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, तुरए णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, तं महत्थं जाव पाहुडं गिण्हइ, जेणेव अब्भितरिया उवट्ठाणसाला जेणेव जियसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ, जियसत्तु रायं करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, तं महत्थं जाव पाहुडं उवणेइ ॥ सू० १०५॥

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः प्रदेशिना राज्ञा एवमुक्तः सन् हृष्ट यावत् प्रतिश्रुत्य तत् महार्थं यावत् प्राभृतं गृह्णाति, प्रदेशिनो राज्ञो ऽन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामति, श्वेतविकाया नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव स्वक

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं) इसके बाद (से चित्ते सारही) उस चित्र सारथिने जब (पएसिणा रण्णा) प्रदेशी राजाने एवं वुत्ते समाणे) उससे ऐसा कहा-तब वह (हट्ठ जाव) बहुत प्रसन्न हुआ यावत् (पडिसुणेत्ता तं महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ) उसकी आज्ञा के वचनों को स्वीकार करके उस महार्थसाधक यावत्-प्राभृतको लिया (पएसिस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमइ) और लेकर-वह प्रदेशी राजा के पास से निकला (सेयविया नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ) और श्वेतविका नगरी के

सूत्रार्थ—(तएणं) त्यार पछी (से चित्ते सारही) ते चित्र सारथिने ज्यारे (पएसिणा रण्णा) प्रदेशी राजाए (एवं वुत्ते समाणे) आ प्रमाणे आज्ञा करी त्यारे ते (हट्ठ जाव) अत्यंत प्रसन्न थयो यावत् (पडिसुणेत्ता तं महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ) तेनी आज्ञाना वचनोने स्वीकारीने तेणे ते महार्थसाधक यावत् भेटने लई लीधी. (पएसिस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमइ) अने लईने ते प्रदेशी राजानी पासेथी हवे ते बहार नीकळ्यो, (सेयविया नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए

गृहं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तत् महार्थं यावत् प्राभृतं स्थापयति, कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादिषुः क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः! सच्छत्र यावत् युद्धसज्जं चातुर्घण्टम् अश्वरथं युक्तमेव उपस्थापयत यावत् प्रत्यर्पयत। ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः तथैव प्रतिश्रुत्य क्षिप्रमेव सच्छत्रं यावत् युद्धसज्जं चातुर्घण्टम् अश्वरथयुक्तमेव उपस्थापयन्ति,

---

बीचों बीच से होता हुआ जहां अपना गृह था वहां पर आया (उवागच्छित्ता तं महत्थं जाव पाहुड ठवेइ) वहां आकर के उसने उस महार्थ-महाप्रयोजनसाधक यावत् प्राभृत को एक तरफ रख दिया (कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) और अपने कौटुम्बिक पुरुषोंको बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) उनसे ऐसा कहा (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं चाउग्घटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह, जाव पच्चप्पिणह) हे देवानुप्रियो! तुम लोग शीघ्र ही रथ को घोडा जोतकर तैयार करके यहां ले आओ, उसे चार घंटाओं से सज्जित करना. यावत् फिर हमारी इस आज्ञा को हमें वापिस करना–उस पर छत्र भी लगाना यावत् उसे युद्ध के योग्य सज्जित करना. (तएणं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं चाउग्घट आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेंति) चित्र सारथि के इस प्रकार वचन सुनकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने बहुत ही जल्दी छत्रयुक्त करके यावत् चार घटोंवाले उस अश्वरथ को तैयार

गिहे तेणेव उवागच्छइ) અને શ્વેતવિકાનગરીની વચ્ચે થઈને જ્યાં પોતાનું ઘર હતું ત્યાં ગયો (उवागच्छित्ता तं महत्थं जाव पाहुडं ठवेइ) ત્યાં જઈને તેણે તે મહાર્થ સાધક મહાપ્રયોજન સાધક યાવત્ ભેટને એક તરફ મૂકી દીધી, (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) અને પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા, (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેમને કહ્યું, (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह) હે દેવાનુપ્રિયો! તમે ઘોડા જોતરીને શીઘ્ર રથ તૈયાર કરો, અને અહીં લાવો, રથને ચાર ઘંટાઓથી સજ્જિત કરો યાવત્ આજ્ઞા પ્રમાણે કામ પુરું કરીને અમને ખબર આપો, રથની ઉપર છત્ર હોવું જોઈએ યાવત્ બધી રીતે યુદ્ધના માટે યોગ્ય હોય તેમ સજ્જિત કરજો, (तएणं कोडुंबियपुरिसा तहेव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं चाउग्घटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेंति) ચિત્ર સારથિના આ પ્રમાણે વચન સાંભળીને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ એકદમ ત્વરાથી છત્રયુક્ત યાવત્ ચાર ઘંટોથી સુસ-

तामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयन्ति । ततः खलु स चित्रः सारथिः कौटुम्बिकपुरुषाणाम् अन्तिके एतमर्थं यावत् हृदयः स्नातः कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः सन्नद्धबद्धवर्मितकवचः उत्पीडितश रासनपट्टिकः पिनद्धग्रैवेयविमलवरचिह्नपट्टो गृहीतायुधप्रहरणस्तन्महार्थं यावत् प्राभृतं गृह्णाति, यत्रैव चातुर्घण्टः अश्व रथस्तत्रैव उपागच्छति, चातुर्घण्टम् अश्वरथं दूरोहति. बहुभिः पुरुषैः सनद्ध-

कर उपस्थित कर दिया (तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति) और चित्र सारथि के पास रथ को तैयार हो जाने की खबर भेज दी. (तएणं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जाव हियए ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सन्नद्धबद्धवम्मियकवए, उप्पीलियसरासणपट्टिए, पिणद्धगेविज्ज,विमलवरचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे त महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ) कौटुम्बिक पुरुषों से की गई खबर को सुनकर वह चित्र सारथि बहुत ही अधिक आनंदित एवं संतुष्ट चित्त हुआ-उसने उसी समय उठकर स्नान किया. बलिकर्म (काकआदि को अन्नभाग देनेरूप) किया, कौतुक मंगल एवं प्रायश्चित्त किये अच्छी तरह से बांधकर कवच पहिरा. प्रत्यंचा चढाकर धनुष को नम्रीभूत किया, ग्रीवा में हार पहिरा, तथा सुन्दर चित्रों से चिह्नित निर्मल वस्त्र धारण किये और खड्गादिक आयुधों को साथ में लिये. इस प्रकार से अच्छी तरह से सज्जित होकर उसने उस महार्थसाधक यावत् प्राभृत को हाथ में लिया और (जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ

સજ્જિત કરીને અશ્વરથને ઉપસ્થિત કર્યો. (तमाणत्तिय पच्चप्पिणंति) અને રથ તૈયાર થઈ જવાની ખબર ચિત્ર સારથિની પાસે પહોંચાડી. (तएणं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जाव हियए ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सन्नद्धबद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टिए, पिणद्धगेविज्जविमलवरचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे त महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ) કૌટુંબિક પુરુષોની કામ પૂર્ણ થઈ જવાની ખબર સાંભળીને તે ચિત્ર સારથિ ખૂબજ આનંદિત અને સંતુષ્ટ ચિત્ત થયો. તેણે તરત જ સ્નાન કર્યું, બલિ કર્મ કર્યું. કૌતુક મંગલ અને પ્રાયશ્ચિત્ત કર્યાં. સરસ રીતે કસીને કવચ પહેર્યું, પ્રત્યંચા ચઢાવીને ધનુષને નમ્ર બનાવ્યું ગળામાં હાર પહેર્યો. સુંદર સુંદર ચિત્રોથી ચિહ્નિત નિર્મળ વસ્ત્રો ધારણ કર્યો અને ખડ્ગ વગેરે આયુધો અને પ્રહરણો સાથે લીધાં આ પ્રમાણે સરસ રીતે સજ્જિત થઈને તેણે તે મહાર્થ સાધક યાવત્ ભેટને હાથમાં લીધી અને (जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ) લઈને તે જ્યાં ચાતુર્ઘંટ અશ્વરથ હતો ત્યાં ગયો ત્યાં જઈને તે રથ ઉપર

यावद्-गृहीतायुधप्रहरणैः सार्द्धं सम्परिवृतः सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन महाभटचटकरथपहकरवृन्दपरिक्षिप्तः स्वाद् गृहाद् निर्गच्छति, श्वेतविकाया नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, सुखैः वासैः प्रातराशैः नातिविकृष्टैः अन्तरावासैः वसन् वसन् केकयार्द्धस्य जनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव कुणाला जनपदो यत्रैव श्रावस्ती नगरी तत्रैव उपागच्छति, श्रावस्त्यां

चाउग्घटं आसरहं दुरूहेइ) लेकर जहां वह चातुर्घट अश्वरथ तैयार खडा था वहां पर आया-वहां आकरके फिर वह रथ पर चढ़ा (बहुहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे सकोरिंटमल्लदामेण छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगररहपगकरविंदपरिक्खित्तो साओ गिहाओ णिग्गच्छइ) तब सन्नद्ध यावत् गृहीत आयुध प्रहरणवाले ऐसे अनेक पुरुषों से घिर गया, छत्रधारी द्वारा ध्रियमाण एवं कोरण्टपुष्पमाला से विभूषित ऐसा छत्र उसके ऊपर तान दिया गया, महाभटों के विस्तृत समूह के वृन्दने उसे आकर घेर लिया. इस प्रकार की परिस्थिति से युक्त हुआ वह अपने घर से निकला (सेयवियाए णयरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ) और निकलकर वह श्वेतविका नगरी के बीचोबीच से होकर चला-(सुहेहिं वासेहिं पयरासेहिं नाइविकिट्ठेहिं अंतरावासेहिं वसमाणे२ केइयद्धस्स जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कुणाला जणवए जेणेव सावत्थी नयरी तेणेव उवागच्छइ) इस प्रकार घर से निकला हुआ वह सुखकर रात्रिनिवासों से, प्रातःकालिकलघु भोजनों से-कलेवाओं से, तथा अतिदूर के नहीं ऐसे अन्तरावासों से पडावों से-मध्याह्नकालिक विश्रामस्थानों से जगह२ ठहरता२ केकयार्द्धजनपद के मध्य मध्य से होता हुआ

સવાર થયો. (बहुहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरेज्जमाणेणं महया-भडचडगररहपगकरविंद परिक्खित्तो साओ गिहाओ णिग्गच्छइ) જ્યારે સન્નદ્ધ યાવત્ જેમના હાથોમાં આયુધો છે એવા અનેત પુરુષોથી પરિવેષ્ટિત થઈને તથા કોરંટ પુષ્પમાળાથી વિભૂષિત અને છત્રધારી વડે ધારણ કરેલું છત્ર તેની ઉપર તાણવામાં આવ્યું ત્યારે તેને મહાભટોના વિશાલ સમૂહ વૃન્દે આવીને પ્રવિષ્ટ કરી લીધો. આમ તે પોતાના ઘરથી રવાના થયો. (सुहेहिं वासेहिं पयरासेहिं नाइविकिट्ठेहिं अंतरावासेहिं वसमाणे २ केइयद्धस्स जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कुणाला जणवए जेणेव सावत्थी नयरी तेणेव उवागच्छइ) આ પ્રમાણે ઘેરથી રવાના થઈને તે સુખકર રાત્રિનિવાસો, પ્રાતઃકાલિક લઘુભોજનો, અતિ દૂર નહિ એટલે કે નજીકનજીકના અન્તરાવાસો, (મુકામો) મધ્યાનકાલિક વિશ્રામો અને સ્થાન સ્થાન પર મુકામ કરતો તે કેકયાર્દ્ધ જનપદની

नगर्यां मध्यमध्येन अनुप्रविशति, यत्रैव जितशत्रो राज्ञोगृहं यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला तत्रैव उपागच्छति, तुरगान् निगृह्णाति, रथं स्थापयति, रथात् प्रत्यवरोहति, तत् महार्थं यावत प्राभृतं गृह्णाति यत्रैव आभ्यन्तरिकी उपस्थानशाला यत्रैव जितशत्रु राजा तत्रैव उपागच्छति, जितशत्रुं राजानं करतलपरिगृहीतं यावत् कृत्वा जयेन विजयेन वर्द्धयति, तन्महार्थं यावत् प्राभृतम् उपनयति ॥ सू० १०५ ॥

जहां कुणाला जनपद-(देश) था, और जहां उसमें श्रावस्ती नगरी थी वहां पर आ पहुँचा, (सावत्थीए नयरीए मज्झं मज्झेणं अणुपविसइ. जेणेव जियसत्तुस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ) वहां आकर वह ठीक बीचोंबीच से होकर उस श्रावस्ती नगरी मे प्रविष्ट हुआ और जहा जितशत्रु राजा का प्रासाद था, जहा बाह्य उपस्थानशाला थी वहा आया (तुरए णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहओ पच्चोरुहइ, तं महत्थ जाव पाहुडं गिण्हइ) वहा आकर उसने घोडों को रोका, रथ को खडा किया और फिर उस रथ में से वह नीचे उतरा और उसमें से उसने महार्थ सायक उस प्राभृत को लिया (जेणेव अब्भिंतरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव जियसत्तू राया, तेणेव उवागच्छइ. जियसत्तु रायं करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ तं महत्थं जाव पाहुडं उवणेइ) और उठाकर जहां आभ्यन्तरिकी उपस्थानशाला थी, जहां जितशत्रु राजा था वहा पर आया. वहां आकर के उसने जितशत्रु राजा को दोनों हाथों को अंजलि बनाकर एवं उसे मस्तक पर रखकर जयविजय शब्दों का उच्चारण करते

મધ્યમાં થઈને જ્યાં કુણાલા દેશ હતો અને તેમાં પણ જ્યાં શ્રાવસ્તી નગરી હતી ત્યાં પહોંચ્યો. (सावत्थीए नयरीए मज्झं मज्झेणं अणुपविसइ. जेणेव जियसत्तुस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ) ત્યાં પહોંચીને તે ઠીક મધ્યમાર્ગેથી પસાર થઈને તે શ્રાવસ્તી નગરીમાં પ્રવિષ્ટ થયો અને જ્યાં જિતશત્રુ રાજાનો પ્રાસાદ (મહેલ) હતો જ્યાં બાહ્ય ઉપસ્થાન શાળા હતી ત્યાં ગયો (तुरए णिगिण्हइ रहं ठवेइ. रहाओ पच्चोरुहइ. तं महत्थ जाव पाहुडं गिण्हइ) ત્યાં પહોંચીને તેણે ઘોડાઓને રોક્યા. અને રથને ઊભો રાખ્યો અને રથમાંથી નીચે ઉતરીને તેણે તે મહાર્થ સાધક ભેટ લીધી (जेणेव अब्भिंतरिया उवट्ठाणसाला. जेणेव जियसत्तू राया, तेणेव उवागच्छइ, जियसत्तुं रायं करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ. तं महत्थं जाव पाहुडं उवणेइ, અને ઉઠાવીને જ્યાં આભ્યંતરિકી ઉપસ્થાનશાળા હતી જ્યાં જિતશત્રુ રાજા હતા ત્યાં ગયો ત્યાં જઈને તેણે જિતશત્રુ-રાજાને બન્ને હાથોની અંજલિ બનાવીને તેને

टीका—'तएण से' इत्यादि—

ततः खलु स चित्रः सारथिः प्रदेशिना राज्ञा एवं=पूर्वोक्तप्रकारेण उक्तः सन् हृष्ट यावत–यावत्पदेन–हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितो हर्षवशविसर्पहृदयः करतलपरिगृहीतं दशनखं शिर आवर्त्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवं देवस्तथेति आज्ञाया विनयेन वचनं प्रतिशृणोति'–इति संग्राह्यम्। अस्य वाक्यस्यार्थोऽस्यैव सूत्रस्य पञ्चमसूत्र टीकातोऽवगम्य इति प्रतिश्रुत्य तत् महार्थं यावत् प्राभृत गृह्णाति=उपादत्ते, गृहीत्वा प्रदेशिनो राज्ञः अन्तिकात्=समीपात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य श्वेतविकाया नगर्या मध्य·

हुए वधाया, और वधाकर उस महाप्रयोजनसाधक यावत् प्राभृत को उन्हें दिया, अर्थात् राजा को भेट किया।

टीकार्थ—प्रदेशी राजाने जब अपने चित्र सारथि से ऐसा कहा तब हृष्ट हुआ, तुष्ट हुआ एवं चित्त में आनन्दित हुआ-प्रीतियुक्त मनवाला हुआ, परमसौमनस्यित हुआ हर्ष के वश से उसका हृदयहर्षित होने लग गया. उसी समय उसने करतलपरिगृहीत, दशनखसंयुक्त एवं शिर पर आवर्त्तवाली ऐसी अंजलि करके "हे देव! आप जैसे कहते हैं सो मुझे प्रमाण है" इस प्रकार कह कर उनकी आज्ञा को बडे विनय के साथ स्वीकार किया, हृष्ट तुष्ट आदि पदों का अर्थ इस सूत्र के पांचवें सूत्र की टीका से जानना चाहिये। इस प्रकार अपने स्वामी की आज्ञा स्वीकार करके उसने उस महाप्रयोजन साधक यावत् प्राभृत (भेट) को अपने हाथ में ले लिया और लेकर वह प्रदेशी राजा के पास से चला आया और श्वेतविका नगरी के मध्यभाग से होकर अपने घर पर आ गया. वहां आकरके

મસ્તકે મૂકી તે જયવિજય શબ્દોનું ઉચ્ચારણ કરતાં વધામણી આપી અને ત્યારપછી તે મહાપ્રયોજન સાધક યાવત્ ભેટને રાજાની સામે મૂકી–રાજાને તે ભેટ અર્પિત કરી.

ટીકાર્થ—પ્રદેશી રાજાએ જ્યારે પોતાના ચિત્ર સારથિને આ પ્રમાણે કહ્યું ત્યારે હૃષ્ટ, તુષ્ટ, ચિત્તમાં આનંદિત અને પ્રીતિયુક્ત મનવાળો થયેલો તથા પરમસૌમનસ્યિત થયેલો તે હર્ષાતિરેકથી અતીવ હર્ષિત થઈ ગયો. તેણે તરત જ કરતલ પરિગૃહીત દશનખસંયુક્ત અને મસ્તક પર અંજલિ ફેરવીને કહ્યું–"હે દેવ! જે આપ આજ્ઞા કરો છો તે મારા માટે પ્રમાણરૂપ છે. આ પ્રમાણે કહીને તેણે રાજાની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી હૃષ્ટ તુષ્ટ વગેરે પદોનો અર્થ આ સૂત્રની પાંચમાં સૂત્રની ટીકામાં સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યો છે. આ રીતે પોતાના સ્વામીની આજ્ઞાને સ્વીકારી તેણે મહાપ્રયોજન સાધક યાવત્ ભેટનો હાથમાં લીધી અને લઈને તે પ્રદેશી રાજા પાસેથી આવતો રહ્યો અને શ્વેતવિકાનગરીના મધ્યભાગમાં થઈને પોતાને ઘેર ગયો. ત્યાં પહોંચીને તેણે તે

मध्येन व्यतिव्रजन् यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तत् महार्थं यावत् प्राभृतं स्थापयति, स्थापयित्वा कौटुम्बिकपुरुषान्=भृत्यपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्–भो देवानुप्रियाः! यूयं क्षिप्रमेव=शीघ्रमेव सच्छत्रं यावत्–यावत्पदेन–सध्वजं सघण्टं सपताकं सतोरणवरं सनन्दिघोषं सकिङ्किणीहेमजालपरिक्षिप्तं हैमवतचित्रतिनिशकनकनिर्युक्तदारुकं सुसंपिनद्धचक्रमण्डलधुराकं कालायससुकृतनेमियन्त्रकर्माणम् आकीर्णवरतुरगसुसंप्रयुक्तं कुशलनरच्छेकसारथि सुसंपरिगृहीतं शरशतद्वात्रिंशत्तूणपरिमण्डितं सकङ्कटावतंसकं सचापप्रहरणावरणभृतयोधयुद्धसज्जम् इति संग्राह्यम्, अथ स्त्वेषां पदानां त्रिषष्टितमसूत्रतो द्वितीयाविभक्तिव्यत्ययेना-

---

उसने उस महाप्रयोजन साधक यावत् प्राभृत को रख दिया, रखकर फिर उसने नोकरचाकररूप कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया, बुलाकर उसने उस प्रकार कहा–हे देवानुप्रियो! आपलोग शीघ्र ही छत्रसहित यावत्–ध्वजासहित, घण्टासहित, पताकासहित, उत्तमतोरणसहित, नन्दिघोषसहित, किङ्किणीसहित, इत्यादि ६२वें सूत्रोक्त विशेषणों से सहित रथको उपस्थित करो–६२वें सूत्र में उक्त पाठ जो यहां यावत् शब्द से गृहीत हुआ है द्वितीयाविभक्ति का व्यत्यय करके लिया गया है सो इस प्रकार से है—

"सध्वज, सघण्टं, सपताकं, सतोरणवरं, सनन्दिघोषं, सकिङ्किणीहेमजालपरिक्षिप्तं, हैमवतचित्रतिनिशकनकनिर्युक्तदारुकं, सुसंपिनद्धचक्रमण्डलधुराकं, कालायससुकृतनेमियन्त्रकर्माणम्, आकीर्णवरतुरगसुसंप्रयुक्तं, कुशलनरच्छेकसारथिसुसंपरिगृहीतं, शरशतद्वात्रिंशत्तूणपरिमंडितं, सकङ्कटावतंसकं, सचापप्रहरणावरणभृतयोधयुद्धसज्जं" इस समस्त पाठका अर्थ

મહાપ્રયોજન સાધક યાવત્ ભેટને મૂકી દીધી મૂકીને તેણે નોકર–ચાકર વગેરે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા. અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું–'હે દેવાનુપ્રિયો! તમે ઓ સત્વરે છત્રયુક્ત યાવત્ ધ્વજા સહિત, ઘંટા સહિત વગેરે ૬૨ મા સૂત્રોક્ત વિશેષણોથી યુક્ત રથને ઉપસ્થિત કરો. ૬૨ મા સૂત્રનો પાઠ જે અહીં યાવત શબ્દ વડે ગૃહીત થયો છે તે બીજી વિભક્તિનો વ્યત્યય (વ્યતિક્રમ) કરીને ગ્રહણ કરાયો છે તે આ પ્રમાણે છે—

"સધ્વજ સઘણ્ટં, સપતાકં, સતોરણવરં, સનન્દિઘોષં, સકિઙ્કિણીહેમજાલપરિક્ષિપ્તં, હૈમવતચિત્રતિનિશકનકનિર્યુક્તદારુકં, સુસંપિનદ્ધચક્રમણ્ડલધુરાકં, કાલાયસસુકૃતનેમિયન્ત્રકર્માણમ્ આકીર્ણવરતુરગસુસંપ્રયુક્તં, કુશલનરચ્છેકસારથિસુસંપરિગૃહીતં શરશતદ્વાત્રિંશત્તૂણપરિમંડિતં, સકઙ્કટાવતંસકં, સચાપપ્રહરણાવરણભૃતયોધયુદ્ધસજ્જં" આ પાઠનો અર્થ આ પ્રમાણે છે—

इसप्रकार से है-सध्वज-ध्वजा से युक्त है सघण्ट-दोनों ओर घण्टासहित है, सपताक-पताका सहित है, सतोरणवरयुक्त-प्रधानतोरण सहित है, सनन्दिघोष-द्वादशप्रकार के वाजों से युक्त है. सकिङ्किणीहेमजालपरिक्षिप्त-क्षुद्र घंटिकावाले हेमजाल से परिवेष्टित है. हैमवतचित्रतिनिशकनकनियुक्त दारुक-हिमालय पर्वत पर उत्पन्न हुई तथा विस्मयकारक ऐसी तिनिशवृक्षविशेषकी सुवर्ण शोभित लकडी से जो बनाने में आया है, सुसंपिनद्धचक्रमण्डलधुराक-अच्छी तरह से जिसमें चक्रमण्डल एवं धुरा बांधे गये हैं. कालायस सुकृतनेमियन्त्रकर्मा-उत्तमजाति के कृष्ण लोह से जिसमें नेमियंत्र कर्मकी रचना की गई है-अर्थात् चक्रान्तभूस्पर्शिभाग की संघर्षण से रक्षा करने के लिये अरकों के ऊपर फल कमण्डलरूप आवरण जिसमें लगाया गया है, आकीर्ण वरतुरगसुसंप्रयुक्त-आकीर्णजातिके उत्तम घोडे जिसमें जुते हैं, कुशलनरच्छेकसारथिसुसंपरिगृहीत निपुणपुरुषों में भी चतुरसारथीद्वारा अच्छी तरह से जो परिगृहीत हो रहा है, शरशत द्वात्रिंशतूणपरिमंडित-शतसंख्यक शरों के ३२ संख्यक बाणकोषों से जो परिमण्डित है, सचापशरप्रहरणाऽऽवरण भृतयोधयुद्धसज्ज-धनुषसहित बाणों से, कुन्त, तोमर, परशु आदि शास्त्रों से. एवं कवच आदि उपकरणों से जो परिपूर्ण है. युद्धकारी योद्धाओं के संग्राम के लिये

સધ્વજ-ધ્વજા સહિત છે, સઘંટ-બન્ને તરફ ઘંટાઓ છે, સપતાક-પતાકાસહિત છે, સતોરણવર યુકત-પ્રધાન તોરણ સહિત છે, સનંદિઘોષ-બાર પ્રકારના વાજાઓથી યુકત છે. સકિંકિણી હેમજાલ પરિક્ષિપ્ત-ક્ષુદ્ર (નાની), ઘંટિકાવાળા હેમજાલથી પરિવેષ્ટિત છે, હૈમવત ચિત્રતિનિશકનકનિયુંકત દારુક--હિમાલય પર્વત પર ઉત્પન્ન થયેલી, વિસ્મયકારક તિનિશવૃક્ષ વિશેષની સુવર્ણ મંડિત લાકડીથી જે તૈયાર કરવામાં આવ્યો છે સુસંપિનદ્ધચક્રમંડલ ધુરાક જેમાં ચક્રમંડળ અને ધુરાઓ સુસંબદ્ધ છે, કાલાયસ સુકૃત નેમિયંત્રકર્મા-ઉત્તમ જાતિના કૃષ્ણ લોહથી જેના નેમિયત્રની રચના કરવામાં આવી છે. એટલે કે ચક્રનો જે ભાગ ભૂસ્પર્શ કરે છે તેને સંઘર્ષથી રક્ષવા માટે કૃષ્ણ લોહની પાટી જેના પર લગાડવામાં આવી છે. આકીર્ણવર તુરગસુસંપ્રયુકત-આકીર્ણ જાતિના ઉત્તમ ઘોડાઓ જેમાં જોતરેલા છે, કુશલનરચ્છેક સારથિ સુસંપરિગૃહીત-નિપુણપુરુષોમાં પણ અતિનિપુણ સારથિ વડે જે સારી રીતે હાંકવામાં આવી રહ્યો છે,-શરશત દ્વાત્રિંશત્તૂણપરિમંડિત-સો શરો અને બત્રીશ જેટલા તૂણિરોથી જે પરિમંડિત છે, સચાપશરપ્રહરણાઽઽકરણભૃતયોધ -યુદ્ધ સજ્જ-ધનુષ સહિત શરોથી, કુંત, તોમર, પરશુ વગેરે શાસ્ત્રોથી, અને કવચ વગેરે ઉપકરણોથી જે પરિપૂર્ણ છે, યુદ્ધ ખેલનારાઓ

ऽवसेय इति। एवंविधं चातुर्घण्ट=चतसृभिर्घण्टाभिः शोभितम् अश्वरथं युक्तमेव=योजितं कृत्वैव उपस्थापयत, यावत् प्रत्यर्पयत=मदीय निर्देशानुसारेण सर्वं प्रकल्प्य मां सूचयत। ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः तथैव=यथा चित्र सारथिना समाज्ञप्तं तथैव तदीयवचनं प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य क्षिप्रमेव सच्छत्रं यावत युद्धसज्जं चातुर्घण्टम् अश्वरथं युक्तमेव उपस्थापयन्ति, ताम् आज्ञप्तिकाम् प्रत्यर्पयन्ति='भवन्निदेशानुसारेण सर्वमस्माभिः सम्पादित'-मिति चित्रसारथये निवेदयन्ति। ततः खलु स चित्रसारथिः कौटुम्बिकपुरुषाणाम् अन्तिके=समीपे एतमर्थं='रथोऽस्माभिः सज्जीकृतः' इत्येतद्रूपम् अर्थं यावद् हृदयः अत्रेदं सगृह्यते, तथाहि-'श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितो हर्षवशविसर्पद्हृदयः' इति। अर्थस्त्वेषामुक्त एव, एतादृशः सन् स्नातः=विहितस्नानः कृतबलिकर्मा=स्नाने कृते पशुपक्ष्यार्थं कृतान्नभागः, कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः कृतानि कौतुकमङ्गलान्येव

जो सज्ज-उद्यतीकृत है, चातुर्घंट का अर्थ "चार घटाओं से शोभित" ऐसा है तथा युक्त शब्द का अर्थ "घोडों ऐसे जुता हुआ" सा है। जब तुम लोग मेरी आज्ञा के अनुसार सब काम कर लो तो हमे इसकी पीछे शीघ्र ही सूचना दो, इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषों ने जैसा कि चित्र सारथि ने उन्हें कार्य करने के लिये आज्ञापित किया था वैसा काम यथा शीघ्र करके उसे सूचना दे दी. "आपकी आज्ञा के अनुसार हमने सब काम कर लिया है', इस प्रकार से दी गई सूचना को सुनकर चित्र सारथि "हृष्ट तुष्ट चित्तानन्दितः, प्रीतिमनाः, परमसौमनस्यितः, हर्षवशविसर्पद्हृदयः" इन यावत् पदगृहीत विशेषणों वाला हो गया, इन पदों का अर्थ कहा जा चुका है। उसने स्नान किया, बलिकर्म किया-पशु पक्षी

प्रायश्चित्तानि-दुःस्वप्नादिविघातार्थमवश्यकरणीयत्वाद् येन स तथा, तत्र कौतुकानि-मषीतिलकादीनि, मङ्गलानि तु सिद्धार्थदध्यक्षतदूर्वाङ्कुरादीनि। तथा-सन्नद्धबद्धवर्मितकवचः-सन्नद्धं शरीरे आरोपणात्, बद्धं-गाढतरबन्धनेन बन्धनात्, वर्मितम् अङ्गरक्षार्थं सुष्ठुतया परिहितं कवचं येन सः, तथा-उत्पीडितशरासनपट्टिकः-उत्पीडिता=प्रत्यञ्चारोपणेन नम्रीकृता शरासनपट्टिका धनुर्दण्डो येन सः, अथवा-उत्पीडिता=स्कन्धे स्थापिता शरासनपट्टिका=धनु

आदिकों के लिये अन्न का भाग किया, दुःस्वप्न आदिकों को नष्ट करने के लिये अवश्यकरणीय होने से कौतुक मङ्गलरूप प्रायश्चित्त किये मषी तिलक आदिकों का नाम कौतुक, सिद्धार्थ सरसों, दही, अक्षत दूर्वाङ्कुर आदिकों का नाम मंगल है। बाद में उसने सन्नद्ध, बद्ध, वर्मित कवच को पहिरा, पहिले उसे शरीर पर आरोपण किया. इसलिये वह कवच सन्नद्ध हुआ, बाद में वह गाढतर बंधन से जकडकर कस दिया गया. इससे बद्ध हुआ, तथा अङ्गरक्षा के निमित्त ही यह धारण किया गया था. अतःवर्मित हुआ "उत्पीडितशरासनपट्टिकः" से यह प्रकट किया गया है कि वह शरासन पट्टिका-धनुर्दण्ड जब प्रत्यंचा पर आरोपित किया गया तब झुक गया. अथवा उत्पीडित शब्द का अर्थ 'कंधे पर रखना भी है। तथाच प्रत्यंचा आरोपित की जाने से झुका दिया है, धनुष दण्ड जिसने अथवा स्कन्ध पर आरोपित किया है धनुर्दण्ड जिसने, ऐसा वह चित्रसारथी हो गया तात्पर्य कहनेका यही है कि उस चित्रसारथीने अपने धनुष पर प्रत्यञ्चा आरोपित करली, अथवा उसे हाथ में न लेकर कंधे पर टाँग लिया. अपने कंठ

કરવા માટે અવસ્યકરણીય મંગલરૂપ પ્રાયશ્ચિત્તો કર્યા મષીતિલક વગેરેને કૌતુક, સિદ્ધાર્થ-સર્ષપ, દહીં, અક્ષત દુર્વાંકુર વગેરેને મંગલ કહે છે ત્યારપછી તેણે સન્નદ્ધ, બદ્ધ, વર્મિત કવચ પહેર્યું પહેલા તે કવચનું તેણે શરીર પર આરોપણ કર્યું. એથી તે કવચ સન્નદ્ધ થયું ત્યારપછી ગાઢતર બંધનવડે કસવામાં આવ્યું એથી તે બદ્ધ થયું. અને અંગરક્ષક માટે તેને ધારણ કરવામાં આવ્યુ. હતું એથી તે વર્મિત થયું. "उत्पीडितशरासनपट्टिकः" એથી આ સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યું છે કે તે શરાસનપટ્ટિકા (ધનુર્દંડ) પર જ્યારે પ્રત્યંચા ચઢાવવામા આવી તે શરાસન પટ્ટિકા નમી ગઈ હતી. અથવા ઉત્પીડિત શબ્દનો અર્થ 'ખભાપર મૂકવુ" પણ થાય છે. પ્રત્યંચા ચઢાવવાથી જેણે ધનુર્દંડને નમાવી દીધો છે અથવા ખભાપર જેણે ધનુર્દંડ ધારણ કર્યો છે એવો તે ચિત્રસારથિ શોભવા લાગ્યો. મતલબ આ છે કે તે ચિત્ર સારથિએ પોતાના ધનુષ પર પ્રત્યંચા ચઢાવી લીધી હતી. અથવા તે ધનુષને હાથમાથી ખભાપર ભેરવી દીધુ

दण्डो येन सः, तथा-पिनद्धग्रैवेयविमलवरचिह्नपट्टः-पिनद्धं=परिहितं ग्रैवेयं= ग्रीवाभूषणं विमलवरचिह्नपट्टं, येन सः, तथा-गृहीतायुधप्रहरणः-गृहीतानि आयुधानि=धनुरादीनि प्रहरणानि=खड्गादीनि च येन स तथा-धृतशस्त्रास्त्र इत्यर्थः, एवम्भूतः सन् तत् महार्थं यावत् प्राभृतं गृह्णाति. गृहीत्वा यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथस्तत्रैव उपागच्छति उपागत्य चातुर्घण्टम् अश्वरथं दूरो हति=आरोहति। ततः सः सन्नद्ध यावद् गृहीतायुधप्रहरणैः बहुभिःपुरुषैः सार्द्धं=सह संपरिवृतः=संवेष्टितः सकोरण्टमाल्यदाम्ना=कोरण्टपुष्पमालाविभूषितेन-छत्रेण ध्रियमाणेन सह महाभटचटकरप्रकरवृन्दपरिक्षिप्तः-महाभटानां ये चटकर प्रकराः=विस्तृतसमूहास्तेषां यद् वृन्दं तेन परिक्षिप्तः=परिवेष्टितःसन् स्वात= स्वकीयाद् गृहाद् निर्गच्छति=निस्सरति, निर्गत्य श्वेतविकाया नगर्या मध्य-मध्येन निर्गच्छति। इत्थं निर्गतःसमुखैः=सुखकरैः वासैः=रात्रिनिवासैः पात

मे उसने ग्रीवा का आभूषणरूप ग्रैवेय हार पहिरा और सुन्दर २ चित्रों से सुशोभित सुन्दर वस्त्र भी पहिरे. धनुष आदिकों को यहां आयुध से और तलवार आदिकों को प्रहरण पद से गृहीत किया गया है. इस तरह उसने आयुध और प्रहरणों को अपने साथ ले लिया. इस प्रकार सब तरह से तैयार होकर वह प्राभृत को साथ में लेकर के जहां चातुर्घंट अश्वरथ था वहां पर आया, वहां आकर वह उस रथ पर चढ गया. रथ में बैठते ही वह सन्नद्ध हुए यावत् गृहीतायुधप्रहरणवाले अनेक पुरुषों से परिवृत हो गया. छत्रधारी पुरुषने उसके ऊपर कोरण्टपुष्पों की मालाओं से सुशोभित छत्र तान दिया. इस तरह महासुभटों के विस्तृत समूह के वृन्द से परिवेष्टित होकर वह अपने घर से चला. एवं श्वेतविकानगरी के ठीक मध्यभाग से होता हुआ निकला. निकलकर सुखकरवासों से

राशैः=प्रातःकालिकलघुभोजनैः, तथा–नातिविकृष्टैः=नातिदूरैः अन्तरावासैः मध्याह्नकालिकविश्रामस्थानैः वसन् वसन् केकयार्द्धस्य जनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव कुणाला जनपदो यत्रैव श्रावस्ती नगरी तत्रैव उपागच्छति, श्रावस्त्यां नगर्यां मध्यमध्येन अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव जितशत्रो राज्ञो गृहं यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला तत्रैव उपागच्छति, तुरगान्=अश्वान् विनिगृह्णाति=निरुणद्धि, रथं स्थापयति, रथात् प्रत्यवरोहति=अवतरति तत् महार्थं यावत् प्राभृतं गृहीत्वा यत्रैव आभ्यन्तरिकी उपस्थानशाला, यत्रैव जितशत्रु राजा तत्रैव उपागच्छति जितशत्रु राजानं करतलपरिगृहीतं यावत् कृत्वा जयेन विजयेन वर्द्धयति, तद् महार्थं यावत् प्राभृतम् उपनयति=तस्मै प्रयच्छति ॥ सू० १०५ ॥

रात्रियों में ठहरने से प्रातराशों से–प्रातःकालिक लघुभोजनरूप कलेवा से तथा बहुत अधिक दूर के नहीं ऐसे मध्याह्नकालिक विश्रामों से युक्त हुआ वह जगह २ ठहरता–केकयार्द्ध जनपद के पास आगया. उसके मध्य मध्य से होकर वह निकला और जहां कुणाला जनपद–देश था, और उसमें भी जहां श्रावस्ती नगरी थी वहां आकर वह उसके ठीक बीचों बीच से होकर उसमें प्रविष्ट हुआ. प्रविष्ट होकर फिर वह वहां गया जहां जितशत्रु राजा का राजमहल था, और उसमें भी जहां बाह्य उपस्थानशाला थी. वहां पहुँचते ही उसने घोडों को खडा कर दिया और रथ को चलने से रोक दिया. बादमें वह उस रथ से नीचे उतरा और प्राभृत को साथ लेकर वह आभ्यन्तरिकी उपस्थानशाला में जहां जितशत्रु राजा थे. वहां पर पहुँचा, वहां पहुंचते ही उसने जितशत्रु राजा को दोनों हाथ जोडकर बडे विनय से प्रणाम किया और जय विजय

કાલિક અલ્પભોજનો, (નાસ્તાઓ) તથા વધારે દૂર નહિ પણ નજીક નજીક જ મધ્યાહ્નકાલિક વિશ્રામો કરતો કરતો સ્થાન સ્થાનં પર પડાવ નાખતો તે કેકયાર્દ્ધ જનપદની નજીક પહોંચ્યો. અને ત્યારપછી તે જનપદની મધ્યમાં થઇને જ્યાં કુણાલા દેશ હતો અને જ્યાં શ્રાવસ્તીનગરી હતી ત્યાં જઇને તે ઠીક નગરીના મધ્યમાર્ગથી જ્યાં જિતશત્રુ રાજાના રાજમહેલ હતો અને તેમાં પણ જ્યાં બાહ્ય ઉપસ્થાનશાળા હતી ત્યાં પહોંચ્યો અને પહોંચતાં જ તેણે ઘોડાઓને ઉભા રાખ્યા અને રથને આગળ જવાથી રોક્યો. ત્યારપછી તે રથમાંથી નીચે ઉતર્યો અને ભેટને લઇને આભ્યંતરિકી ઉપસ્થાન શાળામાં જ્યાં જિતશત્રુ રાજા હતો ત્યાં ગયો ત્યાં પહોંચીને તેણે જિતશત્રુ રાજાને બન્ને હાથ જોડીને પ્રણામ કર્યા અને જયવિજય શબ્દોનું ઉચ્ચારણ કરીને

मूलम्--तए णं से जियसत्तू राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं जाव पाहुडं पडिच्छइ, चित्तं सारहिं सक्कारेइ सम्माणेइ पडिविसज्जेइ, रायमग्गमोगाढं च संवासं दलयइ । तए णं से चित्त सारही विसज्जिए समाणे जियसत्तुस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंट आसरहं दुरूहइ. सावत्थीए णयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ, तुरए निगिण्हइ. रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगल पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्प-महग्घाभरणालंकियसरीरे जिमियभुत्तुत्तरागए वियणं समाणे पुव्वावरण्हकालसमयंसि गंधव्वेहि य णाडगेहि य उवनच्चिज्जमाणे उवनच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २ इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे-पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥ सू० १०६

छाया—ततः खलु स जितशत्रू राजा चित्रस्य सारथेस्तन्महार्थं यावत् प्राभृतं प्रतीच्छति चित्रं सारथिं सत्कारयति सम्मानयति प्रतिविसर्जयति,

शब्दों का उच्चारण करते हुए उन्हें बधाई दी. बाद में लाये हुए उस महार्घ आदि विशेषणों वाले प्राभृत को उनके लिये अर्पण किया ।सू.१०५।

'तए णं से जियसत्तूराया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ--(तएणं से जियसत्तू राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं जाव पाहुडं पडिच्छइ) तब जितशत्रु राजाने चित्र सारथि के दिये गये महार्थ

તેને ધન્યવાદ આપી. ત્યારપછી તેણે મહાર્થ વગેરે વિશેષણોવાળી ભેટ તેમને સમર્પિત કરી. ॥સૂ.૧૦૫॥

'तए णं से जियसत्तू राया' इत्यादि ।

સૂત્રાર્થ—(તએ ણં સે જિયસત્તૂ રાયા ચિત્તસ્સ સારહિસ્સ તં મહત્થં જાવ પાહુડં પડિચ્છઇ) [illegible]

राजमार्गावगाढं च ।स्य आवासं ददाति । ततः खलु स चित्रः सारथिः विसर्जितःसन् जितशत्रोः अन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामति, यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथस्तत्रैव उपागच्छति चातुर्घण्टम् अश्वरथं दुरोहति श्रावस्त्या नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव राजमार्गावगाढ आवासस्तत्रैव उपागच्छति, तुरगान् निगृह्णाति, रथं स्थापयति, रथात् प्रत्यवरोहति, स्नातः

आदि विशेषणों वाले प्राभृत को जो कि प्रदेशी राजाने प्रेषित किया था, ले लिया. (चित्तं सारहिं सक्कारेइ, सम्माणेइ, पडिविसज्जेइ) फिर कुशलप्रश्नादि पूछकर उसका सत्कार किया, आसन आदि देकर उसका सम्मान किया और बाद में उसे विसर्जित कर दिया, अर्थात् विश्राम करने के निमित्त भेज दिया. (रायमग्गमोगाढं च संवासं दलयइ) उसे राजमार्ग के पास स्थित गृह में ठहराया गया (तए णं से चित्ते सारही विसज्जिए समाणे जियसत्तुस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ-जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) अतः वह चित्र सारथि जितशत्रु राजा द्वारा विसर्जित किया गया होकर उनके पास से चला आया. और जहां बाह्य उपस्थानशाला थी, जहां चातुर्घंट अश्वरथ था. वहां आकर वह (चाउग्घटं आसरहं दुरूहइ) उस चातुर्घंट रथ पर सवार हो गया (सावत्थीए णयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ) और श्रावस्ती नगरी के बीचो बीच से होता हुआ जहां राजमार्ग पर स्थित आवास-गृह था वहां पर आया. (तुरए

વિશેષણોવાળી ભેટને-કે જેને પ્રદેશી રાજાએ મોકલી હતી-સ્વીકારી લીધી. (चित्तं सारहिं सक्कारेइ, सम्माणेइ, पडिविसज्जेइ) ત્યારપછી કુશલતા વિષે સમાચારો પૂછીને તેનો સત્કાર કર્યો આસન વગેરે આપીને તેનું સન્માન કર્યું અને ત્યારપછી તેને વિસર્જિત કરી દીધો એટલે કે વિશ્રામ કરવા માટે મોકલી દીધો. (रायमग्गमोगाढं च संवासं दलयइ) તેને રાજમાર્ગની પાસેના ઘરમાં ઉતારો આપ્યો. (तए णं से चित्ते सारही विसज्जिए समाणे जियसत्तुस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ-जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) ત્યારપછી જિતશત્રુ રાજા પાસેથી વિસર્જિત કરાયેલો તે ચિત્રસારથી ત્યાંથી રવાના થયો અને જ્યાં બાહ્ય ઉપસ્થાનશાળા હતી, જ્યાં ચાતુર્ઘંટ અશ્વરથ હતો ત્યાં આવ્યો ત્યાં આવીને તે (चउग्घंटं आसरहं दुरूहइ) ચાતુર્ઘંટ રથ પર સવાર થયો. (सावत्थीए णयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ) અને શ્રાવસ્તીનગરીના મધ્યમાં થઈને જ્યાં રાજમાર્ગ પર સ્થિત આવાસ-ગૃહ-હતું

कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः शुद्धप्रवेश्यानि मङ्गल्यानि वस्त्राणि प्रवरपरिहितः अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरो जिमितभुक्तोत्तरागतोऽपि च खलु सन् पूर्वापराह्णकालसमये गन्धर्वैश्च नाटकैश्च उपनर्त्यमान २ उपगीयमान उपगीयमान उपलाल्यमानः २ इष्टान् शब्द-स्पर्श-रस-रूपगन्धान् पञ्चविधान् मानुष्यकान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन् विहरति ॥ सू० १०६ ॥

निगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ) वहां आकरके उसने घोड़ोंको रोका रथ को खडा किया और फिर रथ से नीचे उतरा (ण्हाए कयबलिकम्मे, कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिए) घर में उसने स्नान किया, बलिकर्म-वायसादिकों के लिये अन्न का भाग दिया दुःस्वप्नों को नाश करने के लिये कौतुक, मंगलरूप प्रायश्चित्त किये, बाद मे शुद्ध राजसभा में प्रवेश योग्य ऐसे माङ्गलिक वस्त्रों को रीति के अनुसार पहिरा (अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे) फिर उसने अल्प भारवाले बहुमूल्य आभरणों से अपने शरीर को आलंकृत किया और (जिमियभुत्तुत्तरागए वियणं समाणे) जीमने के बाद अर्थात् भोजन करके-फिर वह उपवेशनस्थान में आ गया (पुव्वावरण्हकालसमयंसि) वहां दिवस के तृतीय प्रहर में (गंधव्वेहि य णाडगेहि य उवणच्चिज्जमाणे, उवणच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २) गीतों द्वारा और नाटकों द्वारा बार २ अपना २ विषय दिखलाकर, अपना २ विषय सुनाकर बारबार रिझाया गया, बारबार विलास

'तएणं से' इत्यादि।

टीका—ततःखलु स जितशत्रू राजा चित्रस्य सारथेः सकाशात् प्रदेशि राजप्रेषितं तद् महार्थं यावत् प्राभृत प्रतीच्छति=गृह्णाति, चित्रंसारथिं सत्कारयति—कुशलप्रश्नादिना, सम्मानयति आसनप्रदानेन, ततस्तं प्रतिविसर्जयति= विश्रामार्थं संप्रेषयति, तथाच=राजमार्गावगाढं=राजमार्गसमीपस्थितम् आवास= गृहं तस्य=तस्मै ददाति। अत्र सम्बन्धसामान्ये षष्ठी। ततः खलु स चित्रः सारथिः जितशत्रुणा राज्ञा विसर्जितः सन् तस्य जितशत्रू राज्ञः अन्तिकात् =प्रतिनिष्क्रमति=निर्गच्छति, यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला, यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथः तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य चातुर्घण्टम् अश्वरथं दूरोहति=अरोहति, श्रावस्त्या नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव राजमार्गावगाढ—आवासः, तत्रैव उपागच्छति, तुरगान् निगृह्णाति=निरुणद्धि, निगृह्य रथं स्थापयति, स्थापयित्वा रथात् प्रत्यवरोहति=अवतरति। ततः स्नातः=कृतस्नानः कृतबलिकर्मा=स्नानेकृते पशुपक्ष्याद्यर्थं कृतान्नभागः, कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः—कृतानि कौतुकमङ्गलान्येव प्रायश्चित्तानि=दुःस्वप्नादि विघातार्थमवश्यकरणीयत्वाद् येन स तथा, तत्र—कौतुकानि=मषीतिलकानि, मङ्गलानि तु=सिद्धार्थसर्पपदध्यक्षतदूर्वाङ्कुरादीनि। तथा=शुद्धप्रावेश्यानि=राजसभाप्रवेशार्हाणि मङ्गल्यानि=माङ्गलिकानि वस्त्राणि प्रवरपरिहितः=यथारीतिपरिधृतः अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीर—अल्पानि=स्तोकभाराणि यानि महार्घाणि=बहुमूल्यानि आभरणानि तैः अलङ्कृतं=सुशोभितं शरीरं यस्य सः, तथा=जिमितभुक्तोत्तरागतः जिमितः=कृतभोजनः, सचासौ भुक्तोत्तरागतः=भोजनोत्तरकालम् उपवेशनस्थाने समागतश्चेति तथाभूतोऽपि च खलु सन् पूर्वापराह्णकालसमये पूर्वश्चासौ अपराह्णश्चेति पूर्वापराह्णः, स एव कालसमयः—कालोपलक्षितः समयस्तस्मिन्—दिवसस्य तृतीये प्रहरे गान्धर्वैश्च=गीतैश्च, नाटकैश्च उपनर्त्य-

युक्त बनाया गया वह चित्र सारथि (इट्ठे सद्द—फरिस—रस—रूव—गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ) इष्ट—अभिलषित—शब्द, स्पर्श रस, रूप गंध इन पांच प्रकार के मनुष्यभव संबंधी कामभोगों को अनुभवित करने लगा। टीकार्थ इसका स्पष्टहै। ॥ १०६ ॥

કરાયેલો, વારંવાર વિલાસયુક્ત બનાયેલો તે ચિત્ર સારથિ (इट्ठे सद्द—फरिस—रस—रूव—गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ) ઇષ્ટ—અભિલષિત—શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ, ગંધ આ પાંચ જાતના મનુષ્યભવ સંબંધી કામ ભોગોને ભોગવવા લાગ્યો. ટીકાર્થ:—આ સૂત્રનો સ્પષ્ટ છે. ॥૧૦૬॥

मानः उपनर्त्यमानः=नृत्तं दर्श्यमानो दर्श्यमानः उपगीयमानः उपगीयमानः—गानं श्राव्यमाणः श्राव्यमाणः, अतएव—उपलाल्यमानः२ विलास्यमानः२ इष्टान्=अभिलषितान् शब्द-स्पर्श-रस-रूप-गन्धान् पञ्चविध न् मानुष्यकान्=मनुष्यसम्बन्धिनः कामभोगान् प्रत्यनुभवन् विहरति ॥सू० १०६॥

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे जाइसंपण्णे कुलसंपण्णे बलसंपण्णे रूवसंपण्णे विणयसंपण्णे नाणसंपण्णे दंसणसंपण्णे चरित्तसंपण्णे लज्जासंपण्णे लाघवसंपण्णे लज्जालाघवसंपण्णे ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे जियणिद्दे जिइंदिए जियपरीसहे जीवियासमरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे करणप्पहाणे चरणप्पहाणे निग्गहप्पहाणे निच्छयप्पहाणे अज्जवप्पहाणे मद्दवप्पहाणे लाघवप्पहाणे खंतिप्पहाणे गुत्तिप्पहाणे मुत्तिप्पहाणे विज्जाप्पहाणे मंतप्पहाणे बंभप्पहाणे वेयप्पहाणे नयप्पहाणे नियमप्पहाणे सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे दंसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे ओराले चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, सावत्थी नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥सू० १०७॥

छाया—तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वापत्यीयः केशीनामकुमारश्रमणो जातिसम्पन्नः कुलसम्पन्नो बलसम्पन्नो रूपसम्पन्नो विनयसम्पन्नो

ज्ञानसम्पन्नो दर्शनसम्पन्नःचारित्रसम्पन्नः लज्जासम्पन्नो लाघवसम्पन्नो लज्जा-लाघवसम्पन्न ओजस्वी तेजस्वी वर्चस्वी यशस्वी जितक्रोधो जितमानो जितमायो जितलोभो जितनिद्रो जितेन्द्रियो जितपरीषहो जीविताशामरणभयविप्रमुक्तः तपःप्रधानो गुणप्रधानः करणप्रधानः चरणप्रधानो निग्रहप्रधानो निश्चयप्रधानः

मे (पासावच्चिज्जे) पार्श्वापत्यीय=भगवान् पार्श्वनाथ की शिष्य परम्परा में स्थित (केसी नाम कुमारसमणे) केशी नामके कुमार श्रमण-जो कि कुमार अवस्था में ही दीक्षित हुए थे और जो (जाइसंपन्ने) जातिसंपन्न थे. (कुलसंपण्णे) कुलसंपन्न थे, (बलसंपण्णे) बल संपन्न थे (रूवसंपन्ने) रूप संपन्न थे, (विणयसंपन्ने) विनयसंपन्न थे (नाणसंपण्णे) ज्ञान संपन्न थे, (दंसणसंपन्ने) दर्शन संपन्न थे (चरित्तसंपन्ने) चारित्र संपन्न थे, (लज्जासंपन्ने) लज्जा संपन्न थे (लाघवसंपन्ने) लाघव संपन्न थे (लज्जा लाघवसंपन्ने) लज्जा एवं लाघव से संपन्न थे (ओयंसी, तेयंसी, वच्चंसी, जसंसी) ओजस्वी थे, तेजस्वी थे, वर्चस्वी थे, यशस्वी थे, (जियमाणे) जितमान थे (जियमाए) जितमाय थे (जियलोहे, जियणिद्दे जिइंदिए) जित लोभ थे, जितनिद्र थे, जित इन्द्रिय थे. (जियपरीसहे, जीवियासमरणभयविप्पमुक्के) जीने की आशा से और मरण के भय से विप्रमुक्त थे (तवप्पहाणे गुणप्पहाणे) तपप्रधान थे, गुणप्रधान थे (करणप्पहाणे चरणप्पहाणे निग्गहप्पहाणे, निच्छयप्पहाणे, अज्जवप्पहाणे, मद्दवप्पहाणे, लाघवप्पहाणे

च्चिज्जे) पार्श्वापत्यीय-ભગવાન પાર્શ્વનાથની શિષ્ય પરંપરામાં સ્થિત (केसी नाम कुमारसमणे) કેશી નામક કુમાર શ્રમણ કે જે કુમાર અવસ્થામાં જ દીક્ષિત થયા હતા-અને જે (जाइसंपन्ने) જાતિસંપન્ન હતા. (कुलसंपण्णे) કુલ સંપન્ન હતા. (बलसंपण्णे) બલ સંપન્ન હતા. (रूवसंपण्णे) રૂપસંપન્ન હતા. (विणयसंपन्ने) વિનય સંપન્ન હતા (नाणसंपण्णे) જ્ઞાન સંપન્ન હતા. (दंसणसंपन्ने) દર્શન સંપન્ન હતા. (चरित्तसंपण्णे) ચારિત્ર સંપન્ન હતા (लज्जासंपण्णे) લજ્જા સંપન્ન હતા (लाघवसंपण्णे) લાઘવ સંપન્ન હતા (लज्जालाघवसंपन्ने) લજ્જા અને લાઘવ સંપન્ન હતા. (ओयंसी. तेयंसी, वच्चंसी, जसंसी) ઓજસ્વી હતા, તેજસ્વી હતા, વર્ચસ્વી હતા, યશસ્વી હતા. (जियकोहे) જિત ક્રોધી હતા. (जियमाणे) જિતમાન હતા. (जियमाए) જિતમાય હતા. (जियलोहे जियणिद्दे जिइंदिए) જિત લોભ હતા, જિતનિદ્ર હતા, જિતેન્દ્રિય હતા. (जियपरीसहे, जीवीयासमरण-भयविप्पमुक्के) જીવવાની આશા અને મરણના ભયથી વિપ્રમુક્ત હતા. (तव-प्पहाणे गुणप्पहाणे) તપ પ્રધાન હતા, ગુણ પ્રધાન હતા. (करणप्पहाणे, चरणप्प

आर्जवप्रधानो मा'व ानो लाघव प्र नः क्षान्तिप्रधानो गुप्तिप्रधानो मुक्तिप्रधानो विद्या धानो मन्त्रप्रधानो ब्र प्र ानो वेदप्रधानो नयप्रधानो नियमप्रधानः सत्यप्रधानः शौचप्रधानो ज्ञानप्रधानो दर्शनप्रधानः चारित्रप्रधानः उदारः चतुर्दशपूर्वी चतुर्ज्ञानोपगतः 'श्चभिः अनगारशतैः सार्द्धं सपरिवृतः पूर्वानुपूर्व्या चरन् ग्रामानुग्रामं द्र न ग सुखेन विहरन् 'त्रैव श्रावस्ती गरी यत्र कोष्ठकं चैत्यं तत्रैव उपागच्छ न, श्रावस्तीनगर्या बहिः कोष्ठके

'वं'तिप्पहाणे, मुत्तिप्पहाणे गु त्त पहा ग 'व ज्जप्पहागे मंतप्पहाणे, वेयप्पहाणे) करणप्रधान थे, चरण प्रधान थे, निग्रह प्रधान थे निश्चयप्रधान थे आर्जवप्रधान थे, मार्दवप्रधान थे, लाघवप्रधान थे, क्षान्तिप्रधान थे मुक्तिप्रधान थे, गुप्तिप्रधान थे, विद्या प्रधान थे, मन्त्रप्रधान थे, ब्रह्मप्रधान थे, वेद प्रधान थे, (नयप्पहाणे नियमप्पहाणे, सच्चप्पहाणे, सोयप्पहाणे, नाणप्पहाणे, दंसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे ओराले चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगए) नयप्रधान थे नियमप्रधान थे, सत्यप्रधान थे, शौचप्रधान थे, ज्ञान प्रधान थे, दर्शन प्रधान थे, चारित्र प्रधान थे, उदार थे चौदह पूर्व के पाठी थे, और मतिज्ञान आदि चार ज्ञानवाले थे (पंचहिं अणगारसएहिं संपरिवुडे) पांचसौ अनगारों के साथ (पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहं सुहेणं विहरमाणे जेणेव सा वत्थी णयरी, जेणेव कोट्ठए चेइए, तेणेव उवागच्छइ) तीर्थंकर परम्परा के अनुसार विहार करते हुए,

---

हाणे, निग्गहप्पहाणे, निच्छयप्पहाणे, अज्जवप्पहाणे, मद्दवप्पहाणे, लाघवप्पहाणे, खंतिप्पहाणे, मुत्तिप्पहाणे, गुत्तिप्पहाणे, विज्जप्पहाणे, मंतप्पहाणे वेयप्पहाणे) करण प्रधान हता, चरण प्रधान हता, निग्रह प्रधान हता, निश्चय प्रधान हता आर्जव प्रधान हता, मार्दव प्रधान हता, लाघव प्रधान हता, क्षान्ति प्रधान हता, मुक्ति प्रधान हता, गुप्ति प्रधान हता, विद्या प्रधान हता, मंत्र प्रधान हता, ब्रह्म प्रधान हता, वेद प्रधान हता (नयप्पहाणे, नियमप्पहाणे, सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे, नाणप्पहाणे, दंसणप्पहाणे, चरित्तप्पहाणे, ओराले चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगए) नय प्रधान हता, नियम प्रधान हता, सत्य प्रधान हता, शौच प्रधान हता, ज्ञान प्रधान हता, दर्शन प्रधान हता, चारित्र प्रधान हता, उदार हता [illegible] [illegible] पंचहिं अणगारसएहिं संपरिवुडे [illegible] पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहं सुहेणं [illegible] जेणेव सावत्थी [illegible] जेणेव कोट्ठए चेइए, तेणेव उवागच्छइ [illegible]

चैत्ये यथाप्रतिरूपम् अवग्रहम् अवगृह्य संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरति ॥ सू० १०७ ॥

टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि—

तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वापत्यीयः=भगवतः पार्श्वनाथस्य शिष्यपरम्परायां स्थितः केशीनामकुमारश्रमणः–कुमारश्चासौ श्रमणश्चेति, कौमार्यावस्थायां प्रव्रजित इत्यर्थः, स कीदृशः? इत्याह–जातिसम्पन्नः–जातिः=मातृपक्षः–तेन सम्पन्नो=युक्तः–उत्तममातृपक्ष सम्पन्न इत्यर्थः, तथा कुलसम्पन्नः–कुलं=पैतृको वंशः, तेन सम्पन्नः–उत्तमपितृपक्षसम्पन्न इत्यर्थः, तथा–बल

एक ग्राम से दूसरे ग्राम में होते हुए आनन्द के साथ जहां श्रावस्ती नगरी थी और जहां कोष्ठक चैत्य था, वहां पर आये. (सावत्थीनयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) जहां आकर वे श्रावस्ती नगरी के बाहर प्रदेश में स्थित कोष्ठक चैत्य में यथाप्रतिरूप अवग्रह प्राप्तकर संयम और तपसे आत्मा को भावित करते हुए ठहर गये. ।

टीकार्थ—उस काल और उस समय में पार्श्वापत्यीय भगवान् पार्श्वनाथकी शिष्य परंपरा में स्थित केशीकुमार श्रमण जिन्होने कौमार्य–बाल्य अवस्था में प्रव्रज्या धारण करली थी. तीर्थंकर परम्परा के अनुसार विहार करते हुए कोष्ठक चैत्य में आकर ठहरे, ये जाति संपन्न थे मातृपक्षका नाम जाति है, उससे ये युक्त थे अर्थात् उत्तम मातृपक्षवाले थे, पैतृक वंशका नाम कुल है, उससे भी ये युक्त थे-अर्थात् उत्तम पितृपक्षवाले थे विशिष्ट

એક ગામથી બીજે ગામ વિહારકરતા કરતા આનંદની સાથે જ્યાં શ્રાવસ્તી નગરી હતી અને જ્યા કોષ્ઠક ચૈત્ય (ઉદ્યાન) હતું ત્યા આવ્યા. (सावत्थी नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) ત્યાં જઈને તેઓ શ્રાવસ્તી નગરીની બહાર–કોષ્ઠક ચૈત્યમા યથા-પ્રતિરૂપ અવગ્રહ પ્રાપ્ત કરીને સંયમ અને તપથી આત્માને ભાવિત કરતાં રોકાયા.

ટીકાર્થ—તે કાળે અને તે સમયે પાર્શ્વાપત્યીય ભગવાન–પાર્શ્વનાથની શિષ્ય પરંપરામા સ્થિત કેશીકુમાર શ્રમણ–કે જેમણે કૌમાર્ય અવસ્થામાં પ્રવ્રજ્યા ધારણ કરી હતી. તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતાં કરતા કોષ્ઠક ચૈત્યમાં આવીને રોકાયા એઓ જાતિ સંપન્ન હતા. માતૃપક્ષનું નામ જાતિ છે એનાથી એઓ યુકત હતા એટલે કે ઉત્તમમાતૃપક્ષવાળા હતા. પૈતૃકવંશનું નામ કુળ છે, એનાથી એઓ યુકત હતા એટલે કે એઓ ઉત્તમપિતૃપક્ષવાળા હતા. વિશિષ્ટ સંહનનથી સમુત્થ-

सम्पन्नः—बलं=विशिष्टसंहननसमुत्था शक्तिः, तेन सम्पन्नः, रूपसम्पन्नः—रूपम्=सर्वोत्कृष्टं शारीरं सौंदर्यं तेन सम्पन्नः, विनयसम्पन्नः—विनयः प्रसिद्धः, तेन सम्पन्नः, तथा ज्ञानसम्पन्नः=मत्यादिज्ञानयुक्तः, दर्शनसम्पन्नः=सम्यक्त्वयुक्तः, चारित्रसम्पन्नः=चारित्रं=संयमः तेन संपन्नो=युक्तः, लज्जासम्पन्नः-लज्जा=अनुचितानुष्ठानसंवरणात्मिकस्पृहा, तया सम्पन्नः=युक्तः, लाघवसम्पन्नः=लाघवं=द्रव्यतोऽल्पोपधित्वं, भावतो गौरवत्यागः, ताभ्यां सम्पन्नः, लज्जालाघवसम्पन्नः=लज्जया लाघवेन च स सततमेव सम्पन्नः। तथ—ओजस्वी—ओजः=आत्मिकं तेजः, तदस्ति यस्य स तथा, आत्मिकतेजःसम्पन्न इत्यर्थः, तेजस्वी—तेजः=शरीरप्रभा, तदस्ति यस्य तथा अनुपमशरीरप्रभाविशिष्ट इत्यर्थः, तथा वर्चस्वी=प्रभाववान्, 'वचस्वी'—इतिच्छायापक्षे—प्रशस्तवचनयुक्त इत्यर्थः, तथा—जितक्रोधः=क्रोधजेता, जितमानः=मानजेता—

संहनन से समुत्थ शक्ति का नाम बल है, इस बल से ये युक्त थे, सर्वोत्कृष्ट शारीरिक सौन्दर्य का नाम रूप है. इस रूप से ये संपन्न थे, विनय संपन्न थे. मत्यादि ज्ञानों से संपन्न थे. सम्यक्त्व से युक्त थे, संयमरूप चारित्र से युक्त थे, लज्जा से युक्त थे अर्थात् अनुचित काम करने से सदा दूर रहते थे. लाघव से युक्त थे, लाघव द्रव्य और भाव की अपेक्षा से दो प्रकार का कहा गया है अल्प उपधि रखना यह द्रव्य की अपेक्षा लाघव है तथा गौरव का त्याग करना यह भाव की अपेक्षा लाघव है। लज्जा और लाघव इन दोनों से ये युक्त थे. इनमें आत्मिक तेज पर्याप्त रूप से भरा हुआ था अतः ओजस्वी थे. शरीर प्रभा का नाम तेज है. यह शारीरिक तेज इनका अनुपम था. इसलिये ये तेजस्वी थे. प्रभाववान थे इसलिये वर्चस्वी थे अथवा प्रशस्तवचन से युक्त थे. इसलिये वचस्वी थे. क्रोध के विजेता थे अतः जितक्रोध थे.

मानापमानयोस्तुल्य इत्यर्थः, जितमायः=सर्वथा निष्कपटः, जितलोभः=लोभजेता, जितनिद्रः=वशीकृतनिद्रः, जितेन्द्रियः=निगृहीतसकलेन्द्रियः, जितपरीषहः=परीषहजेता, तथा-जीविताशामरणभयविप्रमुक्तः-जीवितस्य=जीवनस्य या आशा तस्याः, तथा-मरणस्य=प्राणवियोगस्य यद् भयं तस्माच्च विप्रमुक्तः=रहितः जीवनमरणयोः समभावयुक्त इत्यर्थः तथा तपःप्रधानः=तपसा प्रधानः=सकलमुनीनां मध्ये प्राधानत्वं प्राप्तः, अथवा-तपः=तपस्या प्रधानं यस्य स महातपस्वीत्यर्थः, गुणप्रधानः-गुणैः=क्षान्त्यादिगुणैः प्रधानः=श्रेष्ठः। 'तपःप्रधानगुणप्रधाने' ति विषेषणद्वयेन तपसः पूर्वबद्धकर्मणो निर्जराहेतुत्वेन संयमस्य चाभिनवकर्मणोऽनुपादहेतुत्वेन मोक्षप्रापकत्वान्मोक्षार्थिभिस्तावश्य

मान के विजेता थे अतः जितमान थे, तात्पर्य मान अपमान में सम थे सर्वथा निष्कपट थे. अतः जितमाय थे, लोभ के जेता थे अतः जितलोभ थे. निद्रा को वश में कर लिया था इसलिये जितनिद्र थे. समस्त इन्द्रियों के निग्रहकर्ता थे-इसलिये जितेन्द्रिय थे-परीषहों पर विजय पा लिया था इसलिये जित परीषह थे, जीने की आशा से एवं मरण के भय से बिलकुल विप्रमुक्त थे-इसलिये जीवन मरण में समभावशाली थे. तपसे सकल मुनिजनों में प्रधानता प्राप्तकरलेने के कारण ये तपःप्रधान थे. अथवा तपस्या प्रधान थे. महातपस्वी थे. इसलिये तपः प्रधान थे. क्षान्त्यादिक गुणों से श्रेष्ठ होने के कारण गुणप्रधान थे "तपःप्रधान एवं गुणप्रधान" इन दो विशेषणों से यह सूचित किया गया है कि तप पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा का हेतु होता है एवं संयम नवीन कर्मों की अनुपादेयता का हेतु होता है अर्थात् नवीन कर्मों के आगमन

હતા. અર્થાત્ માન અપમાન બન્ને એમના માટે સરખા હતા. એઓ સંપૂર્ણત. નિષ્કપટ હતા એથી જિતમાન હતા. લોભને જીતનાર હતા એથી જિતલોભી હતા, એમણે નિદ્રાવશ કરી હતી એથી એઓ જિતનિદ્ર હતા, બધી ઇન્દ્રિયોને એમણે વશમા કરી રાખી હતી. એથી એઓ જિતેન્દ્રિય હતા, પરીષહો પર એમણે વિજય મેળવ્યો હતો એથી એઓ જિત પરીષહ હતા. જીવવાની આશાથી અને મરણના ભયથી એઓ એકદમ વિપ્રમુક્ત હતા. એથી જીવન મરણમાં એઓ સમભાવશીલ હતા. સકલ મુનિઓમાં તપની અપેક્ષાએ પ્રધાન હોવાથી એઓ તપઃપ્રધાન હતા, અર્થાત્ મહાતપસ્વી હતા. ક્ષાન્ત્યાદિક શ્રેષ્ટ ગુણોથી યુક્ત હોવા બદલ એવો ગુણ પ્રધાન હતા "તપઃપ્રધાન અને ગુણપ્રધાન" આ બે વિશેષણોથી એ વાત સૂચિત

मेतोपाचव्याविति सूचितम् । सामान्यतो गुणप्राधान्यमुक्त्वा सम्प्रति विशेषत स्तदाह-तथाहि-करणप्रधानः-करणं=पिण्डविशुद्धयादि सप्ततिविधम्, तदुक्तम् 'पिंडविसोही (७) समिई (५) भावण (१२) पडिमा (१२) य इंदियनिरोहो(५)। पडिलेहण (२५) गुत्तीओ (३) अभिग्गहो (४) चेव करणं तु ॥१॥

छाया—पिण्डविशोधिः समिति भावना-प्रतिमा च इन्द्रियनिरोधः ।
प्रतिलेखना गुप्तयः अभिग्रहाश्चैव करणं तु ॥ इति ॥

तत्प्रधानं यस्य स तथा. चरणप्रधानः-चरणं=महाव्रतादि सप्ततिविधम्, तदुक्तम्—'वय (५) समणधम्म (१०) संजम (१७) वेयावच्चं (१०) च बंभ-
गुत्तीओ (९) णाणाइतियं (३) तव (१२) कोह निग्गहाई (४) चरणमेयं ।

छाया—व्रतं श्रमणधर्मः संयमो वैयावृत्त्य च ब्रह्मगुप्तयः ।
ज्ञानादित्रिकं तपः क्रोध निग्रहादिः चरणमेतत् ॥इति॥

तत् प्रधानं यस्य स तथा, निग्रहप्रधानः-निग्रहः=असदाचारप्रवृत्तेर्निषेधः स प्रधानं यस्य स तथा, निश्चयप्रधानः=निश्चयः=तत्त्वानां निर्णयो विहितानुष्ठानानामवश्यमभ्युपगमो वा, स प्रधानं यस्य स तथा आर्जवप्रधानः=आर्जवं=ऋजुता माया-

---

को रोकनेवाला होता है- इसलिये ये दोनों मोक्ष के उपायभूत होते हैं अत मोक्षार्थियों को इन्हें अवश्य प्राप्त करना चाहिये ।

अब सामान्यरूप से गुणप्रधानता कहकर विशेषरूप से उसका प्रतिपादन करने के लिये कहा गया है—करण प्रधान इत्यादि पिण्डविशुद्धयादि सात प्रकारका है-कहा भी है 'पिंडविसोही' इत्यादि, इन गुणों से ये युक्त थे अतः ये करण प्रधान कहे गये हैं। महाव्रतादि रूप चरण ७० प्रकार का कहा गया है-जैसे 'वय' इत्यादि यह चरण इनमें प्रधान था. अतः ये चरण प्रधान थे. असदाचारप्रवृत्ति के निषेध का नाम निग्रह है यह निग्रह इनमें प्रधान था. अतःइन्हें निग्रह प्रधान कहा गया है । तत्वों का निर्णय करनेरूप निश्चय अथवा विहित अनुष्ठानों का अवश्य

કર્મોની અનુપાદેયતાનો હેતુ હોય છે એટલે કે નવીન કર્મોને રોકનાર હોય છે. એથી જ એઓ બન્ને મોક્ષ માટે ઉપાયભૂત કહેવાય છે. એથી મુમુક્ષુલોકોને માટે એ બન્ને અવશ્ય આદરણીય છે.

હવે સામાન્યરૂપથી ગુણપ્રધાનતાને કહીને વિશેષરૂપથી તેનું પ્રતિપાદન કરવા માટે કહે છે કે-કરણપ્રધાન ઇત્યાદિ પિંડવિશુદ્ધ વગેરે રૂપ જે કરણ છે તેના સાત પ્રકારો છે કહ્યું છે-'પિંડ વિસોહી' વગેરે. આ કારણ એમનામાં પ્રધાનરૂપે હતુ એથી એઓ કરણપ્રધાન કહેવાય છે મહાવ્રતાદિરૂપ ચરણના ૭૦ પ્રકારો કહેવાય છે. જેમકે વય ઇત્યાદિ આ ચરણ પણ એમનામાં પ્રધાનરૂપે હતું એથી એઓ ચરણ પ્રધાન હતા અસદાચારની પ્રવૃત્તિના નિષેધનું નામ નિગ્રહ છે આ નિગ્રહ એમનામાં પ્રધાનરૂપે હતો એથી જ એમને નિગ્રહ પ્રધાન કહેવામાં આવ્યા છે તત્ત્વોના નિર્ણય માટે જે નિશ્ચયાત્મક દૃઢ વૃત્તિ અથવા વિહિત અનુષ્ઠાનોને સ્વીકારવારૂપ જે નિશ્ચયાત્મ

निग्रहः, तत्प्रधानं यस्य स तथा, मार्दवप्रधानः-मार्दवं=मृदुता-नम्रता तत् प्रधानं यस्य स तथा, लाघवप्रधानः-लाघवं=लघुता-द्रव्यभावलघुता तत्प्रधानं यस्य स तथा, क्षान्तिप्रधानः-क्षान्तिः=क्रोधनिग्रहः, सा प्रधानं यस्य स तथा, गुप्तिप्रधानः-गुप्तिः=मनोगुप्त्यादिका, सा प्रधानं यस्य स तथा, मुक्तिप्रधानः-मुक्तिः=निर्लोभता, सा प्रधानं यस्य स तथा, सर्वथा निर्लोभ इत्यर्थः विद्याप्रधानः-विद्याः=रोहिणीप्रज्ञप्त्यादिदेवताधिष्ठिताः वर्णानुपूर्वीरूपाः ताः प्रधानानि यस्य स तथा मन्त्रप्रधानः-मन्त्राः-हरिणैगमैष्यादिदेवाधिष्ठिताः ते प्रधानानि यस्य स तथा, ब्रह्मप्रधानः-ब्रह्म=ब्रह्मचर्यं मैथुनविरमणलक्षण

स्वीकार करनेरूप निश्चय इनमें था, इसलिये ये निश्चयप्रधान थे। आर्जव नाम ऋजुता (सरलता) का है और यह माया निग्रहरूप होती है। यह इनकी प्रधान थी. अतः ये आर्जवप्रधान थे मार्दवप्रधान इसलिये थे कि इनमें मृदुता-नम्रता प्रधानरूप से थी. लाघवप्रधान थे इसलिये थे कि इनमें द्रव्यभावरूप लघुता (हलकापन) प्रधानरूप से थी क्षान्तिप्रधान ये इसलिये थे कि इनमें क्रोध को निग्रह करनेरूप परिणति प्रधान थी. गुप्तिप्रधान ये इसलिये थे कि इनमें मनोगुप्ति वचनगुप्ति. एवं कायगुप्ति ये तीन गुप्तियां प्रधान थीं मुक्तिप्रधान ये इसलिये थे कि इनमें निर्लोभता प्रधानरूप में थी, विद्याप्रधान ये इसलिये थे कि रोहिणी प्रज्ञप्त्यादिक देवताधिष्ठित वर्णानुपूर्वीरूप विद्याएं इनमें प्रधान थीं मंत्रप्रधान ये इसलिये थ कि इनमें हरिणैगमेषी आदि देवाधिष्ठित मंत्रप्रधान थे, मैथुनविरमणरूप ब्रह्मचर्य का नाम ब्रह्म है. अथवा सर्व ही

ભાવ હોય છે એ પણ એમનામાં હતો. એથી એઓ નિશ્ચય પ્રધાન હતા. આર્જવ ઋજુતા (સરલતા)નું નામ છે. અને માયાનિગ્રહરૂપ પ્રવૃત્તિ હોય છે. એ પણ એમનામાં પ્રધાનરૂપે હતી એથી એઓ આર્જવ પ્રધાન હતા. માર્દવ પ્રધાન એઓ એટલા માટે હતા કે એમનામાં મૃદુતા-વિનમ્રતા-પ્રધાનરૂપે હતી એમનામાં દ્રવ્યભાવ લઘુતા પ્રધાનરૂપે હતી એથી જ એઓ લાઘવપ્રધાન હતા. ક્રોધને નિગ્રહ કરવા રૂપ પરિણુતિ એમનામાં પ્રધાન હતી એથી એઓ ક્ષાંતિ પ્રધાન હતા એમનામાં મનોગુપ્તિ, વચનગુપ્તિ અને કાયગુપ્તિ એ ત્રણે ગુપ્તિઓ પ્રધાન હતી એથી એઓ ગુપ્તિ પ્રધાન હતા. એમનામાં નિર્લોભતા પ્રધાનરૂપે હતી એથી એઓ મુક્તિપ્રધાન હતા એમનામાં રોહિણી પ્રજ્ઞપ્ત્યાદિક દેવતાધિષ્ઠિત વર્ણાનુપૂર્વીરૂપ વિદ્યાઓ પ્રધાન હતી એથી જ એઓ વિદ્યાપ્રધાન હતા. એમનામાં હરિણૈગમેષી વગેરે દેવાધિષ્ઠિત મંત્રપ્રધાન હતા એથી એઓ મંત્રપ્રધાન હતા. મૈથુન વિરમણરૂપ બ્રહ્મચર્યનું નામ બ્રહ્મ છે અથવા સર્વકુશળ અનુ-

मिति सर्वमेव वा कुशलानुष्ठानं, तत्प्रधानं यस्य स तथा, वेदप्रधानः-वेदः= आगमः-लौकिक-लोकोत्तरकुप्रावचनिकभेदेन त्रिविधः, स प्रधानं यस्य स तथा, स्वसमयपरसमयज्ञानसम्पन्न इत्यर्थः, नयप्रधानः-नयाः=नैग॰ मादयःसप्त त एव भेदप्रभेदतः सप्तशतविधाः, ते प्रधानानि यस्य स तथा विचित्राभिग्रहधारीत्यर्थः; सत्यप्रधानः-सत्यं=सकलप्राणिनामत्यन्तहितकरं वचनम्, तत् प्रधानं यस्य स तथा-हितमितप्रियवचनयुक्त इत्यर्थः, शौच-प्रधानः-शौचं=द्रव्यतो लेपरहित्यं भावतो निरवद्याचरणं, तत् प्रधानं यस्य स तथा, ज्ञानप्रधानः-ज्ञानं=मत्यादिकं तत् प्रधानं यस्य स तथा, दर्शनप्रधानः

कुशल अनुष्ठानों का नाम ब्रह्म है इस ब्रह्मप्रधानता वाले वे थे. इसलिये इन्हें ब्रह्मप्रधान कहा गया है। आगम का नाम वेद है. यह लौकिक, लोकोत्तर, और कुप्रावचनिक के भेद से तीन प्रकार का है. यह वेद इनमें प्रधान था॰ अतः इन्हें वेदप्रधान कहा गया है। तात्पर्य यह कि ये स्व-समय के और परसमय के ज्ञान से संपन्न थे नैगम, संग्रह आदि जो सात नय है ये नय ही भेदप्रभेद की अपेक्षा ७०० हो जाते हैं ये नय इनमें प्रधान थे अर्थात ये बहुत ही सूक्ष्मरूप से नयों के विशेषज्ञाता थे इस-लिये इन्हें नयप्रधान कहा गया है। अभिग्रहविशेषों का नाम नियम है अर्थात् ये विचित्र अभिग्रहों के धारी थे सकलप्राणियों के एकान्तरूप से हितकर्ता जो वचन होते हैं उनका नाम सत्य है इस सत्यप्रधान ये थे अर्थात् ये हित, मित, प्रिय वचन बोलते थे। द्रव्य और भाव की अपेक्षा से शौच दो प्रकार का है-लेपरहित होना यह द्रव्य की अपेक्षा शौच है

ष्ठानोनुं नाम ब्रह्म छे. એઓ આ બ્રહ્મ પ્રધાનતાથી યુક્ત હતા એથી જ એઓ બ્રહ્મ પ્રધાન કહેવાતા હતા, આગમનુ નામ વેદ લૌકિક, લોકોત્તર અને કુપ્રાવચનિક આમ ત્રણ પ્રકારનો છે, આ વેદ એમનામા પ્રધાન હતો એથી એઓ વેદપ્રધાન કહેવાતા મતલબ આ છે કે એઓ સ્વસમયના અને પરસમયના જ્ઞાનથી સંપન્ન હતા, નૈગમ, સંગ્રહ વગેરે જે સાત નયો છે તે નયો ભેદ પ્રભેદની અપેક્ષાએ ૭૦૦ થઇ જાય છે, એ નય પણ એમનામાં પ્રધાન હતા એટલે કે એઓ ખૂબ જ નયના સૂક્ષ્મજ્ઞાતા હતા, એથી જ એઓ નયપ્રધાન કહેવાય છે, અભિગ્રહ વિશેષનું નામ નિયમ છે, એટલે કે એઓ વિચિત્ર અભિગ્રહોને ધારણ કરનારા હતા, એકનિષ્ઠ થઇને જે સકલ પ્રાણીઓના હિત માટે વચનો કહેવાય છે તે સત્ય છે. એઓ સત્યપ્રધાન હતા, એટલે કે એઓ હિત, મિત અને પ્રિય વચન બોલનારા હતા વ્ય અને ભાવની અપેક્ષાએ શૌચના બે પ્રકારો છે, લેપરહિત થવું એ દ્રવ્યની અપેક્ષાએ શૌચ છે, અને નિરવદ્ય આચરણ કરવું એ ભાવની અપે-

दर्शनं=सम्यक्त्वं, तत्प्रधानं यस्य स तथा, चारित्रप्रधान=चारित्रं=क्रिया, तत् प्रधानं यस्य स तथा, उदारः=ऋज्वाशयः, तथात्र-'घोरे घोरगुणे घोर-तवस्सी घोरबंभचेरवासी, उच्छूढसरीरे' छाया—घोरो घोरगुणो घोरतपस्वी घोरब्रह्मचर्यवासी उच्छूढशरीरः' इति संग्राह्यम्

तत्र-घोरः=सातिशयदीप्तियुक्तः, घोरगुणः=सर्वोत्कृष्टगुणयुक्तः, घोरतपस्वी=कातरजनदुष्करतपःकारकः, घोरब्रह्मचारी=अल्पसत्त्वानुष्ठेयब्रह्मचर्ययुक्तः, उच्छूढशरीरः-उच्छूढम्=उज्झितमिव संस्कारपरित्यागात् शरीरं येन सः, सर्वथा शरीरसंस्कारपरिवर्जित इत्यर्थः। तथा-चतुर्दशपूर्वी-चतुर्दशपूर्वधारकः-तथा-चतुर्ज्ञानोपगतः=मति-श्रुतावधिमनःपर्यवेति ज्ञान-

और निरवद्य आचरण करना यह भाव की अपेक्षा शौच है, इस प्रकार के शौच प्रधान ये थे, मत्यादिक ज्ञानों से प्रधान होने के कारण ये ज्ञानप्रधान थे, सम्यक्त्वरूप दर्शन से प्रधान होने के कारण दर्शनप्रधान थे, क्रियारूप चारित्र से प्रधान होने के कारण चारित्रप्रधान थे, ऋज्वाशयरूप उदारभाव से प्रधान होने के कारण ये उदार थे, यहां 'घोरे' इत्यादि। सातिशयदीप्ति से युक्त होने के कारण ये घोरगुण वाले थे, कातर-कायर जन जिन तपों को नहीं कर सकते थे-ऐसे कठिन तपों को करने के कारण ये घोरतपस्वी थे, हीनशक्तिवाले जीव जिस ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर सकते थे, उस ब्रह्मचर्यव्रत को ये धारण करते थे, इसलिये घोर ब्रह्मचारी थे, अपने शरीर का संस्कार करना इन्होंने छोड रखा था इसलिये ये उच्छूढशरीर थे, चौदह पूर्व के पूर्णरूप से पाठी थे, इसलिये ये चतुर्दशपूर्व धारकथे, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान इन चार ज्ञानों से सहित थे इस-

क्षाये शौच छे. एओ शौचप्रधान हता, मति वगेरे ज्ञानप्रधान होवाथी एओ ज्ञानप्रधान हता सम्यक्त्वरूप प्रधान होवाथी एओ दर्शनप्रधान हता. क्रियारूप चारित्र प्रधान होवाथी एओ चारित्र प्रधान हता ऋजवाशयरूप उदारभावप्रधान होवाथी एओ उदार हता अही घोरे वगेरे सातिशय दीप्तिथी युक्त होवा बदल एओ घोरगुणवाळा हता कातर लोको जे तपो आचरी शके नहि ते कठिन तपोनुं एओ आचरण करता हता एथी एओ घोर तपस्वी हता. दुर्बळ जीवो जे जातना ब्रह्मचर्यनु पालन करी शके नहि ते ब्रह्मचर्यव्रतने एओ धारण करता हता एथी तेओ घोर ब्रह्मचारी हता पोताना शरीरना संस्कारनी बधी क्रियाओने एमणे कायम माटे त्यजी दीधी हती एथी एओ उच्छूढ शरीर हता. चौद पूर्वना पूर्णपाठी हता. एथी एओ चतुर्दशपूर्वधारक हता मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने मन.

चतुष्टययुक्तः। एवंविधः सन् पञ्चभिरनगारशतैः=पञ्चशतसंख्यकैरनगारैः सार्द्धं=सह सपरिवृतः=संवेष्टितः पूर्वानुपूर्वी चरन्=तीर्थंकरपरम्परया विहरमाणः, ग्रामानुग्रामम्=एकस्माद् ग्रामाद् ग्रामान्तरं द्रवन्=गच्छन् सुखसुखेन विहरन्, यत्रैव-श्रावस्ती नगरी, यत्रैव कोष्ठकं चैत्यं, तत्रैव उपागच्छति, श्रावस्ती-नगर्याः बहिः=श्रावस्ती नगरी बहिःप्रदेशे स्थिते कोष्ठके चैत्ये यथाप्रतिरूपं=साधुकल्पानुसारम् अवग्रहम्=वनपालाज्ञाम् अवगृह्य=गृहीत्वा संयमेन=सप्तदशविधेन तपसा=द्वादशविधेन च आत्मानं भावयन्=वासयन् विहरतीति। इदमत्रबोध्यम्-आर्जवादीनां चरणकरणान्तर्गतत्वेऽपि यत्पृथगुपादानं तत् आर्जवादीनां प्राधान्यख्यापनार्थमिति। जितक्रोधत्वादीनाम् आर्जवादीनां चाय विशेषो बोध्यः-जितक्रोधादिपदैः उदयावस्थाप्राप्तानां

लिये चतुर्ज्ञानोपगत थे, इनके साथ पांच सौ अनगार थ, अकेले नहीं थे, तीर्थंकरपरंपरा के अनुसार ये विहार करने में रत थे-अतः उसी परंपरा के अनुसार ये विहार करते२, एक ग्राम से दूसरे ग्राम में बडे यतना से धर्मोपदेश की वरसा करते२ जहां श्रावस्ती नगरी थी. और उसमे भी जहां वह कोष्ठक चैत्य था वहां पर आये, वहां आकर वे उस नगरी के बाहर बने हुए उस कोष्ठक चैत्य में साधुकल्प के अनुसार वनपाल की आज्ञा लेकर १७ प्रकार के संयम से और १२ प्रकार के तप से आत्मा को वासित करते हुए ठेहर गये. यहां ऐसा समझना चाहिये-आर्जव आदि यद्यपि चरण और करण के अन्तर्गत है-फिर भी यहां जो स्वतन्त्र रूप से उनका उपादान किया गया है-वह उनमें प्रधानता प्रदर्शित करने के लिये किया गया है। जितक्रोधत्व आदि में और आर्जव आदि में

पर्यवज्ञान એ ચારેચાર જ્ઞાનોથી એઓ યુકત હતા એથી ચતુર્જ્ઞાનોપગત હતા એમની સાથે પાંચસો અનગાર હતા. એઓ એકલા હતા નહિ. તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરવામાં એઓ રત હતા આમ એઓ તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતા કરતાં એક ગામથી બીજા ગામ ખૂબ જ નિષ્ઠાથી ધર્મોપદેશની વર્ષા કરતા કરતાં જ્યાં શ્રાવસ્તી નગરી હતી અને તેમાં પણ જ્યાં તે કોષ્ઠક ચૈત્ય હતું ત્યાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તે નગરીની બહારનાં તે કોષ્ઠક ચૈત્યમાં સાધુ કલ્પ મુજબ વનપાલની આજ્ઞા મેળવીને ૧૭ પ્રકારના સંયમથી અને ૧૨ પ્રકારના તપથી પોતાના આત્માને વાસિત કરતા તેઓ ત્યાં રોકાયેલા આર્જવ વગેરેનો જો કે ચરણ અને કરણમાં સમાવેશ થાય છે છતાં એ અહીં જે સ્વતંત્રરૂપથી એમનું ગ્રહણ કરાયું છે તે તેમનામાં પ્રધાનતા પ્રદર્શિત કરવા માટે જ છે તેમ સમજવું જિતક્રોધત્વ વગેરેમાં અને

क्रोधादीनां विफलीकरण सूचितं, मार्दवप्रधानादिपदैस्तेषामुदयनिरोधः सूचितः। अथवा-यत-एव जितक्रोधादिः, अत एव-क्षमादिप्रधान इति हेतु हेतुमद्भावाद् विशेषो बोध्य इदि ; तथा-'ज्ञानसम्पन्नः' इत्यादिपदैः ज्ञानादिसत्त्वमात्रं सूचितम्। 'ज्ञानप्रधानः' इत्यादिपदैस्तु ज्ञानादिप्राधान्यं सूचितमिति ॥ सू० १०७॥

मूलम्—तएणं सावत्थीए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया जणसद्देइ वा जणबूहेइ वा जणबोलेइ वा जणुम्मीइ वा जणुक्कलियाइ वा जणसंनिवाएइ वा जाव परिसा पज्जुवासइ।

तएणं तस्स चित्तस्स सारहिस्स तं महया जणसद्दं च जाव जणसंनिवायं च सुणेत्ता य पासित्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था किंणं अज्ज सावत्थीए णयरीए इंदमहेइ वा

यह अन्तर है कि जो जितक्रोधादि होता है वह उदयावस्थाप्राप्त क्रोधादिकों को विफल बना देता है, और जो मार्दवप्रधानादि पदों वाला होता है वह क्रोधादिकों के उदय का निरोध कर देता है। यही बात सूचित करने के लिये इन पदों को भिन्न२ रूप में रखा गया है। जिस कारण वह जितक्रोधादि होता है, उसी से वह क्षमादिप्रधान होता है—इस तरह हेतुहेतुमद्भाव को लेकर इनमें विशेषता जाननी चाहिये, तथा 'ज्ञानसंपन्न' इत्यादि-पदों द्वारा सिर्फ ज्ञानादियुक्तता सूचित की गई है और 'ज्ञानप्रधान' इत्यादि पदों द्वारा उनमें प्रधानता प्रकट की गई है ॥सू. १०७॥

આર્જવ વગેરેમા આ તફાવત છે કે જે જિતક્રોધી વગેરે હોય છે તે ઉદયાવસ્થા પ્રાપ્ત ક્રોધાદિકોને અફળ બનાવી મૂકે છે. અને જે માર્દવ પ્રધાનાદિપદોવાળા હોય છે તે ક્રોધાદિકોના ઉદયનો નિરોધ કરે છે. એ વાતને સૂચિત કરવા માટે જ આ પદોનું ભિન્ન ભિન્ન રૂપમાં ગ્રહણ કરાયું છે. જેને લઈને તે જિતક્રોધાદિ હોય છે, તેને લઈને જ તે ક્ષમાદિપ્રધાન હોય છે. આ પ્રમાણે હેતુ હેતુમદ્ભાવને લઈને એમનામાં વિશેષતા જાણવી જોઈએ તેમજ "ज्ञानसंपन्न" વગેરે પદો વડે ફક્ત જ્ઞાનાદિ તતા સૂચિત કરવામાં આવી છે અને "ज्ञानप्रधान" વગેરે પદો વડે તેમનામાં તા પ્રકટ કરવામાં આવી છે. ॥૧૦૭॥

खंदमहेइ वा एवं रुद्दमहेइ मउंदमहेइ वा वेसमणमहेइ वा नागमहेइ वा भूयमहेइ वा जक्खमहेइ वा थूभमहेइ वा चेइयमहेइ वा रुक्खमहेइ वा गिरिमहेइ वा दरिमहेइ वा अगडमहेइ वा नईमहेइ वा सरमहेइ वा सागरमहेइ वा, जं णं इमे बहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता राइन्ना इक्खगा णाया कोरव्वा जहा उववाइए तहेव अप्पेगइया हयगया जाव अप्पेगइया पायचारविहारेणं महया महया वंदावंदएहिं निग्गच्छंति ? । एवं सपेहेइ संपेहित्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी किं णं देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए नयरीए इंदमहेइ वा जाव सागरमहेइ वा जेणं इमे वहवे उग्गा जाव णिग्गच्छंति ॥ सू० १०८ ॥

छाया—ततः खलु श्रावस्त्या नगर्याः शृङ्गाटक-त्रिक-चतुष्क-चत्वर-चतुर्मुख-महापथपथेषु महान् जनशब्द इति वा जनव्यूह इति वा जनबोल इति वा जनकलकल इति वा जनोर्मिरिति वा जनोत्कलिकेति वा जनसन्निपात इति वा यावत् परिषत् पर्युपास्ते।

'तए णं सावत्थीए नयरीए' इत्यादि ।

सूत्रार्थ-(तए णं) इसके बाद (सावत्थीए नयरीए) श्रावस्ती नगरी के (सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया जणसद्देइ वा जणवूहेइ वा, जणवोलेइ वा जणकलकलेइ वा जणुम्मीइ वा जणुक्कलियाइ वा, जणसंनिवाएइ वा, जाव परिसा पज्जुवासइ) शृङ्गाटक में त्रिक में, चतुष्क में, चत्वर में, चतुर्मुख में, महापथ में एवं पथ मे मिलित मनुष्योंका पर-

---

'तए णं सावत्थीए नयरीए' इत्यादि ।

सूत्रार्थः—(तए णं) त्यारपछी (सावत्थीए नयरीए) श्रावस्ती नगरीना (सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया जणसद्देइ वा जणवूहेइ वा, जणवोलेइ वा जणकलकलेइ वा जणुम्मीइ वा जणुक्कलियाइ वा जणसंनिवाएइ वा जाव परिसा पज्जुवासइ) शृंगाटकोमां, त्रिकोमां, चतुष्कोमां, चत्वरोमां, चतुर्मुखोमां, महापथोमां अने पथोमां एकत्र थयेला अने

ततः खलु तस्य चित्रस्य सारथिना महान्तं जनशब्दं च यावत् जनसंनिपातं च श्रुत्वा च दृष्ट्वा च अयमेतद्रूप आध्यात्मिको यावत् समुदपद्यत, किं खलु अद्य श्रावस्त्यां नगर्याम् इन्द्रमह इति वा स्कन्दमह इति वा एवं रुद्रमह इति वा मुकुन्दमह इति वा वैश्रवणमह इति वा नागमह इति वा भूतमहइति वा यक्षमहइति वा स्तूपमह इति वा चैत्यमह इति वा वृक्षमह-

स्परमें आलाप प्रचुररूप से होने लगा और लोक भी इकट्ठे हुवे थे परस्पर में अव्यक्तवर्ण वाली ध्वनि भी लोगों के मुख से निकलने लगी, कोलाहल जैसा मच गया. लोगों में अपार भीड होने से एक दूसरे का संघर्ष भी होने लग गया, कहीं२ मनुष्यों की थोडी भीड छटकर खडी हो गई, अन्य अन्य स्थानों से आ २ कर उसमें मिलने लगे. यावत् परिषदा उनकी पर्युपासना करने लगी, ।

(तएणं तस्स चित्तस्स सारहिस्स तं महया जणसद्दं च जाव जणसंनिवायं च सुणेत्ता य पासित्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) इसके बाद उस महान् जनशब्द को यावत् जनसंनिपात को सुनकर एवं देखकर उस चित्र सारथि को इस प्रकार का यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत विचार उत्पन्न हुआ, (किं णं अज्ज सावत्थीए णरीए इंदमहेइ वा खंदमहेइ वा एवं रुद्दमहेइ वा-मउंदमहेइ वा वेसमणमहेइ वा, नागमहेइ वा, भूयमहेइ वा, जक्खमहेइ वा) क्या आज श्रावस्ती नगरी में

કરનારા લોકોમા પરસ્પર પ્રચુરરૂપમા આલાપ થવા માંડયો—વાર્તાલાપ પ્રારંભ થયો—લોકો ધીરે ધીરે સંખ્યામાં એકત્ર થવા લાગ્યા, પરસ્પર અસ્ફુટ ધ્વનિમાં પણ લોકોમાં વાતચીત થવા લાગી. પરિણામે ઘોઘાટ જેવું વાતાવરણ થઇ ગયું. ત્યાં અપાર ભીડ થવા માંડી અને તેથી એક બીજાથી સંઘર્ષિત થઇને જ લોકો અવરજવર કરી શકતા હતા. એવી પરિસ્થિતિ ઉત્પન્ન થઇ ગઇ. કેટલાક સ્થાનો પર થોડા માણસો ટોળાના આકારમાં એકત્ર થઇ ગયા. અને બીજા લોકો પણ તેમની પાસે રૂકાવવા લાગ્યા, યાવત્ પરિષદા તેમની પર્યુપાસના કરવા લાગી.

(तएणं तस्स चित्तस्स सारहिस्स तं महया जणसद्दं च जाव जणसंनिवायं च सुणेत्ता य पासित्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) ત્યારબાદ તે મહાન્ જનશબ્દને યાવત્ જનસંનિપાતને સાંભળીને અને જોઈને તે ચિત્રસારથીને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે (किं णं अज्ज सावत्थीए णयरीए इंदमहेइ वा, खंदमहे वा एवं रुद्दमहेइ वा मउंदमहेइ वा वेसमणमहेइ वा नागमहेइ वा, भूयमहेइ वा, जक्खमहेइ वा)

इति वा गिरिमह इति वा दरीमह इति वा अवटमह इति वा नदीमह इति वा सरोमह इति वा सागरमह इति वा, यत्खलु इमे बहव उग्रा उग्रपुत्रा भोगा भोगपुत्रा राजन्याः इक्ष्वाकवो ज्ञाताः कौरव्याः यथा औपपातिके तथैव

इन्द्र को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या स्कन्द को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या रुद्र को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या मुकुन्द को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या वैश्रवण को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या नाग को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या भूतको निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या यक्ष को निमित्त करके उत्सव हो रहा है (थूभमहेइ वा, चेइयमहेइ वा, रुक्खमहेइ वा, गिरिमहेइ वा, दरिमहेइ वा, अगडमहेइ वा, नईमहेइ वा, सरमहेइ वा, सागरमहेइ वा,) या किसी स्तूप को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या किसी चैत्य-उद्यान को निमित्त करसे उत्सव हो रहा है, या किसी वृक्ष को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या किसी पर्वत को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या किसी गुफा को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या किसी--अवट-कूप को लेकर के उत्सव हो रहा है, या किसी नदी को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या किसी तालाव को निमित्त करके उत्सव हो रहा है, या किसी समुद्र को निमित्त करके उत्सव हो रहा है? (जे णं इमे बहवे उग्गा उग्गपुत्ता, भोगा भोगपुत्ता, राइन्ना, इक्खागा, णाया, कोरव्वा,

---

शुं आजे श्रावस्ती नगरीमां ईन्द्रना निमित्ते कोई उत्सव उजवाई रह्यो छे, स्कंदना निमित्ते उत्सव उजवाई रह्यो छे, के रुद्रना निमित्ते उत्सव उजवाई रह्यो छे, के मुकुन्दना निमित्ते कोई उत्सव उजवाई रह्यो छे, के वैश्रवणना निमित्ते कोई उत्सव उजवाई रह्यो छे, के नाग निमित्ते उत्सव उजवाई रह्यो छे, के भूतना निमित्ते कोई उत्सव उजवाई रह्यो छे के यक्षना निमित्ते उत्सव उजवाई रह्यो छे. (थूभमहेइ वा, चेइयमहेइ वा, रुक्खमहेइ वा, गिरिमहेइ वा, दरिमहेइ वा, अगडमहेइ वा, नईमहेइ वा, सरमहेइ वा, सागरमहेइ वा) के कोई स्तूपना निमित्ते उत्सव उजवाई रह्यो छे, के चैत्यना निमित्ते उत्सव उजवाई रह्यो छे, वृक्षना निमित्ते उत्सव उजवाई रह्यो छे, के पर्वतना निमित्ते उत्सव उजवाई रह्यो [illegible] निमि[illegible] उत्सव उजवाई रह्यो छे, के कोई-अवटकूपना निमित्ते उ[illegible] छे, के कोई नदीना निमि[illegible] उत्सव उजवाई रह्यो छे, के तळावना [illegible] उजवाई रह्यो छे, के कोई समुद्रना निमित्ते उजवाई रह्यो छे [illegible] उग्गा उग्गपुत्ता, भोगा भोगपुत्ता, राइन्ना, इक्खागा, [illegible]

अप्येकके हयगता यावत् अप्येकके पादचार विहारेण महद्भिर्महद्भिर्वृन्द वृन्दैर्निर्गच्छन्ति ?, एवं समेक्षते संप्रेक्ष्य कञ्चुकीयपुरुषं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्–किं खलु देवानुप्रियाः ! अद्य श्रावस्त्यां नगर्याम् इन्द्रमह इति वा यावत् सागरमह इति वा, यत्खलु इमे बहव उग्रा यावत् निर्गच्छन्ति? ।१०८।

'तएणं' इत्यादि—

टीका––ततः खलु श्रावस्त्या नगर्या शृङ्गाटक–त्रिक–चतुष्क–चत्वर चतुर्मुख –महापथपथेषु–तत्र–शृङ्गाटकं=शृङ्गाटकाकृतिकस्त्रिकोणो मार्गः, त्रिकं=त्रिपथं

जहा उववाइए तहेव अप्पेगइया हयगया) जो ये बहुत से उग्रवंश के मनुष्य, उग्रवंश के पुत्र, भोगवंश के मनुष्य, भोगवंश के पुत्र, राजन्यवंश के मनुष्य, इक्ष्वाकुवंश के मनुष्य, ज्ञातवंश के मनुष्य, कुरुवंश के मनुष्य, जैसा कि इसके आगे औपपातिक सूत्र में कहा गया है उसके अनुसार कितनेक घोडों पर चढ कर (जाव अप्पेगइया पायचारविहारेणं महयार वंदावंदएहिं निग्गच्छंति) यावत् कितनेक पैदल ही भिन्नर समूह में होकर निकल रहे हैं। (एवं संपेहेइ) ऐसा उसने विचार किया–(संपेहित्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ) ऐसा विचार करके उसने कंचुकीयपुरुष को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उससे कहा–(किं णं देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए नयरीए इंदमहेइ वा, जाव सागरमहेइ वा जे णं इमे बहवे उग्गा, जाव निग्गच्छंति) हे देवानुप्रिय ! क्या आज श्रावस्ती नगरी में इन्द्र महोत्सव है या यावत् सागर महोत्सव है कि जिससे ये उग्रवंश के मनुष्य यावत् जा रहे हैं ?॥

उववाइए तहेव अप्पेगइया हयगया) કે જેથી ઘણા ઉગ્રવંશના પુત્રો, ભોગવંશના માણસો, ભોગવંશના પુત્રો, રાજન્યવંશના માણસો, ઇક્ષ્વાકુવંશના માણસો, જ્ઞાતવંશના માણસો. કુરુવંશના માણસો–પહેલાં ઔપપાતિક સૂત્રમાં જે પ્રમાણે વર્ણન કરવામા આવ્યું છે તે મુજબ કેટલાક ઘોડાઓ પર સવાર થઈને (जाव अप्पेगइया पायचारविहारेणं महयार वंदावंदएहिं निग्गच्छंति) યાવત્ કેટલાક પગપાળાં જ જુદા જુદા સમૂહોમાં એકત્ર થઈને જઈ રહ્યા છે. (एवं संपेहेइ) આ જાતનો તેણે વિચાર કર્યો. (संपेहित्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ) આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેણે કંચુકીય પુરુષને બોલાવ્યો. (सद्दावित्ता) एवं वयासी) બોલાવીને તેને કહ્યું. किं णं देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए नयरीए इंदमहेइ वा, जाव सागरमहे वा जेणं इमे बहवे उग्गा, जाव निग्गच्छंति) હે દેવાનુપ્રિય ! શું આજે શ્રાવસ્તી નગરીમા ઇન્દ્રમહોત્સવ છે કે યાવત્ સાગર મહોત્સવ છે કે જેથી ઉગ્રવંશના માણસો યાવત જઈ રહ્યા છે ?

यत्र त्रयो मार्गाः सम्मिलन्ति तत् चतुष्कम्=चतुष्पथं यत्र चत्वारो मार्गा मिलितास्तत्, चत्वरम्=अनेकमार्गसंगमस्थानम्. चतुर्मुखं=यतश्चतसृष्वपि दिक्षु पन्थानो निस्सरन्ति तत्. महापथः=राजमार्गः, पन्थाः=सामान्यमार्गः, एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, तेषु तथोक्तेषु, महान्=प्रचुरः जनशब्द इति वा=जनानां परस्परालापादिरूपः, जनव्यूहः=जनबोलः=जनानामव्यक्तवर्णो ध्वनिः, जनकलकलः=जनानां कोलाहलध्वनिः, तत्र-बोलकलकलयोरयं विशेषः =बोल= अविभाव्यमानवचनविभागः कलकलस्तु विभाव्यमानवचनविभाग इति, जनोर्मिः=जनसम्बाधः, जनोत्कलिका=जनानां लघुतरः संघातः, जनसन्निपातः= जनानाम् अन्योन्यस्थानेभ्य एकत्र मीलनम्. यावत्-पर्यन्त्=उग्रो पुत्रादिरूपा

टीकार्थ—तब श्रावस्ती नगरी के श्रृंगाटक-सिंघाडे की आकृति जैसे त्रिकोणवाले मार्ग में, त्रिक-तीनमार्ग से मिले हुए मार्ग में, चतुष्पथमें चार मार्गो से मिले हुए मार्ग में, चत्वर में-अनेक मार्गों के सगमवाले स्थान में, चतुर्मुख जहां से चारों दिशाओं में मार्ग निकलते हैं, ऐसे रास्ते में, महा पथ राजमार्ग में, और पथ-सामान्य मार्ग में प्रचुर मात्रा में जनशब्द हुआ, आपस में बातचीत करने की अवाज निकली, जनव्यूह-जनसमुदाय-आकर इकट्ठा होने लगा, जनबोल-मनुष्यों की अव्यक्त वर्णवाली ध्वनि होने लगी जनकलकल-जनों की कोलाहल रूप ध्वनि होने लगी। बोल में और कल- कल में अन्तर इतना ही है कि बोल में वचनविभाग अविभाव्यमान (अलग२) होता है और कलकल में वचनविभाग विभाव्यमान (अव्यक्त ध्वनि) होता है. जनसम्बा- धजनों के जमघट में होने वाले पारस्परिकविमर्द का नाम जनोर्मि है तथा मनुष्यों का जो लघुतर संघात है वह जनोत्कलिका है. अन्योन्यस्थानों से आगत

पर्युपास्ते। अत्र यावच्छब्देन-'बहुजणो अन्नमन्नस्स' इत्यारभ्य 'अभिमुहातिविणएणं पंजलिउडा' इत्यन्तःसर्वोऽपि पाठ औपपातिकसूत्रोक्तचम्पानगरीगत श्री महावीरस्वामिसमागमनपठितः सर्वोऽप्यत्र वाच्यः, नवरम्-अत्र छत्रादयस्तीर्थकरातिशेषाः न वाच्याः। तथा-'समणे भगवं महावीरे' इत्यादि भगवन्नाम स्थाने 'पासावचिज्जे केसी नाम कुमारसमणे जाईसंपण्णे इत्यादि वाच्यम्। अत्र 'जन शब्द इति वा' इत्यादौ इति शब्दो वाक्यालङ्कारे 'वा' शब्दः समुच्चये इति।

'तए णं तस्स चित्तस्स' इत्यादि-ततः खलु तस्य चित्रस्य सारथेः तं महान्तं जनशब्दं च यावत् जनसंनिपातं च श्रुत्वा=आकर्ण्य तं महान्तं

मनुष्यों का जो एक जगह मिलान होता है उसका नाम जनसन्निपात है। यावत् उग्र, उग्रपुत्र आदि कों की परिषदाने पर्युपासना की यहां यावत् शब्द से 'बहुजणो अण्णमण्णस्स' यहां से लेकर 'अभिमुहा विणएणं पजलिउडा' यहां तक का सब पाठ जो कि औपपातिक सूत्र में ३८ वें सूत्र में चम्पानगरीगत श्रीमहावीर स्वामी के आगमन के पाठ में लिखा जा चुका है, ग्रहण किया गया है। उस पाठ गत छत्रादिक जो कि तीर्थंकर प्रकृति के अतिशयरूप हैं यहां ग्रहण नहीं करना चाहिये-तथा 'समणे भगवं-महावीरे' इत्यादि भगवन्नाम के स्थान में 'पासावचिज्जे केसी नामं कुमारसमणे जाइसंपन्ने' ऐसा पाठ कहना चाहिये, 'जनशब्द इति वा' इत्यादिपाठ में आगत इति शब्द वाक्यालंकार में और 'वा' शब्द समुच्चय में आया है।

'तएणं तस्स चित्तस्स' इत्यादि इसके बाद उस चित्र सारथि को उस

એક સ્થાને જ્યા એકત્ર થાય છે તેનું નામ જનસન્નિપાત છે. યાવત્ ઉગ્ર, ઉગ્રપુત્ર વગેરેની પરિષદાએ પર્યુપાસના કરી અહીં યાવત્ શબ્દથી 'बहुजणो अण्णमण्णस्स'' અહીંથી માંડીને ''अभिमुहा विणएण पंजलिउडा'' સુધીના ઓપપાતિક સૂત્રના ૩૮ મા સૂત્ર મુજબ ચંપાનગરી ગત શ્રી મહાવીર સ્વામીના આગમનપાઠમાં જે વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે-તે બધું અહીં ગ્રહણ સમજવું. તે પાઠમાં જે છત્રાદિક કે જે તીર્થંકર પ્રકૃતિના અતિશયરૂપ છે- તેમનું ગ્રહણ અહીં કરવું નહિ. તેમજ 'समणे भगवं महावीरे' વગેરે ભગવાનના નામોની જગ્યાએ ''पासावचिज्जे केसी नामं कुमारसमणे जाइसंपन्ने'' આ જાતના પાઠનું ગ્રહણ સમજવું. ''जनशब्द इति वा'' વગેરે પાઠમા આવેલ 'ઇતિ' શબ્દ વાકયાલંકારમાં અને 'વા' શબ્દ સમુચ્ચયના રૂપમાં છે

'तए णं तस्स चित्तस्स' इत्यादि, ત્યારપછી તે ચિત્ર સારથીને તે મહાન

जनसमुदायं दृष्ट्वा च अयमेतद्रूपः आध्यात्मिको यावत् समुदपद्यत=समुत्पन्नः। यावच्छब्देन 'चिन्तितः, कल्पितः, प्रार्थितः, मनोगतः संकल्पः' इति पदसमूहः त्र्यशीतितमसूत्रवद् बोध्यः। अर्थोऽप्येषां तत एव गम्य इति। सम्प्रति मनोगतसंकल्पस्वरूपमाह-'किं ण' इत्यादि। किं खलु 'किम्' इति वितर्के, 'खलु' इति वाक्यालङ्कारे, अद्य श्रावस्त्यां नगर्याम् इन्द्रमहः—इन्द्रः=शक्रः तन्निमित्तो महः=उत्सवः= इति वा, एवं 'स्कन्दमहः' इत्यारभ्य 'सागरमहः' इत्यन्तानां पदानामपि अर्थोऽनुसन्धेयः। नवरम्-स्कन्दः=कार्ति-

---

महान् जनशब्द को यावत् जनसंपातको सुन करके और देख करके इस प्रकार का यह आध्यात्मिक यावत् संकल्प उत्पन्न हुआ. यहां यावत् शब्द से 'चिन्तित, कल्पित, प्रार्थित, मनोगत' ये विशेषण संकल्प के ग्रहण किये गये हैं। इनका अर्थ ८३वे सूत्र में स्पष्ट किया गया है। अतः वहीं से वह जानना चाहिये। 'किं णं' इत्यादि 'किं' शब्द वितर्क में और 'खलु' शब्द वाक्यालंकार में आया है। चित्र सारथी को जो संकल्प उत्पन्न हुआ है वही इन शब्दों द्वारा प्रकट किया गया है-क्या आज श्रावस्ती नगरी में इन्द्रमह है? इन्द्र नाम शक्र का है. इस शक्र को निमित्त करके किया गया मह-उत्सव वह इन्द्रमह है. 'स्कन्दमह' से लेकर 'सागरमह' तक के पदों का अर्थ भी इसी प्रकार से जानना चाहिये. स्कन्द नाम कार्तिकेय

केयः, रुद्रः=शिवः मुकुन्दः=नारायणः, वैश्रवणः=कुबेरः, नागो=भवनपतिविशेषः, भूतयक्षौ व्यन्तरविशेषौ, स्तूपः चैत्यस्तूपःशिखरं वा,चैत्यं=चितास्थितं स्मारकचिह्नम्,वृक्षः=अश्वत्थादिः, दरी=गुहा, गिरिः=पर्वतः, अवटः=गर्त्तः,नदी, सरः=सागराः=समुद्राः। 'इति' शब्दः सर्वत्र स्वरूपनिर्देशपरः, 'वा' शब्दः समुच्चये। ततश्च इन्द्रमहादिषु कश्चिन्महोऽस्ति, यत्खलु इमे बहवः उग्राः=भगवता आदिनाथेन आरक्षकपदस्थापितानां वंशजाताः, उग्रपुत्राः=कुमारावस्थोपेता उग्राएव उग्रपुत्राः, भोगाः=आदिनाथेन गुरुपदे स्थापितानां वंशजाताः, भोगपुत्राः-तेषां पुत्रा एव, राजन्याः=भगवताऽऽदिनाथेन वयस्यपदे स्थापि-

का है, रुद्र नाम महादेव का है मुकुन्द नाम नारायण का है, वैश्रवण नाम कुबेर का है. भवनपतिविशेष का नाम नाग है, भूत और यक्ष ये व्यन्तर विशेष हैं। स्तूप का नाम चैत्य स्तूप अथवा शिखर है. चितास्थित स्मारक चिह्न का नाम चैत्य है, पीपल वगैरह के झाड का नाम वृक्ष है, गिरि नाम पर्वत का है, गुफा का नाम दरी है, अवट का नाम गर्त्त, नदी, सर-तालाब और सागर ये सब अर्थतः प्रतीत ही है। इति शब्द यहां सब जगह स्वरूप-निर्देशपरक है 'वा' शब्द समुच्चय में है। इस तरह से उसने विचार किया कि क्या इन्द्रमहादिकों में से आज कोई मह-उत्सव है कि जिसमें ये अनेक उग्र-भगवान् आदिनाथ द्वारा जिन्हें आ रक्षक के पद पर स्थापित किया गया है, उनके वंश के लोग-जा रहे है ये अनेक उग्रपुत्र-कुमारावस्थोपेत उग्ररूप उग्रपुत्र जा रहे हैं, ये भोग आदिनाथ भगवान जिन्हें गुरु के पद पर स्थापित किया उनके वंशके लोग जा रहे हैं, भोगपुत्र-उनके कुमारावस्थापन्न लडके जा रहे हैं, ये राजन्य-आदिनाथ

કાર્તિકેયનું નામ છે. રુદ્ર મહાદેવનું નામ છે. મુકુન્દ નું નામ છે નારાયણ વૈશ્રવણ કુબેરનું નામ છે, ભવનપતિ વિશેષનું નામ નાગ છે ભૂત અને યક્ષ એઓ વ્યન્તરવિશેષ છે. સ્તૂપ નામ ચૈત્યસ્તૂપ અથવા શિખરનું છે, ચિતાસ્થિત સ્મારકચિહ્નનું નામ ચૈત્ય છે. પીપળ વગેરે ઝાડનું નામ વૃક્ષ છે. ગુફાનું નામ દરી છે. ગિરિ પર્વતનું નામ અવટ ગર્ત્ત છે, નદી સર--તળાવ અને સાગર આ બધાના અર્થો સ્પષ્ટ જ છે, ઇતિ શબ્દ અહીં સ્વરુપ નિર્દેશપરક- છે "વા" શબ્દ સમુચ્ચય માટે વપરાયો છે. આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો કે શુ આજે ઇન્દ્ર મહાદિકોમાથી કોઇ મહોત્સવ છે ? કે જેથી એઓ ઘણા ઉગ્ર-ભગવાન આદિનાથ વડે જેમને આરક્ષકપદે પ્રતિષ્ઠિત કરવામાં આવ્યા છે તેમના વંશના લોકો જઇ રહ્યા છે, એઓ ઘણા ઉગ્રપુત્રો-કુમારાવસ્થોપેત ઉગ્રરૂપ ઉગ્રપુત્રો જઇ રહ્યા છે, એ ભોગ-આદિનાથ ભગવાને જેમને ગુરુપદે પ્રતિષ્ઠિત કર્યા છે તેમના વંશના લોકો જઇ રહ્યા છે, એ ભોગપુત્રો તેમના કુમારાવસ્થાપન્ન પુત્રો જઇ રહ્યા છે, એ

तानां व शजाताः, इक्ष्वाकवः=इक्ष्वाकुवंशोद्भवाः, ज्ञाताः=ज्ञातवंशीयाः, कौरव्याः=कुरुवंशोद्भवाः, 'जहा उववाईए तहेव' इतोऽग्रे 'खत्तिया माहणा' इत्यारभ्य 'चंदणोल्लित्तगायसरीरा' इतिपर्यन्तः सर्वोऽपि पाठ औपपातिकसूत्रोक्तश्री महावीरस्वामि वन्दनार्थगतोग्रोग्रपु ादिवद् विज्ञेयः। अप्येकके हयगताः=अश्वारूढाः, यावत् अप्येकके गजगता'=गजारूढाः, अप्येकके पादचारविहारेण महद्भिः=अतिविशालैः वृन्दवृन्दैः=पृथक् पृथक् समूहभूतैः निर्गच्छन्ति=निस्सरन्ति–इति। एवम्=अनेन प्रकारेण संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य कञ्चुकीयपुरुषं शब्दयति, शब्दयित्वा एवम् अवादीत्=उक्तवान्–किं खलु देवानुप्रियाः। अद्य श्रावस्त्यां नगर्याम् इन्द्रमह इति वा यावत् सागरमह इति वा वर्त्तते यत् खलु इमे बहव उग्रा यावद् निर्गच्छन्ति? इति ॥ सू० १०८॥

ने जिन्हे सित्रपद पर स्थापित किया उनके वंशके लोग जा रहे हैं, ये इक्ष्वाकुवंश के लोग जा रहे हैं, ज्ञातवंशीयजन जा रहे हैं, ये कुरुवंशीय जन जा रहे हैं, 'जहा उववाइए तहेव' यहां से आगे 'खत्तिया माहणा' से लेकर 'चंदणोल्लित्तगायसरीरा' यहां तकका समस्त पाठ जो कि औपपातिक सूत्र में कहा गया है उस समय, जब कि श्रीमहावीर स्वामी की वन्दना के लिये उग्र–उग्रपुत्रादि कहे गये हैं यहां ग्रहण करना चाहिये. इनमें से कितनेक अश्वपर चढ कर, कितनेक हाथीपर चढ कर और कितनेक पैदल ही चलकर तथा कितनेक अपना २ विशाल समुदाय बना कर पृथक २ रूप से निकल रहे हैं।

इस प्रकार विचार कर फिर उसने कंचुकीयपुरुष द्वारपाल को बुलाया और बुलाकर उससे ऐसा कहा–हे देवानुप्रिय! आज क्या श्रावस्ती नगरी मे

मूलम्—तएणं से कंचुईपुरिसे केसिस्स कुमारसमणस्स आगमणगहियविणिच्छए चित्त सारहि करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी–णो खलु देवाणुप्पिया! अज्ज सावत्थिए णयरीए इंदमहेइ वा जाव सागरमहेइ वा जे णं इमे बहवे जाव वंदावंदएहिं निग्गच्छंति, एवं खलु भो देवाणुप्पिया! पासावच्चिज्ज केसी नामं कुमारसमणे जाइसंपन्ने जाव दुइज्जमाणे इहमागए जाव विहरइ। ते णं अज्ज सावत्थीए नयरीए बहवे उग्गा जाव अप्पेगइया वंदणवत्तियाए जाव महया महया वंदावंदएहिं णिग्गच्छंति ॥सू० १०९॥

छाया—ततःखलु स कञ्चुकिपुरुषः केशिनः कुमारश्रमणस्य आगमनगृहीतविनिश्चयः चित्रं सारथिं करतलपरिगृहीतं यावत् वर्द्धयित्वा एवमवादीत्-नो खलु देवानुप्रिय! अद्य श्रावस्त्यां नगर्याम् इन्द्रमह इति वा यावत्सा-

---

इन्द्रमह यावत् सागरमह है? जो ये बहुत से उग्र, उग्रपुत्र आदि सबके सब अपने २ घर से निकल कर जा रहे है? ॥ १०८ ॥

'तएणं से कंचुईपुरिसे केसिस्स कुमारसमणस्स' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद उस कंचुकी पुरुषने (केसिस्स कुमारसमण०) केशी कुमारश्रमण के आगमन का गृहीत निश्चयवाला होकर चित्तं सारहिं करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी) चित्रसारथी से बडे विनय से दोनों हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर घुमाकर एवं जयविजय शब्दों द्वारा उसे बधाई देकर इस प्रकार कहा–(णो खलु देवा-

---

સાગરમહ છે? કે જેથી એ બધા ઉગ્ર, ઉગ્રપુત્ર વગેરે સૌ પોતપોતાના ઘેરથી નીકળીને જઈ રહ્યા છે? ॥ ૧૦૮ ॥

"त एणं से कंचुईपुरिसे केसिस्स कुमारसमणस्स" इत्यादि.

સૂત્રાર્થ—(त एण) ત્યાર પછી તે કંચુકી પુરુષે (केसिस्स कुमारसमण०) કેશીકુમાર શ્રમણની આગમનની વાત મનમાં વિચારીને (चित्तं सारहिं करयल परिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी) ચિત્ર સારથિની સામે વિનમ્રતાપૂર્વક બન્ને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તક પર ફેરવીને અને જયવિજય શબ્દોથી તેમને વધામણી આપીને આ પ્રમાણે કહ્યું–(णो खलु देवाणुप्पिया!

गरमह इति वा यत खलु इमे बहवो यावद् वृन्दवृन्दैर्निर्गच्छन्ति, एवं खलु भो देवानुप्रिय! पार्श्वापत्यीयः केशी नाम कुमारश्रमणो जातिसंपन्नो यावत् द्रवन् इहागतो यावत विहरति। तत खलु अत्र श्रावस्त्यां नगर्यां बहव उग्रा यावत अप्येकके वन्दनवृत्तितायै यावत्महद्भिर्महद्भिर्वृन्दवृन्दैर्निर्गच्छन्ति ॥१०९॥

टीका-'तएणं से इत्यादि ततःखलु स कञ्चुकिपुरुषः केशिनः कुमारश्रमणस्य आगमनगृहीतविनिश्चयः--आगमनस्य गृहीतः निश्चयो येन स तथा-ज्ञात केशिकुमारागमनवृत्तान्तः सन चित्रं सारथिं करतलपरिगृहीतं यावद् वर्द्धयित्वा एवम्-अवादीत् हे देवानुप्रिय! अद्य खलु श्रावस्त्यां नगर्याम् इन्द्रमहादि सागरमहान्तेषु कश्चिद महो=उत्सवो नास्ति, यत् खलु इमे उग्रादयो यावद् वृन्दवृन्दैर्निर्गच्छन्ति। एवं खलु भो देवानुप्रिय! भवान् जानातु यदत्र खलु पार्श्वापत्यीयः केशीनाम कुमारश्रमणो जातिसम्पन्नो यावत् द्रवन इह=श्राव-

---

णुप्पिया! अज्ज सावत्थीए णयरीए इंदमहेइ वा, जाव सागरमहेइ वा "हे देवानुप्रिय! आज श्रावस्ती नगरी में न इन्द्र उत्सव है अथवा यावत् न सागर उत्सव है (जेणं इमे बहवे जाव विंदाविंदएहिं निग्गच्छंति, एवं खलु भो देवाणुप्पिया! पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमारसमणे जाइसंपन्ने जाव दूइज्जमाणे इहमागए जाव विहरइ) परन्तु जो ये बहुत से उग्र उग्रपुत्रादिक अनेक विशाल समुदायरूप में होकर निकल रहे हैं-सो उसका कारण यह है कि पार्श्वापत्यीय केशी नाम के कुमारश्रमण जो कि जातिसम्पन्न आदि पूर्वोक्त विशेषणों वाले हैं तीर्थंकर परम्परा के अनुसार विहार करते हुए, एक ग्राम से दूसरे गाम में धर्मोपदेश करते हुए यहां पधारे हैं यावत्-कोष्ठक चैत्य में विराजते हैं। (तेणं अज्ज सावत्थीए नयरीए बहवे उग्गा, जाव अप्पेगइया वंदणवत्तियाए जाव महया महया वंदावंदएहिं णिग्गच्छंति)-

---

अज्ज सावत्थीए णयरीए इंदमहेइ वा, जाव सागरमहेइ वा) हे देवानुप्रिय! आजे श्रावस्ती नगरीमां न इन्द्र उत्सव छे के यावत् न सागर उत्सव छे. (जेणं इमे बहवे जाव विंदाविंदएहिं निग्गच्छंति, एवं खलु भो देवाणुप्पिया! पासावच्चिज्जे केसीनामं कुमारसमणे जाइसंपन्ने जाव दूइज्जमाणे इह-

स्त्या नगर्याः कोष्ठके चैत्ये आगतो यावद् तत् खलु अद्य श्रावस्त्यां नगर्यां बहव उग्रा यावत् इभ्यपुत्रा अप्येकके वन्दनवृत्तितायै वन्दननिमित्तं यावद् महद्भिर्महद्भिर्वृन्दवृन्दैर्निर्गच्छन्तीति ॥ सू० १०९ ॥

मूलम्—तएणं से चित्ते सारही कंचुइपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ—जाव—हियए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव सच्छत्तं उवट्ठवेंति। तएणं से चित्ते सारही ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरविंदपरिक्खित्ते सावत्थी नयरीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्तो केसिकुमारसमणस्स अदूरसामंते तुरए णिगिण्हइ रहं ठवेइ य, ठवित्ता पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसिकुमारसमणं तिक्खुत्तो आयाहिण—पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासइ ॥ सू० ११० ॥

इस कारण आज श्रावस्ती नगरी में अनेक उग्र यावत् इभ्यपुत्रवन्दना करने के निमित्त यावत् विशालसमुदाय के रूप में होकर निकल रहे हैं ।१०९।

वंदगहिं णिग्गच्छंति) એથી આજે શ્રાવસ્તી નગરીમાંથી ઘણા ઉગ્ર યાવત્ ઇભ્ય-પુત્રો વંદના કરવા માટે યાવત્ વિશાળ સમુદાયના રૂપમાં એકત્ર થઈને જઈ રહ્યા છે. ॥૧૦૯॥

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः कञ्चुकिपुरुषस्य अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्ट-यावद् हृदयः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा, एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया ! चातुर्घण्टम् अश्वरथं युक्तमेव उपस्थापयत यावत्सच्छत्रम् उपस्थापयन्ति। ततः खलु स चित्रः सारथिः स्नातः कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः शुद्धप्रवेश्यानि मङ्गल्यानि वस्त्राणि प्रवरप-

'तएणं से चित्ते सारही कंचुईपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं से चित्ते सारही कंचुइपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) इसके बाद जब कि कंचुकी के मुख से इस अर्थ को सुना और उसका हृदय में विचार किया तब हृष्ट यावत् हृदय वाले होकर उस चित्रसारथिने कौटुम्बिकपुरुषों—आज्ञाकारी पुरुषों को बुलाया, (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उसने ऐसा कहा (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह) हे देवानुप्रियो ! आप लोग चातुर्घंट-(चारघंटोवाले) अश्वरथ को घोड़ों से युक्त करके शीघ्र ही उपस्थित करो (जाव सच्छत्तं उवट्ठवेंति) अपने स्वामी की इस प्रकार आज्ञा के वचन सुनकर यावत् उत्तम छत्र सहित अश्वरथ को उन्होंने लाकर उपस्थित कर दिया. (तएणं से चित्ते सारही ण्हाए कयबलिकम्मे, कयकोउयमंगलपायच्छित्ते) रथ को उपस्थित हुआ जानकर चित्र सारथिने स्नान किया, बलिकर्म किया अर्थात् काक

"तएणं से चित्ते सारही कंचुइपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं" इत्यादि.

सूत्रार्थ—(तएणं से चित्ते सारही कंचुइपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) ज्यारे कंचुकीना मुखथी आ बधी विगत सांभळी त्यारे तेणे मनमां विचार कर्यो अने हृष्ट यावत् हृदयवाळो थईने ते चित्रसारथीए कौटुंबिक पुरुषोने—आज्ञाकारी पुरुषोने बोलाव्या (सद्दावित्ता एवं वयासी) बोलावीने तेमने आ प्रमाणे कह्युं. (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह) हे देवानुप्रियो ! [illegible] चातुर्घंट (चार घंटोवाळा) अश्वरथने [illegible] (जाव सच्छत्तं उवट्ठवेंति) पोताना स्वामीनी आ प्रमाणे [illegible] [illegible] उपस्थित [illegible]

(तएणं से चित्ते सारही ण्हाए कयबलिकम्मे, कयकोउयमंगल-पायच्छित्ते) [illegible]

रिहितः, अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरो यत्रैव चातुर्घण्टो अश्वरथस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य चातुर्घण्टम् अश्वरथं दूरोहति, सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन महाभट-चटकरवृन्दपरिक्षिप्तः श्रावस्तीनगर्याः मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव कोष्ठकं चैत्यं यत्रैव केशिकुमारश्रमणस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य केशिकुमारश्रमणं त्रिकृत्वः आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति,

आदि को अन्न का भाग दिया एवं दुःस्वप्न को विनाश करने के लिये कौतुक, मंगलरूप प्रायश्चित्त किया, (सुद्धप्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) बाद में उसने शुद्ध, परिषदा में प्रवेशयोग्य, मांगलिक, वस्त्रों को अच्छी तरह से पहिरा एवं विशिष्ट कीमतवाले तथा अल्प वजनवाले ऐसे आभूषणों से अपने शरीर को अलंकृत किया. (जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंट आसरहं दुरुहइ) बाद में वह जहां चारघंटों वाला अश्वरथ खडा था वहां पर आया-वहां आकर वह उस चातुर्घंट अश्व रथ पर बैठ गया (सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरविंदपरिक्खित्तो सावत्थीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ) छत्रधारण करने वालेने उसके ऊपर कोरंटपुष्पों की मालाओं से सुशोभित छत्र तान दिया, विशाल भट्टों का समूह उसके आसपास आकर खडा हो गया. इस प्रकार होकर फिर वह श्रावस्ती नगरी के बीचों बीच से होता हुआ निकला (निग्गच्छिता जेणेव कोट्ठए

प्पावेसाइं मंगलाइं वत्थाइं पवरपरिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) त्यारपछी तेणे सारी रीते शुद्ध, मुनिपरिषदामां प्रवेश योग्य, मांगलिक वस्त्रो धारण कर्या. तथा बहु किंमती अने अल्पभारवाळा आभूषणो पहेरीने पोताना शरीरने अलंकृत कर्युं. (जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ) त्यार बाद ज्यां चार घंटोवाळो अश्वरथ हतो त्यां गयो त्यां जईने ते चातुर्घंट रथ पर सवार थयो. (सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरविंदपरिक्खित्तो सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ) छत्र धारण करनाराओए तेमना उपर कोरंट पुष्पोनी माळाओथी सुशोभित छत्र ताण्युं विशाळ भटोना समूहो आवीने तेनी आसपास चोमेर विंटळाई गया. आ प्रमाणे ते श्रावस्तीना नगरीनी वच्चे थईने नीकळ्यो (निगच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए

कृत्वा वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा नात्यासन्ने नातिदूरे शुश्रूषमाणो नमस्यन् अभिमुखे प्राञ्जलिपुटो विनयेन पर्युपास्ते ।११०।

जेणेव केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ) निकलकर वह जहां कोष्ठक चैत्य था और उसमें भी जहां केशीकुमारश्रमण थे वहां पहुंचा (उवागच्छित्ता केसिकुमारसमणस्स अदूरसामंते तुरए णिगिण्हइ) वहां पहुंच कर उसने केशिकुमारश्रमण के स्थान से कुछ थोडी दूर पर घोडों को खडा कर दिया (रहं ठवेइ) रथको खडा कर दिया (ठवित्ता पच्चोरुहई) खडा करके फिर वह उसमें नीचे उतरा (पच्चोरुहित्ता जेणेव केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ) नीचे उतर कर वह जहां केशीकुमार श्रमण थे वहां पर गया (उवागच्छित्ता केसिकुमारसमणं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ) वहां जाकर उसने केशीकुमार श्रमण को तीनवार प्रदक्षिणा की (करित्ता वंदइ, नमंसइ) प्रदक्षिणा करके फिर उसने उनको वन्दना की, नमस्कार किया (वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णाइदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासइ) वन्दना नमस्कार करके फिर वह न अधिक दूर और न अधिक पास ऐसे उचित स्थान पर धर्मोपदेश सुनने की इच्छा से बैठ गया, वहां बैठ २ ही उसने उनके समक्ष विनय से दोनों हाथ जोडकर उनकी पर्युपासना की।

टीकार्थ इसका स्पष्ट है ॥११०॥

'तएणं से' इत्यादि—

टीका–एतत्सूत्रस्थपदानां व्याख्या पूर्वं गता, अतइदं व्याख्यातप्रायमिति।सू.११०।

मूलम्—तएणं से केसिकुमारसमणे चित्तस्स सारहिस्स तीसे महइमहालयाए परिसाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं तएणं सा महइमहालिया परिसा केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।सू.१११।

छाया—ततः खलु स केशिकुमारश्रमणः चित्राय सारथये तस्यां महातिमहालयायां परिषदि चातुर्यामं धर्मं परिकथयति, तद्यथा—सर्वस्मात् प्राणातिपाताद् विरमणम् १, सर्वस्मात् मृषावादाद् विरमणम् २, सर्वस्मात् अदत्तादानाद् विरमणम् ३, सर्वस्माद् बहिर्गादानाद् विरमणम् ४। ततः खलु सा महातिम-

---

'तएणं से केसिकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं से केसिकुमारसमणे) इसके बाद (केसिकुमारसमणे) केशिकुमार श्रमणने (चित्तस्स सारहिस्स) चित्र सारथि के लिये (तीसे महइमहालयाए) उस अति विशाल (परिसाए) परिषदा में (चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ) चातुर्याम धर्म का (परिकहेइ) प्ररूपण किया–उपदेश दिया (तं जहा–सव्वओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वओमुसावायाओ वेरमणं, सव्वओ आदिन्नादाणाओ. वेरमणं. सव्वओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं) वे चातुर्याम ये हैं–१ समस्त प्राणातिपात से विरक्त (निवृत्त) होना, २

'तएणं से केसिकुमारसमाणे' इत्यादि।

સૂત્રાર્થઃ—(तएणं से केसिकुमारसमणे) ત્યાર પછી કેશિકુમાર શ્રમણે (चित्तस्स सारहिस्स) ચિત્ર સારથિ માટે (तीसे महइमहालयाए) તે અતિ વિશાળ (परिसाए) પરિષદામાં (चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ) ચાતુર્યામ ધર્મની (परिकहेइ) પ્રરૂપણા કરી. એટલે કે ઉપદેશ કર્યો (तं जहा सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ, मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ आदिन्नादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं)–તે ચાતુર્યામ ધર્મની વિશેષ વિગત આ પ્રમાણે છે–(૧) સમસ્ત પ્રાણાતિપાતથી વિરકત (નિવૃત્ત) થવું. (૨) સમસ્ત મૃષાવાદથી વિર-

हालया परिषत् केशिनः कुमारश्रमणस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिशं प्रतिगता ॥ सू० १११ ॥

टीका—'तएणं से इत्यादि—ततः खलु स केशीकुमारश्रमणः चित्राय सारथये=चित्रं सारथिमुद्दिश्य तस्यां महातिमहालयायाम्=अतिविशालायां परिषदि चातुर्यामं चतुर्णाम्=चतुःसंख्यकानां यामानां=यमा एव यामास्तेषां समाहारश्चतुर्यामं, तदेव चातुर्यामं, तदस्ति यस्मिन् स चातुर्यामस्तं धर्मं परिकथयति=व्याख्याति, तद्यथा—सर्वस्मात् प्राणातिपाताद् विरमणं=सकलप्राणिप्राणवियोजनानुकूलव्यापारतो विनिवृत्तिः१, सर्वस्माद् मृषावादाद् विरमणम्=सर्वविधाऽसत्यभाषणाद् विनिवृत्तिः, तथा—सर्वस्मात्

समस्त मृषावाद से विरक्त होना, ३ समस्त अदत्तादान से विरक्त होना और समस्त बहिद्धादान से विरक्त होना। (तएणं सा महइमहालिया परिसा केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टतुट्ठ० जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया) इस तरह केशिकुमार श्रमण से चातुर्याम धर्म का उपदेश सुनकर और हृदय में उसे धारण कर वह अतिविशाल परिषदा हृष्ट तुष्ट यावत हृदयवाली होती हुई जहां से आई थी वहां पर पीछी चली गई.

टीकार्थ मूलार्थ के ही अनुरूप है. चातुर्याम धर्म का उपदेश किया—जो इसका तात्पर्य ऐसा है कि चातुर्याम वाले धर्म का उपदेश दिया. सकल प्राणियों के प्राणों को वियोजन (अलग) करने के अनुकूल व्यापार से रहित होना इसका नाम प्राणातिपात विरमण है. इसी तरह समस्त प्रकार के असत्यभाषण करने से दूर रहना-उसका त्याग करना इसका नाम मृषावाद-

---

ન થવું. (૩) અદત્તાદાનથી વિરક્ત થવું અને બહિદ્ધાદાનથી વિરક્ત થવું. (તએ ણં સા મહઇમહાલિયા પરિસા કેસિસ્સ કુમારસમણસ્સ અંતિએ ધમ્મં સોચ્ચા નિસમ્મ હટ્ઠતુટ્ઠ જામેવ દિસિં પાઉબ્ભૂયા તામેવ દિસિં પડિગયા.

अदत्तादानात्=सकलविधाचौर्याद् विरमणं=विनिवृत्तिः, तथा—सर्वस्माद् बहिः-रादानाद्=धर्मोपकरणातिरिक्तपरिग्रहोपादानाद् विरमणम्। मैथुनविरमणस्य परिग्रहे एवान्तर्भावः, नहि-अपरिगृहीता स्त्री परिभुज्यतेऽतो मैथुन-विरमणरूपं महाव्रतं न पृथगुपात्तमिति। उपलक्षणाद् अगारधर्ममपि परिकथयति—ततः खलु सा महातिमहालया परिषत् केशिनःकुमारश्रमणस्य अन्तिके=समीपे धर्मं श्रुत्वा सामान्यतः, निशम्य=विशेषतो हृदयवधार्य यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता, तामेव दिशं प्रतिगता ॥सू० १११॥

मूलम्—तएणं से चित्ते सारही केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव—हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता केसिं-कुमारसमणं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं,

विरमण है. समस्तप्रकार के अदत्तादान से—चौर्यकर्म से दूर रहना उसका त्याग करना इसका नाम अदत्तादानविरमण है, तथा धर्मोपकरण से अतिरिक्त परिग्रह का त्याग करना इसका नाम बहिरादान विरमण है। मैथुन विरमण को यहां स्वतंत्ररूप से व्रत नहीं माना गया है. क्यों कि उसका अन्तर्भाव परिग्रह में ही हो जाता है। क्यों कि जो स्त्री भोग के काम आती है वह अपरिगृहीत हुई नहीं आती है किन्तु परिगृहीत हुई ही आती है। उपलक्षण से उन्होंने आगारधर्म का भी कथन किया. इस तरह केशिकुमार श्रमण के पास धर्म का उपदेश सामान्यरूप से सुनकर और उसे विशेषरूप से हृदयमें धारण करके वह अतिविशाल परिषदा जहा से आई थी वहीं पर पीछी चली गई ॥ १११ ॥

સમસ્ત પ્રકારના અદત્તાદાનથી—ચૌર્યકર્મથી દૂર રહેવું—તે કર્મનો ત્યાગ કરવો—તે અદત્તાદાન વિરમણ છે. તેમજ ધર્મોપકરણાતિરિકત પરિગ્રહનો ત્યાગ તે બહિરાદાન વિરમણ છે મૈથુન વિરમણનો અહીં સ્વતંત્રપણે વ્રતરૂપે નિર્દેશ કર્યો નથી કેમકે તેનો પરિગ્રહમાં જ અન્તર્ભાવ કરવામાં આવ્યો છે. કેમકે જે સ્ત્રી ભોગ માટે આવે છે તે અપરિગૃહીત થઈને નહિ પણ પરિગૃહીતના રૂપમાં જ આવે છે. ઉપલક્ષણથી તેઓશ્રીએ અગાર ધર્મનું પણ કથન કર્યું છે. આ પ્રમાણે સામાન્યરૂપથી કેશિકુમાર શ્રમણ પાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળીને અને તેને સવિશેષરૂપમાં હૃદયમાં ધારણ કરીને તે અતિ વિશાળ પરિષદા જ્યાંથી આવી હતી ત્યાં પાછી જતી રહી. ॥૧૧૧॥

रोयामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं, अब्भुट्ठेमि णं भंते । निग्गंथं पावयणं, एवमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणे, तहमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणे अवितहमेयं निग्गंथे पावयणे, असंदिद्धमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणं, इच्छियमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणे, पडिच्छियमेयं भंते ! निग्गंथे, पावयणे, इच्छियपडिच्छियमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणे, जं णं तुब्भे वदहत्तिकट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी —जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्णं चिच्चा सुवण्णं, एवं धणं धन्नं बलवाहणं कोसं कोट्ठागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धणकणगरयणमणि-मोत्तियसंखसिलप्पवालसंतसारसावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता दाणं दाइत्ता परिभाइत्ता मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्व-यंति, णो खलु अहं ता संचाएमि चिच्चा हिरण्णं तं चेव जाव पव्व-इत्तए । अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खा-वइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए । अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि । तएणं से चित्ते सारहा केसिकुमारसमणस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । तएणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, चाउग्घंटं आसरहं दुहरुइ, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० ११२ ॥

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनः कुमारश्रमणस्य अन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट यावद्—हृदयः उत्थया उत्तिष्ठति, उत्थाय केशिनं

कुमारश्रमणं त्रिकृत्वा आदक्षिण-प्रदक्षिणं करोति, वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्—श्रद्दधामि खलु भदन्त! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, प्रत्येमि खलु भदन्त! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, रोचयामि खलु भदन्त! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, अभ्युत्तिष्ठे खलु भदन्त! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, एवमेतद् भदन्त! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, तथैवैतद् भदन्त! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, अवितथमेतद् भदन्त! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, असन्दिग्धमेतद् भदन्त! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, इष्टमेतद्

'तएणं से चित्ते सारही इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं) इसके बाद (से चित्ते सारही) वह चित्र सारथि (केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म) केशीकुमारश्रमण के पास धर्म को सुनकर और उसे हृदय में अवधृतकर (हट्ठ जाव हियए) हर्षित हुआ संतुष्ट हुआ यावत् (उट्ठाए उट्ठेइ) अपने आप उठा—(उट्ठित्ता केसिं कुमारसमणं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ) और उठकर उसने केशिकुमारश्रमण की तीन आदक्षिणप्रदक्षिणा की (वंदइ नमंसइ) वन्दना की नमस्कार किया (वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) वंदना नमस्कार कर फिर वह इस प्रकार बोला—(सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं रोयामि णं भंते! णिग्गंथं पावयणं अब्भुट्ठेमि णं भंते! णिग्गंथं पावयणं एवमेयं भंते! निग्गंथं पावयणं असंदिद्धमेयं भंते! निग्गंथं पावयणं) हे भदन्त! मैं निर्ग्रन्थप्रवचन की श्रद्धा करता हूं। हे भदन्त! मैं निर्ग्रन्थप्रवचन की प्रतीति करता हू, हे भदन्त! मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन को अपनी रुचि का

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(तएणं) ત્યાર પછી (से चित्ते सारही) તે ચિત્ર સારથિ (केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म) કેશીકુમાર શ્રમણની પાસેથી ધર્મ સાંભળીને અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને (हट्ठजाव हियए) હર્ષિત થયો. સંતુષ્ટ થયો યાવત્ (उट्ठाए उट्ठेइ) પોતાની મેળે ઉભો થયો (उट्ठित्ता केसिं कुमारसमणं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ) અને ઉભો થઈને તેણે કેશીકુમાર શ્રમણની ત્રણ વાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરી. (वंदइ नमंसइ) વંદના કરી નમસ્કાર કર્યો. (वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी) વંદનાકરીને તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો—(सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं रोयामि णं भंते! णिग्गंथं पावयणं अब्भुट्ठेमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं एवमेयं भंते! णिग्गंथं पावयणं असंदिद्धमेयं भंते! निग्गंथं पावयणं) હે ભદંત! હું નિર્ગ્રંથ પ્રવચનમાં શ્રદ્ધા રાખું છું. હે ભદંત! હું નિર્ગ્રંથ પ્રવચનમાં પ્રતીતિ રાખું છું, હે ભદંત! હું નિર્ગ્રંથ પ્રવચનને

भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, प्रतीष्टमेतद् भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम् इष्ट-प्रतीष्टमेतद् भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम् यत् खलु यूयं वदथेति कृत्वा वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-यथा खलु देवानुप्रियाणाम् अन्तिके बहव उग्रा भोगा यावत् इभ्या इभ्यपुत्रास्त्यक्त्वा हिरण्यं त्यक्त्वा सुवर्णम् एवं धनं धान्यं बलं वाहनं कोशं कोष्ठागारं पुरम् अन्तःपुरं, त्यक्त्वा

विषय बनाता हूं. हे भदन्त ! मैं इस निर्ग्रन्थ प्रवचन को स्वीकार करता हूं. हे भदन्त ! आप जैसा इस निर्ग्रन्थ प्रवचन का प्रतिपादन करते हैं, वह वैसाही है. हे भदन्त ! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्य है. हे भदन्त ! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन सन्देह रहित है। (इच्छियमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणे, पडिच्छियमेयं भंते निग्गंथे पावयणे) हे भदन्त ! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन इष्ट है,- हे भदन्त ! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन प्रतीष्ट है। (इच्छियपाडिच्छियमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणे) हे भदन्त ! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन इष्टप्रतीष्ट दोनोंरूप है. (जं णं तुब्भे वदह, त्ति कट्टु वंदइ, नमंसइ) जैसा कि आप कहते हैं इस प्रकार कहकर उसने उसको वन्दना की नमस्कार किया. (वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) वन्दना नमस्कार कर फिर उसने ऐसा कहा (जहाणं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा, भोगा जाव इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं, एवं धणं धन्नं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं पुरं अंतेउरं) आप देवानुप्रिय के पास जिस प्रकार अनेक उग्र भोग यावत् इभ्य

પોતાની રુચિનો વિષય બનાવું છું. હે ભદંત! હું આ નિર્ગ્રંથપ્રવચનને સ્વીકારું છું. હે ભદંત ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચનનું આપ શ્રી જે પ્રમાણે પ્રતિપાદન કરી રહ્યા છો. અક્ષરશઃ યથાવત્ છે. હે ભદંત ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન સત્ય છે, હે ભદંત ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન સંદેહ રહિત છે. (इच्छियमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणे, पडिच्छियमेयं भंते निग्गंथे पावयणे) હે ભદંત ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન ઇષ્ટ છે, હે ભદંત ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન પ્રતીષ્ટ છે. (इच्छियपडिच्छियमेयं भंते ! निग्गंथे पावयणे) હે ભદંત ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન ઇષ્ટ અને પ્રતીષ્ટ બન્ને છે. (जं णं तुब्भे वदह, त्तिकट्टु वंदइ नमंसइ) જે પ્રમાણે આપશ્રી કહી રહ્યા છો તે પ્રમાણે જ છે. આમ કહીને તેણે વંદના તેમજ નમસ્કાર કર્યાં. (वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) વંદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેણે તેઓશ્રીને આ પ્રમાણે કહ્યું-(जहाणं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा, भोगा जाव इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्णं. चिच्चा सुवण्णं. एवं धणं धन्नं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं पुरं अंतेउरं) આપ દેવાનુપ્રિયની પાસે જેમ ઉગ્ર, ભોગ યાવત્ ઇભ્ય અને ઇભ્ય

विपुलं- धनकनकरत्नमणिमौक्तिक शङ्खशिलाप्रवालसत्सारस्वापतेयं त्यक्त्वा विगोप्य दानं दत्त्वा, परिभाज्य मुण्डा भूत्वा अगारात् अनगारितां प्रव्रजन्ति, नो खलु अहं तावत् शक्नोमि त्यक्त्वा हिरण्यं तदेव यावत् प्रव्रजितुम्। अहं खलु देवानुप्रियाणाम् अन्तिके पञ्चाणुव्रतिकं सप्तशिक्षाव्रतिकं द्वादशविधं गृहिधर्मं प्रतिपत्तुम्। यथासुखं देवानुप्रिय ! मा प्रतिबन्धं कुरु। ततः

और इभ्य पुत्र हिरण्य को छोडकर, सुवर्णको छोडकर एवं धन धान्य, बल, वाहन, कोश, कोष्ठागार, पुर और अन्तःपुर को (चिच्चा) छोडकर (विउलं धणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालसंतसारसावएज्जं, विच्छडिज्जा, विगोवइत्ता, दाणं दाइत्ता) तथा विपुल, धन, कनक, रत्न मौक्तिक शंख शिलाप्रवाल एवं सत्सारस्वापतेय को छोडकर तथा उन सबको विशाल प्रमाण में दीन दरिद्र आदिकों के लिये वितरित कर (परिभाइत्ता) पुत्रादिकोंमें विभक्त (विभाग) कर (मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयंति) बाद में मुडित होकर के अगार अवस्था को धारण करते हैं (णो खलु अहं ता संचाएमि, चिच्चा हिरण्णं तं चेव जाव पव्वइत्तए) वैसा मैं हिरण्य आदि को छोडकर दीक्षा धारण करने के लिये समर्थ नहीं हूं, (अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं, सत्तासिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए) मैं तो आप देवानुप्रिय के पास पांच अणुव्रतवाले एवं सातशिक्षा व्रतवाले इस तरह १२ प्रकार के गृहस्थ धर्म को धारण कर सकता हूं। (अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि) आप

હિરણ્યનો ત્યાગ કરીને અને ધન, ધાન્ય, બળ, વાહન, કોશ, કોષ્ઠાગાર, પુર અને અંતઃપુર-રણવાસ (चिच्चा) નો ત્યાગ કરીને (विउलधणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालसंतसारसावएज्जं, विच्छडिज्जा, विगोवइत्ता, दाणं दाइत्ता તેમજ વિપુલ ધન, કનક, રત્ન, મૌક્તિક શંખ શિલા પ્રવાલ અને સત્સાર સ્વાપતેય નો ત્યાગ કરીને તેમજ પુષ્કળ પ્રમાણમાં દીનદરિદ્ર વગેરે લોકોને આપીને (परिभाइत्ता) પુત્રાદિકોમાં વહેંચીને (मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयंति) ત્યાર બાદ મુંડિત થઈને અગાર અવસ્થામાંથી અનગાર અવસ્થાને ધારણ કરે છે (णो खलु अहं ता संचाएमि, चिच्चा हिरण्णं तं चेव जाव पव्वइत्तए) તેમ હું હિરણ્ય વગેરેનો ત્યાગ કરીને દીક્ષા ધારણ કરવામાં અસમર્થ છું. (अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए) આપશ્રી પાસેથી હું તો ફક્ત પાંચ અણુવ્રતવાળા અને સાત શિક્ષાવ્રતવાળા આમ ૧૨ પ્રકારના ગૃહસ્થ ધર્મને સ્વીકારી શકું છું. (अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि) આપ દેવાનુપ્રિયને જે-કાર્યમાં

खलु स चित्रः सारथिः केशिकुमारश्रमणस्य अन्तिके पञ्चाणुव्रतिकं यावद् गृहिधर्मम् उपसम्पद्य खलु विहरति। ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिकुमारश्रमणं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथस्तत्रैव प्राधारयद् गमनाय, चातुर्घण्टम् अश्वरथं दूरोहति, यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः ॥ सू० ११२ ॥

टीका--'त एणं से' इत्यादि--

ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनः कुमारश्रमणस्य अन्तिके=

देवानुप्रिय को जिस प्रकार से सुख हो वैसा करो—परन्तु विलम्ब मत करो. (तएणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) इसके बाद उस चित्र सारथि ने केशिकुमार श्रमण के पास पांच अणुव्रतों वाले एवं सात शिक्षाव्रतों वाले गृहस्थ धर्मको अंगीकार कर लिया (तएणं से चित्ते सारही केसिकुमार समणं वंदइ, नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, चाउग्घंट आसरहं दुरुहइ) इसके बाद उस चित्र सारथिने केशिकुमार श्रमण को वन्दना की नमस्कार किया, वंदना नमस्कार कर उसने जहां चातुर्घंट अश्वरथ रखा था उस ओर जाने का निश्चय किया. वहां जाकर वह उस पर चढ गया. (जामेव दिसिं पाउब्भूए, तामेव दिसिं पडिगए) और जिस दिशा से होकर आया था उसी दिशा तरफ चला गया।

टीकार्थ--इसके बाद चित्र सारथी केशीकुमार श्रमण के पास

સુખ થાય તે કરો. પણ વિલંબ ન કરો. (त एणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) ત્યાર પછી તે ચિત્ર સારથિએ કેશિકુમાર શ્રમણુ પાંસેથી પાંચ અણુવ્રતોવાળા અને સાત શિક્ષાવ્રતોવાળા ગૃહસ્થધર્મને સ્વીકારી લીધો. (त एणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ) ત્યાર બાદ તે ચિત્ર સારથીએ કેશિકુમાર શ્રમણુને વંદના કરી, નમસ્કાર કર્યા. વંદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેણે જ્યાં ચાતુર્ઘંટ અશ્વરથ હતો તે તરફ જવાનો નિશ્ચય કર્યો ત્યાં જઈને તે રથ પર સવાર થઈ ગયો. (जामेव दिसिं पाउब्भूए. तामेव दिसिं पडिगए) અને જે દિશા તરફ થઈને તે આવ્યો હતો તે જ દિશા તરફ પાછો જતો રહ્યો.

ટીકાર્થ—ત્યાર બાદ ચિત્રસારથિ કેશિકુમાર શ્રમણની પાસે ધર્મ સાંભળીને

समीपे धर्मं श्रुत्वा सामान्यतः, निशम्य=विशेषतो हृद्यवधार्य हृष्टयावद्हृदयः= हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितः हर्षवशविसर्पद्धृदयः उत्थया=उत्थानशक्त्या उत्तिष्ठति. उत्थाय केशिनं कुमारश्रमणं त्रिकृत्वः= वारत्रयम् आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्-हे भदन्त! खलु=निश्चयेन श्रद्धामि=इदमेवमेवास्तीति श्रद्धानविषयीकरोमि नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, हे भदन्त! प्रत्येमि=प्रतीतिविषयीकरोमि खलु नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, हे भदन्त! रोचयामि =रुचिविषयीकरोमि खलु नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, हे भदन्त! अभ्युत्तिष्ठे=अभ्युपगच्छामि खलु नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, हे भदन्त! यथा खलु भवद्भिः प्रतिपादितम्, एतद् नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, एवमेव, हे भदन्त! यथा भवन्तः प्रतिपादयन्ति, एतद् नैर्ग्रन्थं प्रवचनं तथैव=तद्रूपमेवास्ति, हे भदन्त! एतद् नैर्ग्रन्थं प्रवचनम् अवितथं=सत्यम् अत एव हे भदन्त! एतद् नैर्ग्रन्थं प्रव-

---

धर्म सुनकर और उसे विशेषरूप से अपने हृदय में धारण कर हृष्ट तुष्ट और चित्त में आनंद संपन्न हुआ उसके मनमें गाढ़ प्रीति जग गई, वह परम सौमनस्यित हो गया. हृदय अपार हर्ष के कारण उसका हर्षित होने लगा. वह उसी समय खडा हुआ, और केशिकुमार श्रमण को उसने तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिण पूर्वक वन्दना की नमस्कार किया. वन्दना नमस्कार कर फिर उसने ऐसा कहा–हे भदन्त मैं इस निग्रन्थ प्रवचनको यह ऐसा ही है, इस रूपसे अपनी श्रद्धा का विषय बनाता हूं, हे भदन्त! मैं इस निर्ग्रन्थप्रवचन को अपनी प्रतीति में लाता हूं. हे भदन्त! मैं इस निर्ग्रन्थ प्रवचनको अपनी रुचि में आकृष्ट करता हूं और मैं हे भदन्त! इसे स्वीकार भी करता हूं। हे भदन्त। जैसा आपने कहा है यह निर्ग्रन्थ प्रवचन ऐसा ही है। यह निर्ग्रन्थ प्रवचन अवितथ–सर्वथा सत्यरूप है,

---

અને તેને વિશેષરૂપથી હૃદયમાં અવધારિત કરીને હૃષ્ટતુષ્ટ થયો અને તેનું ચિત્ત અતીવ આનંદિત થયું. તેના મનમાં તીવ્ર પ્રીતિ ઉત્પન્ન થઈ. તે પરમસૌમનસ્યિત થઇ ગયો. તેનું હૃદય અપાર હર્ષથી તરબોળ થઇ ગયું. તે તરતજ ઉભો થયો અને કેશિકુમાર શ્રમણની તેણે આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણાપૂર્વક વન્દના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના તેમજ નમસ્કાર કરીને પછી તેણે આ પ્રમાણે કહ્યુ–"હે ભદંત! હું આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન પર એ એવુ જ છે" આ રૂપમાં શ્રદ્ધાશીલ થાઉં છુ. હે ભદંત! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન પર હું સંપૂર્ણપણે પ્રતીતિ ધરાવું છું. હે ભદંત! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચનને હું પોતાની રુચિ તરફ સહજ ભાવે આકૃષ્ટ કરૂં છું" અને હે ભદંત! આને હું સ્વીકારૂં પણ છુ હે ભદંત! આપશ્રીએ જે પ્રમાણે કહ્યું છે તે પ્રમાણે જ આ ગ્રંન્થ પ્રવચન છે. આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન અવિતથ–સર્વથા–સત્યરૂપ છે, એથી જ એ

चनम्, असन्दिग्धम्= सन्देहरहित खलु भदन्त ! एतद् नैर्ग्रन्थ्य प्रवचनम्, तथा-हे भदन्त ! एतत् खलु इष्ट प्रतीष्टम् अभिलषितम् प्रतीष्टम्=आभिमुख्येन सम्यक् प्रतिपन्नमेतत्, इष्टप्रतीष्टम्=सर्वथाऽतिशयेनाभिलषितं हे भदन्त ! नैर्ग्रन्थं प्रवचनम्, यत् खलु यूयं वदथ-इति कृत्वा=इत्युक्त्वा वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्, हे भदन्त ! देवानुप्रियाणाम्=भवताम् अन्तिके=समीपे यथा=येन प्रकारेण खलु बहव उग्रा भोगा यावत् इभ्या इभ्यपुत्रा हिरण्यं=रजतम् त्यक्त्वा, एवम्-अमुनैवप्रकारेण धनं=रूप्यादि, धान्यं=शाल्यादि, बलं=सैन्यं, वाहनम्=अश्वादिरूपम्, कोशं-प्रसिद्धम्, कोष्ठागारं=धान्यगृहं, पुरं=नगरम्, अन्तःपुरं=स्त्रीनिवासभूतस्थानं च त्यक्त्वा, तथा-विपुलं=प्रचुरं धनकनकरत्नमणि मौक्तिकशङ्खशिलाप्रवालसत्सारस्वापतेयं,-तत्र धनं=रूप्यादि कनकं=घटितमघ-

---

इसीलिये यह सन्देह रहित है। इष्ट है और प्रतीष्ट है. अर्थात् इसे भव्यजीवों ने अपने जीवनमें उतारा है. अतः यह सर्वथा अतिशयरूप से अभिलषित सिद्ध हुआ है ऐसा कह कर उस चित्र सारथिने केशिकुमार श्रमण की भक्ति के वशवर्ती होकर पुनः वन्दना की नमस्कार किया. और फिर उसने इनसे ऐसा कहा-हे भदन्त ! आप देवानुप्रिय के पास जिस प्रकार से अनेक उग्रोंने उग्रपुत्रोंने भोगोंने यावत् इभ्योंने एवं इभ्यपुत्रोंने हिरण्य-रजत को-छोडकर, सुवर्ण को छोडकर, इसी प्रकार, से धन-रूप्यादिकों को, धान्य-शाल्यादिकों को, बल-सैन्य को वाहन-अश्वदिकों को, कोश को, कोष्ठागार-धान्यगृह को, पुर नगर को, अन्तःपुर स्त्रीनिवास भूतस्थानको,छोडकर, तथा विपुल प्रचुर धन-रूप्यादिकों को कनक घटित अघटित (घडा हुआ और विना घडा)

સંદેહ રહિત છે. ઇષ્ટ છે અને પ્રતીષ્ટ છે. એટલે કે ભવ્ય જીવોએ આને પોતાના જીવનમાં ઉતાર્યું છે. એથી જ એ સર્વથા અતિશયરૂપથી અભિલષિત સિદ્ધ થયું છે." આ પ્રમાણે કહીને તે ચિત્ર સારથિએ ભક્તિવશ થઈને કેશિકુમાર શ્રમણની ફરી વન્દના કરી તેમને નમસ્કાર કર્યા અને પછી તેણે તેઓશ્રીને આ પ્રમાણે કહ્યુ-"હે ભદંત ! આપ દેવાનુપ્રિય પાસેથી જેમ ઘણા ઉગ્રોએ, ઉગ્રપુત્રોએ ભોગોએ યાવત્ ઇભ્યોએ અને ઇભ્યપુત્રોએ હિરણ્ય-સુવર્ણને ત્યજીને, રજત-ચાંદીને ત્યજીને, આ પ્રમાણે ધન-રૂપ્યા વગેરેને, ધાન્ય-શાલિ વગેરેને, બલ-સૈન્યને, વાહન-અશ્વ વગેરેને કોશને કોષ્ઠાગાર-ધાન્યગૃહને, પુર-નગરને, અન્તઃપુર-રણવાસને ત્યજીને તેમજ વિપુલ પ્રચુર ધન રૂપ્ય વગેરેને કનક-ઘટિત અઘટિત બન્ને પ્રકારના સુવર્ણને, કર્કેતન રત્ને

टितं चेति द्विविधं सुवर्णम्, रत्नं-कर्केतनादिकम्, मणिः=पद्मरागादिरूपः, मौक्तिकं=मुक्ताफलं, शङ्खः-रत्नविशेषः, शिलाप्रवालः=विद्रुमः, सत्सारस्वापतेयं सद्=पितृपितामहादिपरम्परारूपेण विद्यमानं सारं=प्रधानं यत्, स्वापतेयं=मणिरत्नादिकं द्रव्यं तत् एतेषां समाहारस्तत्,-धनधान्यादि सत्सारस्वापतेयान्तं सर्वं विच्छर्द्य=भावतः परित्यज्य, विगोप्य=तानि सर्वाणि प्रकटीकृत्य दानं दत्त्वा=दीनदरिद्रादिभ्यो वितीर्य, परिभाज्य=पुत्रादिषु विभज्य, मुण्डा भूत्वा अगारात् अनगारितां प्रव्रजन्ति=दीक्षां गृह्णन्ति, नो खलु भदन्त! अहं यावत् शक्नोमि=समर्थोऽस्मि त्यक्त्वा हिरण्यं, तदेव यावत्=सुवर्णादिकं सर्वं त्यक्त्वा-इत्यर्थः, प्रव्रजितुम्=दीक्षां ग्रहीतुम्। अहं खलु देवानुप्रियाणाम् अन्तिके=समीपे पञ्चाणुव्रतिकं-पञ्च=पञ्चसंख्यकानि अनुव्रतानि=स्थूलात् प्राणातिपाताद् विरमणम् १, स्थूलाद् मृषावादाद् विरमणम् २, स्थूलात्

दोनों प्रकार के सुवर्ण को, कर्केतनादिक रत्नको, पद्मरागादिकरूप मणियों को, मुक्ताफलों को, रत्नविशेषरूप शंखको, शिलाप्रवालविद्रुम को, सत्-पिता पितामह आदिकों की परम्परारूप से विद्यमान सारप्रधान मणिरत्नादिकरूप स्वापतेय को, भावतः छोड करके, तथा प्रत्यक्षरूप में इन सबको दीन दरिद्रादिकों को दान देकर, एवं पुत्रादिकों में इन्हें विभक्त करके अर्थात पुत्रादिकों को धन आदिका भाग देकर मुंडित होकर अगारावस्था से परे हो दीक्षा धारण करते हैं, मैं इस प्रकार की परिस्थिति से युक्त हो कर-अर्थात् सुवर्णादिक सब का परित्याग कर भागवती दीक्षा धारण करने में अपने आपको शक्ति संपन्न नहीं मान रहा हूं-असमर्थ मान रहा हूं. अतः आप देवानुप्रिय के पास मैं श्रावक व्रतों को धारण करना चाहता हूं-वश ऐसी हीं इस समय मुझ में शक्ति है. अर्थात्-१स्थूल प्राणातिपात

रत्नने, पद्मराग वगेरे रूप मणिओने, मुक्ताफ़्लोने रत्न विशेष शंखने, शिलाप्रवालविद्रुमने सत्-पिता पितामह वगेरेनी परंपराथी विद्यमान सार प्रधान-मणिरत्न वगेरे रूप स्वापतेयने, भावात (अन्तरनी इच्छाथी ज) त्यजीने तेमज प्रत्यक्षरूपमां दीन दरिद्र वगेरेने दानमां आपीने अने पुत्रादिकोमां विभाजित करीने एटले के पुत्रादिकोने धन वगेरेना भाग आपीने मुंडित थईने-अगारावस्थाथी पर एवी भागवती दीक्षा धारण करे छे. हुं पोतानी जातने आवी परिस्थितिथी युक्त थईने एटले के सुवर्ण वगेरे बधी वस्तुओनो त्याग करीने भगवती दीक्षा धारण करवामां हुं असमर्थता अनुभवी रह्यो छुं एथी आप देवानुप्रिय पासेथी हुं श्रावक व्रतोने धारण करवा इच्छुं छुं. हमणा मारामां आटली ज शकित छे. एटले के जेमां (१) स्थूल

त्तादानाद् विरमणम् ३, स्वदारसन्तोषः४, ईच्छापरिमाणः५, इति पञ्चा-
नतानि तानि सन्ति यस्मिंस्तम्, तथा-सप्तशिक्षाव्रतिकं-स-
शिक्षाव्रतानि यस्मिन्-दिग्व्रतम्,१ उपभोगपरिभोगपरिमाणम्२, अनर्थदण्डविर-
णम् ३, सामायिकम् ४, देशावकाशिकम् ५, पौषधोपवासः ६,
तिथिसंविभागः, ७ इति सप्तशिक्षाव्रतानि तानि सन्ति यस्मिंस्तम्,
येव द्वादशविध गृहिधर्मं प्रतिपत्तुं=स्वीकर्त्तुं शक्नोमि। इत्थं
चत्रसारथेर्वचनं श्रुत्वा केशिकुमारश्रमणः प्राह-हे देवानुप्रिय!
था ते सुखं भवेत्तथा कुरु, अत्र अवश्यकर्त्तव्ये कार्ये प्रतिबन्ध=विलम्बं
कुरु-इति! ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिकुमारश्रमणस्य अन्तिके
चाणुव्रतिकं यावद् गृहिधर्मम् उपसम्पद्य=स्वीकृत्य विहरति। ततः खलु

विरमण, २ स्थूलमृषावाद से विरमण, ३स्थूलअदत्तादान से विरमण,
स्वदारसंतोष, और ५इच्छापरिमाण ये पांच अणुव्रत हैं जिसमें ऐसे तथा
दिग्व्रत, २उपभोगपरिभोगपरिमाण, ३अनर्थदण्डविरमण, ४सामायिक, ५देशा-
शक,६पौषधोपवास, ७अतिथि संविभाग, एवं ये सातशिक्षाव्रत है जिसमें
से गृहिधर्म को स्वीकार करने की मुझ में शक्ति है इसलिये इसे ही मैं
ारण करना चाहता हूं-इसका विशेष वर्णन औपपातिक-सूत्र में आनन्द
ावक के प्रकरण में देखना चाहिये। इस प्रकार चित्र सारथि के वचन-
धन को सुनकर के केशिश्रमणने उससे कहा-हे देवानुप्रिय! जैसे तुम्हें
ख हो-वैसा करो परन्तु इस अवश्यकर्तव्य कार्य में ढील मत करो इस
कार केशिकुमारश्रमण का हितविधायक वचन सुनकर चित्र सारथिने
नके पास पांच अणुव्रतोंवाले एवं सातशिक्षा व्रतों वाले गृहिधर्म को स्वीकार

ाणातिपातथी विरमणु, (२) स्थूल मृषावादथी विरमणु (३) स्थूल अदत्तादानथी विरमणु
) ઇચ્છા પરિમાણુ આ પાંચે અણુવ્રતો તેમજ (૧) દિગ્વ્રત, (૨) ઉપભોગ પરિ-
ોગપરિમાણુ, (૩) સામાયિક (૪) દેશાવકાશિક (૫) પૌષધોપવાસ, (૬] અતિથિ-
વિભાગ અને (૭) અનર્થ દંડ વિરમણુ આ સાત શિક્ષાવ્રતો છે એવા ગૃહિધર્મને
ીકારવા માટે હું તૈયાર છું. આનું વિશેષ વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રના આનંદ
ાવક પ્રકરણમાં કરવામાં આવ્યું છે. આ પ્રમાણે ચિત્રસારથીનું કથન સાંભળીને
શિકુમાર શ્રમણે તેને કહ્યું-'હે દેવાનુપ્રિય! તમને જેમાં સુખ થાય તેમ કરો. પણ
ા આવશ્યક કર્તવ્યમાં હવે વાર કરો નહિ.' આ પ્રમાણે કેશિકુમાર શ્રમણનું હિત
ધાયક વચન સાંભળીને ચિત્ર સારથિએ તેઓશ્રી પાસેથી પાંચ અણુવ્રતોવાળા તેમજ
ાતશિક્ષા વ્રતવાળા ગૃહિધર્મનો સ્વીકારી લીધો ત્યારબાદ ચિત્રસારથિએ તે કેશિકુમાર

स चित्रः सारथिः केशिकुमारश्रमण वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथ स्तत्रैव प्राधारयद्=निश्चयमकरोद् गमनाय=गन्तुमिति। च गत्वा चातुर्घण्टम् अश्वरथं दूरोहति, दूरुह्य यस्या दिशः प्रादुर्भूतः, तामेव दिशं प्रतिगत इति ॥सू० ११२।

मूलम्--तएणं से चित्ते सारही समणोवासए जाए अहिगय जीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे आसवसंवरनिज्जरकिरियाहिगरणबंध मोक्खकुसले असहिज्जे देवासुरणागजक्खरक्खसकिन्नरकिंपुरिसगरुल गंधव्वमहोरगाईहिं देवगहेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए णिव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अहिगयट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते अयमाउसो! णिग्गंथे पावयणे अट्ठे, अयं परमट्ठे, सेसे अणट्ठे ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउरप्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे समणे णिग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पीठफलगसेज्जासंथारेणं वत्थपडिग्गहकंबलपायपुछणेणं ओसहभेसज्जेणं पडिलाभेमाणे, बहुहिं सीलव्वयगुणवेरमणपोसहोववासेहिय अप्पाणं भावेमाणे जाइं तत्थ रायकज्जाणि य जाव रायववहाराणि य ताइं जियसत्तुणा रण्णा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ॥सू०११३॥

फिर लिया. इसके बाद चित्रसारथिने उन केशिकुमारश्रमण को वन्दना की= नमस्कार किया, वन्दना नमस्कार करके फिर वह जहां चातुर्घंट अश्वरथ रखा हुआ था वहां पर आया वहां आकर वह उसपर बैठ गया और इस प्रकार वह जहां से आया था वहीं से होकर वापिस चला गया ॥ सू. ११२॥

श्रमणुनी वंदना करी नमस्कार कर्या. वन्दना नमस्कार करीने पछी ते ज्यां चातुर्घंट अश्वरथ हतो त्यां गयो. त्यां पहोंचीने ते तेमां बेसी गयो अने आ प्रमाणे ते ज्यांथी आव्यो हतो त्यां ज पाछो जतो रह्यो. ॥सू० ११२॥

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः श्रमणोपासको जातः अभिगत जीवाजीव उपलब्धपुण्यपाप आस्रवसंवरनिर्जराक्रियाऽधिकरणबन्धमोक्षकुशलः असाहाय्यो देवासुरनागयक्षराक्षसकिन्नरकिम्पुरुषगरुडगन्धर्वमहोरगादिभिः देवगणैः नैर्ग्रन्थात् प्रवचनात् अनतिक्रमणीयः, नैर्ग्रन्थे प्रवचने निश्शङ्कितो निष्काङ्क्षितो निर्विचिकित्सो लब्धार्थो गृहीतार्थः पृष्टार्थः अधि-

---

'तएण से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएण से चित्ते सारही समणोवासए जाए) अब वह चित्र सारथि श्रमणोपासक हो गया. (अहिगय जीवाजीवे. उवलद्धपुण्णपावे, आसवसंवरनिज्जरकिरियाहिगरणबंधमोक्खकुसले) जीव और अजीव तत्त्व के वह ज्ञाता बन गये, पुण्य एवं पाप के स्वरूप को जानने लगे, आस्रव, संवर, निर्जरा, क्रिया, अधिकरण, बंध और मोक्ष इनमें कुशल हो गये; अर्थात् इनके स्वरूप का उसे बोध हो गया. (असहिज्जे) कुतीर्थिकों के कुतर्क के खण्डन में पर की सहायता की अपेक्षा वाला नहीं रहा (देवासुरणागजक्खरक्खसकिन्नरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगाईहिं देवगहेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे निस्संकिए) देवों से असुरों से नागों से, यक्षों से राक्षसों से, किंपुरुषों से; गरुडों से, गंधर्वों से, महोरगों से–इन सब देवगणों से–वह निर्ग्रन्थ प्रवचन की श्रद्धा आदि से, अनतिक्रमणीय हो गया अर्थात् ये सब देवगण भी उसे निर्ग्रन्थप्रवचन से थोडा सा भी विचलित करने के लिये समर्थ नहीं हो सके. वह (निग्गथे–पाव–

'तए णं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं से चित्ते सारही समणोवासए जाए) हवे चित्र सारथि श्रमणोपासक थई गयो हतो. (अहिगयजीवाजीवे, उवलद्धपुण्णपावे, आसवसंवरनिज्जरकिरियाहिगरणबंधमोक्खकुसले) जीव अने अजीव तत्त्वनो ते ज्ञाता थई गयो पुण्य अने पापना स्वरूपने ते जाणवा लाग्यो, आस्रव, संवर, निर्जरा, क्रिया, अधिकरण. बंध अने मोक्षमां ते कुशळ थई गयो एटले के आ बधाना स्वरूपनुं ज्ञान तेने थई गयुं (असहिज्जे) कुतीर्थिकोना कुतर्कना खंडनमां तेने बीजानी मददनी अपेक्षा न रही. (देवासुरणागजक्खरक्खसकिन्नर-किंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगाइहिं देवगहेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे निस्संकिए) देवोथी, असुरोथी, नागोथी, यक्षोथी राक्षसोथी किन्नरोथी किंपुरुषोथी गरुडोथी गंधर्वोथी महोरगोथी–आ बधा देवगणोथी ते निर्ग्रंथ प्रवचन पर अतीव श्रद्धाने लीधे- अनतिक्रमणीय थई गयो एटले के आ बधा देवगणो पण तेने निर्ग्रंथ प्रवचन परथी जराए विचलित करी

गनार्थो विनिश्चितार्थः अस्थिमज्जाप्रेमानुरागरक्तः-'इदम् आयुष्मन्! नैर्ग्रन्थ्यं प्रवचनम् अर्थः, अयं परमार्थः, शेषम् अनर्थः' उच्छ्रित-स्फाटिकः अपावृतद्वारः प्रीतिकरान्तःपुरगृहप्रवेशः चतुर्दश्यष्टम्युद्दिष्टपौर्णमासीषु प्रतिपूर्ण

यणे णिस्संकिए) ऐसा निर्ग्रन्थप्रवचन में निःशंकितगुण से युक्त हो गया (णिक्खिए) अन्यमत की कांक्षा उसके चित्त में थोडी सी भी नहीं रही ऐसा निष्कांक्षितगुण वाला वह हो गया. (णिव्वितिगिच्छे, लद्धट्ठे, गहियट्ठे, पुच्छियट्ठे, अहिगयट्ठे, विणिच्छियट्ठे, अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते) फलके प्रति संदेह उसका जाता रहा ऐसा वह निर्विचिकित्स गुण-संपन्न हो गया. इसी कारण उसने गुर्वादिकों से यथार्थ निर्ग्रन्थप्रवचन का अर्थ प्राप्त कर लिया, और इसी कारण वह पराभिप्राय के ग्रहण से अवधारित (निश्चित) अर्थतत्त्ववाला बन गया. पृष्टार्थ हो गया. निर्णीतार्थ हो गया, अधिगतार्थ हो गया, विनिश्चितार्थ हो गया, तथा उसकी अस्थि और मज्जा ये दोनो निर्ग्रन्थ प्रवचनविषयक प्रेमरूपी रंजन द्रव्य से खूब रंग गये. अर्थात् रग रग में उसके निर्ग्रन्थप्रवचन का अनुराग भर गया. (अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे, सेसं अणट्ठे, ऊसियफलिहे, अवंगुयदुवारे, चियत्तंतेउरघरप्पवेसे) हे आयुष्मन्! यह निर्ग्रन्थप्रवचन ही वास्तविक अर्थ से युक्त है क्यों कि यह मोक्ष का हेतु है. यही परमार्थ है क्यों कि जीवों का

શક્યા નહિ. તે (निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए) આ પ્રમાણે નિગ્રંથ પ્રવચનમાં નિઃશંકિત ગુણયુકત થઇ ગયો (णिक्खिए) તેના મનમાં બીજા મત માટે લગીરે ઇચ્છા શેષ ન રહી. આ પ્રમાણે તે નિષ્કાંક્ષિત ગુણયુકત થઇ ગયો. (णिव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे, गहियट्ठे, पुच्छियट्ठे, अहिगयट्ठे, विणिच्छियट्ठे, अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते) ફળ પ્રત્યે તેના મનમાં સંદેહ રહ્યો નહિ, આ પ્રમાણે તે નિર્વિચિકિત્સ ગુણ સંપન્ન થઇ ગયો. એથી જ તેણે ગુરૂ વગેરે પાસેથી યથાર્થ નિગ્રંથ પ્રવચનનો અર્થ જાણી લીધો હતો. એથી જ તે પરાભિપ્રાયના ગ્રહણથી અવધારિત અર્થ તત્વ-વાળો થઇ ગયો, પુષ્ટાર્થ થઇ ગયો નિષ્ઠીતાર્થ થઇ ગયો. અધિગતાર્થ થઇ ગયો, વિનિશ્ચિતાર્થ થઈ ગયો અને તેના અસ્થિ અને મજ્જા બન્ને નિગ્રંથ પ્રવચન વિષયક પ્રેમરુપી રંજન દ્રવ્યથી ખૂબજ રંજિત થઇ ગયા એટલે કે તેના શરીરના અણુએ અણુમાં નિગ્રંથ પ્રવચન પ્રત્યેની પ્રીતિ વ્યાપ્ત થઇ ગઇ. (अयमाउसो! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे, सेसं अणट्ठे, ऊसियफलिहे, अवंगुयदुवारे, चियत्तंतेउरघरप्पवेसे) હે આયુષ્યમન્! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન જ વાસ્તવિક અર્થ યુકત છે કેમકે એ મોક્ષ માટે હેતુરૂપ કહેવાય છે. એજ પરમાર્થ છે કેમકે જીવોનું

पौषधं सम्यक् अनुपालयन् श्रमणान् निर्ग्रन्थान् प्रासुकेषणीयेन अशनपान-खादिम-स्वादिमेन पीठ--फलक शय्या-संस्तारेण वस्त्र--प्रतिग्रह-कम्बलपाद-प्रोञ्छनेन औषधभैषज्येन प्रतिलाभयन् बहुभिः शीलव्रतगुणविरमणपौष-

प्रयोजन इसीसे सिद्ध होता है. इसके अतिरिक्त अन्यतीर्थिक कुप्रवचनादिक कुगतिप्रापक होने से अनर्थरूप है, इस तरह से वह अपने पुत्रादिकों को शिक्षा देने लगा. निर्ग्रन्थप्रवचन को प्रतिपत्ति से उसका अन्तःकरण असद्विचारों से रहित हो जाने के कारण स्फटिक की तरह निर्मल हो गया, भिक्षुक आदिकों का भिक्षाके निमित्त गृह में प्रवेश सरलता से हो जावे इस ख्याल से वह अपने गृहप्रवेश द्वार को सदा अर्गला से रहित रखने लगा. अर्थात् दानादि के लिये खुले दरवाजे रखे। राजा के अन्तःपुर में भी उसका प्रवेश शंका रहित होने से प्रीति का जनक बन गया. अर्थात् अतिधार्मिक होने से वह परस्त्री सहोदर (भाई) बन कर रहने लग गया. (चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे समणे निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइम-साइमेणं पीढफलगसेज्जासंथारेणं वत्थपडिग्गहकंबलपायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पडिलाभेमाणे) चतुर्दशी, अष्टमी, उद्दिष्ट-अमावस्या, एवं पूर्णिमा इन चार तिथियों में अहोरात्र पौषध का पालन करता हुआ, तथा प्रासुक एषणीय-अचित्त और साधुजन को कल्पनीय ऐसे अशन, पान, खादिम, स्वादिमरूप चतुर्विध आहार से,

પ્રયોજન એના વડે જ સિદ્ધ થાય છે. બાકીના બધાં-અન્યતીર્થિક કુપ્રવચન વગેરે કુગતિ પ્રાપક હોવા બદલ અનર્થ રૂપ છે. આ પ્રમાણે તે પોતાના પુત્રો વગેરેને ઉપદેશ આપવા લાગ્યો, નિર્ગ્રંથ પ્રવચનની પ્રતિપત્તિથી તેનું હૃદય અસદ્ વિચારોથી રહિત થઈ ગયું હતું એટલા માટે સ્ફટિકની જેમ નિર્મળ થઈ ગયું હતું. ભિક્ષુક વગેરે ભિક્ષા માટે આવે ત્યારે સરળતાપૂર્વક ઘરમાં તેઓ પ્રવેશ મેળવી શકે તે માટે તે પોતાના ઘરનુ બારણું ખુલ્લુ જ રાખવા લાગ્યો રાજાના રાજમહેલમા પણ તેનો પ્રવેશ નિઃશંકપણે થવા લાગ્યો એટલે કે તે અતિધાર્મિક થઇ ગયો હતો એથી તે પરસ્ત્રી સહોદર બનીને રહેવા લાગ્યો (चाउद्दसट्ठ,मुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडि-पुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे समणे- निग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पीढफलगसेज्जासंथारेणं वत्थपडिग्गह कंबलपायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पडिलाभेमाणे) ચતુર્દશી અષ્ટમી, ઉદ્દિષ્ટ અમાવસ્યા અને પૂર્ણિમા એ ચારેચાર તિથિઓના દિવસે અહોરાત્ર સુધી પૌષધનુ પાલન કરતો હતો તેમજ પ્રાસુક એષણીય અચિત્ત સાધુજન માટે કલ્પનીય એવા અશન, પાન, ખાદિમ, સ્વાદિમરૂપ ચતુર્વિધ આ

धोपवासैः आत्मानं भावयन् यानि तत्र राजकार्याणि च यावत् राजव्यवहाराश्च तानि जितशत्रुणा राज्ञा सार्द्धं स्वयमेव प्रत्युत्प्रेक्षमाणः प्रत्युत्प्रेक्षमाणो विहरति ॥ सू० ११३ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि—

ततः खलु स चित्रः सारथिःश्रमणोपासको जातः सन् अभिगत-जीवाजीवः-अभिगतौ=सम्यक् अवगतौ=ज्ञातौ जीवाजीवौ=जीवतत्त्वम् अजीवतत्त्वं च येन स तथा-जीवतत्त्वाजीवतत्त्वविषयकसकलज्ञानसम्पन्नः, उपलब्धपुण्य-

---

पीठ, फलक, शय्या, संस्तारक से, वस्त्र पात्र कम्बल, पादप्रोञ्छन, से, (चरण को साफ करने का वस्त्रविशेष) एवं औषध भैषज्य से श्रमण निर्ग्रन्थों को प्रतिलाभित करता हुआ (बहूहिं सीलव्वयगुणवेरमण पोसहोववासेहिं य अप्पाणं भावेमाणे जाइं तत्थ राजकज्जाणि य जाव रायववहाराणि य ताइं जियसत्तुणा रण्णा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे२ विहरइ) एवं अनेक शीलव्रतों, गुणव्रतों, मिथ्यात्व से निवर्तन, प्रत्याख्यान और पौषधों से आत्मा को भावित करता हुआ वह जितने भी उस श्रावस्ती नगरी में राजकार्य थे यावत् जितने वहां राजव्यवहार थे उन सब का जितशत्रु राजा के साथ२ बारंबार अवलोकन करता हुआ रहने लगा।

टीकार्थ—गृहिधर्म के पालन करने से वह चित्र सारथि श्रमणोपासक बन गया जीव-अजीव तत्त्व विषक सकलज्ञान से वह सम्पन्न हो गया.

પીઠ ફલક, શય્યા સંસ્તારકથી વસ્ત્ર પાત્ર, કંબલ, પાદ પ્રોચ્છનથી અને ઔષધ ભૈષજ્યથી શ્રમણ નિગ્રંથોને પ્રતિલાભિત કરતો (बहूहिं सीलव्वयगुणवेरमणपोसहोववासेहिं य अप्पाणं भावेमाणे जाइं तत्थ राजकज्जाणि य जाव रायववहाराणि य ताइं जियसत्तुणा रण्णा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे२ विहरइ) અને અનેક શીલવ્રતો, ગુણવ્રતો, મિથ્યાત્વથી નિવર્તન, પ્રત્યાખ્યાત અને પૌષધોવડે પોતાના આત્માને ભાવિત કરતો તે શ્રાવસ્તી નગરીના સર્વ રાજકાર્યોનું સંચાલન કરતો જિતશત્રુ રાજાની સાથે રહીને વારંવાર રાજ્યકાર્યનું અવલોકન કરતો પોતાના દિવસો પસાર કરવા લાગ્યો.

ટીકાર્થ—ગૃહિધર્મના પાલનથી તે ચિત્રસારથિ શ્રમણોપાસક થઇ ગયો. જીવ, અજીવ તત્વ વિષયક સકળ જ્ઞાનથી તે સંપન્ન થઈ ગયો. પુણ્ય અને પાપના યથા-

पापः-उपलब्धे=याथातथ्येन विज्ञाते पुण्यपापे=पुण्यलक्षणं पापलक्षणं च येन स तथा-पुण्यपापयोः यथावस्थितस्वरूपज्ञायकः, तथा-आस्रवसंवर-निर्जरा क्रियाऽधिकरणबन्धमोक्षकुशलः-तत्र-आस्रवः=प्राणातिपातादिः, संवरः =प्राणातिपातविरमणादिः, निर्जरा=कर्मणां देशतो निर्जरणं, क्रिया=कायिक्या दिरूपा, अधिकरणम्, खड्गादिकम्, बन्धः=कर्मपुद्गलजीवप्रदेशयोः दुग्धजलवत् एकीभावः, मोक्षः=जीवप्रदेशेभ्यः सर्वात्मना कर्मणामपगमनम्, एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, तेषु कुशलः=चतुरः-आस्रवादिस्वरूपाभिज्ञ-इत्यर्थः, तथा-असाहाय्यः=नास्ति साहाय्यं=सहायता यस्य स तथा-कुतीर्थिककुतर्कखण्डने परसाहाय्यानपेक्ष इति भावः, तथा-देवासुरनागयक्षराक्षसकिन्नरकिम्पुरुषगरुडगन्धर्वमहोरगादिभिः=तत्र-देवाः=वैमानिकाः, असुराः-असुरकुमाराः, नागाः=नागकुमाराः असुरा नागाः, इमे उभये भवनपतयः, यक्षाः,

पुण्य और पाप के यथावस्थित स्वरूप का वह ज्ञाता हो गया, तथा प्राणातिपातादिरूप आस्रव, प्राणातिपातादिविरमणरूप सवर, कर्मों का एकदेश से क्षय होनेरूप निर्जरा, कायिकी आदिरूप क्रिया खड्गादिरूप अधिकरण, दुग्धजल की तरह कर्मपुद्गलों का और जीवप्रदेशों का एक क्षेत्रावगाहरूप बंध, जीवप्रदेशों से सर्वात्मना कर्मों का अपगमरूप मोक्ष इन सब में वह चतुर बन गया, अर्थात् जीव आदि के स्वरूप का वह अभिज्ञ हो गया, कुतीर्थिकजनों के कुतर्क खण्डन में वह किसी की भी सहायता नहीं लेता ऐसा समझदार हो गया, तथा जिनप्रवचन के प्रति उसकी ऐसी अगाध श्रद्धा बढ गई कि जिससे वह देव, असुर, नाग, यक्ष राक्षस, किन्नर, किम्पुरुष आदिकों द्वारा भी उससे किञ्चित् भी चलायमान नहीं किया जासका. वैमानिक देव यहां देवपद से, असुरकुमार जाति के भवनपति असुरकुमारपद

વસ્થિત સ્વરૂપને તે જાણવા લાગ્યો તેમજ પ્રાણાતિપાત વગેરે આસ્રવ, પ્રાણાતિપાતાદિ વિરમણરૂપ સંવર, કર્મોનો એકદેશથી ક્ષય થવા રૂપ નિર્જરા, કાયિકી વગેરે રૂપ ક્રિયા ખડ્ગ વગેરે રૂપ અધિકરણ, દુગ્ધજલની જેમ કર્મપુદ્ગલોનું અને જીવ પ્રદેશોનું એકક્ષેત્રાવગાહનરૂપ બંધ, જીવ પ્રદેશોથી સર્વાત્મના કર્મોનું અપગમનરૂપ મોક્ષ આ બધામાં તે ચતુર હતો એટલે કે આસ્રવ વગેરેના સ્વરૂપનો તે જાણકાર થઈ ગયો હતો તે એવો ચતુર થઈ ગયો હતો કે કુતીર્થિકોના કુતર્કખંડનમાં તે કોઈની પણ મદદ લેતો નહોતો તેમજ જિનપ્રવચન પ્રત્યે તેના મનમાં એવી અગાધ શ્રદ્ધા જાગી ગઈ હતી કે જેથી તે દેવ, અસુર, નાગ યક્ષ, રાક્ષસ, કિંનર, કિંપુરુષ વગેરે વડે તે જગાએ વિચલિત કરી શકાય તેમ નહોતો. વૈમાનિક દેવ અહીં દેવપદથી, અસુરકુમાર જાતિના ભવનપતિ અસુરકુમાર પદથી, નાગકુમાર જાતિના ભવ

राक्षसाः, किन्नराः किम्पुरुषाः, एते चत्वारोऽव्यन्तरविशेषाः, गरुडाः=गरुडध्वजाः सुपर्णकुमाराः भवनपतिविशेषाः, गन्धर्वा महोरगाश्च व्यन्तरविशेषाः, तत्प्रभृतिभिरपि देवगणैः नैर्ग्रन्थात् प्रवचनात् अनतिक्रमणीयः=अचालनीयः निर्ग्रन्थप्रवचनात्तं चालयितुं देवादयोऽसमर्था इति भावः। तथा-निर्ग्रन्थे प्रवचने निश्शङ्कितः=अन्यदर्शनापेक्षया श्रेष्ठमिदं न वेति शङ्कारहितः, अत एव-निष्काङ्क्षितः=काङ्क्षारहितः-परमतकाङ्क्षारहितः निर्विचिकित्सः-फलं प्रति सन्देहरहितः, अत एव-लब्धार्थः-लब्धः=प्राप्तः अर्थो गुर्वादीनां सकाशाद् येन स तथा-उपलब्धपदार्थ इत्यर्थः, गृहीतार्थः- हीतः=स्वीकृतोऽर्थो येन स तथा-पराभिप्रायग्रहणतोऽवधारितार्थतत्त्व इत्यर्थः, पृष्टार्थः-पृष्टोऽर्थो

से, नागकुमार जाति के भवनपति देव नाग शब्द से, तथा यक्ष, राक्षस, किन्नर, एवं किंपुरुष इन पदों से व्यन्तर जाति के इस २ नामके देव गृहीत हुए हैं। गरुड शब्द से गरुडध्वजवाले सुपर्णकुमार जो कि भवनपति जाति के देव विशेष हैं। गृहीत हुए हैं। गन्धर्व और महोरग ये व्यन्तरविशेष हैं। उसके मनमें ऐसी शंका कि यह निर्ग्रन्थप्रवचन अन्य दर्शनों की अपेक्षा श्रेष्ठ है की नहीं है कभी नहीं उत्पन्न हुई इसलिये यह उसके प्रति निःशंकित था. परमत की कांक्षा का अभाव इसके चित्त में सर्वथा हो गया था-इसलिये यह निष्कांक्षित था, फल के प्रति सन्देह से यह रहित था. इसलिये निर्विचिकित्स था. इसी कारण इसने गुर्वादिकों के पास से प्रवचनगदित अर्थ को अच्छी तरह से जान लिया था. इसलिये यह लब्धार्थ था, उसे अच्छी तरह से स्वीकार कर लिया था. इसलिये ये गृहीतार्थ था. संदेहयुक्त स्थल में परस्पर प्रश्न करने से वह अर्थ

पतिદેવ નાગ શબ્દથી તેમજ યક્ષ, રાક્ષસ, કિંનર અને કિંપુરૂષ આ પદોથી વ્યંતર જાતિના દેવોનું ગ્રહણ થયું છે. ગરૂડ શબ્દથી ગરૂડધ્વજવાળા સુવર્ણકુમાર-કે જેઓ ભવનપતિ જાતિના દેવ વિશેષ છે તેનું ગ્રહણ થયું છે ગંધર્વ અને મહોરગ એ બંને વ્યંતરણ વિશેષ છે. તે ચિત્રસારથિના મનમાં નિર્ગ્રન્થ પ્રવચનને લઈને એવી કોઈપણ દિવસે શંકા ઉત્પન્ન થઈ નહોતી કે આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન બીજા દર્શનો કરતાં શ્રેષ્ઠ છે કે કેમ? એથી તે તે પ્રતિ નિઃશંકિત હતો. પરમત પ્રત્યે તેના મનમાં લગીરે કાંક્ષા ઉત્પન્ન થઈ નહોતી એથી તે નિષ્કાંક્ષિત હતો ફળ પ્રત્યે તે સંદેહ રહિત હતો. એથી તે નિર્વિચિકિત્સ હતો. તેણે ગુરુ વગેરે પાંસેથી પ્રવચન વગેરે અર્થને સારી પેઠે જાણી લીધાં હતાં. એથી તે લબ્ધાર્થ હતો. તે અર્થનો તેણે સારી પેઠે સ્વીકાર કરી લીધો હતો. એથી તે ગૃહીતાર્થ હતો. સાંશયિક સ્થળ વિષે પરસ્પર પ્રશ્નો કર-

येन स तथा–सांशयिकस्थले परस्परं प्रश्नकरणेन निर्णीतार्थः, अधिगतार्थः–अधिगतः=सर्वथा उपलब्धः अर्थो येन स तथा–सर्वप्रकारेणोपलब्धार्थः, अत एव–विनिश्चितार्थः–वि=विशेषेण निश्चितः=निर्णीतोऽर्थो येन स तथा–ज्ञातवास्तविकार्थ इत्यर्थः, तथा–अस्थिमज्जाप्रेमानुरागरक्तः–अस्थिमज्जे प्रसिद्धे ते प्रेमानुरागेण–निर्ग्रन्थप्रवचनविषयकं यत् प्रेम तद्रूपो योऽनुरागो=रञ्जनद्रव्यं तेन रक्ते इव रक्ते यस्य स तथाभूतः सन् "हे आयुष्मन्! इदं नैर्ग्रन्थं प्रवचनमेव अर्थः=वास्तविकार्थयुक्तः–मोक्षहेतुत्वात्, शेषम्=इतो भिन्नम् अन्यतीर्थिकप्रवचनादिकम् अनर्थः–कुगतिप्रापकत्वात्"–इत्येवं पुत्रादिकमनुशास्ति, तथा उच्छ्रितस्फाटिकः–स्फटिकमिव स्फाटिकम् अन्तःकरणम्, उच्छ्रितम्=उद्गतं स्फाटिकं यस्य स तथा–निर्ग्रन्थप्रवचनप्रतिपत्त्या, असद्विचारशून्यत्वात्स्फटिकवन्निर्मलान्तःकरण इत्यर्थः, अथवा–'उच्छ्रितपरिघः' इतिछाया, एतत्पक्षे: उच्छ्रितः=तत्स्थानादपनीय ऊर्ध्वी

का निर्णेता बन गया था. इसलिये पृष्टार्थ था, सर्वप्रकार से अर्थ का ग्रहण करने वाला बन गया था, इसलिये ये लब्धार्थ था. वास्तविक अर्थका ज्ञाता बन गया था. इसलिये ये विनिश्चयार्थ था, निर्ग्रन्थप्रवचनविषयक प्रेम उसकी रोम२ में समा गया था, इसलिये ये अस्थिमज्जाप्रेमानुराग रक्त था. वह अपने पुत्र पौत्रादिकों से यही कहता था कि हे आयुष्मन्! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन ही मोक्ष हेतु होने से वास्तविक अर्थ से युक्त है अन्य कुवादियों के प्रवचन ऐसे नहीं हैं। क्यों कि वे दुर्गति के प्राप्त कराने वाले हैं। निर्ग्रन्थप्रवचन की प्रतिपत्ति से उसका हृदय स्फटिकमणि के जैसा निर्मल हो गया था 'उसियफलिहे' की छाया जब 'उच्छ्रितपरिघः' ऐसी की जाती है तब इसका अर्थ ऐसा होता है कि इसने घरके द्वार के किवाडों में,

વાથી તે અર્થનો નિર્ણેતા બની ગયો હતો એથી તે પૃષ્ટાર્થ હતો. તે સર્વ રીતે અર્થને ગ્રહણ કરનાર બની ગયો હતો. એથી તે લબ્ધાર્થ હતો. તે વાસ્તવિક અર્થનો જ્ઞાતા થઈ ગયો હતો એથી તે વિનિશ્ચતાર્થ હતો. નિર્ગ્રન્થ પ્રવચન વિષયક પ્રેમ તેના અણુએ અણુમા રમી ગયો હતો, એથી તે અસ્થિમજ્જાપ્રેમાનુરાગી હતો. તે પોતાના પુત્ર પૌત્ર વગેરેને આ પ્રમાણે જ કહેતો હતો કે હે આયુષ્મન્! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન જ મોક્ષના હેતુ હોવા બદલ વાસ્તવિક અર્થથી યુક્ત છે બીજા કુવાદિઓના પ્રવચનો આવા નથી. કારણકે તે કુગતિ તરફ દોરનારા છે. નિર્ગ્રંથ પ્રવચનની પ્રતિપત્તિથી તેનું હૃદય સ્ફટિકમણિ જેમ નિર્મળ થઈ ગયું હતું. 'उसीयफलिहे' ની છાયા જ્યારે 'उच्छ्रितपरिघः' આ પ્રમાણે કરવામાં આવે છે ત્યારે તેનો અર્થ આ પ્રમાણે હોય છે કે તેણે ગૃહપ્રવેશદ્વારના કમાડોમાં અર્ગલા મૂકવાના સ્થાનની

कृतो न तु तिरश्चीनः कृतः परिघः=अर्गला येन स तथा 'भिक्षुकादीनां सौकर्येण भिक्षार्थं गृहे प्रवेशो भवतु इति हेतोः कपाट-पश्चाद्भागादपनीतार्गल इत्यर्थः। अथवा-उच्छ्रितः=अपगतः परिघः=अर्गला गृहद्वारे यस्यासौ तथा-औदार्याधिक्यादतिशयदानदातृत्वाद् भिक्षुकप्रवेशार्थ-मनर्गलितगृहद्वार इत्यर्थः। एतावदेव न किन्तु अपावृतद्वारः=भिक्षुकादि-प्रवेशार्थं कपाटानामपि पश्चात्करणात् सर्वथा समुद्घाटितद्वारइत्यर्थः। यद्वा-सम्यग्दर्शनलाभे सति कुतश्चिदपि पाखण्डिकाद् भयाभावेन शोभनमार्गपरि-ग्रहेण च सर्वदा समुद्घाटितशिरास्तिष्ठतीति भावः, तथा-प्रीतिकरान्तःपुर

अर्गला को उसके रखने के स्थान से ऊपर कर दिया था, तिरछा नहीं किया था. अर्थात् प्रवेशद्वार के किवाडों में इसने अर्गला नहीं लगाई किन्तु वह ऊँची ही रही सो उसका कारण यह था भिक्षुक आदि जनों का प्रवेश घर में भिक्षा के निमित्त सरलता पूर्वक होता रहे। अथवा उच्छ्रित शब्द का अर्थ 'इसने अर्गला बिलकुल नहीं लगाई' ऐसा भी होता है क्यों कि यह उदारता वाला था, तथा अतिशय दान देने वाला था. इसलिये भिक्षुका-दिकों के प्रवेश के लिये इसने अपने घर-के द्वार को अर्गला से रहित ही कर दिया था इतना ही नहीं किन्तु इसने गृह द्वारके कपाटों को खुलाकर दिया इसीलिये वह 'अपावृतद्वारः' ऐसा कहा है अर्थात् वह सर्वथा समुद्घाटित द्वार वाला प्रकट किया है। अर्थात् दान पुण्य-के लिये उनके घरके द्वार सदा खुले थे यद्वा--सम्यग्दर्शन के लाभ होने पर किसी भी पाखण्डिक से उसे भय नहीं था सो इससे

ઉપરજ રાખી. ત્રાંસી મૂકી ન હતી એટલે કે પ્રવેશદ્વારના કમાડોમાં તેણે સાંકળ લગાડી ન હતી પણ તેને ઉંચી જ રાખી હતી એની પાછળ આ હેતુ છે કે ભિક્ષુક વગેરે ભિક્ષા માટે આવે ત્યારે સહેલાઇથી ઘરમાં પ્રવેશી શકે. અથવા ઉચ્છ્રિત શબ્દનો અર્થ આ પ્રમાણે પણ થાય છે કે તેણે અર્ગલા લગાડી જ નહોતી. તે ઉદાર તેમજ અતિશય દાનદાતા હતો એથી ભિક્ષુક વગેરેના પ્રવેશ માટે પોતાના ઘરને તેણે અર્ગલા વગર જ રાખ્યું હતું. આ પ્રમાણે અર્થ કરતાં આપણે એમ કહી શકીએ કે તેણે અર્ગલાને તેના સ્થાન પરથી ઉંચી પણ નહોતી કરી. એટલા માટે 'અપાવૃતદ્વારઃ' પદથી સૂત્રકારે તેને સર્વથા સમુદ્ઘાટિતદ્વારવાળો પ્રકટ કર્યો છે. અને સમ્યગ્ દર્શનના લાભ થી હવે કોઇ પણ પાખંડિકથી તે ભયભીત નહોતો થતો એથી અને શોભનમાર્ગના

गृहप्रवेशः=प्रीतिकरः प्रीत्युत्पादकः अन्तःपुरगृहे=राज्ञोऽन्तःपुरे प्रवेशो=यस्य स तथा, प्रीतिकरोऽतिधार्मिकतया सर्वत्रानाशङ्कनीय इति भावः, तथा-चतुर्दश्यष्टम्युद्दिष्टपौर्णमासीषु तत्र-चतुर्दश्यष्टमीपौर्णमास्यः प्रसिद्धाः, 'उद्दिष्टम्' इत्यमावास्या, एतासु चतसृष्वपि तिथिषु प्रतिपूर्ण=सकलम्-अहोरात्र पौषधं सम्यक् अनुपालयम, तथा-प्रासुकैषणीयेन=अचित्तेन साधुजनकल्पनीयेन च अशनपानखादिमस्वादिमेन=अशनादिचतुर्विधेनाहारेण पीठफलकशय्यासंस्तारकेण, वस्त्रप्रतिग्रहकम्बलपादप्रोञ्छनेन-तत्र-वस्त्रं=वसनं, प्रतिग्रहः=भक्तपानादिपात्रं, कम्बलः-प्रसिद्धः, पादप्रोञ्छनं=पादप्रोञ्छनार्थं वस्त्रम्, एतेषां समाहारः, तेन, तथा-औषधभैषज्येन=औषधम्=एकद्रव्यनिष्पादितं, भैषज्यम्=अनेकद्रव्यनिष्पादितम्, उभयोः समाहारस्तेन च श्रमणान् निर्ग्रन्थान् प्रतिलम्भयन् प्रतिलम्भयन्, तथा-बहुभिः=अनेकसंख्यकैः शीलव्रतगुण-विरमणप्रत्याख्यानपोषधोपवासैः तत्र-शीलव्रतानि=स्थूलप्राणातिपातविरमणा-

और शोभनमार्ग के परिग्रह से वह सर्वदा समुद्घाटित शिरवाला बना रहता था अर्थात् स्वधर्माभिमान वाला है। तथा वह प्रीतिकरान्तःपुरगृहप्रवेश वाला था, अर्थात् राजा के अन्तःपुररूप घर में इसका प्रवेश प्रीत्युत्पादक था अर्थात् यह अतिधार्मिक था इसलिये प्रीतिकर सर्वत्र अनाशङ्कनीय था तथा चतुर्दशी अष्टमी अमावास्या और पूर्णिमा इन चारों पर्वतिथियों में यह अहोरात्र का पौषध करता था प्रासुकएषणीय-अचित्त- एवं साधुजन कल्पनीय ऐसे अशनपान आदिरूप चार प्रकार के आहार से, पीठ, फलक, शय्या एवं संस्तारक से, वस्त्र, प्रतिग्रह—भक्तपानादिपात्र, कम्बल, एवं पादप्रोञ्छनार्थ वस्त्र से, एकद्रव्यनिष्पादित औषध से तथा अनेक द्रव्य निष्पादित भैषज्य से यह श्रमणनिर्ग्रन्थों को प्रतिलाभित करता था, इस तरह अनेकसंख्यक शीलव्रतों से-स्थूलप्राणा-तिपातविरमण आदिकों से, दिग्व्रत आदिरूप गुणव्रतों से, मिथ्यात्व-

પરિગ્રહથી ને સર્વદા સમુદ્ઘાટિત શિરવાળો થઈને રહેતો હતો. તે પ્રીતિકરાન્તપુરગૃહપ્રવેશવાળો હતો. એટલે કે રાજાના રણવાસમાં તેનો પ્રવેશ પ્રીત્યુત્પાદક હતો એટલે કે તે અતિધાર્મિક હતો એથી પ્રીતિકર અને સર્વત્ર અનાશંકનીય હતો. ચતુર્દશી વગેરે ચારે ચાર પર્વતિથિઓમાં તે અહોરાત્ર પૌષધ કરતો હતો પ્રાસુક એષણીય અચિત્ત અને સાધુજન કલ્પનીય એવા અશનપાન વગેરે રૂપ ચાર પ્રકારના આહારથી પીઠ, ફલક, શય્યા, અને સંસ્તારકથી વસ્ત્ર, પ્રતિગ્રહ-ભક્તપાન વગેરે પાત્ર, કંબલ અને પાદપ્રોંછનાર્થ વસ્ત્રથી એક દ્રવ્ય નિષ્પાદિત ભૈષજ્યથી તે શ્રમણ નિર્ગ્રંથોને પ્રતિલાભિત કરતો હતો આ પ્રમાણે ઘણાં શીલવ્રતોથી-સ્થૂલ પ્રાણાતિપાત વિરમણ વગેરેથી, દિગ્વિરતિ વગેરે ગુણવ્રતોથી, મિથ્યાત્વ નિવર્ત્તનરૂપ વિરમણથી,

दीनि पञ्च, गुणाः=गुणव्रतानि-दिग्व्रतादीनि, विरमणं=मिथ्यात्वान्निवर्त्तनम्, प्रत्याख्यानं=पर्वदिनेषु हरितकायादीनां परित्यागः, पोषधोपवासः=चतुर्दश्यादिपर्वतिथिषु आहारत्यागः, एषामितरेतरयोगद्वन्द्वः, तैश्च आत्मानं भावयन्=वासयन्, यानि तत्र=श्रावस्त्यां नगर्यां राजकार्याणि च यावद् राजव्यवहाराश्च तानि सर्वाणि जितशत्रुणा राज्ञा सार्द्धं स्वयमेव प्रत्युपेक्षमाणः प्रत्युपेक्षमाणः=मुहुर्मुहुरवलोकयन् विहरति ॥सू० ११३॥

मूलम्—तएणं से जियसत्तू राया अण्णया कयाइ महत्थं जाव पाहुडं सज्जेइ, सज्जित्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छहि णं तुमं चित्ता! सेयंवियानयरिं, पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि, मम पाउग्गहणं जहा भणियं अवितहमसंदिद्धं वयणं विन्नवेहित्तिकट्टु विसज्जिए। तएणं से चित्ते सारही जियसत्तुणा रन्ना विसज्जिए समाणे त महत्थं जाव गिण्हइ, जियसत्तुस्स रण्णो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे, तेणेव उवागच्छइ, तं महत्थं जाव ठवेइ, ण्हाए जाव सरीरे सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरविंदपरिक्खित्ते पायचारविहारेण महया पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते रायमग्गमोगाढाओ आवासाओ निग्गच्छइ, सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, जेणेव कोट्ठए

निवर्त्तनरूप विरमण से, पर्वदिनों में हरितकायादिकों के परित्याग से, चतुर्दश्यादिपर्वतिथियों में, आहारत्याग से आत्मा को वासित करता हुआ वह श्रावस्ती नगरी में जितने भी राजकार्य थे यावत्-राजव्यवहार थे उन सब का जितशत्रु राजा के साथ स्वतः बार बार निरीक्षण करता हुआ रहने लगा ।सू. ११३।

પર્વના દિવસોમાં હરિતકાય વગેરેના પરિત્યાગથી, ચતુર્દશી વગેરે તિથિઓમાં આહાર ત્યાગથી આત્માને વાસિત કરતો તે શ્રાવસ્તી નગરીમાં જેટલા રાજકાર્યો હતાં યાવત્ રાજવ્યવહાર હતા તે સર્વનું જિતશત્રુ રાજાની સાથે પોતે વારંવાર નિરીક્ષણ કરતો રહેવા લાગ્યો. ।।સૂ૦ ૧૧૩।।

चेइए जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ, केसिकुमारसमणस्स अंतए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव उट्ठाए जाव एवं वयासी— एवं खलु अ भंते ! जियसत्तुणा पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव उवणेहि त्ति कट्टु विसज्जिए, तं गच्छामि णं अहं भंते ! सेयंवियं नयरिं। पासादीया णं भंते! सेयंविया णयरी, एवं दरिसणिज्जा णं भंते ! सेयंविया णयरी, अभिरूवा णं भंते! सेयंविया णयरी पडिरूवा णं भंते ! सेयंविया णयरी, समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयंवियं णयरिं ॥सू० ११४॥

छाया—ततः खलु स जिनशत्रू राजा अन्यदा कदाचित् महार्थं यावत् प्राभृतं सज्जयति, चित्रं सारथिं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् गच्छ खलु त्वं चित्र ! श्वेतविकां नगरीम्, प्रदेशिनो राज्ञ इदं महार्थं यावत् प्राभृतम् उपनय, मम पादग्रहणं यथा भणितम् अवितथम् असन्दिग्धम्, वचनं

'तएणं से जियसत्तू राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं से) इसके बाद उस (जियसत्तू राया) जितशत्रु राजाने (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (महत्थं जाव पाहुडं सज्जेइ) महाप्रयोजनसाधक यावत् प्राभृत को सजाया, (सज्जित्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ) सजाकर फिर उसने चित्र सारथि को बुलाया. (सद्दाविता एवं वयासी) बुलाकर उससे ऐसा कहा—(गच्छाहि णं तुमं चित्ता। सेयंवियानयरिं पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि) हे चित्र ! तुम जाओ और श्वेतांबिका नगरी में प्रदेशी राजा के पास इस महाप्रयोजन साधक यावत्

'तएणं से जियसत्तू राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ —(तएणं से)त्यार पछी ते (जियसत्तू राया) जितशत्रुराजाએ (अन्नया कयाइ) કોઈ એક વખતે (महत्थं जाव पाहुडं सज्जेइ) મહાપ્રયોજન સાધક યાવત્ ભેટ (પ્રાભૃત) તૈયાર કરી. (सज्जित्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ) તૈયાર કરીને તેણે ચિત્ર સારથીને બોલાવ્યો (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું (गच्छाहि णं तुमं चित्ता ! सेयंवियं नयरिं पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि) હે ચિત્ર ! તમે શ્વેતવિકા નગરીમાં પ્રદેશી રાજાની પાસે આ

त्रिज्ञापयेति कृत्वा विसर्जितः। ततः खलु स चित्रः सारथिर्जितशत्रुणा राज्ञा विसर्जित. सन् तत् महार्थं यावद् गृह्णाति. जितशत्रो राज्ञोऽन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामति, श्रावस्त्या नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, यत्रैव राजमार्ग-मवगाढ आवासः, तत्रैव उपागच्छति, तन्महार्थं यावत् स्थापयति, स्नातो यावच्छरीरः सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन महाभटचटकरवृन्दपरि-क्षिप्तः पादचारविहारेण महापुरुषवागुरापरिक्षिप्तो राजमार्गमवगाढात् आवा

प्राभृत को ले जाओ (मम पाउग्गहणं जहा भणियं अवितहमसंदिद्धं वयणं विन्नवेहि त्तिकट्टु विसज्जिए) और उनसे मेरा प्रणाम कहो, तथा मेरी ओर से यथोक्त अवितथ असंदिग्ध वचन कहो, इस प्रकार कह कर उसे विसर्जित कर दिया. (तएणं से चित्ते सारही जियसत्तुणा रण्णा विसज्जिए समाणे तं महत्थं जाव गिण्हइ-जियसत्तुस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमइ) इसके बाद जितशत्रु राजा द्वारा विसर्जित किये गये चित्र सारथि ने उस महाप्रयोजन साधक यावत् प्राभृत को उठा लिया और जितशत्रु राजा के पास से चला आया. (सावत्थीए नयरीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ) एवं श्रावस्ती नगरी के ठीक बीचों बीच के मार्ग से होकर निकला (जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ) निकलकर वह जहां राजमार्ग पर स्थित आवासस्थान था, वहां पर आया (तं महत्थं जाव ठवेइ) वहां आकरके उसने उस प्राभृत को एक ओर रख दिया. (ण्हाए जाव सरीरे सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरविंद-

---

મહાપ્રયોજન સાધક યાવત્ ભેટ લઈ જાઓ.(मम पाउग्गहणं जहा भणियं अवितहमसंदिद्धं वयणं विन्नवेहित्तिकट्टु विसज्जिए) અને તેમને મારા પ્રણામ કહેશો અને મારાવતી યથોકત અવિતથ અસંદિગ્ધ વચન કહેશો. (त्तिकट्टु विसज्जिए) આ પ્રમાણે કહીને તેને ત્યાંથી જવાની આજ્ઞા કરી. (तएणं से चित्ते सारही जियसत्तुणा रण्णा विसज्जिए समाणे तं महत्थं जाव गिण्हइ जियसत्तुस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमइ) ત્યારપછી જિતશત્રુ રાજા પાસેથી આજ્ઞાપિત થઈને તે ચિત્ર સારથીએ તે મહાપ્રયોજન સાધક યાવત્ ભેટને લઈ લીધી અને જિતશત્રુ રાજા પાસેથી આવતો રહ્યો (सावत्थीए नयरीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ) અને શ્રાવસ્તી નગરીના બરોબર મધ્યમાર્ગથી થઈને (जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ) તે જ્યાં રાજમાર્ગ પર પોતાનું નિવાસસ્થાન હતું ત્યાં આવ્યો. (तं महत्थं जाव ठवेइ) ત્યાં આવીને તેણે તે ભેટને એક તરફ મૂકી દીધી. (ण्हाए जाव सरीरे सकोरिंटमल्लदामे णं छत्ते णं धरिज्जमाणे णं महया महया

सात् निर्गच्छति, श्रावस्त्या नगर्या मध्यं मध्येन निर्गच्छति यत्रैव कोष्ठकं चैत्यं यत्रैव केशी कुमारश्रमणः तत्रैव उपागच्छति, केशिकुमारश्रमणस्य अन्तिके धर्मं श्रुत्वा हृष्ट यावत् उत्थया यावदेवमवादीत्–एवं खलु अहं भदन्त! जितशत्रुणा राज्ञा प्रदेशिने राज्ञे

परिक्खित्ते पायचारविहारेण महया पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते रायमग्गमोगाढाओ आवासाओ निग्गच्छइ) स्नान किया यावत् बहुमूल्यवेश एवं अल्पभारवाले आभूषणों से अपने शरीर को अलंकृत किया. पश्चात् छत्रधारी द्वारा ताने गये एवं कोरंटपुष्पों की माला से विभूषित ऐसे छत्र से युक्त हुआ वह चित्र सारथि विशाल भटों के विस्तृत समूह से युक्त होकर उस राजमार्ग स्थित आवास से पैदल ही निकला साथ में विशाल जनमेदिनी भी थी (सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ) इन सब से घिरा वह चित्र सारथि श्रावस्ती नगरीके बीचो बीच मार्ग से होकर चला (जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ) चलते२ वह वहां पहुंचा जहां कोष्ठक चैत्य और उसमें भी जहां केशिकुमारश्रमण थे (केसिकुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव उट्ठाए एवं वयासी वहां पहुंचकर उसने केशिकुमार श्रमण से धर्म का उपदेश सुना और उसे हृदय में धारण किया सुनकर और हृदय में धारण कर वह आनंद से प्रफुल्लित बन गया, और संतुष्ट चित्त हो गया यावत् उसका हृदय प्रमोद से

भडचडगरविंदपरिक्खित्ते पायचारविहारेण महया पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते रायमग्गमोगाढाओ आवासाओ निग्गच्छइ) स्नान कर्युं यावत् बहु किंमतवाळा अने अल्पभारवाळां आभूषणो वडे तेणे पोताना शरीरने अलंकृत कर्युं. त्यारपछी कोरंट पुष्प वडे शोभतुं छत्र छत्रधारीओ वडे तेना उपर ताणवामां आव्युं. आ प्रमाणे ते चित्र सारथि विशाळ भटोना समुदायथी परिवेष्टित थईने ते राजमार्ग पर स्थित आवास स्थानथी पगपाळा ज रवाना थयो. तेनी साथे विशाळ मानवसमूह पण हतो. (सावत्थीए नयरीए मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ) आ सर्वथी वींटळायेलो ते सारथि श्रावस्ती नगरीना मध्यमार्ग पर थईने नीकळ्यो. (जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ) नीकळीने ते ज्यां कोष्ठक चैत्य हतुं अने तेमां पण ज्यां केशिकुमार श्रमण हता त्यां पहोंच्यो (केसिकुमार-समणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव उट्ठाए जाव एवं वयासी) त्यां पहोंचीने तेणे केशिकुमार श्रमण पासेथी धर्मोपदेश सांभळ्यो अने तेने हृदयमां धारण कर्यो. धर्मोपदेश सांभळीने अने हृदयमां धारण करीने ते आनंदविभोर थई गयो अने संतुष्ट चित्तवाळो थई गयो. यावत् तेनुं हृदय प्रसन्नताथी उभराई...

इदं महार्थं यावत् उपनय इति कृत्वा विसर्जितः तद् गच्छामि खलु अहं भदन्त ! श्वेतविकां नगरीम् । प्रासादीया खलु भदन्त ! श्वेतविका नगरी एवं दर्शनीया खलु भदन्त ! श्वेतविका नगरी, अभिरूपा खलु भदन्त ! श्वेतविका नगरी, प्रतिरूपा खलु भदन्त ! श्वेतविका नगरी, समवसरत खलु भदन्त ! यूयं श्वेतविकां नगरीम् ॥सू० ११४॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि—

ततः खलु स जितशत्रू राजा अन्यदा कदाचित् महार्थं यावत्—याव त्पदेन 'महार्थं महार्हं विपुलं राजार्हम्' इति संग्राह्यते अर्थस्त्वेषां पूर्ववद्

मत्त होकर उछलने लगा यावत् वह स्वतः उठा और उठकर यावत् उसने इस प्रकार कहा—(एवं खलु अहं भंते ! जियसत्तुणा पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव उवणेहि त्ति कट्टु विसज्जिए तं गच्छामि णं अहं भंते ! सेयं-वियं नयरिं) हे भदन्त ! मुझे जितशत्रु राजाने 'प्रदेशी राजा के पास हे चित्र ! तुम इस महाप्रयोजन साधक यावत् प्राभृत को ले जाओ' ऐसा कह कर विसर्जित किया है सो हे भदन्त ! मैं श्वेतांविका नगरी को जा रहा हूं। (पासाईया णं भंते ! सेयंविया नयरी, एवं दरिसणिज्जा णं भंते ! सेयंविया नयरी, अभिरूवा णं भंते ! सेयंविया नयरी, पडिरूवा णं भंते ! सेयंविया णयरी, समोसरह णं भंते! तुब्भे सेयं वियं नयरिं) हे भदन्त! श्वेतांविका नगरी प्रासादीया है—हे भदन्त ! श्वेतांबिका नगरी दर्शनीया है, हे भदन्त ! श्वेतांविका नगरी अभिरूप है, हे भदन्त ! श्वेतांबिका नगरी प्रतिरूपा है अतः हे भदन्त ! आप उस श्वेतांबिका नगरी में पधारें।

યાવત્ તે જાતે ઉભો થયો અને ઉભો થઈને યાવત્ તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું—(एवं खलु अहं भंते ! जियसत्तुणा पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव उवणेहि त्ति कट्टु विसज्जिए तं गच्छामि णं अहं भंते ! सेयंवियं नयरिं) હે ભદંત ! મને જિતશત્રુ રાજાએ પ્રદેશી રાજાની પાસે આમ કહીને જવા આજ્ઞા કરી છે કે હે ચિત્ર તમે આ મહાપ્રયોજન સાધક યાવત્ પ્રાભૃતને પ્રદેશીરાજા પાસે લઈ જાવો' તો હે ભદંત ! હું શ્વેતાંબિકા નગરી તરફ જોઈ રહ્યો છું. (पासाईया णं भंते ! सेयंविया नयरी एवं दरिसणिज्जा णं भंते ! सेयंविया नयरी, अभिरूवा णं भंते ! सेयंविया नगरी, पडिरूवा णं भंते ! सेयंविया णयरी, समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयंवियं नगरिं) હે ભદંત ! શ્વેતાંબિકા નગરી અભિરુપા છે, હે ભદંત ! શ્વેતાંબિકા નગરી પ્રતિરૂપા છે. માટે હે ભદંત ! તમે શ્વેતાંબિકા નગરીમાં પધારો.

बोध्य इति, एतादृशं सज्जयति=कल्पयति, सज्जयित्वा चित्रं सारथिं शब्दयति, शब्दयित्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्-त्वं खलु हे चित्र! श्वेतविकां नगरीं गच्छ, प्रदेशिनो राज्ञः समीपे इदं महार्थं यावत् प्राभृतम् उपनय=प्रापय, मम=मत्कर्तृक पादग्रहणं=प्रणामं यथा भणितं=यथोक्तम्-अवितथम्=यथार्थम् असंदिग्धम्=सुस्पष्टं वचनं च विज्ञापय=निवेदय, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा विसर्जितः। ततः खलु स चित्रः सारथिः जितशत्रुणा राज्ञा विसर्जितः=प्रदेशिराजसमीपे गन्तुम् आज्ञप्तः सन् महार्थं यावत्=महार्थत्वादिविशेषणविशिष्टं प्राभृतं गृह्णाति जितशत्रो राज्ञः अन्तिकात्=समीपात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य श्रावस्त्या नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव राजमार्गमवगाढः=राजमार्गस्थितआवासः=प्रासादः तत्रैव उपागच्छति, तत् महार्थं यावत्=महार्थत्वादिविशेषणविशिष्टं प्राभृतं स्थापयति, स्थापयित्वा स्नातो यावच्छरीरः-'यावच्छरीर'-पदेन 'कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरः' इति संगृह्यते, अर्थस्त्वेषां पूर्ववद् बोध्यः, तथा-सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन युक्तः महाभटचटकरवृन्दपरिक्षिप्तो महापुरुषवागुरापरिक्षिप्तश्च सन् राजमार्गमवगाढात् आवासात् निर्गच्छति। 'सकोरण्ट'-इत्यादि-पदानामर्थः पूर्ववद् बोध्यः। ततः श्रावस्त्या नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव कोष्ठकं चैत्यं

टीकार्थ--इस सूत्र का मूलार्थ के ही अनुरूप है,-नवरं-'महत्थं जाव पाहुडं' में जो यावत् पद आया है उससे 'महग्घं, महार्हं, विपुलं, राजार्हं' इन पदों का संग्रह हुआ है। इन पदों का अर्थ यथास्थान लिखा जा चुका है--अतः वैसा ही समझना चाहिये. 'ण्हाए जाव सरीरे' में जो यावत् पद आया है--उससे 'कृतबलिकर्मा, कृतकौतुकमंगलप्रायश्चित्तः अल्पमहार्घाभरणालंकृत' इन पूर्वोक्त पदों का संग्रह हुआ है, इनका अर्थ पहिले के जैसा ही जानना चाहिये, 'हट्ठ जाव' में जो यावत् पद आया है उससे 'तुष्टचित्तानन्दितः, प्रीतिमनाः, परमसौ-

---

ટીકાર્થ—આ સૂત્રનો ટીકાર્થ પ્રમાણે જ છે. "नवरं महत्थ जाव पाहुड" મા જે યાવત્ પદ છે તેથી 'महग्घं' 'महार्हं', विपुलं राजार्हं" આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. આ પદોનો અર્થ યથાસ્થાને સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે. 'ण्हाए जाव सरीरे' માં જે યાવત્ પદ તેથી 'कृतबलिकर्मा, कृतकौतुकमंगलप्रायश्चित्तः अल्पमहार्घाभरणालंकृत' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ પદોનો અર્થ પહેલાંની જેમ જ સમજવો જોઈએ. 'हट्ठ जाव' માં જે યાવત્ પદ છે તેથી "तुष्टचित्तानन्दित"

यत्रैव केशीकुमारश्रमणस्तत्रैव उपागच्छति, केशिकुमारश्रमणस्य अन्तिके =समीपे धर्मं श्रुत्वा=सामान्यत आकर्ण्य. निशम्य=विशेषतो हृदयवधार्य हृष्टः यावत्-हृष्टतुष्टचित्तानन्दितःप्रीतिमनाः परमसौमनस्यितो-हर्षवशविसर्पद्हृदयः अर्थ स्त्वेषां पूर्ववद् बोध्यः, उत्थया=उत्थानशक्त्या यावत् यावत्पदेन-'उत्तिष्ठति,उत्थाय केशिनं कुमारश्रमणं त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति,वन्दते नमस्यति,वन्दित्वा नमस्यित्वा'-इति संग्राह्यम्, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्- 'एवं खलु अहं भदन्त ! जितशत्रुणा राज्ञा' 'प्रदेशिनो राज्ञः समीपे इदं महार्थं यावत्=महार्थत्वादिविशेषणविशिष्टं प्राभृतम् उपनय' इति कृत्वा= इत्युक्त्वा विसर्जितः। तत्=तस्मात् कारणात् खलु भदन्त ! गच्छाम्यहं श्वेतविकां नगरीम्। हे भदन्त ! श्वेतविका नगरी खलु प्रासादीया=दर्शक- जनानां मनःप्रमोदजनिकाऽस्ति ! एवम्=तथा हे भदन्त ! श्वेतविका नगरी खलु दर्शनीया=प्रेक्षणीयाऽस्ति। हे भदन्त ! श्वेतविका नगरी खलु अभि- रूपा=सर्वकालरमणीयाऽस्ति। हे भदन्त ! श्वेतविका नगरी खलु प्रति- रूपा=सर्वोत्तमाऽस्ति। अतो हे भदन्त ! यूयं श्वेतविकां नगरीं समवसरत= आगच्छत-इति ॥ सू० ११४ ॥

मनस्यितो, हर्षवशविसर्पद्हृदयः' इन पदों का संग्रह हुआ है. इनका अर्थ पहिले जैसा ही जानना चाहिये, 'उट्ठाए जाव' में आगत यावत्पद से उत्ति- ष्ठति, उत्थाय केशिनं कुमारश्रमणं त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणं-करोति, वन्दते, नमस्यति, वन्दित्वा, नमस्यित्वा' इस पाठ का संग्रह हुआ है। दर्शकजनों के मन में प्रमोदजनक है यह प्रासादीय शब्द का अर्थ है। देखने योग्य है, यह दर्शनीय शब्द का अर्थ है-सर्वकाल रमणीय है वह अभिरूप शब्द का अर्थ है-सर्वोत्तम है यह प्रतिरूप शब्द का अर्थ है।सू, ११४।

प्रीतिमनाः, परमसौमनस्यितो, हर्षवश विसर्पद्हृदयः' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ પદોનો અર્થ પહેલાંની જેમજ સમજવો જોઇએ. 'उट्ठाए जाव' મા જે યાવત્ પદ આવેલું છે તેથી "उत्तिष्ठति, उत्थाय केशिनं कुमारश्रमणं त्रिकृत्व आदक्षिण प्रदक्षिणं करोति वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा, नमस्यित्वा' આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે. દર્શકો માટે જે પ્રમોદજનક છે-એવો પ્રાસાદીય શબ્દનો અર્થ થાય છે. દર્શનીય શબ્દનો અર્થ છે. જોવા યોગ્ય. અભિરૂપ શબ્દનો અર્થ થાય છે જે સર્વ- કાળ રમણીય છે તે પ્રતિરૂપ શબ્દનો અર્થ સર્વોત્તમ થાય છે. ।।સૂ૦ ૧૧૪।।

मूलम्—तएणं से केसी कुमारसमणे चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परिजाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ। तएण से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते! जियसत्तुणा रण्णा पएसिस्स रण्णो इमं महत्थ जाव विसज्जिए, तं चेव जाव समोसरह णं भंते! तुब्भे सेयंवियं णयरिं। तएणं से केसीकुमारसमणे चित्तेण सारहिणा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी—चित्ता। से जहानामए वणसंडए सिया किण्हे किण्होभासे जाव पडिरूवे। से णूणं चित्ता! से वणसंडे वहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खीसरीसिवाणं अभिगमणिज्जे? हंता! अभिगमणिज्ज। तंसि च णं चित्ता! वणसंडंसि वहवे भिलुंगा नाम पावसउणा परिवसंति, जेणं तेसिं वहूण दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं ठियाणं चेव मंससोणियं आहारेंति! से णूणं चित्ता! से वणसंडे तेसि णं वहूणं दुपय जाव सरीसिवाणं अभिगमणिज्जे? णो इणट्ठे समट्ठे! कम्हा? भंते! सोवसग्गे। एवामेव चित्ता! तुज्झंपि सेयंवियाए णयरीए पएसी नामं राया परिवसइ, अहम्मिए जाव णो सम्म करभरवित्तिं पवत्तइ। तं कहंणं अहं चित्ता! सेयंवियाए नयरीए समोसरिस्सामि? ॥सू० ११५॥

छाया—ततःखलु स केशीकुमारश्रमणः चित्रेण सारथिना एवमुक्तः सन् चित्रस्य सारथेरेतमर्थं नो आद्रियते नो परिजानाति, तूष्णीकः सन्तिष्ठते। ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिकुमारश्रमणं द्वितीयमपि तृतीयमपि

एवमवादीत्–एवं खलु अहं भदन्त ! जितशत्रुणा राज्ञा प्रदेशिनो राज्ञ- इदं महार्थं यावद् विसर्जितः, तदेव यावत् समवसरत खलु भदन्त! यूयं श्वेत- विकां नगरीम्। ततः खलु केशीकुमारश्रमणः चित्रेण सारथिना द्वितीय-

---

'तएणं से केसी कुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ–(तएणं) इसके बाद (से केसीकुमारसमणे) उन केशिकुमार श्रमणसे जब चित्र सारथी ने ऐंसा कहा–तब (चित्तस्स सारहिस्स) चित्र सारथी का (एयमट्ठं णो अढाइ, णो परिजाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठइ) इस अर्थको आदर नहीं दिया, उसे विचार का विषय नहीं बनाया. किन्तु चुपचाप ही रहे (तएणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमण दोच्चं पि तच्चंपि एवं वयासी) इसके बाद चित्र सारथीने पुनःदुवारा भी और तिवारा भी उन केशिकुमारश्रमण से ऐसा ही कहा कि (एवं खलु अहं भंते ! जिय- सत्तुणा रण्णा पयेसिस्स रणो इमं महत्थं जाव विसज्जिए तं चेवं जाव समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयंविय नयरिं) हे भदन्त ! जितशत्रु राजा के द्वारा मैं ऐंसा कहा गया हूं कि हे चित्र ! तुम इस महार्थादि विशे- षणों वाले प्राभृत (भेट) को लेकर प्रदेशीराजा के पास जाओ सो मैं वहां जा रहा हूं–वह श्वेतांबिका नगरी दर्शनीय आदि विशेषणों वाली है अतः वहा पधारे (तएणं से केसीकुमारसमणे चित्तेण सारहिणा दोच्चं पि तच्चं पि एवं

'त एणं से केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(त एणं) ત્યાર પછી (से केसीकुमारसमणे) તે કેશિકુમાર શ્રમણને જ્યારે ચિત્રસારથીએ આ પ્રમાણે કહ્યું ત્યારે (चित्तस्स सारहिस्स) ચિત્ર સારથિના (एयमट्ठं णो आढाइ, णो परिजाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठइ) આ અર્થને આદર આપ્યો નહિ. તેના કથન પર કોઈ પણ જાતનો વિચાર કર્યો નહિ, તેઓ આ બધું સાંભળીને મૌન જ રહ્યા. (तएणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी) ત્યાર બાદ ચિત્ર સારથિએ બીજી વખત અને ત્રીજી વખત પણ કેશિકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે જ કહ્યું કે (एवं खलु अहं भंते ! जियसत्तुणा रण्णा पएसिस्स रण्णो इमं महत्थं जाव विसज्जिए तं चेव जाव समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयविय नयरिं) હે ભદંત ! જિતશત્રુ રાજાએ મને આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે હે ચિત્ર! તમે આ મહાર્થાદિ વિશેષણોવાળી ભેટને લઈને પ્રદેશી રાજાની પાસે જાવો. જેથી હું ત્યાં જઈ રહ્યો છું. તે શ્વેતાંબિકા નગરી દર્શનીય વગેરે વિશેષણોવાળી છે તેથી તમે પણ ત્યાં પધારો. (त एणं से केसिकुमारसमणे चित्तेण सारहिणा दोच्चंपि तच्चंपि एवंवुत्ते समाणे

मपि तृतीयमपि एवमुक्तः सन चित्रं सारथिम् एवमवादीत्–चित्र ! स यथा-नामको वनषण्डः स्यात् कृष्णः कृष्णावभासो यावत्प्रतिरूपः । अथ नून चित्र ! स वनषण्डो बहूनां द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणाम् अभिगमनीय ? हन्त ! अभिगमनीयः । तस्मिंश्च खलु चित्र ! वनषण्डे बहवो भिल्लका नाम पापशाकुनिकाः परिवसन्ति । ये खलु बहूनां द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणां स्थितानामेव मांसशोणितम् आहारयन्ति । अथ नूनं चित्र ! स

वुत्ते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी) तब इस प्रकार दुबारा तिवारा भी चित्र सारथी के द्वारा विनन्ति किये जानेपर केशिकुमार श्रमणने उन चित्र सारथी से ऐसा कहा (चित्ता ! से जहानामए वणसंडए सिया किण्हे किण्होभासे जाव पडिरूवे) हे चित्र ! जैसे कोई एक वनषंड हो और वह कृष्ण–कृष्ण वर्णवाला हो, तथा कृष्ण जैसा दिखता हो (से णूणं चित्ता से वणसंडे बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खीसरीसिवाणं अभिगमणिज्जे) तो हे चित्त ! कहो वह अनेक द्विपद, चतुष्पद, मृग, पशु पक्षी और सरीसृप सर्प इन सबके गमन के योग्य होता है न? (हंता अभिगमणिज्जे) हां भदन्त ! वह इनके गमन के योग्य होता है. (तंसि च णं चित्ता वणसंडंसि बहवे भिल्लगा पावसउणा परिवसंति) यदि उस वनखंड मे हे चित्र ! अनेक पापिष्ठ भील लोग जो कि पारधी होते हैं रहते हैं (जे णं तेसिं बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं ठियाणं चेव मंससोणियं आहारंति) जो कि वहां रहे हुए उन बहुत से द्विपद, चतुष्पद, मृग, पशु, पक्षी और सरीसृपों के मांस शोणित

चित्तं सारहिं एवं वयासी) त्यारे ते प्रमाणे बीજી वખत અને ત્રીજી વખત કહેલી ચિત્રસારથિની વાત સાંભળીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું (चित्ता ! से जहानामए वणसंडए सिया किण्हे किण्होभासे जाव पडिरूवे) હે ચિત્ર ! જેમ કોઈ વનખંડ હોય અને તે કૃષ્ણવર્ણવાળો હોય, તેમજ કૃષ્ણ જેવો લાગતો હોય (से णूणं चित्ता से वणसंडे बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खीसरीसिवाणं अभिगमणिज्जे) તો હે ચિત્ર ! કહો તે વન ઘણા દ્વિપદો, ચતુષ્પદો, મૃગો, પશુઓ પક્ષીઓ અને સરીસૃપો આ બધાના માટે ગમન કરવા યોગ્ય હોય કે નહિ ?
अभिगमणिज्जे) હા ભદંત ! તે તેમના માટે ગમન યોગ્ય ગણાય છે (तंसि च णं चित्ता वणसंडंसि बहवे भिल्लगा पावसउणा परिवसंति) અને તે વનખંડમાં હે ચિત્ર ! જો ઘણા પાપિષ્ઠ શિકારી ભીલો રહેતા હોય (जे णं तेसिं बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं ठियाणं चेव मंससोणियं आहारेंति અને તેઓ ત્યાં રહેનારા તે ઘણા દ્વિપદો ચતુષ્પદો મૃગો પશુઓ અને સરીસૃપોના

वनषण्डस्तेषां खलु बहूनां द्विपद यावत्-सरीसृपाणाम् अभिगमनीयः ? नो अयमर्थः समर्थः । कस्मात् ? भदन्त ! सोपसर्गः ? एवमेव चित्र ! युष्माकमपि श्वेतविकायां नगर्यां प्रदेशी नाम राजा परिवसति, अधार्मिको यावत्, नो सम्यक्करभरवृत्तिं प्रवर्त्तयति । तत् कथं खलु अहं चित्र ! श्वेतविकायां नगर्यां समवसरिष्यामि ॥सू० ११५॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि—

ततः खलु स केशीकुमारश्रमणः चित्रेण सारथिना एवम्=उक्तप्रकारेण उक्तः सन् चित्रस्य सारथेः एतमर्थं='यूयं श्वेतविकायां नगर्यां

का आहार करते हों, क्या ऐसी स्थिति में (से णूणं चित्ता ! से वणसंडे तेसिं बहूणं दुपय जाव सरीसिवाण अभिगमणिज्जे? हे चित्त ! वह वनषण्ड उन अनेक द्विपद यावत् सरीसृपों के लिये अभिगमनीय हो सकता है ? (णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त ! ऐसी स्थिति में वह उनके लिये अभिगमनीय नहीं हो सकता है। (कम्हा) हे चित्र ! वह उनके लिये अभिगमनीय-प्रवेश के योग्य-क्यों नहीं हो सकता है ? (सोवसग्गे) क्यों कि हे भदन्त ! वह वनषण्ड विघ्नसहित है।(एवामेव चित्ता ! तुज्झंपि सेयवियाए णयरीये पएसी नामं राया परिवसइ, अहम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्ति पवत्तइ--तं कहं चित्ता सेयवियाए नयरीए समोसरिस्सामि) इसी तरह से हे चित्र ! तुम्हारे लिये श्वेतांबिका नगरी में प्रदेशी राजा रहता है वह अधार्मिक है यावत् प्रजाजनों से कर-टेक्स लेकर भी उनका अच्छी तरह से पालन पोषण नहीं करता है। तो हे चित्र! उस श्वेतांबिका नगरी में हम लोग कैसे आवें

માંસ અને શોણિતનો આહાર કરતા હોય તો શું એવી પરિસ્થિતિમાં (से णूणं चित्ता ! से वणसंडे तेसिं बहूणं दुपय जाव सरिसिवाणं अभिगमणिज्जे ?) હે ચિત્ર ! તે વનખંડ તે ઘણાં દ્વિપદો યાવત્ સરિસૃપો માટે અભિગમનીય અર્થાત્ વિચરણ કરવા યોગ્ય-કહી શકાય ? (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ભદંત ! એવી સ્થિતિમાં તે તેમના માટે અભિગમનીય થઈ શકે તેમ નથી. (कम्हा) હે ચિત્ર ! તે તેમના માટે અભિગમનીય-વિચરણ કરવા યોગ્ય-કેમ નથી ? (सोवसग्गे) કેમકે હે ભદંત ! તે વનખંડ વિઘ્ન સહિત છે. (एवामेव चित्ता ! तुज्झंपि सेयवियाए णयरीए पएसीनामं राया परिवसइ, अहम्मिए जाव णो सम्म करभरवित्ति पवत्तइ तं कहं णं अहं चित्ता सेयवियाए नयरीए समोसरिस्सामि) આ પ્રમાણે જ હે ચિત્ર ! તમારે માટે શ્વેતાંબિકા નગરીમાં પ્રદેશીરાજા રહે છે. તે અધાર્મિક છે યાવત પ્રજા પાસેથી કર-ટેક્સ લઈને પણ તેમનું પાલન-રક્ષણ સારી રીતે કરતો થી. તો એવી સ્થિતિમાં હું શ્વેતાંબિકા નગરીમાં કેવી રીતે જઈ શકું છું. ?

समवसरत'-इत्थं रूपम् अर्थम् नो आद्रियते=नो आदरविषयत्वेन हृदि करोति. अतएव--नो परिजानाति=विचारविषयत्वेन एतमर्थं न स्वीकरोति, तत एव तूष्णीकः=अवलम्बितमौनभावः सन् सन्तिष्ठते। ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिकुमारश्रमणं द्वितीयमपि तृतीयमपि द्वित्रिवारम् एवम् अवादीत् -एवं खलु अहं भदन्त ! जितशत्रुणा राज्ञा-इत्यादि-समवसरत खलु भदन्त ! यूयं श्वेतविकां नगरीम् इत्यन्तम्। वाक्यं पूर्वसूत्रे गतम्-अस्यार्थस्तत एव बोध्यः-इति। ततः खलु केशीकुमारश्रमण. चित्रेण सारथिना द्वितीयमपि तृतीयमपि=द्विकृत्वोऽपि त्रिकृत्वोऽपि एवमुक्तः सन् चित्रं सारथिम्-एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्-स यथानामको वनषण्डः स्यात्, कृष्णः=कृष्णवर्णः कृष्णावभासः-कृष्ण इव अवभासते न तु वस्तुतः कृष्ण-एवं। यावत्-यावत्पदेन-'नीलो नीलावभासो हरितो हरितावभासः शीतः शीतावभासः स्निग्धः स्निग्धावभासः तीव्रः तीव्रावभासः कृष्णः कृष्णच्छायो नीलो नीलच्छायो हरितो हरितच्छायः शीतःशीतच्छायः स्निग्धःस्निग्धच्छायः तीव्रः तीव्रच्छायः घनकटितकटच्छायो रम्यो महामेघनिकुरम्बभूतः प्रासादीयो दर्शनीयः अभिरूपः' इति संग्राह्यम्। तथा-प्रतिरूपः। अयं सर्वेऽस्मामौपपातिक-सूत्रस्यास्मत्कृतायां पीयूषवर्षिणीटीकायामवलोकनीयः। अथ नून चित्र! वनषण्डो

टीकार्थ इसका इस मूलार्थ के जैसा ही है-नवर- किण्हाभासे जाव पडिरूवे)में आया हुआ यावत पद से यहां 'नीलो, नीलावभासो, हरितो, हरितावभासः, शीतः, शीतावभासः स्निग्ध स्निग्धावभासः, तीव्रः, तीव्राव-भासः, कृष्णः, कृष्णच्छायो, नीलो, नीलच्छायो, हरितो, हरितच्छायः, शीतः, शीतच्छायः, स्निग्धः स्निग्धच्छायः, तीव्रः, तीव्रच्छायः, घन कटितकटच्छायो, रम्यो, महामेघनिकुरम्बभूतः प्रासादीयो, दर्शनीयः अभि रूपः' यह पाठ संगृहीत हुआ है। इन पदों का अर्थ औपपातिकसूत्र की पीयूषवर्षिणी टीका में हमने स्पष्ट किया है अतः वहां से जान लेना

ટીકાર્થ —આનો મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે 'नवरं' 'किण्होभासे जाव पडिरूवे' મ' જે યાવત્ પદ આવેલુ છે તેથી અહીં "नीलो, नीलावभासो, हरितो, हरितावभासः, शीतः शीतावभासः, स्निग्धः, स्निग्धावभासः, तीव्रः, तीव्राव-भासः, कृष्णः, कृष्णच्छायो, नीलो, नीलच्छायो, हरितो, हरितच्छायः, शीतः, शीतच्छायः [illegible] रम्यो, महामेघनिकुरम्बभूतः प्रासादीयो, दर्शनीयः अभिरूपः' [illegible] આ પદોનો અર્થ અમે ઔપપાતિક સૂત્રની પીયૂષવર્ષિણી ટીકા [illegible] છે.

बहूनां द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणां द्विपदादिसर्पान्तानां, तेषाम् अभिगमनीयः=गन्तुं योग्यो भवेत्?, इत्थं केशिकुमारश्रमणस्य वचनं श्रुत्वा चित्रः प्राह—हन्त! अभिगमनीयः=गन्तुं योग्यो भवेत्स वनषण्ड इति। पुनः केशिकुमारश्रमणः पृच्छति—हे चित्र! तस्मिन्= पूर्वोक्ते च खलु वनषण्डे बहवो भिल्लकाः'=भिल्लजातीयाः 'नाम' इति संभावनायां पापशाकुनिकाः= पापिष्ठाः व्याधाः परिवसन्ति, ये खलु तेषां बहूनां द्विपदचतुष्पदमृगपशु-पक्षिसरीसृपाणां स्थितानामेव मांसशोणितं=मांसानि शोणितानि च आहारयन्ति=भुञ्जते। अथ नूनं चित्र! स वनषण्डः तेषां खलु बहूनां द्विपद—यावत् सरीसृपाणाम् सर्पाणाम् अभिगमनीयो भवेत्? चित्रःप्राह-अयमर्थः=द्विपदादीनां तद्वनप्रवेशरूपोऽर्थः नो समर्थः=न योग्यः, स वनषण्डस्तेषां प्रवेष्टुं न योग्य इति भावः। केशी पृच्छति—कस्मात्=कस्मात् कारणात् स वनषण्डः प्रवेष्टुं न योग्यः? चित्रः प्राह—हे भदन्त! स वनषण्डः=विघ्नसहितः। ततः केशीप्राह—हे चित्र! यथा स वनषण्डस्तेषां द्विपदादीनां प्रवेष्टुं न योग्यः, -एवमेव= अनेन प्रकारेणैव श्वेतविका नगर्यपि प्रवेष्टुं न योग्या। तत्र श्वेतविकायां नगर्यां युष्माकं प्रदेशी नाम राजा परिवसति, अधार्मिको यावत् नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रवर्त्तयति। यावत्पदेन—अधर्मिष्ठः अधर्मानुगः' इत्यादि पदानि संग्राह्याणि, तानि च—एकशततमसूत्रे विलोकनीयानि। अर्थोऽपि तत्रैव विलोकनीयः। तत् कथं खलु अहं चित्र! श्वेतविकायां नगर्यां समवसरिष्यामि=आगमिष्यामि? ॥ सू० ११५ ॥

मूलम्—तएणं से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं एवं वयासी किं णं भंते! तुब्भ पएसिणा रन्ना कायव्वं? अत्थि णं भंते! सेयवियाए नगरीए अन्ने बहवे ईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिइयो जे णं देवाणुप्पियं वंदिस्संति जाव पज्जुवासिस्सति विउलं असणं पाणं

चाहिये. 'अहम्मिए जाव' में आया हुआ यावत् पदसे 'अधर्मिष्ठः. अधर्मानुगः' इत्यादि पदों का संग्रह किया गया है। इन पदोंका अर्थ १०१ सूत्र में लिखा गया हैं ॥सू० ११५॥

એથી જિજ્ઞાસુઓએ ત્યાંથી અર્થ જાણી લેવો જોઈએ. "अहम्मिए जाव" મા જે યાવત્ પદ છે તેથી "अधार्मिष्ठः, अधर्मानुगः' વગેરે પદોનો સંગ્રહ થયો છે. આ પદોનો અર્થ ૧૦૧મા સૂત્રમા સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યો છે. ॥૧૧૫॥

खाइमं साइमं पडिलाभिस्संति, पाडिहारिएणं पीठलगसेज्जासंफ-थारएणं उवनिमंतिस्संति। तएणं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी अविआइं चित्ता! जाणिस्सामो ॥ सू० ११६ ॥

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत्-किं खलु भदन्त! युष्माकं प्रदेशिना राज्ञा कर्त्तव्यम्? सन्ति खलु भदन्त! श्वेतविकायां नगर्याम् अन्ये बहवः ईश्वरतलवर-यावत्सार्थवाहप्रभृतयः, ये खलु देवानुप्रियं वन्दिष्यन्ति नमस्यिष्यन्ति यावत् पर्युपासिष्यन्ते, विपुलम् अशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं प्रतिलम्भयिष्यन्ति, प्रतिहारिकेण पीठ

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं) इसके बाद (से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं एवं वयासी) उस चित्र सारथिने केशिकुमारश्रमण से ऐसा कहा--(किं णं भंते! तुभं पएसिणा रन्ना कायव्व) हे भदन्त! आपको प्रदेशी राजा से क्या तात्पर्य है (सेयंवियाए नयरीए अन्ने बहवे ईसरतलवर जाव सत्थवाहप्पभिईओ जे णं देवाणुप्पियं वंदिस्संति णमंसिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति, विउलं असणं पणं खाइमं साइमं पडिलाभिस्संति) श्वेतांबिका नगरी में और भी बहुत से ईश्वर तलवर यावत् सार्थवाह आदि हैं जो आप देवानुप्रिय को वन्दना करेंगे, नमस्कार करेंगे यावत् पर्युपासना करेंगे एवं विपुल, अशन से पान से खादिम से और स्वादिम से आप को प्रतिलाभित्त करेंगे। (पडिहारेणं पीढफलगसेज्जासंथारएणं उवनिमंतिस्संति) एवं समर्पणीय

'तए णं से चित्ते सारही' इत्यादि.

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यार पछी (से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) ते चित्र सारथिએ કેશિકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે (किं णं भंते! तुब्भं पएसिणा रन्ना कायव्वं) હે ભદંત! આપશ્રીને પ્રદેશી રાજા સાથે શી નિસ્બત છે? (सेयंवियाए नयरीए अन्ने बहवे ईसरतलवरजाव सत्थवाहप्पभिईओ जे णं देवाणुप्पियं वंदिस्संति णमंसिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभिस्संति) શ્વેતાંબિકા નગરીમાં બીજા ઘણા ઈશ્વર, તલવર યાવત્ સાર્થવાહો વગેરે છે કે જે આપ દેવાનુપ્રિયને વંદન કરશે નમસ્કાર કરશે યાવત્ પર્યુપાસના કરશે. અને વિપુલ અશનથી, પાનથી, ખાદીમથી અને સ્વાદિમથી આપશ્રીને પ્રતિલાભિત કરશે. (पडिहारेणं पीढफलगसेज्जासंथारएणं उवनिमंतिस्संति) અને સમર્પણીય પીઠ ફલક શય્

फलकशय्यासंस्तारकेण उपनिमन्त्रयिष्यन्ति । ततः खलु स केशीकुमारश्रमणश्चित्रं सारथिमेवमवादीत्—अपि च चित्र ! ज्ञास्यामः ॥ सू० ११६ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि—

टीका— ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनं कुमारश्रमणम् एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्—किं खलु भदन्त ! युष्माकं प्रदेशिना राज्ञा कर्त्तव्यम्=प्रदेशिनो राज्ञः सकाशाद् भवतां नास्ति किञ्चित् प्रयोजनमित्यर्थः। हे भदन्त ! श्वेतविकायां नगर्यां खलु अन्ये बहवः ईश्वरतलवर यावत्सार्थवाहप्रभृतयः सन्ति । अत्र 'यावत्'—पदेन— 'माडम्बिककौटुम्बिकेभ्यश्रेष्ठिसेनापति—' इति संग्राह्यम्। ये ईश्वरादयः खलु देवानुप्रियं वन्दिष्यन्ते=स्तोष्यन्ति नमस्यन्ति=प्रणता भविष्यन्ति, यावत् यावत्पदेन—'सत्कारयिष्यन्ति सम्मानयिष्यन्ति, कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यम्—इति संग्राह्यम्। त —सत्कारयिष्यन्ति अभिमुखगमनादिना, सम्मानयिष्यन्ति—वसतिप्रदानादिना, तथा—'कल्याणं=कल्याणस्वरूपम्, मङ्गलं=मङ्गलस्वरूपम् दैवतम्—

पीठफलकशय्यासंस्तारक ग्रहण करने के लिये आपसे प्रार्थना करेंगे। (तएणं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी) तब केशीकुमारश्रमणने चित्रसारथीसे इस प्रकार कहा (अवि आइं चित्ता! जाणिस्सामो) हे चित्र! विचार करेंगे।

टीकार्थ स्पष्ट है. नवरं 'तलवर जाव सत्थवाह' में आगत यावत् पदसे यहां 'माडंबिक-कौटुम्बिकेभ्यश्रेष्ठिसेनापति' पाठ का ग्रहण हुआ है। 'णमंसिस्संति जाव पज्जुवासंति' में आगत यावत् पद से 'सत्कारयिष्यन्ति. सम्मानयिष्यन्ति, कल्याणं मंगलं दैवतं चैत्यम्' इस पाठ का संग्रह हुआ है। अभिमुखगमनादि द्वारा जो सन्मान प्रदर्शित किया जाता है उसका नाम सत्कार है, वसति आदि के देने से जो भक्ति प्रदर्शित की जाती है उसका

संस्तारક ગ્રહણ કરવા આપને વિનંતી કરશે (तएणं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी) त्यारे કેશિકુમાર શ્રમણે ચિત્ર સારથિને આ પ્રમાણે કહ્યું કે (अविआइं चित्ता जाणिस्सामो) હે ચિત્ર! વિચાર કરીશ!

ટીકાર્થ—સ્પષ્ટ જ છે. नवरं "तलवर जाव सत्थवाह" માં જે યાવત્ પદ આવેલું છે, તેથી અહીં 'माडंबिककौटुम्बिकेभ्यश्रेष्ठिसेनापति' પાઠનો સંગ્રહ થયો છે 'णमंसिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति' માં આવેલા યાવત પદથી 'सत्कारयिष्यन्ति. सम्मानयिष्यन्ति, कल्याणं मंगलं दैवतं चैत्यम्" આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે. અભિમુખ ગમન-વગેરે વડે જે સન્માન આપવામાં આવે છે તેનું નામ સત્કાર છે. નિવાસ માટે સ્થાન વગેરે આપીને જે ભક્તિ પ્રદર્શિત કરવામાં આવે

धर्मदेवस्वरूपम्, चैत्यं=चितिः=विशिष्टज्ञानं, तया युक्तं सर्वथा विशिष्टज्ञानवन्त-मित्यर्थः, इति बुद्धया पर्युपासिष्यन्ते=सेविष्यन्ते। तथा-विपुलं=प्रचुरम् अशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं प्रतिलम्भयिष्यन्ति=प्रदास्यन्ति। तथा-प्रातिहारिकेण=पुनः समर्पणीयेन पीठफलकशय्यासंस्तारकेण-पीठफलकादयः प्रागव्याख्याताः, तेषां समाहारस्तेन उपनिमन्त्रयिष्यन्ति-प्रातिहारिकं पीठफलकशय्यासंस्तारकं च ग्रहीतुं भवन्तं प्रार्थयिष्यन्ति-इति। ततः खलु स केशीकुमारश्रमणः चित्रं सार-थिम् एवम्=अनेन प्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्-'अविआइ'-अपि च चित्र! ज्ञास्यामः=विचारयिष्यामः इति ॥ सू० ११६ ॥

मूलम्—तएणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं वंदइ नमंसइ, केसिस्स कुमारसमणस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह, जहा सेयंवियाए णयरीए णिग्गच्छइ तहेव जाव वसमाणे कुणालाजणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव केइयअद्धे जेणेव सेयविया णयरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उज्जाणपालए सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी- जया णं देवाणुप्पिया! पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे पुव्वा-णुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा तया णं तुब्भे देवाणुप्पिया! केसिकुमारसमणं वंदिज्जाह नमंसिज्जाह वंदित्ता नमंसित्ता अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणेज्जाह, पडिहारिएणं पीढ-फलग जाव उवनिमंतिज्जाह, एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणेज्जाह।

नाम सन्मान है. श्वेतांबिका नगरी के लोग आप कल्याणस्वरूप हैं, मंगलस्वरूप है धर्मदेवस्वरूप हैं तथा चैत्य विशिष्ट ज्ञानवान् ऐसा मानकर आपकी सेवा करेंगे ।सू.११६।

છે તેનું નામ સન્માન છે શ્વેતાબિકા નગરીના લોકો આપશ્રી તે કલ્યાણ સ્વરૂપ, મંગળસ્વરૂપ તેમજ ચૈત્યવિશિષ્ટ જ્ઞાનવાન્ માનીને આપની સેવા કરશે. ।।સૂ. ૧૧૬।।

तएणं ते उज्जाणपालगा चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठ-तुट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहियं जाव एवं वयासी–तहत्ति अणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति ॥सू० ११७॥

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिकुमारश्रमणं वन्दते नमस्यति केशिनः कुमारश्रमणस्य अन्तिकात् कोष्ठकात् चैत्यात् प्रतिनिष्क्रामति, यत्रैव श्रावस्ती नगरी यत्रैव राजमार्गमवगाढः आवासस्तत्रैव उपागच्छति, कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्–क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः ! चातुर्घण्टम् अश्वरथं युक्तमेव उपस्थापयत, यथा श्वेतविकाया-

('तएणं') इसके बाद (से चित्ते सारही) उस चित्र सारथीने (केसिकुमारसमणं वंदइ नमंसइ) केशीकुमार श्रमण को वन्दना की और नमस्कार किया (केसिस्स कुमारसमणस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ) पश्चात् में वह केशीकुमार श्रमण के पास से और उस कोष्ठक चैत्य से चला आया. (जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ) आकर वह जहां श्रावस्ती नगरी थी एवं उसमें जिस तरफ राजमार्गपर स्थित आवास था वहां पर आया. (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) वहां आकर के उसने कौटुम्बिक–आज्ञाकारी पुरुषों को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा–(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह) हे देवानुप्रियों ! तुम लोग शीघ्र चार घंटों वाले अश्वरथ को तैयार करके ले आओ.(जहा सेयंवियाए णयरीए निग्गच्छइ,

तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएणं) त्यार पछी (से चित्ते सारही) ते चित्रसारथीએ (केसिकुमारसमणं वंदइ नमंसइ) કેશીકુમાર શ્રમણને વંદન તેમજ નમસ્કાર કર્યા. (केसिस्स कुमारसमणस्स अंतियाओ-कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ) ત્યાર પછી તે કેશીકુમાર શ્રમણ પાસેથી અને તે કોષ્ઠક ચૈત્યમાંથી બહાર આવી ગયો. (जेणेव सावत्थी णयरी जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ) આવીને તે જ્યાં શ્રાવસ્તી નગરી હતી અને તેમાં પણ જ્યાં રાજમાર્ગ પર સ્થિત નિવાસસ્થાન હતું ત્યાં આવ્યો (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) ત્યાં પહોંચીને તેણે કૌટુંબિક પુરુષોને–આજ્ઞાકારી પુરુષોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો સત્વરે ચાર ઘંટાઓથી યુક્ત

नगर्या निर्गच्छति तथैव यावद् वसन् कुणालाजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव केकयार्द्ध यत्रैव श्वेतविका नगरी यत्रैव मृगवनम् उद्यानं तत्रैव उपागगच्छति, उद्यानपालकान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्–यदा खलु देवानुप्रियाः! पार्श्वापत्यीयः केशीनामकुमारश्रमणः पूर्वानुपूर्व्या चरन् ग्रामानुग्रामं द्रवन् इहागच्छेत्, तदा खलु यूयं देवानुप्रियाः! केशिकुमारश्रमणं

तहेव जाव वसमाणे कुणाला जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव केइयअद्धे जेणेव सेयंविया णयरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) यहां से आगे चित्र सारथी जिस प्रकार श्वेतांबिका नगरी से निकल कर कुणाला जनपद (देश) में स्थित श्रावस्ती नगरी आया, उसी प्रकार वह श्रावस्ती नगरी से भी निकलकर केकयार्द्ध जनपद में स्थित श्वेतांबिका नगरी में पहुंचा. इसलिये यहां पर पूर्व की तरह से ही समग्र पाठ संगृहीत करना चाहिये. इसी बात को सूचित करने के लिये 'जहा सेयंवियाए णयरीए णिग्गच्छइ' इत्यादि यह पाठ कहा गया है. अर्थात् वह चित्रसारथि जिस प्रकार से श्वेतांबिका नगरी से निकलता है, उसी प्रकार से यावत् मार्ग में पडाव डालता हुआ वह कुणाला जनपद के मध्यमध्य से होता हुआ जहां केकयार्द्ध था और जहां श्वेतांबिका नगरी थी और उस में भी जहां मृगवन नाम का उद्यान था वहां आया (उज्जाणपालए सद्दावेइ) वहां आकर के उसने उद्यानपालों को बुलाया. (सद्दावित्ता एवं वयासी) वहां आकर के उसने ऐसा कहा–(जया णं देवाणुप्पिया! पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे पुव्वा-

---

રથ તૈયાર કરીને લાવો. (जहा सेयंवियाए णरीए निग्गच्छइ. तहेव जाव वसमाणे कुणाला जणवयस्स मज्झमज्झेण जेणेव केइय अद्धे जेणेव सेयंविया णयरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) અહીંથી તે ચિત્રસારથી પહેલાં જેમ તે શ્વેતાંબિકાનગરીથી નીકળીને કુણાલા જનપદમાં સ્થિત શ્રાવસ્તી નગરીમાં આવ્યો હતો, તેમજ તે શ્રાવસ્તી નગરીથી બહાર નીકળીને કેકયાર્દ્ધ જનપદમા સ્થિત શ્વેતાબિકા નગરીમા પહોંચ્યો. અહીં તે પ્રમાણે જ વર્ણન સમજી લેવું જોઈએ. એ વાતને બતાવવા માટે જ 'जहा सेयंवियाए णयरीए णिग्गच्छइ' વગેરે પાઠનો ઉલ્લેખ કરવામા આવ્યો છે. એટલે કે તે ચિત્ર સારથિ જેમ શ્વેતાંબિકા નગરીથી નીકળે છે, તે પ્રમાણે જ યાવત્ મુકામ કરતો તે કુણાલા જનપદના એકદમ મધ્યમા પસાર થઈને જ્યાં કેકયાર્દ્ધમા શ્વેતાબિકા નગરી હતી અને તેમાં પણ જ્યા મૃગવન નામે ઉદ્યાન હતુ ત્યા આવ્યો (उज्जाणपालए सद्दावेइ) ત્યાં આવીને તેણે ઉદ્યાન પાલને બોલાવ્યો. (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું. (जया ण देवाणुप्पिया! पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे

वन्दध्वं नमस्यत, वन्दित्वा नमस्यित्वा यथाप्रतिरूपम् अवग्रहम् अनुज्ञापयत, प्रातिहारिकेण पीठ-फलक-यावत् उपनिमन्त्रयत, एतामाज्ञप्तिकां क्षिप्रमेव प्रत्यर्पयत-। ततः खलु ते उद्यानपालकाः चित्रेण सारथिना एवमुक्ताः सन्तो हृष्टतुष्ट यावत्हृदयाः करतलपरिगृहीतं यावत् एवमवादीत्-तथेति, आज्ञाया विनयेन वचनं प्रतिशृण्वन्ति ॥ सू० ११७ ॥

णुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दुइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा, तयाणं तुब्भे देवाणुप्पिया! केसिकुमारसमणं वंदिज्जह) हे देवानुप्रियों। जब पार्श्वनाथ भगवान परंपरा में विचरने वाले केशी नामके कुमारश्रमण पूर्वसाधु परम्परा के अनुसार विचरते हुए तथा एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विहार करते हुए यहां पर पधारें, तब तुम हे देवानुप्रियो ! केशिकुमार श्रमण को वन्दना करना (नमंसिज्जाह) नमस्कार करना. (वंदित्ता नमंसित्ता अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणेज्जाह) वंदना नमस्कार कर फिर तुम उन्हें साधुकल्पानुसार वसति में निवास करने के लिये आज्ञा दे देना (पाडिहारिएणं पीठफलग जाव उवनिमंतिज्जाह) और समर्पणीय पीठफलक आदि जैसा. वे चाहे वैसा तुम उन्हें देने की प्रार्थना करना. (एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणेज्जाह) बाद में मेरी इस आज्ञा को जब पीछे शीघ्र लौटाना-अर्थात् जब केशिकुमार श्रमण आ जावें-तब तुम उनके आगमनादि के वृत्तान्त की हमें शीघ्र ही खबर देना. (तएणं ते उज्जाणपालगा चित्तेण सारहिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहियं जाव एवं वयासी-तहत्ति

पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा, तयाणं तुब्भे देवाणुप्पिया! केसिकुमारसमणं वंदिज्जह) હે દેવાનુપ્રિયો ! પાર્શ્વનાથ ભગવાનની પરંપરામાં વિચરણ કરનારા કેશી નામે શ્રમણ પૂર્વસાધુ પરંપરા મુજબ વિચરણ કરતાં કરતાં તેમજ એક ગામથી બીજે ગામમાં વિહાર કરતાં, કરતાં અહીં પધારે ત્યારે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સૌ કેશિકુમાર શ્રમણને વંદન કરજો. (नमंसिज्जाह) નમસ્કાર કરજો (वंदित्ता नमंसित्ता अहापडिरूवं उग्गहं अणुज्जाणेज्जाह) વંદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તમે તેમને સાધુ કલ્પાનુસાર વસતીમાં નિવાસ કરવાની આજ્ઞા આપશો. (पडिहारिएण पीठफलग जाव उवनिमंतिज्जाह) અને સમર્પણીય પીઠફલક વગેરે જે વસ્તુની તેઓશ્રી માગણી કરે તે વસ્તુ તમે તેમને નમ્રપણે સમર્પિત કરજો. (एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणेज्जाह) અને જ્યારે આ બધું થઈ જાય ત્યારે તમે મને કેશિકુમાર શ્રમણની અહીં પધારવાની ખબર આપજો (तएणं ते उज्जाणपालगा चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हियया- करयलपरिग्गहियं जाव

टीका—'तएणं से' इत्यादि-ततः खलु स चित्रःसारथिःकेशिकुमारश्रमणं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा केशिनःकुमारश्रमणस्य अन्तिकात् समीपात्, तदट्टकोष्ठकाच्चैत्याच्च प्रतिनिष्क्रामति=निस्सरति. प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव श्रावस्ती नगरी यत्रैव च राजमार्गमवगाढः आवासः, तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य कौटुम्बिकपुरुषान्=भृत्यान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-भो देवानुप्रियाः! चातुर्घण्टं=चतुर्घण्टविभूषितम् अश्वरथं युक्तमेव=योजिताश्वमेव उपस्थापयत=उपस्थितं कुरुत। इतोऽग्रे यथाश्वेतविकायां नगर्यां निस्सृत्य चित्रः सारथिः कुणाला जनपदे श्रावस्त्यां नगर्यां गतः, तथैव स श्रावस्त्या नगर्या अपि निस्सृत्य केकयार्द्धजनपदे श्वेतविकायां नगर्यां च गतः। अतोऽत्र पूर्ववदेव समग्रः पाठः संग्राह्यः। अमुमेवार्थंसूचयितुमाह-'यथा श्वेतविकाया नगर्या निर्गच्छति, तथैव यावत् वसन् कुणालाजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव केकयार्द्ध यत्रैव श्वेतविका नगरी यत्रैव मृगवनम् उद्यानं तत्रैव उपागच्छतीति। तत्र मृगवने उद्याने उपागत्य स उद्यानपालकान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-भो देवानुप्रियाः! यदा खलु पार्श्वापत्यीयः=पार्श्वनाथतीर्थंकरपरम्परायां सजातः केशी नाम कुमारश्रमणः पूर्वानुपूर्व्या=पूर्वसाधुपरम्परया चरन्=विचरन् ग्रामानुग्रामम्=एकस्माद् ग्रामादनन्तरस्थितं ग्रामं द्रवन्=क्रमेण गच्छन् इह=श्वेतविकायां नगर्याम् आगच्छेत्=आयात, तदा खलु यूयं देवानुप्रियाः केशिकुमारश्रमणं वन्दध्वं नमस्यत वन्दित्वा नमस्यित्वा, यथाप्रतिरूपं=साधुकल्पानुसारम् अवग्रहं=वसतौ निवासार्थमाज्ञां अनुज्ञापयत=अर्पयत,

---

आणाए विणएणं वयण पडिसुणेति) चित्र सारथी के द्वारा इस प्रकार कहे गये वे उद्यानपाल हृष्टतुष्ट यावत् हृदय हुए और दोनों हाथ जोडकर बडे विनय के साथ यावत् इस प्रकार से बोले-हे स्वामिन्! आपकी आज्ञा हमें प्रमाण है-अर्थात् आपने कहा है हम वैसा ही करेंगे इस प्रकार अपनी ओर से स्वीकृति के वचन कहकर उन्होंने चित्र सारथी की आज्ञा के वचनों को स्वीकार कर लिया।

एवं वयासी-तहत्ति आणाए विणयेणं वयणं पडिसुणेंति) ચિત્રસારથીવડે આ પ્રમાણે આજ્ઞાપિત થયેલા તે ઉદ્યાનપાલકો હૃષ્ટ-તુષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળા થયા અને બન્ને હાથ જોડીને વિનમ્રતાપૂર્વક આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે સ્વામિન્! આપ શ્રીની આજ્ઞા મારા માટે પ્રમાણરૂપ છે એટલે કે આપશ્રીએ જે પ્રમાણે આજ્ઞા કરી છે અમે યથા સમય તેમજ આચરીશું. આ પ્રમાણે પોતાના તરફથી સ્વીકૃતિના વચનો કહીને તેમણે ચિત્રસારથિની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી.

तथा-प्रातिहारिकेण=पुनः समर्पणीयेन पीठफलक यावत्=पीठफलकशय्या-संस्तारकेण उपनिमन्त्रयत. प्रातिहारिक पीठफलकादिकं यथा स गृह्णीयात् तथा तं केशिकुमारश्रमणं प्रार्थयतेत्यर्थः। एवं कृत्वा एताम् आज्ञप्तिकां क्षिप्रमेव प्रत्यर्पयत=केशिकुमारश्रमणस्य आगमनादिवृत्तान्तं मह्यं क्षिप्रमेव सूचयतेति। ततः खलु ते उद्यानपालकाः चित्रेण सारथिना एवमुक्ताः सन्तः हृष्टतुष्टयावद्धृदयाः=हृष्टतुष्टचित्तानन्दिताः प्रीतिमनसः परमसौमनस्यिताः हर्षवशविसर्पद्धृदयाः, करतलपरिगृहीतं यावत्-यावत्पदेन-'दशनखं शिर आवर्त्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा' इति संग्राह्यम्, हृष्टतुष्टेत्यादिपदानां करतलेत्यादिपदानां चार्थः पूर्ववद् बोध्यः, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्-तथेति=हे देवानुप्रिये ! यथा यूयमाज्ञापयन्ति तथैव समाचरिष्यामः इति। एवं स्वीकारवचनमुक्त्वा ते उद्यानपालकास्तस्य चित्रसारथेः आज्ञाया वचनं विनयेन प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति-इति ॥सू० ११७॥

मूलम्—तएणं से चित्ते सारही जेणेव सेयंविया णयरी तेणेव उवागच्छइ, सेयवियं नयरिं मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ, जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, तुरगे णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, तं महत्थं जाव गेण्हइ, जेणेव पएसी राया तेणेव उवागच्छइ, पएसिं रायं करयल—

टीकार्थ मूलार्थ के अनुरूप ही है, नवरं 'हट्ठतुट्ठ जाव हियया' में जो यावत पद आया है उससे यहां 'हृष्टतुष्टचित्तानन्दिताः, प्रीति मनसः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्धृदयाः' यह पाठ गृहीत हुआ है, तथा 'करतलपरिगृहीत' के यावत्पद से 'दशनखं शिर आवर्त्त मस्तके अंजलिं कृत्वा' इस पाठ का ग्रहण हुआ है. इन पाठों के पदों का पहिले अर्थ कहे हुवे अर्थ के अनुसार ही है ॥ ११७ ॥

ટીકાર્થ—આ સૂત્રનો મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે. 'नवर' "हट्ठतुट्ठ जाव हियया" માં જે યાવત્ પદ આવેલું છે તેથી "हृष्टतुष्टचित्तानन्दिताः, प्रीतिमनसः परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्धृदयाः" આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે. તેમજ "करतलपरिगृहीत" ના યાવત્ પદથી "दशनखं शिर आवर्त्तं मस्तके अंजलिं कृत्वा" આ પાઠનું ગ્રહણ થયું છે આ પાઠના પદોનો અર્થ પહેલા જે પ્રમાણે સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે તે પ્રમાણે જ અહીં સમજવો જોઈએ. ॥સૂ૦ ૧૧૭॥

जाव वद्धावेत्ता तं महत्थं जाव उवणेइ। तएणं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं जाव पडिच्छइ, चित्तं सारहिं सक्कारेइ सम्माणेइ पडिविसज्जेइ। तएणं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा विसज्जिए समाणे हट्ठजाव हियए पएसिस्स रन्नो अंतियाओ पडिणिक्खमइ, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटं आसरहं दूरूहइ, सेयवियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, तुरगे णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, ण्हाए जाव उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमाणे उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्दफरिस जाव विहरइ ॥सू० ११८॥

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः यत्रैव श्वेतांविका नगरी तत्रैव उपागच्छति, श्वेतांविकां नगरीं मध्यमध्येन अनुप्रविशति, यत्रैव प्रदेशिनः राज्ञः गृहं यत्रैव बाह्या उपस्थान शाला तत्रैव उपागच्छति, तुरगान् निगृह्णाति, रथं स्थापयति, रथात् प्रत्य-

---

'तएणं ते चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं) इसके बाद (से चित्ते सारही जेणेव सेयंविया णयरी तेणेव उवागच्छइ) वह चित्र सारथि जहां श्वेतांविका नगरी थी—वहां गया (सेयंवियं नयरिं मज्झं मज्झेणं अणुपविसइ) वह उस नगरी में बीचों बीच के मार्ग से होकर प्रविष्ट हुआ (जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ) प्रविष्ट होकर वह वहां गया जहां कि प्रदेशी राजा का घर था और जहां प्रदेशी राजा की बाह्य उपस्थानशाला थी (तुरगे निगिण्हइ) वहां पहुंच

'तएणं ते चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं) त्यार पछी (से चित्ते सारही जेणेव सेयंविया णयरी तेणेव उवागच्छइ) ते चित्र सारथि ज्यां श्वेतांविकानगरी हती त्यां गयो. (सेयंवियं नयरिं मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ) ते ते नगरीना मध्यमार्गथी थईने प्रविष्ट थयो. (जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाण साला तेणेव उवागच्छइ) प्रविष्ट थईने ते त्यां गयो ज्यां प्रदेशी राजानुं घर हतुं अने ज्यां प्रदेशी राजानी बाह्य-

षरोहति, तद् महार्थं यावद् गृह्णाति, यत्रैव प्रदेशी राजा तत्रैव उपागच्छति, प्रदेशिनं राजानं करतल यावद् वर्द्धयित्वा तन्महार्थं यावत् उपनयति। ततःखलु स प्रदेशी राजा चित्रस्य सारथेस्तन्महार्थं यावत् प्रतीच्छति चित्रं सारथिं सत्कारयति सन्मानयति प्रतिविसर्जयति। ततः खलु स चित्रः सारथिः प्रदेशिना राज्ञा विसर्जितः सन् हृष्ट यावद्हृदयः प्रदेशिनो राज्ञः

कर उसने घोड़ों को रोका (रहं ठवेइ) और रथ को खड़ा किया। (रहाओ पच्चोरुहइ) फिर वह उस रथ से नीचे उतरा (तं महत्थं जाव गेण्हइ) नीचे उतर कर उसने उस महार्थ आदि विशेषणों वाले प्राभृत को हाथ में लिया (जेणेव पएसी राया तेणेव उवागच्छइ) और जहां प्रदेशी राजा था वहां गया (पएसीरायं करयल जाव वद्धावेत्ता तं महत्थं जाव उवणेइ) वहां जाकर के उसने प्रदेशी राजा को दोनों हाथों की अंजलि बनाकर एवं उसे मस्तकपर से घुमाकर नमस्कार किया और जयविजय शब्दों का उच्चारण करते हुए उसे वधाई देकर फिर उसने उनके समक्ष लाये हुए पारितोषिक–भेट अर्पण किया (तएणं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं जाव पडिच्छइ) प्रदेशी राजाने चित्र सारथी के उस महार्थ आदि विशेषणों वाले प्राभृत को अंगीकार कर लिया (चित्तं सारहिं सक्कारेइ, सम्माणेइ पडिविसज्जेइ) और चित्र सारथी का सत्कार किया एवं सन्मान किया. बाद में उसे विसर्जित कर दिया. (तएणं से चित्ते सारही

ઉપસ્થાન શાળા હતી (तुरगे निगिण्हइ) ત્યાં પહોંચીને તેણે ઘોડાઓને ઉભા રાખ્યા. (रहं ठवेइ) અને રથને થોભાવ્યો. (रहाओ पच्चोरुहइ) ત્યાર પછી તે રથમાં નીચે ઉતર્યો. (तं महत्थं जाव गेण्हइ) નીચે ઉતરીને તેણે તે મહાર્થ વગેરે વિશેષણોવાળી ભેટ પોતાના હાથમાં લીધી. (जेणेव राया तेणेव उवागच्छइ) અને જ્યાં પ્રદેશી રાજા હતો ત્યાં ગયો (पएसीं राय करयल जाव वद्धावेत्ता तं महत्थं जाव उवणेइ) ત્યાં જઈને તેણે પ્રદેશી રાજાને બન્ને હાથોની અંજલિ બનાવીને તેને મસ્તક પર ફેરવીને નમસ્કાર કર્યા અને જયવિજય શબ્દોનું ઉચ્ચારણ કરીને તેને વધામણી આપી. ત્યાર પછી તેણે પોતાની સાથે લાવેલી ભેટને રાજાને અર્પિત કરી. (तए णं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं जाव पडिच्छइ) પ્રદેશી રાજાએ ચિત્રસારથિની તે મહાર્થ વગેરે વિશેષણોવાળી ભેટને સ્વીકારી લીધી. (चित्तं सारहिं सक्कारेइ, सम्माणेइ पडिविसज्जेइ) અને ચિત્રસારથીનો સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને પછી તેને ત્યાંથી વિસર્જિત કર્યો. (तएणं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा विसज्जिए समाणे हट्ठ जाव

अन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामति, यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथस्तत्रैव उपागच्छति, चातुर्घण्टम् अश्वरथं दूरोहति, श्वेतविकाया नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव उपागच्छति. तुरगान निगृह्णाति, रथं स्थापयति, रथात् प्रत्य-वरोहति, स्नातो यावत् उपरि प्रासादवरगतः स्फुटद्भिर्मृदङ्गमस्तकैर्द्वात्रिंशद्बद्धकैर्नाटकैर्वरतरुणीसंप्रयुक्तैः उपनर्त्यमानः उपगायमानः उपलाल्यमान इष्टान् शब्दस्पर्श-यावद् विहरति ॥सू० ११८॥

पएसिणा रण्णा विसज्जिए समाणे हट्ठ जाव हियए पएसिस्स रन्नो अंति-याओ पडिनिक्खमइ जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) इस प्रकार प्रदेशी राजा द्वारा विसर्जित किया गया वह चित्र सारथि हृष्ट यावत् हृदय वाला होकर प्रदेशी राजा के पास से चला आया और जहां चातुर्घंट अश्वरथ था वहां पर आ गया (चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, सेयवियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ) वहां आकर वह उस चार घंटेवाले अश्वरथ पर सवार हो गया और श्वेतांबिका नगरी के ठीक मध्यमार्ग से होता हुआ अपने भवन की ओर चल दिया, (तुरगे णिगिण्हइ, रहं ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ, ण्हाए जाव उप्पिं पासायवरगए) वहां आकर के उसने घोडों को रोका, रथ को खडा किया, फिर रथ से नीचे उतरा, स्नान किया यावत् उत्तम प्रासाद के उपरिभाग में जाकर बैठ गया, (फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं वरतरणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्ज-माणे२ उवगाइज्जमाणे२ उवलालिज्जमाणे२ इट्ठे सद्दफरिस जाव विहरइ) वहां पर

हियए पएसिस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) આ પ્રમાણે પ્રદેશી રાજા વડે વિસર્જિત કરાયેલો તે ચિત્ર-સારથિ હૃષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળો થઈને પ્રદેશી રાજાની પાસેથી આવતો રહ્યો અને જ્યાં ચાતુર્ઘંટ અશ્વરથ હતો ત્યાં આવ્યો. (चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, सेयवियाए नय-रीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ) ત્યાં આવીને તે ચાતુર્ઘંટવાળા અશ્વરથ પર સવાર થયો અને શ્વેતાંબિકા નગરીના ઠીક મધ્ય માર્ગમાંથી પસાર થઈને પોતાના ભવન તરફ રવાના થયો. (तुरगे णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ ण्हाए जाव उप्पिं पासायवरगए) ત્યાં આવીને તેણે ઘોડાઓને ઉભા રાખ્યા, રથ થોભાવ્યો અને ત્યારપછી રથમાંથી નીચે ઉતર્યો. સ્નાન કર્યું યાવત્ ઉત્તમ પ્રાસાદના ઉપરિભાગમાં જઈને બેસી ગયો.(फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणे२ उवगाइज्जमाणे२ उवलालिज्जमाणे२ इट्ठे सद्द

टीका—'तएणं' इत्यादि—

ततः खलु स चित्रः सारथिः यत्रैव श्वेतविकानगरी तत्रैव उपागच्छति, श्वेतविकां नगरीं मध्यमध्येन=अतिशयमध्यदेशस्थितमार्गेण श्रावस्तीं नगरीम् अनुप्रविशति, यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला तत्रैव उपागच्छति, तुरगान्=अश्वान् निगृह्णाति=निरुणद्धि, रथं स्थापयति, रथात् प्रत्यवरोहति=अवतरति, तद् महार्थं यावत्=महार्थत्वादिविशेषणविशिष्टं प्राभृतं गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव प्रदेशी राजा तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य प्रदेशिनं राजानं करतल यावत्= करतलपरिगृहीतं दशनखं शिर आवर्त्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा वर्द्धयति, वर्द्धयित्वा तद् महार्थं यावत्=महार्थत्वादिविशेषणविशिष्टं प्राभृतम् उपनयति= प्रदेशिने राज्ञे समर्पयति। ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रस्य सारथेः सकाशात् तद् महार्थं यावत्=महार्थत्वादिविशेषणविशिष्टं प्राभृतम् प्रतीच्छति= गृह्णाति, चित्रं सारथिं सत्कारयति—आसनप्रदानादिना, सम्मानयति—वस्त्राभूषणादिप्रदानेन, ततः प्रतिविसर्जयति=गन्तुमादिशति। ततः खलु स चित्रःसारथिः प्रदेशिना राज्ञा विसर्जितः सन् हृष्ट-यावद् हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः

रहते हुए यह बजते हुए मृदङ्गों की ध्वनिपूर्वक ३२ पात्रों द्वारा अभिनीत किये नाटक को बारंबार देखकर और गानों को सुनकर एवं ललितकछाओं द्वारा हर्षित होकर अभिलषित शब्द, स्पर्श, रूप रस, गंध इन पांच प्रकार के कामभोगों को भोगते हुए अपने समय को निकालने लगा।

टीकार्थ सूलार्थ के ही अनुरूप है. परन्तु जहां पर विशेषता है वह इस प्रकार से है—आसनप्रदान आदि द्वारा प्रदेशी राजाने उस चित्र सारथि का सत्कार किया, एवं वस्त्राभूषण आदि प्रदान द्वारा उसका सन्मान किया, विसर्जित किया का तात्पर्य है, जाने के लिये आज्ञा दिया. 'हट्ठ जाव हियए' में आगत इस यावत्पद से हृष्ट तुष्टचित्तानन्दितः, प्रीतिमनाः, परमसौमनस्यितः, हर्षवश-

---

फरिस जाव विहरइ) त्यां रहीने तेणे मृदंगोनी ध्वनि साथे ३२ पात्रो द्वारा अभिनीत करायेला नाटकने वारंवार जोईने अने गीतो सांभळीने अने ललितोवडे हर्षित थईने अभिलषित शब्द, स्पर्श, रूप, रसगंध आ पांच प्रकारना कामभोगोने भोगतो पोताना समयने पसार करवा लाग्यो.

टीकार्थ—आ सूत्रनो मूलार्थ प्रमाणे ज छे. पण ज्यां विशेषता छे ते आ प्रमाणे छे आसन वगेरे आपीने प्रदेशी राजाए ते चित्रसारथिनो सत्कार कर्यो अने वस्त्रआभूषण आपीने तेनुं सन्मान कर्युं विसर्जित शब्दनो अर्थ छे जवा माटे आज्ञा आपी 'हट्ठ जाव हियए' मां आवेला यावत् पदथी "हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः

परमसौमनस्यितो हर्षवशात्विसर्पद्धृदयः प्रदेशिना राज्ञः अन्तिकात्=समीपात् प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति, यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथः तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य चातुर्घण्टम् अश्वरथं दूरोहति=आरोहति, दूरुह्य श्वेतविकाया नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव स्वकं=स्वकीयं गृहं तत्रैव उपागच्छति. उपागत्य तुरगान् निगृह्णाति, निगृह्य रथं स्थापयति, रथात् प्रत्यवतरति। ततः स्नातः=कृतस्नानविधिः यावत् 'यावत्'-पदेन-'कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गल प्रायश्चित्तः सर्वालङ्कारविभूषितः' इति सग्राह्यम्। तत्र-कृतबलिकर्मा=काकादिभ्यो वितीर्णान्नभागः, कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः-कृतानि=विहितानि कौतुकानि=मषीतिलकादीनि मङ्गलानि==मङ्गलकराणि दुःस्वप्नादिफलनिवारणार्थं दध्यक्षतादीनि तान्येव प्रायश्चित्तानि-अवश्यकरणीयत्वाद् येन सः. तथा-सर्वालङ्कारविभूषितः समस्ताभरणभूषितशरीरः सन् उपरिप्रासादवरगतः=उत्तमप्रासादोपरिभागे समुपविष्टः स्फुटद्भिः=अतिप्रभास्फालनात् स्फुटद्भिरिव मृदङ्गमस्तकैः=मृदङ्गमुखपुटैः, तथा-वरतरुणीसम्प्रयुक्तैः=अतिसुन्दरयुवतीभिरभिनीतैः द्वात्रिंशद्बद्धकैः=द्वात्रिंशत्संख्यकपात्रनिबद्धैः नाटकैः उपनर्त्यमानः=स्वचरित्राभिनयपूर्वमभिनीयमानः, उपगीयमानः=स्वगुणगानपूर्वकं गीयमानः, उपलाल्यमानः= ललितकलाभिः प्रमोद्यमानः इष्टान्=अभिलषितान् शब्दस्पर्श यावत्=शब्दस्पर्शरूपरसगन्धान् पञ्चविधान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन् विहरतीति ॥ सू० ११८॥

विसर्पद्धृदयः' इन पदों का ग्रहण किया गया है। 'ण्हाए जाव उप्पिं' में आगत यावत् पद से 'कृतबलिकर्मा, कृतकौतुकमंगलप्रायश्चित्तः, सर्वालङ्कारविभूषितः' इन पदों का संग्रह हुआ है. 'कृतबलिकर्मादि पदों का तात्पर्य है काकादिकों के लिये उसने अन्नभाग वितीर्ण किया तथा दुःस्वप्नादिफलों के निवारण के लिये मषीतिलक आदिरूप कौतुक तथा मंगलकर दध्यक्षतादिकरूप प्रायश्चित्त-अवश्य करणीय होने से किये। इससे नीचे के पदों का अर्थ मूलार्थ में लिख दिया गया में ॥ सू० ११८॥

प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितः, हर्षवशविसर्पद्धृदयः" આ પદોનુ ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે. "ण्हाए जाव उप्पिं" મા આવેલા યાવત્ પદથી "कृतबलिकर्मा, कृत कौतुकमंगलप्रायश्चित्तः सर्वालङ्कारविभूषितः' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. કૃતબલિકર્માદિ પદોનો અર્થ છે કાગડા વગેરેને અન્ન ભાગ અર્પવો તેમજ દુસ્વપ્ન વગેરે ને નિવારણ કરવા માટે મષી તિલક વગેરે રૂપ કૌતુક તેમજ મંગળકર દહીં અક્ષત વગેરે રૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત-અવશ્યકરણીય હોવાથી કર્યાં. એના પછીના પદોના અર્થો મૂલાર્થ મા જ લખવામાં આવ્યા છે. ॥સૂ૦ ૧૧૮॥

मूलम्---तएणं से केसीकुमारसमणे अण्णया कयाइं पाडिहारियं पीढफलकसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणइ। सावत्थाओ णयरीओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पंचहिं अणगारसएहिं जाव विहरमाणे जेणेव केयइअद्धे जणवए, जेणेव सेयंविया नयरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, अहा पडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥सू० ११९॥

छाया-ततः खलु स केशीकुमारश्रमणः अन्यदा कदाचित् प्रातिहारिक पीठफलकशय्यासंस्तारकं प्रत्यर्पयति। श्रावस्त्या नगर्या कोष्ठकात् चैत्यात् प्रतिनिष्क्रामति पञ्चभिरनगारशतैर्यावत् विहरन् यत्रैव केकयार्द्धं जनपदः यत्रैव श्वेताविका

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं केसीकुमारसमणे अण्णया कयाइ पाडिहारियं पीढफलकसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणइ) इसके बाद केशीकुमारश्रमणने किसी एक समय अर्पणीय पीठफलकशय्यासंस्तारक को वापिस कर दिया अर्थात् जहां वे कोष्ठक चैत्य- उद्यान में ठहरे हुए थे-वहां के पुरुषों को उन्होंने संभला दिया. (सावत्थीओ णयरीओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ) इसके बाद वे श्रावस्ती नगरी से एवं कोष्ठकचैत्य से निकले (पंचहिं अणगारसएहिं जाव विहरमाणे जेणेव केयइअद्धे जणवए जेणेव सेयविया णयरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) पांच सौ अनगार इनके साथ थे. अतः उनके साथ तीर्थंकर परम्परा के अनुसार विचरण करते हुए, एक ग्राम से दूसरे ग्राम में

'त एण केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(त एणं केसीकुमारसमणे अण्णया कयाइं पाडिहारियं पीढफलकसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणइ) ત્યાર પછી કેશીકુમાર શ્રમણે કોઈ વખતે અર્પણીય પીઠફલક શય્યા સંસ્તારકને પાછા આપી દીધાં એટલે કે તેઓશ્રી જે કોષ્ઠક ચૈત્યમાં મુકામ કર્યો હતો. ત્યાંના રખેવાળને તે વસ્તુઓ આપી દીધી. (सावत्थीओ णयरीओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ) ત્યારપછી તે કેશિકુમાર શ્રમણ તે શ્રાવસ્તી નગરીથી અને કોષ્ઠક ચૈત્યમાંથી નીકળ્યા, એટલે કે વિહાર કર્યો. (पचहिं अणगारसएहिं जाव विहरमाणे जेणेव केयइअद्धे जणवए जेणेव सेयंविया णयरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) પાંચસો અનગાર તેઓશ્રીની સાથે હતા. આમ તેઓશ્રી આ બધાની સાથે તીર્થંકર પરંપરા

नगरी यत्रैव मृगवनमुद्यानं तत्रैव उपागच्छति, यथाप्रतिरूपमवग्रहमवगृह्य संयमेन तपसा आत्मानं भावयन् विहरति ॥ सू० ११९ ॥

टीका--'तएणं केसी' इत्यादि--व्याख्या निगदसिद्धा नवरम्-केशीकुमारश्रमणो मृगवनोद्यानस्थितस्य कस्यचित् पुरुषस्य स्तोककालिकमवग्रहमवगृह्य तिष्ठति। वनपालावग्रहादीनामग्रे वक्ष्यमाणत्वात् ॥ सू० ११९ ॥

मूलम्--तएणं सेयंवियाए नयरीए सिंघाडग० महया जणसद्देइ वा० परिसा निग्गच्छइ। तएणं ते उज्जाणपालगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हियया जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छंति केसिं कुमारसमणं वंदंति नमंसंति अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणंति, पाडिहारिएणं जाव संथारएणं उवनिमंतंति णामं गोयं पुच्छंति ओधारेंति एगं तं अवक्कमंति अन्नमन्नं एवं वयासी-जस्स णं देवाणु-

---

विहार करते हुए क्रमशः वहां आये जहां केकयार्द्ध जनपद-देश था, उसमें भी जहां वह श्वेतांबिका नगरी थी और उसमें भी जहां वह मृगवन नाम का उद्यान था (अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ) वहां आकर वे यथाप्रतिरूप अवग्रह प्राप्त--करके संयम एवं तप से आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे।

व्याख्या स्पष्ट है-नवरम्-केशीकुमारश्रमण मृगवनोद्यानस्थित किसी पुरुष की कुछ समयतक ठहरने के लिये आज्ञा प्राप्त कर ठहर गये. वनपाल एवं अवग्रहादिकों के विषय में सूत्रकार आगे कथन करेंगे ॥सू०११९॥

મુજબ વિચરણ કરતાં એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરતાં અનુક્રમે જ્યા કેકયાર્દ્ધ જનપદ-દેશ વિશેષ હતો અને તેમા પણ જ્યા શ્વેતાંબિકા નગરી હતી અને તેમા પણ જ્યા મૃગવન નામે ઉદ્યાન હતું. ત્યા પહોંચ્યા. (અહાપડિરૂવં ઉગ્ગહં ઉગ્ગિણ્હિત્તા સંજમેણં તવસા અપ્પાણં ભાવેમાણે વિહરઇ) ત્યા પહોંચીને તેઓશ્રીએ તથા પ્રતિરૂપ અવગ્રહ પ્રાપ્ત કરીને સંયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા વિચરણ કરવા લાગ્યા.

આ સૂત્રનો ટીકાર્થ સ્પષ્ટ છે 'નવરમ્' કેશીકુમાર શ્રમણ મૃગવન ઉદ્યાન પાલકની પાસેથી રહેવાની આજ્ઞા મેળવીને ત્યાં રોકાઇ ગયા. વનપાલ અને અવગ્રહ વગેરેની બાબતમાં સૂત્રકાર હવે પછી કહેશે ॥ સૂ० ११९ ॥

प्पिया। चित्ते सारही दंसणं कंखेइ, दंसणं पत्थेइ, दंसणं पीहेइ, दंसणं अभिलसेइ, जस्स णं णामगोयस्सवि सवणयाए हट्ठतुट्ठ जाव हियए भवइ से णं एस केसीकुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इहसंपत्ते इह समोसढे इहेव सेयंवियाए णयरीए वहिया उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरइ, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं निवेदेमो पियं से भवउ। अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, जेणेव सेयविया णयरी, जेणेव चित्तस्स सारहिस्स गिहे जेणेव चित्ते सारही तेणेव उवागच्छंति, चित्तं सारहिं करयल जाव वद्धावेंति, एवं वयासी—जस्स णं देवाणुप्पिया। दंसणं कंखंति जाव अभिलसंति, जस्स णं णामगोयस्सवि सवणयाए हट्ठ जाव भवंति, से णं अयं केसीकुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहेव मियवणे उज्जाणे समोसढे जाव विहरइ ॥ सू० १२० ॥

छाया—ततः खलु श्वेतविकायां नगर्यां शृङ्गाटक० महान् जनशब्द इति वा० पारिषद् निर्गच्छति। ततः खलु ते उद्यानपालका अस्याः कथाया

'तएण सेयंबियाए नयरीए' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं सेयंबियाए नयरीए सिंघाडग० महया जणसद्दे इ वा० परिसा निग्गच्छइ) इसके बाद श्वेतांविका नगरी में शृङ्गाटक आदि मार्गों के ऊपर उपस्थित हुई अपार जनमेदिनी में परस्पर बातचीत आदि हुई। परिषदा निकली (तएणं ते उज्जाणपालगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा

'तएणं' सेयविंयाए नयरीए' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं सेयवियाए नयरीए सिंघाडग० महया जणसद्देइ वा० परिसा निग्गच्छइ) त्यार पछी श्वेतांबिका नगरीमां शृंगाटक वगेरे मार्गो पर એકત્ર થયેલા માનવસમાજમાં પરસ્પર વાતચીત વગેરે પ્રારંભ થઈ પરિષદા નીકળી. (तएणं ते उज्जाणपालगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हियया

लब्धार्थाः सन्तः हृष्टतुष्ट यावद् हृदया यत्रैव केशीकुमारश्रमणः तत्रैव उपागच्छन्ति केशिनं कुमारश्रमणं वन्दन्ति नमस्यंति यथाप्रतिरूपमवग्रह-मनुजानन्ति, प्रातिहारिकेण यावत् संस्तारकेण उपनिमन्त्रयन्ति, नामगोत्रं पृच्छन्ति, अवधारयन्ति, एकान्तमपक्रामन्ति, अन्योन्यमेवमवादिषुः—यस्य खलु देवानुप्रियाः? चित्रः सारथिः दर्शनं काङ्क्षति, दर्शनं प्रार्थयति, दर्शनं स्पृहयति, दर्शनमभिलषति, यस्य खलु नामगोत्रस्यापि श्रवणतया हृष्टतुष्ट-

हट्ठतुट्ठ जाव हियया जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छंति) इसके बाद वे उद्यानपाल जब इस बात से निश्चितमतिवाले हो गये. तब हृष्ट तुष्ट यावत् हृदयवाले होते हुए वे जहां केशीकुमारश्रमण थे—वहां पर आये. (केसिं-कुमारसमणं वंदंति, नमंसंति, अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणंति) वहां आकर उन्होंने केशीकुमारश्रमण को वन्दना की, नमस्कार- किया एवं यथारूप अवग्रह आज्ञा उन्होने दिया. (पाडिहारिएणं जाव संथारएणं उवनिमंतंति) तथा समर्पणीय (प्रातिहारिक) यावत् संस्तारक आदि से उन्हें उपनिमंत्रित किया.(णाम गोयं पुच्छंति ओधारेंति, एगंतं अवक्कमंति, अन्नमन्नं एव वयासी) नामगोत्र पूछा। उसे हृदय में धारणकिया। फिर वे एकान्त में गये और वहां जाकर उन्होंने आपस में इस प्रकार से बातचीत की (जस्स णं देवाणुप्पिया। चित्ते सारही दंसणं कंखेइ दंसणं पीहेइ, दंसणं अभिलसेइ) हे देवानुप्रियो! जिनके दर्शन चित्र सारथि चाहता है, जिनके दर्शन की वह प्रार्थना करता है, जिनके दर्शन की वह स्पृहा रखता है, जिनके दर्शन की वह अभिलाषावाला

जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छंति) ત્યાર પછી તે ઉદ્યાનવાળો જ્યારે આ બાબતમા નિશ્ચિત મતિવાળા થયા ત્યારે તેઓ હૃષ્ટ-તુષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળા થઈને જ્યા કેશીકુમાર શ્રમણ હતા ત્યા આવ્યા. (केसिं कुमारसमणं वंदंति, नमंसंति, अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणंति) ત્યા આવીને તેમણે કેશીકુમાર શ્રમણને વદના કરી નમસ્કાર કર્યા અને યથા કલ્પનીય વસ્તુઓ તેઓશ્રીને આપી. (पाडिहारिएणं जाव संथारएणं उवनिमंतंति) તેમજ સમર્પણીય યાવત્ સસ્તારક વગેરે અર્પીને તેઓશ્રીને ઉપનિમંત્રિત કર્યા. (णामंगोयं पुच्छंति ओधारेंति, एगंतं अवक्कमंति, अन्नमन्नं एव वयासी) નામ-ગોત્ર પૂછ્યાં અને તેને હૃદયમા ધારણ કર્યા. ત્યારપછી તે સર્વે એકાતમા ગયા ત્યા જઈને તેમણે પરસ્પર આ પ્રમાણે વાતચીત કરી કે (जस्सणं देवाणुप्पिया! चित्ते सारही दंसणं कंखेइ, दंसणं पत्थेइ, दंसणं पीहेइ, दंसणं अभिलसेइ) હે દેવાનુપ્રિયો! ચિત્રસારથિ જેઓશ્રીના દર્શનોની ઇચ્છા ધરાવે છે, જેઓશ્રીના દર્શનો માટે તેઓ પ્રાર્થના કરે છે, જેઓશ્રીના દર્શનોની તે સ્પૃહા ધરાવે છે, જેઓશ્રીના દર્શનોની

यावद्हृदयो भवति स खलु एष केशीकुमारश्रमणः पूर्वानुपूर्वी चरन् ग्रामानुग्रामं द्रवन् इहागतः, इहसंप्राप्तः, इह समवसृतः, इहैव श्वेतविकाया नगर्या बहिर्मृगवने उद्याने यथाप्रतिरूपं यावद् विहरति, तद् गच्छामः खलु देवानुप्रियाः ! चित्रस्य सारथेः एतमर्थं प्रियं निवेदयामः, प्रियं तस्य भवतु। अन्योन्यस्यान्तिके एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति, यत्रैव श्वेतविका नगरी यत्रैव चित्रस्य

है. (जस्स णं णामगोयस्स वि. सवणयाए हट्ठतुट्ठ जाव हियए भवइ) तथा जिनके नामगोत्र के भी श्रवण से जो हृष्टतुष्ट यावत् हृदयवाला होता है (से णं एस केसीकुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए) वे ये केशीकुमारश्रमण तीर्थंकर परम्परा के अनुसार विचरते हुए एवं एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विहार करते हुए यहां आये हैं। (इह संपत्ते) यहां प्राप्त हुए हैं। (इहसमोसढे) यहां समवसृत हुए हैं। (इहेव सेयवियाए णयरीए बहिया उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरइ) इसी श्वेतांविका नगरी के बाहर उद्यान में यथाप्रतिरूप अवग्रह प्राप्तकर यावत् विराजते हैं। (तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया। चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं पियं निवेदेमो पियं से भवउ) तो हे देवानुप्रियों ! चले और चित्र सारथि के इस प्रिय अर्थ का उनसे निवेदन करें, हमारा यह निवेदन उन्हें बडा ही प्रिय लगेगा (अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठ पडिसुणेंति)

ने અભિલાષા રાખે છે. (जस्स णं णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठतुट्ठ जाव हियए भवइ) તેમજ જેઓશ્રીના નામ ગોત્રના શ્રવણથી જ જે હૃષ્ટ-તુષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળા થઇ જાય છે. (से णं एस केसीकुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए) તેઓશ્રી કેશીકુમાર શ્રમણ તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિચરણ કરતા અને એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરતા અહીં પધાર્યા છે. (इह संपत्ते) અહીં પ્રાપ્ત થયા છે (इह समोसढे) અહી સમવસૃત થયા છે. (इहेव सेयवियाए णयरीए बहिया उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरइ) આ શ્વેતાંબિકા નગરીની બહારના ઉદ્યાનમાં યથાપ્રતિરૂપ અવગ્રહ પ્રાપ્ત કરીને યાવત્ વિરાજે છે. (तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं पियं निवेदेमो पियं से भवउ) ત્યારે હે દેવાનુપ્રિયો ! આપણે ચિત્ર સારથિની પાસે જઈને આ પ્રિય સમાચાર વિષે તેમને ખબર આપીએ. અમારી આ ખબર તેમને પ્રિય લાગશે. (अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति) આ પ્રમાણે તેઓ બધા પરસ્પર એક બીજાની વાતને એકમત થઈને સ્વીકારી લે છે. ત્યાર પછી (जेणेव

सारथेर्गृहं यत्रैव चित्रः सारथिस्तत्रैवोपागच्छन्ति चित्रं सारथिं करतल-यावद् वर्द्धयन्ति, एवमवादिषुः-यस्य खलु देवानुप्रियाः दर्शनं काङ्क्षन्ति, यावत्-अभिलषन्ति, यस्य खलु नामगोत्रस्यापि श्रवणतया हृष्ट यावद् भवन्ति स खल्वयं केशीकुमारश्रमणः पूर्वानुपूर्व्या चरन् ग्रामानुग्रामं द्रवन् इहैव उद्याने मृगवने समवसृतः यावद् विहरति ॥ सू० १२० ॥

टीका-'तएणं सेयवियाए' इत्यादि। व्याख्या निगदसिद्धा ॥सू. १२०॥

इस प्रकार की बातचीत को वे स्वीकार कर लेते है। बाद में (जेणेव सेयंविया णयरी, जेणेव चित्तस्स सारहिस्स गिहे जेणेव चित्ते सारही तेणेव उवागच्छंति) वे जहां श्वेतांबिका नगरी थी और उसमें भी जहां चित्र सारथि का गृह था एवं वहां पर भी जहां चित्र सारथी था वहां पर आये (चित्तं सारहिं करयल जाव बद्धावेंति, एवं वयासी) वहां आकर के उन्होंने चित्र सारथि के प्रति बडे विनय के साथ अपने दोनों हाथों की अंजलि बनाकर उसे मस्तक पर से घुमाते हुए नमस्कार किया. तथा जयविजय शब्दों का उच्चारण कर उसे बधाई दी और फिर ऐसा कहा-'जस्स णं देवाणुप्पिया ! दंसणं कंखंति, जाव अभिलसंति, जस्स णं णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठ जाव भवंति, से णं अयं केसीकुमारसमणे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहेव मियवणे उज्जाणे समोसढे जाव विहरइ) हे देवानुप्रिय! आप जिसके दर्शन की चाहना रखते हैं, यावत् अभिलाषा रखते है तथा जिसके नामगोत्र के भी श्रवण से भी आप हृष्टतुष्ट यावत् हृदय वाले हो जाते है वे ये केशीकुमारश्रमण पूर्वानुपूर्वी से विचरते हुए, एक ग्राम से

सेयंविया णयरी, जेणेव चित्तस्स सारहिस्स गिहे जेणेव चित्ते सारही तेणेव उवागच्छंति) તેઓ જ્યાં શ્વેતાંબિકા નગરી હતી અને તેમાં પણ જ્યાં ચિત્રસારથી હતો ત્યાં ગયા (चित्तं सारहिं करयल जाव बद्धावेंति, एवं वयासी) ત્યાં પહોંચીને તેમણે ચિત્રસારથિને બહુજ નમ્રપણે બન્ને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તક પર ફેરવીને નમસ્કાર કર્યા તેમજ જયવિજય શબ્દોનું ઉચ્ચારણ કરીને તેને વધામણી આપી. અને પછી તેને આ પ્રમાણે કહ્યું. (जस्सणं देवाणुप्पिया ! दंसणं कंखंति. जाव अभिलसंति, जस्स णं णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठ जाव भवंति, से णं अयं केसीकुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहेव मियवणे उज्जाणे समोसढे जाव विहरइ') હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જેઓશ્રીના દર્શનોની ઇચ્છા ધરાવતા હતા, યાવત્ અભિલાષા રાખતા હતા તેમજ જેઓશ્રીના નામગોત્રના શ્રવણ માત્રથી જ તમે હૃષ્ટ-તુષ્ટ યાવત હૃદયવાળા

मूलम्--तएणं से चित्ते सारही तेसिं उज्जाणपालगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव आसणाओ अब्भुट्ठेइ पायपीढाओ पच्चो-रुहइ, पाउयाओ ओमुयइ, एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, अंजलिमउलियग्गहत्थे-केसिकुमारसमणाभिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिकट्टु एवं वयासी-नमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमोऽत्थुणं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे तत्थगए इहगयं तिकट्टु वंदइ नमंसइ, ते उज्जाणपालए विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ पडिविसज्जेइ। कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, एवं वयासी -खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह। तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जाव खिप्पामेव सच्छत्त सज्झय जाव उवट्ठवित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति तएणं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सरीरे जेणेव चाउग्घंटे जाव दुरूहित्ता सकोरंट० महया भडचडगर० तं चेव जाव पज्जुवासइ धम्मकहा ।सू, १२१।

दूसरे ग्राम में विहार करते हुए यहां मृगवन नामके उद्यान में आये हुए हैं यावत् तप और संयम से आत्माको भावित करते हुए ठहरे हैं।

इसकी व्याख्या मूलार्थ के जैसी ही है ॥ १२० ॥

થઇ જાઓ છો તેઓશ્રી કેશીકુમારશ્રમણ પૂર્વાનુપૂર્વીથી વિચરણ કરતાં એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરતાં અહીં મૃગવન નામના ઉદ્યાનમાં પધારેલા છે. યાવત્ તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા વિરાજે છે.

આ સૂત્રની વ્યાખ્યા મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે. ॥૧૨૦॥

छाया--ततः खलु स चित्रः सारथिः तेषामुद्यानपालकानामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट तुष्ट यावद् आसनाद् अभ्युत्तिष्ठति प्रापादपीठात्प्रत्यवरोहति पादुके अवमुञ्चति एकशाटिकमुत्तरासङ्ग करोति, अञ्जलिमुकुलिताग्रहस्तः केशिकुमारश्रमणाभिमुखः सप्ताष्टपदानि अनुगच्छति करतलपरिगृहीतं शिरआवर्त्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-नमोऽस्तु खलु

'तएण से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं से चित्ते सारही तेसिं उज्जाणपालगाणं अंतिए एयमट्ठं) इसके बाद वह चित्र सारथि उन उद्यानपालको के पास से इस अर्थ को-वृत्तान्त को (सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव आसणाओ अब्भुट्ठेइ) सुनकर एवं उसे हृदय में धारण कर बहुत अधिक हृष्ट एवं संतुष्ट चित्त हुआ यावत् वह अपने आसन से उठा. (पायपीढाओ पच्चोरुहइ) और पादपीठ-(चरण रखने का आसन) के उपर पग रखकर वह नीचे उतरा (पाउयाओ ओमुयइ) पादुकाएं उसने उतार दी (एगसाडियं उत्तरासगं करेइ) एकशाटिक उतरासंग किया। (अंजलिमउलियग्गहत्थे केसिकुमारसमणाभिहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ) फिर उसने अपने दोनों हाथों को जोडकर अंजलिरूप में परिवर्तित किया और केशीकुमारश्रमण के अभिमुख होकर अर्थात् जिस ओर केशीकुमार श्रमण विराजमान थे उस ओर सात आठ पग तक आगे जाकर (करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी) वहां जाकर उसने अपने दोनों हाथों को बडे विनय के साथ

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं से चित्ते सारही तेसिं उज्जाणपालगाणं अंतिए एयमट्ठं) त्यार पछी ते चित्रसारथि ते उद्यानपालकोना मुखथी आ अर्थने वृत्तातने (सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव आसणाओ अब्भुट्ठेइ) सांभळीने अने तेने हृदयमां धारण करीने खूबज हृष्ट अने संतुष्ट चित्तवाळो थयो यावत् ते पोताना आसन परथी उभो थयो. (पायपीढाओ पच्चोरुहइ) अने पादपीठ(पग मूकवानुं आसन विशेष)पर पग मूकीने नीचे उतर्यो (पाउयाओ ओमुयइ) अने पगमां पहेरेली पावडीओ उतारी दीधी (एगसाडियं उत्तरासगं करेइ) एकशाटिक उत्तरासंग कर्यो (अंजलिमउलियग्गहत्थे केसिकुमार समणाभिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ) त्यार पछी तेणे पोताना बन्ने हाथो जोडीने अंजलि बनावी अने केशीकुमारश्रमणनी सामे मुख करीने एटले के जे दिशा तरफ केशीकुमार श्रमण विराजमान हता ते तरफ सात आठ पग सुधी सामे गया. (करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी)

अर्हद्भ्यो यावत्-सम्प्राप्तेभ्यः, नमोऽस्तु खलु केशिने कुमारश्रमणाय मम धर्माचार्याय धर्मोपदेशकाय, वन्दे खलु भगवन्तं तत्रगतमिहगतः पश्यतु मे तत्रगत इहगतम्. इति कृत्वा वन्दते नमस्यति, तान् उद्यानपालकान् विपुलेन वस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्करोति संमानयति विपुलं जीविताई प्रीतिदानं ददाति प्रतिविसर्जयति। कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, एवमवादीत्-

अंजलि बनाई और उसे मस्तक पर से तीन बार घुमाकर इस प्रकार पाठ पढने लगा-(नमोऽत्थुणं अरहताणं जाव संपत्ताणं, नमोत्थुणं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए) अर्हन्त भगवन्तों को नमस्कार हो यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए हैं. मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक केशीकुमारश्रमण को नमस्कार हो. यहां रहा हुआ मैं वहां पर मृगवनोद्यान में विराजमान आपको नमस्कार करता हू। (पासउ मे तत्थगए इहगयं त्तिकट्टु वंदइ नमंसइ) वहां रहे हुए वे भगवान् यहां रहे हुए मुझे देखें इस प्रकार कहकर उसने वन्दना की, नमस्कार किया, (ते उज्जाणपालए विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ) इस तरह परोक्षविनय करके फिर उसने उन उद्यानपालकों का विपुल वस्त्र गंध, माला एवं अलंकारों से सत्कार किया (सम्माणेइ) सन्मान किया.(विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ) और अन्त में उनके लिये विपुल मात्रा में जीविकायोग्य प्रीतिदान दिया (पडिविसज्जेइ) फिर

त्यां जईने तेणे पोताना बन्ने हाथोनी खूब नम्रपणे अंजलि बनावी ,अने तेने मस्तक पर त्रण वखत फेरवीने आ प्रमाणे ते पाठनुं उच्चारण करवा लाग्यो—(नमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमोत्थुणं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए) अर्हंत भगवंतोने मारा नमस्कार छे के जेओश्रीओ यावत् सिद्धिगति नामकस्थानने प्राप्त कर्युं छे. मारा धर्माचार्य धर्मोपदेशक केशीकुमारश्रमणने नमस्कार छे. अहीथी ज हुं त्या मृगवनोद्यानमा विराजमान आपश्रीने नमस्कार करुं छुं. (पासउ मे तत्थगए इहगयं त्तिकट्टु वंदइ नमंसइ) त्यां विराजमान ते भगवान अहीं विद्यमान मने जुए आ प्रमाणे कहीने तेणे वंदना करी नमस्कार कर्या. (ते उज्जाणपालए विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ) आ प्रमाणे परोक्ष विनय करीने तेणे ते उद्यानपालकोनो विपुल वस्त्र, गंध, माळाओ अने अलंकारो वडे सत्कार कर्यो. (सम्माणेइ) सन्मान कर्युं. (विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ) अने छेवटे तेमने विपुल मात्रामां जीविका योग्य प्रीतिदान आप्युं. (पडिविसज्जेइ)

क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः! चतुर्घण्टमश्वरथं युक्तमेव उपस्थापयत यावत् प्रत्यर्पयत। ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा यावत् क्षिप्रमेव सच्छत्र सध्वजं यावत् उपस्थापयित्वा तामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयन्ति। ततः खलु स चित्रः सारथिः कौटुम्बिकपुरुषाणामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्ट यावद् हृदयः स्नातः कृतबलिकर्मा यावत्-शरीरः यत्रैव चातुर्घण्टो यावद् दूरुह्य सकोरण्ट० महता भटचटकर० तदेव यावत् पर्युपास्ते धर्मकथा ॥सू० १२१॥

विसर्जित कर दिया (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) तदनन्तर उसने अपने आज्ञाकारी सेवकों को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उनसे ऐसा कहा (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणेह) हे देवानुप्रियो! तुम लोग शीघ्र ही चार घंटों वाले अश्वरथ को घोडाओं से युक्त करके उपस्थित करो, यावत् फिर हमें इसकी खबर दो (तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जाव खिप्पामेव सच्छत्त सज्झयं जाव उवट्ठवित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति) इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषोंने यावत् बहुत ही शीघ्र छत्र एवं ध्वजा से युक्त करके उस चार घंटोंवाले अश्वरथ को घोडाओं से युक्त कर उपस्थित कर दिया और पीछे इस खबर को उसके पास दिया. (तएणं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सरीरे चाउग्घंटे आसरहे जाव दुरूहित्ता सकोरंट० महया भडचडगर० तं चेव जाव पज्जुवासइ धम्मकहा) तब उस चित्र सारथिने कौटुम्बिक

ત્યાર પછી તેમને (વિસર્જિત કર્યા (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) ત્યાર બાદ તેણે પોતાના આજ્ઞાકારી સેવકોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું. (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंट आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह) હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો સત્વરે ચાર ઘંટોવાળા અશ્વરથને ઘોડાઓથી સજ્જ કરીને અહીં ઉપસ્થિત કરો, યાવત્ પછી અમને ખબર આપો. (तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव खिप्पामेव सच्छत्त सज्झयं जाव उवट्ठवित्ता तामाणत्तियं पच्चप्पिणंति) ત્યાર પછી તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ યાવત શીઘ્ર છત્ર અને ધ્વજાથી સુસજ્જિત કરીને તે ચાર ઘંટાઓવાળા અશ્વરથને ઘોડાઓથી યુક્ત કરીને ઉપસ્થિત કર્યો અને તેની ખબર પણ તેની પાસે પહોંચાડી દીધી. (तएणं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सरीरे चाउग्घंटे आसरहे जाव दुरुहित्ता सकोरंट० महया भड चडगर० तं चेव जाव पज्जुवासइ धम्मकहा) તે ચિત્ર સારથિએ કૌટુંબિક પુરૂષોના મુખથી અશ્વરથ તૈયાર થઈ જવાની

'तएणं से चित्ते' इत्यादि।—व्याख्या निगदसिद्धा। नवरम्-चित्र सारथिगमनवर्णनमेकादशाधिकशततमसूत्रे, विलोकनीयम् ॥ १२१ ॥

मूलम्—तएणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्टतुट्ठ० तहेव वयासी—एवं खलु भंते! अम्हं पएसी राया अधम्मिए जाव सयस्स वि णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्ति पवत्तेइ, तं जइणं देवाणुप्पिया! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जा बहुगुणतरं खलु होज्जा पएसिस्स रण्णो तेसिंगं च बहूणं दुपय चउप्पयमियपसुपक्खिसरिसावाणं, तेसिं च बहूणं समणमाहण-

पुरुषों के मुख से अश्वरथ के तैयार हो जाने की बात सुनकर और उसे हृदय में धारण कर हृष्टतुष्ट यावत् हृदय होते हुए स्नान किया, बलिकर्म-अर्थात्-काकआदि पक्षियों के लिये अन्न का भाग दिया यावत् बहुमूल्य अल्पभारवाले आभूषणों से अलंकृत शरीर होकर जहा चार घटों-वाला अश्वरथ था वहां आया. यावत उस पर वह बैठ गया. उसके बैठते ही छत्रधारीने उस पर कोरण्टपुष्पों की माला से युक्त छत्र तान दिया, विशाल भटों की भीड आकर उसके दोनों ओर उपस्थित हो गई. वहां पहिले का अवशिष्ट ओर सब कथन करना चाहिये. यावत उसने केशिकुमारश्रमण की पर्युपासना को. केशिकुमारश्रमणने धर्मोपदेश दिया।

टीकार्थ—इसकी व्याख्या स्पष्ट है। नवरं-चित्रसारथी के गमन का वर्णन १११वे सूत्र में देखना चाहिये ॥ सू. १२१ ॥

વાત સાભળીને અને હૃદયમા ધારણ કરીને હૃષ્ટ-તુષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળો થઈને સ્નાન કર્યુ. બલિકર્મ એટલે કે કાગડા વગેરે પક્ષીઓને માટે અન્ન ભાગ અર્પિત કર્યો. યાવત્ બહુમૂલ્ય અલ્પભારવાળા આભૂષણોથી પોતાના શરીરને અલંકૃત કર્યું અને ત્યાર પછી તે જ્યાં ચારઘંટોવાળો અશ્વરથ હતો ત્યા આવ્યો. યાવત્ તેમાં બેસી ગયો. તે બેઠો ત્યારે છત્રધારીઓએ કોરંટ પુષ્પોની માળાથી યુકત છત્ર તેની ઉપર તાણ્યું. તે વખતે વિશાળ યોદ્ધાઓની ભીડ તેની આસપાસ આવીને એકઠી થઈ ગઈ. અહીં પહેલાં ન' જેમજ બધું કથન સમજવુ જોઈએ યાવત્ તેને કેશિકુમારશ્રમણની પર્યુ-પાસના કરી, કેશિકુમારશ્રમણે ધર્મોપદેશ આપ્યો.

ટીકાર્થ—આ સૂત્રનો સ્પષ્ટ જ નવરં-ચિત્રસારથીનું ગમનનુ વર્ણન ૧૧૧ મા સૂત્ર પ્રમાણે સમજવું જોઈએ ॥ ૧૨૧ ॥

भिक्खुयाणं तं जइ णं देवाणुप्पिया! पएसिस्स बहुगुणत्तरं होज्जा, सयस्स वि णं जणवयस्स ॥ सू. १२२ ॥

छाया--ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनः कुमारश्रमणस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्ट० तथैव एवमवादीत्-एवं खलु भदन्त! अस्माकं प्रदेशी राजा अधार्मिकः यावत् स्वकस्यापि खलु जनपदस्य नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रवर्त्तयति तद् यदि खलु देवानुप्रिय! प्रदेशिने राज्ञे धर्ममाख्यायात् (तदा) बहुगुणतरं खलु भवेत्, प्रदेशिनो राज्ञस्तेषां च बहूनां द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणां, तेषां च बहूनां श्रमणमाहनभिक्षुका-

'तए णं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ--(तए णं) इसके बाद (से चित्ते सारही) उस चित्र सारथिने (केसिस्स कुमारसमणस्स) केशीकुमारश्रमण के (अंतिए) पास धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ तहेव एवं वयासी) धर्मका उपदेश सुनकर और उसे हृदय में धारण कर हृष्टतुष्ट चित्त वाला हुआ एवं आनंद से विभोर होकर प्रीतिमनवाला हुआ, इस तरह परमसौमनस्यित होकर वह बोला (एवं खलु भंते! अम्हं पएसी राया अहम्मिए जाव सयस्स वि णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ) हे भदन्त! हमारा प्रदेशी राजा अधार्मिक है यावत् वह अपने देशके प्राप्त कर से भरणपोषणरूप व्यवहार को ठीक तरह से नहीं चलता है- (तं जइ णं देवाणुप्पिया! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जा बहुगुणतरं होज्जा, पएसिस्स रण्णो तेसिं च बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसवाणं) तो

'तए णं से चित्ते सारही' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(तए णं) ત્યાર પછી (से चित्ते सारही) તે ચિત્ર સારથીએ (केसिस्स कुमारसमणस्स) કેશીકુમાર શ્રમણની (अंतिए) પાસેથી (धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० तहेव एवं वयासी) ધર્મ વિષે ઉપદેશ સાંભળીને અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને હૃષ્ટ-તુષ્ટ ચિત્તવાળો થયો અને આનંદિત થઈને પ્રીતિયુક્તમનવાળો થયો. આ પ્રમાણે પરમસૌમનસ્યિત થઈને તે બોલ્યો. (एवं खलु भंते! अम्हं पएसी राया अहम्मिए जाव सयस्स वि णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ) હે ભદંત! અમારો પ્રદેશી રાજા અધાર્મિક છે યાવત્ તે પોતાના દેશના લોકો પાસેથી કર મેળવીને પણ પ્રજાનું ભરણ-પોષણ-તેમજ રક્ષણ કરતો નથી. (तं जइ णं देवाणुप्पिया! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जा बहुगुणतरं होज्जा, पएसिस्स रण्णो तेसिं च बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसवाणं)

णाम् । तद् यदि खलु देवानुप्रिय ! प्रदेशिनो बहुगुणतरं भवेत्, स्वकस्यापि च खलु जनपदस्य ॥ सू० १२२ ॥

टीका—'तए णं से चित्ते' इत्यादि-ततः=तदनन्तरं खलु स चित्रः सारथिः केशिनः कुमारश्रमणस्य अन्तिके=समीपे धर्मं जिनोक्तं श्रुत्वा=कर्णगोचरीकृत्य निशम्य=हृद्यवधार्य हृष्टतुष्ट तथैव=पूर्ववदेव हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितः हर्षवशविसर्पद्हृदयः, इति सग्राह्यम् । अर्थस्तु पूर्वं गतः । एवमवादीत्-किमवादीत् ? इत्याह-एवं खलु यत् हे भदन्त अस्माकं प्रदेशी राजा अधार्मिकः यावत्-यावत्पदेन-अधर्मिष्ठादीनि सर्वाणि-विशेषणानि एकशततमसूत्रोक्तानि संग्राह्याणि, एषामर्थोऽपि तत्रैव विलो-

---

यदि आप हे देवानुप्रिय ! उस प्रदेशी राजा को जिनप्ररूपित धर्म का उपदेश देवें तो वह उस प्रदेशी राजा के लिये और परलोक में बहुत गुणकारी होगा, तथा अनेक द्विपद, चतुष्पद, मृग, पशु, पक्षी एवं सरीसृप-सर्प आदिकों का हितावह होगा (तेसिं च बहूणं समणमाहणभिक्खुयाणं) और उन अनेक श्रमण माहण, भिक्षुकों के लिये बहुत ही अधिक लाभदायक होगा (तं जइ णं देवाणुप्पिया ! पएसिस्स बहुगुणतरं होज्जा, सयस्स वि य णं जणवयस्स) यदि वह धर्मोपदेश प्रदेशी राजा का हितकारक हो जाता है तो उसके जनपद-देश का इससे बडा भला होगा।

टीकार्थ इसका स्पष्ट है। 'हट्टतुट्ठ तहेव एव वयासी' में 'तथैव' पद से 'हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः, प्रीतिमनाः, परमसौमनस्यितः, हर्षवशविसर्पद्धृदयः' इस पाठ का ग्रहण हुआ है, इन पदों का अर्थ पहिले लिखा जा चुका है। 'अहम्मिए जाव' में आगत पद से' 'अधर्मिष्ठ' आदिक विशेषणों का ग्रहण

જો આપ દેવાનુપ્રિય તે પ્રદેશી રાજાને જિન પ્રરૂપિત ધર્મનો ઉપદેશ આપો તો તે પ્રદેશી રાજાને આ લોક અને પરલોક અતીવ ગુણકારી થાય અને ઘણાં દ્વિપદ, ચતુષ્પદ, મૃગ, પશુ પક્ષી અને સરીસૃપ એટલે કે સાપ વગેરેના માટે પણ હિતાવહ થાય. (तेसिं च बहूणं समणमाहणभिक्खुयाणं) અને તે ઘણા શ્રમણ માહણ ભિક્ષુકોના માટે પણ અતીવ હિતાવહ કાર્ય થાય. (तं जइ णं देवाणुप्पिया ! पएसिस्स बहुगुणतरं होज्जा, सयस्स वि य णं जणवयस्स) જો આપનો ધર્મોપદેશ પ્રદેશી રાજા પોતાના માટે હિતકર થાય તો તેનું પોતાનું અને તેના જનપદ-દેશનું પણ તેનાથી ઘણું કલ્યાણ થાય તેમ છે.

આ સૂત્રનો ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે "हट्ठ तुट्ठ तहेव वयासी 'मा' तथैव" પદથી 'हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितः, हर्षवशविसर्पद्धृदयः' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ સર્વ પદોના અર્થ પહેલા સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યા છે. 'अहम्मिए जाव' મા આવેલ યાવત્ પદથી 'अधर्मिष्ठः'

कनीयः, स स्वकस्यापि जनपदस्य=देशस्य करभरवृत्तिं-करेण भरः-भरणं-पोषणं, तद्रूपां वृत्तिं=व्यवहारं नो सम्यक् प्रवर्त्तयति, तद् यदि खलु हे देवानुप्रिय! प्रदेशिने राज्ञे भवान् धर्मं जिनप्ररूपितम् आख्यायात्-कथयेत् तदा प्रदेशिनो राज्ञः बहुगुणतरम्-इहलोकपरलोकसफलीकरणलक्षणं दयादानादिरूपं वाऽत्यन्तगुणं भवेत्। तथा बहूनां द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणाम्-तत्र-द्विपदा =दासीदासादयः चतुष्पदाः ये मृगाः=आरण्याः,पशवः =ग्राम्या गोमहिष्यादयः, सरीसृपाः=भुजपरिसर्पाः-गोधादयः उरःपरिसर्पाश्च सर्पादयः, तेषां बहुगुणतरं=पालनरक्षणरूपं भवेत् तथा-श्रमणमाहनभिक्षुकाणाम्-तत्र-श्रमणाः=शाक्यादयः, माहनाः=ब्राह्मणाः, भिक्षुकाः=भिक्षाजीविनः तेषां च बहुगणतरम्=भिक्षालाभरक्षणादिरूपमतिशयगुणं भवेत्। तत् यदि खलु भदन्त! प्रदेशिनो राज्ञो बहुगुणतरं भवेत् तदा तस्य स्वकस्यापि जनपदस्य=देशस्य बहुगुणतरं योगक्षेमलक्षणं भवेदिति ॥ सू० १२२ ॥

हुआ है। ये सब विशेषण १०१ सूत्र में कहे जा चुके है। वहीं पर उनका अर्थ भी लिखदिया है। 'बहुगुणतरम्' का तात्पर्य उस प्रदेशी राजा को इस लोक एवं परलोक को सफल करनेरूप बहुगुण वाला अथवा दयादानादिरूप अत्यन्तगुणवाला होगा। दासीदास आदि द्विपद से, मृगादि चतुष्पद से, ग्राम्य गोमहिष आदि पशुपद से, भुजपरिसर्प गोधादिक, एवं उरःपरिसर्प सर्पादिक, सरीसृप पद से गृहीत हुए है। इन द्विपदादिकों का पालन रक्षणरूप बहुतरगुणवाला वह धर्मोपदेश होगा. शाक्यादिक श्रमण शब्द से ब्राह्मण माहन शब्द से, तथा भिक्षाजीवी भिक्षुक पद से लिये गये है। इन सबके लिये भिक्षालाभ एवं संरक्षणादिरूप अतिशय गुणवाला वह धर्मोपदेश होगा ॥सू.१२२॥

વગેરે વિશેષણોનું ગ્રહણ સમજવું જોઈએ આ બધા વિશેષણો ૧૦૧ મા સૂત્રમા આવેલા છે. એનો અર્થ પણ તે સૂત્રમા જ સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યો છે. 'बहुगुणतरम्' નો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે તે ધર્મોપદેશ તે પ્રદેશી રાજાના માટે આ લોકને તેમજ પરલોકને સફળ બનાવવા રૂપ બહુગુણવાળો થશે અથવા તો દયા દાન વગેરે રૂપ અત્યંત ગુણવાળો થશે. દ્વિપદથી દાસી દાસ વગેરે ચતુષ્પદથી મૃગ વગેરે, પશુપદથી ગ્રામ્ય ગોમહિષ વગેરે, સરિસૃપ પદથી ભુજપરિસર્પ ગોધાદિક અને ઉરઃપરિસર્પ-સર્પાદિકનું 'સરીસૃપા પદથી ગ્રહણ થયું છે આ દ્વિપદ વગેરેના માટે પાલન રક્ષણરૂપ બહુતર ગુણવાળો તે ધર્મોપદેશ થશે શ્રમણ શબ્દથી શાક્ય વગેરે, માહન શબ્દથી બ્રાહ્મણ તેમજ ભિક્ષુમપદથી ભિક્ષાજીવીનું ગ્રહણ કરવામા આવ્યુ છે આ સર્વના માટે સંરક્ષણ તેમજ ભિક્ષા લાભ વગેરેથી અધર્મોપદેશ અતિશય ગુણવાળો થશે. ॥સૂ૦ ૧૨૨॥

मूलम्—तएणं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी-एवं खलु चउहिं ठाणेहि चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा, सवणयाए, तं जहा– आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, नो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छेइ, एएणं ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए। (१) उवस्सयगयं समणं वा तं चेव जाव एएणवि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए। (२) गोयरग्गगयं समणं वा माहणं वा नो जाव पज्जुवासइ, नो विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभइ० नो अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएणं ठाणेणं चित्ता। जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए। (३) जत्थ वि णं समणेणं वा माहणेणं वा सद्धिं अभिसमागच्छइ तत्थवि णं हत्थेण वा वत्थेण वा छत्तेण वा अप्पाणं आवरित्ता चिट्ठइ, नो अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएणवि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं णो लभइ सवणयाए, (४) एएहिं च णं चित्ता ! चउहिं ठाणेहिं जीवे नो लभइ केवलिपन्नत्तं धम्मं सवणयाए। चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए, तं जहा–(१) आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा वंदइ नमंसइ जाव पज्जुवासइ अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएण ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए। एवं [२] उवस्सगयं० [३] गोयरग्गगयं समणं वा जाव पज्जुवासइ, विउलेणं जाव

पडिलाभेइ अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएण वि० (४) जत्थ वि य णं समणेण वा० अभिसमागच्छइ तत्थवि य णं णो हत्थेण वा जाव आवरेत्ता चिट्ठइ, एएणवि ठाणेणं चित्ता! जाव केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए। तुज्झं च णं चित्ता! पएसी राया आरामगयं वा तंचेव सव्वं भाणियव्वं आइल्लएणं गमएणं जाव अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ तं कहं णं चित्ता! पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खिस्सामो? ॥सू०१२३॥

छाया-ततः खलु केशीकुमारश्रमणः चित्रं सारथिम् एवमवादीत्-एवं खलु चतुर्भिः स्थानैः चित्र! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं नो लभते श्रवणतायै, तद्यथा-(१) आरामगतं वा उद्यानगतं वा श्रमणं वा माहनं वा नो अभिगच्छति, नो वन्दते, नो नमस्यति, नो सत्करोति, नो सम्मानयति, नो कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यं पर्युपास्ते, अर्थान् हेतून् प्रश्नान् कारणानि व्याकरणानि पृच्छति

'तए णं से केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ-(तए णं से) इसके बाद (केसीकुमारसमणे) केशीकुमारश्रमणने (चित्तं सारहिं) चित्र सारथि से (एवं वयासी) ऐसा कहा-(एवं खलु चउहिं ठाणेहिं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए) हे चित्र! जीव चार कारणों से केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं सकता है। (तं जहा-आरामगयं वा उज्जाणगयं वा, समणं वा णो अभिगच्छइ, णो वंदइ, णो णमंसइ, णो सक्कारेइ, णो सम्माणेइ, कल्लाण मंगल देवयं चेइयं पज्जुवासेइ) जैसे-आराम में आये हुए या उद्यान में आये हुए श्रमण के वा माहण के

'तए णं से केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थः—(तए णं) त्यार पछी (केसीकुमारसमणे) केशीकुमारश्रमणे (चित्तं सारहिं) चित्रसारथिने (एवं वयासी) आ प्रमाणे कह्युं (एवं खलु चउहिं ठाणेहिं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए) हे चित्र! જીવ ચાર કારણોને લીધે કેવલી પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી (तं जहा-आरामगयं वा उज्जाणगयं वा, समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ, णो वंदइ, णो णमंसइ, णो सक्कारेइ, णो सम्माणेइ, णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासइ) જેમકે આરામમાં પધારેલા કે ઉદ્યાનમાં પધારેલા શ્રમણ કે માહન

एतेन स्थानेन चित्र! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं नो लभते श्रवणतायै। (२) उपाश्रयगतं श्रमणं वा तदेव यावत् एतेनापि स्थानेन चित्र! जीवःकेवलि प्रज्ञप्तं धर्मं नो लभते श्रवणतायै। (३) गोचराग्रगतं श्रमणं वा माहनं वा

सन्मुख सत्कार आदि करने के निमित्त जो नहीं जाता है, मधुर वचनों से जो सुखशातादि प्रश्नपूर्वक उनकी स्तुति नहीं करता है, उनके समक्ष अपने मस्तक को जो नहीं झुकाता है, अभ्युत्थानादि द्वारा जो उनका सत्कार नहीं करता है, वसति आदि के देने से जो उनका सन्मान नहीं करता है, तथा कल्याणस्वरूप, मंगलस्वरूप, धर्मदेवस्वरूप मानकर एवं विशिष्टज्ञान वाला मानकर जो उनकी पर्युपासना नहीं करता है, (नो अट्ठाइं, हेऊइं पसिणाइं, कारणाइं, वागरणाइं पुच्छेइ) अर्थ को–जीवाजीवादिक पदार्थों को, हेतुओं को–अन्यथानुपपत्तिरूप साधनों को, प्रश्नों को, कारणों को, व्याकरणों को, नहीं पूछता है, (एएणं ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए) इस कारण से हे चित्र! जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं सकता है। यह प्रथम कारण है। (१) (उवस्सगयं समणं वा तं चेव, जाव एएणं वि ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए) उपाश्रय में आये हुए श्रमण के सत्कार आदि करने के निमित्त जो उनके समक्ष नहीं जाता है यावत उनसे व्याकरणों को नहीं पूछता है, ऐसा जीव इस द्वितीय कारण से भी केवलि प्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं सकता है। (२)

સામે જે સત્કાર વગેરે કરવા માટે જતો નથી, મધુર વચનોથી સુખશાતાદિ પ્રશ્નપૂર્વક તેમની સ્તુતિ કરતો નથી, તેમની સામે પોતાનું મસ્તક નમ્ર ભાવે નમાવતો નથી, અભ્યુત્થાન વગેરે વડે જે તેમનો સત્કારતો નથી, વસતિ વગેરે આપીને તેમનું સન્માન કરતો નથી તેમજ કલ્યાણ સ્વરૂપ, મંગળસ્વરૂપ, ધર્મદેવસ્વરૂપ માનીને અને વિશિષ્ટજ્ઞાન સંપન્ન માનીને જે તેમની પર્યુપાસના કરતો નથી (नो अट्ठाइं, हेऊइं, पसिणाइं, कारणाइं वागरणाइं, पुच्छेइ) અર્થોને–જીવ અજીવ વગેરે પદાર્થોને, હેતુઓને અન્યથાનુપપત્તિરૂપ સાધનોને, પ્રશ્નોને કારણોને, વ્યાકરણોને પૂછતો નથી, (एएणं ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए) હે ચિત્ર! આ કારણને લીધે જ જીવ કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી. આ પહેલું કારણ છે (૧) (उवस्सयगयं समणं वा तं चेव, जाव एएणं वि ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए) ઉપાશ્રયમાં પધારેલા શ્રમણ કે માહણનો સત્કાર વગેરે કરવા માટે જે તેમની સામે જતો નથી. યાવત્ તેમને વ્યાકરણો વિષે પ્રશ્ન કરતો નથી. આ જાતનો જીવ આ બીજા કારણથી પણ કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું

नो यावत् पर्युपास्ते नो विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन प्रतिलम्भयति० नो अर्थान् यावत् पृच्छति, एतेन स्थानेन चित्र! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं नो लभते श्रवणतायै। (४) यत्रापि खलु श्रमणेन वा माहनेन वा सार्द्धम् अभिसमागच्छति, तत्रापि खलु हस्तेन वा वस्त्रेण वा छत्रेण वा आत्मानमावृत्य तिष्ठति, नो अर्थान् यावत् पृच्छति एतेनापि स्थानेन चित्र! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं नो लभते श्रवणताय, एतैश्च खलु चित्र! चतुर्भिः स्थानैर्जीवः नो लभते केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं श्रवणतायै ॥

(गोयरग्गगयं समणं वा माहणं वा नो जाव पज्जुवासइ, नो विउलेण असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभइ० नो अट्ठाइं जाव पुच्छइ एएण ठाणेणं चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए) गोचरी के लिये–भिक्षा के लिये–गाँव में आये हुए श्रमण के या माहण का जो नमस्कार आदि करने के निमित्त उनके समक्ष नहीं जाता है, यावत् उनकी पर्युपासना नहीं करता है. तथा विपुल अशन, पान, खाद्य, स्वाद्यरूप चार प्रकार के आहार द्वारा जो उन्हें प्रतिलाभित नहीं करता है, और जो अर्थ से लेकर व्याकरण तक उनसे नहीं पूछता है वह जीव हे चित्र! इस तृतीय कारण से भी केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं सकता है (३) (जत्थ वि णं समणेणं वा माहणेणं वा सद्धिं अभिसमागच्छइ, तत्थ वि णं हत्थेण वा वत्थेण वा छत्तेण वा, अप्पाणं आवरित्ता चिट्ठइ, नो अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएण वि० ठाणेण चित्ता! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं णो लभइ सवणयाए एएहिं च णं चित्ता! चउहिं ठाणेहिं जीवे नो लभइ, केवलिपन्नत्तं धम्मं सवणयाए) इसी

श्रवणु करी शकतो नथी. (२) (गोयरग्गगयं समणं वा माहणं वा नो जाव पज्जुवासइ, नो विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभइ० नो अट्ठाइं जाव पुच्छइ एए णं ठाणेण चित्ता! जीवे केवलि पन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए) ગોચરી માટે–ભિક્ષા માટે ગામમાં આવેલા શ્રમણ કે માહણ વગેરેનો સત્કાર વગેરે કરવા માટે જે તેમની સામે જતો નથી, યાવત્ તેમની પર્યુપાસના કરતો નથી, તેમજ વિપુલ અશન, પાન, ખાદ્ય, સ્વાદ્યરૂપ ચાર પ્રકારના આહારવડે જે તેમને પ્રતિલાભિત કરતો નથી અને જે અર્થથી માંડીને વ્યાકરણ સુધીના બધા વિષયોના બાબતમાં તેમને પ્રશ્નો પૂછતો નથી હે ચિત્ર! તે જીવ આ ત્રીજા કારણવડે પણ કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી (૩) (जत्थ वि णं समणेणं वा माहणेणं वा सद्धिं अभिसमागच्छइ, तत्थ वि णं हत्थेण वा वत्थेण वा छत्तेण वा, अप्पाणं आवरित्ता चिट्ठइ, नो अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएण वि ठाणेणं चित्ता! जीवः केवलिपन्नत्तं धम्मं णो लभइ सवणयाए एएहिं च णं चित्ता! चउहिं ठाणेहिं जीवे नो लभइ, केवलिपन्नत्तं धम्मं सवणयाए) આ પ્રમાણે

चतुर्भिः स्थानैः चित्र ! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं लभते श्रवणतायै, तद्यथा (१) आरामगतं वा उद्यानगतं वा श्रमणं वा माहनं वा वन्दते नमस्यति यावत् पर्युपास्ते, अर्थान् यावत् पृच्छति, एतेन स्थानेन चित्र ! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं लभते श्रवणतायै, एवं (५) उपाश्रयगतम् । (३) गोचराग्रगतं श्रा । वा

प्रकार जो श्रमण अथवा माहन के साथ संगत हो जाता है वहा पर भी यह श्रमण अथवा माहन मुझे पहिचान न लें इस हेतु से जो अपने आपको हाथसे या वस्त्र से या छत्र से आवृत कर लेता है एवं उनसे प्रश्नादि कुछभी नहीं पूछता हैं हे चित्र ! इस चतुर्थ कारण से भी जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं पाता है. (४) इस प्रकार हे चित्र ! ये चार कारण हैं कि जिनकी वजह से यह जीव केवली भगवान् द्वारा कहे गये धर्म को सुन नहीं पाता (चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए) हे चित्र! चार कारणो से जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन सकता है (तं जहा- आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा वंदइ, नमंसइ जाव पज्जुवासइ) वे चार कारण इस प्रकार से हैं-आरामगत या उद्यानगत श्रमण को या माहण को जो वंदना करता है नमस्कार करता है, यावत उनकी पर्युपासना करता है (अट्ठाइ जाव पुच्छइ) अर्थों को यावत् पूछता है (एएण ठाणेण चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए) इस कारण को लेकर हे चित्र ! वह जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन सकता (१) है, एवं (उवस्सगयं०) इसी प्रकार जो जीव उपाश्रयों में आये हुए श्रमण

જે શ્રમણ કે માહણની સામે આવી જતાં તે શ્રમણ કે માહણ તેને ઓળખી લે નહિ તે માટે જે પોતાની જાતને હાથવડે, કે વસ્ત્ર વડે કે છત્રવડે છૂપાવી લે છે અને તેમને પ્રશ્ન વગેરે કંઈ પૂછતો નથી હે ચિત્ર ! આ ચોથા કારણથી પણ જીવ કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી.(૪) આ પ્રમાણે હે ચિત્ર! આ ચાર કારણોને લીધે જ જીવ કેવલીભગવાન વડે કહેલા ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી. (चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए) હેચિત્ર! ચાર કારણોથી જીવ કેવલિ-પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકે છે. (तं जहा--आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा, वंदइ, नमंसइ जाव पज्जुवासइ) તે ચાર કારણો આ પ્રમાણે છે-આરામમાં પધારેલા કે ઉદ્યાનમાં પધારેલા શ્રમણને કે માહણને જે વંદન કરે છે નમસ્કાર કરે છે, યાવત તેમની પર્યુપાસના કરે છે. (अट्ठाइं जाव पुच्छइ) અર્થોને યાવત્ પૂછે છે. (एएण ठाणेण चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए) આ કારણને લીધે હે ચિત્ર ! તે જીવ કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત

यावत् पर्युपास्ते, विपुलेन यावत् प्रतिलम्भयति. अर्थान यावत् पृच्छति, एतेनापि०, (४) यत्रापि च खलु श्रमणेन वा० अभिसमागच्छति तत्रापि च खलु नो हस्तेन वा यावत् आवृत्य तिष्ठति, एतेनापि स्थानेन चित्र ! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं लभते श्रवणतायै, त्वं च खलु चित्र ! प्रदेशी राजा आरामगत वा तदेव सर्वं भणितव्यम् आदिमेन गमकेन यावद् आत्मानमावृत्य तिष्ठति, तत्कथं खलु चित्र ! प्रदेशिने राज्ञे धर्ममाख्यास्यामः ? ॥सू०१२३॥

से या माहण से उनको वन्दना करता हुआ, नमस्कार करता हुआ, पर्युपासना करता हुआ अर्थो को यावत् पूछता है, ऐसा जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन सकता है. (२)(गोयरग्गगयं समणं वा जाव पज्जुवासइ, विउलेणं जाव पडिलाभेइ, अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएण वि०) इसी प्रकार जो जीव गोचरीगतश्रमण की या माहण की यावत् पर्युपासना करता है, विपुल आहार से उन्हे प्रतिलाभित करता है. उनसे अर्थों को यावत् पूछता है– वह जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन सकता है, (३) (जत्थ वि य णं समणेण वा० अभिसमागच्छइ, तत्थ वि य ण णो हत्थेण वा जाव आवरेत्ता चिट्ठइ) जहां पर भी श्रमण या माहण के साथ संगत होता है वहां पर जो जीव अपने आप को हाथ से यावत् आवृत्त छुपाता नहीं है ऐसा वह जीव इस चतुर्थ कारण को लेकर केवलिप्रज्ञप्त जिनधर्म का श्रवण कर सकता है (४) (तुज्झं च णं चित्ता ! पएसी राया आरामगयं वा तं चेव सव्वं भाणियव्वं आइल्लएणं गमएणं जाव अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ तं कहं णं चित्ता !

धर्मनुं श्रवण करी शके छे.(१) एज प्रमाणे (उवस्सयगय०) आ प्रमाणे जे जीव उपाश्रयोमा आवेला श्रमणोने के माहनोने वन्दन करतो, नमस्कार करतो, पर्युपासना करतो, अर्थोने यावत् पूछे छे, एवो जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्मनुं श्रवण करी शके छे.(२)गोयरग्गगयं समणं वा जाव पज्जुवासइ, विउलेणं जाव पडिलाभेइ, अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएण वि.) आ प्रमाणे जे जीव गोचरी माटे नीकळेला श्रमणनी के माहणनी यावत् प्रयुपासना करे छे विपुल आहारथी तेमने प्रतिलाभित करे छे तेमने अर्थो विषे यावत पूछे छे ते जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्मनु श्रवण करे छे. (३) (जत्थ वि य णं समणेण वा अभिसमागच्छइ तत्थ वि य णं णो हत्थेण वा जाव आवरेत्ता चिट्ठइ) श्रमण के महाण गमे त्या मळे जे जीव तेओश्रीने जोईने पोतानी जातने पोताना हाथो वडे यावत् आवृत करतो नथी एवो ते जीव आ चोथा कारणने लीधे केवलि प्रज्ञप्त जिनधर्मनुं श्रवण करी शके छे (४) (तुज्झं च णं चित्ता ! पएसी राया आरामगयं वा तं चेव सव्वं भाणियव्वं आइल्लएणं गमएणं जाव

टीका—'तएणं केसी' इत्यादि—

ततः खलु केशीकुमारश्रमणः चित्रं सारथिम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=उक्तवान्—हे चित्र ! एवं खलु त्वं विजानीहि, यत् चतुर्भिःस्थानैः =कारणैः जीवःकेवलिप्रज्ञप्तं=तीर्थकृदुपदिष्टं धर्मं श्रवणतायै=श्रोतुं नो लभते= नो प्राप्नोति, तद्यथा—आरामगतम्—आरामः=विविधपुष्पजात्युपशोभितः, तत्र गतं=प्राप्तं वा, उद्यानगतम्—उद्यानं=पुष्पफलोपेतवृक्षोपशोभितं बहुजनसेव्यम् उद्यानिकास्थानं=तत्र गतं=प्राप्तं वा श्रमणं साधुं वा माहनं=व्रतधारितं श्रावकं वा नो अभिगच्छति=सत्काराद्यर्थं नो अभिमुखं याति, नो वन्दते=

पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खिस्सामो) हे चित्र ! तुम्हारा प्रदेशीराजा आराम आदिगत श्रमण के या माहण के न सन्मुख आता है यावत् न उनकी पर्युपासना करता है, इत्यादि प्रथम गम से लेकर वह चौथे गम तक युक्त बना हुआ है तो फिर मैं उसके लिये किस प्रकार से केवलिप्रज्ञप्त धर्म का उपदेश दूं।

टीकार्थ—केशीकुमारश्रमणने चित्र सारथीसे जो कुछ कहा है वह इस सूत्र द्वारा प्रकट किया गया है—इसमें यह समझाया गया है कि कौन जीव किन २ कारणों से केवलिप्रज्ञप्त धर्म सुन सकता है और कौन जीव किन २ हीं कारणों से उसे नहीं सुन सकता है. केवलिप्रज्ञप्त धर्म की अप्राप्ति में प्रथम कारण यह है कि श्रमण या माहण—१२ व्रतों का पालनकर्ता—गृहस्थ जब किसी उद्यान में—विविध पुष्पों से या फलों से युक्त वृक्षों से शोभित ऐसे अनेकजनसेव्य बगीचे में या आराम में—विविध प्रकार की

अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ तं कहं णं चित्ता ! पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खिस्सामो) હે ચિત્ર ! તમારા પ્રદેશી રાજા આરામ કે ઉદ્યાનમાં આવેલા શ્રમણ કે માહણની સામે સત્કારવા જતો નથી યાવત્ તેમની પર્યુપાસના પણ કરતો નથી અને આ પ્રમાણે તે પ્રથમ ગમથી માંડીને ચોથા ગમથી યુકત બનેલો છે તો પછી હું તેને કેવલિપ્રજ્ઞપ્તધર્મનો ઉપદેશ કેવી રીતે આપું ?

ટીકાર્થ—કેશીકુમાર શ્રમણે ચિત્રસારથીને જે કંઈ કહ્યુ છે તે આ સૂત્ર વડે સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યું છે. આ સૂત્રવડે આ પ્રમાણે સમજાવવામાં આવ્યું છે કે કયો જીવ શા શા કારણોને લીધે કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનુ શ્રવણ કરી શકે છે અને કયો જીવ શા શા કારણોથી તેનું શ્રવણ કરી શકતો નથી. કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મની અપ્રાપ્તિમાં પહેલુ કારણ એ બતાવવામાં આવ્યુ છે કે શ્રમણ કે માહણ—૧૨ વ્રતોનુ પાલન કરનાર ગૃહસ્થ—જ્યારે ગમે તે ઉદ્યાનમાં—વિવિધ પુષ્પોથી કે ફળોથી યુકત વૃક્ષોથી શોભિત અનેક જનસેવ્ય બગીચામાં કે આરામમાં—અનેક જાતની પુષ્પ જાતિઓથી યુકત

मधुरवचनैः सुखशातादिप्रश्नपूर्वकं नो स्तौति, नो नमस्यति=नतमस्तको न भवति, नो सत्कारयति=अभ्युत्थादिना, नो सम्मानयति=वसत्यादिप्रदानेन, 'कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यम्' तत्र-कल्याणं=कल्याणस्वरूपम्, मङ्गलं=मङ्गलस्वरूपम्, दैवतं=धर्मदेवस्वरूपम्, चैत्यं-चितिः=विशिष्टज्ञानं, तयायुक्तं विशिष्टज्ञानवन्तं मत्वा नो पर्युपास्ते=नो सेवते. अर्थान् हेतून् प्रश्नान् कारणानि व्याकरणानि नो पृच्छति। तत्र-अर्थान् जीवाजीवादिपदार्थान्, हेतून्=अन्यथानुपपत्तिरूपान्, जीवा देवादिगतिं कथं प्राप्नुवन्ति-इति स्वरूपान्, आत्मना सह कर्मणः कथं सम्बन्धो जायते? इति रूपान् वा, प्रश्नान्=संशयापनोदार्थं जीवाजीवादिस्वरूपप्रच्छनविषयान्, कारणानि='जीवस्य ज्ञानादित्रयं केन कारणेनोत्पद्यते?' इत्यादिरूपाणि, यद्वा-'चातुर्गतिलक्षणसंसारभ्रमणं

पुष्पजाति से युक्त स्थान में आया हुआ हो, तब उस समय जो जीव उनकी सत्कृति निमित्त उनके सामने नहीं जाता है, मधुर वचनों से उनकी सुखशाता नहीं पूछता है, उनकी स्तुति नहीं करता है, उनके पास नतमस्तक नहीं होता है, अभ्युत्थान आदि क्रिया से उनका सत्कार नहीं करता है, वसति आदि प्रदान द्वारा कल्याणस्वरूप, मंगलस्वरूप, धर्मदेवस्वरूप, एवं विशिष्ट ज्ञानयुक्त उन्हें मानकर जो उनकी सेवा नहीं करता है. उनसे अर्थों को-जीवाजीवादि पदार्थों को, अन्यथानुपपत्तिरूप हेतु को, जैसे कि जीव देवादिगति में कैसे जाते है अथवा-आत्माके साथ कर्मो का संबंध होता है ऐसे हेतु को,-प्रश्नों को-संशयादिकों को दूर करने के लिये जीव अजीव आदि के स्वरूप को पूछनेरूप प्रश्नों को जीवको ज्ञानादित्रय किस कारण से उत्पन्न होते हैं इत्यादिरूप कारणों को, अथवा चतुर्गतिरूप संसारभ्रमण किस कारण से होता है? इत्यादिरूप कारणों को, पृष्टक-जीवादिक के स्वरूप में

સ્થાન-મા આવેલા હોય, ત્યારે તે સમયે જે જીવ તેમના સત્કાર માટે તેમની સામે જતો નથી, મધુર વચનો વડે તેમની સુખ શાતા પૂછતો નથી, તેમની સ્તુતિ કરતો નથી, તેમની સામે નમ્રભાવે મસ્તક નમાવતો નથી અભ્યુત્થાન વગેરે ક્રિયાથી તેમનો સત્કાર કરતો નથી, વસતિ વગેરે આપીને તેમને કલ્યાણ સ્વરૂપ, મંગલસ્વરૂપ, ધર્મદેવસ્વરૂપ, અને વિશિષ્ટ જ્ઞાનયુક્ત માનીને જે તેમની સેવા કરતો નથી, તેમને અર્થોને જીવાજીવાદિ પદાર્થોને, અન્યથાનુપપત્તિરૂપ હેતુને, જેમકે જીવ દેવાદિ ગતિ કેવી રીતે મેળવે છે કે આત્માની સાથે કર્મોનો સંબંધ હોય છે એવા હેતુને, પ્રશ્નને-સંશય-વગેરેને દૂર કરવા માટે જીવ અજીવ વગેરેના સ્વરૂપને જાણવા બાબતના પ્રશ્નોને જ્ઞાનાદિત્રય જીવને કેવી રીતે પ્રાપ્ત થાય છે વગેરે રૂપ કારણોને, અથવા તો ચતુર્ગતિ

केन कारणेन भवति' इत्यादि रूपाणि, व्याकरणानि=पृष्टस्य जीवादिस्वरूपस्य उत्तरतया प्रश्नान्तरकरणरूपाणि, तानि नो पृच्छति-एतेन स्थानेन=कारणेन चित्र! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं श्रवणतायै=श्रोतुं नो लभते-इति प्रथमं स्थानम् १। द्वितीयमाह-उपाश्रयगतम्-उपाश्रयो=वसतिः, तत्र गतं श्रमणं वा, इतोऽग्रे-'माहनं वा' इत्यारभ्य 'व्याकरणानि पृच्छति' इत्यन्तः सकलोऽपि पूर्वोक्तः पाठो ग्राह्यः अमुमेवार्थं सूचयितुमाह-'तं चेव जाव' इति। हे चित्र! एतेनाऽपि स्थानेन=कारणेन जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं श्रवणतायै=श्रोतुं नो लभते इति द्वितीयं स्थानम् २। तृतीयमाह-गोचराग्रगतं=भिक्षार्थं ग्रामाभ्यन्तरे प्रविष्टं श्रमणं वा माहनं वा नो 'यावत्' यावत्पदेन-'अभिगच्छति, नो वन्दते, नो

प्राप्त किये गये उत्तर में पुनः प्रश्नान्तर करनेरूप व्याकरणों को, नहीं पूछता है, इस कारण से जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं सकता है-इस प्रकार से यह प्रथम स्थान का निरूपण है। द्वितीयस्थान का कारण निरूपण इस प्रकार है-उपाश्रय-में जाकर श्रमण को, अथवा माहण को, जो जीव प्राप्त करके यावत् व्याकरणों को नहीं पूछता है, हे चित्र! इस कारण से भी जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं पाता है, यहां 'तं चेव यावत्' पद से 'माहनं वा' यहां से लेकर 'व्याकरणानि पृच्छति' वहां तक का सम्पूर्ण पाठ ग्रहण किया गया है। इसी अर्थ की सूचना 'तं चेव जाव' पद से दी गई है। तृतीयस्थान इस प्रकार से है-श्रमण या माहन भिक्षा के लिये ग्राम के भीतर आया हो, परन्तु जो जीव उनके समक्ष नहीं जाता है, उनको वन्दना नहीं करता है उन्हें नमस्कार नहीं करता है, उनका

રૂપ સંસારભ્રમણ શા કારણથી હોય છે વગેરે રૂપ કારણોને, પૃષ્ઠ જીવાદિકના સ્વરૂપ વિષે જે ઉત્તર આપવામાં આવે તે વિષે ફરી સામે પ્રશ્નોત્તર કરવા રૂપ વ્યાકરણોને પૂછતો નથી, આ કારણથી જીવ કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી. આ પ્રમાણે આ પ્રથમસ્થાનનું નિરૂપણ છે. દ્વિતીયસ્થાનના કારણનું નિરૂપણ આ પ્રમાણે છે. ઉપાશ્રયમાં જઈને શ્રમણને કે માહણને પ્રાપ્ત કરીને જે જીવ યાવત્ વ્યાકરણોને પૂછતો નથી. હે ચિત્ર! આ કારણથી પણ જીવ કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી. અહીં "तं चेव यावत्" પદથી 'माहनं वा' અહીંથી માંડીને 'व्याकरणानि पृच्छति" અહીં સુધીનો સંપૂર્ણ પાઠ ગ્રહણ કરવામાં આવ્યો છે એજ અર્થને 'तं चेव जाव' પદથી સૂચિત કરવામાં આવ્યો છે. તૃતીય સ્થાન આ પ્રમાણે છે.-શ્રમણ કે માહણ ગોચરી માટે-ભિક્ષા માટે-ગામમાં આવેલા હોય એવી પરિસ્થિતિમાં જે જીવ તેમની સામે જતો નથી, તેમને વંદન કરતો નથી તેમને નમસ્કાર

नमस्यति, नो सत्कारयति, नो स मानयति, नो कल्याणं मङ्गलं दैवत चैत्यम्, इति संग्राह्यम्, पर्युपास्ते, तथा-विपुलेन=प्रचुरेण अशनपानखाद्यस्वाद्येन= अशनादिना चतुर्विधेनाहारेण नो प्रतिलम्भयति-अशनादिकं श्रमणाय माहनाय वा नो ददाति, अर्थान् यावत्-'यावत्पदेन-हेतून् प्रश्नान् कारणानि व्याकरणानि' इति सग्राह्यम् नो पृच्छति। एतेन=उपर्युक्तेन कारणेन हे चित्र! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं श्रवणतायै=श्रोतु नो लभते-इति तृतीयं स्थानम् ३। चतुर्थस्थानमाह-यत्रापि=यस्मिन् कस्मिन्नपि स्थाने खलु श्रमणेन=साधुना वा माहनेन=द्वादशव्रतधारिणा वा स र्द्धं=सह अभिसमागच्छति= सगतो भवति, तत्रापि खलु 'अयं श्रमणो वा माहनो वा मां न परिचिनुयात्' इति हेतोः आत्मानं=स्व हस्तेन वा वस्त्रेण वा छत्रेण वा आवृत्य=आच्छाद्य तिष्ठति नो अर्थान् यावत् पृच्छति। एतेनापि स्थानेन=कारणेन चित्र! जीवः

सत्कार और सन्मान नहीं करता है, तथा कल्याणरूप, मंगलरूप, धर्मदेवरूप मानकर तथा विशिष्टज्ञानयुक्त मानकर उनकी सेवा नहीं करता है, तथा विपुल-प्रचुर-अशन, पान खाद्य, स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार से उन्हें प्रतिलाभित नहीं करता है, अर्थात् श्रमण के लिये माहन के लिये जो चतुर्विध आहार नहीं देता है, एवं अर्थों को, हेतु को, प्रश्नों को, कारणों को तथा व्याकरणों को उनसे नहीं पूछता है इस उपर्युक्त कारण से हे चित्र! जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को नही सुन सकता है। चतुर्थस्थान इस प्रकार से है-चाहे जिस किसी भी स्थान में साधु या माहन-१२ व्रतधारी श्रावक के साथ संगत हो जावे-परन्तु वहां पर भी वह जीव अपने आपको हाथ से, या वस्त्र से, या छत्र से, ढंक लेता है इस ख्याल से कि महाराज मुझे पहिचान न ले और न उनसे अर्थादिकों

કરતો નથી, તેમનુ સન્માન અને સત્કાર કરતો નથી તેમજ તેમનુ કલ્યાણરૂપ મંગળરૂપ, ધર્મદેવ સ્વરૂપ માનીને તથા વિશિષ્ટ જ્ઞાનયુકત માનીને તેમની સેવા કરતો નથી તેમજ વિપુલપ્રચુર અશન, પાન, ખાદ્ય, સ્વાદ્યરૂપ ચતુર્વિધ આહાર વડે તેમને પ્રતિલાભિત કરતો નથી એટલે કે શ્રમણને કે માહણને જે ચતુર્વિધ આહાર આપતો નથી તથા અર્થોને, હેતુઓને પ્રશ્નોને કારણોને તથા વ્યાકરણોને તેમને પૂછતો નથી આ ઉકત કારણથી હે ચિત્ર! જીવ કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી ચતુર્થ સ્થાન આ પ્રમાણે છે-ગમે તે સ્થાને સાધુ કે માહન-૧૨ વ્રતધારી શ્રાવક મળે ત્યારે જે જીવ પોતાની જાતને મહારાજ અમને ઓળખી લે નહિ તેવા વિચારથી હાથવડે, કે વસ્ત્રવડે, કે છત્રવડે સંતાડી દે છે અને તેમને અર્થાદિકો વિષે પણ પૂછતો નથી

केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं श्रवणतायै=श्रोतुं न लभते-इति चतुर्थं स्थानम् ४। सम्प्रत्युपसंहरन्नाह-एतैश्चतुर्भिः स्थानैः खलु चित्र! जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं श्रवणतायै=श्रोतुं न लभते-इति।

इत्थं केवलिप्रज्ञप्तस्य धर्मस्यालाभे चतुर्विधं कारणमुक्त्वा सम्प्रति तल्लाभे चतुर्विधं कारणमाह—'चउहिं' इत्यादि।

हे चित्र! चतुर्भिः स्थानैः=कारणैः जीवः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं श्रवणतायै=श्रोतुं लभते, तद्यथा-'आरामगतं वा' इत्यादि। केवलिप्रज्ञप्तधर्मालाभे यानि चत्वारि स्थानानि प्रोक्तानि, तान्येवात्र तद्वैपरीत्येन विज्ञेयानीति।

को पूछता है-तो ऐसा जीव इस कारण से भी केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुन नहीं पाता है. अब केशीकुमारश्रमण उपसंहार करते हुए कहते हैं कि हे चित्र! जीवको धर्मलाभ होने में ये चार कारण बाधक हैं। इनके होने से जीव को केवलिप्रज्ञप्त धर्म की प्राप्ति नहीं होती है।

इस तरह केवलिप्रज्ञप्त धर्म के अलाभ में चतुर्विध कारण कहकर अब केशीकुमारश्रमण उसका लाभ होने में चार कारणों का कथन करते हैं 'चउहिं ठाणेहिं' हे चित्र! चार कारणों से जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म को सुनता है अर्थात् केवलिप्रज्ञप्त धर्म के अलाभ में जो चार कारण प्रकट किये गये है, वे ही चार कारण विपरीतरूप से आचरित होने पर जीव के लिये धर्मलाभ के कारण हो जाते हैं यही बात '१ आरामगयं वा उज्जाणगयं वा' इत्यादि चार सूत्रपाठ द्वारा प्रकट किया है।

તો આ જાતનો જીવ પણ આ કારણથી કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરી શકતો નથી હવે કેશીકુમાર શ્રમણ ઉપસંહાર કરતાં કહે છે કે હે ચિત્ર! જીવને ધર્મલાભની પ્રાપ્તિમા આ ચાર કારણો વિઘ્નરૂપે નડે છે. આ સર્વથી જીવને કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મની પ્રાપ્તિ થતી નથી.

આ પ્રમાણે કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મના અલાભ સંબંધી આર કારણોનું વિવેચન કરીને હવે કેશીકુમાર શ્રમણ કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મના લાભ માટે જે ચાર કારણો છે તેમનું કથન કરતા કહે છે.-"चउहिं ठाणेहिं" હે ચિત્ર! ચાર કારણોથી જીવ કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરે છે. એટલે કે કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મના અલાભમા જે ચાર કારણો બતાવવામાં આવ્યાં છે, તેજ ચારેચાર કારણો વિપરીત રૂપમાં આચરવામાં આવે તો તેજ ચાર કારણો ધર્મલાભ માટે ઉપયોગી થઇ જાય છે. એજ વાત "१ आरामगयं वा उज्जाणगयं वा" વગેરે ચાર સુત્રો વડે પ્રગટ કરવામાં આવી છે.

इत्थं केवलिप्रज्ञप्तधर्मलाभालाभयोः कारणान्युक्त्वा सम्प्रति केवलिप्रज्ञप्त-धर्मालाभे यानि कारणानि सन्ति तद्विशिष्ट एव प्रदेशी राजाऽस्ति स कथ-मया धर्मआख्येयः? इति केशिकुमारश्रमणश्चित्रं सारथिमाह— तुज्झं च णं चित्ता! पएसी राया' इत्यादि। हे चित्र! तव=त्वदीयश्च खलु प्रदेशी राजा आरामगतं वा, 'तं चेव सव्वं भाणियव्वं आइल्लएणं गमएणं जाव अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ' इति पाठेन तदेव सर्वं गमकजातं भणितव्यम् केन गमकेन? इत्याह-'आइल्लएणं' इति आदिमेन गमकेन=आलापकेन 'उज्जाणगयं वा' उद्यानगतं वा, इत्यारभ्य 'अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ' आत्मानमावृत्य तिष्ठति, इति पर्यन्तं भणितव्यम्। एवंविधस्त्वदीयः प्रदेशी राजाऽस्ति, तत्कथं=केन प्रकारेण खलु चित्र! एवंविधाय त्वदीयाय प्रदेशिने राज्ञे वयं धर्मम् आख्यास्यामः=उपदेक्ष्याम इति ॥ सू० १२३ ॥

मूलम्—तएणं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं एवं वयासी एवं खलु-भंते! अण्णया कयाइ कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया, ते मए पएसिस्स रण्णो अन्नया चेव उवणीया तं एएणं खलु भंते! कारणेणं अहं पएसिं रायं देवाणुप्पियाणं अंतिए हव्वमाणेस्सामि, तं मा णं देवाणुप्पिया! तुब्भे पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खमाणा गिलाएज्जाह,

इस तरह धर्मअप्राप्ति और धर्मप्राप्ति के कारणों को कहकर अब केशीकुमारश्रमण चित्र सारथी के प्रति यह प्रकट कर रहे हैं कि प्रदेशी राजा केवलिप्रज्ञप्त धर्म के अप्राप्ति के कारणों से विशिष्ट है अतः मैं उसे किस प्रकार से धर्म का उपदेश दूं. यही बात केशीकुमारश्रमण चित्र सारथि से यहां से आगे कहते है. 'तुज्झं च णं चित्ता। पएसी राया' इत्यादि मूलार्थ में टीका के अनुसार ही इस सब पाठका अर्थ लिख ही दिया गया है। अतःपुनः यहां नहीं लिखा है ॥सू० १२३॥

આ રીતે ધર્મ અપ્રાપ્તિ અને ધર્મ પ્રાપ્તિના કારણોનું સ્પષ્ટીકરણ કરીને હવે કેશીકુમાર શ્રમણ ચિત્રસારથીની સામે આ વાત કહે છે કે પ્રદેશી રાજા કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મના અપ્રાપ્તિના કારણોથી યુક્ત છે. એથી હું તેને કેવી રીતે ધર્મનો ઉપદેશ કરૂં. એજ વાત કેશિકુમારશ્રમણ ચિત્રસારથીને આ પ્રમાણે કહે છે-"તુજ્ઝં ચ ણં ચિત્તા! પએસી રાયા" વગેરે મૂલાર્થમાંજ ટીકાર્થ પ્રમાણે જ આ બધાનું વિશ્લેષણ કરવામાં આવ્યું છે. એથી અહીં ફરી અર્થ લખવામાં આવ્યો નથી ॥સૂ ૧૨૩॥

अगिलाए णं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह, छंदेण भंते ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह । तएणं से केसी कुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी अवीयाइं चित्ता ! जाणिस्सामो । तएणं से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं वंदइ नमसइ जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घटं आसरहं दुरूहइ, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० १२४ ॥

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्—एवं खलु भदन्त ! अन्यदा कदाचित् काम्बोजैः चत्वारः अश्वाः उपनयमुपनीताः ते मया प्रदेशिने राज्ञे अन्यदैव उपनीताः, तद् एतेन खलु भदन्त ! कारणेन अहं प्रदेशिनं राजानं देवानुप्रियाणामन्तिके हव्यमानेष्यामि । तत मा खलु देवानुप्रियाः ! यूयं प्रदेशिने राज्ञे धर्ममाख्यान्तो ग्लायत, अग्लानाः

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (से चित्ते सारही) वह चित्र सारथि (केसिकुमारसमणं एवं वयासी) केशी कुमारश्रमण से ऐसा बोला (एवं खलु भंते ! अण्णया कयाइं कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया) हे भदन्त ! किसी एक समय कम्बोजदेशवासियोंने चार घोडे भेंटरूप में भेजे थे (ते मए पएसिस्स रण्णो अण्णयाचेव उवणीया) उसे मैंने प्रदेशी राजा के समक्ष भेंट में उसी दिन दे दिया (तं एएणं खलु भंते ! कारणेणं अहं पएसिं रायं देवाणुप्पियाणं अंतिए हव्वमाणेस्सामि) अतः इस कारण से हे भदन्त ! मैं प्रदेशी राजाको आप देवानुप्रिय के पास बहुत ही शीघ्र

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं) त्यार पछी (से चित्ते सारही) ते चित्र सारथिએ (केसिकुमारसमणं एवं वयासी) કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે વિનંતી કરતાં કહ્યું-(एवं खलु भंते ! अण्णया कयाइं कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया) હે ભદંત ! કોઇ એક વખતે કંબોજ દેશવાસીઓએ ચાર ઘોડાઓ પ્રદેશી રાજાને ભેટ મોકલ્યા હતા (ते मए पएसिस्स रण्णो अण्णया चेव उवणीया) તે ઘોડાઓને મેં પ્રદેશી રાજા સામે ભેટરૂપમાં અર્પિત કરી દીધા છે. (तं एएणं खलु भंते ! कारणेणं अहं पएसिं रायं देवाणुप्पियाणं अंतिए हव्वमाणेस्सामि) એથી હે ભદંત ! પ્રદેશી રાજાને આપ દેવાનુપ્રિયની પાંસે જલ્દી જ ઉપસ્થિત કરીશ.

खलु भदन्त ! यूयं प्रदेशिने राज्ञे धर्ममाख्यात, छन्देन भदन्त ! यूयं प्रदेशिने राज्ञे धर्ममाख्यात । ततः खलु स केशीकुमारश्रमणः चित्रं सारथिमेवमवादीत्–अपि च चित्र ! ज्ञास्यामः । ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनं कुमारश्रमणं वन्दते नमस्यति, यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथः तत्रैवो

लाऊंगा (तं मा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खमाणा गिलाएज्जाह) तो आप हे देवानुप्रिय ! प्रदेशी राजा को जिनोक्त धर्म का उपदेश करते समय ग्लानि मत करना (अगिलाए णं भंते ! तुब्भे पएसिस्स धम्ममाइक्खेज्जाह) प्रत्युत अग्लानिभाव से ही हे भदन्त ! आप प्रदेशी राजा को धर्म का उपदेश करना (छंदेणं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह) तथा आप अपनी इच्छा के अनुसार ही हे भदन्त ! प्रदेशी राजा को धर्म का उपदेश देना. उसकी इच्छा के अनुसार नहीं (तए णं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी) तब उन केशीकुमारश्रमणने चित्र सारथि से ऐसा कहा–(अवियाइं चित्ता जाणिस्सामो) हे चित्र ! अवसर आने पर देखा जावेगा. आप के कथनानुसार उसे धर्मोपदेश देने का मेरा भाव तो है। (तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं वंदइ, नमंसइ, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) इसके अनन्तर चित्र सारथिने केशीकुमारश्रमण को वन्दना की, नमस्कार किया, और फिर वह जहां चार घंटोंवाला अश्वरथ था वहा पर आया

(तं मा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खमाणा गिलाएज्जाह) तो हे देवानुप्रिय ! आपश्री ते प्रदेशी राजाने जिनोक्त धर्मनो उपदेश करता ग्लानि अनुभवशो नहि (अगिलाए णं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खेज्जाह) परंतु हे भदंत ! आपश्री ते प्रदेशी राजाने अग्लानिभावथी ज धर्मोपदेश करशो. (छंदेणं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह) तेमज हे भदंत ! आपश्री पोतानी इच्छा मुजब ज प्रदेशी राजाने धर्मोपदेश करशो. तेनी इच्छा प्रमाणे नहि. (तए णं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी) त्यारे ते केशीकुमार श्रमणे ते चित्रसारथिने आ प्रमाणे कह्युं. (अवियाइं चित्ता जाणिस्सामो) हे चित्र ! उचित अवसर आवशे त्यारे जोई लईशुं तमो कहो छो ते मुजब मारी पण तेमने उपदेश करवानी भावना छे ज. (तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं वंदइ, नमंसइ, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) त्यार पछी चित्रसारथिए केशिकुमारश्रमणने वंदना करी नमस्कार कर्या अने पछी ते चार घंटोथी युक्त अश्वरथ हतो त्यां आव्यो. (चाउग्घंटं

पागच्छति, चातुर्घण्टमश्वरथं दूरोहति, यामेव दिशं प्रादुर्भूतः तामेव दिशं प्रतिगतः ॥ सू० १२४ ॥

टीका—'तए णं से चित्ते' इत्यादि—ततःखलु स चित्रः सारथिःकेशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्—एवं खलु हे भदन्त ! अन्यदा कदाचित्=कस्मिंश्चित् काले काम्बोजैः=कम्बोजदेशवासिभिः चत्वारः=चतुःसंख्यकाः अश्वाः उपनयं=प्राभृतम् उपनीताः=प्रापिताः, प्राभृतत्वेन दत्ता इत्यर्थः, ते मया अन्यदैव=तस्मिन्नेव काले प्रदेशिने राज्ञे उपनीताः तदेतेन कारणेन खलु हे भदन्त ! अहं प्रदेशिनं राजानं देवानुप्रियाणां=भवताम् अन्तिके=समीपे हव्यं=शीघ्रम् आनेष्यामि, तत्—तदा हे देवानुप्रियाः ! प्रदेशिने राज्ञे धर्मं=जिनोक्तम् आख्यान्तः=कथयन्तः सन्तो यूयं मा ग्लायत=ग्लानिं मा भजत, एतावदेव न प्रत्युत छन्देन=स्वकीयाभिप्रायेण यथेच्छमित्यर्थः हे भदन्त ! यूयं प्रदेशिने राज्ञे धर्मम् आख्यात=कथयत । ततः चित्रसारथेः कथना-

---

(चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) वहां आकर वह उस चारघंटों वाले अश्वरथपर सवार हो गया और जिस दिशा से आया था, उसी दिशा की ओर चला गया ।

टीकार्थ—चित्र सारथिने केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा–हे भदन्त ! किसी एक समय मेरे पास कम्बोजदेशवासियों द्वारा भेजे गये ४ घोडे प्रदेशी राजा के लिये भेंटरूप में आये थे सो मैंने उसी दिन वे घोडे प्रदेशी राजाके लिये शिक्षित कर दिये. इस तरह हमारी उनकी परस्पर में प्रीति है. इसलिये मैं चाहता हूं कि आप उसे जिनप्रतिपादित धर्म का उपदेश देवें मैं उसे आपके पास शीघ्र ही ले आऊंगा, उपदेश देने में आप किसी भी प्रकार का संकोच न करें. अपनी इच्छा के अनुसार धर्म

आसरहं दुरुहइ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) त्यां पहोंचीने ते पोताना चार घंटोवाळा अश्वरथ पर सवार थई गयो अने जे दिशा तरफथी ते आवेल हतो तेज दिशा तरफ पाछो जतो रह्यो.

टीकार्थ—चित्रसारथिए केशीकुमारश्रमणने आ प्रमाणे कह्युं–हे भदंत ! कोई એક વખતે મારી પાસે કંબોજ દેશવાસીઓએ રાજાને ભેટમાં આપવા માટે ઘોડાઓ મોકલ્યા હતા તેજ દિવસે તે ઘોડાઓને પ્રદેશી રાજાને મેં અર્પિત કરી દીધા. આમ તેમની અમારી સાથે મિત્રતા છે એથી જ હું ઈચ્છું છું કે આપશ્રી તેમને જિન પ્રતિપાદિત ધર્મનો ઉપદેશ કરો. તેમને હું આપશ્રીની પાસે જલદી લાવીશ. ઉપદેશ આપવામાં આપશ્રી પોતાની ઈચ્છા મુજબ ધર્મની વાતો પ્રદેશી રાજાને સંભળાવજો

नन्तरं खलु केशीकुमारश्रमणः चित्रं सारथिम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=अकथयत्–'अविआइ' अपि च हे चित्र! ज्ञास्यामः=अवगमिष्यामः यथावसरं करिष्याम इत्यर्थः, त्वत्कथनानुसारेण करणस्य मम भावो वर्त्तत इत्याशयः। ततः खलु स चित्रः सारथिः केशिनं कुमारश्रमणं वदन्ते नमस्यति चातुर्घण्टाश्वरथसमीपे समागत्याश्वरथमारोहति, यामेवदिशं समाश्रित्य प्रादुर्भूतः=समागतः तामेवदिशं प्रतिगतः=प्रस्थितः ॥सू० १२४॥

मूलम्--तएणं से चित्ते सारही कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए कयनियमावस्सए सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, जेणेव पएसिस्स रन्नो गिहे जेणेव पएसी राया तेणेव उवागच्छइ, पएसि रायं करयल–जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, एवंवयासी-एवं खलु देवाणुप्पियाणं कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया ते य मए देवाणुप्पियाणं अण्णया चेव विणइया, तं एएणं सामी! ते आसे आइक्खिए पासइ। तएणं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी–गच्छाहि णं तुमं चित्ता! तेहिं चेव चउहि आसेहिं आसरहे जुत्तामेव उवट्ठवेहि जाव पच्चप्पिणाहि। तएणं से चित्ते सारही पए-

---

की बातें उसे सुनावें. चित्र सारथि का इस प्रकार कथन सुनकर केशीकुमारश्रमणने उससे ऐसा कहा–चित्र! समय आने पर देखा जावेगा. मेरा भाव अवश्य ऐसा हुआ है कि मैं उसे जिनेन्द्रप्रतिपादित धर्म का उपदेश दूं। केशीकुमारश्रमण की इस प्रकार की भावना जानकर चित्रसारथिने उनको वन्दनादिकिये और फिर अपने रथ पर सवार होकर अपने स्थान पर वापिस हो गया. ॥ सू० १२४ ॥

ચિત્રસારથિનું આ પ્રમાણે કથન સાંભળીને કેશીકુમાર શ્રમણે તેને આમ કહ્યું કે હે ચિત્ર! ઉચિત અવસર આવશે ત્યારે જોઈ લઈશું. મારી એવી ઇચ્છા છે કે હું તેને જિનેન્દ્ર પ્રતિપાદિત ધર્મનો ઉપદેશ કરું. કેશીકુમાર શ્રમણની આ જાતની ભાવના જાણીને ચિત્રસારથિએ તેમને વંદન કર્યા અને ત્યારપછી પોતાના રથ પર સવાર થઈને પોતાના નિવાસસ્થાને પાછો આવતો રહ્યો. ॥સૂ૦ ૧૨૪॥

त्तिणा रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव-हियए उवट्ठवेइ एयमाणत्तिय पच्चप्पिणइ। तएणं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ-जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, जेणामेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटं आसरहं दूरुहइ, सेयवियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ। तएणं से चित्ते सारही तं रह णेगाइ जोयणाइ उब्भामेइ। तएणं से पएसी राया उण्हेण य तण्हाए य रहवाएण य परिकिलंते समाणे चित्तं सारहि एवं वयासी—चित्ता! परिकिलंते मे सरीरे परावत्तेहि रहं। तएणं से चित्ते सारही रहं परावत्तेइ जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, पएसिं रायं एवं वयासी—एस णं सामी! मियवणे उज्जाणे एत्थणं आसणं समं किलामं सम्मं अवणेमो। तएणं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी—एवं होउ चित्ता ।१२५।

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः कल्यं प्रादुष्प्रभातायां रजन्यां फुल्लोत्फुल्लकमलकोमलोन्मीलिते अथाऽऽपाण्डुरे प्रभाते कृतनियमावश्यके सहस्र

'तए णं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ--(तए णं) इसके बाद (से चित्ते सारही) वह चित्रसारथि (कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए) दूसरे दिन जब कि प्रातःकाल के रूप में बदल गई और (फुल्लुप्पलकमल कोमलुम्मिलियम्मि अहापण्डुरे पभाए कयनियमावस्सए) कमल विकसित हो चुके तथा नियम और आवश्यक कृत्य जिसमें लोग कर चुके थे ऐसा पीतधवल प्रभात जब हो गया (सहस्स

'तए णं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थ.—(तए णं) त्यार पछी (से चित्ते सारही) ते चित्रसारथि-(कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए) बीजा दिवसे ज्यारे रात्री प्रातःकालना रूपमां परिणत थई गई अने (फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए कयनियमावस्सए) कमळो विकास पाम्यां तेमज नियम अने आवश्यक कृत्यो जेमां लोको वडे पूरा करवामां आव्या एवुं पीतधवल प्रभात ज्यारे थयुं (सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे

रश्मौ दिनकरे तेजसा ज्वलति स्वाद् गृहाद् निर्गच्छति, यत्रैव प्रदेशिनो राज्ञो गृहं यत्रैव प्रदेशी राजा तत्रैवोपागच्छति प्रदेशिनं राजानं करतल-यावत् कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयति, एवमवादीत्–एवं खलु देवानुप्रियाणां कम्बोजेषु चत्वारोऽश्वा उपनयम् उपनीता, ते च मया देवानुप्रियेभ्यः अन्यदा-चैव विनयिताः तद् एत खलु स्वामिन्! तान् अश्वान् आत्मर्द्धिकान् पश्यत। ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रं सारथिम् एवमवादीत्–गच्छ खलु

रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ) एवं सहस्रकि-रणों वाला सूर्य जब अपने तेज से चमकने लगा–अपने घर से निकला (जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहे जेणेव पएसी राया, तेणेव उवागच्छइ) निकल कर वह वहां गया जहां प्रदेशी राजा का गृह था और उसमें भी जहा वह प्रदेशी राजा था (पएसिं रायं करयल जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ) वहां जाकर उसने प्रदेशी राजा को दोनों हाथ जोडकर बडे विनय के साथ प्रणाम किया और जय विजय शब्दो का उच्चारण करते हुए उसे वधाई दी (एवं वयासी) वधाई देकर फिर उसने उससे ऐसा कहा— (एवं खलु देवाणुप्पियाणं कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणय उवणीया) कम्बो-जदेशवासियोंने चार घोडे भेटरूप में आप देवानुप्रिय के लिये भेजे थे (ते य मए देवाणुप्पियाणं अण्णया चेव विणइया) उन्हें मैं ने आपके लिये विनीत उसी दिन बना दिया है। अर्थात् शिक्षित कर दिया है। (तं एह णं सामी तं आसे आईड्डिए पासह) अतः आप आईये और स्वकीयपराक्रमगति आदि

तेयसा जलंते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ) અને સહસ્ર કિરણોવાળો સૂર્ય જ્યારે પોતાના તેજથી પ્રકાશિત થવા લાગ્યા. પોતાના ઘરેથી નીકળ્યો. (जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहे जेणेव पएसी राया, तेणेव उवागच्छइ) નીકળીને તે જ્યાં પ્રદેશી રાજાનું ગૃહ હતું અને તેમાં પણ જ્યાં તે પ્રદેશી રાજા હતો ત્યાં ગયો. (पएसिं रायं करयल जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ) ત્યાં જઈને તેણે પ્રદેશી રાજાને બન્ને હાથ જોડીને નમ્રતાપૂર્વક પ્રણામ કર્યા અને જયવિજયના શબ્દોનું ઉચ્ચારણ કરીને તેને વધામણી આપી. (एवं वयासी) વધામણી આપી તેણે તેને આ પ્રમાણે કહ્યું (एवं खलु देवाणुप्पियाणं कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया) કમ્બોજ દેશના નાગરિકોએ આપ દેવાનુપ્રિય માટે ચાર ઘોડાઓ ભેટરૂપમાં મોકલ્યા છે (ते य मए देवाणुप्पियाणं अण्णया चेव विणइया) તે ઘોડાઓને મેં તેજ દિવસે આપશ્રીના માટે યોગ્ય શિક્ષિત બનાવી દીધા છે (तं एह णं सामी तं आसे आईड्डिए पासह) એથી આપ પધારો અને સ્વકીય પ્રયત્ન ગતિ વગેરે શક્તિને

त्वं चित्र ! तैरेव चतुर्भिरश्वैः अश्वरथं युक्तमेव उपस्थापय यावत् प्रत्यर्पय। ततः खलु स चित्रः सारथिः प्रदेशिना राज्ञा एवमुक्तःसन् हृष्ट तुष्ट–यावत् हृदय उपस्थापयति, एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयति । ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रस्य सारथेरन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट तुष्ट–यावद् अल्प-महार्घाभरणालङ्कृतशरीरः स्वाद् गृहाद् निर्गच्छति, यत्रैव चातुर्घण्टः अश्वरथ

शक्ति से युक्त हुए इन्हें देखिये। (तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी) तब उस प्रदेशी राजाने चित्र सारथि से ऐसा कहा-- (गच्छाहि णं तुम चित्ता ! तेहिं चेव चउहिं आसेहिं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेहि जाव पच्चप्पिणाहि) हे चित्र ! तुम जाओ और उन्हीं कम्बोज से प्राप्त हुए चारों घोडों से युक्त करके अश्वरथ को तैयार कर ले आओ। और उस बात की मुझे पीछे खबर दो (तए ण से चित्ते सारही पएसिणा रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव हियए उवट्ठवेइ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ) इस प्रकार से प्रदेशी राजा द्वारा कहा गया वह चित्र सारथि बडा ही हृष्टतुष्ट यावत् हृदयवाला हुआ और उसने चार घोडों से युक्त करके अश्वरथ को उपस्थित कर दिया, बाद में प्रदेशी राजा को इसका निवेदन किया (तए णं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव अप्पमहग्घाभरणा-लंकियसरीरे साओ गिहाओ णिग्गच्छइ) इसके बाद प्रदेशी राजा चित्र

થી યુક્ત થયેલા તે ઘોડાઓનું નિરીક્ષણ કરો. (तएणं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी) ત્યારે તે પ્રદેશી રાજાએ ચિત્રસારથીને આ પ્રમાણે કહ્યું. (गच्छाहि णं तुमं चित्ता ! तेहिं चेव चउहिं आसेहिं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेहि जाव पच्चप्पिणाहि) હે ચિત્ર ! તમે જાઓ અને તે કંબોજદેશના નાગ-રિકોથી પ્રાપ્ત થયેલા ચારેચાર ઘોડાઓને રથમાં જોડીને તે અશ્વરથ અહીં ઉપસ્થિત કરો. અને તે પછી મને આ વાતની ખબર આપો. (तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव हियए उवट्ठवेइ एयमाण-त्तियं पच्चप्पिणइ) આ પ્રમાણે પ્રદેશી રાજા વડે આજ્ઞાપિત થયેલો તે ચિત્રસારથિ ખૂબજ હૃષ્ટતુષ્ટ હૃદયવાળો થયો અને તેણે ચારેચાર ઘોડાઓથી સજ્જ કરીને અશ્વરથ ત્યાં રાજાની સેવામાં ઉપસ્થિત કર્યો અને ત્યાર પછી તેની ખબર રાજાની પાસે પહોંચાડી (तए णं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ णिग्गच्छइ) ત્યારપછી પ્રદેશી રાજા ચિત્ર સારથિની અશ્વરથ ઉપસ્થિત થઇ જવાની

स्तत्रैवोपागच्छति. चातुर्घण्टमश्वरथ दुरोहति, श्वेतविकाया नगर्या मध्य-मध्येन निर्गच्छति। ततः खलुः स चित्रः सारथिस्त रथं नैकानि योजनानि उद्भ्रामयति। ततः खलु स प्रदेशी राजा उष्णेन च तृष्णया च रथवातेन च परिक्लान्तःसन् चित्रं सारथिमेवमवादीत्–चित्र ! परिक्लान्तं मे शरीरं, परा-

सारथि की अश्वरथ के तैयार हो जाने की बात को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर बडा ही अधिक हर्षित एवं तुष्ट चित्त हुआ. उसने उसी समय अपने शरीर पर बहुमूल्य अल्पभार वाले आभूषणों को धारण किया शीघ्र ही वह फिर अपने घर से बाहर निकला (जेणामेव चाउग्घंटे आस रहे तेणेव उवागच्छइ) बाहर निकल कर वह वहां पर आया कि जहां पर वह चार घंटों वाला अश्वरथ तैयार किया गया खडा था (चाउग्घंट आसरहं दुरूहइ, सेयवियाए मज्जमज्झेणं णिग्गच्छइ) वहां आकर वह चार घंटों वाले उस रथ पर बैठ गया. फिर वह श्वेतांबिका नगरी के ठीक मध्यमार्ग मे होकर निकला (तए णं से चित्ते सारही तं रहं णेगाइं जोयणाइं उब्भामेइ) बाद में उस चित्र सारथिने उस रथको अनेक योजनों तक बहुत तेज चाल से चलाया. (तए णं से पएसी राया उण्हेण य तण्हाए य रहवाएण य परिकिलंते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी) इस कारण वह प्रदेशी राजा आतप से, प्यास से और रथगत्युद्भव वायु से खिन्न हो गया, अतः उसने चित्र सारथि से ऐसा कहा–(चित्ता ! परिकि-

વાત સાંભળીને અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને ખૂબજ હર્ષિત અને તુષ્ટ ચિત્તવાળો થયો. તેણે તેજ ક્ષણે પોતાના શરીર પર બહુમૂલ્ય તેમજ અલ્પભારવાળાં આભૂષણો ધારણ કર્યા અને જલ્દી તે પોતાના મહેલથી બહાર નીકળ્યો (जेणामेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ) બહાર નીકળીને તે ત્યાં આવ્યો કે જ્યાં ચાર ઘંટવાળો અશ્વરથ સુસજ્જ થઈને ઉભો હતો. (चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, सेयवियाए नयरीए मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ) ત્યાં પહોંચીને તે ચાર ઘંટોવાળા તે અશ્વરથ પર બેસી ગયો અને ત્યારપછી તે શ્વેતાંબિકા નગરીના ઠીક મધ્યવાળા માર્ગમાં પ-થઈને નીકળ્યો (तए णं से चित्ते सारही तं रहं णेगाइं जोयणाइं उब्भामेइ) ત્યારપછી તે ચિત્રસારથિએ તે રથને ઘણા યોજનો સુધી બહુજ તીવ્રવેગથી ચલાવ્યો. (तए णं से पएसी राया उण्हेण य तण्हाए य रहवाएणय परिकिलंते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी) તેથી તે પ્રદેશી રાજા તાપથી તરસથી અને રથની તીવ્રગતિને લીધે સામેથી આવતા પવનથી ખિન્ન થઈ ગયો. એથી તેણે ચિત્ર સારથિને આ પ્રમાણે કહ્યું (चित्ता ! परिकिलंते मे सरीरे परावत्तेहि रहं

वर्त्तय रथम् । ततः खलु स चित्रः सारथिः रथं परावर्त्तयति, यत्रैव मृगवनमुद्यानं तत्रैवोपागच्छति, प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्–एष खलु स्वामिन् मृगवनमुद्यानं, अत्र खलु अश्वानां श्रमं क्लामं सम्यग् अपनयामः । ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रं सारथिमेवमवादीत्–एवं भवतु चित्र ! ॥सू० १२५॥

टीका—'त एणं से चित्ते' इत्यादि–ततः खलु स चित्रः सारथिः कल्ये=आगामिनिदिवसे प्रादुष्प्रभातायां=प्रादुः–प्रकाशितं प्रभातं यस्यां, तस्यां रजन्यां=रात्रौ सत्याम्, निशावसाने इत्यर्थः, अथ=पुनःफुल्लोत्पलकमल-

---

लते मे सरीरे परावत्तेहि रहं) हे चित्र ! मेरा शरीर थक रहा है, अतः तुम रथ को वापिस लौटा लो (तए णं से चित्ते सारही रहं परावत्तेइ, जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) तब उस चित्र सारथिने रथको लौटा लिया और जहां मृगवन नामका उद्यान था उस ओर चल दिया (पएसिं रायं एवं वयासी) वहां पहुंच कर उसने प्रदेशी राजा से ऐसा कहा (एस णं सामी मियवणे उज्जाणे एत्थ णं आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमो) हे स्वामिन् ! यह मृगवन नामका उद्यान है यहां ठहरकर घोडों के श्रम को और ग्लानि को मैं अच्छी तरह से दूर किये लेता हूं। (तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी) तब वह प्रदेशी राजा चित्र सारथि से इस प्रकार बोला (एवं होउ चित्ता) हे चित्र ! भले तुम ऐसा करो।

टीकार्थ—इसके बाद दूसरे दिन चित्र सारथि प्रातः काल होते ही रात्रिकी समाप्ति होते ही–अपने घर से निकला ऐसा संबंध यहां लगाना चाहिये. जब यह घर से निकला उस समयतक कमल विकसित हो चुके

હે ચિત્ર ! મારૂં શરીર શ્રમયુકત થઇ ગયું છે, એથી તમે રથને પાછો વાળી લો. (त एणं से चित्ते सारही रह परावत्तेइ, जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) ત્યારે તે ચિત્ર સારથિએ રથને પાછો વાળી લીધો અને જ્યાં મૃગવન નામે ઉદ્યાન હતુ તે તરફ રથને હાંકયો. (पएसिं राय एयं वयासी) ત્યાં પહોંચીને તેણે પ્રદેશી રાજાને આમ કહ્યું. (एस णं सामी मियवणे–उज्जाणे एत्थ णं आसाणं समं किलाम सम्मं अवणेमो) હે સ્વામિન્ ! આ મૃગવન નામે ઉદ્યાન છે. અહીં રોકાઇને હું ઘોડાઓના થાકને અને ખિન્નતાને સારી રીતે મટાડી લઉં છું. (त एणं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी) ત્યારે પ્રદેશી રાજાએ ચિત્ર સારથિને આ પ્રમાણે કહ્યું. (एवं होउ चित्ता) હે ચિત્ર ! સારૂં તમે ભલે આમ કરો.

ટીકાર્થ—ત્યારપછી બીજા દિવસે રાત્રી પૂરી થતા તેમજ સવાર થતાં જ ચિત્ર સારથિ પોતાના ઘેરથી નીકળ્યો. એવો અર્થ અહીં કરવો ઘટે છે. તે જ્યારે પોતાના

कोमलोन्मीलिते–फुल्लोत्पल=विकसितकमलं, कमलो–हरिणविशेषश्च तयोः कोमल=मृदु उन्मीलनम्–कमलदलानां विकसनं हरिणनेत्राणामुन्मेषणं च यस्मिन, कमलविकसनसमये हरिणनेत्रोन्मीलनसमये वेत्यर्थः तथाभूते आपाण्डुरे–आ=समन्तात् पाण्डुरे=पीतधवले, तथा–कृतनियमावश्यके=नियमाः= सचित्तादित्यागरूपाश्चतुर्दशसंख्यकाः,

उक्तञ्च–"सचित्त१ दव्व२ विगइ३,-पाण४ तंबोल५ वत्थ६ कुसुमेसु७।
 वाहण८ सयण९ विलेवण१०, बंभ११ दिसि१२ ण्हाण१३ भत्तेसु१४॥१॥

छाया––सचित्त१ द्रव्य२ विकृत्यु३ पान४-ताम्बूल५ वस्त्र६ कुसुमेषु७। वाहन८
 शयन९ विलेपन१० ब्रह्म११ दिक्१२ स्नान१३ भक्तेषु१४ ॥ इति,

आवश्यक=प्रतिक्रमण तच्चेह रात्रिकं, तयोः समाहारे नियमावश्यकं, कृतं= विहितं नियमावश्यकं यस्मिन् तत्तस्मिन् तादृशे प्रभाते=प्रातःकाले तथा–सहस्ररश्मौ=सहस्रकिरणसम्पन्ने दिनकरे=सूर्ये तेजसा ज्वलति=दीप्यमाने सति स्वात्=स्वकीयाद् गृहाद् निर्गच्छति, यत्रैव प्रदेशिनो राज्ञो गृहं=भवनं यत्रैव च प्रदेशी राजा वर्त्तते तत्रैव उपागच्छति=समागच्छति, प्रदेशिनं राजानं करतल–यावत्–करतलपरिगृहीतं शिरआवर्त्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्द्धयति, वर्द्धयित्वा एवमवादीत्–एवं खलु देवानुप्रियेभ्यः=

थे अथवा कमल और हरिणविशेषों के नेत्र निद्रा विगत हो जाने के कारण उघड चुके थे, प्रभात का रंग पीत धवल हो चुका था लोगोंने–धार्मिक जनताने १४ नियमों ले लिया था. और रात्रिक प्रतिक्रमण भी कर लिया था. वे १४ नियमो इस प्रकार से हैं—'सचित्त दव्व' इत्यादि।

तथा सहस्रकिरण संपन्न सूर्य भी अपने तेज से दीप्यमान हो चुका था. घर से निकलकर वह प्रदेशी राजा के पास पहुंचा. वहां पहुंच कर उसने प्रदेशी राजा को दोनों हाथ जोडकर नमस्कार किया. उन्हे वधाई दी और फिर ऐसा कहा आप देवानुप्रिय के लिये जो कम्बोजवासियोंने चार घोडे भेंटरूप

घेरथी नीकळ्यो ते वखते कमळो विकसित थई गया हता अथवा कमळ हरिण (मृग) विशेषना नेत्रो निद्रा रहित थई जवाथी उघडी चूक्या हता प्रभातनो वर्ण पीतधवल थई चूक्यो हतो. लोकोए–धार्मिक माणसोए–१४ नियमोने धारण करी लीधा हता अने रात्रिक प्रतिक्रमण पण करी लीधुं हतुं. ते १४ नियमो आ प्रमाणे छे

'सचित्तं दव्वं' इत्यादि.

तेमज सहस्रकिरण संपन्न सूर्य पण पोताना तेजथी देदीप्यमान थई चूक्यो हतो घेरथी नीकळीने आ चित्त प्रदेशी राजानी पासे गयो त्यां पहोंचीने तेणे प्रदेशी राजाने बन्ने हाथ जोडीने नमस्कार कर्या तेमने वधामणी आपीने कह्युं के आप दे

भवद्भ्यः काम्बोजैश्चत्वारोऽश्वा उपनयमुपनीताः=प्राभृतत्वेन समानीताः ते च मया देवानुप्रियेभ्यः=भवतां कृते अन्यदैव=तदैव विनयिताः=विनयं प्रापिताः शिक्षिताः, तत्=तस्मात्कारणात् एत आगच्छत तान आत्मर्द्धिकान=स्वकीय-प्रशस्तगत्यादिशक्तिसम्पन्नान अश्वान् पश्यत। ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रं सारथिमेवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं चित्र! तैरेव काम्बोजप्राप्तैश्चतुर्भिरश्वैः युक्तमेव=सज्जितमेव अश्वरथम् उपस्थापय यावत् प्रत्यर्पय, यावच्छन्देन उपस्थाप्य एतामाज्ञप्तिकां मम प्रत्यर्पय। ततः खलु स चित्रः सारथिः प्रदेशिना राज्ञा एवम्=अनेन सज्जितरथोपस्थापनरूपेण प्रकारेण उक्तः=कथितः हृष्टतुष्ट यावद्‌हृदयः, यावच्छन्देन-हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितः हर्षवशविसर्पद्‌हृदयःसन् उपस्थापयति=तैश्चतुर्भिरेवाश्वैर्युक्तमेवाश्वरथमुपस्थितं करोति एतां=राजोक्ताम् आज्ञप्तिकाम्=आज्ञां प्रत्यर्पयति='युक्त एव रथो मयाऽऽनीतः' इति सूचयति। ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रस्य सारथेः अन्तिके=समीपे-युक्तरथोपस्थापनरूपम् अर्थं=वाक्यं श्रुत्वा कर्णगोचरीकृत्य, निशम्य=हृद्यवधार्य हृष्टतुष्ट यावत्-यावच्छन्देन-हृष्टतुष्टचित्तानन्दितः प्रीतिमनाः परमसौमनस्यितो हर्षवशविसर्पद्‌हृदयःस्नातः कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः शुद्धप्रावेश्यानि माङ्गल्यानि वस्त्राणि प्रवरपरिहितः, इति सङ्ग्राह्यम्, अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरः एषामर्थस्तु प्रागुक्त एव, एतादृशः सन स्वात्=स्वकीयाद् गृहाद् भवनात् निर्गच्छति=निस्सरति।

में भेजे थे उन्हें मैंने उसी दिन आपके लिये सुशिक्षित कर दिया है, अतः आप आ करके उन्हें देख लेवें इस प्रकार चित्र सारथी के कथन को सुनकर प्रदेशी राजाने उससे कहा-तुम शीघ्र ही उन्हें रथ में जोतकर यहां ले आओ चित्र सारथीने ऐसा ही किया. जब रथ तैयार हो जाने का वृत्तान्त प्रदेशी राजा को ज्ञात हुआ तब आकर वह उसमें बैठ गया उसके बैठते ही चित्र सारथिने उस रथ को श्वेतांबिका नगरी के मध्यमार्ग से

કહ્યું. કે આપ દેવાનુપ્રિય માટે કંબોજદેશના નાગરિકોએ જે ચાર ઘોડાઓ ભેટરૂપમાં મોકલ્યા હતા તેમને તેજ દિવસે આપશ્રી માટે સુશિક્ષિત કરી દીધા છે. એથી આપ પધારીને તેમનું નિરીક્ષણ કરી લો. આ પ્રમાણે ચિત્રસારથિનું કથન સાંભળીને પ્રદેશી રાજાએ તેને કહ્યું. કે તમે સત્વરે તે ઘોડાઓને રથમાં જોતરીને અહીં ઉપસ્થિત કરો. ચિત્ર સારથિએ તે પ્રમાણે જ કામ પુરું કર્યું જ્યારે રથ તૈયાર થઇ જવાની ખબર રાજાની પાસે પહોંચાડવામાં આવી ત્યારે તે રાજા તે રથમાં બેસી ગયો. રાજા જ્યારે સવાર થઇ

ततः खलु स चित्रः सारथिस्तं रथं नैकानि=अनेकानि बहूनि योजनानि उद्भ्रामयति=शीघ्रगत्या धावयति। ततः खलु स प्रदेशी राजा उष्णेन=आतपेन च तृष्णया=पिपासया रथवातेन=रथगत्युद्भवेन वायुना च परिक्लान्तः=खिन्नः सन् चित्रं सारथिमेवमवादीत्-हे चित्र! परिक्लान्त=खिन्नं मे-मम शरीरम् अतो रथं परावर्त्तय=निवर्त्तय। ततः खलु स चित्रः सारथिः रथं परावर्त्तयति, यत्रैव मृगवनमुद्यानं तत्रैवोपागच्छति, प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्-एतत् खलु स्वामिन्! मृगवनमुद्यानमस्ति, अत्र=अस्मिन्नुद्याने स्थित्वा अश्वानां श्रमं=खेदं क्लमं=ग्लानिं च सम्यक्=समीचीनतया अपनयामः=दूरीकुर्मः। ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रं सारथिमेवमवादीत्-हे चित्र! एवं भवतु=यथा त्वया कथितं तथैव भवतु अत्रैव तिष्ठाम इति भावः ॥सू० १२५॥

मूलम्—तएणं से चित्ते सारही जेणेव मियवणे उज्जाणे जेणेव केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते तेणेव उवागच्छइ, तुरए णिगिण्हइ रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, तुरए मोएइ, पएसिं रायं एवं

होकर चलाया, जब नगरी से वह रथ बाहर हो गया तब उसने कई योजनों तक उस रथको इतने अधिकरूप से चलाया कि प्रदेशी राजा परिक्लान्त हो गया, (थकगया) आतप, से तप गया और पिपासा की वेदना से व्याकुल हो उठा। तब सारथि से उसने उसी समय रथको लौटाने के लिये कहा. सारथिने आज्ञानुसार रथ को लौटा लिया और मृगवन उद्यान, की ओर ले चला। वहां पहुंच कर सारथिने घोडों को विश्रान्ति देने के निमित्त रथ खडा कर लिया और प्रदेशी राजा से वहां ठहर कर घोडोंको मार्गजन्य परिश्रमको दूर करने की बात कही प्रदेशी राजाने बातको मानलिया।सू. १२५।

ગયા ત્યારે ચિત્ર સારથિએ તે રથને શ્વેતાંબિકા નગરીની મધ્યમાર્ગમાંથી થઈને હાંકયો. આ પ્રમાણે તે રથ જ્યારે શ્વેતાંબિકા નગરીથી બહાર નીકળી ગયો ત્યારે ઘણા યોજનો સુધી તે રથને તીવ્ર વેગથી ચલાવ્યો કે જેથી તે પ્રદેશી રાજા પરિકલાંત થઈ ગયો, તાપથી તપી ગયો અને તરસની વેદનાથી વ્યાકુળ થઈ ગયો. રાજાએ સારથિને તરત જ રથ પાછો વાળવાનો આદેશ આપ્યો. સારથિએ રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે રથને પાછો વાળી લીધો અને મૃગવન ઉદ્યાનની તરફ તે રથને લઈ ગયો. ત્યાં પહોંચીને સારથિએ ઘોડાઓને વિશ્રાંત આપવા માટે રથ ને ઉભો રાખ્યો અને પ્રદેશી રાજાને ત્યાં રોકાઈને ઘોડાઓના રસ્તાના થાકને દૂર કરવાની વાત કરી. પ્રદેશી રાજાએ પણ તેની વાત માની લીધી, ॥સૂ. ૧૨૫॥

वयासी एह णं सामी ! आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमो! तएणं से पएसी राया रहाओ पच्चोरुहइ, चित्तेण सारहिणा सद्धिं आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमाणे पासइ, जत्थ केसिकुमारसमणं महइ-महालियाए परिसाए मज्झगयं महया सद्देणं धम्मसाइक्खमाणं पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति, मुंडा खलु भो ! मुंडं पज्जुवासंति, मूढा खलु भो ! मूढ पज्जुवासंति, अपंडिया खलु भो अपंडियं पज्जुवासंति, निव्विण्णाणा खलु भो ! निव्विण्णाणं पज्जुवासंति, से केसणं एस पुरिसे जड्डु मुंडे मुढे अपंडिए निव्विण्णाणे सिरीए हिरीए उवगए उत्तप्पसरीरे, एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ ? किं परिणामेइ ? किं खायइ ? किं पियइ ? किं दलइ ? किं पयच्छइ ? जं णं एस एमहालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झगए महया सद्देणं बूयाइ ? एवं संपेहेइ, चित्तं सारहिं एवं वयासी–चित्ता ! जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति जाव बूयाइ, साए वि णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए ॥ सू० १२६ ॥

छाया–ततः खलु स चित्रः सारथिः यत्रैव मृगवनमुद्यानं यत्रैव केशिनः कुमारश्रमणस्य अदूरसामन्तं तत्रैवोपागच्छति, तुरगान् निगृह्णाति, रथं

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि––

सूत्रार्थ–(तए णं से चित्ते सारही जेणेव मिगवणे उज्जाणे जेणेव केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते तेणेव उवागच्छइ) इसके बाद वह चित्रसारथि उस मृगवन उद्यान में स्थित केशिकुमारश्रमण के अदूर सामन्त स्थान पर

'तएणं से चित्ते सारही' इत्यादि।

सूत्रार्थः—(तएणं से चित्ते सारही जेणेव मियवणे उज्जाणे, जेणेव केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते तेणेव उवागच्छइ) त्यार पछी ते चित्र सारथि ते मृगवन उद्यानमां स्थित केशिकुमारश्रवणनी पासे रथने लइ गयो.

स्थापयति. रथात् प्रत्यवरोहति, तुरगान् मोचयति, प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्–अत्र खलु स्वामिन्! अश्वानां श्रमं क्लमं सम्यक् अपनयामः। ततः खलु स प्रदेशी राजा रथात् प्रत्यवरोहति, चित्रेण सारथिना सार्धम् अश्वानां श्रमं क्लमं सम्यक् अपनयन् पश्यति यत्र केशिकुमारश्रमणं महातिमहालयायाः परिषदो मध्यगतं महता शब्देन धर्ममाख्यान्तं दृष्ट्वा अयमेतद्रूप आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत–जडाः खलु भो! जडं पर्युपासते, मुण्डाः

रथको लेकर गया (तुरए णिगिण्हइ) वहा पहुंचते ही उसने घोडों को रोक लिया (रहं ठवेइ) और रथको खडा कर दिया (रहाओ पच्चोरुहइ) रथ के खडे हो जाने पर वह रथ से नीचे उतरा (तुरए मोएइ) नीचे उतर कर घोडों को रथ से खोल दिया (पएसिं रायं एवं वयासी) फिर उसने प्रदेशी राजा से ऐसा कहा–(एह णं समं किलामं सम्मं अवणेमो) हे स्वामिन्! रथ खडा हो चुका है आप उतर आइये, मैं यहां पर घोडों के श्रम को एवं उनकी मानसिक ग्लानि को ठीक तरह से दूर करलूं (तए णं से पएसी राया रहाओ पच्चोरुहइ) सारथि के इस कथन से वह प्रदेशी राजा रथ से नीचे उतरा (चित्तेण सारहिणा सद्धिं आसाण समं किलामं सम्मं अवणेमाणे पासइ) नीचे उतर कर उसने चित्र सारथि के साथ वहां घोडों का श्रम एवं क्लम (थकावट) अच्छी तरह से दूर करते हुए, एवं विश्राम करते हुए उस ओर देखा (जत्थ केसिकुमारसमण महइमहालियाए परिसाए मज्झगयं महया सद्देण धम्ममाइक्खमाणं पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए

(तुरए णिगिण्हइ) त्यां पहोंचतां ज तेणे घोडाओने उभा राख्या. (रहं ठवेइ) अने रथने थोभाव्यो (रहाओ पच्चोरुहइ) रथ ज्यारे उभो रही गयो त्यारे ते रथमांथी नीचे उतर्यो. (तुरए मोएइ) नीचे उतरीने घोडाओने रथमाथी मुकत कर्या. (पएसिं रायं एवं वयासी) त्यार पछी तेणे प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं–(एह ण सामी! आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमो) हे स्वामिन्! रथ उभो थई चूक्यो छे. आप नीचे उतरो हु अही घोडाओना श्रमने अने तेमनी मानसिक ग्लानि ने सारी रीते दूर करी दउ (तए णं से पएसी राया रहाओ पच्चोरुहइ) सारथिना आ कथनथी ते प्रदेशी राजा रथमाथी नीचे उतर्यो. (चित्तेण सारहिणा सद्धिं आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमाणे पासइ) नीचे उतरीने तेणे चित्रसारथिनी साथे त्या घोडाओनां श्रम अने कलम सारी रीते दूर करतां तेमज विश्राम करतां ते तरफ जोयुं (जत्थ केसिकुमारसमणं महइमहालियाए परिसाए मज्झगयं महया सद्देणं धम्ममाइक्खमाणं पासित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव

खलु भो ! मुण्डं पर्युपासते, मूढाः खलु भो ! मूढं पर्युपासते, अपण्डिताः खलु भो ! अपण्डितं पर्युपासते, निर्विज्ञानाः खलु भो ! निर्विज्ञानं पर्युपासते, स कीदृशः खलु एष पुरुषो जडो मुण्डो मूढोऽपण्डितो निर्विज्ञानः श्रिया ह्रिया उपगतः उत्तप्तशरीरः, एष खलु पुरुषः कमाहारमाहारयति ?

जाव समुप्पज्जित्था) कि जिस ओर एक बहुत बडी परिषदा के बीच में बैठे हुए केशीकुमारश्रमण जोर २ से धर्म का व्याख्यान कर रहे थे. इस प्रकार से उन्हें देखकर उसको इस प्रकार का यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ (जड्डा खलु भो ! जडं पज्जुवासंति, मुंडा खलु भो मुंडं पज्जुवासंति) अरे ! जो जन जड होते हैं वे जडकी सेवा करते हैं और जो जन मुंड होते हैं, वे मुण्ड की सेवा करते हैं (मूढा खलु भो मूढं पज्जुवासंति) तथा जो जन मूढ होते हैं, वे मूढ की सेवा करते हैं। (अपंडिया खलु भो अपंडियं पज्जुवासंति) जो अपण्डित होते है वे अपण्डित जन की सेवा करते हैं, (निव्विण्णाणा खलु भो निव्विण्णाणं पज्जुवासंति) जो विशिष्टज्ञान से रहित होते हैं, वे विशिष्टज्ञान से रहित की सेवा करते हैं। (से केस णं एस पुरिसे जडे, मुंडे, मूढे, अपंडिय निव्विण्णाणे सिरीए हिरीए उवगए उत्तप्पसरीरे) परन्तु यह कैसा पुरुष है जो जड, मुंड, मूढ, अपण्डित, निर्विज्ञान होता हुआ भी श्री से और ह्री से युक्त है (उत्तप्पसरीरे) शरीर की कान्ति से संपन्न है। (एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ) यह पुरुष क्या किस प्रकार का आहार करता है ?

समुप्पज्जित्था) के जे तरफ एक विशाळ परिषदानी वच्चे बेठेला केशीकुमारश्रमण बहु मोटा स्वरे धर्मनुं व्याख्यान करी रह्या हता. आ प्रमाणे तेमने जोइने तेने आ जातनो आध्यात्मिक यावत मनोगत संकल्प उत्पन्न थयो के (जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति, मुंडा खलु भो मुंडं पज्जुवासंति) अरे ! जे लोको जड होय छे, तेओ जडने सेवे छे अने जे लोको मुंड होय छे. तेओ मुंडनी सेवा करे छे (मूढा खलु भो मूढ पज्जुवासंति) तेमज जे लोको मूढ होय छे तेओ मूढनी सेवा करे छे. (अपंडिया खलु भो अपंडियं पंज्जुवासंति) जेओ अपंडित होय छे तेओ अपंडितोने सेवे छे (निव्विण्णाणा खलु भो ! निव्विण्णाणं पज्जुवासंति) जेओ विशिष्ट ज्ञानथी रहित छे, ते विशिष्ट ज्ञान रहितने सेवे छे. (से केस णं एस पुरिसे जड्डे, मुंडे, मूढे, अपंडिए. निव्विण्णाणे सिरीए हिरीए उवगए उत्तप्पसरीरे) पण आ केवो पुरुष छे के जे जड, मुंड, मूढ, अपंडित, निर्विज्ञान होवा छतां श्री तेमज ह्री थी युक्त छे. (उत्तप्पसरीरे) शरीरनी कांतिथी संपन्न छे (एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ) आ पुरुष कई

किं परिणमयति ? किं खादति ? किं [illegible] ? किं [illegible]
यत् खलु एष एतावन्महालयाए मनुष्यपरिषदो [illegible]
ब्रवीति ?, एवं संप्रेक्षते, [illegible] भो ! जड पर्युपासते यावद् ब्रवीति, [illegible]
शक्नोमि सम्यक् प्रकामं प्रविचरितुम् ॥सू० १९६॥

टीका—'तएणं से चित्ते' इत्यादि—

ततः खलु स चित्रः सारथिः [illegible]
केशिनं कुमारश्रमणस्य अदूरसामन्ते [illegible]

(किं परिणामेइ) किस प्रकार से खाये हुए भोजन को परिणमाता है ? (किं खायइ, किं पियइ, किं दलइ, किं पयच्छइ) कैसी [illegible] वस्तु को यह खाता है ? किस प्रकार की रुचिर वस्तु का यह पान करता है ? यह लोगों के लिये क्या देता है ? क्या विशेषरूप से यह [illegible] है ? (जं णं एस ए महालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झगए महया सद्देणं बूयाइ) जो यह पुरुष इतनी बड़ी विशाल मनुष्य परिषदा के बीच में बैठ कर बड़े जोर से बोल रहा है ? (एवं संपेहेइ) ऐसा उसने विचार किया (चित्तं सारहिं एवं वयासी) इस प्रकार विचार करके फिर उसने चित्र सारथि से ऐसा कहा–(चित्ता ! जड्डा खलु भो जड्डं पज्जुवासंति, जाव बूयाइ, साए वि य णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए) हे चित्र! जड जड की पर्युपासना करते हैं यावत् यह बडे जोर से बोल रहा है। मैं अपनी भी उस उद्यानभूमि में इच्छानुसार अच्छी तरह से घूम नहीं पा रहा हूं।

जातनो आहार करे छे ? (किं परिणामेइ) ख़वीशीने खापेला भोजनने परिणमावे छे ? (किं खायइ, किं पियइ, किं दलइ, किं पयच्छइ) कई जातनी रुचिनी वस्तुओ आ आहार करे छे ? कई जातनी रुचिनी वस्तुनुं आ पान करे छे ? लोकोने आ शुं आपे छे ? विशेषरूपथी आ शुं लोकोना माटे वितरित करे छे ? (जं णं एस ए महालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झगए महया सद्देणं बूयाइ) जे के आ पुरुष आटली मोटी लोक परिषदानी वच्चे बेसीने बहु मोटा साद बोली रह्यो छे ? (एवं संपेहेइ) आ प्रमाणे तेणे विचार कर्यो (चित्तं सारहिं एवं वयासी) आम विचार करीने पछी तेणे चित्र सारथिने आ प्रमाणे कह्युं–(चित्ता ! जड्डा खलु भो जड्डं पज्जुवासंति, जाव बूयाइ, साए वि य णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए) हे चित्र! जडजडने सेवे छे यावत् आ बहु मोटा सादे बोली रह्यो छे. हुं पोते पण आ उद्यानभूमिमा स्वेच्छापूर्वक सारी रीते [illegible]

जडोऽयमितिरूपः यावच्छब्देन-'चिन्तितः=कल्पितः, प्रार्थितः, मनोगतः संकल्पः' इति स ग्राह्यम्, तत्र-चिन्तितः=पुनः पुनः स्मरणरूपो विचारः 'मुण्डोऽय-'मितिलक्षणो द्विपत्रित इव, कल्पितः=स एव विचारः 'मुण्डोऽय'-मिति रूपः पल्लवितइव, प्रार्थितः, स एवेष्टरूपेण स्वीकृतः 'निश्चयेनायमपण्डितः इतिरूपः पुष्पितइव मनोगतः संकल्पः मनसि दृढरूपेण निश्चयः 'सत्ययं निर्विज्ञानः' इतिलक्षणः फलितइव समुदपद्यत=समुत्पन्नः। तदेव दर्शयति-'जड्डा' इत्यादि,

देखकर इसके मन में इस प्रकार का संकल्प-विचार उत्पन्न हुआ. 'यहां यावत् पद से संकल्प के आध्यात्मिक, चिन्तित, कल्पित, मनोगत ये विशेषण गृहीत हुए है. इनकी सार्थकता इस प्रकार से है, यह विचार उसकी आत्मा में पहिले अङ्कुर के रूप में जमा, अतः वह आध्यात्मिक हुआ बाद में वह पुनः पुनः स्मरणरूप होने के कारण चिन्तितरू हो गया अर्थात् यह मुड है यह मूढ है इस तरह वारर स्मृति में आने के कारण यह विचार द्विपत्रित अङ्कुर की तरह चिन्तितरूप बन गया-पुनः वही विचार यह मुण्डित ही है, और कोई नहीं है इसरूप से निश्चयापन्न होने के कारण पल्लवित हुए अंकुर की तरह प्रार्थित हो गया. 'अयमपण्डित एव निश्चयेन' फिर ऐसा निश्चय हो जाने से कि यह नियमतः अपण्डित ही है(पण्डित नहीं है) यह विचार पुष्पित अंकुर की तरह इष्टरूप से स्वीकृत हो जाने के कारण पुष्पित हो गया. वाद में 'यह विज्ञान रहित है' इसरूप से मनमें दृढरूप से निश्चित हो जाने के कारण मनोगत हो गया. तात्पर्य कहने का

પ્રરૂપણા કરતા તે કેશિકુમારશ્રમણ પર પડી. તેમને જોઇને તેમના મનમા આ જાતનો સંકલ્પ-વિચાર-ઉદ્‌ભવ્યો. અહીં યાવત્ પદથી સંકલ્પના આધ્યાત્મિક, ચિંતિત, કલ્પિત, પ્રાર્થિત, મનોગત આ બધા વિશેષણો ગ્રહણ કરવામા આવ્યા છે. આ બધા વિશેષણોની સાર્થકતા આ પ્રમાણે સમજવી. આ વિચાર તેના આત્મામાં પહેલા અંકુરના રૂપમાં જન્મ્યો. તેથી તે આધ્યાત્મિક થયો. ત્યારપછી તે વારવાર સ્મરણરૂપ હોવા બદલ ચિંતિત રૂપ થઇ ગયો. એટલે કે આ મુડ છે, આ મૂઢ છે આ પ્રમાણે વારંવાર સ્મૃતિમાં આવવાથી આ વિચાર દ્વિપત્રિત-અંકુરની જેમ ચિંતિતરૂપ થઇ ગયો. પછી તેજ વિચાર આ મુંડિત જ છે અન્ય નહિ, આ પ્રમાણે નિશ્ચયાપન્ન હોવા બદલ પલ્લવિત થયેલા અંકુરની જેમ પ્રાર્થિત થઇ ગયો. "अयमपण्डित एव निश्चयेन" ત્યાર પછી આ જાતનો નિશ્ચય થઇ જવાથી આ નિયમતઃ અપંડિત જ છે આ વિચાર પુષ્પિત અંકુરની જેમ ઇષ્ટ રૂપથી સ્વીકૃત થઇ જવા બદલ પુષ્પિત થઇ ગયો. ત્યાર બાદ 'આ વિજ્ઞાન રહિત છે.' આ પ્રમાણે મનમાં દૃઢરૂપમા નિશ્ચિત થઇ જવાથી આ

जडोऽयमितिरूपः यावच्छब्देन-'चिन्तितः=कल्पितः, प्रार्थितः, मनोगतः संकल्पः' इति संग्राह्यम्, तत्र-चिन्तितः=पुनः पुनः स्मरणरूपो विचारः 'मुण्डोऽय-'मितिलक्षणो द्विपत्रित इव, कल्पितः=स एव विचारः 'मुण्डोऽय'-मिति रूपः पल्लवितइव, प्रार्थितः, स एवेष्टरूपेण स्वीकृतः 'निश्चयेनायमपण्डितः इतिरूपः पुष्पितइव मनोगतः संकल्पः मनसि दृढरूपेण निश्चयः 'सत्ययं निर्विज्ञानः' इतिलक्षणः फलितइव समुदपद्यत=समुत्पन्नः। तदेव दर्शयति-'जड्डा' इत्यादि,

देखकर इसके मन में इस प्रकार का संकल्प-विचार उत्पन्न हुआ. 'यहां यावत् पद से संकल्प के आध्यात्मिक, चिन्तित, कल्पित, मनोगत ये विशेषण गृहीत हुए है. इनकी सार्थकता इस प्रकार से है, यह विचार उसकी आत्मा में पहिले अङ्कुर के रूप में जमा, अतः वह आध्यात्मिक हुआ बाद में वह पुनः पुनः स्मरणरूप होने के कारण चिन्तितरू हो गया अर्थात् यह मुड है यह मूढ है इस तरह बार२ स्मृति में आने के कारण यह विचार द्विपत्रित अङ्कुर की तरह चिन्तितरूप बन गया-पुनः वही विचार यह मुण्डित ही है, और कोई नहीं है इसरूप से निश्चयापन्न होने के कारण पल्लवित हुए अंकुर की तरह प्रार्थित हो गया. 'अयमपण्डित एव निश्चयेन' फिर ऐसा निश्चय हो जाने से कि यह नियमतः अपण्डित ही है(पण्डित नहीं है) यह विचार पुष्पित अंकुर की तरह इष्टरूप से स्वीकृत हो जाने के कारण पुष्पित हो गया. बाद में 'यह विज्ञान रहित है' इसरूप से मनमें दृढरूप से निश्चित हो जाने के कारण मनोगत हो गया. तात्पर्य कहने का

પ્રરૂપણા કરતા તે કેશિકુમારશ્રમણ પર પડી. તેમને જોઈને તેમનાં મનમા આ જાતનો સંકલ્પ-વિચાર-ઉદ્‌ભવ્યો. અહીં યાવત્ પદથી સંકલ્પના આધ્યાત્મિક, ચિંતિત, કલ્પિત, પ્રાર્થિત, મનોગત આ બધા વિશેષણો ગ્રહણ કરવામાં આવ્યા છે. આ બધા વિશેષણોની સાર્થકતા આ પ્રમાણે સમજવી. આ વિચાર તેના આત્મામાં પહેલા અંકુરના રૂપમાં જન્મ્યો. તેથી તે આધ્યાત્મિક થયો. ત્યારપછી તે વારંવાર સ્મરણરૂપ હોવા બદલ ચિંતિત રૂપ થઇ ગયો. એટલે કે આ મુંડ છે, આ મૂઢ છે આ પ્રમાણે વારંવાર સ્મૃતિમાં આવવાથી આ વિચાર દ્વિપત્રિત-અંકુરની જેમ ચિંતિતરૂપ થઇ ગયો. પછી તેજ વિચાર આ મુંડિત જ છે અન્ય નહિ, આ પ્રમાણે નિશ્ચયાપન્ન હોવા બદલ પલ્લવિત થયેલા અંકુરની જેમ પ્રાર્થિત થઇ ગયો. "अयमपण्डित एव निश्चयेन" ત્યાર પછી આ જાતનો નિશ્ચય થઇ જવાથી આ નિયમત. અપંડિત જ છે આ વિચાર પુષ્પિત અંકુરની જેમ ઇષ્ટ રૂપથી સ્વીકૃત થઈ જવા બદલ પુષ્પિત થઇ ગયો. ત્યાર બાદ 'આ વિજ્ઞાન રહિત છે' આ પ્રમાણે મનમાં દૃઢરૂપમા નિશ્ચિત થઇ જવાથી આ

जडोऽयमितिरूपः यावच्छब्देन-'चिन्तितः=कल्पितः, प्रार्थितः, मनोगतः संकल्पः' इति संग्राह्यम्, तत्र-चिन्तितः=पुनः पुनः स्मरणरूपो विचारः 'मुण्डोऽय-'मितिलक्षणो द्विपत्रित इव, कल्पितः=स एव विचारः 'मुण्डोऽय'-मिति रूपः पल्लवितइव, प्रार्थितः, स एवेष्टरूपेण स्वीकृतः 'निश्चयेनायमपण्डितः इतिरूपः पुष्पितइव मनोगतः संकल्पः मनसि दृढरूपेण निश्चयः 'सत्ययं निर्विज्ञानः' इतिलक्षणः फलितइव समुदपद्यत=समुत्पन्नः। तदेव दर्शयति-'जड्डा' इत्यादि,

देखकर इसके मन में इस प्रकार का संकल्प-विचार उत्पन्न हुआ. 'यहां यावत् पद से संकल्प के आध्यात्मिक, चिन्तित, कल्पित, मनोगत ये विशेषण गृहीत हुए हैं. इनकी सार्थकता इस प्रकार से है, यह विचार उसकी आत्मा में पहिले अङ्कुर के रूप में जमा, अतः वह आध्यात्मिक हुआ बाद में वह पुनः पुनः स्मरणरूप होने के कारण चिन्तितरू हो गया अर्थात् यह मुंड है यह मूढ है इस तरह बार२ स्मृति में आने के कारण यह विचार द्विपत्रित अङ्कुर की तरह चिन्तितरूप बन गया-पुनः वही विचार यह मुण्डित ही है, और कोई नहीं है इसरूप से निश्चयापन्न होने के कारण पल्लवित हुए अंकुर की तरह प्रार्थित हो गया. 'अयमपण्डित एव निश्चयेन' फिर ऐसा निश्चय हो जाने से कि यह नियमतः अपण्डित ही है(पण्डित नहीं है) यह विचार पुष्पित अंकुर की तरह इष्टरूप से स्वीकृत हो जाने के कारण पुष्पित हो गया. बाद में 'यह विज्ञान रहित है' इसरूप से मनमें दृढरूप से निश्चित हो जाने के कारण मनोगत हो गया. तात्पर्य कहने का

પ્રરૂપણા કરતા તે કેશિકુમારશ્રમણ પર પડી. તેમને જોઇને તેમનાં મનમાં આ જાતનો સંકલ્પ-વિચાર-ઉદ્ભવ્યો. અહીં યાવત્ પદથી સંકલ્પના આધ્યાત્મિક, ચિંતિત, કલ્પિત, પ્રાર્થિત, મનોગત આ બધા વિશેષણો ગ્રહણ કરવામાં આવ્યાં છે. આ બધા વિશેષણોની સાર્થકતા આ પ્રમાણે સમજવી. આ વિચાર તેના આત્મામાં પહેલાં અંકુરના રૂપમાં જન્મ્યો. તેથી તે આધ્યાત્મિક થયો. ત્યારપછી તે વારવાર સ્મરણરૂપ હોવા બદલ ચિંતિત રૂપ થઇ ગયો. એટલે કે આ મુંડ છે, આ મૂઢ છે આ પ્રમાણે વારંવાર સ્મૃતિમાં આવવાથી આ વિચાર દ્વિપત્રિત-અંકુરની જેમ ચિંતિતરૂપ થઇ ગયો. પછી તેજ વિચાર આ મુંડિત જ છે અન્ય નહિ, આ પ્રમાણે નિશ્ચયાપન્ન હોવા બદલ પલ્લવિત થયેલા અંકુરની જેમ પ્રાર્થિત થઇ ગયો. "અયમપણ્ડિત એવ નિશ્ચયેન" ત્યાર પછી આ જાતનો નિશ્ચય થઇ જવાથી આ નિયમત. અપંડિત જ છે આ વિચાર પુષ્પિત અંકુરની જેમ ઇષ્ટ રૂપથી સ્વીકૃત થઇ જવા બદલ પુષ્પિત થઇ ગયો. ત્યાર બાદ 'આ વિજ્ઞાન રહિત છે.' આ પ્રમાણે મનમાં દૃઢરૂપમા નિશ્ચિત થઇ જવાથી આ

विशिष्टज्ञ.नरहिताः बुद्धिहीनत्वात्, त एव निर्विज्ञान=सद्बोधरहितमेनं पर्युपासते। स एष कीदृशः पुरुषः यो जडो मुण्डो मूढोऽपण्डितो निर्विज्ञानोऽपि श्रिया=महातिमहालयपरिषदादिशोभया, ह्रिया=लज्जया-कुचेष्टावर्जनरूपया उपगतः=संपन्नः तथा-उत्तप्तशरीरः=शरीरकान्त्या दीप्यमानो वर्तते इति किं कारणम्? कारणं चिन्तयति—एष खलु पुरुषः कं=किम्प्रकारम् आहारं=भोजनम् आहारयति=करोति? किं=केन प्रकारेण भुक्तं भोजनं परिणमयति=परिणामं प्रापयति?, किं=कीदृशं रुचिरं वस्तु खादति? किं=कीदृशं रुचिरं मपाणकादिकं पिबति?, किं ददाति एभ्यो लोकेभ्यः, किं प्रयच्छति=विशेषेण ददाति यत्=यस्मात्कारणात् खलु एष पुरुषः एतावन्महालयायाः=महत्याः मनुष्यपरिषदो मध्यगतः=मध्योपविष्टःसन् महता शब्देन=उच्चैःस्वरेण ब्रवीति=वदति?। एवं=पूर्वोक्तप्रकारेण संप्रेक्षते=विचारयति, चित्र सारथिमेवमवा-

सेवा करते हैं। यह कैसा पुरुष है? जो जड, मुण्ड, मूढ, अपण्डित एवं निर्विज्ञान हुआ भी महतिमहालय परिषदा-याने विशालसभा में शोभा से एवं कुचेष्टावर्जनरूप लज्जा से संपन्न बना हुआ है। एवं शरीरकी कान्ति से देदीप्यमान हो रहा है. इसमें कारण क्या है? क्या यह इस प्रकार के आहारको करता है जो इसके शरीर में ऐसी कान्ति प्रदान करता है— यही बात वह 'कं आहारं आहारयति' इत्यादि पदों द्वारा विचार करता है यह किस प्रकार के आहारको लेता है? तथा किस प्रकार से भुक्त भोजन को यह परिणमाता है? यह कैसी रुचिर वस्तु खाता है? अगर कैसे रुचिरपान को यह पीता है? यह इन लोको के लिये क्या दे रहा है? क्या विशेषरूप से यह इन्हे प्रदान कर रहा है? जो यह इस बडी भारी मनुष्य परिषदा के बीच में बैठा हुआ बडे जोर से बोल रहा है। इस प्रकार से उसने विचार किया—

વ્યક્તિ છે કે જે જડ, મુંડ, મૂઢ, અપંડિત અને નિર્વિજ્ઞાન હોવા છતાં પણ મહતિમહાલય પરિષદા એટલે કે વિશાળ સભામાં શોભાથી અને કુચેષ્ટા વર્જનરૂપ લજ્જાથી યુક્ત થયેલો છે તેમજ શરીરકાંતથી દીપ્યમાન થઈ રહ્યો છે આનું શું કારણ છે? શું તે આ જાતનો આહાર કરે છે કે જે એના શરીરમાં એવી કાંતિ ઉત્પન્ન કરે છે એજ વાત ને 'कं आहारं आहारयति' વગેરે પદો વડે બતાવે છે. આ કઈ જાતનો આહાર ગ્રહણ કરે છે? તેમજ કઈ જાતના ભુક્ત ભોજનને આ પરિણમાવે છે? આ કઈ જાતની રુચિર વસ્તુનો આહાર કરે છે? કેવા રુચિર પાનપદાર્થને આ પીવે છે? આ પુરુષ આ બધાને શું આપી રહ્યો છે? વિશેષરૂપથી આ બધા એકત્ર થયેલા લોકોને આ શું આપી રહ્યો છે? કે જે આ બહુ મોટી વિશાળ પરિષદાની વચ્ચે બેસીને બહુ મોટા સ્વરથી બોલી રહ્યો છે આ પ્રમાણે તેણે વિચાર કર્યો ત્યાર-

ज्ञानोपगतः अधोऽवधिकः अन्नजीवितः। ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रं सारथिमेवमवादीत्–अधोऽवधिकस्य खलु वदसि चित्र! अन्नजीवितत्वं खलु

उस चित्र सारथिने प्रदेशी राजा से कहा–(एस णं सामी! पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमारसमणे जाइसंपण्णे जाव चउनाणोवगए) हे स्वामिन्! ये पुरोवर्ती केशीकुमारश्रमण हैं। जो कि पार्श्वनाथ की शिष्यपरम्परा में उत्पन्न हुए हैं। इन्होंने कुमारावस्था में ही संयम ग्रहण किया है इसलिये इन्हे कुमारश्रमण कहा गया है। ये जातिसंपन्न है, यावत् कुलसंपन्न है, इत्यादि पूर्व में कहे गये विशेषणों वाले हैं। इन विशेषणों का अर्थ वहीं पर लिखा जा चुका है. अतः यहा पर पुनः नहीं लिखा है। ये मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और मनः पर्यवज्ञान के अधिपति है–चार ज्ञान के धारी हैं (अधोऽवहिए अण्णजीविए) इनका जो अवधिज्ञान है वह परमावधि से किञ्चित ही न्यून है। इनका जीवन प्रासुक एषणीय अन्नपान से है. अर्थात् ये प्रासुक एषणीय ही आहार लेते हैं, उद्गमादि दोष से दूषित आहार नहीं लेते है। (तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी) तब प्रदेशी राजाने चित्र सारथि से ऐसा कहा–(आहोहियं णं वयासी चित्ता! अण्णजीवियत्तं णं वयासी चित्ता?) हे चित्र! जो तुम एसा कहते हो कि इनका अवधिज्ञान परमावधि से

ચિત્ર સારથિએ પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ (एस णं सामी! पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमारसमणे जाइसम्पण्णे जाव चउनाणोवगए) હે સ્વામિન્! આ આપણી સામે કેશીકુમાર શ્રમણ છે. કે જેઓ પાર્શ્વનાથની શિષ્યપરંપરામા ઉત્પન્ન થયા છે. એમણે કુમારાવસ્થામા જ સયમ ગ્રહણ કર્યો છે એથી જ એમને કુમાર-શ્રમણ કહેવામા આવ્યા છે એઓ જાતિસંપન્ન છે, યાવત્ કુલસંપન્ન છે, વગેરે પહેલા કહેવાયેલાં વિશેષણોથી યુક્ત છે આ બધા વિશેષણોનો અર્થ પહેલાં સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યો છે. તેથી અહીં ફરી કહેવામા આવ્યો નથી, એઓ મતિજ્ઞાન, શ્રુત-જ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન અને મનપર્યવજ્ઞાનના અધિપતિ છે, ચાર જ્ઞાનધારી છે. (अधोऽवहिए अण्णजीविए) એમનુ જે અવધિજ્ઞાન છે તે પરમાવધિથી થોડુ જ કમ છે. એમનુ જીવન પ્રાસુક એષણીય અન્નપાનથી છે એટલે કે એઓ પ્રાસુક એષણીય આહાર ગ્રહણ કરે છે ઉદ્ગમ વગેરે દોષોથી દૂષિત આહાર એઓ ગ્રહણ કરતા નથી (तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी) ત્યારે પ્રદેશી રાજાએ ચિત્ર સારથિને આ પ્રમાણે કહ્યુ. (आहोहियं णं वयासी चित्ता! अण्णजीवियत्तं णं वयासी चित्ता?) હે ચિત્ર! જે તમે આ પ્રમાણે કહો છો કે એમનુ અવધિજ્ઞાન પરમાવધિ કરતા થોડું જ અલ્પ છે તેમજ એઓ પ્રાસુક એષણીય અન્ન

दीत्-प्रकटमवदत्-चित्र ! जडाः खलु जडं पर्युपासते, यावत्-यावच्छब्देन-पूर्वोक्तं सर्वं ग्राह्यम्, ब्रवीति=उच्चस्वरेण वदति येन कारणेनाहं स्वस्यामपि=स्वकीयायामपि उद्यानभूमौ सम्यक्=सम्यक्प्रकारेण प्रकामम्-अतिशयं। प्रविचरितुं=संचरितुं नो शक्नोमि=न समर्थो भवामि ॥सू० १२६॥

मूलम्—तएणं से चित्ते सारही पएसिरायं एवं वयासी—एस णं सामी । पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमारसमणे जाइसंपण्णे जाव चउनाणोवगए अधोऽवहिए अण्णजीविए । तएणं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी—आहोहियं णं वयासि चित्ता ! अण्णजीवियत्तं णं वयासि चित्ता ! ? हंता ! सामी ! आहोहियं णं वयामि अण्णजीवियत्तं णं वयामि । अभिगमणिज्जे णं चित्ता ! एस पुरिसे ? हंता ! सामी ! अभिगमणिज्जे । अभिगच्छामो णं चित्ता ! अम्हे एयं पुरिसं ? हंता ! सामी ! अभिगच्छामो ॥सू० १२७॥

छाया—ततः खलु स चित्रः सारथिः प्रदेशिराजमेवमवादीत-एष खलु स्वामिन् ! पार्श्वापत्यीयः केशी नामकुमारश्रमणः जातिसंपन्नः यावत् चतु-

---

बाद में वह चित्र सारथि से प्रकटरूप में इस तरह से कहने लगा-चित्र ! जड जड की उपासना करते हैं इत्यादि यहां यावत् शब्द से पूर्वोक्त सब कथन जो यह जोर२ से इस मनुष्य परिषदा के बीच में बोल रहा है यहां तक का ग्रहण हुआ है। इसी कारण मैं अपनी भी इस उद्यानभूमि में ठीक तरह से घूम नहीं पा रहा हूं ॥ सू० १२६ ॥

'तए णं से चित्ते सारही' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं से चित्ते सारही पएसिरायं एवं वयासी) तब

પછી તે પ્રકટરૂપમાં ચિત્ર સારથિને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો. કે હે ચિત્ર ! જડ જડની ઉપાસના કરે છે વગેરે. અહીં યાવત્ શબ્દથી પૂર્વોક્ત બધું કથન-કે જે આ મોટા સાદે મનુષ્ય પરિષદાની વચ્ચે બોલી રહ્યો છે. અહીં સુધીનું ગ્રહણ કરવું જોઈએ. એથી જ હું આ મારી જ ઉદ્યાન ભૂમિમાં સારી રીતે હરીફરી શકતો નથી. ॥સૂ. ૧૨૬॥

'तए णं से चित्ते सारही' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं से चित्ते सारही पएसिरायं एवं वयासी) त्यारे

ज्ञानोपगतः अधोऽवधिकः अन्नजीवितः। ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्र सारथिमेवमवादीत्—अधोऽवधिकयं खलु वदसि चित्र ! अन्नजीवितत्त्वं खलु

उस चित्र सारथिने प्रदेशी राजा से कहा—(एस णं सामी ! पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमारसमणे जाइसपण्णे जाव चउनाणोवगए) हे स्वामिन ! ये पुरोवर्ती केशीकुमारश्रमण हैं। जो कि पार्श्वनाथ की शिष्यपरम्परा में उत्पन्न हुए हैं। इन्होंने कुमारावस्था में ही संयम ग्रहण किया है इसलिये इन्हे कुमारश्रमण कहा गया है। ये जातिसंपन्न हैं, यावत् कुलसंपन्न हैं, इत्यादि पूर्व में कहे गये विशेषणों वाले हैं। इन विशेषणों का अर्थ वहीं पर लिखा जा चुका है. अतः यहां पर पुनः नहीं लिखा है। ये मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और मनः पर्यवज्ञान के अधिपति हैं—चार ज्ञान के धारी हैं (अधोऽवहिए अण्णजीविए) इनका जो अवधिज्ञान है वह परमावधि से किञ्चित ही न्यून है। इनका जीवन प्रासुक एषणीय अन्नपान से है. अर्थात् ये प्रासुक एषणीय ही आहार लेते हैं, उद्गमादि दोष से दूषित आहार नहीं लेते हैं। (तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी) तब प्रदेशी राजाने चित्र सारथि से ऐसा कहा—(आहोहियं णं वयासी चित्ता ! अण्णजीवियत्तं णं वयासी चित्ता ?) हे चित्र ! जो तुम ऐसा कहते हो कि इनका अवधिज्ञान परमावधि से

ચિત્ર સારથિએ પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ (एस णं सामी ! पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमारसमणे जाइसम्पण्णे जाव चउनाणोवगए) હે સ્વામિન્ ! આ આપની સામે કેશીકુમાર શ્રમણ છે. કે જેઓ પાર્શ્વનાથની શિષ્યપરંપરામાં ઉત્પન્ન થયા છે. એમણે કુમારાવસ્થામાં જ સંયમ ગ્રહણ કર્યો છે એથી જ એમને કુમારશ્રમણ કહેવામાં આવ્યા છે એઓ જાતિસંપન્ન છે, યાવત્ કુલસંપન્ન છે, વગેરે પહેલા કહેવાયેલાં વિશેષણોથી યુક્ત છે. આ બધા વિશેષણોનો અર્થ પહેલા સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યો છે. તેથી અહીં ફરી કહેવામાં આવ્યો નથી, એઓ મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન અને મનપર્યવજ્ઞાનના અધિપતિ છે, ચાર જ્ઞાનધારી છે. (अधोऽवहिए अण्णजीविए) એમનુ જે અવધિજ્ઞાન છે તે પરમાવધિથી થોડું જ ન્યૂન છે. એમનુ જીવન પ્રાસુક એષણીય અન્નપાનથી છે એટલે કે એઓ પ્રાસુક એષણીય આહાર ગ્રહણ કરે છે. ઉદ્ગમ વગેરે દોષોથી દૂષિત આહાર એઓ ગ્રહણ કરતા નથી (तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी) ત્યારે પ્રદેશી રાજાએ ચિત્ર સારથિને આ પ્રમાણે કહ્યું. (आहोहियं णं वयासी चित्ता ! अण्णजीवियत्तं णं वयासी चित्ता?) હે ચિત્ર ! જો તમે આ પ્રમાણે કહો છો કે એમનુ અવધિજ્ઞાન પરમાવધિ કરતા થોડું જ ન્યૂન છે તેમજ એઓ પ્રાસુક એષણીય અન્ન

वदसि चित्र !?। हन्त स्वामिन् ! आधोऽवधिकं खलु वदामि अन्नजीवि तत्वं खलु वदामि। अभिगमनीयः खलु चित्र ! एष पुरुषः? हन्त ! स्वामिन ! अभिगमनीयः। अभिगच्छाम खलु चित्र !.वयं एतं पुरुषम् ? हन्त ! स्वामिन् ! अभिगच्छामः ॥सू० १८७॥

टीका—'तएणं से चित्ते' इत्यादि–ततः खलु स चित्रः सारथिः प्रदेशि राजमेवमवादीत्–हे स्वामिन् ! एषः=अयं–पुरोवर्त्ती पार्श्वापत्यीयः=पार्श्वस्वामि शिष्यपरम्परासंजातः केशी नाम कुमारश्रमणः=कुमारश्चासौ श्रमणश्च कुमार–श्रमणः कुमारावस्थायामेव गृहीतसंयमः, कीदृशोऽयमित्याह-जातिसंपन्नः यावत् यावच्छब्देन 'कुलसंपन्न.' इत्यादिविशेषणा नसर्वाणि पूर्वसूत्रोक्तानि संग्राह्याणि

किंचित् ही न्यून है तथा ये प्रासुक एषणीय ही आहार लेते है सो क्या यह बात तुम सत्य कहते हो ? (हंता सामी ! आहोहियं णं वयामि, अण्णजीवियत्तं णं वयामि) हां, स्वामिन् ! मैं सत्य कहता हूं कि इनका अवधिज्ञान परमावधि से किंचित् न्यून है और ये प्रासुक एषणीय ही आहार लेते हैं। (अभिगमणिज्जे णं चित्ता ! एस पुरिसे) तो हे चित्र ! यह पुरुष अभिगमनीय है. अर्थात् परिचय करने के योग्य है (हंता सामी ! 'अभिगमणिज्जे) हां स्वामिन्। ये आपके लिये अभिगमनीय है अर्थात् परिचय करने के योग्य हैं। (अभिगच्छामो णं चित्ता ! अम्हे एयं पुरिसं) तो हे चित्र ! मैं इनके साथ परिचय करलूं ? (हंता सामी ! अभिगच्छामो) हां स्वामिन ! आप इनके साथ परिचय करें।

इसका टीकार्थ इस मूलार्थ के जैसा ही है। केवल विशेषता अण्णजीवियत्त' पद में है. इसका अर्थ तो मूलार्थ में लिखा जा चुका है–

જ ગ્રહણ કરે છે તો શું આ વાત સાચી છે? (हंता सामी! आहोहियं ण वयामि अण्णजीवियत्तं णं वयामी) હા સ્વામિન ! હું સાચી વાત કહું છું. એમનું અવધિજ્ઞાન પરમાવધિ કરતાં થોડું કમ છે અને એઓ પ્રાસુક એષણીય આહાર ગ્રહણ કરે છે. (अभिगमणिज्जे णं चित्ता ! एस पुरिसे) તો હે ચિત્ર ! આ પુરુષ અભિગમનીય છે એટલે કે ઓળખાણ કરવા યોગ્ય છે. (हंता सामी ! अभिगमणिज्जे) હાં સ્વામિન્ ! એઓ આપના માટે અભિગમનીય છે એટલે કે ઓળખાણ કરવા યોગ્ય છે. (अभिगच्छामो ण चित्ता! अम्हे एयं पुरिसं)તો હે ચિત્ર! હું એમની સાથે ઓળખાણ કરું? (हंता सामी अभिगच्छामो) હા સ્વામિન્ તમે એમની સાથે ઓળખાણ કરી લો.

આ સૂત્રનો ટીકાર્થ મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે. વિશેષતા ફક્ત 'अणजीवियत्त' માં છે. આનો એક અર્થ તો મૂલાર્થમાં જ લખવામાં આવ્યો છે. અને બીજો

अर्थोऽपि तत एव बोध्यः। चतुर्ज्ञानोपगतः=मत्यादिज्ञानचतुष्टयसंपन्नः अधोऽवधिकः=अधः=परमावधेरधोवर्ती अवधिर्यस्य स तथा--परमावधेः किञ्चिन्न्यूनावधियुक्तः अन्नजीवित =अन्नेन=प्रासुकैषणीयान्नमात्रेण जीवितं=जीवन यस्य स तथा। तथा-'अन्यजीवित' इति वा छाया तत्र-अन्यस्मै न तु स्वस्मै सर्वविरतिमत्त्वात् जीवनमरणाशंसाविप्रमुक्तत्वाद्वा जीवितं=जीवन यस्य स तथा, तादृशो वर्त्तते ! ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्र सारथिमेवमवादीत्-हे चित्र ! अस्य मुनेस्त्वम आधोऽवधिकत्वम्=अधोऽवधित्व वदसि= सत्यं कथयसि? तथा-अन्नजीवितत्वम् अन्यजीवितत्व वाऽस्यमुने: हे चित्र ! त्व सत्य कथयसि ?। इति पृच्छानन्तर चित्र ! सारथिः प्राह-हे स्वामिन् ! 'हन्त' इति स्वीकारे 'हॅ!' इति भाषायाम्, अस्य मुनेरहम् आधोऽवधिकत्व खलु वदामि सत्यं कथयामि, तथा अन्नजीवितत्वम् अन्यजीवितत्व वा वदामि= सत्यं कथयामि।पुनः प्रदेशी राजा प्राह-हे चित्र! एष पुरुषः किम् अस्माकम् अभिगमनीयः=परिचययोग्योऽस्ति ? हन्त हे स्वामिन ! एष मुनिः अभिगमनीयोऽस्ति। पुनःप्रदेशी राजा पृच्छति एवं तर्हि हे चित्र! एत पुरुष वयम अभिगच्छाम। अनेन सह परिचय करवाम ?। चित्रः सारथिः प्राह-हन्त हे स्वामिन् ! अभिगच्छाम=अनेन सह वयं परिचय करवाम ॥सू० १२७॥

मूलम्--तए णं से पएसी राया चित्तेण सारहिणा सद्धिं जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ, केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते ठिच्चा एव वयासी-तुब्भे णं भंते ! आहोहिया अण्णजीविया ?। तएणं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी- पएसी ! से जहाणामए अंकवाणियाइवा संखवाणियाइवा दंतवाणियाइवा सुंक भंसिउकामा णो सम्म पथ पुच्छंति. एवामेव पएसी ! तुब्भेवि विणयं भंसेउकामो नो सम्मं पुच्छसि. से णूणं तव

और दूसरा अर्थ 'अन्यजीवित' इस छायापक्ष में ऐसा होता है कि सर्वविरतियुक्त होने से अथवा जीवन मरण की आशंसा से रहित होने से इनका जीवन दूसरों के लिये ही है अपने लिये नहीं है ॥सू० १२७॥

अर्थ 'अन्यजीवित' आ 'छायापक्ष'मां आ प्रमाणे थाय छे के सर्वविरतियुक्त होवाथी अथवा जीवनमरणनी आशंसाथी रहित होवाथी एमनुं जीवन बीजाओने माटे ज छे पोताना माटे नहि. ॥ सू० १२७॥

पएसी ! ममं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था- जडा खलु भो ! जडं जुपज्जुवासंति जाव पवियरित्तए से णूणं पएसी ! अट्ठे समत्थे ? हंता ! अत्थि ॥सू० १२८॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रेण सारथिना सार्धं यत्रैव केशी कुमारश्रमणः तत्रैव उपागच्छति. केशिनः कुमारश्रमणस्य अदूरसामन्ते स्थित्वा एवमवादीत्-यूयं खलु भदन्त ! अधोऽवधिकाः अन्नजीविताः ?। ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत-प्रदेशिन् ! तद्यथा नाम-अङ्कवणिज इति वा शङ्खवणिज इति वा दन्तवणिज-

'तए णं से पएसी राया चित्तेण सारहिणा सद्धिं इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (से पएसी राया चित्तेण सारहिणा सद्धिं) वह प्रदेशी राजा चित्र सारथि के साथ (जेणेव केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ) जहां केशिकुमारश्रमण थे वहां पर गया (केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी) वहां जाकर वह केशिकुमार श्रमण से ऐसे स्थान पर खडा रह गया कि जो स्थान न उनसे अधिक दूर था और न अधिक पास था। वहीं से खडे२ इसने उनसे ऐसा कहा— (तुब्भे णं भंते ! आहोहिया अण्णजीविया) हे भदन्त ! आपका ज्ञान—अवधिज्ञान परमावधि से किंचित् न्यून है, और आप प्रासुक एषणीय ही आहार करते है ? (तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) तब केशी कुमार श्रमणने प्रदेशी राजा से ऐसा कहा— पएसी ! से जहा णामए अंकवाणियाइ वा, दंतवाणियाइ वा, सुंकं भंसिउंकामा णो सम्मं

'तए णं से पएसी राया चित्तेणं सारहिणा सद्धिं' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यारपछी (से पएसी राया चित्तेण सारहिणा सद्धिं) ते प्रदेशी राजा चित्र सारथीनी साथे (जेणेव केसि कुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ) ज्यां केशिकुमार श्रमण हता त्यां गया. (केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी) त्यां जईने ते केशिकुमार श्रमणथी एवा स्थाने उभा रह्या के जे स्थान तेमनाथी वधारे दूर पण नहि हतुं अने वधारे नजीक पण नहि हतुं त्यां उभा उभा ज तेमणे तेमने आ प्रमाणे कह्युं. (तुब्भे णं भंते ! आहोहिया अण्णजीविया) हे भदंत ! आपनुं ज्ञान—परमावधि करता थोडुं कम छे ? अने आप प्रासुक एषणीय आहार ज ग्रहण करो छो ? (तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) त्यारे केशीकुमार श्रमणे प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं

इति वा, शुल्कं भ्रंशयितुकामा नो सम्यक् पन्थानं पृच्छन्ति, एवमेव प्रदेशिन्! त्वमपि विनयं भ्रंशयितुकामो नो सम्यक् पृच्छसि, अथ नूनं तव प्रदेशिन्! मां दृष्ट्वा अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत–जडाः खलु भो! जडं पर्युपासते यावत् प्रविचरितुं स नूनं प्रदेशिन्! अर्थः समर्थः? हन्त! अस्ति ॥ सू० १२८ ॥

पंथं पुच्छंति) हे प्रदेशिन्! जैसे अंकरत्न के व्यापारी, अथवा शंखरत्न के व्यापारी, या दन्त के व्यापारी,–अर्थात् शंख शुभ भी होता है इसलिये उसको रत्न कहा है, राजदेय भाग को नहीं देने की इच्छा वाले होकर जाने के अच्छे मार्ग को नहीं पूछते हैं (एवामेव पएसी तुब्भे वि वियणं भंसेउकामो नो सम्मं पुच्छसि) इसी प्रकार से हे प्रदेशिन्! विनयरूप प्रतिपत्ति को नहीं करने की कामना वाले बने हुए तुमने भी यह अच्छेरूप से नहीं पूछा है. (से णूणं तव पएसी ममं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) हे प्रदेशिन्! मुझे देखकर तुम्हें इस प्रकार का यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प हुआ है (जड्डा खलु भो! जड्डं पज्जुवासंति जाव पवियरित्तए) जड पुरुष जड पुरुषकी पर्युपासना करते हैं यावत् मैं अपनी भी इस उद्यान भूमि में अच्छी तरह से घूम नहीं पा रहा हूं (से णूणं पएसी! अट्ठे समत्थे?) हे प्रदेशिन्! कहो मैं ठीक कह रहा हूं न? (हंता, अत्थि) हां, आप ठीक कह रहे हैं।

(पएसी! से जहाणामए अंकवाणियाइ वा, संखवाणियाइ वा, दंतवाणियाइ वा, सुंकं भंसिउकामा णो सम्मं पंथं पुच्छंति) હે પ્રદેશિન્! જેમ અંકરત્નના વહેપારી, કે શંખરત્નના વહેપારી કે દન્તના વહેપારી (શંખ શુભ પણ ગણાય છે તેથી અહીં તેને રત્નરૂપે ઉલ્લેખવામા આવ્યો છે) રાજકર આપવાની ઇચ્છા ન ધરાવતા ત્યાંથી જવાના સારા માર્ગો માટે પૂછપરછ કરતા નથી (एवामेव पएसी तुब्भे वि वियणं भंसेउकामो नो सम्मं पुच्छसि) આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્! વિનયરૂપ પ્રતિપત્તિને ન આચરતા તમોએ પણ આ વાત શિષ્ટતાથી–નમ્રતાથી–પૂછી નથી. (से णूणं तव पएसी मम पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) હે પ્રદેશિન્ મને જોઈને તમને આ પ્રમાણેનો આધ્યાત્મિક યાવત મનોગત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો છે કે (जड्डा खलु भो! जड्डं पज्जुवासंति जाव पवियरित्तए) જડ પુરુષો જડને સેવે છે યાવત્ હું આ મારી પોતાની ઉદ્યાન ભૂમિમાં પણ સારી રીતે આરામથી ફરી શકતો નથી (से णूणं पएसी! अट्ठे समत्थे?) હે પ્રદેશિન્! બોલો હું બરાબર કહું છું ને? (हंता, अत्थि) હા, આપ ઠીક કહો છો.

टीका—'तएणं से पएसी' इत्यादि—ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रेण सारथिना सार्धं यत्रैव केशीकुमारश्रमणस्तत्रैवोपागच्छति=समागच्छति, केशिनः कुमारश्रमणस्य अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातिसमीपे स्थित्वा अनुपविश्यैव एवमवादीत्—यूयं खलु हे भदन्त अधोऽवधिकाः—अधोऽवधिसम्पन्नाः ? अन्नजीविताः—प्रासुकैषणीयान्नमात्र विनः अन्यजीविनो वा? ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्—हे प्रदेशिन् ! तद्यथा इति दृष्टान्ते, नामेति वाक्यालङ्कारे, अङ्कवणिजः=अङ्करत्नव्यापारिणः 'इति' वाक्यालङ्कारे 'वा' समुच्चये, शङ्खवणिजः=शङ्खरत्नव्यापारिणः, दन्तवणिजः=हस्तिदन्तव्यापारिणः उपलक्षणात्सर्वरत्नव्यापारिणः शुल्कं=राजदेयं भागं भ्रंशयितुकामाः=अदातुकामाः नो सम्यक्=समीचीनतया पन्थानं=शक्यमार्गं पृच्छन्ति, एवमेव=अनयैव रीत्या हे प्रदेशिन! त्वमपि विनयं=प्रतिपत्तिरूपं भ्रंशयितुकामः=अकर्तुकाम नो सम्यक् पृच्छसि। अथ=वाक्यारम्भे नूनं=निश्चयेन हे प्रदेशिन्। तव मां दृष्ट्वा अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणप्रकारकः आध्यात्मिकः आत्मगतः यावत् कल्पितः प्रार्थित, चिन्तितः मनोगतः=मनः—स्थितः संकल्पः=विचारः समुपद्यत=समुत्पन्नः, तदेव दर्शयति—जडाः खलु भो! जडं पर्युपास्ते यावत् प्रविचरितुम्, यावत्पदसंग्राह्यः सर्वोऽपि पाठः पूर्वगतः, स तदर्थश्च तत एवावलोकनीयः। हे प्रदेशिन्! सोऽर्थः=मदुक्तस्त्वद्हृद्गतविचाररूपोऽर्थः नूनं=निश्चितं समर्थो=वास्तविको वर्तते ? प्रदेशी राजा प्राह—हन्त! अस्ति=अयमर्थः समर्थोऽस्ति सत्यमस्तीति भावः ॥ सू० १२८ ॥

टीकार्थ—स्पष्ट है. यहां 'इति' शब्द वाक्यालंकार में और 'वा' शब्द समुच्चय अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। तथा 'तद् यथा' पद दृष्टान्त में आया है। उपलक्षण से यहां समस्त रत्न व्यापारी को ग्रहण करना चाहिये. 'यावत् पद से संकल्प के कल्पित, प्रार्थित, चिन्तित और मनोगत' ये विशेषण ग्रहण किये गये हैं। तथा—'पज्जुवासंति जाव' के यावत् पद से पूर्वगत समस्त पाठ गृहीत हुआ है। यह पाठ १२६वें सूत्र में प्रकट किया गया है।सू.१२८।

ટીકાર્થ—આ સૂત્રનો ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે અહીં 'इति' શબ્દ વાક્યાલંકારમાં અને 'वा' શબ્દ સમુચ્ચય અર્થમાં વપરાયેલ છે. તેમજ 'तद् यथा' પદ દૃષ્ટાન્તમાં આવેલ છે. ઉપલક્ષણ થી અહીં બધા રત્નના વેપારીઓનું ગ્રહણ સમજવું જોઈએ. યાવત્ પદથી સંકલ્પના કલ્પિત, પ્રાર્થિત, ચિન્તિત અને મનોગત એ વિશેષણો ગ્રહણ કરવા. જોઈએ 'पज्जुवासंति जाव' ના યાવત્ પદથી પૂર્વગત સમસ્ત પાઠનું ગ્રહણ સમજવું જોઈએ આ પાઠ ૧૨૬મા સૂત્રમાં આપેલ છે. ।।સૂ. ૧૨૮।।

मूलम्--तएणं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी मे केणं भंते! तुज्झं नाणे वा दंसणे वा जेणं तुज्झे मम एयारूवं अज्झत्थियं जाव संकप्पं समुप्पण्णं जाणह पासह? तएणं से केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी—एवं खलु पएसि! अम्हं समणाणं निग्गंथाणं पंचविहे नाणे पण्णत्ते, तं जहा—आभिणिबोहियणाणे१ सुयणाणे२ ओहिणाणे३ मणपज्जवणाणे४ केवलणाणे५ ५। से किं तं आभिणिबोहियनाणे? अभिणिबोहियनाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—उग्गहे१ ईहा२ अवाए३ धारणा४। से किं तं उग्गहे? उग्गहे दुविहे पण्णत्ते, जहा नंदीए जाव से तं धारणा, से तं आभिणिबोहियणाणे। से किं तं सुयनाणे? सुयनाणे दुविहे पण्णत्ते--अंगपविट्ठं च अंगबाहिरियं च, सव्वं भाणियव्वं जाव दिट्ठिवाओ। ओहिणाणं भवपच्चइयं खाओवसमियं जहा नंदीए मणपज्जवनाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा--उज्जुमई य विउलमई य, तहेव केवलनाणं सव्वं भाणियव्वं। तत्थ णं जे से आभिणिबोहिनाणे, से णं मम अत्थि। तत्थ णं जे से सुयणाणे से वि य ममं अत्थि। तत्थ णं जे से ओहिणाणे से वि य ममं अत्थि। तत्थ णं जे से मणपज्जवनाणे से वि य ममं अत्थि। तत्थ णं जे से केवलनाणे से णं मम नत्थि से णं अरिहंताणं भगवंताणं। इच्चेएणं पएसी! अहं तव चउव्विहेणं छाउमत्थिएणं णाणेणं इमेयारूवं अज्झत्थियं जाव संकप्पं समुप्पण्णं जाणामि-पासामि ॥ सू. १२२ ॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम् एवमवादीत्-तत्किं खलु भदन्त ! युष्माकं ज्ञानं वा दर्शनं वा, येन यूयं मम एतद्रूपम् आध्यात्मिकं यावत् संकल्पं समुत्पन्नं जानीथ पश्यथ? ततः खलु स केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानं एवमवादीत् एवं खलु प्रदेशिन ! अस्माकं श्रमणानां निर्ग्रन्थानां पञ्चविधं ज्ञानं प्रज्ञप्तम्, तद्यथा-आभिनिबोधिकज्ञानम् १, श्रुतज्ञानम् २, अवधिज्ञानम् ३, मनःपर्यवज्ञानम्४, केवलज्ञानम् ५ । अथ किं तद् आभिनिबोधिकज्ञानम् ? आभिनिबोधिकज्ञानं

'तए णं से पएसी राया' इति' इत्यादि ।

सूत्रार्थ--(तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) पुनः उस प्रदेशी राजाने केशी कुमारश्रमण से ऐसा कहा-(से केणं भंते ! तुज्झं, नाणे वा दंसणे वा जेणं तुज्झे मम एयारूवं अज्झत्थियं जाव संकप्प समुप्पण्णं जाणह पासह ?) हे भदन्त ! ऐसा आपका वह कौनसा ज्ञान अथवा दर्शन है कि जिसके द्वारा आपने मेरे इस उत्पन्न हुए आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प को जाना है, और देखा है (तए णं से केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) तब केशीकुमार श्रमणने उस प्रदेशी राजा से ऐसा कहा-(एवं खलु पएसी अम्हं समणाणं णिग्गंथाणं पंचविहे नाणे पण्णत्ते तं जहा-आभिणिबोहियनाणे, सुय नाणे, ओहिनाणे, मणपज्जवनाणे केवलणाणे)हे प्रदेशिन! हम श्रमण निर्ग्रन्थों के मत में पांच प्रकार के ज्ञान कहे गये हैं जैसे आभिनिबोधिकज्ञान,-मतिज्ञान श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान और केवलज्ञान (से किं तं आभिणि-

'त एणं से पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(त एणं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) ફરી તે પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું કે (से केणं भंते ! तुज्झं नाणे वा दसणे वा जेणं तुज्झे मम एयारूवं अज्झत्थियं जाव संकप्पं समुप्पणं जाणह पासह ?) હે ભદંત ! આપના પાસે એવું કઈ જાતનું જ્ઞાન કે દર્શન છે કે જેનાવડે આપ મારામા ઉત્પન્ન થયેલ આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પને જાણી ગયા છો. અને જોઈ ગયા છો. (तए णं से केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) ત્યારે કેશીકુમાર શ્રમણે તે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ-(एवं खलु पएसी ! अम्हं समणाणं णिग्गंथाणं पंचविहे नाणे पण्णत्ते तं जहा-आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे, मणपज्जवनाणे, केवलणाणे) હે પ્રદેશિન ! અમારા શ્રમણ નિર્ગ્રંથોના મતમા પાચ પ્રકારના જ્ઞાન કહેવામાં આવ્યાં

चतुर्विधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा–अवग्रहः १, ईहा २, अवायः ३, धारणा ४। अथ कोऽसौ अवग्रहः अवग्रहो द्विविधः प्रज्ञप्तः यथा नन्द्यां यावत् सैषा धारणा, तदेतद् आभिनिबोधिकज्ञानम्। अथ किं तत् श्रुतज्ञानम्? श्रुतज्ञानं द्विविधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा–अङ्गप्रविष्टं च अङ्गबाह्यं च, सर्वं भणितव्यं यावत्–दृष्टिवादः। अवधिज्ञानं भवप्रत्ययिकं क्षायोपशमिकं यथा नन्द्याम् (नं. पृ.

बोहियनाणे) हे भदन्त! आभिनिबोधिकज्ञान का क्या स्वरूप है? (आभिणिबोहियनाणे चउव्विहे पण्णत्ते) हे प्रदेशिन्! आभिनिबोधिकज्ञान चार प्रकार का कहा गया है। (तं जहा–उग्गहे १ ईहा २ अवाए ३ धारणा ४) जैसे–अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा। (से किं तं उग्गहे) हे भदन्त! अवग्रह ज्ञान का क्या स्वरूप है। (जहा नंदीए जाव से तं धारणा, से तं आभिणिबोहियणाणे) अवग्रह से लेकर धारणापर्यन्त सब विवेचन नन्दीसूत्र में कहा गया है, इस प्रकार वह आभिनिबोधिकज्ञान का स्वरूप है। (से किं तं सुयनाणे) हे भदन्त! श्रुतज्ञान का क्या स्वरूप है? (सुयनाणे दुविहे पण्णत्ते) हे प्रदेशिन्! श्रुतज्ञान दो प्रकार का कहा गया है। (तं जहा–अंगपविट्ठं च अंगबाहिरियं च) जैसे–अंगप्रविष्ट और अंगबाह्य (सव्वं भाणियव्वं जाव दिट्ठिवाओ) इन दोनों श्रुतज्ञानों का वर्णन भी नन्दिसूत्र में कहा गया है अतः दृष्टिवाद तक श्रुतज्ञान का समस्त वर्णन वहां से देखना चाहिये, (ओहिनाणं भवपच्चइयं खओवसमियं जहा नंदीए) अवधिज्ञान भवप्रत्ययिक

છે. જેમકે આભિનિબોધિકજ્ઞાન,-મતિજ્ઞાન શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન,મન પર્યવજ્ઞાન અને કેવલજ્ઞાન. (से किं तं आभिणिबोहियनाणे) હે ભદંત! આભિનિબોધિક જ્ઞાનનું સ્વરૂપ કેવું છે? (आभिणिबोहियनाणे चउव्विहे पण्णत्ते) હે પ્રદેશિન! આભિનિબોધિકજ્ઞાન ચાર પ્રકારનું કહેવાય છે (तं जहा–उग्गहे १ ईहा २ अवाए ३ धारणा ४) જેમકે અવગ્રહ ૧, ઈહા ૨, અવાય ૩, અને ધારણા ૪,. (से किं तं उग्गहे) હે ભદંત! અવગ્રહ જ્ઞાનનું સ્વરૂપ કેવું છે? (उग्गहे दुविहे पण्णत्ते) હે પ્રદેશિન અવગ્રહ જ્ઞાન બે પ્રકારનું કહેવાય છે. (जहा नंदीए जाव से तं धारणा, से तं आभिणिबोहियणाणे) અવગ્રહથી માંડીને ધારણા સુધીનું સમસ્ત વિવેચન [illegible] છે. આ પ્રમાણે આભિનિબોધિક [illegible] (से किं तं सुयनाणे) હે ભદંત! શ્રુતજ્ઞાનનું સ્વરૂપ કેવું છે? (सुयनाणे दुविहे पण्णत्ते) હે પ્રદેશિન! શ્રુતજ્ઞાન બે પ્રકારનું છે (तं जहा–अंगपविट्ठं च अंगबाहिरियं च) [illegible] (सव्वं भाणियव्वं जाव दिट्ठिवाओ) [illegible]

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम् एवमवादीत्–तत्किं खलु भदन्त ! युष्माकं ज्ञानं वा दर्शनं वा, येन यूयं मम एतद्रूपम् आध्यात्मिकं यावत् संकल्पं समुत्पन्नं जानीथ पश्यथ? ततः खलु स केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानं एवमवादीत् एवं खलु प्रदेशिन ! अस्माकं श्रमणानां निर्ग्रन्थानां पञ्चविधं ज्ञानं प्रज्ञप्तम्, तद्यथा–आभिनिबोधिकज्ञानम् १, श्रुतज्ञानम् २, अवधिज्ञानम् ३, मनःपर्यवज्ञानम् ४, केवलज्ञानम् ५। अथ किं तद् आभिनिबोधिकज्ञानम् ? आभिनिबोधिकज्ञानं

'तए णं से पएसी राया' इति' इत्यादि।

सूत्रार्थ--(तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) पुनः उस प्रदेशी राजाने केशी कुमारश्रमण से ऐसा कहा–(से केण भंते ! तुज्झं, नाणे वा दंसणे वा जेणं तुज्झे मम एयारूवं अज्झत्थियं जाव संकप्पं समुप्पण्णं जाणह पासह ?) हे भदन्त ! ऐसा आपका वह कौनसा ज्ञान अथवा दर्शन है कि जिसके द्वारा आपने मेरे इस उत्पन्न हुए आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प को जाना है, और देखा है (तए णं से केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) तब केशीकुमार श्रमणने उस प्रदेशी राजा से ऐसा कहा–(एवं खलु पएसी अम्हं समणाणं णिग्गंथाणं पंचविहे नाणे पण्णत्ते तं जहा–आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे, मणपज्जवनाणे केवलणाणे)हे प्रदेशिन! हम श्रमण निर्ग्रन्थों के मत में पांच प्रकार के ज्ञान कहे गये हैं जैसे आभिनिबोधिकज्ञान,–मतिज्ञान श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान. मनःपर्यवज्ञान और केवलज्ञान (से किं तं आभिणि-

'त एणं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(त एणं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) ફરી તે પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું કે (से केणं भंते ! तुज्झं नाणे वा दंसणे वा जेणं तुज्झे मम एयारूवं अज्झत्थियं जाव संकप्पं समुप्पण्णं जाणह पासह ?) હે ભદંત ! આપના પાસે એવું કઈ જાતનું જ્ઞાન કે દર્શન છે કે જેનાવડે આપ મારામાં ઉત્પન્ન થયેલ આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પને જાણી ગયા છો. અને જોઈ ગયા છો. (तए णं से केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) ત્યારે કેશીકુમાર શ્રમણે તે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું–(एवं खलु पएसी ! अम्हं समणाणं णिग्गंथाणं पंचविहे नाणे पण्णत्ते तं जहा–आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे, मणपज्जवनाणे, केवलणाणे) હે પ્રદેશિન ! અમારા શ્રમણુ નિગ્રંથોના મતમાં પાંચ પ્રકારના જ્ઞાન કહેવામાં આવ્યાં

चतुर्विधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा–अवग्रहः? १, ईहा २, अवायः ३, धारणा ४। अथ कोऽसौ अवग्रहः अवग्रहो द्विविधः प्रज्ञप्तः यथा नन्द्यां यावत् सैषा धारणा, तदेतद्, आभिनिबोधिकज्ञानम्। अथ किं तत् श्रुतज्ञानम्? श्रुतज्ञानं द्विविधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा–अङ्गप्रविष्टं च अङ्गबाह्यं च, सर्वं भणितव्यं यावत्–दृष्टिवादः। अवधिज्ञानं भवप्रत्ययिकं क्षायोपशमिकं यथा नन्द्याम् (नं. पृ.

बोहियनाणे) हे भदन्त! आभिनिबोधिकज्ञान का क्या स्वरूप है? (आभिणिबोहियनाणे चउव्विहे पण्णत्ते) हे प्रदेशिन्! आभिनिबोधिकज्ञान चार प्रकार का कहा गया है। (तं जहा–उग्गहे १ ईहा २ अवाए ३ धारणा ४) जैसे–अवग्रह. ईहा, अवाय और धारणा। (से किं तं उग्गहे) हे भदन्त! अवग्रह ज्ञान का क्या स्वरूप है। (जहा नंदीए जाव से तं धारणा, से तं आभिणिबोहियणाणे) अवग्रह से लेकर धारणापर्यन्त सब विवेचन नन्दीसूत्र में कहा गया है, इस प्रकार वह आभिनिबोधिकज्ञान का स्वरूप है। (से किं तं सुयनाणे) हे भदन्त! श्रुतज्ञान का क्या स्वरूप है? (सुयनाणे दुविहे पण्णत्ते) हे प्रदेशिन्! श्रुतज्ञान दो प्रकार का कहा गया है। (तं जहा–अंगपविट्ठं च अंगबाहिरियं च) जैसे–अंगप्रविष्ट और अंगबाह्य (सव्वं भाणियव्वं जाव दिट्ठिवाओ) इन दोनों श्रुतज्ञानों का वर्णन भी नन्दिसूत्र में कहा गया है अतः दृष्टिवाद तक श्रुतज्ञान का समस्त वर्णन वहां से देखना चाहिये, (ओहिनाणं भवपच्चइयं खओवसमियं जहा नंदीए) अवधिज्ञान भवप्रत्ययिक

છે. જેમકે આભિનિબોધિકજ્ઞાન,-મતિજ્ઞાન શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન, મન પર્યવજ્ઞાન અને કેવલજ્ઞાન. (से किं त आभिणिबोहियनाणे) હે ભદંત! આભિનિબોધિક જ્ઞાનનું સ્વરૂપ કેવું છે? (आभिणिबोहियनाणे चउव्विहे पण्णत्ते) હે પ્રદેશિન્! આભિનિબોધિકજ્ઞાન ચાર પ્રકારનું કહેવાય છે (तं जहा–उग्गहे १ ईहा २ अवाए ३ धारणा ४) જેમકે અવગ્રહ ૧, ઇહા ૨, અવાય ૩, અને ધારણા ૪,. (से किं त उग्गहे) હે ભદંત! અવગ્રહ જ્ઞાનનું સ્વરૂપ કેવું છે? (उग्गहे दुविहे पण्णत्ते) હે પ્રદેશિન્ અવગ્રહ જ્ઞાન બે પ્રકારનું કહેવાય છે. (जहा नंदीए जाव से त धारणा, से तं आभिणिबोहियणाणे) અવગ્રહથી માંડીને ધારણા સુધીનું સમસ્ત વિવેચન નંદીસૂત્રમાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યું છે. આ પ્રમાણે આ આભિનિબોધિકજ્ઞાનનું સ્વરૂપ છે? (से किं त सुयनाणे) હે ભદંત! શ્રુતજ્ઞાનનું સ્વરૂપ કેવું છે? (सुयनाणे दुविहे पण्णत्ते) હે પ્રદેશિન્! શ્રુતજ્ઞાન બે પ્રકારનું છે. (तं जहा अंगपविट्ठं च अंगबाहिरियं च) જેમકે અંગ પ્રવિષ્ટ અંગબાહ્ય. (सव्वं भाणियव्वं जाव दिट्ठियाओ) આ બન્ને શ્રુતજ્ઞાનોનું વર્ણન પણ નન્દિસૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે તેથી દૃષ્ટિવાદ સુધી શ્રુતજ્ઞાનનું બધું વર્ણન ત્યાંથી જ જાણી લેવું જોઈએ (ओहिनाणंभवपच्चइयं खओवसमियं जहा नंदीए)

१६८ पं. ४)। मनःपर्यवज्ञान द्विविधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा-ऋजुमतिश्च विपुल मतिश्च तथैव केवलज्ञानं सर्वं भणितव्यम्। तत्र खलु यत्तत् आभिनिबोधिकज्ञानं तत्खलु ममास्ति १। तत्र खलु यत्तत् श्रुतज्ञानं तदपि च ममास्ति २। तत्र खलु यत्तत् अवधिज्ञान तदपि च ममास्ति ३। तत्र-खलु यत्तद् मनःपर्यवज्ञान तदपि च ममास्ति ४। तत्र खलु यत्तत् केवलज्ञानं तत् खलु मम नास्ति, तत् खलु अर्हतां भगवताम्। इत्येतेन प्रदेशिन्! अहं तव चतुर्विधेन छाद्मस्थिकेन ज्ञानेन एतमेतद्रूपम् आध्यात्मिक यावत् संकल्पं समुत्पन्नं जानामि पश्यामि ।। सू० १२९ ॥

और क्षायोपशमिकके भेद से दो प्रकार का कहा गया है। इसका भी वर्णन नन्दीसूत्र में किया गया है। (मणपज्जवनाणे दुविहे पण्णत्ते) मनःपर्यव ज्ञान दो प्रकार का कहा गया है (तं जहा-उज्जुमईय. विउलमईय)-ऋजुमति और विपुलमति, (तहेव केवलनाणं सव्वं भाणियव्वं) इसी प्रकार केवलज्ञान का वर्णन भी यहां पर करना चाहिये (तत्थ णं जे से आभिणिबोहियनाणे से णं मम अत्थि) इन पांच ज्ञानों में से मुझे मतिज्ञान रूप आभिनिबोधिकज्ञान है। (तत्थ णं जे से सुयनाणे से वि य ममं अत्थि) श्रुतज्ञान भी है (ओहियणाणे से वि य ममं अत्थि) अवधिज्ञान भी है। (तत्थ णं जे से मणपज्जवनाणे से वि य ममं अत्थि) और मुझे मनःपर्ययज्ञान भी है। (तत्थ णं जे से केवलनाणे से णं ममं नत्थि) केवल ज्ञान मुझे नहीं है (से णं अरिहंताणं भगवंताणं) यह केवलज्ञान अर्हन्त भगवन्तों के होता है। (इच्चेएणं पएसी ! अहं तव चउव्विहेणं छाउ

અવધિજ્ઞાન ભવપ્રત્યયિક અને ક્ષાયોપશમિકના ભેદથી બે પ્રકારનું કહેવાય છે. આનું વર્ણન પણ નન્દીસૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે. (मणपज्जवनाणे, दुविहे पण्णत्तो) મનઃ પર્યવજ્ઞાન બે પ્રકારનું કહેવાય છે. (तं जहा उज्जुमइ य विउलमई य) જેમકે ઋજુમતિ અને વિપુલમતિ (तहेव केवलनाणं सव्वं भाणियव्वं) આ પ્રમાણે જ કેવલજ્ઞાનનું વર્ણન પણ કરવું જોઈએ (तत्थ णं जे से आभिणिबोहियनाणे से णं मम अत्थि) આ પાંચ જ્ઞાનોમાંથી મને મતિજ્ઞાનરૂપ આભિનિબોધિકજ્ઞાન છે. (तत्थणं जे से सुयनाणे से वि य मम अत्थि) શ્રુતજ્ઞાન પણ છે. (ओहियणाणे से विय मम अत्थि) અવધિજ્ઞાન પણ છે. (तत्थ णं जे से मणपज्जवनाणे से विय मम अत्थि) અને મન.પર્યવજ્ઞાન પણ છે (तत्थ णं जे से केवलनाणे से णं ममं नत्थि) પરંતુ મને કેવલજ્ઞાન નથી. (से णं अरिहंताणं भगवंताणं, આ કેવળજ્ઞાન અર્હન્ત ભગવન્તોને હોય છે. (इच्चेएणं पएसी ! अह तव चउव्विहेण छउमत्थिएणं णाणेणं इमेयारूवं अज्झत्थिय जाव संकप्पं

टीका--'तए णं से पएसी' इत्यादि--ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम् एवमवादीत्-तत् किम्=कीदृशं खलु हे भदन्त ! युष्माकं ज्ञानं वा दर्शनं वा अस्ति येन ज्ञानेन वा दर्शनेन वा यूयं मम एतद्रूपं=पूर्वोक्तप्रकारम् आध्यात्मिकम्=आत्मगतविचारम् यावत् संकल्पम्, यावच्छब्देन-चिन्तितं, कल्पितं, प्रार्थितं मनोगतम्, इति संग्राह्यम्, संकल्पं=समुत्पन्नं=समुद्भूतं जानीथ=ज्ञानविषयीकुरुथ पश्यथ=दर्शनविषयीकुरुथ। ततः=प्रदेशिराजप्रश्नानन्तरं खलु स केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम् एवमवादीत्-एवं खलु हे प्रदेशिन ! अस्माकं श्रमणानां निर्ग्रन्थानां पञ्चविधं ज्ञानं प्रज्ञप्तं, तद्यथा-आभिनिबोधिकज्ञानम् १ श्रुतज्ञानम् २, अवधिज्ञानम् ३, मनःपर्यवज्ञानम् ४, केवलज्ञानम् ५। तत्र-आभिनिबोधिकज्ञानं चतुर्विधं प्रज्ञप्तं, तथा-अवग्रहः १, ईहा २, अवायः ३, धारणा ४। अथ कोऽसौ अवग्रहः !

त्थिएणं णाणेणं इमेयारूवं अज्झत्थियं जाव संकप्पं समुप्पण्णं जाणामि पासामि) इस तरह से हे प्रदेशिन् मैंने इन छाद्मस्थिक चतुर्विधज्ञान के द्वारा तुम्हारे इस प्रकार के समुत्पन्न हुए इस संकल्प को जान लिया है और देखलिया है।

टीकार्थ—इसके बाद प्रदेशी राजाने केशी कुमारश्रमण से इस प्रकार कहा-हे भदन्त ? आपका ज्ञान दर्शन किस प्रकार का है कि जिससे आपने मेरे उत्पन्न हुए इस प्रकार के आध्यात्मिक, चिन्तित, कल्पित, प्रार्थित एवं मनोगत इस संकल्प को जान लिया है, और देख लिया है? इस प्रकार के प्रदेशी राजा के पूछने पर केशीकुमारश्रमणने उससे ऐसा कहा-हे प्रदेशिन ! श्रमणनिर्ग्रन्थों का ज्ञान पांच प्रकार का कहा गया है, अभिनिबोधिकज्ञान१, श्रुतज्ञान२, अवधिज्ञान३, मनःपर्यवज्ञान४, और केवलज्ञान५. इनमें आभिनिबोधिकज्ञा अवग्रह, ईहा, अवाय, और धारणा के

समुप्पण्णं जाणामि पासामि) આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ ! મેં આ છાદ્મસ્થિક ચાર પ્રકારના જ્ઞાનો વડે તમારામાં સમુત્પન્ન થયેલ સંકલ્પ જાણી લીધો છે અને જોઈલીધો છે.

ટીકાર્થ—ત્યારપછી પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમારશ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદંત ! આપનું જ્ઞાનદર્શન કઈ જાતનું છે કે જેથી આપે મારામાં ઉત્પન્ન થયેલ આધ્યાત્મિક ચિંતિત, કલ્પિત, પ્રાર્થિત અને મનોગત આ સંકલ્પ જાણી ગયા છો અને જોઈ ગયા છો ? આ પ્રમાણે પ્રદેશી રાજાના પ્રશ્નને સાંભળીને કેશીકુમાર શ્રમણે તેમને આ રીતે કહ્યું કે 'હે પ્રદેશિન ! શ્રમણ નિગ્રંથોનું જ્ઞાન પાંચ પ્રકારનું કહેવાય છે. આભિનિબોધિકજ્ઞાન ૧, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન ૩, મનઃપર્યવજ્ઞાન ૪, અને કેવલજ્ઞાન ૫, આમાં આભિનિબોધિકજ્ઞાન અવગ્રહ, ઈહા, અવાય અને ધારણાના ભેદોથી ચાર

इति प्रश्ने आह–अवग्रहो द्विविधः प्रज्ञप्तः यथा नन्द्यां यावत् सैषा धारणा= अवग्रहादारभ्य धारणापर्यन्तं सर्वमाभिनिबोधिकज्ञानविवरणं नन्दीसूत्रे विलोकनीयम्। अर्थस्तु नन्दीसूत्रस्य मत्कृतज्ञानचन्द्रिका टीकातो बोध्यः। तदेतद् आभिनिबोधिकज्ञानम्। अथ किं तत् श्रुतज्ञानम्? श्रुतज्ञानं द्विविधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा–अङ्गप्रविष्टम् १' अङ्गबाह्यं च सर्वं=श्रुतज्ञानविषयकं सर्वं विवरणं भणितव्यं= नन्दीसूत्रोक्तमेवात्र पठितव्यं, यावत्–दृष्टिवादः=दृष्टिवादविवरणपर्यन्तमिति२। अवधिज्ञानं–भवप्रत्ययिकं क्षायोपशमिकं चेति द्विविधं, यथा नन्द्यां=नन्दीसूत्रे यथाकथितं तथैव सर्वं विज्ञेयम्। अर्थोऽपि तत्रैव मत्कृतज्ञानचन्द्रिकाटीकायामवलोकनीयः३। मनःपर्यवज्ञानं द्विविधं प्रज्ञप्तं, तद्यथा–

भेद से चार प्रकार का कहा गया है. अवग्रह का स्वरूप क्या है? इस प्रश्न के उत्तर में केशिकुमारश्रमण ने कहा कि अर्थावग्रह और व्यञ्जनावग्रह के भेद से अवग्रह दो प्रकार का कहा गया है. नन्दीसूत्र में अवग्रह से लेकर धारणा तकका पूर्ण विषय आभिनिबोधिकज्ञान के विवरणप्रकरण में बहुत ही सुंदर ढंग से स्पष्ट किया गया है। नन्दीसूत्र के ऊपर हमने ज्ञानचन्द्रिका नाम की टीका लिखी है उसमें यह सब विषय स्पष्ट रूप से समझाया गया है. अतःविशेष जिज्ञासु इस विषय को वहां से देख लेवें। श्रुतज्ञान भी अङ्गप्रविष्ट और अङ्गबाह्य के भेद से दो प्रकार का कहा गया है. इस विषय का भी स्पष्टीकरण नन्दीसूत्र में किया जा चुका है। भवप्रत्ययिक अवधि और क्षायोपशमिकअवधि इस प्रकार से अवधिज्ञान दो तरह का कहा गया है। इनकाभी वर्णन वहीं पर किया गया है। ऋजु-

પ્રકારનું કહેવાય છે અવગ્રહનું સ્વરૂપ કેવું છે? આ જાતના પ્રશ્નના ઉત્તરમાં કેશિકુમાર શ્રમણે કહ્યું કે અર્થાવગ્રહ અને વ્યંજનાવગ્રહના ભેદથી અવગ્રહના બે પ્રકારો કહેવાય છે; નંદીસૂત્રમાં અવગ્રહથી માંડીને ધારણુ સુધીની સંપૂર્ણ વિગત આભિનિબોધિકજ્ઞાનના વિવરણુ પ્રકરણુમાં ખૂબજ સારી રીતે રજૂ કરવામાં આવી છે. નંદીસૂત્રની અમોએ 'જ્ઞાનચન્દ્રિકા' નામે ટીકા લખી છે તેમાં આ બધી બાબતોનું સવિસ્તાર સ્પષ્ટીકરણુ કરવામાં આવ્યું છે. તેથી વિશેષ જિજ્ઞાસુ સજ્જનો ત્યાંથી જ વાંચવા યત્ન કરે, શ્રુતજ્ઞાન પણુ અંગ પ્રવિષ્ટ અને અંગ બાહ્યના ભેદથી બે પ્રકારનું કહેવાય છે. આ બાબતનું સ્પષ્ટીકરણુ પણુ નંદીસૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે. ભવ પ્રત્યમિક અવધિ અને ક્ષાયોપશમિક અવધિ આ પ્રમાણે અવધિજ્ઞાન બે પ્રકારનું કહેવાય છે. આ વિષેનું વર્ણન પણુ ત્યાંજ કરવામાં આવ્યું છે. ઋજુમતિ અને વિપુલમતિના ભેદથી મનઃપર્યવજ્ઞાન બે પ્રકારનું કહેવાય છે આ વિષેનું સમસ્ત વિવરણુ નંદીસૂત્રમાંથી જાણી

ऋजुमतिश्च। विपुलमतिश्च। अस्यापि सर्वं विवरणं नन्दीसूत्रे द्रष्टव्यम्। तथैव=नन्दीसूत्रोक्तप्रकारेणैव केवलज्ञानं=केवलज्ञानविवरणं सर्वं भणितव्यम्। तत्र=तेषु पञ्चसु ज्ञानेषु खलु यत्तद् आभिनिबोधिकज्ञानं तत् खलु ममास्ति १। एवं श्रुतज्ञानम् २, अवधिज्ञानम् ३, मनःपर्यवज्ञानं ४ चेति ज्ञान-चतुष्टयं ममास्ति। तत्र=तेषु पञ्चसु ज्ञानेषु यत्तत् केवलज्ञानं तत् मम नास्ति=न विद्यते तत=केवलज्ञानं खलु अर्हतां भगवतां भवति नान्येषामिति। इत्ये-तेन=पूर्वोक्तेन कारणेन हे प्रदेशिन्! राजन्! अहं चतुर्विधेन=चतुष्प्रकारकेण-छाद्मस्थिकेन=छद्मस्थसम्बन्धिना ज्ञानेन तव एतम् एतद्रूपं=त्वदन्तःकरणस्थम्-आध्यात्मिकं यावत् संकल्पं=मनोगतं संकल्पं समुत्पन्नं जानामि पश्यामि॥सू.१२९।

मूलम्—तए णं से पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी-अहं णं भंते! इहं उवविसामि? पएसी! साए उज्जाणभूमीए तुमंसी चेव जाणए, तए णं से पयसी राया चित्ते णं सारहिणा सद्धिं केसि-स्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते उवविसइ, केसिकुमारसमणं एवं वयासी तुब्भे णं भंते! समणाणं णिग्गंथाणं एसा सण्णा एसा पइ-ण्णा एसा दिट्ठी एसा रुई एस हेऊ एस उवएसे संकप्पे एसा

मति और विपुलमति के भेद से मनःपर्यवज्ञान दो प्रकार का कहा गया है। इसका समस्त विवरण नन्दीसूत्र से जानने योग्य है। इसी प्रकार केवलज्ञान विषयक समस्त कथन भी वहीं से जानना चाहिये। इन प्रदर्शित पांच ज्ञानों में से मुझे चारज्ञान प्राप्त हैं, आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-ज्ञान, एवं मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान मुझे नहीं है. यह ज्ञान अर्हन्त भग वन्तों को ही होता है। अतः हे प्रदेशिन्! मैं इन चार छाद्मस्थिक ज्ञान से उत्पन्न हुए इस तुम्हारे अन्तःकरणस्थ आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प को जान गया हूं और देख चुका हूं ॥सू० १२९॥

લેવું જોઇએ. આ પ્રમાણે કેવલજ્ઞાન વિષયક સમસ્ત કથન પણ ત્યાંથી જ જાણી લેવું જોઇએ. ઉપર જણાવેલ પાંચ જ્ઞાનોમાંથી મને ચાર જ્ઞાન પ્રાપ્ત થયેલ છે. અભિનિ-બોધિકજ્ઞાન, (મતિજ્ઞાન) શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન અને મન પર્યયજ્ઞાન મને કેવલજ્ઞાન પ્રાપ્ત થયેલ નથી. આ જ્ઞાન અર્હંત ભગવતોને જ હોય છે. એથી હે પ્રદેશિન્! હું આ ચાર છાદ્મસ્થિક જ્ઞાનથી ઉત્પન્ન થયેલ તમારા આ અન્તઃકરણસ્થ આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પને જાણી ગયો છું અને જોઇ ગયો છું. ॥ સૂ. ૧૨૯ ॥

तुला एस माणे एस पमाणे एस समोसरणे जहा अण्णो जीवो-अण्णं सरीरं, णो तं जीवो तं सरीरं? तएणं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी- पएसी! अम्हं समणाणं णिग्गंथाणं एसा सण्णा जाव एस समोसरणे जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं ॥ सू० १३० ॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत् अहं खलु भदन्त! इह उपविशामि? प्रदेशिन्? एतस्या उद्यानभूमेस्त्वमसि एव ज्ञायकः, ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रेण सारथिना सार्द्धं केशिनः कुमारश्रमणस्य अदूरसामन्ते उपविशति, केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्-युष्माकं

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) इसके बाद केशीकुमार श्रमण से उस प्रदेशी राजाने ऐसा कहा (अहं णं भंते! इहं उवविसामि) हे भदन्त! मैं इस स्थान में बैठ जाऊं? (पएसी! साए उज्जाणभूमीए तुमंसि चेव जाणए) तब केशीकुमार श्रमणने उससे कहा हे प्रदेशिन! इस उद्यानभूमि के तुम ही ज्ञायक हो-अर्थात् उपवेशन के विषय में या अनुपवेशन के विषय में मैं क्या कहूं- यह तो स्वयं ही जानो। (तए णं से पएसी राया चित्तेणं सारहिणा सद्धिं केसिस्स कुमार समणस्स अदूरसामंते उवविसइ) इसके बाद वह प्रदेशी राजा चित्र सारथि के साथ केशीकुमारश्रमण के समीप-न अधिक दूर और न अधिक

'तएणं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(त एणं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) त्यारपछी केशीकुमारश्रमणने ते प्रदेशी राजाए आ प्रमाणे कह्युं-(अहं णं भंते! इहं उवविसामि) हे भदंत हुं आ स्थाने बेसु? (पएसी! साए उज्जाण भूमीए तुमंसि चेव जाणए) त्यारे केशीकुमारश्रमणे ते राजाने आ प्रमाणे कह्युं के हे प्रदेशिन! आ उद्यानभूमिना तमे ज ज्ञायक छो एटले के उपवेशन माटे के अनुपवेशन माटे मारे तमने कहेवुं ते अमारा साधुकल्पथी बहार छे जेथी ते माटे तमे पोतेज विचारी लो। (तए णं से पएसी राया चित्तेणं सारहिणा सद्धिं केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते उवविसइ) त्यार पछी ते प्रदेशी राजा चित्रसारथिनी साथे केशिकुमारश्रमणनी पासे-वधारे दूर पण नहिं-तेमज वधारे नजीक पण नहि-एवा स्थाने बेसी गयो। (केसिकुमारसमण एवं

खलु भदन्त! श्रमणानां निर्ग्रन्थानाम् एषा संज्ञा एषा प्रतिज्ञा एषा दृष्टिः एषा रुचिः एष हेतुः एष उपदेशः एष सङ्कल्पः एषा तुला एतत् मानम् एतत् समवसरणम् यथा—अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम्, नो तत् जीवः तत् शरीरम्? ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्—प्रदेशिन् अस्माकं श्रमणानां निर्ग्रन्थानाम् एषा संज्ञा यावत् एतत् समवसरणं यथा—अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम्, नो तत् जीवः स शरीरम् ॥ सू० १३० ॥

पास के स्थान में बैठ गया (केसिकुमारसमणं एवं वयासी) और केशि कुमारश्रमण से इस प्रकार बोला—(तुब्भे णं भंते! समणाणं निग्गंथाणं एसा सण्णा एसा पइण्णा एसा दिट्ठी, एसा रुई एस हेऊ) हे भदन्त! आप श्रमण निर्ग्रन्थों की यह संज्ञा है, यह प्रतिज्ञा है, (पदार्थ के स्वरूपका निश्चय ज्ञानरूप)यह दृष्टि है, यह रुचि है, यह हेतु है (एस उवएसे एस संकप्पे एसा तुला, एस माणे, एस पमाणे, एस समोसरणे) यह उपदेश है, यह संकल्प है, यह तुला है, यह मान है, यह प्रमाण है, यह समवसरण है (जहा अण्णो जीवो, अण्णं सरीरं) कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है, (णो तं जीवो तं सरीरं) न जीव शरीररूप है और न शरीर जीवरूप है। (तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) तब केशी कुमारश्रमणने प्रदेशी राजा से ऐसा कहा—(पएसी? अम्हं समणाणं निग्गंथाणं एसा सण्णा जाव एस समवसरणे जहा अण्णो जीवो, अण्णं सरीरं, णो तं जीवो तं सरीरं)

वयासी) અને કેશિકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું—(तुब्भे णं भंते! समणाणं निग्गंथाणं एसा सण्णा एसा पइण्णा एसा दिट्ठी, एसा रुई, एस हेऊ) હે ભદંત! આપ શ્રમણ નિર્ગ્રંથોની આ સંજ્ઞા છે, આ પ્રતિજ્ઞા છે, આ દૃષ્ટિ છે, આ રૂચિ છે, આ હેતુ છે, (एस उवएसे, एस संकप्पे एसा तुला, एस माणे. एस पमाणे, एस समोसरणे) આ ઉપદેશ છે, આ સંકલ્પ છે, આ તુલા છે, આ માણ છે, આ પ્રમાણ છે, આ સમવસરણ છે (जहा अण्णो जीवो, अण्णं सरीरं, णो तं जीवो, तं सरीरं) કે જીવ અને શરીર જુદાજુદા છે. ન જીવ શરીર રૂપ છે અને ન શરીર જીવરૂપ છે. (तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) ત્યારે કેશીકુમાર શ્રમણે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે (पएसी! अम्हं समणाणं निग्गंथाणं एसा सण्णा जाव एस समवसरणे जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तं जीवो तं सरीरं) હે પ્રદેશિન્! શ્રમણ નિર્ગ્રંથોની આ

टीका-- 'तए णं से पएसी राया' इत्यादि-ततः खलु स प्रदेशी-राजा केशिनं कुमारश्रमणं एवम्-अनुपदं वक्ष्यमाणं वचनम् अवादीत्-हे भदन्त! अहं खलु इह-अस्मिन् स्थाने उपविशामि? ततः केशीकुमार-श्रमण आह-हे प्रदेशिन्! एतस्याः उद्यानभूमेः त्वमेव ज्ञायकः असि एषा उद्यानभूमिस्तव निश्रिता, नास्माकमुपवेशनानुपवेशनविषये वक्तुं कल्पते, त्वमेव जानासीति भावः। ततः खलु स प्रदेशी राजा चित्रेण सारथिना सार्द्धं-केशिनः कुमारश्रमणस्य अदूरसामन्ते-नातिदूरे नातिसमीपे उपविशति, उप-विश्य स केशिकुमारश्रमणम् एवम्-अनुपदं वक्ष्यमाणं वचनम् अवादीत्-हे भदन्त! युष्माकं खलु श्रमणानां निर्ग्रन्थानाम्, एषा इयं संज्ञा-सम्यग्ज्ञानम् अस्ति एवमग्रेऽपि क्रिया, एषा प्रतिज्ञा-निश्चयरूपा स्वीकारः, एषा दृष्टिः-दर्शनं-स्वतत्त्वम्, एषा रुचिः-श्रद्धापूर्वकोऽभिलाषः, एष हेतुः-

---

हे प्रदेशिन हम श्रमण निर्ग्रन्थों को यह संज्ञा है, यावत् यह समवसरण है कि जीव भिन्न है और शरीरभिन्न है, जीव शरीररूप नहीं है और शरीर जीवरूप नहीं है।

टीकार्थ--मूलार्थ के जैसा ही है. परन्तु भावार्थ इसका इस प्रसंगमें से है-केशी कुमारश्रम की एवं प्रदेशी राजा की बातचीत के इस प्रसंग में जब प्रदेशी राजाने अपने बैठने की बात पूछी तब इसमें अपनी अनुमति देना साधुकल्प के अनुकूल नहीं है, अर्थात् तुम बैठो-उठो इत्यादि कहना साधुओं को कल्पता नहीं होने से अयोग्य प्रकट किये, तब प्रदेशी राजा चित्र सारथि के साथ वहां बैठ गया. फिर उसने केशी कुमारश्रमण से ऐसा पूछा कि हे भदन्त! आप की ऐसी जो सम्यग्ज्ञानरूप संज्ञा है. ऐसी आपकी तत्त्वनिश्चयरूप जो प्रतिज्ञा है, ऐसी आपकी दर्शनरूप दृष्टि-

---

संज्ञा छे, यावत् आ समवसरण छे के जीव अने शरीर जुदांजुदां छे. जीव शरीररूप नथी अने शरीर जीवरूप नथी.

टीकार्थ—मूलार्थ प्रमाणे ज छे पण भावार्थ आ मुजब छे. केशीकुमार श्रमण अने प्रदेशी राजाना वार्तालापमां ज्यारे प्रदेशी राजाए केशीकुमार श्रमणने त्यां बेसवानी वात पूछी त्यारे रीते कहेवुं ते अमारा साधुकल्पथी बहार छे. जेथी ते बाबतमा तमोस्वयं निर्णय करो तेम कही. तेमनी इच्छा पर ज छोडी त्यार पछी प्रदेशी राजा पोताना उचित स्थान पर चित्रसारथिनी पासे बेसी गयो. अने त्यां बेसीने केशीकुमार श्रमणने आ प्रमाणे कह्यु के हे भदंत! आपनी जे आ जातनी सम्यग्ज्ञानरूप संज्ञा छे, तत्त्व-निश्चयरूप जे प्रतिज्ञा छे, दर्शनरूप दृष्टि स्वतत्त्व

सर्वस्यापि दर्शनप्रतिपाद्यार्थस्य-एतत्कारणम्-युष्माकं दर्शनम्, एष उपदेशः-शिक्षावचनम् एष संकल्पः-सर्वदैव भवतां तात्त्विकोऽध्यवसायः, एषा तुला-तुलेव तव स्वीकारः, तत्र तुलासादृश्यं च मेयपदार्थपरिच्छेदकत्वेन, एवम् एतत् मानम्-प्रस्थादिमानसदृशस्तवस्वीकारः, मानसादृश्यमपि मेयपदार्थ परिच्छेदकत्वेन, एतत् प्रमाणप्रत्यक्षादिप्रमाणसदृशस्तव स्वीकारः, प्रत्यक्षादि सादृश्यं च स्वीकारे दृष्टेष्टाविरोधित्वेन, यथा प्रत्यक्षादिप्रमाणं दृष्टेष्टं न विरुणद्धि तथा तवस्वीकारोऽपि । एतत् समवसरणं-बहूनामेकत्रमिलनम् तद्वत् तव स्वीकारः, यथा समवसरणे बहवो जना आगत्य मिलन्ति तथैव तव स्वीकारे सर्वाणि तत्त्वानि समाविशन्ति तत्स्वीकारस्वरूपमाह-यथा अन्यो जीवः अन्यत् शरीरमिति-जीवः-उपयोगलक्षणः, अन्यः-शरीराद् भिन्नोऽस्ति, एवं शरीरम् अन्यत्-जीवाद्भिन्नमस्ति, इत्येवं जीवशरीरयोः पार्थक्यमन्वय-

---

स्वतत्व हैं, ऐसी जो आपकी श्रद्धापूर्वक अभिलापरूप रुचि है, ऐसा जो दर्शन प्रतिपाद्य समस्त भी अर्थका आपका दर्शन कारणरूप हेतु है, ऐसा जो आपका शिक्षा वचनरूप उपदेश है, ऐसा जो आपका संकल्प है. सर्वदा आपका तात्त्विक अध्यवसाय है, तुला के जैसी मेयपदार्थ की परिच्छेदक होने से ऐसी जो आपकी मान्यता है, प्रस्थादिमान के जैसी आपकी ऐसी जो स्वीकृति-दृढधारणा है, आपका ऐसा जो दृष्ट-प्रत्यक्ष एवं इष्ट अनुमान से अविरोधी होने के कारण प्रत्यक्षादि प्रमाण स्वरूप जैसा मन्तव्य है, आपकी ऐसी जो कथनी समवसरणरूप है (अर्थात् समवसरण में जैसे अनेक जन आकर के मिलते हैं उसी प्रकार से तुम्हारे स्वीकाररूप सिद्धान्त में समस्ततत्व अन्तर्हित हो जाते हैं, अतः यह समवसरणरूप है) कि-उपयोगलक्षणवाला जीव अन्य है-शरीर से भिन्न है-भिन्न स्वरूपवाला

છે, શ્રદ્ધાપૂર્વક અભિલાપ રુચિ છે, દર્શનપ્રતિપાદ્ય સમસ્ત અર્થનું આપનુ દર્શન કારણરૂપ હેતુ છે, શિક્ષા વાચનરૂપ ઉપદેશ છે, સંકલ્પ છે, સર્વદા તાત્ત્વિક અધ્યવસાય છે, તુલાની જેમ મેયપદાર્થની પરિચ્છેદક હોવાથી એવીજ આપની માન્યતા છે, પ્રસ્થાદિમાન જેવી આપની દૃઢધારણા છે, દૃષ્ટપ્રત્યક્ષ અને ઇષ્ટ અનુમાનથી અવિરોધી હોવા બદલ પ્રત્યક્ષ વગેરે પ્રમાણરૂપ આપનું મંતવ્ય છે, આપની એવી જે કથની સમવસરણરૂપ છે (એટલે કે સમવસરણમા જેમ ઘણા લોકો આવીને એકત્ર થાય છે તેમજ તમારા સ્વીકારરૂપ સિદ્ધાન્તમા બધા તત્ત્વો અંતર્હિત થઇ જાય [illegible] સરણ છે.) કે ઉપયોગ લક્ષણવાળો જીવ અન્ય છે. શરીર કરતાં [illegible]

मुखेनोक्त्वा व्यतिरेकमुखेन तदेवाऽऽह-'णो त' इत्यादि-तत्=शरीरं जीवो न जीवश्च शरीरं न, 'णो तं' इति वाक्ये उभात्रपि तच्छब्दावव्ययम्। ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्-अस्माकं श्रमणानां निर्ग्रन्थानाम् एषा संज्ञा यावद् एतत् समवसरणं यथा अन्यो जीवः अन्यत् शरीरं, नो तत् जीवो नो स शरीरम् ॥सू० १३०॥

मूलम्--तए णं से पएसी राजा केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-जइ णं भंते! तुब्भं समणाणं णिग्गंथाणं एसा सण्णा जाव समोसरणे-जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं, एवं खलु मम अज्जए होत्था, इहेव जंबूदीवे दीवे सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जाव सयस्स वि य णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ, से णं तुब्भं वत्तव्वयाए सुबहुं पावं कम्म कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए उववण्णे। तस्स णं अज्जगस्स अहं णत्तुए होत्था-इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए हियणंदिजणणे-उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणायाए, किमंग

है, और शरीर उससे भिन्न है (यह अन्वयमुख से कथन है)। शरीर जीवरूप नहीं है (यह व्यतिरेकमुख से कथन है) सो यह सत्य है न? इस प्रकार प्रदेशी राजा के कृत इस प्रश्न को सुनकर केशीकुमारश्रमणने उससे कहा-हां, प्रदेशिन्। हम श्रमण निर्ग्रन्थों की ऐसी ही संज्ञा यावत् समवसरण है कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है. जीव शरीररूप नहीं है और शरीर जीवरूप नहीं है इस प्रकार से दोनों में सर्वथा पृथक्ता है।सू. १३०।

વાળો છે અને શરીર તેનાથી જુદુ છે (આ અન્વયમુખથી કથન છે) શરીર જીવરૂપ નથી. જીવ શરીરરૂપ નથી (આ વ્યતિરેક મુખથી કથન છે.) તો આ બધુ સત્ય છે? આ જાતના પ્રદેશી રાજાના પ્રશ્નને સાભળીને કેશીકુમાર શ્રમણે તેને કહ્યુ કે હાં પ્રદેશિન! અમારા જેવા શ્રમણ નિર્ગ્રંથોની એવી જ સંજ્ઞા યાવત્ સમવસરણ છે કે જીવ જુદો છે અને શરીર જુદુ છે. જીવ શરીરરૂપ નથી અને શરીર જીવરૂપ નથી. આ પ્રમાણે બન્ને સાવ જુદા જુદા છે. ॥ સૂ૦ ૧૩૦ ॥

पुण पासाणयाए ? तं जइ णं से । अज्जए णं मम आगंतु वएज्जा-एव खलु नत्तुया ! अहं तव अज्जए होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेमि, तएणं अहं सुबहुं पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता नरएसु उववण्णे तं माणं नत्तुया ! तुमंपि भवाहि अधम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेहि, माणं तुमंपि एवं चेव सुबहुं पावकम्मं जाव उववज्जिहिसि, तं जइ णं से अज्जए मम आगंतुं वएज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं णो तं जीवो णो तं सरीरं, जम्हा णं से अज्जए ममं आगंतु 'नो एवं वयासी तम्हा सुपइट्ठिया मम पइन्ना समणाउसो ! जहा तज्जीवो तं सरीरं ॥ सू० १३१ ॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत् यदि खलु भदन्त ! युष्माकं श्रमणानां निर्ग्रन्थानामेषा संज्ञा यावत् समवसरणं यथा—अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम् न तत् जीवः स शरीरम् एवं खलु मम आर्यकोऽभवत्, इहैव

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं से पएसी राया केसिकुमार समणं एवं वयासी) तब उस प्रदेशीराजाने केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा-(जइ णं भंते ! तुब्भं समणाणं निग्गंथाणं एसा सण्णा जाव समोसरणे) हे भदन्त ! यदि आप श्रमण निर्ग्रन्थों की ऐसी संज्ञा यावत् समवसरण है कि (अण्णो जीवो अण्णं सरीरं) जीव अन्य है और शरीर अन्य है (णो तं जीवो तं

'तएणं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं से पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी) त्यारे ते प्रदेशी राजाએ કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું કે (जइ णं भंते ! तुब्भं समणाणं निग्गंथाणं एसा सण्णा जाव समोसरणे) હે ભદંત ! જો આપ જેવા શ્રમણ નિર્ગ્રંથોની એવી સંજ્ઞા યાવત્ સમવસરણ છે કે (अण्णो जीवो अण्णं सरीरं) જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે (णो तं जीवो तं सरीरं) જીવ શરી-

जम्बूद्वीपे द्वीपे श्वेतविकायां नगर्याम् अधार्मिकः यावत् स्वकस्यापि च खलु जनपदस्य नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रावर्तयत्, स खलु युष्माकं वक्तव्यतया सुबहु पापं कर्म कलिकलुषं समर्ज्य कालमासे कालं कृत्वा अन्यतरेषु नरकेषु नैरयिकतया उपपन्नः। तस्य खलु आर्यकस्य अहं नप्तृकः अभवम्, इष्टः

सरीरं) जीव शरीररूप नहीं है. शरीर जीवरूप नहीं है. (एवं खलु मम अज्जिए होत्था-इहेव जंबूद्दीवे दीवे सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जाव सयस्स वि य णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ) सो इस बातको यदि मेरें पितामह आकर के पुष्ट करें-मुझ से कहें-तो मैं आपके इस कथन पर विश्वास कर सकता हूं ऐसा संबंध यहां लगाना चाहिये, इसी बात को वह इस आगे के सूत्रपाठ से प्रदर्शित करता है-वह कहता है कि इसी जम्बूद्वीप नामके द्वीप में स्थित इस श्वेतांविका नगरी में मेरे पितामह-दादा थे. ये अधार्मिक थे, यावत् अपने प्रजाजनों का टेक्स लेकर भी उनका पोषण अच्छी तरह से नहीं करते थे. (से णं तुब्भं वत्तव्वयाए सुबहुं पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए उववण्णे) वे आप के कथनानुसार बहुत पापी थे. अतिमलिन बहुत से पापकर्मों का उपार्जन करके वे कालमास में काल करके किसी एक नरक में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुए हैं। (तस्स

નથી. શરીર જીવરૂપ નથી. (एवं खलु मम अज्जिए होत्था इहेव जंबूद्दीवे दीवे सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जाव सयस्स वि य णं जणवयस्स नो सम्मं करभवित्तिं पवत्तेइ) તો આ વાત જો મારા પિતામહ આવીને મને કહે તો હું આપના કથન પર વિશ્વાસ મૂકી શકું તેમ છું. એવો સંબંધ અહીં લગાવવો જોઇએ. એજ વાતને તે આ સૂત્રપાઠવડે પ્રદર્શિત કરતાં કહે છે કે આજ જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં સ્થિત શ્વેતાંબિકા નગરીમાં મારા પિતામહ હતા. તેઓ અધાર્મિક હતા યાવત્ પોતાના પ્રજાજનો પાસેથી કર વસૂલ કરીને પણ તેમનું સરસ રીતે ભરણ પોષણ તેમજ રક્ષણ કરતા ન હતા. (से णं तुब्भं वत्तव्वयाए सुबहुं पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए उववण्णे) આપશ્રીના કથન મુજબ તેઓ બહુ મોટા પાપી હતા. અતિમલિન ઘણાં પાપકર્મોનું ઉપાર્જન કરીને તેઓ કાલમાસમાં કાલ કરીને કોઇ એક નરકમાં નૈરયિકની

कान्तः प्रियः मनोज्ञः मनोऽमः स्थैर्यः वैश्वासिकः संमतः बहुमतः अनुमतः रत्नकरण्डकसमानः जीवितोत्सविकः हृदयानन्दिजननः, उदुम्बरपुष्पमिव दुर्लभः श्रवणतया किमङ्ग पुनः दर्शनतया ? तद् यदि खलु स आर्यकः मम आगत्य वदेत्-एवं खलु नप्तृक ! अहं तव आर्यकोऽभवम्, इहैव श्वेतविकायां नगर्याम् अधार्मिको यावत् नो सम्यक् करभरवृत्ति प्रावर्तयम्, ततः खलु

णं अज्जगस्स अहं णत्तुए होत्था, इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे, थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए) उन अर्यक का मैं पौत्र हूं मैं उन्हें अभिलषित था. कान्त था, प्रिय था, मनोज्ञ था मनोगम्य था, स्थैर्यरूप था, विश्वासपात्र था, सन्मानपात्र था, प्रचुर मानपात्र था, हृदयप्रिय था, रत्नकरण्डक के जैसा था, जीवन के उत्सवरूप था. (हिययणंदिजणणे उंबरपुप्फंविव दुल्लभे सवणयाए, किमंगपुण पासणयाए) उनके हृदय के आनन्द जनक था, उदम्बरपुष्प के समान मैं उन्हे सुनने के लिये दुर्लभ था-देखनेकी बात तो क्या कहनी (तं जइ णं से अज्जए णं ममं आगंतुं वएज्जा) तो यदि वे आर्यक आकर के मुझसे ऐसा कहे (एवं खलु नत्तुया ! अहं तं अज्जए होत्था, इहेव सेयंवियाए नयरीए अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेमि) हे पौत्र ! मै तुम्हारा आर्यक-पितामह था, इसी श्वेतांबिका नगरी में अधार्मिक बना हुआ मै अच्छी तरह से प्रजाजन से प्राप्त टेक्स से उनका पोषण नहीं करता था.

पिए मणुण्णे मणामे, थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए) ते आर्यकनो हुं पौत्र छुं. हुं तेमना माटे अभिलषित हतो, कांत हतो, प्रिय हतो, मनोज्ञ हतो, मनोगम्य हतो, स्थैर्यरूप हतो, विश्वासपात्र हतो, सन्मानपात्र हतो, प्रचुर मानपात्र हतो, हृदयप्रिय हतो, रत्न करंडक जेवो हतो, जीवनना उत्सवरूप हतो (हिययणंदिजणणे उंबरपुप्फं विव दुल्लहे सवणयाए किमंग पुण पासणयाए) तेमना हृदयने आनंद आपनारो हतो उमरानां पुष्पनी जेम हुं तेमना माटे जोवानी वात तो दूर रही सांभळवा माटे पण दुर्लभ हतो. (तं जइ णं से अज्जए णं ममं आगंतुं वएज्जा) तो हवे जो ते आर्यक आवीने मने आम कहे के (एवं खलु नत्तुया ! अहं तं अज्जए होत्था, इहेव सेयंवियाए नयरीए अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेमि) हे पौत्र ! हुं तमारो आर्यक-पितामह हतो. आज श्वेतांबिका नगरीमां अधार्मिक थईने प्रजाजनो पासे कर वसूल करीने पण तेमनुं रक्षण-पोषण वगेरे करतो न हतो. (तए णं

अहं सुबहु पापं कर्म कलिकलुषं समर्ज्य नरकेषु उपपन्नः, तद् मा खलु नप्तृक! त्वमपि भव अधार्मिकः यावद् नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रवर्त्तय, मा खलु त्वमपि एवमेव सुबहु पापकर्म यावद् उपपत्स्यसे, तद् यदि खलु स आर्यकः मम आगत्य वदेत्-ततः खलु अहं श्रद्दध्याम् प्रतीयाम् रोचयेयं, यथा-अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम्, नो तत् जीवः स शरीरम्, यस्मात् खलु स

(तए णं अहं सुबहुं पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता नरएसु उववण्णे) अतः मैंने बहुत अधिक अतिकलुष पापों का संचय किया था-और इससे मैं नरकों में से किसी एक नरक में नारक की पर्याय से उत्पन्न हुआ हूं (तं मा णं नत्तुया! तुमंपि भवाहि अधम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेहि) इसलिये हे पौत्र! तुम अधार्मिक मत होना, और प्रजाजनों से प्राप्त टेक्स से उनके पोषण में असावधान मत रहना प्रत्युत उससे उनका पोषण अच्छी तरह से करना (मा णं तुमं पि एवं चेव सुबहुं पावकम्मं जाव उववज्जिहिसि) नहीं तो तुम भी इसी तरह से बहुत अधिक पाप कर्म का यावत् उपार्जन करोगे, इसलिये ऐसे पापकर्मों का उपार्जन मेरे द्वारा न हो इस तरह से (तं जइ णं से अज्जए ममं आगंतुं वएज्जा) यदि वे आर्यक आकरके मुझे समझाते (तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं) तो मैं आपके इस कथन पर विश्वास करूं और उसे अपनी प्रतीति का विषय बनाऊं, तथा अपनी रुचि के भितर उसे उतारु (जहा अन्नो जीवो, अन्नं

सुबहुं पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता नरएसु उववण्णे) એથી મેં ઘણા અતિકલુશ પાપોનો સંચય કર્યો છે અને એથી જ નરકોમાંથી કોઈ એક નરકમાં નારકના પર્યાયમાં ઉત્પન્ન થયો છું (तं मा णं नत्तुया! तुमंपि भवाहि अधम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेहिं) માટે હે પૌત્ર! તમે અધાર્મિક થશો નહિ અને પ્રજાજનો પાસેથી કર વસૂલ કરીને તેમના પોષણના કામમાં અસાવધાન રહેશો નહિ પણ તેમનું સરસ રીતે પોષણ કરશો (मा णं तुमं पि एवं चेव सुबहुं पावकम्मं जाव उववज्जिहिसि) નહિતર તમે પણ મારી જેમ જ ઘણા વધારે પાપકર્મનું યાવત્ ઉપાર્જન કરશો. આ પ્રમાણે આ જાતનાં પાપકર્મોનું ઉપાર્જન મારા વડે થાય નહિ તેમ (तं जइ णं से अज्जए ममं आगंतुं वएज्जा) તેથી તે આર્યક આવીને મને સમજાવે. (तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा, रोएज्जा, जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं) તો હું આપના આ કથન પર વિશ્વાસ કરી શકું અને તેને મારી પ્રતીતિનો તેમજ રુચિનો વિષય બનાવી

आर्यकः मम आगत्य नो एवमवादीत्, तस्मात् सुप्रतिष्ठिता मम प्रतिज्ञा श्रमणाऽऽयुष्मन्! यथा तज्जीवः स शरीरम् ॥सू० १३१॥

टीका--'तए णं से पएसी' इत्यादि--ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम् एवम्-अनुपदं वक्ष्यमाणं वचनम् अवादीत्-हे भदन्त! यदि चेत् खलु युष्माकं श्रमणानां निर्ग्रन्थानाम् एषा संज्ञा यावत् समवसरणं यथा-अन्यो जीवः अन्यत् शरीरं नो तत् जीवः स शरीरम्, एवं-वक्ष्यमाण-स्वरूपः खलु मम आर्यकः-पितामहः अभवत्, इहैव-अस्मिन्नेव जम्बूद्वीपे-द्वीपे श्वेतिकाया नगर्याम् अधार्मिकः धर्माचरणवर्जितः यावत्--याव-त्पदेन-अधर्मिष्ठ इत्यादीनां पदानां संग्रह एकशततमसूत्राद् बोध्यः; अर्थो-ऽपि तत्रैव। स्वकस्यापि-स्वस्यापि च खलु जनपदस्य-देशस्य करभरवृत्तिं करेण स्वग्राह्यभागग्रहणेन यो भरः-प्रजानां भरणं=पोषणं तद्रूपा या वृत्तिस्तस्या सम्यक्-सुष्ठुरीत्या नो प्रावर्तयत्-अत्र मूले 'पवत्तेइ' इत्यार्षत्वाद् भूतार्थे वर्तमाननिर्देशः। सः-पूर्वोक्तः आर्यकः खलु युष्माकं वक्तव्यतया=मतेन सुबहु-प्रचुर कलिकलुषम्-अतिमलिनं पापं कर्म समर्ज्य-समुपार्ज्य कालमासे-कालं कृत्वा, अन्यतरेषु-अन्यतमेषु नरकेषु नैरयिकतया-नारकतया उपपन्नः-समुत्पन्नः। तस्य खलु आर्यकस्य अहं नप्तृकः=पौत्रः अभवम्, कीदृशोऽहम-

---

सरीरं, णो तं जीवो तं सरीरं) कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है, जीवशरीर-रूप नहीं है, शरीर जीवरूप नहीं है। (जम्हा णं से अज्जए ममं ना एवं तम्हा सुपइट्ठिया मम पइन्ना समणाउसो! जहा तज्जीवो तं सरीरं) परन्तु जिस कारण से आर्यकने आकरके मुझसे ऐसा कहा नहीं है, इस कारण से हे श्रमण! आयुष्मन्! मेरी यह प्रतिज्ञा सुप्रतिष्ठित-सुस्थिर है कि जो जीव है वही शरीर है और जो शरीर है वही जीव है.

टीकार्थ--मूलार्थ के अनुरूप ही है. परन्तु जो विशेषता है वह इस प्रकार से है-प्रदेशी राजाने जो अपने को इत्यादि विशेषणों वाला प्रकट किया है सो उसका कारण यह है कि वह आर्यक को अभिलपित था

थाय तेम छे. (जहा अन्नो जीवो, अन्नं सरीरं, णो तं जीवो, तं सरीरं) के जीव अन्य छे अने शरीर अन्य छे, जीव शरीररूप नथी. (जम्हा णं से अज्जए मम आगतुं नो एवं वयासी, तम्हा सुपइट्ठिया मम पइन्ना समणाउसो! जहा तज्जीवो तं सरीरं) परंतु जे कारणने लीधे आर्यके आवीने मने आ प्रमाणे कह्युं नथी तेथी ज हे श्रमण! आयुष्मन्! मारी आ प्रतिज्ञा सुप्रतिष्ठित-सुस्थिर-छे के जे जीव छे ते ज शरीर छे अने जे शरीर छे ते ज जीव छे.

टीकार्थ--मूलार्थ प्रमाणे ज छे परंतु विशेषता आटली ज छे के प्रदेशी राजाए जे पोताने इष्ट वगेरे विशेषणोवाळो बताव्यो छे. तो तेनुं कारण ए छे के

भवमित्याह—इष्टः—अभिलषितः, कान्तः—कमनीयत्वात्, प्रियः—प्रेमपात्रत्वात्, मनोज्ञः—मनसा सम्यगपेक्ष्यतया ज्ञातत्वात्, मनोऽमः—मनोगम्यः, अतिप्रियत्वेन मनस्यवस्थितत्वात्, स्थैर्यं—स्थिरतागुणसम्पन्नः, वैश्वसिकः—विश्वासपात्रम् संमतः—संमानपात्रम्, बहुमतः—प्रचुरमानपात्रम्, अनुमतः—हृदयप्रियः तदाज्ञाराधकत्वात्, रत्नकरण्डकसमानः—रत्नानां—कर्केतनादीनां यत् करण्डकं तत्समानः—रत्नकरण्डक—तुल्यत्वं चात्रात्यन्तापेक्षत्वेन बोध्यम्, जीवितोत्सविकः—जीवितस्य—जीवनस्य य उत्सवः—उत्सविकः=उत्सवरूपः, नव नव हर्षजनकत्वात् हृदयानन्दिजननः—हृदयानन्दकारकः, उदुम्बरपुष्पमिव—उदुम्बरपुष्पं यथा दुर्लभं तथाऽहमपि श्रवणतया—श्रवणेन, अङ्ग ! हे मुने ! किं पुनः दर्शनतया—दर्शनेन अपि तु दर्शनेनात्यन्तदुर्लभोऽहमित्यर्थः, तत्—तस्मात् यदि—चेत् खलु स आर्यकः मम आगत्य वदेत् कथयेत्—कथनीयस्वरूपमाह—एवं खलु नप्तृक !—हे पौत्र ! अहं तव आर्यकः=पितामहः अभवम्, इहैव—अस्यामेव श्वेताम्बिकायां नगर्याम् अधार्मिको यावत् नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रावर्तयम्—अत्रापि मूले 'पवत्तेमि' इत्यार्षत्वाद् भूतार्थे वर्त्तमाननिर्देशः। ततः—तस्मा-

---

इसलिये इष्ट था, कमनीय—सुंदर होने से कान्त था, प्रेमपात्र होने से प्रिय था, मनसे उसे अच्छी तरह से अपेक्ष्यरूप से जाना था इसलिये मनोज्ञ था, अतिप्रिय होने के कारण मनमें अवस्थित था. इसलिये वह मनाऽम था, मनोगम्य था. स्थिरतागुण से संपन्न था—अतः स्थैर्यरूप था विश्वासपात्र होने से वैश्वसिक था, सन्मानपात्र होने से संमत था. प्रचुररूप मे मानपात्र, होने से प्रचुर मानपात्ररूप था. उसकी आज्ञा का आराधक होने से अनुमत—हृदय प्रिय था अत्यन्त अपेक्षित होने से रत्नकरण्डक के समान था. नवर हर्षजनक होने से उत्सविक उत्सवरूप था, इसीलिये हृदयाह्लादक था. मूल में 'पवत्तेमि' ऐसा जो वर्तमानरूप से निर्देश हुआ है

તે આર્યકને અભિલષિત હતો—એથી ઇષ્ટ હતો, કમનીય હોવાથી કાન્ત હતો, પ્રેમપાત્ર હોવાથી પ્રિય હતો, મને તેને સારી રીતે અપેક્ષ્યરૂપથી જાણી લીધો હતો એથી તે મનોજ્ઞ હતો, અતિપ્રિય હોવાથી તે મનમાં અવસ્થિત હતો એથી તે મનોઽમ હતો—મનોગમ્ય હતો. સ્થિરતાના ગુણથી સંપન્ન હતો. એથી સ્થૈર્યરૂપ હતો, વિશ્વાસપાત્ર હોવાથી વૈશ્વસિક હતો, સન્માનપાત્ર હોવાથી સંમત હતો, પ્રચુરરૂપમા માનપાત્ર હોવાથી પ્રચુરમાનપાત્ર રૂપ હતો. તેની આજ્ઞાને માનનાર હોવાથી અનુમત—હૃદયપ્રિય હતો, અત્યંત અપેક્ષ્ય હોવાથી રત્નકરંડકની જેમ હતો નવનવીન હર્ષજનક હોવાથી ઉત્સવિક—ઉત્સવરૂપ હતો—એથી જ તે હૃદયાહ્લાદક હતો, મૂલમા 'પવત્તેમિ' એવો જે

त्कारणात्-खलु अहं सुबहु-अत्यन्तं कलिकलुषम्=अतिमलिनं पापं कर्म समर्ज्य=समुपार्ज्य नरकेषु उपपन्नः-नारकतयोत्पन्नोऽभवम्. तत्-तस्मात्कारणात् नप्तृक!-हे पौत्र ! त्वमपि तथा मा भव. अधार्मिको यावत् नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रवर्तय-निषेधार्थकपदद्वयं प्रकृतार्थं दृढयतीति त्वमवश्यमेव धार्मिकादिविशेषणविशिष्टो भूत्वा स्वकस्य जनपदस्य करभरवृत्तिं सम्यक् प्रवर्त्तयेति भावः। मा खलु त्वमपि एवमेव-अहमिव सुबहु-पापकर्म यावत् यावच्छब्देन-समुपार्ज्य-नरकेषु नैरयिकतया इति संग्राह्यम्, उत्पत्स्यसे मा उत्पद्येथा इत्यर्थः, तत्-तस्मात् कारणात्-यदि-चेत् खलु आर्यको मम आगत्य वदेत्-कथयेत्, ततः-तदा खलु अहं श्रद्दध्याम्-भवद्वचने श्रद्धां कुर्याम् प्रतीयां-विशेषतो विश्वस्याम्, रोचयेयं रुचि विषयीकुर्याम् यथा अन्यो जीवो ऽन्यच्छरीरम् नो तत् जीवः स शरीरम्-इति। यस्मात् हेतोः खलु सः पूर्वोक्तः आर्यकः ममागत्य नो-न एवं पूर्वोक्तप्रकारेण अवादीत्-हे श्रमणायुष्मन् ! तस्माद् हेतोः मम प्रतिज्ञा सुप्रतिष्ठिता-सुस्थिरा यथा तत् जीवः स शरीरम् इति ॥सू.१३१॥

मूलम्—तएणं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-अत्थि णं पएसी ! तव सूरियकंता णाम देवी ? हंता अत्थि, जइ णं तुमं पएसी तं सूरियकंतं देविं ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारभूसियं केणइ पुरिसेण ण्हाएणं जाव सव्वालंकारभूसिएण सद्धिं इट्ठे सद्दफरिसरसरूवे गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणिं पासिज्जासि तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स कं डंडं निव्वत्तेज्जासि ? अहं णं भंते ! तं पुरिसं हत्थच्छिण्णगं

वह आर्ष होने से भूत अर्थ में हुआ है 'त माण नत्तुया ! तुमंपि' इत्यादि सूत्र में आगत दो निषेधार्थक पद प्रकृत अर्थ की पुष्टि करते हैं अर्थात् तुम अवश्य ही धार्मिक आदि विशेषणों वाले होकर अपने जनपद की करभरवृत्ति को अच्छी तरह से चलाओ-यह अर्थ पुष्ट होता है ॥सू १३१॥

वर्तमानरूपमां निर्देश थयेल छे ते आर्ष होवाथी भूत अर्थमां ज थयेल छे आम समजवुं. 'त माण नत्तुया ! तुमपि' वगेरे सूत्रमां आवेला बे निषेधार्थकपदो प्रकृत अर्थने ज पोषे छे. एटले के तमे अवश्यमेव धार्मिक वगेरे विशेषणोथी संपन्न थईने पोताना जनपदनी करभरवृत्तिने सारी रीते चलावो-आ अर्थ पुष्ट थाय छे ॥सू. १३१

वा सूलाइग वा सूलभिन्नगं वा पायच्छिन्नगं वा एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवएज्जा। अह णं पएसी से पुरिसे तुम एवं वदेज्जा—मा ताव मे सामी! मुहुत्तगं हत्थच्छिण्णगं वा जाव जीवियाओ ववरोवेहि जाव ताव अहं मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरियणं एवं वयामि एवं खलु देवाणुप्पिया! पावाइं कम्माइं समायरेत्ता इमेयारूवं आवइं पाविज्जामि, तं मा णं देवाणुप्पिया! तुब्भेवि केइ पावाइं कम्माइं समायरइ, मा णं भे वि एवं चेव आवइं पावेज्जाहि य जहा णं अहं, तस्स णं तुमं पएसी। पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जासि? णो इणट्ठे समट्ठे, कम्हा णं? जम्हा ण भंते! अवराही णं से पुरिसे, एवामेव पएसी! तववि अज्जए होत्था इहेव सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ, से णं अम्हं वत्तव्वयाए सुबहु जाव उववन्नो, तस्स णं अज्जगस्स तुमं णत्तुए होत्था इट्ठे कंते जाव पासणयाए, से णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए। चउहिं ठाणेहिं पएसी! अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए इच्छेइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ १ अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए से णं तत्थ महब्भूयं वेयणं वेदेमाणे इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ।२। अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए नरयपालेहिं भुज्जो भुज्जो समहिट्ठिज्जमाणे इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ।३। अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए निरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि

आनज्जिन्नसि इच्छइ माणुसं लोग हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ।४। एव निरयाउंसि अक्खीणे, अवेइए, अणिज्जिण्णे इच्छेज्जा माणुस्सं लोग हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ । इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववन्ने नरएसु नेरइएसु नेरइए इच्छइ माणुसं लोग हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ । तं सद्दहाहि णं पएसी ! जहा—अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो त जीवो तं सरीरं ॥सू० १३२॥

छाया—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत् अस्ति खलु प्रदेशिन् ! तव सूर्यकान्ता नाम देवी ? हन्त अस्ति, यदि खलु त्वं प्रदेशिन् ! तां सूर्यकान्तां देवीं स्नातां कृतबलिकर्मां कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तां सर्वालङ्कारभूषितां केनापि पुरुषेण स्नातेन यावत् सर्वालङ्कारभूषितेन सार्द्धम् इष्टान् शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् पञ्चविधान् मानुष्यकान् काम-

'तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं केसीकुमारसमणे) इसके बाद केशीकुमारश्रमणने (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजा से ऐसा कहा—(अत्थि णं पएसी! तव सूरियकन्ता णामं देवी ? हे प्रदेशिन् तुम्हारी सूर्यकान्ता नामकी देवी है? (हंता, अत्थि) हां भदन्त ! है (जइ णं तुमं पएसी ! तं सूरियकंतं देविं ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारभूसियं केणइ पुरिसेणं ण्हाएणं, जाव सव्वालंकारभूसिएणं सद्धिं इट्ठे सद्दफरिसरसरूवे गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणिं पासिज्जासि) यदि हे प्रदेशिन्!

'तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं केसीकुमारसमणे) त्यारपछी केशीकुमार श्रमणे (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं. (अत्थि णं पएसी ! तव सूरियकंता णामं देवी ?) हे प्रदेशीन् ! तमारी सूर्यकान्ता नामे देवी छे ? (हंता, अत्थि) हा भदंत ! छे. (जइणं तुमं पएसी ! तं सूरियकंतं देविं ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारभूसियं केणइ पुरिसेणं ण्हाएणं, जाव सव्वालंकारभूसिएणं सद्धिं इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणिं पासिज्जासि,

भोगान् प्रत्यनुभवन्तीं पश्येः (तदा) तस्य खलु त्वं प्रदेशिन्! कं दण्डं निर्वर्तयेः? अहं खलु भदन्त! तं पुरुषं हस्तच्छिन्नकं वा शूलातिगं वा शूलभिन्नकं वा पादच्छिन्नकं वा एकाऽऽघातं कूटाघातं जीविताद् व्यपरोपयेयम् अथ खलु प्रदेशिन्! स पुरुषः त्वाम् एवं वदेत् मा यावत्

तुम स्नात, कृतबलिकर्मा–(काक आदि को अन्नादि का भाग देनेवाली उस देवीओं कि जिसने कौतुक, मंगलरूप प्रायश्चित्त कर लिया है, और समस्त अलङ्कारों से जो विभूषित बनी हुई है किसी भी स्नात यावत् सर्वालङ्कारविभूषित परपुरुष के साथ इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध इन पांच प्रकार के मनुष्यभव संबंधी कामभोगों का अनुभव करती हुई देखलो तो (तस्स णं तुमं पएसी! पुरिसस्स कं डंडं निव्वत्तेज्जासि?) तो हे प्रदेशिन्! तुम उस पुरुष के लिये क्या–कैसा दण्ड दो? (अहं णं भंते! तं पुरिसं हत्थछिण्णगं वा सूलाइगं वा सूलभिन्नगं वा पायच्छिन्नगं वा एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवएज्जा) तब प्रदेशी राजाने कहा–हे भदन्त! मैं उस पुरुष का ऐसा दंड दूं कि जिससे उसके दोनों हाथ काट लिये जावें, या उसे शूली पर चढा दिया जावे, या उसके दोनों पग काट लिये जावें, या एक ही प्रहार से उसका प्राण ले लिया जावे, वा किसी पर्वत शिखर पर उसे चढाकर वहां उसे धकेल दिया जावे. कि जिससे वह अपने जीवन से रहित हो बैठे। (अह णं पएसी! से पुरिसे

પ્રદેશિન્! તમે જેણે સ્નાત, કૃત બલિકર્મા–કાગડા વગેરેને અન્ન ભાગ આપ્યો છે એવી તે દેવીને કે જેણે કૌતુક મંગલરૂપ પ્રાયશ્ચિત્તો કરી લીધા છે. અને સમસ્ત અલંકારોથી જે વિભૂષિત થઇ ગયેલી છે અને ગમે તે સ્નાન યાવત્ સર્વાલંકારવિભૂષિત પરપુરૂષની સાથે ઇષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ, ગંધ આ પાંચ પ્રકારના મનુષ્યભવ સંબંધી કામભોગો ભોગવતી જોઇ લો તે (तस्स णं तुमं पएसी! पुरिसस्स कं डंडं निव्वत्तेज्जासि?) તો હે પ્રદેશિન્! તમે તે પુરૂષને કઇ જાતની શિક્ષા કરશો? (अहं णं भंते! तं पुरिसं हत्थच्छिण्णगं वा सूलाइगं वा सूलभिन्नगं वा पायच्छिन्नगं वा एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवेज्जा) ત્યારે પ્રદેશી રાજાએ કહ્યું હે ભદંત! હું તે પુરૂષને આ જાતની શિક્ષા કરીશ કે જેથી તેના બન્ને હાથો કાપી લેવામા આવે કે તેને શૂળી પર ચઢાવવામાં આવે કે તેના બન્ને પગો કાપી નાખવામાં આવે કે એક જ ઘામા તેને મારી નાખવામા આવે અગર પર્વતશિખર પર લઇ જઇ તેને ત્યાંથી નીચે ફેંકી દેવામાં આવે કે જેથી પરિણામે તે મૃત્યુ પામે.

स्वामिन्! मुहूर्तकं हस्तच्छिन्नकं वा यावत् जीविताद् व्यपरोपय यावत् तावद् अहं मित्र ज्ञाति-निजक स्वजनसम्बन्धिपरिजनम् एवं वदामि-एवं खलु देवानुप्रिया! पापानि कर्माणि समाचर्य इमामेतद्रूपाम् आपत्तिं प्राप्नोमि, तत् मा खलु देवानुप्रियाः! यूयमपि केचित् पापानि कर्माणि समाचरत, मा खलु यूयमपि एवमेव आपत्तिं प्राप्नुत यथा खलु अहं, तस्य खलु त्वं प्रदे-

---

तुमं एवं वएज्जा-मा ताव मे सामी! मुहुत्तगं हत्थच्छिण्णगं वा जीवियाओ ववरोवेहि जाव ताव अहं मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरियणं एवं वयासी) इस प्रकार से प्रदेशी राजा का कथन सुनकर केशीश्रमणने उससे ऐसा कहा-हे प्रदेशिन्! यदि वह तुमसे ऐसा कहे-हे स्वामिन्! आप थोडी देर तक ठहरिये. मेरे हाथ पैर न काटिये यावत् मुझे जीवन से रहित न कीजिये, तब तक मैं मित्र, माता आदि ज्ञाति, स्वपुत्रादिक निजक, पितृव्यादि स्वजन श्वशुर आदिक सम्बंधिजन, दासी दास आदि परिजन, इन सब से ऐसा कह दूं कि (एवं खलु देवाणुप्पिया? पावाइं कम्माइं समायरेत्ता इमेयारूवं आवइं पाविज्जामि) हे देवानुप्रियो! मैं पापकर्मों को समाचरित करके इस प्रकार की आपत्ति को पा रहा हूं (तं मा णं देवाणुप्पिया! तुब्भे वि केइं पावाइं कम्माइं समायरइ) इसलिये हे देवानुप्रियो! आप लोग कोई भी पापकर्म मत करना कि (मा णं भे वि एवं चेव आवइं पावेज्जाहि य जहा णं अहं) जिससे तुमको भी ऐसी आपत्ति न पडना पडे, जैसा

(अह णं पएसी! से पुरिसे तुमं वदेज्जा मा ताव मे सामी! मुहुत्तगं हत्थच्छिण्णगं वा जाव जीवियाओ ववरोवेहि जाव ताव अहं मित्तणाइणियग-सयणसंबंधिपरियणं एवं वयासि) આ પ્રમાણે પ્રદેશી રાજાનું કથન સાંભળીને કેશીકુમાર શ્રમણે તેમને કહ્યું કે હે પ્રદેશિન્! જો તમને આ પ્રમાણે કહે કે સ્વામિન્! આપ થોડી વખત થોભી જાવ. મારા હાથપગ કાપો નહિ યાવત્ મને જીવન રહિત પણ બનાવો નહિ. હું મિત્ર, માતા, પિતા વગેરે જ્ઞાતિ, સ્વપુત્રાદિક નિજક પિતૃવ્યાદિ સ્વજન, શ્વશુર વગેરે સંબંધીજન. દાસદાસી વગેરે પરિજન આ બધાને આ પ્રમાણે કહી દઉં કે (एवं खलु देवाणुप्पिया! पावाइं कम्माइं समायरेत्ता इमेयारूवं आवइं पाविज्जामि) હે દેવાનુપ્રિયો! હું પાપકર્મોનું આચરણ કરીને આ જાતની શિક્ષા ભોગવી રહ્યો છું. (तं मा णं देवाणुप्पिया! तुब्भे वि केइ पावाइं कम्माइं समायरइ) એથી હે દેવાનુપ્રિયો તમે કોઈપણ જાતનું પાપકર્મ આચરતા નહિ (मा णं भे वि एवं चेव आवइं पावेज्जाहि य जहा णं अहं) જેથી તમને આ જાતની શિક્ષા ભોગવવી પડે કે જેવી હું ભોગવી રહ્યો

शिन्! पुरुषस्य क्षणमपि एतमर्थं प्रतिशृणुयाः?, नायमर्थः समर्थः, कस्मात् खलु?, यस्मात् खलु भदन्त! अपराधी खलु स पुरुषः, एवमेव प्रदेशिन्! तवापि आर्यकोऽभवत् इहैव श्वेतविकायां नगर्याम् अधार्मिको यावत् नो सम्यक् करभरवृत्तिं प्रावर्तयत, स खलु मम वक्तव्यतया सुबहु यावत् उपपन्नः, तस्य खलु आर्यकस्य त्वं नप्तृकोऽभवः, इष्टः कान्तः यावद् दर्शनतया, स खलु इच्छति मनुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुं नैव खलु शक्नोति शीघ्रमागन्तुम्, चतुर्भिः स्थानैः प्रदेशिन्! अधुनोपपन्नकः नरकेषु नैरयिक

कि मैं पड गया हूं। (तस्स णं तुमं पएसी! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जासि?) तो हे प्रदेशिन्! तुम क्या उस पुरुष की बात को थोडी सी भी देर के लिये स्वीकार कर लोगे? (णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त! यह अर्थ समर्थ नहीं है-अर्थात् उसकी यह बात स्वीकार नहीं की जावेगी (जम्हा) क्यों कि (णं से भंते! अवराही णं से पुरिसे) हे भदन्त! वह पुरुष अपराधी है। (एवामेव पएसी! तव वि अज्जए होत्था) तो इसी तरह से हे प्रदेशिन्! तुम्हारे भी आर्यक हुए है। (एवामेव इहेव सेयंवियाए णयरीए अधम्मिए णो, सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ) उन्होंने इस श्वेतांबिका नगरी में अपना जीवन अधार्मिक बनाया है, तथा प्रजाजन से प्राप्त टेक्स से उनका उन्होंने अच्छी तरह से पालनपोषण नहीं किया है। (से णं अम्हं वत्तव्वाए सुबहुं जाव उववन्नो) इस तरह मेरी वक्तव्यता के अनुसार वे अनेक अतिमलिन पाप कर्मों का अर्जन करके यावत् किसी एक नरक की पर्याय से उत्पन्न हुए हैं। (तस्स णं अज्जगस्स तुमं णत्तुए होत्था, इट्ठे कंते जाव पासणयाए) उन्ही आर्यक के तुम इष्ट कान्त

(तस्स ण तुमं पएसी! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जासि?) તો હે પ્રદેશિન્! શું તમે તે પુરુષની વાતને થોડા વખત માટે પણ સ્વીકારી લેશો? (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ભદંત! આ અર્થ સમર્થ નથી એટલે કે તેની આ વાત સ્વીકારવામાં આવશે નહિ. (जम्हा) કેમકે (णं से भंते! अवराही णं से पुरिसे) હે ભદંત! તે પુરુષ અપરાધી છે. (एवामेव पएसी! तव वि अज्जए होत्था) તો આ પ્રમાણે જ હે પ્રદેશિન્ તમારા માટે પણ આર્યક થયા છે. (एवामेव इहेव सेयंवियाए णयरीए अधम्मिए णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ) તેમણે પોતાનું જીવન શ્વેતાંબિકા નગરીમાં અધાર્મિક રીતે પસાર કર્યું છે તેમજ પ્રજાજનો પાસેથી કર વસૂલ કરીને પણ તેમનું સારી પેઠે પોષણ કર્યું નથી. (से णं अम्हं वत्तव्वाए सुबहुं जाव उववन्नो) આ પ્રમાણે મારા કથન મુજબ તેમણે ઘણા પાપકર્મોનું અર્જન કરીને યાવત્ કોઈ એક નરકમાં નારકની પર્યાયથી જન્મ પામ્યા છે (तस्स णं अज्जगस्स तुमं णत्तुए होत्था, इट्ठे कंते जाव पासणयाए)

इच्छति मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तु नैव खलु शक्नोति–'१ अधुनोपपन्नकः नरकेषु नैरयिकः स खलु तत्र महद्भूतां वेदनां वेदयन् इच्छेत् मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुं नैव खलु शक्नोति । २ अधुनोपपन्नको नरकेषु नैरयिको नरकपालैः भूयो भूयः समधिष्ठीयमानः इच्छति मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुं

आदि विशेषणों वाले पौत्र हो (से णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ, हव्वमागच्छित्तए) वे तुम्हारे आर्यक ! यद्यपि इस मनुष्यलोक मे वहा से जल्दी से जल्दी आना चाहते हैं, परन्तु वे वहां से आने के लिये असमर्थ है। (चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए इच्छइ, माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ) क्यों की हे प्रदेशिन् ! अधुनोपपन्नक नारक चार कारणों को लेकर मनुष्यलोक में शीघ्र आने की इच्छा करता हुआ भी वह वहा से शीघ्र नहीं आ सकता है (१अहुणोववन्नए, नरएसु नेरइए–से णं तत्थ महब्भूयं वेयणं वेदेमाणे इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ) वे चार कारण इस प्रकार से हैं––अधुनोपपन्नक नैरयिक नरकों में बहुत बडी वेदना का अनुभव करता है, अतः वह चाहता है कि मैं मनुष्यलोक में उत्पन्न हो जाऊ–परन्तु वह वहा से निकलने में सर्वथा असमर्थ होता है–वहां नहीं आ सकता है ? (२अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए नरय–

તેજ આર્યકના તમે ઇષ્ટ કાંત વગેરે વિશેષણોવાળા પૌત્ર છો. (से णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ, हव्वमागच्छित्तए) તમારા તે આર્યક જો કે મનુષ્યલોકમા ત્યાથી જલ્દીમા જલ્દી આવવા ઇચ્છે છે, પરંતુ તેઓ ત્યાથી આવવામા અસમર્થ છે. (चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए इच्छइ, माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ) કેમકે હે પ્રદેશિન્ ! અધુનોપપન્નક નારક ચાર કારણોને લીધે મનુષ્યલોકમા જલ્દી આવવાની ઇચ્છા ધરાવે છે છતાએ તે ત્યાથી જલ્દી આવી શકતો નથી (१ अहुणोववन्नए, नरएसु नेरइए से णं तत्थ महब्भूयं वेयणं वेदेमाणे इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ) તે ચાર કારણો આ પ્રમાણે છે. અધુનોપપન્નકનૈરયિક નરકોમાં તીવ્ર વેદનાને અનુભવે છે એથી તે ઇચ્છે છે કે હું મનુષ્યલોકમા જન્મ પામુ પરંતુ તે ત્યાથી નીકળવામા સર્વથા અસમર્થ હોય છે, અહીં તે આવી શકતો નથી १ (२ अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए नरयपालेहिं भुज्जो भुज्जो समहिट्ठिज्जमाणे इच्छइ, माणुसं लोगं हव्वमाग-

नैव खलु शक्नोति। ३ अधुनोपपन्नकः नरकेषु नैरयिकः निरयवेदनीये कर्मणि अक्षीणे अवेदिते अनिर्जिर्णे इच्छति मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुं नैव खलु शक्नोति। ४ एवम् अधुनोपपन्नको नरकेषु नैरयिको निरयाऽऽयुषि कर्मणि अक्षीणे अवेदिते अनिर्जीर्णे इच्छति मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुं नैव खलु शक्नोति शीघ्रमागन्तुम्' इत्येतैश्चतुर्भिः स्थानैः प्रदेशिन्! अधुनोपपन्नकः

पालेहिं भुज्जो भुज्जो समहिट्ठिज्जमाणे इच्छइ, माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ) अधुनोपपन्न नारक नरकों में परमाधार्मिकरूप नरकपालों द्वारा बार बार आक्रम्यमाण होता हुआ यह चाहता है कि मैं मनुष्यलोक में शीघ्र उत्पन्न हो जाऊं, परन्तु वह मनुष्यलोकमें शीघ्र उत्पन्न नहीं होसकता है२ (३अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए निरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अनिज्जिन्नंसि इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए) अधुनोपपन्नक नारक नरक में नरक-भोग्य अशातवेदनीय कर्म के अक्षीण होने पर, अननुभूत होने पर एवं अनिर्जिर्ण नाश होने पर, मनुष्यलोक में आनेका अभिलाषी होता हुआ भी नहीं आ सकता है३ (४ एवं नेरयाउंसि अक्खीणे अवेइए अणिज्जिण्णे इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ) इसी प्रकार चौथा कारण यह है कि उसके नरकसंबंधी आयु क्षीण नहीं हुआ है, उसका वेदन नहीं हो चुका है, तथा नारक आयु की निर्जरा भी नहीं हुई है इसी कारण से वह मनुष्यलोग में आने को इच्छा करता हुआ भी नहीं आ सकताहै।(इच्वे-

---

च्छित्तए नो चेव णं संचाएइ) અધુનોપપન્નક નારક નારકોમાં પરમાધાર્મિકરૂપ નરકપાલો વડે વારંવાર આક્રમ્યમાણુ થઇને તે એમ ઇચ્છે છે કે હું મનુષ્યલોકમાં જલ્દી ઉત્પન્ન થાઉં પરંતુ તે મનુષ્યલોકમાં જલ્દી ઉત્પન્ન થઇ શકતો નથી, ૨. (३अहुणो-ववन्नए नरएसु नेरइए निरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अनिज्जिन्नंसि इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए) આધુનોપપન્નક નારક નરકમાં ભોગ્ય અશાત વેદનીય કર્મ અક્ષીણુ હોવાથી અનનુભૂત હોવાથી અને અનિર્જીર્ણુ હોવાથી મનુષ્યલોકમાં આવવાની અભિલાષા રાખે છે છતાંએ તે ત્યાંથી મુક્ત થઇ શકતો નથી. અને (४ एवं नेरइयाउंसी अक्खीणे अवेइए अणिज्जिण्णे इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ) આ પ્રમાણે જ ચોથું કારણુ આ પ્રમાણે છે કે નરકસંબંધી તેનું આયુ ક્ષીણુ થયું નથી, તેનું વેદન થયું નથી તેમજ નારક આયુની નિર્જરા-પણ થઇ નથી એથી જ તે મનુષ્યલોકમાં આવવાની ઇચ્છા ધરાવે છે છતાંએ આવી

नरकेषु नैरयिकः इच्छति मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तु नैव खलु शक्नोति। तत् श्रद्धेहि खलु प्रदेशिन्! यथा—अन्यो जीव अन्यत् शरीरम् नो तज्जीवः स शरीरम् ॥ सू. १३२॥

टीका—'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि—ततः—तदनन्तरम्, खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्—हे प्रदेशिन! तव सूर्यकान्ता-नाम देवी=राज्ञो अस्ति खलु?, ततः प्रदेशी राजोत्तरयति—हन्त!' इति

एहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी! अहुणोववन्ने नरएसु नेरइएसु नेरइए इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ) इस प्रकार इन चार कारणों से हे प्रदेशिन! अधुनोपपन्नक नारक मनुष्यलोक में शीघ्र जाने का अभिलाषी होता हुआ भी वह वहां से शीघ्र मनुष्य लोक में नहीं आ सकता है। (तं सद्दहाहि णं पएसी! जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो तं जीवो तं सरीरं) इसलिये हे प्रदेशिन! तुम इस बात पर अवश्य विश्वास करो, कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है.।

टीकार्थ—केशीकुमारश्रमणने प्रदेशी राजा से जो कहा वह इस सूत्र द्वारा प्रकट किया गया है. इसमें जीव भिन्न है और शरीरभिन्न है इस बातको उसके आर्यक—(पितामह दादा) नरक से आकर उसे क्यों नहीं समझाते है इस बात का उत्तर उसे समझाया गया है. उससे केशी कुमारश्रमणने कहा हे प्रदेशिन! तुम्हारी जो सूर्यकान्ता देवी है उससे यदि कोई मनुष्य उसी के जैसे विशेषणों वाला बन कर मनोऽनुकूल शब्द

શકતો નથી. (इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी! अहुणोववन्ने नरएसु नेरइएसु नेरइए इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ) આ પ્રમાણે આ ચારે ચાર કારણોથી હે પ્રદેશિન્! અધુનોપપન્નક નારક મનુષ્યલોકમાં જલદી આવવાની ઈચ્છા રાખતો હોય છતાં એ ત્યાંથી જલદી મનુષ્યલોકમાં આવી શકતો નથી (तं सद्दहाहि णं पएसी! जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं) એથી હે પ્રદેશિન! તમે આ વાત પર અવશ્ય વિશ્વાસ કરો કે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે.

ટીકાર્થ—કેશીકુમારશ્રમણે પ્રદેશી રાજાને જે કંઈ કહ્યું છે તે બધું આ સૂત્ર વડે પ્રકટ કરવામાં આવ્યું છે. આમાં જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે એ વાતને તેના આર્યક (પિતામહ—દાદા) નરકમાંથી આવીને કેમ સમજાવતા નથી એ વાત આ પ્રમાણે તેને સમજાવવામાં આવી છે. કેશીકુમારશ્રમણે કહ્યું કે હે પ્રદેશિન! તમારી જે સૂર્યકાંતાદેવી છે તેની સાથે જો કોઈ માણસ તેના જેવા વિશેષણોથી યુક્ત ...

स्त्रीकारे अन्ति-विद्यते मम सूर्यकान्ता देवी। ततः केशीकुमारश्रमण-आह-यदि-चेत् खलु त्वं प्रदेशी राजा तां-पूर्वोक्तां सूर्यकान्तां देवीं स्नाता-कृतस्नाना. कृतबलिकर्माणं-कृतवायसादि निमित्तान्नभागा, कृत-कौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तां-कृतमषीपुण्ड्रतिलकादि मङ्गलार्थ पापशोधनक्रियां, सर्वालङ्कारभूषितां-सकलाङ्गोपाङ्गाभरणालङ्कृतां केनापि केनचित् पुरुषेण सार्द्धं, कीदृशेन ? इत्याह-स्नातेन ? इत्याह-स्नातेन यावत्-यावत्पदेन-कृतबलिकर्मणा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तेन' इत्येषां सङ्ग्रहः, तथा सर्वालङ्कारभूषितेन सार्द्धं इष्टान्=मनोऽनुकूलान शब्द-स्पर्श रसरूप-गन्धान्, पञ्चविधान्-पञ्चप्रकारान मनुष्यकान्-मानुष्यलोकभवान कामभोगान्-पूर्वोक्तान् शब्दादीन्द्रियविषयान् प्रत्यनुभवन्तीम्-अनुभवविषयीकुर्वतीम् पश्येथ, तस्मिन्नवसरे हे प्रदेशिन् ! त्वं तस्य-पूर्वोक्तस्य खलु कं-कीदृशं दण्डं निग्रहं निर्वर्तयेः-कुर्याः ? । ततः प्रदेशिराज आह-हे भदन्त ! अहं खलु तं-कृततादृशदुराचारं पुरुषं हस्तच्छिन्नकं-हस्तौ छिन्नौ यस्य तादृशं वा-अथवा शूलातिगं शूलारोपितं वा भिन्नकं-शूलेन भिन्नः शूलभिन्नः स एव शूलभिन्नकस्तम्, वा-अथवा पादच्छिन्नकं-छिन्नौ पादौ यस्य तम् वा अथवा एकाऽऽघातम्-एकः-सकृत् आघातः-प्रहारो यस्मिन्, तम्, कूटाऽऽघातं-कूटेन-पर्वतशिखरेण तदुपरिसमारोपणद्वारा पातनेन आघातः-वधो यस्य तं तथा. जीविताद्-व्यपरोपयेयं-वियोजयेयम्, जीवरहितं कुर्यामित्यर्थः, इति प्रदेशिराजनिवेदनानन्तरं पुनः केशीश्रमणः पृच्छति-अथ खलु हे प्रदेशिन ! यदि सः पुरुषः त्वाम् एवम् अनुपद वक्ष्यमाणं वचनं वदेत्-कथयेत्-तथाहि-मे-मां हे स्वामिन् ! यावत्-मित्रा-

स्पर्श-रस-रूप गंधादि पांच प्रकारके मनुष्यभव संबधी कामभोगों को भोगे और तुम इस बात को देखलो तो उस अवसर में तुम उस पुरुष के लिये क्या दण्ड दो ? तब प्रदेशी राजाने कहा-हे भदन्त ! ऐसे दुराचारी पुरुष को मैं अङ्गभङ्ग का यावत जीवरहित होने का दण्ड दूं ठीक है-इस पर यदि वह पुनः तुम से ऐसा निवेदन करे कि हे स्वामिन् ! थोडी देर आप मुझे इस दण्ड से रहित कर दीजिये इतने में मैं अपने मित्रा-

રમણ કરે મનોઽનુકૂલ શબ્દ સ્પર્શ રસ રૂપ ગંધ વગેરે પાંચ પ્રકારના મનુષ્ય-સંબંધી કામભોગો ભોગવે અને તમે આ બધું કરતાં જોઇ લો તો તે વખતે તમે તે પુરુષને શી શિક્ષા કરો? ત્યારે પ્રદેશી રાજાએ કહ્યું કે હે ભદંત! એવા દુરાચારી પુરુષને હું અંગભંગની યાવત્ નિષ્પ્રાણ કરી મૂકવાની શિક્ષા આપું તે યોગ્ય કહેવાય. એના પછી તે ફરી તમને એવી રીતે વિનંતી કરે કે હે સ્વામિન્! થોડા વખત માટે મને રજા આપો કે જેથી હું મિત્ર વગેરે સ્વજનોને આમ કહું કે હે દેવાનુપ્રિયો તમારામાંથી

दीन् प्रति वक्ष्यमाणां पर्यनिवेदनसमयावधिमुहूर्तं मुहूर्तमात्रं मां हस्तच्छिन्नकं वा यावत्-यावत्पदेनोपर्युक्तपदानां संग्रहो बोध्यः, तदर्थश्चोपर्युक्त एव, जीविताद् मा व्यपरोपय-न वियोजय, मा मारयेत्यर्थः यावत्-यत्समयपर्यन्तं 'तावत्' इति वाक्यालङ्कारे, अह मित्र-ज्ञाति-निजक-स्वजन-सम्बन्धि परिजनं मित्राणि-सुहृदः, ज्ञातयः-मातापितृभ्रात्रादयः, निजकाः-स्वपुत्रादयः स्वजनाः-पितृव्यादयः, सम्बन्धिनः-श्वशुरादयः, परिजनाः-दासी दासादयः, एषां समाहारो मित्र-ज्ञाति-निजक स्वजन-सम्बन्धि-परिजनं, तत्तथा, एवम् अनुपदं वक्ष्यमाणं वचनं वदामि-कथयामि, यथा-हे देवानुप्रियाः! यूयम् एवं-वक्ष्यमाणं शृणुत-'अहं पापानि कर्माणि समाचर्य-कृत्वा इमाम्-एतद्रूपाम् प्रदेशिराजोपनीयमाना कुमारणया जीवितात् व्यपरोपणीयतारूपाम् आपत्तिम्-आपदं प्राप्नोमि-प्राप्तोऽस्मि, तत्-तस्मात्कारणात्-पापकर्मणामापत्तिप्रापकत्वाद्धेतोः, हे देवानुप्रियाः! यूयमपि-मदीयमित्रादयः केचित्-केऽपि पापानि कर्माणि मा समाचरत-न प्रकुरुत 'मेति' इति यूयमपि एवमेव=अनेनैव प्रकारेण आपत्तिं मा प्राप्नुत-यथा खलु अहम् इति। तस्य खलु त्वम् एतं= तत्कथनरूपम् अर्थं हे प्रदेशिन्! प्रतिशृणुयाः-स्वीकुर्याः? प्रदेशी कथयति-अयम्-अनन्तरोक्तोऽर्थः नो समर्थः-न युज्यते, कस्मात् खलु न समर्थः? इति जिज्ञासायामाह-'यस्मात्' इत्यादि-हे भदन्त! यस्मात् खलु स पुरुषः मे-मम अपराधी वर्तते' इति हेतोः असमर्थो न-समर्थः, केशीकुमारश्रमणः

दिजनों से ऐसा कह दे कि हे देवानुप्रियो! तुम लोगों में से कोई भी जन ऐसा पापकर्म नहीं करना-नहीं तो मेरी जैसी आपत्ति को भोगना पडेगा तो क्या हे प्रदेशिन्! तुम उसकी इस बातको मान लोगे! यदि कहो कि नहीं तो इस पर पुनः यही पूछा जा सकता है कि क्यों नहीं? तुम कह सकते हो! इसके उत्तर में वह अपराधी है। तो इसी प्रकार से हे प्रदेशिन! तुम्हारे जो आर्यक (दादा) है वे भी अनेक मलिन पापकर्मों को कमाकर यहां से नरक में नारक की पर्याय से उत्पन्न हुए हैं-अतः जब तक वे वहां की पूरी स्थिति को नहीं भोग लेते हैं-तबतक वे अपनी इच्छा

કોઈપણ એવું પાપકર્મ કરશો નહિ નહિતર મારા જેવી શિક્ષા ભોગવવી પડશે. તો શું હે પ્રદેશિન્ તમે તેની આ વાત સ્વીકારી લેશો? હવે જો તમે આમ કહો કે નહિ, તો એના પર ફરી તમને પૂછવામાં આવે કે કેમ નહિ? એના ઉત્તરમાં તમે કહેશો કે તે અપરાધી છે. તો આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ તમારા જે આર્યક છે તેઓ પણ ઘણા પાપકર્મોનું ઉપાર્જન કરીને અહીંથી નરકમાં નારકની પર્યાયથી જન્મ પામ્યા છે એથી જ્યાં સુધી તેઓ ત્યાંની [illegible] નર્કનું

प्राह—हे प्रदेशिन्! एवमेव—अनेनैव प्रकारेण तवापि आर्यकोऽभवत्, पितामहो कीदृशोऽभवत्? इत्याह—स च इहैव-श्वेतविकायां नगर्यामधार्मिको यावत्नो सम्यक् करभरवृत्ति प्रावर्तयत्। सः—तवार्यकः खलु मम वक्तव्यतया—कथनानुसारेण सुबहु यावत्-यावत्पदेन—"पापं कर्म प्राणातिपातादिकं समर्ज्य नरकेषु" इत्येषां पदानां सङ्ग्रहः उत्पन्नः समुत्पन्नः" तस्य—पूर्वोक्तस्य आर्यकस्य खलु त्वं नप्तृकः पौत्रोऽभवः, कीदृशः? इतिजिज्ञासायामाह—इष्टः कान्तो यावद् दर्शनतया, । सः—नरकेषूपपन्नः खलु सम्प्रति मानुष्यं लोकं हव्यं-शीघ्रमागन्तुमिच्छति, परन्तु स शीघ्रमागन्तुं नो शक्नोति। कुतो न इति जिज्ञासायां शृणु—हे प्रदेशिन्! चतुर्भिः स्थानैः—कारणैः, अधुनोपपन्नः—तत्कालोत्पन्नो नरकेषु—नरकमध्ये, नैरयिकः नारकः मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुमिच्छति परन्तु शीघ्र आगन्तुं नो शक्नोति—तानि चत्वारि स्थानान्येवम्—अधुनोपपन्नो नरकेषु नैरयिकः सः खलु तत्र—नरकेषु महद्भूतां—महतीं वेदनां वेदयन्—अनुभवन् मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुमिच्छेत् परन्तु आगन्तुं नैव शक्नोति१। अधुनोपपन्नो नरकेषु नैरयिको नरकपालैः परमाधार्मिकै देवैः भूयोभूयः—पुनःपुनः समधिष्ठीयमानः—आक्रम्यमाणः सन् इच्छति मानुष्यं लोकमागन्तुं किन्तु न शक्नोति२। तृतीयं स्थानमाह—'अधुनोपपन्नो नरकेषु नैरयिकः, निरयवेदनीये-नरकभाग्ये असातवेदनीये कर्मणि अक्षीणे—क्षयमप्राप्ते अवेदिते-अननुभूते, अनिर्जीर्णे—नाशमप्राप्ते च सति इच्छति मानुष्यं लोकमागन्तुं किन्तु न शक्नोत्यागन्तुम्।३। अनेन प्रकारेण निरयायुषि—नरकसम्बन्धिनि आयुःकर्मणि अक्षीणेऽवेदितेऽनिर्जीर्णे—निर्जराम् प्राप्ते च सति, इच्छति मनुष्यं लोकमागन्तुं किन्तु न शक्नोति।४। इत्येतैः अनन्तरोक्तैश्चतुर्भिः स्थानैः हे प्रदेशिन्! अधुनोपपन्न इत्यादीना विवरणं प्राग्वत्। तत्—तस्मात्कारणात् हे प्रदेशिन्! त्वं श्रद्धेहि—मद्वचने विश्वसिहि खलु, यथा-'अन्यो जीवः, अन्यत् शरीरम्, नो स जीवः तत् शरीरम्'

के अनुसार यहां नहीं आ सकते हैं. क्यों कि नारक जीवों को यहां आने में चार कारण बाधक हैं जो मूलार्थ में प्रकट किये जा चुके हैं। इसलिये हे प्रदेशिन! तुम मेरे इस वचन पर कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है, जीव शरीररूप नहीं है, और शरीर जीव रूप नहीं है विश्वास रखो,

સ્થિતિને ભોગવી લેશે નહિ ત્યાં સુધી તેઓ પોતાની ઇચ્છા મુજબ અહીં આવી શકશે નહિ કેમકે નારકજીવોને અહીં આવવા માટે ચાર કારણો બાધક છે. જે મૂલાર્થમાં બતાવવામાં આવ્યા છે. એથી હે પ્રદેશિન્! તમે મારા આ વચન પર—કે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે, જીવ શરીરરૂપ નથી, અને શરીર જીવરૂપ નથી,

इति। यदि जीव-शरीरयोर्भेदो न स्यात्तदा पूर्वोक्तकारणचतुष्टयेन नरकभोगं कः कुर्यात्? शरीरस्य तु मनुष्यलोक एव नष्टत्वात्, शरीरभिन्नत्वे तु जीवस्य शरीरनाशेऽपि सत्त्वादुक्तहेतुचतुष्टयेन नरकभोगं कर्तुं जीवः शक्तो भवति॥ सू० १३२॥

मूलम्—तएणं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-अत्थि णं भंते! एसा पण्णाओ उवमा, इमेण पुण कारणेण नो उवागच्छइ। एवं खलु भंते! मम अज्जिया होत्था इहेव सेयवियाए नयरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया अभिगय जीवा० सव्वो वण्णओ जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ, सा णं तुज्झं वत्तव्वयाए सुबहुं पुन्नोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा, तीसे णं अज्जियाए अहं नत्तुए होत्था इट्ठे कंते जाव पासणयाए, तं जइ णं सा अज्जिगा मम आगंतुं एवं वएज्जा-एवं खलु नत्तुआ! अहं तव अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया जाव विह-

---

यदि जीव और शरीर में भेद नहीं होता तो पूर्वोक्त कारण चतुष्टय से नरक भोग कौन करे? क्यों कि शरीर तो मनुष्यलोक में ही नष्ट हो जाता है उसके नष्ट होने पर तदभिन्न जीव भी नष्ट हो जावेगा। परन्तु जब शरीर से भिन्न जीव को माना जाता है तो शरीर के नाश होने पर भी जीव का सद्भाव रहता ही है। अतः उक्त हेतु चतुष्टय से नरकभोग करने के लिये जीव समर्थ होता है। इस प्रकार से यह टीका का भाव लिखा गया है ॥ सू. १३२ ॥

વિચાર રાખો કે જો જીવ અને શરીરમાં ભિન્નતા ન હોત તો પૂર્વોક્ત કારણ ચતુષ્ટયમાં નરકભોગ કરે કોણ? કેમકે શરીર તો મનુષ્ય લોકમાં જ નષ્ટ થઈ જાય છે, તેના નાશ પછી તદભિન્ન જીવ પણ નષ્ટ થઈ જ જશે જ. પરંતુ જ્યારે શરીરથી ભિન્ન જીવને માનવામાં આવે છે તો શરીરના વિનાશ પછી પણ જીવનો સદ્ભાવ રહે જ છે. ઉક્ત હેતુ ચતુષ્ટયથી નરકભોગ માટે જીવ સમર્થ હોય છે. આ પ્રમાણે આ ટીકાનો ભાવ સમજાવવામાં આવ્યો છે. ॥સૂ. ૧૩૨॥

रामि.। तए णं अहं सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा देवलोएसु उववण्णा, तं तुमंपि णत्तुया! भवाहि धम्मिए जाव विहराहि, तएणं तुमंपि एवं चेव सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता जाव उववज्जिहिसि, तं जइ णं आज्जया मम आगतुं एवं वएज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीर, णो तं जावो तं सरीरं, जम्हा सा अज्जिया ममं आगंतु णो एवं वयासी तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा। जहा तं जीवो तं सरीरं नो अन्नो जीवो अन्न सरीरं ॥ सू० १३२ ॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत् अस्ति खलु भदंत! एषाःप्रज्ञातउपमाः, अनेन पुनः कारणेन नो उपागच्छति,

---

'तएणं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) उस प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से इस प्रकार कहा—(अत्थि णं भंते! एसा पण्णाओ उवमा इमेण पुण कारणेण नो उवागच्छइ) हे भदन्त! जीव और शरार को भिन्न प्रकट करने में 'मेरे आर्यक-(पितामह) इस कारण से नहीं आते हैं' यहां तक के सन्दर्भ से जो आपने उपमा दी है, सो यह उपमा प्रज्ञात-दृष्टान्त है। यह वास्तविकी उपमा नहीं है) तो भी मैं यह मान लेता हूं कि मेरे पितामह—आर्यक आपके द्वारा प्रदर्शित कारणों की वजह से यहां नहीं आते हैं—सो भले न आवें परन्तु (एवं खलु भंते!

'तएणं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यार पछी (से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) ते प्रदेशी राजाए केशीकुमार श्रमणने आ प्रमाणे कह्युं-अत्थि णं भंते! एसा पण्णाओ उवमा इमेण पुण कारणेण नो उवागच्छइ) हे भदंत! જીવ અને શરીરને ભિન્ન પ્રકટ કરવામાં "મારા આર્યક (પિતામહ) આ કારણને લીધે આવતા નથી" અહીં સુધીના સંદર્ભ લગી જે કંઇ પણ તમે ઉપમા રૂપમાં કહ્યું છે તો તે ઉપમા પ્રજ્ઞાત-દૃષ્ટાન્ત છે, આ વાસ્તવિકી ઉપમા નથી, છતાં એ હું તમારી આ વાત સ્વીકારી લઉં કે મારા પિતામહ આર્યક તમારા વડે પ્રદર્શિત કારણોને લીધે જ અહીં આવી શકતા નથી. તો તેઓ ભલે ન આવે. પરંતુ (एवं खलु भंते!

एवं खलु भदंत! मम आर्यिकाऽभवत्, इहैवश्वेतविकायां नगर्यां धार्मिकी यावद् वृत्तिं कल्पयमाना श्रमणोपासिका अभिगतजीवा० सर्वो वर्णकः यावद् आत्मानं भावयन्ती विहरति, सा खलु तव वक्तव्यतया सुबहु पुण्योपचयं समर्ज्य कालमासे कालं कृत्वा अन्यतरेषु देवलोकेषु देवतयोपपन्ना, तस्याः खलु आर्यिकायाः अहं नप्तृकोऽभवम्, इष्टः कान्तः यावद् दर्शनतया, तद् यदि खलु माऽऽर्यिका मम आगत्य एवं वदेत्-एवं खलु नप्तृक! अहं

मम अज्जिया होत्था इहेव सेयंवियाए नयरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया अभिगय जीवा० सव्वओ वण्णओ जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ) हे भदन्त! मेरी जो आर्यिका-(दादी) हुई है, वह तो इस श्वेतांबिका नगरी में धार्मिकथी यावत् धर्म से ही अपनी जीवनयात्रा चलाती थी, श्रमणोपासिका थी, जीवअजीव तत्त्व के स्वरूप को जानती थी, इत्यादि सर्व वर्णन यहां पर करना चाहिये. यावत् वह आत्मा को भवित करती हुई अपने समय को व्यतीत करती थी (सा णं तुज्झ वत्तव्वयाए सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ना) वह आपके कथनानुसार बहुत अधिक पुण्य का उपचय करके कालमास में काल कर देवलोकों में से किसी एक देवलोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हुए हैं। (तीसे णं अज्जियाए अहं नत्तुए होत्था) मैं उसका पौत्र हुआ हूं (इट्ठे कंते जाव पासणयाए) मैं उसके लिये इष्टअभिलषित, कान्त था यावत् दर्शन के लिये भी दुर्लभ था.

मम अज्जिया होत्था इहेव सेयंवियाए नयरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया अभिगयजीवा० सव्वओ वण्णओ जाव अप्पाणं भावेमाणी विहरइ) હે ભદંત! મારા જે આર્યિકા (દાદી) થયા છે તે તો આ શ્વેતાંબિકા નગરીમાં ધાર્મિક હતા યાવત્ ધર્મનું આચરણ કરીને પોતાનું જીવન પસાર કર્યું હતું. તેઓ શ્રમણોપાસિકા હતા, જીવ અજીવતત્ત્વના સ્વરૂપને જાણતા હતા. વગેરે બધું વર્ણન અહીં સમજી લેવું જોઈએ. તેઓ પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા પોતાનો સમય પસાર કરતા હતા. (सा णं तुज्झ वत्तव्वयाए सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ना) તેઓ આપના કથન મુજબ ખૂબજ પુણ્ય સંચય કરીને કાળ માસમાં કાળ કરીને દેવલોકમાંથી કોઈ એક દેવલોકના દેવની પર્યાયમાં જન્મ પામ્યા છે. (तीसे णं अज्जियाए अहं नत्तुए होत्था) તેમનો હું પૌત્ર થયો છું (इट्ठे कंते जाव पासणयाए) હું તેમના માટે ઇષ્ટ, અભિલષિત યાવત્ દર્શન માટે ...

तव आर्यिकाऽभवम्, इहैव श्वेतविकायां नगर्यां धार्मिकी यावत् वृत्तिं कल्पयमाना श्रमणोपासिका यावद् विहरामि। ततः खलु अहं सुबहुं पुण्योपचयं समर्ज्य कालमासे कालं कृत्वा देवलोकेषु उपपन्ना, तत् त्वमपि नप्तृक! भव धार्मिकः यावद् विहर, ततः खलु त्वमपि एवमेव सुबहुं

(तं जइ णं सा अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा) वह यदि आर्यिका (दादी) मुझ से आकरके ऐसा कहे (एवं खलु नत्तुया! अहं तव अज्जिया होत्था, इहेव सेयंवियाए नयरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया जाव विहरामि) हे पौत्र! मैं तुम्हारी दादी थी. इसी श्वेतांबिका नगरी में मैं धार्मिक जीवन व्यतीत करती हुई यावत् अपनी जीवनयात्रा चलाती थी, जीव अजीव तत्व के स्वरूप को ज्ञाता थी, तथा तप और संयम से अपनी आत्माको भावित करती हुई अपने समय को व्यतीत किया करती थी. (तए णं अहं सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा, देवलोएसु उववण्णा) इस तरह मैंने बहुत अधिक पुण्य का संचय किया और संचय करके जब मैं मरण के अवसर पर मरी तो देवलोकों में से किसी एक देवलोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हुई हूं (तं तुमंपि नत्तुया! भवाहि धम्मिए जाव विहराहि) इसलिये हे पौत्र! तुम भी धार्मिक जीवन व्यतीत करो और धर्मानुग आदि विशेषणों वाले बनो। तथा धर्म से ही अपनी जीवनयात्रा करते हुए यावत् श्रमणोपासक

दुर्लभ હતો. (तं जइ णं सा अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा) તે આર્યિકા (દાદી) જો મને આવીને આમ કહે કે (एवं खलु नत्तुया! अहं तव अज्जिया होत्था, इहेव सेयंवियाए नयरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया जाव विहरामि) હે પૌત્ર! હું તમારી પિતામહી હતી એજ શ્વેતાંબિકા નગરીમાં ધાર્મિક જીવન પસાર કરતી યાવત્ પોતાની જીવનયાત્રા ખેડતી હતી હું શ્રમણોપાસિકા હતી, જીવ અજીવ તત્ત્વના સ્વરૂપને જાણતી હતી તેમજ તપ અને સંયમથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતી પોતાનો સમય પસાર કરતી હતી. (तए णं अहं सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा, देवलोएसु उववण्णा) આ રીતે મેં ઘણા પુણ્યનો સંચય કર્યો અને સંચય કરીને જ્યારે હું મરણ કાળે મરી ત્યારે દેવલોકોમાંથી કોઇ એક દેવલોકમા દેવની પર્યાયથી જન્મ પામી છું. (तं तुमंपि नत्तुया! भवाहि धम्मिए जाव विहराहि) એથી જ હે પૌત્ર! તમે પણ ધાર્મિક જીવન પસાર કરો અને ધર્માનુગ વગેરે વિશેષણોથી સંપન્ન બનો. તેમજ ધર્મથી જ પોતાની જીવનયાત્રા આગળ ધપાવતા યાવત્

पुण्योपचयं समर्ज्य यावद् उपपत्स्यसे, तद् यदि खलु आर्यिका मम आगत्य एवं वदेत्, तदा खलु अहं श्रद्दध्याम् प्रतीयां रोचयेयं यथा-अन्यो जीवः, अन्यच्छरीरम्, नो तज्जीवस्तच्छरीरम्। यस्मात् साऽऽर्यिका ममाऽऽगत्य नो एवमवादीत्, तस्मात् सुप्रतिष्ठिता मे प्रतिज्ञा यथा-तज्जीवः स्सच्छरीरम्, नो अन्यो जीवः, अन्यच्छरीरम् ॥सू० १३३॥

वनो. (तए णं तुमंपि एवं चेव सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता जाव उववज्जिहिसि) इस तरह करके तुम भी मेरी ही तरह से पुण्य का उपचय करके यावत् देवलोकों में किसी एक देवलोक में देव की पर्याय मे उत्पन्न हो जाओगे. (तं जइणं अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा, तो णं अहं सद्दहेज्जा, पत्तिएज्जा, रोइज्जा. जहा अण्णो जीवो, अण्णं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं) इस तरह से हे भदन्त! वह आर्यिका आकर के मुझ से ऐसा कहे तो मैं तुम्हारे इस कथन पर कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है तथा-जीव शरीररूप नहीं है और शरीर जीवरूप नहीं है विश्वास कर सकता हूं प्रतीति कर सकताहूं और उसे अपनी रुचि का विषय बना सकता हूं। (जम्हा सा अज्जिया ममं आगंतुं णो एवं वयासी-तम्हा सुपइट्ठिया-मे पइण्णा-जहा तं जीवो अन्नं सरीरं) परन्तु जिस कारण से वह आर्यिका मुझ से आकर के ऐसा कहती नहीं है. अतः इस कारण से मेरा-यह मन्तव्य है कि जीव है वही शरीर है और शरीर से भिन्न नहीं है और शरीर जीव से भिन्न नहीं है सुस्थिर है अर्थात् सत्य है।

श्रमणोपासक थाओ। (तए णं तुमंपि एवं चेव सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता जाव उववज्जिहिसि) आ प्रमाणे तमे पण मारी जेम ... पर्यायथी जन्म पामशो. (तं जइणं अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा तो

टीका—'तएणं से पएसी' इत्यादि-

ततः-तदनन्तरं, स प्रदेशो राजा केशिनं कुमारश्रमणम्, एवम्-अनुपद वक्ष्यमाण वचनम्, अवादीत्-हे भदन्त! जीवशरीरयोर्भेदे अनेन पुनः कारणेन नो उपागच्छति)-इत्यन्तसन्दर्भेण या उपमा भवता दत्ता, एषा खलु प्रज्ञात =बुद्धिविशेषात्-बुद्धिविशेषजन्या उपमा=दृष्टान्तः अस्ति, नत्वियं वास्तविकी उपमाऽस्ति, तथापि मन्ये यन्मत्पितामहो भवदुक्तकारणैर्नोपागच्छतिरिति। परन्तु हे भदन्त! मम-आर्यिका-पितामही खलु एवं=वक्ष्यमाणप्रकारा अभवत्-सा कीदृश्यऽभवादति जिज्ञासायामाह-इहैवेत्यादि-इहैव-अस्यामेव श्वेतांबिकायां-नगर्याम् सा कीदृशी? इत्यत्राह-धार्मिकीत्यादि-धार्मिकी-धर्माचरणशीला, यावत्-यावत्पदेन "धर्मानुगा, धर्मिष्ठा धर्माख्यायिनी धर्मप्रलोकिनी धर्मप्ररञ्जना धर्मसमुदाचारा धर्मेणैव" इत्येषां संग्रहः, तत्र-धर्मानुगा धर्मम् अनुगच्छति अनुसरति या सा तथा, धर्मिष्ठा=धर्मप्रिया, धर्माख्यायिनी=धर्मप्रतिपादिका, धर्मप्रलोकिनी=धर्म-

---

टीकार्थ—इसके बाद प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा—हे भदन्त! जीव और शरीर की भिन्नता प्रदर्शित करने के निमित्त जो आपने उपमा दी है, वह तो केवल आपकी बुद्धि से जन्य एक दृष्टान्त-मात्र है. यह उपमा—दृष्टान्त सत्यार्थकोटि में नहीं आ सकती है। फिर भी आपके कथनानुसार यह मान लेता हूं कि मेरे आर्यक प्रदर्शित चार कारणों के कारण यहां नहीं आ सकते हैं। सो वे न आवें-परन्तु मेरी जो दादी थी—जो कि इसी श्वेताम्बिका नगरी में रहती थी, और धार्मिक-धर्माचरण शील थी यावत् जो धर्मानुगधर्म का अनुसरण करने वाली थी, धर्मिष्ठा-धर्मप्रिया थी, धर्माख्यायिनी—धर्म का उपदेश देनेवाली थी, धर्म-

---

ટીકાર્થ—ત્યારપછી પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદંત! જીવ અને શરીરની ભિન્નતા પ્રદર્શિત કરતા જે તમે ઉપમા આપી છે તે તો ફક્ત તમારી બુદ્ધિથી કલ્પિત કરેલ એક દૃષ્ટાંત માત્ર જ છે. એથી તમારી આ ઉપમા-દૃષ્ટાન્ત—સત્યાર્થ કોટિમાં આવી શકે તેમ નથી. છતાંએ તમારા કહ્યા મુજબ આ વાત માની લઉં છું કે મારા આર્યક તમે કહેલા ચાર કારણોને લીધે અહીં આવી શકતા નથી તો ભલે તે ન આવે પરંતુ મારા જે દાદી હતા—કે જેઓ આ શ્વેતાંબિકા નગરીમાં રહેતા હતા, અને ધાર્મિક—ધર્માચરણશીલ હતા યાવત્ જે ધર્માનુગા—ધર્મને અનુસરનારા હતા, ધર્મિષ્ઠા—ધર્મપ્રિય હતા, ધર્માખ્યાયિની—ધર્મના ઉપ

दर्शिनी, धर्मप्ररञ्जना=धर्मानुरागिणी, धर्मसमुदाचारा=धार्मिकसदाचारसंपन्ना, धर्मेणैव=जिनोक्तधर्मेणैव वृत्तिं=जीवनयात्रां, कल्पयमाना कुर्वाणा, पुनःसा कीदृशी ? इति जिज्ञासायामाह–"अभिगतजीवाऽजीवे"–त्यादि-सर्वः वर्णकः–वर्णनकारकपदसमूहो बोध्यः, यावद् आत्मानं भावयमाना व्यहरत। अत्रत्य यावत्पदेन–'अभिगतजीवाजीवा' इत्यादि सर्वोऽपि पाठश्चतुर्दशाधिकैकशततमसूत्रतः स्त्रीत्वनिर्देशेन बोध्यः। अर्थोऽपि तत्रत एव विज्ञेयः। सा=अनन्तरोक्ता आर्यिका पितामही खलु तव वक्तव्यतया तवमतेन सुबहुम्–अतिप्रचुरं, पुण्योपचयं–पुण्यकर्मसमूहं समर्ज्य समुपार्ज्य कालमासे काल

प्रलोकिनी थी, धर्मप्ररञ्जना–धर्मानुरागवाली थी, धर्मसमुदाचारा–धार्मिक सदाचार से संपन्न थी. और जिनोक्तधर्म से ही अपनी जीवनयात्रा करने वाली थी. तथा जीव और अजीव तत्त्व के स्वरूप की ज्ञाता थी. अभिगतजीवाजीवा' इत्यादिरूप से वर्णन करने वाला पदसमूह और यहां यावत्पद से गृहीत पदसमूह ११४ वें सूत्र में वर्णित हुआ है, सा उसे यहां स्त्रीलिङ्ग की विभक्ति लगाकर ग्रहण कर कहना चाहिये तथा इन पदों का अर्थ भी वहां से जानना चाहिये. ऐसी वह आर्यिका–पितामही–दादी आपके मन्तव्यानुसार अतिप्रचुर पुण्य का उपचय करके कालमास में जब मरी तब वह अनेकविध देवलोकों में देव की पर्याय से उत्पन्न हुई है. उस आर्यिका का मै पौत्र हूं, जो धर्म उसको बहुत अधिक इष्ट यावत कान्त था. यावत् पद से यहां १३२ वे सूत्र में प्रोक्त इस विषय के विशेषण गृहीत हुए है। ये विशेषण वहा उसके पितामह के प्रकरण में दिये गये हैं।

देश करनारा हता, धर्मप्रलोकिनी–धर्मदर्शिना हता, धर्मप्ररंजना–धर्मानुरागवाळा हता. धर्मसमुदाचारा–धार्मिक सदाचार संपन्न हता अने जिनोक्त धर्म प्रमाणे ज पोतानु जीवन पसार करता हु। तेमज जीव अने अजीव तत्त्वना स्वरूपने जाणनारा हता 'अभिगत जीवाजीवा' जीव अने अने अजीव वगेरे रूपमा वर्णन करनार पद समूह अने अहीं यावत्पदथी गृहीत पद समूह ११४मा सूत्रमा वर्णित थयेल छे. अहीं तेने स्त्रीलिंगनी विभक्ति लगाडीने अर्थ करवो जोईए तेमज आ पदोनो अर्थ पण त्यांथी ज जाणी लेवो जोईए. एवी ते आर्यिका दादी तमारा मन्तव्य मुजब अति प्रचुर पुण्यनो संचय करीने कालमासमां ज्यारे मरण पाम्या त्यारे ते [illegible] देवलोकमा देवनी पर्यायथी जन्म पाम्या छे. ते आर्यिकानो हुं पौत्र छुं [illegible] धर्म [illegible] यावत् कान्त हतो यावत् पदथी अहीं १३२मा सूत्रमां [illegible] विशेषणो गृहीत थया [illegible] आ विशेषण [illegible]

कृत्वा अन्यतरेषु-अनेकविधेषु देवलोकेषु कस्मिंश्चिद् देवलोके देवतया देवत्वेन उपपन्ना:, तस्याः खलु आर्यिकायाः अहं नप्तृकः-पौत्रः अभवम्, कीदृशः? इत्यत्राऽऽह-इष्टःकान्तः यावत्-दर्शनतया, अत्र यावत्पदेन द्वात्रिंशदुत्तर-शततमसूत्रे एतत्पितामहवक्तव्यतारूपः सर्वोऽपि पाठः संग्राह्यः। व्याख्यापि तत्रैव विलोकनीया।

तत्-तस्मात् यदि खलु सा-पूर्वोक्ता आर्यिका मम आगत्य-एवम्-अनुपदं वक्ष्यमाणं वचनं, वदेत्-कथयेत्-नप्तृक! हे पौत्र! एवं खलु-वक्ष्यमाणप्रकारकं शृणु-अहं तव आर्यिकाऽभवम् कुत्र! इत्यत्राऽऽह-इहैव-अस्यामेव श्वेतविकायां नगर्यां धार्मिकी, यावत्-धर्मेणैव वृत्तिं कल्पयमाना श्रमणोपासिका=श्राविका यावत्-व्यहरम्। ततः-तस्मात्कारणात् सुबहु-प्रचुरतरं पुण्योपचयं समर्ज्य कालमासे कालं कृत्वा देवलोकेषु उपपन्ना, ततः-तस्मात्कारणात् नप्तृक!-हे पौत्र! त्वमपि धार्मिको यावत्-धर्मानुगादि विशेषणविशिष्टो भव, तथा धर्मेणैव वृत्तिं कल्पयमानः अभिगत जीवाजीवादि विशेषणविशिष्टः श्रावको भूत्वा विहर। ततः-तादृशाचरणेन खलु त्वमपि

अतः वहीं से इन्हें और इनके अर्थ को जानना चाहिये. ऐसी वह मेरी आर्यिका-दादी आकरके मुझ से ऐसा यदि कहें कि हे नप्तृक-पौत्र! मैं इसी श्वेतांबिका नगरी में तेरी दादी थी. और धार्मिक यावत् धर्म से ही अपनी जीवन यात्रा चलानेवाली थी. श्रमणोपासिका-श्राविका थी. इत्यादि मैंने प्रचुरतर पुण्य का उपार्जन कर कालमास में जब मरण किया-तो मैं देवलोकों में से किसी एक देवलोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हुई हूं. इसलिये हे पौत्र! तुम भी धार्मिक यावत् धर्मानुग आदि विशेषणों वाले बनो, तदा धर्म से ही अपनी जीवनयात्रा का निर्वाह करते हुए जीव और अजीव तत्त्व के स्वरूप के ज्ञाता बनो और सच्चे अर्थ में श्रावक बन-

આવેલાં છે તેથી જિજ્ઞાસુઓએ ત્યાંથી જ જાણી લેવા જોઈએ, એવા મારા આર્યિકા દાદી આવીને મને જો આ પ્રમાણે કહે કે હે પૌત્ર! હું આ શ્વેતાંબિકા નગરીમા તારી દાદી હતી અને ધાર્મિક યાવત્ ધર્માચરણથી જ પોતાની જીવનયાત્રા પસાર કરતી હતી. હું શ્રમણોપાસિકા-શ્રાવિકા હતી વગેરે પ્રચુરતર પુણ્યનું ઉપાર્જન કરીને કાલમાસમા જ્યારે મૃત્યુ પામી ત્યારે દેવલોકમાથી કોઈ એક દેવલોકમા દેવની પર્યાયથી જન્મ પામીછું. તેથી હે પૌત્ર! તમે પણ ધાર્મિક યાવત્ ધર્માનુગ વગેરે વિશેષણો વાળા તેમજ ધર્મથી જ પોતાનુ જીવન પસાર કરતા જીવ અને અજીવ તત્ત્વના સ્વરૂપને જાણનારા થાઓ, અને સાચા અર્થમા શ્રાવક થઈને પોતાના જીવનને સફળ બનાવો. જો તમે આ પ્રમાણે ધાર્મિક આચરણયુકત અન્તઃકરણવાળા થાઓ તો તમે

एवमेव अहमिव सुबहु प्रचुरतरं पुण्योपचयं समर्ज्य यावत्-यावत्पदेन कालमासे कालं कृत्वाऽन्यतरेषु अनेकविधेषु देवलोकेषु कस्मिंश्चिद्देवलोके उपपत्स्यसे-उत्पन्नो भविष्यसि, तत्-तस्माद् हेतोः यदि खलु आर्यिका मम आगत्य एवं वदेत् तदा खलु अहं श्रद्दध्यां-तद्वचने विश्वस्याम्, प्रतीयाविशेषतो विश्वासं कुर्याम्, रोचयेयं-रुचिविषयं कुर्याम् यथा-अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम्, नो तज्जीवः सशरीरम्, इति। यस्मात्-कारणात् सा-पूर्वोक्ता आर्यिका मम आगत्य एवम्-अनन्तरोक्तप्रकारम् वचनं नो न अवादीत्-नाकथयत् तस्मात्-कारणात् मे-मम प्रतिज्ञा-स्वीकारः सुप्रतिष्ठिता-सत्याऽस्ति, प्रतिज्ञाविषयमाह यथेत्यादि-यथा-तथाहि-तज्जीवःसशरीरम्, नो अन्यो जीवः, अन्यच्छरीरम्, इति ॥सू० १३३॥

कर अपने जीवन को सफल करो, यदि तुम इस प्रकार के धार्मिक आचरण से वासितान्तःकरणवाले हो जाते तो तुम मेरे जैसे ही प्रचुरतर पुण्य का उपार्जन करके यावत्-कालमास में कालकर अनेकविध देवलोकों में से किसी एक देवलोक में देवकी पर्याय से उत्पन्न हो जाओगे. इस प्रकार से मेरी आर्यिका-दादी मेरे पास आकर ऐसा कहे तो मैं आपके इस वचन पर विश्वास करूं, प्रतीति-विशेषरूप से विश्वास करूं, उस पर रुचि करूं, कि जीव भिन्न है, शरीर भिन्न है, वह शरीर जीवरूप नहीं है, और जीव शरीररूप नहीं है-परन्तु जिस कारण से वह अभीतक मुझ से आकर के ऐसा नहीं कहती है. इसी कारण से हे भदन्त! मैं अपनी इस मन्तव्य पर कि 'जीव और शरीर एक है जीव भिन्न नहीं है और शरीर भिन्न नहीं है' अटल हूं, उसे सत्य मान रहा हूं ॥ सू० १३३ ॥

પણ મારી જેમ જ પ્રચુરતર પુણ્યોનું ઉપાર્જન કરીને યાવત કાલમાસમાં કાલ કરીને અનેકવિધ દેવલોકોમાંથી કોઇ પણ એક દેવલોકમાં દેવના પર્યાયથી જન્મ પામશો, આ પ્રમાણે જો મારા આર્યિકા-દાદી મારી પાસે આવીને આમ કહે તો હું તમારી પર વિશ્વાસ કરું, પ્રતીતિ-વિશેષરૂપથી વિશ્વાસ કરું, તેનાં રુચિ ઉત્પન્ન કરું કે જીવ ભિન્ન છે, શરીર ભિન્ન છે, અને શરીર જીવરૂપ નથી અને જીવ શરીરરૂપ નથી, પરંતુ જે કારણને લીધે હજી સુધી તેઓ મારી પાસે આવીને મને કહેતા નથી તે કારણને લીધે હે ભદંત! મારા આ વિચાર પર કે જીવ અને શરીર એકજ છે જીવ ભિન્ન નથી, અને શરીર ભિન્ન નથી. દૃઢ છું, તેને જ સત્ય માનીને વળગી રહ્યો છું ॥ સૂ. ૧૩૩ ॥

मूलम्—तएणं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-जइ णं तुमं पएसी! ण्हायं कयवलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं उल्लपडसाडगं भिंगारकडुच्छुयहत्थगयं देवकुलमणुपविसमाणं केइ य पुरीसे वच्चघरंसि ठिच्चा एवं वदेज्जा एह ताव सामी! इह मुहुत्तगं आसयह वा चिट्ठह वा निसीयह वा तुयट्टह वा, तस्स णं तुमं पएसी! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणिज्जासि? णो इणट्ठे समट्ठे। कम्हा? भंते! असुई असुइसामंते। एवामेव पएसी! तवंवि अज्जिया होत्था इहेव सेयवियाए णयरीए धम्मिया जाव विहरइ, सा णं अम्हं वत्तव्वयाए सुबहु जाव उववन्ना, तीसे णं अज्जियाए तुमं णत्तुए होत्था इट्ठे जाव किमंगपुण पासणयाए? सा णं इच्छइ माणुसं लोग हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए।

चऊहिं ठाणेहि पएसी। अहुणोववण्णए देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ-अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु दिव्वेहि कामभोगेहि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे से णं माणुसे लोगे नो आढाइ नो परिजाणाइ से णं इच्छिज्जा माणुसं नो चेव णं संचाएइ१। अहुणोववण्णए देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहि मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे, तस्स णं माणुस्से पेम्मे वोच्छिन्ने भवइ दिव्वे पेम्मे संकंते भवइ, से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव संचाएइ (२] अहुणोववण्णे देवे दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवइ-इयाणिं गच्छं मुहुत्तणं गच्छं तेणं कालेणं इट्ठ

अप्पाउया णरा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति, से णं इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ।३। अहुणोववण्णे देवे दिव्वेहिं जाव अज्झोववण्णे, तस्स माणुस्सए उराले दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवइ, उड्ढंपि य णं जाव चत्तारि पंच जोयणसए असुभे माणुस्सए गंधे अभिसमागच्छइ, से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ।४। इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी! अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए, त सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा—अन्नो जीवो अन्नं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं २ ॥सू० १३४॥

छाया—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत् यदि खलु त्वं प्रदेशिन्! स्नातं कृतबलिकर्माणं कृतकौतुकमङ्गल-प्रायश्चित्तम् आर्द्रपटशाटकं भृङ्गारकटुच्छुकहस्तगतं देवकुलमनुप्रविशन्तं कोऽपि पुरुषो

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (केसी कुमारसमणे) केशीकुमारश्रमणने (पएसिं रायं) प्रदेशी राजा से (एवं वयासी) ऐसा कहा—(जइ णं तुम पएसी! ण्हायं कयबलिकम्मं, कयकोउयमंगलपायच्छित्तं उल्लपडसाडगं) हे प्रदेशिन्! जिस समय तुम कृतस्नान होकर, कृतबलिकर्मा होकर,—वायसादिकों के लिये कृत अन्नविभागवाले होकर, कृत मषीतिलकादि मांगलिक प्राय[illegible] [illegible] विधि वाले होकर, जलसिक्तवस्त्रशाटकयुक्त होकर (भिंगार-कडुच्छु-य हत्थगयं) एवं भृङ्गार कडुच्छुक हस्तगत होकर (देवकुलमणुपविसमाणं)

'तए णं केसी कुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) [illegible] (केसीकुमारसमणे) [illegible] (पएसिं रायं) प्रदेशी राजाने (एवं वयासी) [illegible] (जइ णं तुमं पएसी! ण्हायं कयबलिकम्मं, कयकोउयमंगलपायच्छित्तं उल्लपडसाडगं) [illegible]
[illegible]
[illegible]

वर्चोगृहे स्थित्वा एवं वदेत्–एत तावत् स्वामिन्! इह मुहूर्तकम् आस्ध्वम् वा तिष्ठत वा निषीदत वा त्वग्वर्त्तयत वा, तस्य खलु त्वं प्रदेशिन्! पुरुषस्य क्षणमपि एतमर्थं प्रतिशृणुयाः? नो अयमर्थः समर्थः। कस्मात्? भदन्त! अशुचि अशुचिसामन्तम्। एवमेव प्रदेशिन्! तवापि आर्यिका ऽभवत् इहैव श्वेतविकायां नगर्यां धार्मिकी यावत् व्यहरत्. सा खलु अस्माकं

यक्षायतन में घुस रहे हो, उस समय (केइ य पुरिसे) तुम से कोई पुरुष (वच्चघरंसि ठिच्चा एवं वएज्जा) विष्ठागृह में स्थित होकर ऐसा कहे (एह ताव सामी! इह मुहुत्तगं आसयह, वा चिट्ठह वा, निसीयह वा, तुयट्ठह वा) हे स्वामिन्!-आप आइये और एक मुहूर्त्तमात्र समयतक यहां बैठिये, अथवा ठहरिये, सुखपूर्वक रहिये लेटिये (तस्स णं तुमं पएसी! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जासि) हे प्रदेशिन्! तुम उस पुरुष की उस बात को एक क्षण के लिये भी स्वीकार कर लोगे क्या? (णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त! उस समय उस पुरुष की यह बात स्वीकार योग्य नहीं हो सकती है (कम्हा) हे प्रदेशिन्! किस कारण से उस पुरुष की वह बात स्वीकार योग्य नहीं हो सकती है? (भंते! असुई असुइ सामंते) हे भदन्त! क्यों कि वह स्थान अपवित्र है और सब तरफ से अपवित्र वस्तु से युक्त है। (एवामेव पएसी! तव वि अज्जिया होत्था, इहेव, सेयंवियाए णयरीए धम्मिया जाव विहरइ) इसी प्रकार से हे

युक्त थईने (भिंगारकडुच्छुयहत्थगयं) अने भृंगार तेमज कडुच्छुक हाथमां लईने (देवकुलमणुपविसमाणं) यक्षायतन (व्यंतरायतन)मां प्रवेशता होय ते समये (केइणपुरिसे) तमने कोई माणुस (वच्चघरंसी ठिच्चा एवं वएज्जा) जाजरूमां रहीने आ प्रमाणे कहे (एह ताव सामी! इह मुहुत्तगं आसयह वा चिट्ठह वा निसीयह वा, तुयट्ठह वा) हे स्वामिन्! तमे आवो अने फक्त एक मुहूर्त जेटला समय सुधी अहीं बेसो के उभा रहो, सुखेथी रहो के आराम करो. (तस्स णं तुमं पएसी! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जासि) तो हे प्रदेशिन्! तमे ते माणुसनी ते वातने थोडा वखत माटे पण स्वीकारशो? (णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदंत! ते वखते ते माणुसनी आ वात स्वीकारवामां आवशे नहि. (कम्हा) हे प्रदेशिन्! शा कारणथी ते माणुसनी ते वात तमारामां स्वीकार्य थशे नहि? (भंते! असुई असुइ सामंते) हे भदंत! केमके ते स्थान अपवित्र छे अने बधे ते अपवित्र वस्तुओथी युक्त छे. (एवामेव पएसी! तव वि अज्जिया होत्था, इहेव सेयंवियाए णयरीए धम्मिया जाव विहरइ) आ प्रमाणे ज हे प्रदेशिन्, आ श्वेतां-

वक्तव्यतया सुबहु यावद् उपपन्ना तस्याः खलु आर्यिकायाः त्वं नप्तृकोऽभवः इष्टः यावत् किमङ्ग ! पुनर्दर्शनतया ? सा खलु इच्छति मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुं, नैव खलु शक्नोति शीघ्रमागन्तुम् ।

चतुर्भिः स्थानैः प्रदेशिन् ! अधुनोपपन्नो देवो देवलोकेषु इच्छेत् मानुष्यं लोकं हव्यमागन्तुं नैव खलु शक्नोति । अधुनोपपन्नो देवो देव

प्रदेशिन् ! इस श्वेतांबिका नगरी में तुम्हारी आर्यिका-दादी भी धार्मिक यावत धर्मानुरागादि विशेषणों से विशिष्ट हुई है (सा णं अम्हं वत्तव्वयाए सुबहुं जाव उववन्ना, तीसे णं अज्जियाए तुमं णत्तुए होत्था इट्ठे जाव किमंग पुणपासणयाए) वह हमारी वक्तव्यता के अनुसार-मान्यता के अनुसार अतिशय बहुत अधिक पुण्य का उपार्जन करके और कालमास में काल करके देवलोकों मे से किसी एक देवलोक मे देव की पर्याय से उत्पन्न हो गई है। उस आर्यिका-दादी के तुम पौत्र हुए हो, जो उसे तुम इष्ट कान्त आदि विशेषणों वाले थे, और उदुम्बर पुष्प के समान उसे सुनने के लिये उस समय तुम दुर्लभ थे, फिर तुम्हारे देखने की बात ही क्या कहनी, (सा णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए) वह आर्यिका-दादी मनुष्यलोक में आनेकी इच्छा तो करती है, परन्तु आ नहीं सकती है। इसमें चार कारण हैं जो इस प्रकार से हैं-(चउहिं ठाणेहिं पएसी! अहुणोववन्नए देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ)

બિકા નગરીમાં તમારા આર્યિકા દાદી પણ ધાર્મિકી યાવત ધર્માનુરાગ વગેરે વિશેષણો વાળા થયા છે. (सा णं अम्हं वत्तव्वयाए सुबहुं जाव उववन्ना, तीसे णं अज्जियाए तुमं णत्तुए होत्था इट्ठे जाव किमंगपुणपासणयाए) તે અમારી વક્તવ્યતા મુજબ-માન્યતા મુજબ અતિશય પુણ્યોનું ઉપાર્જન કરીને [illegible] કાળ કરીને દેવલોકોમાંથી કોઈ પણ એક દેવલોકમાં દેવની પર્યાયથી [illegible] છે. તે આર્યિકા-દાદીના તમે પૌત્ર છો, તમે તેના માટે ઈષ્ટ કાન્ત વગેરે વિશેષણો [illegible] હતા અને ઉદુંબર પુષ્પની જેમ તમે તેના માટે અત્યંત દુર્લભ હતા, [illegible] દેખવાની તો વાત જ શી કરવી. (सा णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए) [illegible] ઈચ્છા તો રાખે છે, પણ આવી શકતા નથી. [illegible] છે. (चउहिं ठाणेहिं पएसी अहुणोववन्नए देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ) [illegible]

लोकेषु दिव्येषु कामभोगेषु मूर्च्छितो गृद्धः ग्रथितः अध्युपपन्नः स खलु मानुष्यान् भोगान् नो आद्रियते नो परिजानाति, स खलु इच्छेत् मानुष्यं लोगं हव्यमागन्तुं नैव खलु शक्नोति १। अधुनोपपन्नो देवो देवलोकेषु दिव्येषु कामभोगेषु मूर्च्छितो यावत् अध्युपपन्नः, तस्य खलु मानुष्यं प्रेम

हे प्रदेशिन ! वे चार कारण ऐसे हैं कि जिनके कारण से अधुनोपपन्नक देव देवलोक में तत्कालोत्पन्न देवमनुष्यलोक में शीघ्र आना चाहता है, परन्तु वह नहीं आसकता है. सो उसमें प्रथम कारण ऐसा है-(अहुणोववन्नए देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे से माणुसे लोगे णो आढाइ, नो परिजाणाइ) अधुनोपपन्नक देव देवलोकों में दिव्यकामभोगों में मूर्च्छित हो जाता है, गृद्ध-विषयोंपभोग की अभिलाषा से ग्रस्त हो जाता है, ग्रथित-विषयों में आसक्त हो जाता है, अध्युपपन्न-उनमें अत्यन्त आसक्तिवाला बन जाता है। अतः वह मनुष्यलोक संबंधी शब्दादिक विषयों को आदर की दृष्टि से नहीं देखता हैं, उनकी अपेक्षा नहीं करता है, और न उन्हे जानने की ही इच्छा करता है (से णं इच्छेज्जा माणुसं नो चेव णं संचाएइ ?) ऐसा वह देव किसी प्रकार मनुष्यलोक में आनेकी इच्छा करे तो भी देवभोगों की आसक्ति से वह यहां नहीं आना चाहता है। (अहुणोववण्णए देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे) अधुनोपपन्न देव देवलोक

આ પ્રમાણે છે કે જેને લીધે અધુનોપપન્નકદેવ દેવલોકમાંથી તત્કાલોત્પન્ન દેવ મનુષ્યલોકમાં જલદી આવવા ઈચ્છે છે પરંતુ તે આવી શકતા નથી તેનું પહેલું કારણ આ પ્રમાણે છે– (अहुणोववन्नए देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे से माणुसे लोगे णो आढाइ नो परिजाणाइ) અધુનોપપન્નક દેવ દેવલોકમાં દિવ્યકામભોગોમાં મૂર્ચ્છિત થઇ જાય છે, ગૃદ્ધ–વિષયોભોગની અભિલાષાથી આક્રાંત થઇ જાય છે, ગ્રથિત–વિષયોમાં આસકત થઇ જાય છે. અને અધ્યુપપન્ન અને તેમાં અતીવ આસક્તિ યુકત થઇ જાય છે. એથી મનુષ્યલોકના શબ્દ વગેરે વિષયોને સન્માનની દૃષ્ટિએ જોતો નથી, તેની તે અપેક્ષા રાખતો નથી અને તેના સંબંધમાં તે કંઇપણ જાણવાની પણ ઈચ્છા ધરાવતો નથી. (सेणं इच्छेज्जा माणुसं नो चेव णं संचाएइ ?) એવો તે દેવ કદાચ મનુષ્યલોકમાં આવવાની ઇચ્છા રાખતો હોય તો પણ દેવભોગોની આસક્તિ લીધે તે અહીં આવવા ઇચ્છતા નથી (अहुणोववण्णए देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे) અધુનોપપન્ન દેવ દેવલોકમાં દિવ્ય

व्युच्छिन्नं भवति दिव्यं प्रेम संक्रान्तं भवति. स खलु इच्छेत् मानुष्यं लोकं हव्यमागन्तुं नैव खलु शक्नोति २ । अधुनोपपन्नो देवो दिव्येषु कामभोगेषु मूर्च्छितो यावत् अध्युपपन्नः, तस्य खलु एवं भवति. इदानीं गमिष्यामि मुहूर्तेन गमिष्यामि तस्मिन् काले इह अल्पायुषो नराः कालधर्मेण संयुक्ता भवन्ति. स खलु इच्छेत् मानुष्यं लोकं हव्यमागन्तुं नैव खलु शक्नोति

में दिव्य कामभोगों में मूर्च्छित हो जाता है यावत् अध्युपपन्न हो जाता है सो (तस्स णं माणुस्से पेम्मे वोच्छिन्ने भवइ, दिव्वे पेम्मे संकंते भवइ) इसका मनुष्य-संबंधि प्रेम व्युच्छिन्न-टूट जाता है और देवलोक संबंधी प्रेम उसके हृदय में संक्रान्त-प्रविष्ट हो जाता है। (से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ) अतः वह मनुष्यलोक में आनेका अभिलाषी होता हुआ भी आना नहीं चाहता है. (अहुणोववन्ने देवे दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवइ, इयाणिं गच्छं, मुहुत्तेणं गच्छं, तेणं कालेणं इह अप्पाउया णरा, कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति, से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ) अधुनोपपन्न देव देवलोक में दिव्य कामभोगों के द्वारा मूर्च्छित हो जाता है यावत् अध्युपपन्न-आसक्त हो जाता है सो उसके मन में ऐसा होता है कि अब जाता हूं, थोडे समय बाद जाऊंगा-उस काल में मर्त्यलोक में मनुष्य-माता, पिता, पुत्र, स्त्री आदि कि जिन की आयु समाप्त हो चुकी होती है, वे कालधर्म से संयुक्त हो जाते

કામભોગોમાં મૂર્ચ્છિત થઇ જાય છે યાવત્ અધ્યુપપન્ન થઇ જાય છે. (तस्स णं माणुस्से पेम्मे वोच्छिन्ने भवइ, दिव्वे पेम्मे संकंते भवइ) [illegible] સંબંધી પ્રેમ વ્યુચ્છિન્ન થઇ જાય છે અને દેવલોકના [illegible] સંક્રાન્ત પ્રવિષ્ટ-થઇ જાય છે. (से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ) એથી તે મનુષ્યલોકમાં આવવાની [illegible]

३। अधुनोपपन्नो देवो दिव्येषु यावत् अध्युपपन्नः, तस्य मानुष्यकः उदारः दुर्गन्धः प्रतिकूलः प्रतिलोमश्चापि भवति, ऊर्ध्वमपि च खलु यावच्चतुःपञ्च योजनशतम् अशुभो गन्धोऽभिसमागच्छति, स खलु इच्छेत् मानुष्यं लोकं हव्यमागन्तुं नैव खलु शक्नोति। इत्येतैः चतुर्भिः स्थानैः प्रदेशिन ? अधु-

है, सो वह देव मनुष्यलोक में आने का अभिलाषी बना रहने पर भी यहां नहीं आ सकता है। (अहुणोववन्ने देवे दिव्वेहिं जाव अज्झोववण्णे. तस्स माणुस्सए उराले दुग्गधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवइ) चौथा कारण यहां पर नहीं आसकने का ऐसा है कि-अधुनोपपन्न देव दिव्य कामभोगों में यावत् अध्युपपन्न हो जाता है. सो उसके लिये औदारिक शरीर संबंधी गोमृतककलेवरादि समुत्पन्न दुर्गन्ध–घ्राणेन्द्रिय के अनुकूल नहीं पडता है, प्रत्युत वह–उसे–प्रतिकूल–अनिष्ट कर प्रतीत होता है (उड्ढं पि य णं जाव चत्तारि पंच जोयणसए असुभे माणुस्सए गंधे अभिसमागच्छइ, से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ) तथा वह मनुष्यलोक संबंधी अशुभ गंध चारसौ या पांचसौ योजन तक ऊपर में सब तरफ फैल जाता–है-अतः मनुष्यलोक में आने का अभिलाषी बना हुआ वह देव उस दुर्गंध के कारण यहां नहीं आ सकता है अर्थात् युगलियों के समय में चारसौ योजन और मनुष्य में पांचसौ योजन तक दुर्गंध जाता है (इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणो

મૃત્યુ પ્રાપ્ત કરી ચૂકે છે અને આમ તે દેવ મનુષ્ય લોકમાં આવવાની અભિલાષા રાખતો હોય છતાંએ અહીં આવી શકતો નથી. (अहुणोववन्ने देवे दिव्वेहिं जाव अज्झोववण्णे, तस्स माणुस्सए उराले दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवइ) અહીં ન આવવાનું ચોથું કારણ આ પ્રમાણે છે કે અધુનોપપન્નક દેવ દિવ્ય કામ ભોગોમાં યાવત અધ્યુપપન્ન થઈ જાય છે, તો તેના માટે ઔદારિક શરીર સંબંધી ગોમૃતક કલેવરાદિ સમુત્પન્ન દુર્ગંધ ઘ્રાણેન્દ્રિયના માટે અનુકૂલ કહી શકાય નહિ, પણ એના વિરુદ્ધ તે તેને પ્રતિકૂલ અનિષ્ટકર લાગે છે. (उड्ढं पि य णं जाव चत्तारि पंच जोयणसए असुभे माणुस्सए गंधे अभिसमागच्छइ, से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ) તેમજ તે મનુષ્ય લોક સંબંધી અશુભ ગંધ ચારસો કે પાંચસો યોજન સુધી ઉપર આકાશમાં ચોમેર પ્રસરીને રહે છે એથી મનુષ્યલોકમાં આવવાની અભિલાષા ધરાવતો હોય છતાંએ તે દેવ તે દુર્ગંધને લીધે અહીં આવી શકતો નથી એટલે કે યુગલીઓના સમયમાં ચારસો યોજનને મનુષ્યમાં પાંચસો યોજન સુધી દુર્ગંધ જાય છે. (इच्चेएहिं

नोपपन्नो देवो देवलोकेषु इच्छेत मानुष्यं लोकं शीघ्रमागन्तुं नो चैव शक्नोति हव्यमागन्तुम् तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन् ! यथा-अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम्, नो तज्जीवः तत् शरीरम् २ ॥सू० १३४॥

टीका-'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि-ततः खलु केशी कुमार श्रमणः प्रदेशिराजम् एवम्-वक्ष्यमाणवचनमवादीत्-हे प्रदेशिन् ! यदि-चेत् खलु त्वां स्नातं कृतस्नानं कृतबलिकर्माणं-कृतवायसादिनिमित्तान्नभागं कृतकौतुक-मङ्गलप्रायश्चित्तं-कृतमषीतिलकादि माङ्गलिकप्रायश्चित्तविधिम्, आर्द्रपटशाटकं-जलक्लिन्नवस्त्रशाटकयुक्तं भृङ्गारकटुच्छुकहस्तगतं-हस्तगृहीतभृङ्गारदर्वीकं, देवकुलं--यक्षायतनम् अनुप्रविशन्तम्-गच्छन्तम्, कोऽपि-कश्चिदपि पुरुषः वर्चोगृहे विष्ठागृहे स्थित्वा एवम्, वदेत्-कथयेत् हे स्वामिन् ! यूयमिह तावद् एत आगच्छत इह मुहूर्तं मुहूर्तमात्रम् आसत आस्यध्वम् उपविशत, वा-अथवा तिष्ठत ऊर्ध्वस्थिता भवत, निषीदत-सम्यगुपविशत, त्वग्वर्तयत-शयनं कुरुत, अत्र वा शब्दो वाक्यालङ्कारे, तस्य पुरुषस्य खलु हे प्रदेशिन् ! त्वम् एतमर्थं किम् प्रतिशृणुयाः स्वीकुर्याः ? प्रदेशी प्राह—
नायमर्थः समर्थः-असमर्थः स्वीकारयोग्यो नास्ति किमर्थमित्याह-भदन्त ! तत्स्थानम्-अशुचि-अपवित्रम्, अशुचिसामन्तम्=तत्समीपोऽशुचि पुद्गल स्था-

---

पपन्नो देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं २ ॥सू० १३४॥

अधुनोपपन्न देव जो मनुष्यलोक में आने की इच्छा करते हुए भी यहां आने में बाधक होते हैं। इसलिये हे प्रदेशी ! तुम ऐसी श्रद्धा करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है और जो शरीर है वही जीव नहीं है।

टीकार्थ—इस सूत्र का मूलार्थ के जैसा ही है ।

न्नोचितोऽयमर्थः इति बोध्यम्, केशीश्रमणः प्राह–हे प्रदेशिन्! एवमेव-इत्थमेव तत्रापि आर्यिकाऽभवत् कुत्र साऽभवदित्यत्राऽऽह–इहैव श्वेतविकायां नगर्यां धार्मिकी–यावत्–यावत्पदेन–धर्मानुगादिविशेषणविशिष्टा व्यहरत्, सा–आर्यिका खलु मम वक्तव्यतया-मम मतेन सुबहु यावत्–यावत्पदेन–"पुण्योपचयं समर्ज्य कालमासे कालं कृत्वाऽन्यतरेषु देवलोकेषु देवतया उपपन्ना, तस्याः खलु आर्यिकायाः त्वं नप्तृकः–पौत्रोऽभवः, कीदृशः? इत्यत्राऽऽह–इष्टः यावत्–यावत्पदेन–इष्टकान्तादिविशेषणविशिष्टः उदुम्बर पुष्पमिव दुर्लभः श्रवणतया, किमङ्ग पुनर्दर्शनतया, एतादृशस्त्वमभूः। सा-आर्यिका खलु मानुष्यं लोकमागन्तुमिच्छति किन्तु नैव शक्नोति।

कुतो न शक्नोति? इति जिज्ञासायामाह–हे प्रदेशिन्! चतुर्भिः–स्थानैः अधुनोपपन्नः–तत्कालोत्पन्नो देवः देवलोकेषु मानुष्यं लोकं शीघ्र-मागन्तुमिच्छेद्–अभिलषेत् किन्तु नैव शक्नोति–तत्र प्रथमकारणमाह–अधुनोपपन्नो देवो देवलोकेषु कामभोगेषु मूर्च्छितः–मूर्च्छामधिगतः, गृद्धः–विषयोपभोगाभिलाषग्रस्तः, ग्रथितः आसक्तः, अध्युपपन्नः–अत्यासक्तः स खलु मानुष्यान्–मानुष्यलोकसम्बन्धिनः भोगान्–शब्दादीन् विषयान् नो आद्रियते नापेक्षते, अतएव नो परिजानाति–विज्ञातुं नेच्छति, स खलु देवः कथंचित् मानुष्यं लोकमागन्तुमिच्छेदपि किन्तु देवभोगासक्तया नैवागन्तु शक्नोति–नेच्छतीत्यर्थः १। द्वितीयस्थानमाह–अधुनोपपन्न इत्यारभ्य अध्युपपन्नः' इति पर्यन्तानां विवरणं प्राग्वत्, तस्य–देवस्य मानुष्यं–मनुष्यलसम्बन्धि प्रेम व्युच्छिन्नं मनुष्यलोकसुखापेक्षयाऽधिकदिव्यसुखेन प्रति-हतं भवति तथा–दिव्यं–स्वर्गलोकसम्बन्धि प्रेम संक्रान्तं–हृद्यनुप्रविष्टं भवति, तेन हेतुना स देव आगन्तुं न शक्नोति २। अधुनोपपन्नो देवो दिव्येषु कामभोगेषु मूर्च्छितो गृद्धो ग्रथितोऽध्यु-पपन्नो भवति, तस्य खलु देवस्य एवम्–अनुपदवक्ष्यमाणस्वरूपाभिलापो भवति तथाहि–इदानीम्–अधुना गमिष्यामि, तथा मुहूर्तेन घटिकाद्वया-नन्तरं गमिष्यामि। तस्मिन् काले इह–मर्त्यलोके नराः–मातापितृपुत्र-कलत्रा..यः अल्पायुषः अल्पजीविनः कालधर्मेण–मृत्युना संयुक्ताः भवन्ति, अतः देव आगन्तुं न शक्नोति ३। अथ चतुर्थस्थानमाह–"अधुनोपपन्नो देवो दिव्यभोगासक्तो भवति, तस्य देवस्य औदारिकः=औदारिकशरीरसम्बन्धी गोमूत्रकलेवरादिसमुद्भूतो दुर्गन्धः प्रतिकूलः घ्राणेन्द्रियाननुकूलः, प्रतिलोमः [illegible] भवति। तथा–अशुभः यः गन्धः ऊर्ध्वं म [illegible] उपरिप्रदेशेऽपि च

यन्न गात्वनुःप्रयोजनशतं-न्यादि ना पत्र ना यानानां नान गान। अभिननमागन्छन्ति अभितः प्रसरन्ति. न देवः मानुष्य लोकमागन्तुम्, इत्येव परन्तु दुर्गन्धप्रसादागन्तुं न शक्नोति ४। हे प्रदेशिन्। इत्येतैः चतुर्भिः स्थानैः-देवा आगन्तुं न शक्नुवन्तीति। तत् तस्माच्छ्रद्धत्स्व हे प्रदेशिन! त्वं श्रद्धेहि-मद्वचने श्रद्धां कुरु यथा-अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम् नो तज्जीवः तत् शरीरम्, इति ॥सू० १३४॥

मूलम्—तएणं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी—अत्थिणं भंते! एसा पण्णा उवमा. इमेणं पुण कारणेणं णो उवागच्छइ. एवं खलु भंते! अहं अन्नया कयाइं बाहिरियाए उवट्ठाण-सालाए अणेगगणणायक-दंडणायग राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय – इब्भसेट्ठि सेणावइ – सत्थवाह-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय अमच्चचेड-पीढमद्द-नगर-निगम-दूय-संधिवालेहिं सद्धिं संपरिवुडे विहरामि। तएणं मम णगरगुत्तिया ससक्खं सहोढं सगेवेज्ज अवउडगबंधणबद्धं चोरं उवणेंति, तएणं अहं तं पुरिसं जीवंतं चेव अउकुंभीए पक्खिवावेमि, अउमएणं पिहाणएणं पिहावेमि, अएण य तउएण य आयावेमि, आयपच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि, तए अहं अण्णया कयाइं जेणामेव सा अउकुंभी तेणामेव उवागच्छामि. उवागच्छित्ता तं अउकुंभिं उग्गलच्छावेमि. उग्गलच्छावित्ता तं पुरिसं सयमेव पासामि णो चेव णं तीसे अउकुंभीए केइ छिड्डे इ वा विवरेइ वा अंतरेइ वा राई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए. जइ णं भंते! तीसे अउकुंभीए होज्जा केइ छिड्डे वा जाव राई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए ता णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा-अन्नो जीवो अन्नं सरीरं णो तं

जीवो तं सरीरं, जम्हा णं भंते ! तीसे अउकुंभीए णत्थि केइ छिड्डे वा जाव निग्गए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा-तं जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं ॥सू० १३५॥

छाया—ततःखलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत् अस्ति खलु भदन्त ! एषा प्रज्ञा उपमा, अनेन पुनःकारणेन नो उपागच्छति, एवं खलु भदन्त ! अहमन्यदा कदाचित् बाह्यायाम् उपस्थानशालायाम् अनेकगणनायक-दण्डनायक-राजेश्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिकेभ्य-श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाह-मन्त्री-महामन्त्री-गणक-दौवारिका-ऽमात्य-चेट-पीठमर्द-नगर-निगम-दूत-सन्धिपालैः सार्द्धं संपरिवृतो विहरामि।

'तएणं से पएसी राया इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसकेबाद (पएसी राया केसिंकुमारसमणं एवं वयासी) प्रदेशी राजाने केशीकुमार श्रमण से ऐसा कहा-(अत्थि णं भंते ! एसा पण्णा उवमा, इमेणं पुण कारणेणं णो उवागच्छइ) हे भदन्त ! यह जीव एवं शरीर में भेदरूप बुद्धि केवल उपमामात्र है, जैसा कि अभी प्रकट किया गया है-कि इस२ कारण से देव यहां नहीं आता है. (एवं खलु भंते ! अहं अन्नया कयाइ बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए) हे भदन्त ! किसी एक समय मैं बाह्य उपस्थान शाला में (अणेगगणणायक, दंडणायक-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ- सत्थवाह-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीठमद्द-नगर-निगम-दूय-संधिवालेहिं सद्धिं संपरिवुडे विहरामि) अनेक गणनायक, दण्डनायक, राजा,

सूत्रार्थः—(तए णं) त्यारपछी (पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) प्रदेशी राजाએ કેશી કુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું- (अत्थि णं भंते ! एसा पण्णा उवमा. इमेणं पुण कारणेणं णो उवागच्छइ) હે ભદંત! તમે દેવને અહીં ન આવવા માટે જે કંઈ કહ્યું છે તેના વડે તો જીવ અને શરીરમાં ભેદરૂપ બુદ્ધિ ફક્ત ઉપમામાત્ર જ છે આમ સ્પષ્ટપણે ભાષિત થાય છે. (एवं खलु भंते ! अहं अन्नया कयाइं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए) હે ભદંત! કોઈ એક વખતે બાહ્ય ઉપસ્થાનશાળામાં હું (अणेगगणणायकदंडणायक-राइसर-तलवर-माडंबिय कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीठमद्द-नगर-निगम-दूय-संधि-वालेहिं-सद्धिं संपरि-

ततः खलु मम नगरगुप्तिका समक्षं सहोढं सग्रैवेयकम् अवकोटकबन्धनबद्धं चौरमुपनयन्ति, ततःखलु अहं तं पुरुषं जीवन्तमेव अयःकुम्भ्यां प्रक्षेपयामि, अयोमयेन पिधानकेन पिधापयामि. अयसा च त्रपुणा च आतापयामि, आत्मप्रत्ययिकैः पुरुषैः रक्षयामि. ततोऽहमन्यदा कदाचित् यत्रैव सा अय

ईश्वर ऐश्वर्यसंपन्न, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी सेनापति, सार्थवाह, मन्त्री, महामंत्री, गणक, दौवारिक, अमात्य, चेट, पीठमर्द, नगरनिवासीजन, व्यापारिजन, दूत, सन्धिपाल, इन सबके साथ बैठा हुआ था. (तएणं मम णगरगुत्तिया ससक्खं, सहोढं, सगेवेज्जं, अवउडगबंधणबद्धं चोर उवणेति) इतने में नगररक्षक मेरे समक्ष सहोढ—चुराई हुई वस्तुओं सहित, सग्रैवेयक—ग्रीवा में जिसने चुराई हुई वस्तुओं को बांधा है ऐसे चोर को अवकोटक—(मुसकिया) बंधन से बांधकर लाये (तएणं अहं तं पुरिसं जीवंतं चेव अउकुंभीए पक्खिवावेमि) मैं उस पुरुष को जीवितावस्था में ही लोह की कोठी में बन्द करवा दिया—और (अउमएणं पिहाणएणं पिहावेमि) उसके मुखको—कोठी के मुख को लोह के ढक्कन से बन्द करवा दिया—ढकवा दिया. (अएण य तउएण य आयावेमि) बाद में फिर मैंने उसे द्रवीभूत लोहे से और द्रवित रांग से अंकित करवा दिया. (आयपच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि) यह सब करवाकर फिर मैंने अपने विश्वासपात्र पुरुषों को उसकी रक्षा के निमित्त नियुक्त करवा दिया

वुडे विहरामि) घणा गणनायको, दंडनायको, राजा, ईश्वर, ऐश्वर्य, संपन्न, तलवर माडंबिक, कौटुंबिक, ईभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह, मंत्री, महामंत्री, गणक, दौवारिक, अमात्य, चेट, पीठमर्द, नगरनिवासीजन, वहेपारीओ, दूतो, संधिपालो, आ बधानी साथे बेठो हतो, (तए णं मम णगरगुत्तिया ससक्खं सहोढं, सगेवेज्जं, अवउडगबंधणबद्धं चोर उवणेति) एटलामां नगररक्षकोए मारी सामे सहोढ—चोरेली वस्तुओनी साथे, सग्रैवेयक—जेनी डोकमां चोरेली वस्तुओ बांधवामां आवी छे एवा चोरने अवकोटक—बन्ने हाथोने डोकनी साथे बांधीने लाव्या. (तए णं अहं तं पुरिसं जीवंतं चेव अउकुंभीए पक्खिवावेमि) में ते पुरुषने जीवतो ज लोखंडना नळामां बंध करावी दीधो अने (अउमएणं पिहाणएणं पिहावेमि) ते नळाने लोखंडना ढांकणथी बंध कराव्यो दीधो (अएण य तउएण य आयावेमि) त्यार पछी में तेने द्रवीभूत लोखंड तेमज द्रवित [illegible] (आयपच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि) [illegible]

स्कुम्भी तत्रैव उपागच्छामि, उपागम्य तामय कुम्भीम्. उत्क्षेपयामि उत्क्षेप्य तं पुरुषं स्वयमेव पश्यामि नो चैव खलु तस्या अयस्कुम्भ्यां किचित् छिद्रमिति वा विवरमिति वा अन्तरमिति वा राजिरिति वा यतः खलु स जीवः अन्त राद् बहिर्निर्गतः, यदि खलु भदन्त ! तस्यां अयस्कुम्भ्यां भवेत् किमपि छिद्र वा यावद् राजिर्यतः खलु स जीवः अन्तराद् बहिर्निर्गतः, तदा खलु अहं श्रद्दध्या प्रतीयां रोचयेयं यथा-अन्यो जीवः अन्यत् शरीरं नो तज्जीव

(तए अहं अण्णया कयाइ जेणामेव सा अउकुंभी तेणामेव उवागच्छामि) एक दिन की बात है कि मैं उस अयःकुम्भी के-लोहेकी कोठी के पास गया (उवागच्छित्ता तं आउकुंभिं उग्गलत्थावेमि) वहां जाकर मैंने उस लोहे की कोठी को खुलवाया (उग्गलत्थाविता तं पुरिसं सयमेव पासामि णो चेव णं तीसे अयकुंभीए केइ छिड्डेइवा विवरेइ वा, अंतरेइ वा राइ वा जओण से जीवे अंतोहिंतोबहिया निग्गए) खुलवाकर मैंने स्वयं उस चोर को देखा तो वह वहां मरा पडा था, जब कि उस लोहे की कोठी में न कोई छिद्र था, न कोई विवर था, न अवकाश था, न कोई रेखा थी, कि जिससेहोकर उस चोर पुरुष का जीव उस लोहे की कोठी के भीतर से बाहर निकल जाता (जइ णं भंते ! तीसे अउकुंभीए- होज्जा केइ छिड्डे वा जाव राई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए) हां भदन्त ! यदि उस लोहे की कोठी में, कोई छिद्र या यावत् रेखा होती तो उससे होकर वह चोर पुरुष का जीव भीतर से बाहर

माटे विश्वासपात्र पुरुषोनी नियुक्ति करी हती. (तए अहं अण्णया कयाइं जेणामेव सा अउकुंभी तेणामेव उवागच्छामि) એક દિવસની વાત છે કે હું તે લોખંડના નળા પાસે ગયો. (उवागच्छित्ता तं आउकुंभिं उग्गलत्थावेमि) त्यां જઈને મેં તે લોખંડના નળાને ઉઘડાવ્યો. (उग्गलत्थाविता तं पुरिसं सयमेव पासामि, णो चेव णं तीसे अयकुंभीए केइ छिड्डेइ वा विवरेइ वा, अंतरेइ वा, राई- वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया निग्गए) ઉઘડાવીને મેં પોતે તે ચોરને જોયો તો તે ત્યાં મૃતાવસ્થામાં પડેલો હતો. જ્યારે તે લોખંડના નળામાં ન છિદ્ર હતું કે ન વિવર હતું કે ન અવકાશ હતો કે ન રેખા હતી કે જેથી તે ચોરનો જીવ તે લોખંડના નળામાંથી બહાર નીકળી જતો રહે. (जइ णं भंते ! तीसे अउकुंभीए होज्जा केइ छिड्डे वा जाव राई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए) હે ભદન્ત ! જો તે લોખંડના નળામાં કોઈ છિદ્ર કે યાવત્ રેખા હોત તો તેમાંથી થઈને તે ચોર પુરુષનો જીવ અંદરથી બહાર નીકળી શકત. (तो णं

सशरीरम्, यस्माद् भदन्त! तस्या अयस्कुम्भ्याः नास्ति किञ्चन छिद्र वा यावत् निर्गतः, तस्मात् सुप्रतिष्ठिता मे प्रतिज्ञा यथा स एव जीवः तत् शरीरम्, नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम् ॥ सू० १३५॥

टीका—'तए णं से पएसी राया' इत्यादि—ततः—केशिकुमारवचनश्रवणानन्तरं खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम् एवम्—अवादित्—हे भदन्त! एषा—जीवशरीरयो भेदरूपा प्रज्ञा=बुद्धिः उपमा=उपमामात्रम् अस्ति—विद्यते, यद् अनेन कारणेन देवो नो उपागच्छतीति। हे भदन्त! एवं—पूर्वोक्तप्रकारेणान्यदपि वृत्तमस्ति यद् अहम्—अन्यदा—कदाचित्—अस्मिन् कस्मिंश्चित् समये—बाह्यायाम्—उपस्थानशालायाम् अनेकगणनायक-दण्डनायक-राजेश्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिक-इभ्य-श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाह-

निकलता (तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो तं जीवो तं सरीरं) तो मैं आपकी इस बात पर विश्वास कर लेता, प्रतीति कर लेता, उसे रुचि का विषय बना लेता कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है, जीव शरीर रूप नहीं है और शरीर जीवरूप नहीं है (जम्हा णं भंते! तीसे अउकुंभीए णत्थि केइ छिड्डे वा जाव निग्गए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा—तं जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं) जिस कारण हे भदन्त! उस लोहे की कोठी मे कोई छिद्र अथवा यावत् रेखा नहीं थी कि जिससे उसका जीव बाहर निकल जाता, अतः छिद्रादि के अभाव से निकलने म असमर्थ होने के कारण मेरा ही यह मन्तव्य ठीक है कि जो जीव है, वही शरीर है, जीव शरीर से भिन्न नहीं है और शरीर जीव से भिन्न नहीं है।

अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा—अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो तं जीवो तं सरीरं) तो हुं तमारी आ वात पर विश्वास करी लेत, प्रतीति करी लेत अने तेने मारी रुचिनो विषय बनावी लेत के जीव अन्य छे अने शरीर अन्य छे, जीव शरीररूप नथी अने शरीर जीवरूप नथी. (जम्हा णं भंते! तीसे अउकुंभीए णत्थि केइ छिड्डे वा जाव निग्गए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा—तं जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं) जेथी हे भदन्त! ते लोखंडना कोठामां कोई छिद्र के यावत् रेखा नहोती के जेथी तेनो जीव बहार नीकळी जतो. एथी छिद्र वगेरेना अभावमां [illegible] मारी ज आ वातनी मान्यता ठीक छे के [illegible] छे, जीव शरीरथी भिन्न नथी अने शरीर [illegible]

मन्त्रि-महामन्त्रि-गणक-दौवारिका-ऽमात्य-चेट-पीठमर्द-नगर-निगम-दूत-सन्धिपालैः-अनेके ये गणनायका दयः-तत्र गणनायकाः-गणस्वामिनः, दण्डनायकाः-दण्डविधायकाः, राजानः-प्रसिद्धाः, ईश्वरा-ऐश्वर्यसम्पन्नाः, तलवराः-सन्तुष्टराजदत्तपट्टबन्धपरिभूषितराजकल्पाः, माडम्बिकाः-ग्रामपञ्चशतीपतयः, यद्वा-सार्द्धक्रोशद्वयपरिमितप्रान्तरैर्विच्छिद्य विच्छिद्य स्थितानां ग्रामाणामधिपतयः, कौटुम्बिकाः-बहुकुटुम्बप्रतिपालकाः, इभ्याः-इभो-हस्ती तत्प्रमाणं द्रव्यमर्हन्तीति इभ्याः, ते च जघन्य-मध्यमोत्कृष्टभेदात् त्रिप्रकाराः, तत्र हस्तिपरिमितमणिमुक्ता-प्रवाल-सुवर्णरजतादिद्रव्यराशिस्वामिनो जघन्याः, हस्तिपरिमितवज्रमणिमाणिक्यराशिस्वामिनो मध्यमाः,

---

टीकार्थ-स्पष्ट है-परन्तु जो इसमें गणनायक आदि पद आये हैं उनकी व्याख्या इस प्रकार से है-गण के जो स्वामी होते हैं, वे गणनायक हैं दण्ड का जो विधान करते है. वे दण्डनायक हैं, राजा प्रसिद्ध हैं, ऐश्वर्य से जो युक्त होते है वे ईश्वर है. सन्तुष्ट हुए राजा द्वारा जिन्हें विशेष पोशाक दी जाती हैं ऐसे राजतुल्य व्यक्तियों का नाम तलवर है पांच सौ ग्राम के जो अधिपति होते हैं वे माडम्बिक हैं, अथवा ढाई ढाई कोस के अन्तर से बसे हुए ग्रामों के जो अधिपति होते है वे माडम्बिक है, बहुत कुटुम्ब का पालन पोषण करनेवाले जो होते है कौटुम्बिक हैं, हस्तिप्रमाण द्रव्य-मणि-मुक्ता-प्रवाल-सुवर्ण-रजत-आदि द्रव्यराशि के जो स्वामी होते हैं वे जघन्य इभ्य है तथा-हस्तिपरिमित वज्र, मणि, माणिक्यराशि के जो स्वामी होते हैं वे मध्यम इभ्य है हस्तिपरिमित

ટીકાર્થ—ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે. પરંતુ આ સૂત્રમા ગણુનાયક વગેરે જે પદો આવેલ છે તેમની વ્યાખ્યા આ પ્રમાણે છે. ગણુના જે સ્વામી હોય છે તે ગણુનાયક છે. દંડનુ જે વિધાન કરે છે તે દંડનાયક છે. રાજા પ્રસિદ્ધ છે. ઐશ્વર્યથી જે સંપન્ન હોય છે તે ઇશ્વર છે સંતુષ્ટ થયેલા રાજા વડે જેમને પહેરવાના વસ્ત્રો આપવામા આવે છે એવી રાજતુલ્ય વ્યકિતઓ તલવર કહેવાય છે પાચસો ગ્રામના જે અધિપતિ હોય છે. તે માડંબિક છે અથવા તો અઢી અઢી કોસના અંતરે વસેલા ગ્રામોના જે અધિપતિ હોય છે તે માડંબિક છે ઘણા કુટુંબોનું પાલન-પોષણ કરનાર જે હોય છે તે કૌટુંબિક છે. હસ્તિપ્રમાણ દ્રવ્ય-મણિ-મુકતા-પ્રવાલ-સુવર્ણ-રજત વગેરે દ્રવ્યરાશિના જે સ્વામી હોય છે તે જઘન્ય ઇભ્ય છે તેમજ હસ્તિપરિમિત વજ્ર, મણિ, માણિક્ય રાશિના જે સ્વામી હોય છે તે મધ્યમ ઇભ્ય છે, ફકત હસ્તિ-

हस्तिपरिमितकेवलवज्रराशिस्वामिन उत्कृष्टाः, श्रेष्ठिनः—अक्षनोक्तपाकटाक्ष-प्रत्यक्षलक्ष्यमाणद्रविणलक्षलक्षणविलक्षणहिरण्यपट्टसमलङ्कृतमूर्धानो नगरप्रधान-व्यवहारकारिणः, सेनापतयः—चतुरङ्गसेनानायकाः सार्थवाहाः—गणिम–धरिम-मेय–परिच्छेद्यरूप–क्रयविक्रेयवस्तुजातमादाय लाभेच्छया देशान्तराणि व्रजतां सार्थं वाहयन्ति–योग–क्षेमाभ्यां परिपालयन्ति, दीनजनोपकाराय मूलधनं दत्त्वा तान् समर्द्धयन्तीति तथा, तत्र गणिमम्–एक–द्वि–त्रि–चतुरादिसंख्याक्रमेण यद्दीयते, यथा–नारिकेल–पूगीफल–कदलीफलादिकम्, धरिमम्–तुलासूत्रेणो-त्तोल्य यद्दीयते, यथा–व्रीहि–यव–लवण–सितादि, मेयं–शरावलघुभाण्डादिनो-त्तोल्य यद्दीयते, यथा–दुग्ध–घृत–तैल–प्रभृति, परिच्छेद्यं च–प्रत्यक्षतोनिक-षादिपरीक्षया यद्दीयते, यथा–मणिमुक्ता–प्रवालाऽऽभरणादि, मन्त्री–रहस्य-कार्यकारी स एव महान् महामन्त्री, गणकाः ज्योतिषवेत्तारः, दौवारिकाः–द्वारि-नियुक्ताः द्वारपालाः, अमात्याः राज्याधिष्ठायकाः सहजासिगनपुरुषविशेषाः, चेटाः–चरणसेवकाः किङ्कराः, पीठ मर्दाः–राजसमीपस्थायिनो राजवयस्काः सेवकविशेषाः, नगरेति नागरा नगरनिवासिनो जनाः, निगमाः–व्यापारिगणाः,

---

केवल वज्रराशि के जो स्वामी होते हैं वे उत्कृष्ट इभ्य हैं. लक्ष्मी की जिनपर पूरी २कृपा है, और इसी कृपा के कारण जिनके लाखों के खजाने हों, तथा जिनके मस्तक पर उन्हीं को सूचित करनेवाला चान्दी का विलक्षण पट्ट शोभायमान हो रहा हो ऐसे नगर के प्रधानव्यापारी श्रेष्ठी कहलाते हैं । चतुरङ्गसेना के नायक जो होते हैं वे सेनापति हैं, जो गणिम–गिनकर खरीदने बेंचने योग्य नारियल, सुपारी केला आदि मेय–शराव आदि से नापकर खरीदने बेचने योग्य दूध, घी, तेल, आदि वस्तुओं को तथा परिच्छेद्य–कसौटी आदि पर परीक्षा करके खरीदने बेचने योग्य मणि, मोती, मूंगा, गहना आदिवस्तुओं को लेकर लाभ के लिये देशान्तर में जाने

પરિમિત વજ્રરાશિના જે સ્વામી હોય છે તે ઉત્કૃષ્ટ ઇભ્ય છે. જેની ઉપર લક્ષ્મીની પૂર્ણ કૃપા છે અને એથી જ જેમની પાસે લાખોના ભંડાર ભરેલા છે તેમજ જેમના મસ્તક પર તેમને જ સૂચવતો ચાંદીનો વિલક્ષણ પટ્ટ શોભાયમાન થઈ રહ્યો હોય એવા નગરના પ્રધાન વ્યાપારી શ્રેષ્ઠી કહેવાય છે જે ચતુરંગ સેનાના નાયક હોય છે તે સેનાપતિ છે જે [illegible] વેપાર કરવા યોગ્ય નાળિયેર સોપારી કેળા વગેરે વસ્તુઓને [illegible] તેમજ વેપાર કરવા યોગ્ય દૂધ, ઘી, તેલ વગેરે વસ્તુઓને લઈને તેમજ પરિચ્છેદ્ય કસોટી વગેરે પર પરીક્ષા કરીને વેપાર કરવા યોગ્ય મણિ, મોતી મૂંગા, આભૂષણો વગેરે વસ્તુઓને લઈ

भयस्कुम्भ्या० नास्ति, किञ्चि छिद्रं वा यावद् राजिर्वा, यतः स जीवो ऽन्तः-मध्याद् बहिर्निर्गतःस्यात् तस्मात् कारणात् छिद्रादिविरहेण निःसर्तुमशक्तत्वात् मे-मम प्रतिज्ञा मन्तव्यरूपा सुप्रतिष्ठिता-सुष्ठु समवस्थिता न तु खण्डिता यथा तज्जीवः स शरीरम्, नो अन्यो जीवः अन्यच्छरीरम् ॥सू.१३५॥

मूलम्—तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-से जहानामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवायगंभीरा, अह णं केइ पुरिसे भेरिं च दंडं च गहाय कूडागारसालाए अंतो अंतो अणुप्पविसइ तीसे कूडागारसालाए सव्वओ समंता घणणिचियनिरंतराणिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेइ, तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए ठिच्चा तं भेरिं दंडएणं महया महया सद्देणं तालेज्जा, से णूणं पएसी ! से सद्दे णं अंतोहिंतो बहिया निग्गच्छइ ? हंता णिग्गच्छइ, अत्थि णं पएसी ! तीसे कुडागारसालाए केइ छिद्दे वा जाव राई वा जओ णं से सद्दे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए ? नो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव पएसी ! जीवे वि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा सिलं भिच्चा अंतोहिंतो बहिया णिग्गच्छइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं ३ ॥सू, १३६॥

अतः निकलने के अभाव यही प्रतीत होता है कि जीव शरीर से भिन्न २ नहीं है जो जीव है वही शरीर है और जो शरीर है वही जीव है ॥सू.१३५॥

વિચાર થયો કે જો જીવ અનેશરીર જુદાં જુદાં તે હોય તો નળામાં છિદ્ર વગેરે ન હોવાથી તેનો જીવ તેમાંથી ક્યાં થઈને નીકળ્યો ? નીકળી ન શકવાને લીધે આ વાત સ્પષ્ટ રીતે જણાય છે કે જીવ શરીરથી ભિન્ન નથી. જે જીવ છે તેજ શરીર છે અને જે શરીર છે તેજ જીવ છે. ॥ સૂ. ૧૩૫ ॥

हस्तिपरिमितकेवलवज्रराशिस्वामिन - उत्कृष्टाः, श्रेष्ठिनः-लक्ष्मीकृपाकटाक्ष प्रत्यक्षलक्ष्यमाणद्रविणलक्षलक्षणविलक्षणहिरण्यपट्टसमलङ्कृतमूर्धानो नगरप्रधान-व्यवहारकारिणः, सेनापतयः-चतुरङ्गसेनानायकाः सार्थवाहाः-गणिम-धरिम-मेय-परिच्छेद्यरूप-क्रयविक्रेयवस्तुजातमादाय लाभेच्छया देशान्तराणि व्रजतां सार्थं वाहयन्ति-योग-क्षेमाभ्यां परिपालयन्ति, दीनजनोपकाराय मूलधनं दत्त्वा वान् समर्द्धयन्तीति तथा, तत्र गणिमम्-एक-द्वि-त्रि-चतुरादिसंख्याक्रमेण यद्दीयते, यथा-नारिकेल-पूगीफल-कदलीफलादिकम्, धरिमम्-तुलासूत्रेणो-त्तोल्य यद्दीयते, यथा-व्रीहि-यव-लवण-सितादि, मेयं-शरावलघुभाण्डादिनो-त्तोल्य यद्दीयते, यथा-दुग्ध-घृत-तैल-प्रभृति, परिच्छेद्यं च-प्रत्यक्षतोनिरू-पादिपरीक्षया यद्दीयते, यथा-मणिमुक्ता-प्रवालाऽऽभरणादि. मन्त्री-रहस्य-कार्यकारी स एव महान् महामन्त्री, गणकाः ज्यौतिषवेत्तारः, दौवारिकाः-द्वारि-नियुक्ताः द्वारपालाः, अमात्याः राज्याधिष्ठायकाः सहवासिराजपुरुषविशेषाः, चेटाः-चरणसेवकाः किङ्कराः, पीठमर्दाः-राजसमीपस्थायिनो राजवयस्काः सेवकविशेषाः, नगरेति नागरा नगरनिवासिनो जनाः, निगमाः-व्यापारिगणः,

---

केवल वज्रराशि के जो स्वामी होते हैं वे उत्कृष्ट इभ्य हैं. लक्ष्मी की जिनपर पूरी २ कृपा है, और इसी कृपा के कारण जिनके लाखों के खजाने हों, तथा जिनके मस्तक पर उन्हीं को सूचित करनेवाला चान्दी का विलक्षण पट्ट शोभायमान हो रहा हो ऐसे नगर के प्रधानव्यापारी श्रेष्ठी कहलाते हैं । चतुरङ्गसेना के नायक जो होते हैं वे सेनापति हैं, जो गणिम-गिनकर खरीदने बेचने योग्य नारियल, सुपारी केला आदि मेय-शराव आदि से नापकर खरीदने बेचने योग्य दूध, घी, तेल, आदि वस्तुओं को तथा परिच्छेद्य-कसौटी आदि पर परीक्षा करके खरीदने बेचने योग्य मणि, मोती, मूंगा, गहना आदिवस्तुओं को लेकर लाभ के लिये देशान्तर में जाने

પરિમિત વજ્રરાશિના જે સ્વામી હોય છે તે ઉત્કૃષ્ટ ઇભ્ય છે. જેની ઉપર લક્ષ્મીની પૂર્ણ કૃપા છે અને એથી જ જેમની પાસે લાખોના ભંડાર ભરેલા છે તેમજ જેમના મસ્તક પર તેમને જ સૂચવતો ચાંદીનો વિલક્ષણ પટ્ટ શોભાયમાન થઈ રહ્યો હોય એવા નગરના પ્રધાન વ્યાપારી શ્રેષ્ઠી કહેવાય છે જે ચતુરંગ સેનાના નાયક હોય છે તે સેનાપતિ છે જે ગણિમ-ગણીને વેચાય ખરીદાય યોગ્ય નારિયેળ, સોપારી કેળાં વગેરે વસ્તુઓને ગણિમ કહે છે મેય-શરાવ વગેરે વડે માપીને વેચાય ખરીદાય યોગ્ય દૂધ, ઘી, તેલ વગેરે વસ્તુઓને મેય કહે છે તેમજ પરિચ્છેદ્ય કસોટી વગેરે પર પરીક્ષા કરીને વેચાય ખરીદાય યોગ્ય મણિ, મોતી પ્રવાલ, આભૂષણો વગેરે વસ્તુઓને લઈને

मयस्कुम्भ्याः नास्ति, किञ्चन छिद्रं वा यावत् राजिः, अतः स जीवो- ऽन्तः मध्याद् बहिर्निर्गतः स्यात् तस्मात् कारणात् छिद्रादिविरहेण निःसर्तु- मशक्तत्वात् मे-मम प्रतिज्ञा मन्तव्यरूपा सुप्रतिष्ठिता-सुष्ठु समवस्थिता न तु खण्डिता यथा तज्जीवः स शरीरम्, नो अन्यो जीवः अन्यच्छरीरम् ॥सू.१३५॥

मूलम्—तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी—से जहानामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवायगंभीरा, अह णं केइ पुरिसे भेरिं च दंडं च गहाय कूडागार- सालाए अंतो अंतो अणुप्पविसइ तीसे कूडागारसालाए सव्वओ समंता घणणिचियनिरंतरणिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेइ, तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए ठिच्चा तं भेरिं दंडएणं महया महया सद्देणं तालेज्जा, से णूणं पएसी ! से सद्दे णं अंतोहिंतो बहिया निग्गच्छइ ? हंता णिग्गच्छइ, अत्थि णं पएसी ! तीसे कुडागार- सालाए केइ छिद्दे वा जाव राई वा जओ णं से सद्दे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए ? नो इणट्ठे समट्ठे, एवामेव पएसी ! जीवे वि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा सिलं भिच्चा अंतोहिंतो बहिया णिग्गच्छइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं २ ॥सू, १३६॥

अतः निकलने के अभाव यही प्रतीत होता है कि जीव शरीर से भिन्न २ नहीं है जो जीव है वही शरीर है और जो शरीर है वही जीव है ॥सू.१३५॥

વિચાર થયો કે જો જીવ અનેશરીર જુદાં જુદાં તે હોય તો નળામાં છિદ્ર વગેરે ન હોવાથી તેનો જીવ તેમાંથી કયાં થઈને નીકળ્યો ? નીકળી ન શકવાને લીધે આ વાત સ્પષ્ટ રીતે જણાય છે કે જીવ શરીરથી ભિન્ન નથી. જે જીવ છે તેજ શરીર છે અને જે શરીર છે તેજ જીવ છે. ॥ સૂ. ૧૩૫ ॥

छाया—ततःखलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्-स यथानामकः कूटाकारशाला स्यात् द्विधातो लिप्ता गुप्ता गुप्तद्वारा निवातगम्भीरा, अथ खलु कश्चित् पुरुषः भेरीं च दण्डं च गृहीत्वा कूटाऽऽकारशालायामन्तरन्तः अनुप्रविशति तस्याः कूटाऽऽकारशालायाः सर्वतः समन्तात् घननिचितनिरन्तरनिश्छिद्राणि द्वारवदनानि पिदधाति, तस्याः कूटाऽऽकार-

---

'तएणं केसी कुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं केसीकुमारसमणे) इसके बाद केशीकुमार श्रमणने (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजा से ऐसा कहा (से जहा नामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्त दुवारा णिवायगंभीरा) हे प्रदेशिन! जैसे कोई एक कूटाकारशाला हो पर्वत की शिखर जैसी आकृतिवाला भवन हो और वह भीतर बाहर में आच्छादित हो, आच्छादित द्वार प्रदेशवालीहो, निवात गंभीर हो वायुरहित होती हुई गंभीर अन्तः प्रदेशवाली हो (अहणं केइपुरिसे भेरिं च दंडं च गहाय कूडागारसालाए अंतो अणुप्पविसइ) अब कोई पुरुष भेरी और दंडे को लेकर उस कूटाकारशाला के भीतर घुस जाता है, (तीसे कूडागारसालाए सव्वओ समंता घणनिचियनिरंतरणिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेइ) और घुसकर वह उसके दरवाजों को चारों तरफ से इस तरह से बन्दकर लेता है कि जिससे उनके किवाड आपस में बिल्कुल सट जाते हैं थोडासा भी अन्तर उनमें नहीं रहता है छिद्र उनके बन्द हो जाते हैं.

'तएणं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए ण केसीकुमारसमणे) [illegible]
(पएसिं रायं एवं वयासी) [illegible] (से जहा नामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता-गुत्तदुवारा णिवायगंभीरा)
हे प्रदेशिन्! [illegible]
[illegible] (अह णं केइ पुरिसे भेरिं च दंडं च गहाय कूडागारसालाए अंतो अणुप्पविसइ) [illegible]
[illegible] (तीसे कूडागारसालाए सव्वओ समंता घणनिचियनिरंतर[illegible] दुवारवयणाइं पिहेइ) [illegible]

मूलम्—तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी अत्थिणं भंते! एसा पण्णाओ उवमा, इमेण पुण कारणेणं णो उवागच्छइ, एवं खलु भंते! अहं अन्नया कयाइ बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए जाव विहरामि, तएणं ममं णगरगुत्तिया ससक्खं जाव उवणेंति, तएणं अहं तं पुरिसं जीवियाओ ववरोवेमि, ववरोवेत्ता अउकुंभीए पक्खिवावेमि अउमएणं पिहाणएणं पिहावेमि जाव आयपच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि, तएणं अहं अन्नया कयाइं जेणेव सा अउकुंभी, तेणेव उवागच्छामि, तं अउकुंभिं उग्गलत्थावेमि, तं अउकुंभिं किमिकुंभिपिव पासामि, णोच्चेवणं तीसे अउकुंभीए केइछिड्डे वा जाव राईइ वा जओ णं ते जीवा वहियाहिंतो अणुप्पविट्ठा, जइ णं तीसे अउकुंभीए होज्जा केइ छिड्डेइ वा जाव अणुप्पविट्ठा, तो णं अहं सद्दहेज्जा, जहा—अन्नो जीवो तं चेव, जम्हा णं तीसे अउकुंभीए नत्थि केइ छिड्डेइ वा जाव अणुप्पविट्ठा तम्हा सुप्पइट्ठिआ मे पइण्णा जहा—तं जीवो तं सरीरं तं चेव ॥ सू० १३७ ॥

छाया—ततःखलु प्रदेशी राजा केशीकुमारश्रमणमेवमवादीत् अस्ति खलु भदन्त! एषा प्रज्ञात उपमा अनेन पुनःकारणेन नो उपागच्छति),

---

जीवो अण्णं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं) अतः हे प्रदेशिन! तुम विश्वास करो जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है. जीव शरीर रूप नहीं है और शरीर जीवरूप नहीं है।

टीकार्थ को लेकर ही यह मूलार्थ लिखा है. भावार्थ इसका केवल यही है कि जिस प्रकार शब्द अप्रतिहतगतिवाला है उसी प्रकार से जीव भी अप्रतिहतगतिवाला है अतः वह किसी भी स्थितिमें प्रतिहतगति वाला नहीं हो सकता है ॥ सू० १३६ ॥

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं) इसके बाद (पएसी राया) प्रदेशी राजाने (केसी

तं सरीरं) એથી હે પ્રદેશિન્! તમે વિશ્વાસ કરો કે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે. જીવ શરીર રૂપ નથી અને શરીર જીવ રૂપ નથી.

ટીકાર્થ—તે લક્ષ્યમાં રાખીને જ આ મૂલાર્થ લખવામાં આવ્યો છે. આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે જેમ શબ્દ અપ્રતિહત ગતિ યુક્ત હોય છે. એથી તે ગમે તે સ્થિતિમાં પણ પ્રતિહત ગતિયુક્ત થઈ શકે નહિ. ॥ સૂ. ૧૩૬ ॥

'त एणं पएसी राया' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(त एणं) ત્યાર પછી (पएसी राया) કેશી કુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે

छाया—ततःखलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्-स यथानामकं कूटाकारशाला स्यात् द्विधातो लिप्ता गुप्ता गुप्तद्वारा निवात-गम्भीरा, अथ खलु कश्चित् पुरुषः भेरीं च दण्डं च गृहीत्वा कूटाऽऽकार-शालायामन्तरन्तः अनुप्रविशति तस्याः कूटाऽऽकारशालायाः सर्वतः समन्तात् घननिचितनिरन्तरनिश्छिद्राणि द्वारवदनानि पिदधाति, तस्याः कूटाऽऽकार-

---

'तएणं केसी कुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं केसीकुमारसमणे) इसके बाद केशीकुमार श्रमणने (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजा से ऐसा कहा (से जहा नामए कूडागा-रसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्त दुवारा णिवायगंभीरा) हे प्रदेशिन ! जैसे कोई एक कूटाकारशाला हो पर्वत की शिखर जैसी आकृति-वाला भवन हो और वह भीतर बाहर में आच्छादित हो, आच्छादित द्वार प्रदेशवालीहो, निवात गंभीर हो वायुरहित होती हुइ गंभीर अन्तः प्रदेशवाली हो (अहणं केइपुरिसे भेरिं च दंडं च गहाय कूडागारसालाए अंतो अणुप्पविसइ) अब कोई पुरुष भेरी और दंडे को लेकर उस कूटाकारशाला के भीतर घुस जाता है, (तीसेकूडागारसालाए सव्वओ समंता घणनिचियनिरंतरणिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेइ) और घुसकर वह उसके दरवाजों को चारों तरफ से इस तरह से बन्दकर लेता है कि जिससे उनके किवाड आपस में बिलकुल सट जाते हैं थोडा सा भी अन्तर उनमें नहीं रहता है. छिद्र उनके बन्द हो जाते हैं.

'तएणं केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

शब्दार्थ—(तए णं केसीकुमारसमणे) त्यार पछी केशी कुमार श्रमणे (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं (से जहा नामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता-गुत्तदुवारा णिवायगंभीरा) हे प्रदेशिन् ! जेम कोई एक कूटाकारशाला होय [illegible] अने ते बहार अने अंदरना [illegible] (अह णं केइ पुरिसे भेरिं च दंडं च गहाय कूडागारसालाए अंतो अणुप्पविसइ) [illegible] (तीसे कूडा-गारसालाए सव्वओ समंता घणनिचियनिरंतरणिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेइ) [illegible]

मूलम्—तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी अत्थिणं भंते! एसा पण्णाओ उवमा, इमेण पुण कारणेणं णो उवागच्छइ, एवं खलु भंते! अहं अन्नया कयाइ बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए जाव विहरामि, तएणं ममं णगरगुत्तिया ससक्खं जाव उवणेंति, तएणं अहं तं पुरिसं जीवियाओ ववरोवेमि, ववरोवेत्ता अउकुंभीए पक्खिवावेमि अउमएणं पिहाणएणं पिहावेमि जाव आयपच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि, तएणं अहं अन्नया कयाइं जेणेव सा अउकुंभी, तेणेव उवागच्छामि, तं अउकुंभिं उग्गलत्थावेमि, तं अउकुंभिं किमिकुंभिंपिव पासामि, णोचेवणं तीसे अउकुंभीए केइ छिड्डे वा जाव राईइ वा जओ णं ते जीवा बहियाहिंतो अणुप्पविट्ठा, जइ णं तीसे अउकुंभीए होज्जा केइ छिड्डेइ वा जाव अणुप्पविट्ठा, तो णं अहं सद्दहेज्जा, जहा–अन्नो जीवो तं चेव, जम्हा णं तीसे अउकुंभीए नत्थि केइ छिड्डेइ वा जाव अणुप्पविट्ठा तम्हा सुप्पइट्ठिआ मे पइण्णा जहा–तं जीवो तं सरीरं तं चेव ॥ सू० १३७ ॥

छाया—ततःखलु प्रदेशी राजा केशीकुमारश्रमणमेवमवादीत् अस्ति खलु भदन्त! एषा प्रज्ञात उपमा अनेन पुनःकारणेन नो उपागच्छति),

---

जीवो अण्णं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं) अतः हे प्रदेशिन! तुम विश्वास करो जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है. जीव शरीर रूप नहीं है और शरीर जीवरूप नहीं है।

टीकार्थ को लेकर ही यह मूलार्थ लिखा है. भावार्थ इसका केवल यही है कि जिस प्रकार शब्द अप्रतिहतगतिवाला है उसी प्रकार से जीव भी अप्रतिहतगतिवाला है अतः वह किसी भी स्थितिमें प्रतिहतगति वाला नहीं हो सकता है ॥ सू० १३६ ॥

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं) इसके बाद (पएसी राया) प्रदेशी राजाने (केसी

तं सरीरं) એથી હે પ્રદેશિન્! તમે વિશ્વાસ કરો કે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે. જીવ શરીર રૂપ નથી અને શરીર જીવ રૂપ નથી.

ટીકાર્થ—તે લક્ષ્યમાં રાખીને જ આ મૂલાર્થ લખવામા આવ્યો છે. આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે જેમ શબ્દ અપ્રતિહત ગતિ યુકત હોય છે. એથી તે ગમે તે સ્થિતિમા પણ પ્રતિહત ગતિયુકત થઈ શકે નહિ ॥ સૂ. ૧૩૬ ॥

'त एणं पएसी राया' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(त एण) ત્યાર પછી (पएसी राया) કેશી કુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે

एवं खलु भदन्त ! अहमन्यदा कदाचित् बाह्यायाम् उपस्थानशालायां यावत् विहरामि, ततः खलु मम नगर गुप्तिकाः ससाक्ष्यं यावद् उपनयन्ति ततः खलु अहं तं पुरुषं जीविताद् व्यपरोपयामि, व्यपरोप्य अयस्कुम्भ्यां प्रक्षेपयामि अयोमयेन पिधानकेन पिधापयामि यावत् आत्मप्रत्ययिकैः पुरुषैः रक्षयामि, ततः खलु अहं अन्यदा कदाचित् यत्रैव सा अयस्कुम्भी तत्रैव

कुमारश्रमणं एवं वयासी) केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा-(अत्थि णं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा) हे भदन्त ! यह आपके द्वारा कही गई उपमा-(दृष्टान्त) बुद्धिविशेष रूप है (इमेण पुण कारणेणं णो उव०) किन्तु इस वक्ष्यमाण कारण से मेरे मनमें जीव और शरीर का भेद नहीं आता है-युक्तियुक्त प्रतीत नहीं होता है। इसी बात को अब प्रदेशी राजा प्रकट करता है -(एवं खलु भंते ! अहं अन्नया कयाइं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए जाव विहरामि) हे भदन्त ! मैं एक दिन बाहर की उपस्थान शाला में यावत् बैठा हुआ था (तएणं ममं णगरगुत्तिया ससक्खं जाव उवणेंति) उस मेरे नगर रक्षकोंने साक्षिसहित यावत् एक चोर को उपस्थित किया (तएणं अहं तं पुरिसं जीवियाओ ववरोवेमि) मैंने उस चोर को प्राणरहित कर दिया (ववरोवित्ता अयकुंभीए पक्खिवावेमि अउमएणं पिहाणएणं पिहावेमि) प्राणरहित करके फिर मैंने उसे अयकुंभी (लोहे की कोठी) में डलवा के पुरुषों से ढकवा दिया (जाव आयपच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि) यावत् फिर मैंने अपने आत्मरक्षक पुरुषों को रक्षा पर नियुक्त कर दिया. (तएणं अहं

उपागच्छामि तामयस्कुम्भीमुत्क्षेपयामि, तामयस्कुम्भी कृमिकुम्भींमिव पश्यामि नैव खलु तस्याः कुम्भ्याः किञ्चित् छिद्रमिति वा यावद् राजिरिति वा यतः खलु ते जीवा बाह्याद् अनुप्रविष्टाः, यदि खलु तस्याः अयस्कुम्भ्याः भवेत् किञ्चित् छिद्रमिति वा यावद् अनुप्रविष्ठाः तदाऽहं श्रद्दध्यां यथा –अन्यो जीवः तदेव, यस्मात् खलु तस्या अयस्कुम्भ्याः नास्ति किमपि

अन्नया कयाइं जेणेव सा अउकुंभी तेणेव उवागच्छामि) कुछ दिनों के बाद फिर मैं उस अयस्कुंभी के पास गया (तं अयकुंभि उग्गलत्थावेमि) उस अयस्कुंभी को उघाडा (तं अउकुंभिं किम्किुंभिंपिव पासामि, णो चेव णं तीसे अउकुंभीए केइ छिड्डेइ वा जाव राईइ वा जओ णं ते जीवा बहियाहिंतो अणुप्पविट्ठा) उघाडते ही मैंने उसमें देखा कि वहां उस अयस्कुंभी में कृमिकुलों को देखा कि जिससे वह अयस्कुंभी कीटमयी हो रही थी. अब विचारने की बात यहां ऐसी है कि जब उस अयस्कुंभी में न कोई छिन्द्र था यावत् न कोई रेखा ही थी, कि जिससे होकर वे जीव उसमें बाहिर से आये (जइणं तीसे अउकुंभीए होज्जा केइ छिड्डेइ वा जाव अणुपविट्ठा) यदि उसमें कोई छिन्द्रादि होता तो यह बात मान भी ली जाती कि वे उनमें होकर उसमें प्रविष्ट हो गये हैं (तो णं अहं सद् हेज्जा–जहा–अन्नो जीवो तं चेव, जम्हाणं तीसे अउकुंभीए णत्थि केइ छिड्डेइ वा जाव अणुप्पविट्ठा तम्हा सुपइइट्ठिया मे पइण्णा जहा–तं जीवो

ગોઠવી દીધા. (तए णं अहं अन्नया कयाइं जेणेव सा अउकुंभी तेणेव उवागच्छामि) થોડા દિવસો બાદ હું ફરી તે લોખંડના નળાની પાસે ગયો (तं अयकुंभिं उग्गलत्थावेमि) તે લોખંડના નળાને ઉઘાડયો (तं अयकुंभिं किमिकुंभिं पिव पासामि, णो चेव णं तीसे अउकुंभीए केइ छिड्डेइ वा, जाव राईइ वा जओ णं ते जीवा बहियाहिंतो अणुप्पविट्ठा) ઉદ્ઘાટિત કરતાની સાથે જ મેં તે લોખંડના નળામાં કૃમિકુલોને જોયા–તે નળો કીટયુક્ત થઈ ગયો હતો. હવે આ વાત વિચાર કરવા યોગ્ય છે કે જ્યારે નળામાં કોઈ પણ છિન્દ્ર યાવત્ કોઈ પણ રેખા (તરાડ) નહોતી કે જેથી તે જીવો બહારથી તેમાં પ્રવિષ્ટ થઈ શકે (जइणं तीसे अउकुंभीए होज्जा केइ छिड्डेइ वा जाव अणुप्पविट्ठा) જો તેમાં છિદ્ર વગેરે હોત તો આવી વાત માનવામાં પણ આવી શકે તેમાં થઈને તે નળામાં કૃમિઓ પ્રવિષ્ટ થયાં છે. (तो णं अहं सद्दहेज्जा–जहा –अन्नो जीवो तं चेव, जण्हाणं तीसे अउकुंभीए णत्थि केइ छिड्डेइ वा जाव अणुप्पविट्ठा तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा तं जीवो तं सरीरं

छिद्रमिति वा यावद् अनुप्रविष्टाः, तस्मात् सुप्रतिष्ठिता मे प्रतिज्ञा यथा तज्जीवः स शरीरं तदेव ॥ सू० १३७ ॥

'तए णं पएसी राया' इत्यादि—

टीका--ततः खलु प्रदेशी राजा पुनः केशिकुमारश्रमणम् एवमवादीत् हे भदन्त ! एषा-भवदुक्ता उपमा=दृष्टान्तः प्रज्ञातः=बुद्धिविशेषात्, बुद्धिविशेषजन्या अस्ति, किन्तु अनेन-वक्ष्यमाणेन पुनः कारणेन मे-मम मनसि जीवशरीरयो र्भेदः नोपागच्छति न संगच्छते युक्तियुक्तो नो प्रतिभातीत्यर्थः। तदेव दर्शयति-हे भदन्त ! एवम्-इत्थं खलु अहम् अन्यदा कदाचित्-अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्काले बाह्यायाम् उपस्थानशालायां यावत्-यावत्पदेन-अनेकगणनायकादिभिः सार्द्धं संपरिवृतो विहरामि, ततः तदा खलु मम नगरगुप्तिकाः-नगररक्षकाः-ससाक्षिकं-साक्षिसहितम्, यावत्-यावत्पदेन-सहोढादिविशेषणविशिष्टं चोरम् उपनयन्ति-उपस्थापयन्ति, ततः खलु अहं तं-पूर्वोक्तं चोरं जीवितात् व्यपरोपयामि-प्राणरहितं करोमि, व्यपरोप्य मारयित्वा अयस्कुम्भ्यां प्रक्षेपयामि-लोहकुम्भ्यां निवेशयामि, प्रक्षेपितचोरां तामयस्कुम्भीम् अयोमयेन-लोहमयेन पिधानेन पिधापयामि-आच्छादयामि, यावत् यावत्पदेन-अयसा च त्रपुणा च लिम्पामि, आप्तप्रत्ययिकैः-विश्व-

से शरीर भेद) और इसी कारण से भी मेरा ऐसा मानना है कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है। जिस कारण से उस अयस्कुम्भी में कोई छिद्र आदि नहीं थे, फिर भी उसमें कीड़े आ गये तो इस कारण से मेरा यही विश्वास रहता है कि मेरा कथन कि जीव शरीर रूप है और शरीर जीवरूप है सुप्रतिष्ठित है।

टीकार्थ—इस सूत्र के द्वारा ... 'तए णं पएसी राया' ... [illegible] ... [illegible] ... [illegible]

श्वासपात्रैः पुरुषैः रक्षयामि, ततः खलु अहम् अन्यदा कदाचित् यत्रैव–यस्मिन्नेव स्थाने सा–सुरक्षिता अयस्कुम्भी तत्रैव–तस्मिन्नेव स्थाने उपागच्छामि–तदन्तिकं गच्छामि, गत्वा ताम् उत्क्षेपयामि–उद्घाटयामि। तामयस्कुम्भीं कृमिकुम्भीमिव कीटमयीमेव–कुम्भीं पश्यामि नैव खलु तस्याः–सुरक्षितायाः अयस्कुम्भ्याः किञ्चित्–किमपि छिद्रमिति वा यावत्–विवरं अन्तरम् राजिर्वानास्ति यतः–यस्मात्–छिद्रादेः ते कृमिजीवाः बाह्यात्–बाह्यप्रदेशात् अनुप्रविष्टाः–अभ्यन्तरे प्रविष्टा भवेयुः। यदि–चेत् खलु तस्याः–सुरक्षितायाः, अयस्कुम्भ्याः भवेत्–स्यात् किञ्चित् छिद्रम् यावद् विवरादिकं भवेत्, यतस्ते जीवाः बाह्यप्रदेशा अनुप्रविष्टाः स्युः तदा खलु अहं श्रद्दध्याम्–तव वचने विश्वस्याम्, अन्यो जीवः तदेव–पूर्वोक्तमेव अन्यो जीवः अन्यच्छरीरं नो तज्जीवः स शरीरम् इति। यस्मात्–कारणात् खलु तस्याः–सुरक्षितायाः अयस्कुम्भ्याः नास्ति किञ्चित् किमपि छिद्रादिकं यतस्ते जीवाः बाह्यप्रदेशात् अनुप्रविष्टाः स्युः तस्मात् मे–मम प्रतिज्ञा–स्वीकारः सुप्रतिष्ठिता–स्थिरा यथा––तज्जीवः स शरीरं तदेव–पूर्वोक्तमेव नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम् इति ॥ सू० १३७ ॥

मूलम्––तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी! अत्थिणं तुब्भे पएसी कयाइ अएधंतपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा? हंता अत्थि, से णूणं पएसी! अए धंते समाणे सव्वे अगणिपरिणए भवइ? हंता भवइ, अत्थिणं पएसी! तस्स अयस्स केइ छिड्डेइ वा जेणं से

हुआ है। 'पिहावेमि जाव' में आये हुए इस यावत्पद से 'द्रवित लोहे से और द्रवितरांग से मैंने उसे अत्यन्त करवा दिया' इस पूर्वोक्त पाठ का ग्रहण हुआ है। इस सूत्र का भावार्थ ऐसा है कि जब कि उस अयस्कुम्भी में किसी भी प्रकार का कोई भी छिद्रादि नहीं था तो उसमें बाहर से जीव कैसे प्रविष्ट हो गये, वहां तो केवल चोर का ही वह मृत शरीर पडा था अतः जीव और शरीर भिन्न २ नहीं है यही कथन समुचित है ।सू. १३७

वेमि जाव' मा आवेल यावत् पदथी द्रवित लोखंडथी अने द्रवित रांगाथी में तेने अंकित करावी दीधो' आ पाठनुं ग्रहण थयुं छे. आ सूत्रनो भावार्थ आ प्रमाणे छे के ज्यारे ते लोखंडना नळामा कोईपण छिद्र वगेरे न होवा छतांये तेमां बहारथी जीवो केवी रीते प्रवेश पाम्या. त्यां तो फक्त चोरनुं मृत शरीर पडयुं हतुं एथी जीव अने शरीर भिन्न नथी, आ वात समुचित छे. ।सू.१३७।

जोई बहियाहिंतो अंतो अणुप्पविट्ठे ? णो इणट्ठे समट्ठे एवामे
पएसी ! जीवोऽवि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा सिलं भिच्चा बहि
याहिंतो अणुप्पविसइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! तहेव ।सू० १३

छाया—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्
अस्ति खलु त्वया प्रदेशिन् ! कदाचिद् अयःध्मातपूर्वं वा ध्मापितपूर्वं
वा ? हन्त अस्ति, स तत् प्रदेशिन् ! अयोध्मातं सत् सर्वं अग्निपरिणतं
भवति ? हन्त भवति, अस्ति खलु प्रदेशिन् ! तस्य अयसः किञ्चित् छिद्र
मिति वा येन तत् ज्योतिः बाह्यात् अन्तरनुप्रविष्टम् नो अयमर्थः समर्थः

'तए णं केसीकुमार समणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ--(तए णं) इसके बाद (केसीकुमारसमणे पएसिं रायं ए
वयासी) केशीकुमार श्रमण ने प्रदेशी राजा से ऐसा कहा (अत्थि णं भंते
पएसी ! कयाइ अयधंतपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा) हे प्रदेशिन् ! तुम्हारे
पास ऐसा लोहा है कि जिसे तुमने पहिले कभी अग्नि में तपाया हो
या किसी से तपवाया हो ? (हंता अत्थि) हां भदन्त ! है (से णूणं पएसी
अयधंते समाणे सव्वे अगणि परिणए भवइ) तो हे प्रदेशिन् मैं तुमसे पूछ
पूछता हूं कि वह लोहा जब अग्नि में तपाया जाता है तब व
सम्पूर्णरूप से अग्निरूप में परिणत हो जाता है न ? (हंता ! भवइ
प्रदेशी ने कहा हां हो जाता है (अत्थि णं पएसी ! तस्स
अयस्स केइ छिड्डे वा जेणं से जोई बहियाहिंतो अंतो अणुप्पविट्ठे

एवमेव प्रदेशिन्। जीवोऽपि अप्रतिहतगतिः पृथिवीं भित्त्वा शैलं भित्त्वा बाह्यात् अनुप्रविशति, तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन्! तथैव ४॥ सू० १३८॥

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

टीका-ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम् एवम्-वक्ष्यमाणं वचनम् अवादीत् हे प्रदेशिन्! त्वया कदाचित्-कस्मिंश्चित्काले अयो=लोहं ध्मातपूर्वं पूर्वं ध्मातम्=अग्निना संयोजितम्? वा अथवा ध्मापितपूर्वं=पूर्वं केनचित्पुरुषेण ध्मापितम् अस्ति? इति प्रश्नः, प्रदेशीप्राह-हन्त अस्ति। केशी पृच्छति-हे प्रदेशिन्! तद् अयः लोहं नूनं निश्चितम् ध्मातं सत् सर्वं अग्नि परिणतम्-अग्निस्वरूपतया परिणतं भवति? प्रदेशीप्राह-हन्त भवति! पुनः केशीपृच्छति हे प्रदेशिन्! तस्य अयसः-लोहस्य, किञ्चित्-छिद्रमिति वा० छिद्रादिकम् अस्ति? येन-कारणेन तत् ज्योतिः-अग्निः बाह्यात् बहिः-

---

तो क्या हे प्रदेशिन! उस लोहे में कोई छिन्द्र होता है कि जिससे होकर वह अग्नि बाहर से उस के भीतर घुस जाती है? प्रदेशीने कहा-(णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् उस लोहे में कोइ भी छिद्रादिक नहीं है। (एवामेव पएसी! जीवोऽवि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा. सिलं भिच्चा, बहियाहिंतो अणुप्पविसइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी तहेव) इसी तरह से हे प्रदेशिन्! जीव भी अप्रतिहतगतिवाला है अतः वह पृथिवी को शिला को भेदकर बहिःप्रदेश से भीतर में घुस जाता है इस कारण हे प्रदेशिन्! तुम मेरे वचन पर विश्वास करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है।४।

टीकार्थ स्पष्ट है. इस सूत्र का भावार्थ ऐसा है कि जिस प्रकार छिद्रादिसे रहित लोहे के गोले में अग्नि बाहर से उसके प्रत्येक प्रदेश में

તે અગ્નિ બહારથી તેમાં પ્રવિષ્ટ થઇ જાય છે? પ્રદેશી એ કહ્યું. (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ભદન્ત! આ અર્થ સમર્થ નથી એટલે કે તે લોખંડમા કોઇ પણ છિન્દ્ર વગેરે નથી. (एवामेव पएसी! जीवोऽवि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा बहियाहिंतो अणुप्पविसइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी तहेव) આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ જીવ પણ અપ્રતિહત ગતિયુકત હોય છે એથી તે પૃથિવીને, શિલાને છેદીને બહારના પ્રદેશથી અંદરના પ્રદેશમાં પેસી જાય છે આ કારણથી હે પ્રદેશિન્! તમે મારી વાત પર વિશ્વાસ કરો કે જીવ ભીન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે. ॥ સૂ. ૪॥

ટીકાર્થ-સ્પષ્ટ જ આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે જેમ છિદ્ર વગેરેથી રહિત લોખંડમાં અગ્નિ બહારથી તેના દરેકે દરેક પ્રદેશમા પ્રવિષ્ટ થઇ જાય છે

प्रदेशात् अन्तः—आभ्यन्तरप्रदेशे अनुप्रविष्टं स्यात् ? प्रदेशी कथयति नायमर्थः समर्थः नास्ति तत्र छिद्रादिकमित्यर्थः। केशीश्रमणः—हे प्रदेशिन् ! एवमेव—छिद्रादि विनाऽपि तद्वज्जीवोऽनिरोधेऽप्यन्तरनुप्रविशति। एवं जीवोऽपि अप्रतिहतगतिः अकुण्ठितगतिः पृथिवीं भित्त्वा शिलां—पर्वतं भित्त्वा बाह्यात् —बहिः प्रदेशात् 'अन्तरनुप्रविशति', तत्—तस्मात् कारणात् हे प्रदेशिन् ! त्वं श्रद्धेहि मद्वचने विश्वसिहि नैवं पूर्वोक्तरीत्या 'अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम् नो तज्जीवः तच्छरीरम्' इति ॥ सू० १३८ ॥

मूलम्—तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा इमेण पुण मे कारणेणं नो उवागच्छइ, अत्थि णं भंते ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए पभू पंच कंडगं निसिरित्तए ? हंता पभू ! जइ णं भंते ! से चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे पभू होज्जा पंच कंडगं निसिरित्तए, तो णं अहं सद्दहेज्जा जहा—अन्नो जीवो तं चेव, जम्हा णं भंते ! से चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे णो पभू पंच कंडयं निसिरित्तए तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा तं जीवो तं चेव ॥ सू० १३९ ॥

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशीकुमारश्रमणमेवमवादीत् अस्ति

भदन्त! एषा प्रज्ञात उपमा अनेन पुनः मे कारणेन नो उपागच्छति, अस्ति खलु भदन्त! स यथानामकः कश्चित् पुरुषः तरुणः यावत् निपुणशिल्पोपगतः प्रभुः। पञ्च काण्डकं निसष्टुम्? हन्त प्रभु! यदि खलु भदन्त! स एव पुरुषो बालः यावत् मन्दविज्ञानः प्रभुर्भवेत् पञ्चकाण्डकं निसष्टुम्, तदा खलु अहं श्रद्दध्यां यथा-अन्यो जीवः तदेव, यस्मात् खलु भदन्त! स

केशीकुमार श्रमण से ऐसा कहा (अत्थि णं भंते! एसा पण्णाओ उवमा) हे भदन्त! यह जो आपने उपमा दी है वह केवल बुद्धिविशेष से जन्य होने के कारण वास्तविक नहीं है (इमेण पुण मे कारणेणं नो उवागच्छइ) क्यों कि जो कारण मैं प्रदर्शित कर रहा हूं उससे मेरे हृदय में जीव और शरीर का भेद जमता नहीं है। (अत्थि णं भंते! से जहा नामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए पभू पंचकंडगं निसिरित्तए) वह कारण ऐसा है-हे भदन्त! जैसे कोइ युवापुरुष हो यावत् वह निपुणशिल्पोपगत हो, तो वह पांचवाणों को एक ही साथ पांच लक्ष्योंको वेधने के लिये छोडने में समर्थ हो सकता है न? (हंता पभू) केशीकुमार श्रमणने कहा--हां हो सकता है। (जइ णं भंते! से चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे पभू होज्जा पंच कंडगं निसिरित्तए) अब यदि वही पुरुषबाल, यावत् मन्दविज्ञान वाला अपनी अवष्यापन्न हुआ पांचकाण्डकको-पांचवाणों को छोडने के लिये समर्थ हो जावे तो मैं आपके वचनों को श्रद्धा के विषयभूत बनाउं और यह मानलूं कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है, जीव शरीर रूप नहीं

પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમારશ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું (अत्थिणं भंते! एसा पण्णाओ उवमा) હે ભદંત! આ પ્રમાણે જે તમોએ ઉપમા આપી છે. તે માત્ર બુદ્ધિવિશેષ જન્ય હોવાથી વાસ્તવિક નથી. (इमेण पुण मे कारणेणं नो उवागच्छइ) કેમકે જે કારણ હું બતાવી રહ્યો છું તેથી મારા હૃદયમાં જીવ અને શરીરની ભિન્નતાની વાત જામ હી નથી. (अत्थि णं भंते! से जहानामए केइपुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए पभू पंच कंडगं निसिरित्तए તે કારણ આ પ્રમાણે છે. હે ભદંત! જેમ કોઈ યુવક હોય યાવત્ તે નિપુણશિલ્પોપગત હોય, તો તે પાંચ બાણોને એકી સાથે પાંચ લક્ષ્યોનું વેધન કરવામાં સમર્થ થઈ શકે છે? (हंता पभू) કેશીકુમાર શ્રમણે કહ્યું હાજી, થઈ શકે છે. (जइ णं भंते! से चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे पभू होज्जा पंच कंडगं निसिरित्तए) હવે જો તે યુવક બાળ, યાવત્ મંદવિજ્ઞાનવાળો પોતાની અવસ્થાપન્ન થયેલ પાંચકાંડકોને-પાંચ બાણોને છોડવામાં સમર્થ થઈ જાય તો હું તમારા વચનોને શ્રદ્ધા યોગ્ય માની શકું તેમ છું અને આ

एव पुरुषो बालः यावत् मन्दविज्ञानो नो प्रभुः पञ्चकाण्डकं निसृष्टुम् तस्मात् सुप्रतिष्ठिता मे प्रतिज्ञा यथा-तज्जीवः तदेव ॥ सू० १३९ ॥

टीकार्थ-'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

ततः-तदनन्तरं खलु प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणम् एवम्-अनेन प्रकारेण अवादीत्-हे भदन्त! एषा-इयम् उपमा-सादृश्यम् प्रज्ञातः=बुद्धि-विशेषाद् अस्ति न तु वास्तविकी यतः अनेन-वक्ष्यमाणेन पुनः कारणेन जीवशरीरयोर्भेदो मे-मम हृदये नोपागच्छति-न संगच्छते न स्वीकार-योग्यतामर्हति। तदेव दर्शयति-हे भदन्त! अस्ति-भवेत् खलु स यथा नामकः अनिर्दिष्टनामा कश्चित् पुरुषः कीदृशः? इत्याह-तरुणः-युवा यावत् -यावत्पदेन-"युगवान् बलवान् अल्पातङ्कः स्थिरसंहननः स्थिराग्रहस्तः प्रति-

है, और शरीर जीवरूप नहीं है। अतः हे भदन्त! जिस कारण से वह तरूणादि विशेषणों वाला पुरुष जब बाल यावत् मन्दविज्ञानवाला होता है, तब पांच बाणों को छोडने के लिये समर्थ नहीं होता है इस कारण से मेरी यह प्रतिज्ञा है कि जीव और शरीर एक है, जो जीव है, वही शरीर है और जो शरीर है वही जीव है सुप्रतिष्ठित है।

टीकार्थ—बाद में प्रदेशी राजाने केशीकुमार श्रमण से ऐसा कहा हे भदन्त! आपने जो अभी उपमा देकर जीव और शरीर की पृथक्ता प्रकट की है सो जब मै अपनी इस बात का विचार करता हूं तब यह उनकी पृथक्ता मेरे चित्त में नहीं जमती है, वह बात इस प्रकार से है-जैसे कोई एक तरूण पुरुष हो और यावत् वह निपुणशिल्पोपगत हो यहां यावत् पद से 'युगवान् बलवान्. अल्पातङ्कः स्थिर संहननः स्थिरा-

વાત પર વિશ્વાસ કરી લઉં કે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે. જીવ શરીર રૂપ નથી અને શરીર જીવ રૂપ નથી. એથી હે ભદંત! જે કારણને લીધે તે તરુણ વગેરે વિશેષણોથી યુકત યુવક જ્યારે બાળ યાવત મંદવિજ્ઞાનવાળો હોય છે, ત્યારે તે પાંચ બાણોને છોડવામા સમર્થ હોતો નથી. આથી જ મારી જીવ અને શરીર એક છે. જે જીવ છે તેજ શરીર છે અને જે શરીર છે તે જ જીવ છે આ પ્રતિજ્ઞા સુપ્રતિષ્ઠિત છે.

ટીકાર્થ—ત્યાર પછી પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું છે ભદંત! તમોએ જે હમણા ઉપમા વડે જીવ શરીરની પૃથકતા પ્રકટ કરી છે તે વિષે હું જ્યારે મારા મનમા વિચાર કરું છું ત્યારે આ વાત મારા મનમા બરાબર જ તી નથી. કેમકે જેમ કોઇ એક તરુણ પુરુષ થાય અને યાવત તે નિપુણ શિલ્પોગત થાય અહીં 'યાવત' પદથી 'युगवान, बलवान, अल्पातङ्कः, स्थिरसंहननः, स्थिरा-

पूर्णपाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः घननिचितवृत्तवलितस्कन्धः चर्मेष्टकद्रुघणमुष्टिकसमाहतगात्रः उरस्यबलसमन्वागतः तलयमलयुगलबाहुः लङ्घनप्लवनजवनप्रमर्दनसमर्थः छेकः दक्षः प्रष्ठः कुशलः मेधावी इत्येतेषां पदानां सङ्ग्रहः, निपुणशिल्पोपगतः, एतद्व्याख्या सप्तमसूत्रतो बोध्या । एतादृशः पुरुषः पञ्चकाण्डकं बाणपञ्चकं युगपत् पञ्चलक्ष्यवेधनाय निसृष्टं-प्रक्षेप्तुं-प्रभुः-समर्थो भवेत् ? इति प्रदेशिप्रश्नः केशीमाह-हे राजन् ! हन्त ! प्रभुः पञ्चकाण्डकं प्रक्षेप्तुं स समर्थो भवेत् ? प्रदेशी कथयति हे भदन्त ! यदि-चेत् खलु

ग्रहस्तः, प्रतिपूर्णपाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः, घननिचितवृत्तवलितस्कन्धः, चर्मेष्टकद्रुघणमुष्टिकसमाहतः गात्रः, उरस्यबलसमन्वागतः तलयमलयुगलबाहुः, लङ्घनप्लवनजवनप्रमर्दनसमर्थः छेकः, दक्ष, पृष्ठः, कुशलः, मेधावी" इस पाठ का संग्रह हुआ है। इन पदों की व्याख्या सातवें सूत्रमें की जा चुकी है अतः वहीं से इसे देखना चाहिये. ऐसा वह पुरुष पांच बाणों को एक साथ पांचलक्ष्यों को वेधन करने के लिये हे भदन्त ! छोडने में समर्थ हो सकता है न ? केशीकुमार श्रमणने तब कहा हे राजन् ! ऐसा पूर्वोक्त विशेषणों वाला वह युवा पुरुष एक साथ पांचबाणों को छोडने मे समर्थ हो सकता है परन्तु हे भदन्त ! जब वही पुरुष बाल यावत् मन्दविज्ञानवाला होता है तब पांच बाणों को एक साथ पांचलक्ष्यों को वेधन करने के लिये छोडने में समर्थ नहीं होता है. यदि वह ऐसा करने में समर्थ होता तो मैं आपकी इस बातको कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है तथा जीव शरीररूप नहीं है शरीर जीवरूप नहीं

ग्रहस्तः, प्रतिपूर्णपाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः, घननिचितवृत्तवलितस्कन्धः, चर्मेष्टकद्रुघणमुष्टिकसमाहतगात्रः, उरस्यबलसमन्वागतः तलयमल युगलबाहुः, लङ्घनप्लवनजवनप्रमर्दनसमर्थः, छेकः, दक्षः पृष्ठः कुशलः मेधावी" આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે. આ બધા પદોની વ્યાખ્યા સાતમા સૂત્રમાં કરવામા આવી છે. એથી જિજ્ઞાસુઓ ત્યાંથી જાણી લેવા પ્રયત્ન કરે. એવા તે યુવક ને પાચ બાણોને એકી સાથે એકજ લક્ષ્યપર છોડીને હે ભદંત શું તે લક્ષ્યવેધનમાં સફળ થશે ? કેશીકુમાર શ્રમણે આ સાંભળીને કહ્યું કે રાજન્. એવો તે પૂર્વોક્ત વિશેષણોથી યુક્ત તે યુવક એકી સાથે પાંચ બાણોને છોડવામાં સમર્થ થઈ શકશે. પણ હે ભદંત ! જ્યારે તે યુવક બાળ યાવત્ મંદ વિજ્ઞાન સંપન્ન હોય છે. ત્યારે તે પાચ બાણો વડે એકી સાથે પાચ લક્ષ્યોનું વેધન કરવામાં સફળ થશે નહિ. જો તે એવું કરી શકતો હોય તો હું તમારી જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે તેમજ જીવ શરીર રૂપ નથી અને શરીર જીવરૂપ નથી,

स एवपुरुषः वालः-यावत् यावत्पदेन-'अयुगवान्, अबलवान्, सातङ्कः अस्थिर-संहननः, अस्थिराग्रहस्तः अप्रतिपूर्णपाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः अघन निचितवृत्तवलितस्कन्धः, अचर्मेष्टकद्रुघणमुष्टिकसमाहतगात्रः उरस्यबलाऽसमन्वागतः अतलयमलयुगलबाहुः लङ्घनप्लवनजवनप्रमर्दनासमर्थः अच्छेकः अदक्षः अप्रष्ठः अकुशलः अमेधावी'' इत्येषां संग्रहो बोध्यः, एषामपि व्याख्या वैपरीत्येन सप्तमसूत्रतो बोध्या, मन्दविज्ञानः-अल्पकौशलः, एतादृशः स यदि पञ्चकाण्डकं निस्रष्टुं-प्रक्षेप्तुं प्रभुः-समर्थो भवेत् तदा खलु अहं श्रद्धध्यां-तव वचनं श्रद्धाविषयीकुर्याम्, यथा-अन्यो जीवः तदेव-पूर्वोक्तमेव-अन्यच्छरीरम् नो तज्जीवः स शरीरम्, इति,। हे भदन्त ! यस्मात् कारणात् खलु यस्तरुणादिविशेषणविशिष्टः स एव यदा वालः यावद् मन्द विज्ञानो भवेत् तदा न पञ्चकाण्डकं निस्रष्टुं प्रभुः-समर्थो भवति तस्मात् सुप्रतिष्ठिता-समुचिता मे प्रतिज्ञा यथा-तज्जीवः, तदेव-पूर्वोक्तमेव तच्छरीरम् नो अन्यो जीवः अन्यःछरीरम् इति ॥ सू० १३९ ॥

है श्रद्धा का विषय कर लेता "वालः यावत्" में यावत् पद से "अयुगवान्, अबलवान्, सातङ्कः अस्थिरसंहननः, अस्थिराग्रहस्तः, अप्रतिपूर्ण पाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः, अघननिचितवृत्तवलितस्कन्धः, अचर्मेष्टकद्रुघण-मुष्टिकसमन्वागतगात्रः, उरस्यबलासमन्वागतः, अतलयमलयुगलबाहुः, लङ्घनप्लवनजवनप्रमर्दनासमर्थः अच्छेकः, अदक्षः, अपृष्ठ, अकुशलः, अमेधावी" इनपदों का संग्रह हुआ है इसकी व्याख्या सातमें सूत्र से निषेधार्थपरक रूप में करनी चाहिये. तात्पर्य कहने का इस सूत्र का यही है कि उस युवा पुरुष का और बाल पुरुष का वही शरीर और वही जीव है उसमें कोई भिन्नता नही है, भिन्नता केवल उपकरणों में है क्यों कि जो बालपुरुष

આ વાત પર વિશ્વાસ કરી લેત. 'वालः यावत' માં 'यावत्' પદથી 'अयुगवान्, अबलवान्, सातङ्कः, अस्थिरसंहननः, अस्थिराग्रहस्तः, अप्रतिपूर्णपाणिपाद-पृष्ठान्तरोरुपरिणतः, अघननिचितवृत्तवलितस्कन्ध, अचर्मेष्टकद्रुघणमुष्टिक-समन्वागतगात्रः, उरस्यबलासमन्वागतः, अतलयमलयुगलबाहुः, लङ्घन-प्लवनजवनप्रमर्दनासमर्थः, अच्छेकः अदक्षः, अप्रष्ठः अकुशलः, अमेधावी "આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. આ પદોની વ્યાખ્યા સાતમા સૂત્રમાંથી નિષેધાર્થક-રૂપે કરવી જોઇએ. મતલબ આ પ્રમાણે છે કે તે યુવા પુરૂષનો તેમજ બાલ પુરૂષનો તેજ જીવ છે. તેમાં કોઇ ભિન્નતા નથી. ભિન્નતા તો છે ફક્ત ઉપકરણોમાં છે.

मूलम्—तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए णवएणं धणुणा नवियाए जीवाए नवएणं इसुणा पभू पंचकंडगं निसिरित्तए ? ता पभू ! सो चेव णं पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए कोरल्लिएणं धणुणा कोरिल्लियाए जीवाए कोरिल्लिएणं इसुणा पभू पंचकंडगं णिसिरित्तए? णो इणट्ठे समट्ठे। कम्हा ? भंते ! तस्स पुरिसस्स अपज्जत्ताइं उवगरणाइं हवंति, एवामेव पएसी! सो चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे अपज्जत्तोवगरणे, णो पभू पंचकंडयं निसिरित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा—अन्नो जीवो तं चेव ५ ॥ सू० १४० ॥

छाया—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत् स यथानामकः कश्चित् पुरुषः तरुणः यावत् निपुणशिल्पोपगतः नवकेन धनुषा नविकया जीवया नवकेन इषुणा प्रभुः पञ्चकाण्डकं निस्रष्टुम्?

था वही तो युवा हुआ है. अतः उस जीव में और उसके शरीर में भिन्नता कैसे मानी जा सकती है ॥ सू० १३९ ॥

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) इसके बाद केशीकुमारश्रमणने (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजा से इस प्रकार कहा (से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए) हे भदन्त ! जैसे कोई युवा पुरुष हो और वह यावत् निपुण शिल्पोपगत हो (णवएणं धणुणा नवियाए जीवाए नवएणं इसुणा पभू पंचकंडगं निसिरित्तए)

કેમકે બાલ પુરુષ હતો તેજ યુવા થયો છે. એથી તે જીવમાં અને તેના શરીરમા ભિન્નતા કેમ કરીને માની શકાય ॥સૂ૦ ૧૩૯॥

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थः—(तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) ત્યાર પછી કેશી કુમાર શ્રમણે (पएसिं रायं एवं वयासी) પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું. (से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए) હે ભદંત! જેમ કોઇ યુવા પુરુષ હોય અને તે યાવત્ નિપુણ શિલ્પોપગત હોય, (णवएणं धणुणा नवियाए जीवाए नवएणं इसुणा पभू पंचकंडगं निसिरित्तए) એવો તે

हन्त ! प्रभुः स एव खलु पुरुषः तरुणः यावत् निपुणशिल्पोपगतः जिर्णेन धनुषा जीर्णया जीवया जीर्णेन इषुणा प्रभुः पञ्च काण्डकं निसृष्टुम् । नायमर्थः समर्थः । कस्मात् भदन्त । तस्य पुरुषस्य अपर्याप्तानि उपकरणानि भवन्ति, एवमेव प्रदेशिन ! स एव पुरुषः बालो यावत् मन्दविज्ञानः अपर्याप्तोपकरणः नो प्रभुः पञ्चकाण्डकं निसृष्टुम् तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन् ! यथा अन्यो जीवस्तदेव ५ ॥ सू० १४० ॥

ऐसा वह पुरुष नवीन धनुष से, नवीन प्रत्यञ्चा से, नवीन बाण से पांच बाणों को एक साथ पाच लक्ष्यों का वेधन करने लिये छोडने में समर्थ है क्या ? (हंता पभू) तब प्रदेशीने कहा--हां, समर्थ होता है (सो चेवणं पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए कोरिल्लिएणं धणुणा कोरिल्लिए जीवाए, कोरिल्लिएणं इसुणा पभू पंचकंडगं निसिरित्तए) पुनः केशीने पूछा–हे प्रदेशिन् ! यदि वही युवा पुरुष यावत् निपुणशिल्पोपगत बना हुआ जीर्ण धनुष्य से, जीर्ण प्रत्यञ्चासे जीर्ण बाण से पांच बाणों को छोडने के लिये समर्थ हो सकता है क्या ? प्रदेशीने कहा—(णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त ! यह अर्थ समर्थ नहीं है। केशीने पूछा–(कम्हा) हे प्रदेशिन् ! इसमें क्या कारण है कि जिससे यह अर्थ समर्थ नहीं है। (भंते ! तस्स पुरिसस्स अपज्जत्ताइं उवगरणाइं हवंति) प्रदेशी राजाने कहा हे भदन्त ! उस पुरुषके उपकरण अपर्याप्त हैं (एवामेव पएसी ! सो चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे अपज्जात्तोवगरणे, णो पभू पंचकंडयं निसिरित्तए, नं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा–अन्नो जीवो तं चेव ५)

પુરુષ શું નવીન ધનુષ વડે, નવીન બાણ વડે પાચ બાણોને એકી સાથે પાચ લક્ષ્યો ના વેધન માટે છોડવામા સમર્થ હોય છે ? (हंता पभू) ત્યારે પ્રદેશિન્ રાજાએ કહ્યુ-હાજી, સમર્થ હોય છે (सो चेव णं पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए कोरिल्लिएणं धणुणा कोरिल्लयाए जीवाए, कोरिल्लिएणं इसुणा पभू पंच कंडगं निसिरित्तए) ફરી કેશીએ પ્રશ્ન કર્યો કે હે પ્રદેશિન્ ! જો તે યુવા પુરુષ યાવત્ નિપુણશિલ્પોગત થઈને જીર્ણ ધનુષથી, જીર્ણ પ્રત્યંચાથી, જીર્ણ બાણથી પાચ બાણોને છોડવામા સમર્થ થઈ શકે તેમ છે ? પ્રદેશીએ કહ્યુ (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ભદંત ! આ અર્થ સમર્થ નથી. (भंते ! तस्स पुरिसस्स अपज्जत्ताइं उवगरणाइं हवंति) પ્રદેશી રાજાએ કહ્યુ હે ભદંત ! તે પુરુષના ઉપકરણો પર્યાપ્ત નથી. (एवामेव पएसी ! सो चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे अपज्जत्तोवगरणे, णो पभू पंच कंडगं निसिरित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा–अन्नो जीवो तं चेव ५) ત્યારે કેશીએ કહ્યું-કે આ પ્રમાણે જ હે પ્રદેશિન ! તે પુરુષ

मूलम्—तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी से जहानामए केइपुरिसे तरूणे जाव निउणसिप्पोवगए णवएणं धणुणा नवियाए जीवाए नवएणं इसुणा पभू पंचकंडग निसिरित्तए ? ता पभू ! सो चेव णं पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए कोरल्लिएणं धणुणा कोरिल्लियाए जीवाए कोरिल्लिएणं इसुणा पभू पंचकंडगं णिसिरित्तए? णो इणट्ठे समट्ठे । कम्हा ? भंते ! तस्स पुरिसस्स अपज्जत्ताइं उवगरणाइं हवंति, एवामेव पएसी! सो चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे अपज्जत्तोवगरणे, णोपभू पंचकंडयं निसिरित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा—अन्नो जीवो तं चेव ५ ॥ सू० १४० ॥

छाया—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत् स यथानामकः कश्चित् पुरुषः तरुणः यावत् निपुणशिल्पोपगतः नवकेन धनुषा नविकया जीवया नवकेन इषुणा प्रभुः पञ्चकाण्डकं निस्रष्टुम् ?

था वही तो युवा हुआ है. अतः उस जीव में और उसके शरीर में भिन्नता कैसे मानी जा सकती है ॥ सू० १३९ ॥

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) इसके बाद केशीकुमारश्रमणने (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजा से इस प्रकार कहा (से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए) हे भदन्त ! जैसे कोई युवा पुरुष हो और वह यावत् निपुण शिल्पोपगत हो (णवएणं धणुणा नवियाए जीवाए नवएणं इसुणा पभू पंचकंडगं निसिरित्तए)

કેમકે બાલ પુરૂષ હતો તેજ યુવા થયો છે એથી તે જીવમાં અને તેના શરીરમાં ભિન્નતા કેમ કરીને માની શકાય. ॥સૂ૦ ૧૩૯॥

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

સૂત્રાર્થ:—(तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) ત્યાર પછી કેશી કુમાર શ્રમણે (पएसिं रायं एवं वयासी) પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું, (से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए) હે ભદંત! જેમ કોઇ યુવા પુરૂષ હોય અને તે યાવત્ નિપુણ શિલ્પોપગત હોય,(णवएणं धणुणा नवियाए जीवाए नवएणं इसुणा पभू पंचकंडगं निसिरित्तए) એવો તે

हन्त ! प्रभुः स एव खलु पुरुषः तरुणः यावत् निपुणशिल्पोपगतः जिर्णेन धनुषा जीर्णया जीवया जीर्णेन इषुणा प्रभुः पञ्च काण्डकं निसृष्टुम्। नायमर्थ सः मर्थः। कस्मात् भदन्त। तस्य पुरुषस्य अपर्याप्तानि उपकरणानि भवन्ति, एवमेव प्रदेशिन ! स एव पुरुषः बालो यावत् मन्दविज्ञानः अपर्याप्तोपकरणः नो प्रभुः पञ्चकाण्डकं निसृष्टुम् तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन् ! यथा अन्यो जीवस्तदेव ५ ॥ सू० १४० ॥

ऐसा वह पुरुष नवीन धनुष से, नवीन प्रत्यञ्चा से, नवीन बाण से पांच बाणों को एक साथ पाच लक्ष्यों का वेधन करने लिये छोडने में समर्थ है क्या ? (हंता पभू) तब प्रदेशीने कहा--हां, समर्थ होता है (सो चेवणं पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए कोरिल्लिएणं धणुणा कोरिल्लिए जीवाए, कोरिल्लिएणं इसुणा पभू पंचकडगं निसिरित्तए) पुनः केशीने पूछा–हे प्रदेशिन् ! यदि वही युवा पुरुष यावत् निपुणशिल्पोपगत बना हुआ जीर्ण धनुष्य से, जीर्ण प्रत्यञ्चासे जीर्ण बाण से पांच बाणों को छोडने के लिये समर्थ हो सकता है क्या ? प्रदेशीने कहा—(णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त ! यह अर्थ समर्थ नहीं है। केशीने पूछा–(कम्हा) हे प्रदेशिन् ! इसमें क्या कारण है कि जिससे यह अर्थ समर्थ नहीं है। (भंते ! तस्स पुरिसस्स अपज्जत्ताइं उवगरणाइं हवंति) प्रदेशी राजाने कहा हे भदन्त ! उस पुरुषके उपकरण अपर्याप्त हैं (एवामेव पएसी ! सो चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे अपज्जात्तोवगरणे, णो पभू पंचकंडयं निसिरित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा–अन्नो जीवो तं चेव ५)

पुरुष शुं नवीन धनुष वडे, नवीन बाण वडे पाच बाणोने एकी साथे पाच लक्ष्यो ना वेधन माटे छोडवामां समर्थ होय छे ? (हंता पभू) त्यारे प्रदेशिन् राजाए कह्यु-हाजी, समर्थ होय छे (सो चेव णं पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए कोरिल्लिएणं धणुणा कोरिल्लयाए जीवाए, कोरिल्लिएणं इसुणा पभू पंच कंडगं निसिरित्तए) फरी केशीए प्रश्न कर्यो के हे प्रदेशिन् ! जो ते युवा पुरुष यावत् निपुणशिल्पोगत थईने जीर्ण धनुषथी, जीर्ण प्रत्यंचाथी, जीर्ण बाणथी पाच बाणोने छोडवामा समर्थ थई शके तेम छे ? प्रदेशीए कह्यु (णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदंत ! आ अर्थ समर्थ नथी. (भंते ! तस्स पुरिसस्स अपज्जत्ताइं उवग रणाइं हवंति) प्रदेशी राजाए कह्यु हे भदंत ! ते पुरुषना उपकरणो पर्याप्त नथी. (एवामेव पएसी ! सो चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे अपज्जत्तोवगरणे, णो पभू पंच कंडगं निसिरित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा–अन्नो जीवो तं चेव ५) त्यारे केशीए कह्युं-के आ प्रमाणे ज हे प्रदेशिन ! ते पुरुष

'तएण केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

टीका—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम् एवमवादीत्—स यथानामकः कश्चित्—कोऽपि पुरुषः—तरुणः यावत्—यावत्पदेन—"युगवान् बलवान् अल्पातङ्कः स्थिराग्रहस्तः प्रतिपूर्णपाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः घननिचितवृत्तवलितस्कन्धः चर्मेष्टकद्रुघणमुष्टिकसमाहतगात्रः उरस्यबलसमन्वागतः तलयमलयुगलबाहुः लङ्घनप्लवनजवनप्रमर्दनसमर्थः छेकः दक्षः

तब केशीने कहा—इसी तरह से प्रदेशिन्। वही पुरुष जब बाल यावत् मन्दविज्ञानवाला होता है तब वह अपर्याप्त उपकरणवाला होता है अतः पांच वाणों को प्रक्षिप्त करने के लिये समर्थ नहीं होता है। इस कारण हे प्रदेशिन् ! तुम श्रद्धा करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है जीव शरीररूप नहीं है और शरीर जीवरूप नहीं हैं। ५ ।

टीकार्थ—तब केशीकुमार श्रमणने प्रदेशी राजा से ऐसा कहा—जैसे अनिर्ज्ञात नामा कोइ एक पुरुष हो, जो वह तरुण हो यावत्—युगवान् हो, बलवान हो, अल्प आतङ्कवाला हो, स्थिर अग्रहाथवाला हो, पाणि, पाद, पृष्ठान्तर एवं उरु ये सब जिसके प्रतिपूर्ण हो, और परिणत विवेकशील एवं वयस्क हो. कंधे दोनों जिसके खूब भरे हुए हों गोल हों, शरीर जिसका चर्मेष्टक आदि से समाहत होने से विशेषरूप में पुष्ट शारीरिक बल एवं मानसिक बल जिसका बढा चढा हो, ताडवृक्ष के जैसे जिसके दोनों बाहू लम्बे हों, लांघने में, उछलने में, कूदने में दौडने

જ્યારે બાળ યાવત મંદ વિજ્ઞાનવાળો હોય છે ત્યારે તે અપર્યાપ્ત ઉપકરણવાળો હોય છે. એથી જ તે પાંચ બાણોને પ્રક્ષિપ્ત કરવામાં સમર્થ હોતો નથી. આથી હે પ્રદેશિન ! તમે મારી વાત પર વિશ્વાસ કરો કે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે જીવ શરીરરૂપ નથી અને શરીર જીવરૂપ નથી. ।૫।

ટીકાર્થઃ—ત્યારે કેશીકુમાર શ્રમણે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-જેમ કોઈ અનિર્જ્ઞાતનામા કોઇ એક પુરૂષ હોય, જે તરૂણ હોય યાવત્—યુગવાન્ હોય, બળવાન હોય, અલ્પઆતંકવાળો, સ્થિર અગ્રહસ્તવાળો હોય, પાણિ (હાથ) પાદ (પગ) પૃષ્ઠાન્તર અને ઉરૂ આ બધા જેના પ્રતિપૂર્ણ હોય અને પરિણત–વિવેક યુકત અને વયસ્ક હોય, બન્ને ખભાઓ જેના પુષ્ટ હોય, ગોળ હોય, જેનું શરીર ચર્મેષ્ટક વગેરેથી સમાહત હોવાથી વિશેષરૂપથી પુષ્ટ હોય, જેનું શરીર તેમજ મનની શકિત વધારે પરિપુષ્ટ થયેલી હોય. તાડવૃક્ષ જેવા જેના બન્ને હાથો લાંબા હોય, ઓળંગવામા ઉછળવામા, કૂદકાઓ

प्रष्ठः कुशलः मेधावी" इत्येषां पदानां सग्रहः एषां व्याख्या सप्तमसूत्रे कृता। निपुणशिल्पोपगतः-सम्यग्विज्ञानसमन्वितः एतादृशः पुरुषः नवकेन -नूतनेन धनुषा, नविकया-नूतनया जीवया-धनुर्गुणेन धनुर्देवरिकयेत्यर्थः नवकेन-नूतनेन इषुणा-बाणेन प्रभुः-समर्थः पञ्चकाण्डकं-बाणपञ्चकं युगपत् पञ्चलक्ष्यवेधनाय निसृष्टुं-पक्षेप्तुम्?। प्रदेशीप्राह-हन्त! प्रभुः समर्थः। केशी कथयति-यदि स एव खलु पुरुषस्तरुणः यावत् निपुणशिल्पोपगतः 'कोरिल्लएणं' इति देशी शब्दो जीर्णार्थकस्तेन जीर्णेन-घुणखादितेन धनुषा नापेन जीर्णया-प्रत्यञ्चया धनुर्गुणेनेत्यर्थः जीर्णेन इषुणा-बाणेन पञ्चकाण्डकं-काण्डकपञ्चकं निसृष्टुं-प्रक्षेप्तुं प्रभुः-समर्थः स्यात्? इति केशिपश्नः, प्रदेशी-उत्तरयति-नायमर्थः समर्थः, केशी कारणं पृच्छति-कस्मात्कारणात्

आदि क्रिया में जो बराबर समर्थ हो, छेक हो, दक्ष हो प्रष्ठ हो, कुशल हो मेधावी हो और निपुणशिल्पोपगत-सम्यग्ज्ञान समन्वित हो। इन युगवान् आदि पदों की व्याख्या सातवें सूत्र में की गई है. सो वहीं से जान लेना चाहिये। ऐसा वह पुरुष नवीन धनुष से, नवीन प्रत्यञ्चा से-धनुषकी डोरीसे एवं नवीन बाण से हे प्रदेशिन् क्या बाण पंचक को युगपत् पांच लक्ष्यों का वेधन करने के लिये छोड सकता है? तब प्रदेशीने कहा-हां, भदन्त! छोड सकता है। पुनः केशीने उससे पूछा-यदि वही पुरुष जो कि तरुणादि पूर्वोक्त विशेषणोंवाला प्रकट किया गया है, कोरिल्ल-जीर्ण-घुण खादित ऐसे धनुष से, जीवा-प्रत्यञ्चा से, तथा जीर्ण बाण से बाण पंचक को छोडने में समर्थ हो सकता है? तब प्रदेशीने कहा-हे भदन्त! ऐसी स्थिति में वह इस प्रकार से करने में समर्थ नहीं हो सकता है. इस

મારવામા, દોડવામા વગેરે ક્રિયાઓમા જે બરાબર સમર્થ હોય, છેક હોય, દક્ષ હોય પ્રષ્ઠ હોય, કુશળ હોય, મેધાવી હોય અને નિપુણ શિલ્પોપગત-સમ્યક્જ્ઞાનયુકત હોય આ યુગવાન્ વગેરે પદોની વ્યાખ્યા સાતમા સૂત્રમા કરવામા આવી છે. જિજ્ઞાસુઓએ ત્યાથી જાણવા પ્રયત્ન કરવો જોઇએ. એવો તે પુરુષ નવીન ધનુષથી, નવીન પ્રત્યંચાથી, ધનુષની દોરીથી અને નવીન બાણથી હે પ્રદેશિન્! શું બાણ પંચકને યુગપત પાચ લક્ષ્યોના વેધન માટે છોડી શકશે! ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યું-હા ભદંત! છોડી શકશે. ફરી કેશીએ તેને પ્રશ્ન કરતા કહ્યુ-જો તેજ પુરૂષ-કે જે તરૂણ વગેરે પૂર્વોક્ત વિશેષણોવાળો છે, 'कोरिल्ल'-જીર્ણ-ઉધેઇ વડે ખવાયેલ ધનુષથી 'जीवा'-પ્રત્યંચાથી તેમજ જીર્ણ બાણથી બાણ પંચકોને છોડવામા સમર્થ થઇ શકે તેમ છે? ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યુ-હે ભદંત! એવી પરિસ્થિતિમાં તે આ પ્રમાણે કરવામાં સમર્થ થઇ શકશે નહિ. આ પ્રમાણે તેના અસામર્થ્યનું કારણ શું હોઇ શકે!

खलु सोऽर्थो न समर्थः ? प्रदेशो प्राह–भदन्त ! तस्य–पूर्वोक्तपुरुषस्य उपकरणानि–धनुरादि साधनानि अपर्याप्तानि जीर्णत्वादसमर्थानि भवन्ति, एवमेव–उक्तप्रकारेणैव हे प्रदेशिन् ! स एव पुरुषः बाल यावत्–यावत्पदेन अयुगवानित्यादीनामनन्तरसूत्रे संगृहीतानां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः, तदर्थस्तु वैपरीत्येन सप्तमसूत्रे प्रतिपादित स्ततोऽवसेयः। मन्दविज्ञानः–अल्पविज्ञानयुक्तः अत एव अपर्याप्तो करणः–अपर्याप्तम्–असमर्थम्–उपकरणम् शरीरेन्द्रियबलबुद्धयादिरूपं साधनं यस्य स तथा, एतादृशःपुरुषः पञ्चकाण्डकं निसृष्टुं–प्रक्षेप्तुं नो प्रभुः–समर्थो न भवति, तत्–तस्मात् कारणात् हे प्रदेशिन। त्वं श्रद्धेहि यथा अन्यो जीवः तदेव–पूर्वोक्तमेव अन्यत् शरीरम् नो तज्जीवः स शरीरम् ॥ सू० १४०॥

मूलम्–तएणं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी–अत्थि णं भंते ! एसा पण्णाओ उवमा इमेण पुण कारणेणं नो

प्रकार की उनकी असमर्थता का क्या कारण है। तब प्रदेशीने उत्तर दिया भदन्त ! उस पूर्वोक्त विशेषण सम्पन्न पुरुषके उपकरण–धनुरादिसाधन जीर्ण होने के कारण अपर्याप्त–असमर्थ हैं। अब पुनः केशीश्रमण उससे पूछते हैं—हे प्रदेशिन् ! यदि तरुण पुरुष युगवान्आदि विशेषणों से रहित है अर्थात् बाल अयुगवान् आदि विशेषणों से विशिष्ट है और शरीर, इन्द्रिय, बल, बुद्धि आदि रूप साधन उसके अपर्याप्त हैं, तो क्या वह बाणपंचक को छोडने के लिये समर्थ हो सकता है? तब प्रदेशीने कहा–नहीं हो सकता है। तो हे प्रदेशिन्। इससे तुम्हें यही मानना चाहिये शरीर भिन्न है और जीव भिन्न है शरीर जीवरूप नहीं है और जीव शरीररूप नहीं है ॥ सू० १४० ॥

ત્યારે પ્રદેશીએ જવાબ આપતાં કહ્યું–હે ભદંત ! તે પૂર્વોક્ત વિશેષણ યુક્ત પુરૂષના ઉપકરણો–ધનુષ વગેરે સાધનો–જીર્ણ હોવાથી લક્ષ્યવેધનમાં અસમર્થ છે. હવે ફરી કેશીશ્રમણ તેને પ્રશ્ન કરે છે કે હે પ્રદેશિન્ ! જો તે તરૂણ પુરૂષ યુગવાન્ વગેરે વિશેષણોથી રહિત એટલે કે બાળ, અયુગવાન્ વગેરે વિશેષણોથી યુક્ત હોય અને શરીર, ઇન્દ્રિય, બળ, બુદ્ધિ વગેરે રૂપ સાધનો તેની પાસે અપર્યાપ્ત હોય તો શું તે પાંચ બાણો છોડીને લક્ષ્યવેધન કરી શકશે ? ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યુ–કે નહિ, તો હે પ્રદેશિન્ ! એથી તમારે આ વાત માની લેવી જોઈએ કે શરીર ભિન્ન છે અને જીવ ભિન્ન છે. શરીર જીવરૂપ નથી અને જીવ શરીરરૂપ નથી. ॥ સૂ૦ ૧૪૦ ॥

उवागच्छइ अत्थि णं भंते ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए पभू एगं महं अयभारगं वा तउयभारगं वा सीसगभारगं वा परिवहित्तए ? हंता पभू । से चेव णं भंते ! पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे सिढिलवलितयाविणट्ठगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे पविरलपरिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले छुहापरिकिलंते नो पभू एगं महं अयभारगं वा जाव परिवहित्तए जइणं भंते! सच्चेव पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे जाव परिकिलंते पभू एगं महं अयभाहं वा जाव परिवहित्तए तो णं सद्दहेज्जा तहेव, जम्हा णं भंते ! से चेव पुरिसे जुन्ने जाव किलंते नो पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा तहेव ॥ सू० १४१ ॥

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्-अस्ति खलु भदन्त ! एषा प्रज्ञात उपमा अनेन कारणेन नो उपागच्छति, अस्ति खलु भदन्त ! स यथानामकः कश्चित् पुरुषः तरुणः यावत् निपुणशिल्पो-

---

'तएणं पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएणं पएसी राया) तब प्रदेशी राजाने (केसिकुमारसमणं एवं वयासी) केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा (अत्थि णं भंते! एसा पण्णाओ उवमा इमेण कारणेणं नो उवागच्छइ) हे भदन्त! यह उपमा प्रज्ञा-सेजन्य है अतः वास्तविकी नहीं है, क्यों कि जो कारण मैं प्रदर्शित कर रहा हूँ उस कारण से मेरे हृदय में जीव और शरीर का भेद नहीं जम

'तए णं पएसी राया' इत्यादि ।

સૂત્રાર્થ—(तए णं पएसी राया) ત્યારે પ્રદેશી રાજાએ (केसिकुमारसमणं एवं वयासी) કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું-(अत्थि णं भंते! एसा पण्णाओ उवमा इमेण पुण कारणेणं नो उवागच्छइ) હે ભદન્ત! આ ઉપમા પ્રજ્ઞાથી જન્ય છે એથી વાસ્તવિક નથી. કેમકે જે કારણ હું બતાવી રહ્યો છું તેથી મારા હૃદયમાં જીવ અને શરીરની ભિન્નતા જણાતી નથી. વળી (अत्थि णं भंते! से जहा नामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए पभू एगं महं अयभारं

पगतः प्रभुः एकं महान्तमयोभारकं वा त्रपुकभारकं वा शीशकभारकं वा परिवोढुम् ? हन्त प्रभुः। स एव खलु भदन्त! पुरुषः जीर्णः जराजर्जरित देहः शिथिलवलितत्वचाविनष्टगात्रः दण्डपरिगृहीताग्रहस्तः प्रविरलपरिश टितदन्तश्रेणिः आतुरः कृशः पिपासितः दुर्बलः क्षुधापरिक्लान्तः नो प्रभुरेकं

पाता है (अत्थि णं भंते! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव निउणसि प्पोवगए पभू एगं महं अयभारगं वा तउयभारगं वा सीसगभारगं वा परिवहित्तए) वह कारण इस प्रकार से है–जैसे कोई एक पुरुष हो, और वह युवा यावत् निपुणशिल्पोपगत हो, अर्थात् सम्यग्ज्ञान सम्पन्न हो तो ऐसा वह पुरुष विशाल लोहे के भार को. त्रपुक के भार को शीशा के भार को वहन करने में समर्थ हो सकता है न? तब केशीकुमारश्रमण ने उससे (हंता, पभू) हां, प्रदेशिन्! ऐसा वह पुरुष उस लोहे आदि के विशाल भार को वहन करने में समर्थ हो सकता है। (से चेव णं भंते! पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे सिढिलवलिअतयाविणट्ठगत्ते दंडपरिग हियग्गहत्थे) अब प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से फिर ऐसा पूछा– हे भदन्त! वही पुरुष जब वृद्धावस्था को प्राप्त हो जाता है और जरा से जर्जरित शरीर वाला होने के कारण शक्ति से शिथिल हो जाता है, त्वचा जिसकी झुर्रियों से युक्त हो जाती हैं और इसी से जिसकी शारीरिक शक्ति प्रतिहत हो चुकी होती है, तथा दक्षिण हाथ में जो दण्डा लेकर चलने लगता है (पविरल परिसडियदंतसेढी, आउरे,

---

वा तउयभारगं वा सीसगभारगं वा परिवहित्तए) તે કારણ આ પ્રમાણે છે જેમ કોઈ એક પુરૂષ હોય અને તે યુવા યાવત્ નિપુણ શિલ્પોપગત હોય એટલે કે સમ્યક્ જ્ઞાન યુકત હોય તો એવો તે પુરૂષ વિશાળ લોખંડના ભારને ત્રપુકના ભારને શીશાના ભારને વહન કરવામાં શું સમર્થ થઈ શકે છે? ત્યારે કેશીકુમાર શ્રમણે તેને (हंता पभू) હાજી, પ્રદેશિન્ એવો તે પુરૂષ તે લોખંડ વગેરેના વિશાળ ભારને વહન કરવામા સમર્થ થઇ શકે છે. (से चेव णं भंते! पुरिसे जुन्ने जराजज्जरिय-देहे सिढिलवलिअतयाविणट्ठगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे) હવે કેશી કુમારશ્રમણે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદંત! તે જ પુરૂષ જ્યારે ઘરડો થઇ જાય છે અને વૃદ્ધાવસ્થાને લીધે જર્જરિત શરીરવાળો હોવાથી અશકત થઇ જાય છે, ચામડી જેની કરચલીઓથી યુકત થઇ જાય છે અને એથી જેની શારીરિક શકિત પ્રતિહત થઇ જાય છે તેમજ જમણા હાથમા જે લાકડી ઝાલીને ચાલવા લાગે છે. (पविरलपरिसडियदंतसेढी, आउरे, किलंते, पिवासिए, दुब्बले छुहा परिकिलंते नो पभू एगं महं अयभारगं वा जाव परिवहित्तए) જેની દંત

महान्तमयोभारकं वा यावत् परिवोढुम्, यदि खलु भदन्त ! स एव पुरुषः जीर्णः जराजर्जरितदेहः यावत् परिक्लान्तः प्रभुः एकं महान्तमयोभारकं वा यावत् परिवोढुम्. तदा खलु श्रद्दध्यां तथैव, यस्मात् खलु भदन्त ! स एव पुरुषः जीर्णो यावत् क्लान्तः नो प्रभुरेकं महान्तमयोभारं वा यावत् परिवोढुं तस्मात् सुप्रतिष्ठता मे प्रतिज्ञा तथैव ॥सू० १४१॥

किलीए, पिवासिए, दुब्बले, छुहाकिलंते पभू एगं महं अयभारगं वा जाव परिवहित्तए) दांतों की पंक्ति जिसकी विरल हो जाती है, शटित हो जाती है, तथा कास, श्वास आदि से जो सर्वदा पीडित बना रहता है, और इसीसे जो कृश एवं अशक्त बन जाता है, उठ करके पानी पीने तक भी शक्ति जिससे जाती रहती है, जो बिलकुल शक्ति रहित हो जाता है, भूख से जो-पीडित बन जाता है ऐसा वह पुरुष एक विशाल लोहे के भार को, त्रपुक के भार को या शीशा के भार को वहन करने के लिये समर्थ नहीं रहता है। (जइ णं भंते ! सच्चेव पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे जाव परिकिलंते पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए तो णं सद्दहेज्जा तहेव) यदि हे भदन्त ! वही पुरुष जीर्ण होने पर, जरा से जर्जरित देह होने पर यावत् क्षुधा से परिक्लान्त होने पर एक विशाल लोहभार को यावत् वहन करने के लिये समर्थ बना रहता तो मैं आपके इस कथन पर कि जीव शरीर से भिन्न है और शरीर जीव से भिन्न है जीव शरीररूप नहीं है, शरीर जीवरूप नहीं है विश्वास कर लेता (जम्हा णं

પંક્તિ વિરલ થઈ જાય છે, શટિત થઈ જાય છે, તેમજ કાસ, શ્વાસ વગેરેથી જે હમેશા પીડિત રહે છે અને એથી જે કૃશ અને દુર્બલ થઈ જાય છે, ઉભા થઈને પાણી પીવાની પણ જેનામાં તાકાત હોતી નથી જે સાવ અશકત થઈ જાય છે, ભૂખથી જે પીડિત થઈ જાય છે એવો તે પુરુષ એક મોટા લોખંડના ભારને કે શિશાના ભારને વહન કરવામાં સમર્થ થઈ શકતો નથી. (जइणं भंते ! सच्चेव पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे जाव परिकिलंते पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए तो णं सद्दहेज्जा तहेव) તો હે ભદન્ત ! જો તે પુરુષ ઘરડો હોવા છતાં એ ઘડપણથી જર્જરિત શરીરવાળો હોવા છતાં એ યાવત ભૂખથી પરિક્લાન્ત હોવા છતાંએ એક ભારે લોખંડના ભારને યાવત વહન કરવામાં સમર્થ થઈ શકત તો હું તમારા જીવ શરીરથી ભિન્ન છે અને શરીર જીવથી ભિન્ન છે, જીવ શરીર રૂપ નથી અને શરીર જીવ રૂપ નથી આ કથન પર વિશ્વાસ કરી લેત.

टीका-"तए णं पएसी इत्यादि-ततःखलु प्रदेशी राजा केशिकुमार-श्रमणम् एवमवादीत्-एषा-इयम् उपमा मज्ञातः अस्ति अनेन वक्ष्यमाणेन पुनः कारणेन नो उपागच्छति-न संगच्छति, तदेवाऽऽह-एवं खलु हे भदन्त! स यथानामकः कश्चित् पुरुषः तरुणः यावत्-यावत्पदेन-अनन्तर-सूत्रे संगृहितानि युगवान् बलवानित्यादीनि पदानि संग्रहीतव्यानि, तदर्थश्च सप्तमसूत्रतो बोध्यः, निपुणशिल्पोपगतः-सम्यग्विज्ञानसम्पन्न, एतादृशः पुरुषः एकं महान्तं-विशालम् अयोभारकम्-लोहभारं त्रपुकभारकं-धातुविशेषभारं वा शीशकभारकं वा परिवोढुं-नेतुं प्रभुः-समर्थः स्यात्? इति प्रदेशिप्रश्नः केशीश्रमणः कथयति-हन्त!-हे राजन! प्रभुः-समर्थः स्यात्। हे भदन्त!

भंते! से चेव पुरिसे जुन्ने जाव किलंते नो पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा तहेव) जिस कारण से हे भदन्त! वही पुरुष जीर्ण यावत् हो जाने पर एक विशाल लोहभारको यावत वहन करने के लिये समर्थ नहीं होता है-इस कारण से मेरा यह मन्तव्य जीव और शरीर के एक होने का सुप्रतिष्ठित है अर्थात् वहीं जीव और वही शरीर है, जीव भिन्न नहीं है और शरीर भिन्न नहीं है ऐसा मेरा मन्तव्य सत्य है।

टीकार्थ—इस मूलार्थ के जैसा ही है. 'तरुणः यावत् निपुणशिल्पोपगतः' में जो यह यावत्पद आया है. उससे अनन्तर सूत्र में संगृहीत युगवान् बलवान् इत्यादि पद यहां गृहीत हुए है। इन पदों का अर्थ सप्तम सूत्रकी टीका में लिखा जा चुका है, अत वहीं से यह जानना चाहिये 'अयभारग'

(जम्हा णं भंते! से चेव पुरिसे जुन्ने जाव किलंते नो पभू एग महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा तहेव) જે કારણુથી હે ભદંત! તેજ પુરુષ જીર્ણ (ઘરડો) યાવત્ થઇ જવાથી એક વિશાળ લોખંડના ભારને યાવત્ વહન કરવામા સમર્થ થઇ શકતો નથી તે કારણથી જ જીવ અને શરીર એકજ છે એવી મારી ધારણા સુપ્રતિષ્ઠિત જ છે એટલે કે જીવ અને શરીર બન્ને એકજ છે જીવ ભિન્ન નથી અને શરીર ભિન્ન નથી આ મારી માન્યતા યોગ્યજ છે.

ટીકાર્થ-આ સુત્રનો ટીકાર્થ મૂલાર્થ જેવો જ છે. तरुणः यावत् निपुणशिल्पोपगतः'મા જે યાવત્ પદ આવેલ છે તેથી બીજી કોઇ જગ્યાએ સંગૃહીત યુગવાન, બળવાન્ વગેરે પદો અહીં સંગૃહીત થયાં છે. આ પદોનો અર્થ સાતમા સુત્રની ટીકામાં સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યો છે. એથી ત્યાથી જ જાણુવા પ્રયત્ન કરવો જોઇએ.

स एव भारवाहकः पुरुषो जीर्णः–वृद्धावस्था प्राप्तः अत एव जराजर्जरितदेहः–वृद्धावस्थामन्दशरीरशक्तिकः शिथिलवलितत्वचाविनष्टगात्रः–शिथिला अतएव वलिता––वलियुक्ता त्वचा––चर्म तया विनष्टगात्रः––प्रतिहतशरीरसामर्थ्यः दण्डपरिगृहीताग्रहस्त–अग्रहस्तेन–हस्ताग्रभागेन परिगृहीतः–धारितो दण्डो येन तथा, प्रविरलपरिशटितदन्तश्रेणिः–प्रविरलो–अत्यन्तात्पा शटिता च दन्तश्रेणिः––दन्तपङ्क्तिर्यस्य स तथा, आतुरः कासश्वासादिपीडितः, कृशः–अशक्तः, पिपासितः उत्थाय जलं पातुमप्यसमर्थः, दुर्बलः बलहीनः क्षुधापरिक्लान्तः–क्षुधापरिपीडितः, एतादृशः पुरुषः एकं महान्तमयोभारकं वा यावत्–'यावत्' पदेन–त्रपुकभारकं वा शीशकभारकं वा परिवोढुं नो प्रभुः–समर्थो न भवति. पुनः प्रदेशी प्राह–भदन्त ! यदि खलु स एव पुरुषो जीर्णः जराजर्जरितः यावत् क्षुधापरिक्लान्तः एतादृशः पुरुषः एकं महान्तमयोभारं वा यावत् शीशकभारं वा परिवोढुं प्रभुः स्यात् तदा खलु अहं श्रद्दध्यां तथैव–अन्यो जीवः अन्यच्छरीरम् नो तज्जीवः स शरीरम्, इति। अथ पुनः प्रदेशी प्राह–हे भदन्त ! यस्मात् कारणात् खलु स एव पुरुषः जीर्णः क्षुधापरिक्लान्तः एकं महान्तमयोभारं वा यावत् शीशकभारं वा' इत्येतत्कारणात् परिवोढुं नो प्रभुः–समर्थो न भवति, तस्मात् कारणात् मे–मम प्रतिज्ञा स्वीकारः, सुप्रतिष्ठिता–स्थिरा, तथैव–तज्जीवः स शरीरम्, नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरमिति ॥सू १४१॥

मूलम्—तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए णवियाए विहं-

---

वा जाव परिवहित्तए' में आये हुए यावत्पद से 'तउग भारग वा' सीसग भारगं वा इन पदों का संग्रह हुआ है। इस सूत्र का भावार्थ ऐसा है कि युवादि विशेषणों वाला जो जीव है वही जीव अयुवादि विशेषणों वाला भी है अतः वह वही जीव है और वही उसका शरीर है ये दोनों भिन्न२ नहीं हैं। यही बात प्रदेशीराजाने इस सूत्र से प्रमाणित की है ॥सू. १४१॥

'अयभारगं वा जाव परिवहित्तए' આ આવેલ યાવત્ પદથી 'तउगभारगं वा सीसगभारगं वा' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે યુવા વગેરેથી યુક્ત વિશેષણવાળો જે જીવ છે તેજ જીવ અયુવા વગેરે વિશેષણોમાં પણ રહેલ છે. એથી તે તેજ જીવ છે અને તેનું શરીર પણ તેજ છે આ બંને જુદા જુદા નથી પ્રદેશી રાજાએ એજ વાત આ સૂત્રથી પ્રમાણિત કરી છે. ॥સૂ ૧૪૧॥

गियाए णवएहिं सिक्कएहिं णवएहि पच्छियपिंडएहि पहू एगं महं अयभारं जाव परिवहित्तए? हन्ता पभू। पएसी? से चेव णं पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए जुन्निधाए दुब्बलियाए घुणक्खइयाए विहंगियाए जुण्णएहिं दुब्बलएहि घुणक्खइएहिं सिढिलतयापिणद्धएहि सिक्कएहि जुण्णएहिं दुब्बलएहिं घुणक्खइएहि पच्छियपिंडएहिं पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए? णो इणट्ठे समट्ठे। कम्हा णं भंते! तस्स पुरिसस्स जुण्णाइं उवगरणाइं भवंति। पएसी? से चेव पुरिसे जुन्ने जाव किलंते जुन्नोवगरणे नो पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी जहा-अन्नो जीवो अन्नं सरीरं ॥सू० १४२॥

छाया-ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्-स यथानामकः कश्चित् पुरुषः तरुणो यावत् शिल्पोपगतः नविकया विहङ्गिकया नवकाभ्यां शिक्यकाभ्यां नवकाभ्यां पक्षितपिटकाभ्यां प्रभुः एकं महान्तमयोभारं यावत् परिवोढुम्? हन्त? प्रभुः प्रदेशिन्! स एव खलु पुरुषः

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ-(तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) केशीकुमार श्रमणने प्रदेशी राजा से ऐसा कहा-(से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए णवियाए विहंगियाए णवएहिं सिक्कएहिं णवएहिं पच्छियपिंडएहिं पहू एगं महं अयभारं जाव परिवहित्तए?) जैसे कोई एक पुरुष हो और वह तरुण यावत् शिल्पोपगत हो, ऐसा वह पुरुष नवीन विहंगिका

'तएणं केसी कुमारसमणे' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) ત્યાર પછી કેશીકુમારશ્રમણે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું-(से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए णवियाए विहंगियाए णवएहिं सिक्कएहिं, णवएहिं पच्छियपिंडएहिं पहू एगं महं अयभारं जाव परिवहित्तए?) જેમ ગમે તે-કોઇ પુરુષ હોય અને તે તરુણ યાવત્ શિલ્પોપગત હોય, એવો તે પુરુષ

तरुणो यावत् शिल्पोपगतः जीर्णया दुर्बलिकया घुणखादितया विहङ्गिकया जीर्णकाभ्यां दुर्बलकाभ्यां घुणखादिताभ्यां शिथिलत्वचापिनद्धकाभ्यां शिक्य काभ्यां जीर्णकाभ्यां दुर्बलिकाभ्यां घुणखादिताभ्यां पक्षितपिटकाभ्यां प्रभुः एकं महान्तमयोभार वा यावत् परिवोढुम्? नो अयमर्थः समर्थः

से भारयष्टिका से (कावड से), नवीन सिक्यकाओं से नवीन पक्षितपिट काओं से एक विशाल लोहभार को यावत त्रपुभार को अथवा शीशक भार को वहन करने में समर्थ होता है न? तब प्रदेशी राजाने कहा-(हंता, पभू) हां, भदन्त! ऐसा वह पुरुष उसे वहन करने में समर्थ होता है। (पएसी! से चेव णं पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए दुब्बलियाए घुणक्खइयाए विहंगियाए जुण्णएहिं दुब्बलिएहिं, घुणक्खइएहिं, सिढिलतया पिणद्धएहिं, सिकएहिं दुब्बलिएहिं जुण्णेहिं घुणक्खएहिं पच्छियपिंडएहिं पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए) हे प्रदेशिन्! अब मैं तुम से ऐसा पूछता हूं कि वही तरुणपुरुष जो यावत् निपुणशिल्पोपगत है जीर्ण दुर्बल, घुन से खाई हुई भारयष्टि से, तथा जीर्ण, दुर्बल और घुन से खाई हुई तथा शिथिल त्वचा से पिनद्ध हुई ऐसी शिक्यकाओं से, एवं दुर्बलिक, घुण खादितऐसी पक्षितपिटकाओं से एक विशाल लोहभार को अथवा त्रपुभार को या शीशक भार को वहन करने में समर्थ हो सकता है? प्रदेशीने कहा-(णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त! यह अर्थ समर्थ

नवीन विहंगिकाथी भारयष्टिनवी (कावडथी) नवीन सिकयकाथी नवीन पक्षितपिटकाओथी એક વિશાળ લોખંડના ભારને યાવત્ ત્રપુભારને અથવા શીશક ભારને વહન કરવામાં શું સમર્થ થઈ શકે છે? ત્યારે પ્રદેશી રાજાએ કહ્યું-(हंता, पभू) હા છે, ભદંત! એવો તે પુરુષ તેને વહન કરવામાં સમર્થ થઈ શકે છે (पएसी! से चेव ण पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए, जुन्नियाए, दुब्बलियाए घुणक्खइयाए विहंगियाए, जुण्णएहिं, दुब्बलिएहिं घुणक्खइएहिं, सिढिलतया पिणद्धएहिं, सिक्कएहिं जुण्णेहिं दुब्बलिएहिं घुणक्खइएहिं पच्छियपिंडएहिं पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए) હે પ્રદેશિન્! હવે તમને હું આમ પ્રશ્ન

कस्मात्? भदन्त! तस्य पुरुषस्य जीर्णानि उपकरणानि भवन्ति, प्रदेशिन्! स एव पुरुषः जीर्णो यावत् क्षुधापरिक्लान्तः जीर्णोपकरणः नो प्रभुः एकं महान्तमयोभार वा यावत् परिवोढुम्, तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन्! यथा-अन्यो जीवः अन्यत् शरीरम् ६। ॥सू० १४२॥

नहीं है-अर्थात् वही युवादि विशेषणों वाला पुरुष जीर्णादि विशेषणोंवाली विहङ्गिकादि (कावड) द्वारा विशाल लोहभार को वहन नहीं कर सकता है। केशीकुमारश्रमणने पूछा-(कम्हा) वह ऐसा किस कारण से नहीं कर सकता है। तब प्रदेशीने कहा-(भंते! तस्स पुरिसस्स जुण्णाइं उवगरणाइं भवंति) हे भदन्त! लोह भार आदि को वहन करने के जो उसके साधन हैं-वे जीर्ण हैं। (पएसी से चेव पुरिसे जुन्ने जाव छुहापरिकिलंते जुन्नोवगरणे पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए-तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी अन्नो जीवो अन्नं सरीरं) पुनः केशी ने प्रदेशी से पूछा-हे प्रदेशिन्! यदि वही पुरुष जीर्ण, वृद्ध यावत् १४१वें सूत्र में कथितविशेषणोंवाला एवं क्षुधा परिक्लान्त हो जाता है वह जीर्णोपकरण वाला होने से-शरीर बल बुद्धि आदि उपकरणों की जीर्णतावाला होने से-एक विशाल अयोभार को यावत् शीशक भार को वहन करने में समर्थ नहीं होता है युवावस्था और वृद्धा-वस्था में जीव की समानता होने पर भी उपकरण के अभाव से वृद्ध भार को वहन करने के लिये समर्थ नहीं होता है इस कारण हे प्रदेशिन!

આ અર્થ સમર્થ નથી. એટલે કે તેજ યુવા વગેરે વિશેષણોથી યુકત પુરૂષ જીર્ણ વગેરે વિશેષણોથી યુકત વિહંગિક (કાવડ) વગેરે વટ વિશાળ લોખંડના ભારને વહન ન કરી શકે તેમ છે. કેશીકુમાર શ્રમણે કહ્યું. (कम्हा) તે આમ શા કારણથી નહિ કરી શકે? ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યુ. (भंते! तस्स पुरिसस्स जुण्णाइं उवगरणाइं भवंति) હે ભદંત! લોખંડના ભાર વગેરેને વહન કરવાના જે સાધનો છે તે જીર્ણ છે (पएसी से चेव पुरिसे जुन्ने जाव छुहापरिकिलंते जुन्नोवगरणे नो पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए-तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी अन्नो जीवो अन्नं सरीरं) ફરી કેશીએ પ્રદેશીને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કર્યો કે હે પ્રદેશિન્! જો તે જ પુરૂષ જીર્ણ વૃદ્ધ યાવત્ ૧૪૧ મા સૂત્રમા આવેલ વિશેષણોથી સંપન્ન હોય ક્ષુધા પરિકિલાંત થઈ જાય છે તો તે જીર્ણોપકરણવાળો હોવાથી-શરીર બળ બુદ્ધિ વગેરે ઉપકરણો જીર્ણ હોવાથી એક વિશાળ લોખંડના ભારને યાવત્ શીશકભારને વહન કરવામા સમર્થ થઇ શકે તેમ નથી. યુવાવસ્થામા અને વૃદ્ધાવસ્થામાં જીવની સમાનતા હોવા છતા એ ઉપકરણના અભાવે વૃદ્ધ ભારને વહન કરવામા સમર્થ થઇ

टीका-"तए णं केसी कुमारसमणे" इत्यादि-ततः खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम्, एवमवादीत्-स यथानामकः कश्चित्-कोऽपि पुरुषः तरुणः यावत्-निपुणशिल्पोपगतः नविकया-नूतनया विहङ्गिकया-भारयष्टिकया-शिक्यावलम्बनदण्डविशेषरूपया नवकाभ्यां-नवीनाभ्यां शिक्यकाभ्यां नवकाभ्यां-नूतनाभ्यां पक्षितपिटकाभ्यां-वंशवेत्रादिनिर्मितपात्रविशेषाभ्याम् एकं महान्तमयोभारं वा यावत् त्रपुभारं वा शीशकभारं वा एतादृशमयोभारादिकं परिवोढुं प्रभुः-समर्थः स्यात्? इति केशिप्रश्नः, प्रदेशी प्राह-हन्त! प्रभुः-समर्थः स्यात्! केशीकथयति-प्रदेशिन! स एव खलु पुरुषः तरुणः यावत् निपुणशिल्पोपगतः, एतादृशः पुरुषः जीर्णया दुर्बलिकया-निःसत्त्वया घुणखादितया-काष्ठकीटभक्षितया-विहङ्गिकया-भारयष्ट्या तथा-जीर्णकाभ्यां-दुर्बलिकाभ्यां घुणखादिताभ्यां शिथिलत्वचापिनद्धकाभ्यां-शिथिलदवरिकाबद्धाभ्यां शिक्यकाभ्यां, तथा दुर्बलिकाभ्यां घुणखादिताभ्यां पक्षितपिटकाभ्याम् एकं महान्तमयोभारं वा यावत् त्रपुभारं वा शीशकभारं वा परिवोढुं प्रभुः-समर्थः स्यात्?। प्रदेशी प्राह-नो अयमर्थः-समर्थः- पूर्वोक्तसाधनैर्भारो वोढुं न शक्यत इत्यर्थः। केशी श्रमणो हेतुं पृच्छति-कस्मात्कारणात्?। प्रदेशी कथयति-हे भदन्त! तस्य पूर्वोक्तस्य तरुणतादिविशिष्टस्य पुरुषस्य उपकरणानि जीर्णानि भवन्ति सन्ति, उपकरणानां जीर्णत्वादिकारणान्नायोभारादिपरिवहनयोग्यता, इतिभावः। केशी

तुम मेरे वचन में विश्वास करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है, वह जीवरूप नहीं है और न जीव शरीररूप है.।

टीकार्थ--स्पष्ट है यहां जो 'विहंगियाए, सिक्कएहिं, पच्छियपिंडएहिं' ये शब्द आये हैं वे भार उठाने के अर्थ में आये हैं। वंश, वेत्र आदिकों से निर्मित पात्र विशेषका नाम पक्षितपिटक है. तात्पर्य इस सूत्र का ऐसा

થકતો નથી. એથી હે પ્રદેશિન્! તમે મારી વાત પર વિશ્વાસ કરો કે જીવ અન્ય છે, અને શરીર અન્ય છે, શરીર જીવરૂપ નથી અને જીવ શરીર રૂપ નથી

ટીકાર્થ—સ્પષ્ટ જ છે ('વિહંગિયાએ, સિક્કએહિં, પચ્છિયપિડએહિં' એ શબ્દો આવેલ છે તે ભાર વહન કરવા માટેના વિશેષ સાધનોના અર્થમાં પ્રયુક્ત કરવામાં આવ્યા છે. વંશ, વેત્ર વગેરેથી નિર્મિતપાત્ર વિશેષનું નામ પક્ષિતપિટક છે. આ સૂત્રનો ઉદ્દેશ્યમાં ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે તરુણ પુરૂષ જો ઉપકરણો

माह–हे प्रदेशिन्! स एव पुरुषो यदि जीर्णः–वृद्धः यावत् त्रिचत्वारिंशदधिकैकशततमसूत्रोक्त विशेषणविशिष्टः, पुनः क्षुधापरिक्लान्तःक्षुधाखिन्नः, एतादृशः पुरुषो, जीर्णोपकरणः शरीरबलबुद्ध्याद्युपकरणरहितो भवति तदा एकं महान्तमयोभारं वा यावत्–शीशकभारं वा परिवोढुं न प्रभुः–न समर्थो भवति, तारुण्ये वार्धक्ये च जीवस्य समानत्वेऽपि उपकरणाभावान्न वृद्धो भारं वोढुं समर्थो भवतीति भावः। तत्–तस्मात् कारणात् हे प्रदेशिन्! त्वं श्रद्धेहि–मद्वचने विश्वसिहि–यथा अन्यो जीवः अन्यच्छरीरम् नो तज्जीवः स शरीरम्, इति ६। ॥सू० १४२॥

मूलम्––तए णं से पएसी केसिकुमारसमणं एवं वयासी-अत्थि णं भंते! जाव नो उवागच्छइ, एवं खलु भंते! जाव विहरामि, तएणं मम णगरगुत्तिया जाव चोरं उवणेंति, तएणं अहं तं पुरिसं जीवंतगं चेव तुलेमि, तुलेत्ता छविच्छेयं अकुव्वमाणे जीवियाओ ववरोवेमि मयं तुलेमि णो चेव णं तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स वा मुयस्स वा तुलियस्स केइ आणत्ते वा नाणत्ते वा उम्मत्तत्ते वा

है कि समर्थ पुरुष उपकरणों की बलवत्ता में लोहे आदिरूप भार को उठा सकता है. तथा वही समर्थ पुरुष उपकरणों को असमीचीनता में लोहे आदिरूप भार को नहीं उठा सकता है, तथा वही पुरुष वृद्धावस्थापन्न होने पर भी अयोभार को नहीं उठा सकता है. अतः इससे यही प्रतीत होता है कि जीव की समानता होने पर भी उपकरणों की असमानता में भारवहन नहीं होता हैं– इससे यहि मानना चाहिये कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है। ६ ॥ सू १४२ ॥

સશકત હોય તો લોખંડ વગેરેના ભારને વહન કરી શકે છે: તથા તેજ સમર્થ પુરૂષ જો ઉપકરણો અશકત-અસમીચીન–હોય તો લોખંડ વગેરે રૂપ ભારને વહન કરિ શકે તેમ નથી. તેમજ તેજ પુરૂષ વૃદ્ધાવસ્થાપન્ન હોવાથી લોખંડના ભારને વહન કરી શકે તેમ નથી. એથી આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે કે જીવની સમાનતા હોવા છતાં એ ઉપકરણો (સાધનો)ની અસમાનતાને લીધે ભારનું વહન કરી શકાય તેમ નથી એથી આ વાત માની લેવી જોઈએ કે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે.।૬।૧૪૨।

तुच्छत्ते वा गुरुयत्ते वा लहुयत्ते वा, जइ णं भंते! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स होज्जा केइ नाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेव, जम्हा णं भंते! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ नन्नत्ते वा जाव लहुयत्ते वा तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा तं जीवो तं चेव ॥सू० १४३ ॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्—अस्ति खलु भदन्त! यावत् नो उपागच्छति, एवं खलु भदन्त! यावद् विहरामि, ततः खलु मम नगरगुप्तिकाः यावत् चोरमुपनयन्ति, ततः खलु अहं तं पुरुषं जीवितकमेव तोलयामि तोलयित्वा छविच्छेदम् अकुर्वाणः जीविताद् व्यपरोप-

'तए णं से पएसी इत्यादि।

सूत्रार्थ--(तए णं से पएसी केसिकुमारसमणं एवं वयासी) इसके बाद उस प्रदेशीने केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा-(अत्थि णं भंते! जाव नो उवागच्छइ) हे भदन्त! यह उपमा बुद्धि जन्य है अतः वास्तविक नहीं है. मुझे इस वक्ष्यमाण कारण से जीव और शरीर का भेद प्रतीत नही होता है (एवं खलु भंते! जाव विहरामि) वह कारण इस प्रकार से है-एक दिन की बात है कि मैं गणनायक आदिकों के साथ बाह्य उपस्थानशाला में बैठा हुआ था. (तएणं मम णगरगुत्तिया जाव चोरं उवणेंति) इतने में मेरे नगररक्षक साक्षियुक्त आदि विशेषण संपन्न किसी एक चोर को पकड कर ले आए (तए णं अहं तं पुरिसं जीवितगं चेव तुलेमि)

'तएणं से पएसी' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं से पएसी केसिकुमारसमणं एवं वयासी) ત્યાર પછી તે પ્રદેશી રાજાએ કેશી કુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું (अत्थि णं भंते! जाव नो उवागच्छइ) હે ભદંત! આ ઉપમા બુદ્ધિ જન્ય છે એથી વાસ્તવિક નથી. વક્ષ્યમાણ કારણથી જીવ અને શરીરની ભિન્નતા મારા મનમાં આવતી નથી (एवं खलु भंते! जाव विहरामि) તે કારણ આ પ્રમાણે છે—એક દિવસની વાત છે કે હું ગણનાયક વગેરેની સાથે બાહ્ય ઉપસ્થાનશાળામાં (સભામાં) બેઠો હતો (तएणं मम णगर-गुत्तिया जाव चोरं उवणेंति) તે વખતે મારા નગરરક્ષકો સાક્ષિયુક્ત વગેરે વિશેષણોથી સંપન્ન કોઈ એક ચોરને પકડીને લાવ્યા (तए णं अहं तं पुरिसं

यामि मृतं तोलयामि नो चैव खलु तस्य पुरुषस्य जीवतो वा तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य किञ्चित् नानात्वं वा उन्मात्रत्वं वा तुच्छत्वं वा गुरुकत्वं वा लघुक त्वं वा, यदि खलु भदन्त ! तस्य पुरुषस्य जीवतो वा तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य भवेत किञ्चित् नानात्वं वा यावत् लघुत्वं वा तदा खलु अहं श्रद्दध्यां तदेव, यस्मात् खलु भदन्त ! तस्य पुरुषस्य जीवतो वा

उसे मैंने जीवित ही तोला (तुलेत्ता छविच्छेयं अकुव्वमाणे जीवियाओ ववरोवेमि, मयं तुलेमि) तोल कर फिर मैंने उसे अंग भंग किये विना जीवन से रहित कर दिया और फिर मरे हुए उसे तोला (णो चेव णं तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स केइ नाणत्ते वा उम्मत्तत्ते वा तुच्छत्ते वा गुरुयत्ते वा लघुयत्ते वा) तब जीवित तुले हुए उसमें और मरे तुले हुए उसमें मुझे किसी भी तरह की न्यूनाधिकता नहीं दिखाई दी. न उस में भार बढा न वह उसका भार कम हुआ न उसमें गुरुता आई न उसमें लघुता आई. (जइ णं भंते। तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स वा होज्जा केई नाणत्ते वा जाव लघुयत्ते वा) हे भदन्त! जीवित तुले हुए और मरे तुले हुए उस पुरुष में यदि कोई न्यूनाधिकता हो जाती यावत् लघुता हो जाती (तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेव) तो मैं श्रद्धा कर लेता कि जीव अन्य है, और शरीर अन्य है वह जीव शरीर नहीं है. वह शरीर जीव नहीं है.

जीवितगं चेव तुलेमि) मैं જીવિતાવસ્થામાં જ તેનું વજન કર્યું. (तुलेत्ता छविच्छेयं अकुव्वमाणे जीवियाओ ववरोवेमि, मयं तुलेमि) તોલીને પછી મેં તેને અંગ ભંગ કર્યા વગર જ જીવન રહિત બનાવી દીધો અને મર્યા પછી ફરી તેનું મેં વજન કરાવ્યું. (णो चेव णं तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स केइ नाणत्ते वा उम्मत्तत्ते वा तुच्छत्ते वा गुरुयत्ते वा लधुयत्ते वा) ત્યારે જીવતા વજન કરાયેલા તેમાં અને મૃત્યુ પામ્યા પછી વજન કરાયેલા તેમાં મને કોઈ પણ જાતની ન્યૂનાધિકતા લાગી નહીં, તેમાં ભાર વધારે પણ થયો નહી, અને તેમાથી ભાર ઓછો પણ થયો નહી તેમાં ગુરુતા આવી નથી તેમ તેમા લઘુતા પણ આવી નથી. (जइ णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स वा होज्जा केई नाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा) હે ભદંત ! જીવીતાવસ્થામાં કરેલા વજનમાં અને મૃતાવસ્થાવામા કરેલા તે ચોરના વજનમા જો કોઈ પણ જાતની ન્યૂનાધિકતા થઈ જાત યાવત્ લઘુતા થઈ જાત. (तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेवं)

तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य नास्ति किञ्चित् नानात्वं वा यावत् लघुकत्वं वा। तस्मात् सुप्रतिष्ठिता मे प्रतिज्ञा यथा-तज्जीवः तदेव॥सू० १४३॥

टीका-'तए णं से पएसी' इत्यादि ततः तदनन्तरं खलु स प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणम्, एवमवादीत हे भदन्त! अस्ति खलु यावत यावत्पदेन 'एषा प्रज्ञा तउपमा अनेन पुनः वक्ष्यमाणेन कारणेन' इत्येषां पदाना सङ्ग्रहः एतद्विवरणं पूर्वंतर (१४०) चत्वारिंशदधिकैशशततमसूत्रे कृतम्, नो उपागच्छति-जीवशरीरयोः परस्परं भेदो मे-मम मनसि न संगच्छते। तदे

जम्हा णं भंते! तस्स पुरिसस्स जीवंतरस वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ नन्नत्थे वा जाव लहुयत्ते वा, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा-तं जीवो तं चेव) जिस कारण हे भदन्त! जींते हुए तोले गये उस पुरुष में और मरे हुए तोले गये उसी पुरुष में जब कोई भिन्नता—न्यूनाधिकता यावत् लघुता मैं नहीं देखता हूं-उस कारण से मेरा यह मन्तव्य कि वही पूर्वोक्त जीव है और वही शरीर है, न अन्य जीव है, और न अन्य शरीर है सुस्थिर है।

टीकार्थ—केशीकुमार श्रमण का जीव शरीर भिन्नता-विषयक कथन सुनकर प्रदेशी राजाने उनसे इस प्रकार कहा-हे भदन्त! आपने जो यह उपमा जीव शरीर की भिन्नता प्रकट करने के लिये प्रकट की है वह केवल उपमामात्र है-बुद्धिजन्य होने से वास्तविक नहीं है. अतः जो बात

તો હું આ વાત પર શ્રદ્ધા કરી શકત કે જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે તે જીવ શરીર નથી અને શરીર જીવ નથી. (जम्हा णं भंते! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ नन्नत्थे वा जाव लहुयत्ते वा, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा, तं जीवो तं चेव) જેથી હે ભદંત! જીવીતાવસ્થામાં વજન કરાયેલ તે પુરૂષમા અને મૃતાવસ્થામા વજન કરાયેલ તેજ પુરૂષમા જ્યારે કોઈ પણ જાતની ભિન્નતા-ન્યૂનતાધિકતા યાવત્ લઘુતા મારા ધ્યાનમાં આવતી નથી તેથી મારી એવી માન્યતા છે કે જે જીવ છે તેજ શરીર છે. જીવ અન્ય નથી તેમજ શરીર પણ અન્ય નથી.

ટીકાર્થ—કેશી કુમારશ્રમણનું જીવ શરીર ભિન્નતા સંબંધી કથન સાંભળીને પ્રદેશી રાજાએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદંત! તમે જીવ અને શરીરની ભિન્નતા સ્પષ્ટ કરવા માટે જે ઉપમા આપી છે તે માત્ર ઉપમા જ છે. તે બુદ્ધિ-

वाऽऽह-एवं खलु हे भदन्त! यावत्-यावत्पदेन 'बाह्यायामुपस्थानशालायामनेकगणनायक-दण्डनायक-राजेश्वर-तलवर-माडम्बिक-कौटुम्बिकेभ्य श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाह-मन्त्रि-महामन्त्रि गणक-दौवारिकामात्य-चेट पीठमर्द नगरनिगमदूतसन्धिपालैः सार्द्धं संपरिवृतः" इत्येषां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः, एषां व्याख्या षट्त्रिंशदधिकशततमसूत्रे गता। विहरामि-तिष्ठामि,

मैं कह रहा हूं उससे इन दोनों की अभिन्नता ही प्रकट होती है, यह बात इस प्रकार से है-मैं एक दिन गणनायक आदिकों के साथ अपनी बाह्य उपस्थान शाला में बैठा हुआ था. नगर रक्षक एक चोर को पकड़कर मेरे समक्ष लाये-मैंने उसे पहिले तो जीवितावस्था में तोला, बाद में उसे मार कर तोला. तोलने पर उसके भार में कुछ भी न्यूनाधिकता नहीं आई. अतः इससे मैं इसी निष्कर्ष पर पहुँचा हूं कि उस चोर का वही जीव है और वही शरीर है. न जीव अन्य है और न शरीर अन्य है। यहां 'जाव नो उवागच्छइ' में जो यावत्पद आया है उससे 'एषा प्रज्ञात उपमा, अनेन पुनः वक्ष्यमाणकारणेन' इस पाठका संग्रह हुआ है। इनका विवरण १३८वें सूत्र में किया जा चुका है। 'जाव विहरामि' में आये हुए यावत्पद से "बाह्यायामुपस्थानशालाया अनेक गणनायक-दण्डनायक, राजेश्वर, तलवर, माडम्बिकेभ्य-श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाह-मंत्रि-महामंत्रि गणक-दौवारिकामात्य-चेट-पीठमर्द नगर निगम-दूतसंधिपालैः सार्धं संपरिवृतः' इस पाठ का

જન્ય હોવાથી અવાસ્તવિક જ છે. એથી જે વાત હું કહું છું તેથી એઓ બન્નેની અભિન્નતા જ પ્રકટ થાય છે. એ વાત આ પ્રમાણે છે. હું એક દિવસ ગણનાયક વગેરેની સાથે મારી બાહ્ય ઉપસ્થાનશાળામાં બેઠો હતો ત્યાં નગરરક્ષકો એક ચોરને પકડીને મારી સામે લાવ્યા. મેં પહેલા તેનું જીવતાં જ વજન કર્યું. ત્યાર પછી તેને મારીને પછી તેનું વજન કર્યું. તો તેના વજનમાં કોઈ પણ જાતની ન્યૂનાધિકતા જણાઈ નહિ એથી હું આ નિષ્કર્ષ પર આવ્યો છું કે તે ચોરનો જીવ છે શરીર છે. અને શરીર છે તેજ જીવ છે જીવ અન્ય નથી અને શરીર અન્ય નથી અહીં 'जाव नो उवागच्छइ' મા જે યાવત્ પદ આવેલ છે તેથી (एषा प्रज्ञातउपमा, अनेन पुनः वक्ष्यमाणकारणेन" આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે. આનું સ્પષ્ટીકરણ ૧૩૮ મા સૂત્ર કરવામા આવ્યું છે (बाह्यायामुपस्थानशालाया अनेकगण नायक-दण्डनायक, राजेश्वर, तलवर माडंबिक, कौटुम्बिकेभ्य, श्रेष्ठि-सेनापति-सार्थवाह-मंत्रि-महामंत्रि गणक-दौवारिकामात्य-चेट पीठ मर्द

ततः-तदा खलु मम नगरगुप्तिकाः-नगररक्षकाः ससाक्ष्यं-साक्षियुक्तं यथा तथा यावत्-सहोढादिविशेषणविशिष्टं चौरमुपनयन्ति-मत्समीपे समानयन्ति, ततः खलु अहं तं चौरं पुरुषं जीवितकमेव तोलयामि, तोलयित्वा छविच्छेदम्-अङ्गादिभङ्गम् अकुर्वाणः अकुर्वन्नेव जीविताद् व्यपरोपयामि-मारयामि, मारयित्वा पुनस्तं मृतं तोलयामि, नैव च खलु तस्य मारित चोरपुरुषस्य जीवतःसतः तोलितस्य वा-अथवा मृतस्य च तोलितस्य किञ्चित्-किमपि नानात्वं-न्यूनाधिकत्वं पश्यामि, नानात्वस्य रूपं दर्शयति-उन्मात्वत्वं-भाराधिक्यं, वा-अथवा, तुच्छत्वं-भाराल्पत्वं वा गुरुकत्वं-गुरुता वा, लघुकत्वं-लघुता वा, यदि खलु हे भदंत! तस्य पुरुषस्य जीवतो वा तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य किञ्चित् नानात्वं यावत् लघुकत्वं वा भवेत, तदा खलु अहं श्रद्दध्यां तदेव-अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम्, नो तज्जीवः स शरीरम् इति। हे भदन्त!-यस्मात् कारणात् खलु तस्य पुरुषस्य जीवतो वा तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य नास्ति किञ्चिद् नानात्वं लघुकत्वं वा, तस्मात् मे सुप्रतिष्ठिता-सुस्थिरा प्रतिज्ञा यथा तज्जीवः, तदेव-पूर्वोक्तमेव-तज्जीवः स शरीरम्, नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम्, इति ॥सू० १४३॥

मूलम्--तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-अत्थि णं पएसी! तुमे कयाइ वत्थी धंतपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा? हंता अत्थि। अत्थि णं पएसी! तस्स वत्थिस्स पुण्णस्स वा तुलियस्स-अपुण्णस्स वा तुलियस्स केइ नाणत्ते वा जाव-लहुयत्ते वा णो इणट्ठे समट्ठे एवामेव पएसी! जीयस्स अगुरुलहुयत्तं पडुच्च जीवं तस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ नाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! तं चेव ७ ॥ सू० १४४॥

संग्रह हुआ है इन पदों की व्याख्या १३५वे सूत्र में की जा चुकी है। 'जाव चोरं उवणेंति' में ससाक्षी सहोढादि विशेषणोंका यावत् पद से ग्रहण हुआ है ॥सू. १४३॥

-नगर-निगम दूतसंधिपालैः सार्धं संपरिवृत्तः" આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે. આ પદોની વ્યાખ્યા ૧૩૫ મા સુત્રમા કરવામા આવી છે 'जाव चोरं उवणेंति' મા સસાક્ષી-સહોઢાદિ વિશેષણોનું યાવત પદથી ગ્રહણ થયું છે. ॥સૂ૦ ૧૪૩॥

छाया—ततःखलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत् अस्ति खलु प्रदेशिन्! तव कदाचिद् बस्तिः ध्मातपूर्वो ध्मापितपूर्वो वा? हन्त अस्ति। अस्ति खलु प्रदेशिन्! तस्य वस्तेः पूर्णस्य वा तोलितस्य अपूर्णस्य वा तोलितस्य किञ्चित् नानात्वं वा यावत् लघुकत्वं वा?। नायमर्थः समर्थः। एवमेव प्रदेशिन जीवस्यागुरुलधुकत्वं प्रतीत्य जीवतो

'तए णं से केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ-- तए णं से केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) इसके बाद उन केशीकुमारश्रमणने प्रदेशी राजा से इस प्रकार कहा--(अत्थि णं पएसी! तुमे कयाइ वत्थी धंतपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा?) हे प्रदेशिन्! तुमने कभी भस्त्रिका को वायु से पूरित की है, या किसी से करवाई है? (हंता अत्थि) तब प्रदेशीने कहा-हां, भदन्त! की है और कराई है। (अत्थि णं पएसी! तस्स वत्थिस्स पुण्णस्स वा तुलियस्स अपुण्णस्स वा तुलियस्स केइ नाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा) पुनः केशीकुमारश्रमणने उससे कहा-हे प्रदेशिन्! जब तुमने उस भस्त्रिका को वायु से पूरित करके तोला तब, और वायु से अपूरितावस्था में तोला तब उसमें तुम्हे कुछ न्यूनाधिकता यावत लघुता दृष्टिगत हुई? प्रदेशीने कहा-(णो इणट्ठे समट्ठे) हे भदन्त! यह अर्थ समर्थ नहीं है-अर्थात् उसमें न्यूनाधिकता यावत लधुता कुछ भी दृष्टिगत नहीं हुई है (एवामेव पएसी जीवस्स अगुरुलहु-

---

'त एणं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(त एणं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) ત્યાર પછી તે કેશીકુમારશ્રમણે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું-(अत्थि णं पएसी! तुमे कयाइ वत्थी धंतपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा!) હે પ્રદેશિન્! તમે કોઈ પણ દિવસે ભસ્ત્રિકા (ધમણ) માં હવા ભરી છે. કે કોઈની પાસેથી ભરાવડાવી છે? (हंता अत्थि) ત્યારે પ્રદેશી રાજાએ કહ્યું, હાં ભદંત! હવા ભરી છે અને ભરાવડાવી છે (अत्थि णं पएसी! तस्स वत्थिस्स पुण्णस्स वा तुलियस्स अपुण्णस्स वा तुलियस्स केइ नाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा) ફરી કેશીકુમારશ્રમણે તેને કહ્યું-હે પ્રદેશિન્! જ્યારે તમે તે ધમણનું હવા ભરીને વજન કર્યું અને પછી હવા બહાર કાઢીને તેનું વજન કર્યું ત્યારે તમને તેમાં કંઈક ન્યૂનાધિકતા યાવત્ લઘુતા જણાઈ? પ્રદેશીએ કહ્યું (णो इणट्ठे समट्ठे) હે ભદંત! આ અર્થ સમર્થ નથી-એટલે કે ન્યૂનાધિકતા યાવત્ લઘુતા કંઈ પણ જણાઈ નહિ (एवामेव पएसी

वा तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य नास्ति किञ्चित् नानात्वं वा यावत् लघुकत्वं वा, तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन् ! तदेव ७ ।सू० १४४॥

टीका—"तए णं केसी कुमारसमणे" इत्यादि—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम् एवमवादीत्—हे प्रदेशिन् ! तव कदाचित्—कस्मिंश्चित्काले वस्तिः—दृतिः—चर्मपुटरूपा भस्त्रिका ध्मातपूर्वः—पूर्वं ध्मातः—वायुभिः पूरितः, वा-अथवा ध्मापितपूर्वः पूर्वं केनापि ध्मापितः-वायुभिः पूर्णः कारितः इति केशिप्रश्नः, तत्र प्रदेशी प्राह—हन्त ! अस्ति। पुनः केशी पृच्छति हे प्रदेशिन् ! तस्य वस्तेः पूर्णस्य वायुभृतस्य तोलितस्य, वा—अथवा अपूर्णस्य—वायुभिरपूरितस्य वा तोलितस्य मतः किञ्चित् किमपि नानात्वं यावत् लघुकत्वं वा अस्ति ? इति केशिप्रश्नः प्रदेशी प्राह—नायमर्थः समर्थः—नानात्वसद्भावरूपोऽर्थो न विद्यते। केशी कथयति—एवमेव हे प्रदेशिन् ! जीवस्य अगुरुलघुकत्वं—गुरुत्वलघुत्वरहिततत्वं प्रतीत्य—आश्रित्य, जीवतो वा तोलितस्य मृतस्य वा तोलितस्य नास्ति किञ्चित् नानात्वं वा यावत् लघुकत्वं वा, तत् तस्मात् कारणात् हे प्रदेशिन् ! त्वं श्रद्धेहि मद्वचने श्रद्धां कुरु, तदेव—यथा—नो तज्जीवः स शरीरम्, अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरमिति, ।सू. १४४।

यत्तं पडुच्च जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ नाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी तं चेव ७) तो इसी प्रकार से हे प्रदेशिन् ! जीव के अगुरुलघुत्व रहितपने को प्रतीत करके जीवित अवस्था में तोले गये बाद में मृत अवस्था में तोले गये उस चोर के शरीर में कुछ भी नानात्व अथवा लघुत्व नहीं है। इस कारण हे प्रदेशिन् ! तुम मेरे वचन में श्रद्धा करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है।

टीकार्थ इसका स्पष्ट है ॥ सू० १४४ ॥

जीवस्स अगुरुलहुयत्तं पडुच्च जीवंतस्स वा तुलियस्स मयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ नाणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी तं चेव ७) तो आ प्रमाणे हे प्रदेशिन् ! જીવનો અગુરૂલઘુત્વ ગુણેન—ગુરૂત્વલઘુત્વ રહિતાવસ્થાને સામે રાખીને જીવિતાવસ્થામાં કરાયેલા તે ચોરના વજનમાં અને મૃતાવસ્થામાં કરાયેલા તે ચોરના વજનમાં કોઈ પણ જાતનું નાનાત્વ કે લઘુત્વ નથી. એથી હે પ્રદેશિન્ ! તમે મારી આ વાત પર વિશ્વાસ કરી લો કે જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે. આ સૂત્રનો ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે. ॥૧૪૪॥

मूलम्—तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी—अत्थि णं भंते! एसा जाव नो उवागच्छइ, एवं खलु भंते! अहं अन्नया जाव चोरं उवणेति, तएणं अहं तं पुरिसं सव्वओ समंता समभिलोएमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि, तएणं अहं तं पुरिसं दुहा फालियं करेमि करित्ता सव्वओ समंता समभिलोएमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि, एवं तिहा चउहा संखेज्जहा फालियं करेमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि, जइ णं भंते! अहं तंसि पुरिसंसि दुहावा तिहा वा चउहा वा संखेज्जहा वा फालियंसि जीवं पासेज्जा, तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेव, जम्हा णं भंते! अहं तंसि दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखिज्जहा वा फालियंसि जीवं न पासामि तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा, जहा-तं जीवो तं सरीरं तं चेव ।सू.१४५।

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत्—'अस्ति खलु भदन्त! एषा यावद् नो उपागच्छति, एवं खलु भदन्त!

'तए णं पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) इसके बाद प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा—(अत्थि णं भंते! एसा जाव नो उवागच्छइ) हे भदन्त! यह उपमा बुद्धिजन्य होने से वास्तविक नहीं है इस वक्ष्यमाण कारण से मुझे जीव और शरीर का भेद प्रतीत नहीं होता है. वह वक्ष्यमाण कारण (एवं भंते!) हे भदन्त! इस प्रकार से है

'तएणं पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) त्यार पछी प्रदेशी राजाए केशीकुमार श्रमणने आ प्रमाणे कह्युं. (अत्थि णं भंते! एसा जाव नो उवागच्छइ) हे भदंत! आ उपमा बुद्धि प्रेरित होवाथी वास्तविक नथी. आ निम्न कारणथी मारा मनमां जीव अने शरीरनी भिन्नतानी वात जामती नथी. (एवं भंते) हे भदंत! ते आ प्रमाणे छे. (अहं अन्नया जाव

अहमन्यदा यावत् चोरमुपनयन्ति, ततः खलु अहं तं पुरुषं सर्वतः समन्तात् समभिलोके नैव खलु तत्र जीवं पश्यामि, ततः खलु अहं तं पुरुषं द्विधा स्फाटितं करोमि, कृत्वा सर्वतः समन्तात् समभिलोके, न चैव खलु तत्र जीवं पश्यामि, एवं त्रिधा चतुर्धा संख्येयधा स्फाटितं करोमि न चैव तत्र जीवं पश्यामि, यदि खलु भदन्त ! अहं तस्मिन् पुरुषे द्विधा वा त्रिधा वा चतुर्धा वा

(अहं अन्नया जाव चोरं उवणेंति) मैं एक दिन १३५वें सूत्र में कथित अनेक गणनायक आदिकों के साथ उपस्थानशाला में बैठा हुआ था वहां पर मेरे नगर रक्षक मुसकिया बन्धन से बांधकर एक चोर को लाया (तए णं अहं तं पुरिसं सव्वओ समंता समभिलोएमि) मैं ने उस पुरुष को मस्तक से लेकर चरणपर्यन्त अच्छी तरह से देखा (नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि) परन्तु मुझे वहां पर जीव दखने में नहीं आया (तए णं अहं तं पुरिसं दुहा फालियं करेमि) इसके बाद मैंने उस चोर के दो टुकडे कर दिये. (करित्ता सव्वओ समंता समभिलोएमि) दो टुकडे करने के बाद फिर मैंने उसका अच्छी तरह से सब ओर से निरीक्षण किया (नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि) परन्तु फिर भी वहां पर मुझे जीव देखने में नहीं आया (एवं तिहा, चउहा, संखेज्जहा फालियं करेमि–नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि) तदनन्तर मैंने उसके तीन टुकडे किये, चार टुकडे किये, यावत् संख्यात (सैंकडे) टुकडे किये परन्तु फिरभी वहां मुझे जीव नहीं दिखा (जइ णं भंते ! अहं तंसि पुरिसंसि दुहा वा तिहा वा चउहा

चोरं उवणेंति) હું એક દિવસે ૧૩૫ મા સુત્રમાં કથિત ઘણા ગણુ નાયકોવગેરે-ની સાથે બાહ્ય ઉપસ્થાન શાળામાં બેઠો હતો. ત્યાં મારા નગરરક્ષકો એક ચોરને મુસ્કેટાટ બાંધીને મારી સામે લાવ્યા. (तए णं अहं तं पुरिसं सव्वओ समंता समभिलोएमि) મેં તે પુરૂષને મસ્તકથી માંડીને પગ સુધી સારી રીતે જોયો. (नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि) પણ મને તેમાં જીવ દેખાયો નહીં. (तए णं अहं तं पुरिसं दुहा फालियं करेमि) ત્યાર પછી મેં તે ચોર પુરૂષના બે કકડા કરી નાખ્યા. (करित्ता सव्वओ समंता समभिलोएमि) બે કકડાઓ કરીને પછી મેં તેનું સારી રીતે નિરીક્ષણ કર્યું. (नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि) પણ મને ત્યાં જીવ દેખાયો નહીં. (एवं तिहा, चउहा, संखेज्जहा फालियं करेमि–नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि) ત્યાર પછી મેં તેના ત્રણ કકડા કર્યા, ચાર કકડા કર્યા યાવત્ સંખ્યાત (સેંકડો) કકડા કર્યા પણ છતાં એ ત્યાં મને જીવ દેખાયો નહીં.

संख्येयधा वा स्फाटिते जीवं पश्येयं, तदा खलु अहं श्रद्दध्यां तदेव, यस्मात् खलु भदन्त! अहं तस्मिन् द्विधा वा त्रिधा वा चतुर्धा वा संख्येयधा वा स्फाटिते जीवं न पश्यामि, तस्मात् सुप्रतिष्ठिता मे प्रतिज्ञा यथा-तज्जीवः स शरीरं तदेव। ॥सू० १४५॥

टीका--'तए णं पएसी राया' इत्यादि-ततः खलु प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम्, एवमवादीत्-हे भदन्त! अस्ति खलु एषा इयम् यावत्-यावत्पदेन-'प्रज्ञात उपमा, अनेन पुनः कारणेन' इत्येषां पदानां संग्रहः, प्रज्ञप्तः-बुद्धिविशेषाद् उपमाऽस्ति, किन्तु अनेन वक्ष्यमाणेन कारणेन भवदुक्तो जीवशरीरभेदो नो उपागच्छति,-न संगच्छते। तत्कारणं दर्शयितुमुपक्रमते-एवं खलु हे भदन्त! एवं-वक्ष्यमाणरीत्या अहम् अन्यदा-अन्यस्मिन् काले यावत्-यावत्पदेन-बाह्यायामुपस्थानशालायां षट्त्रिंशदधिकैकशततमसूत्रोक्तानेकगणनायकादिपदादारभ्य 'अवकोटकबन्धनबद्धं' इति पर्यन्तपाठोक्तविशेषणविशिष्टं चोरमुपनयन्ति, ततः खलु अहं तं पुरुषं सर्वतः-आपादमस्तकं, समन्तात् साङ्गोपाङ्गं समभिलोके सम्यग् आभिमुख्येन पश्यामि किन्तु तत्र-तस्मिन्-चोरे जीवं नैव पश्यामि. ततः खलु अहं तं-चोरं द्विधा-द्विखण्डं स्फाटितं-विदारितं करोमि कृत्वा सर्वतः समन्तात् समभिलोके,

---

वा संखेज्जहा वा फालियंसि जीवं पासेज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेव) अतः यदि भदन्त! मुझे उस पुरुष के दो, तीन चार, अथवा संख्यात टुकडे करने पर उसका जीव दिखता तो मैं आपके इस कथन पर विश्वास कर लेता कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है. जीव शरीररूप नहीं है, शरीर जीवरूप नही है (जम्हा णं भंते! अहं तेसिं दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखिज्जा वा फालियंसि जीवं न पासामि-तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा-जहा तं जीवो तं सरीरं तं चेव) जिस कारण से हे भदन्त! मैंने

(जइणं भंते! अहं तंसि पुरिसंसि दुहा वा तिहा वा चउहा वा सखेज्जहा वा फालियंसि जीवं पासेज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेव) એથી જો ભદંત! મને તે પુરૂષના બે ત્રણ ચાર અથવા સંખ્યાત કકડાઓ કરવાથી તેનો જીવ જોવામાં આવ્યો હોત તો હું તમારા આ કથન પર વિશ્વાસ કરી લેત કે જીવ અન્ય છે. અને શરીર અન્ય છે. જીવ શરીરરૂપ નથી અને શરીર જીવરૂપ નથી. (जम्हा णं भंते! अहं तोसिं दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखिज्जहा वा, फालियंसि जीवं न पासामि-तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा तं जीवो तं सरीरं तं चेव) જે કારણથી હે ભદંત! મેં

किन्तु तत्र जात्र नैव खलु पश्यामि—अनेन प्रकारेण त्रिधा—त्रिखण्ड स्फाटितं, चतुर्धा—चतुःखण्डं स्फाटितं संख्येयधा—संख्यातखण्ड स्फाटितं करोमि, किन्तु तत्र तस्मिन् द्वित्रिचतुःसंख्येयधा स्फाटिते चोरे जीवं नैव पश्यामि, हे भदन्त! यदि खलु अहं तस्मिन्—चोरपुरुषे द्विधा वा त्रिधा वा चतुर्धा वा संख्येयधा वा स्फाटिते जीवं पश्येयं तदा—जीवदर्शने खलु अहं श्रद्दध्यां भवतोक्ते विश्वस्याम् तदेव—नो तज्जीवः स शरीरम् अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम्, इति, यस्मात् खलु हे भदन्त! अहं तस्मिन् चोरे द्विधा वा त्रिधा वा चतुर्धा वा संख्येयधा वा स्फाटिते जीवं न पश्यामि, तस्मात्—जीवादर्शनकारणात् मे—मम प्रतिज्ञा—स्वीकारः, सुप्रतिष्ठिता—सुस्थिरा यथा——तज्जीवः स शरीरं तदेव—नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरमिति। ॥ सू० १४५ ॥

मूलम्—तए णं केसिकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-मूढतराए णं तुमं पएसी ताओ कट्ठहाराओ,! के णं भंते कट्ठहारए? पएसी! से जहाणामए केइपुरिसो वणत्थी वणोवजीवी वणगवेसणयाए जोइं च जोइभायणं च गहाय कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा, तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए अडवीए—किंचिदेसं अणुपत्ता समाणा एगं पुरिसं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं पविसामो, एत्तो णं तुमं जोइभायणाओ जोइं गहाय अम्ह असणं साहेज्जासि, अह तं जोइभायणे जोई विज्झवेज्जा एत्तो णं तुमं कट्ठाओ जोइ गहाय

उसके दो तीन चार अथवा संख्यात टुकडे कर देने पर भी जीव नहीं देखा उस कारण से मेरा मन्तव्य कि जीव शरीररूप है और शरीर जीवरूप है. जीव भिन्न नहीं है, शरीर भिन्न नहीं है सुस्थिर है. ।

टीकार्थ स्पष्ट है ॥ सू० १४५ ॥

તેના બે ત્રણ ચાર અથવા સંખ્યાત કકડાઓ કર્યા પછી પણ જીવ જોયો નહિ તે તે કારણથી મારી જીવ શરીરરૂપ છે અને શરીર જીવરૂપ છે, જીવ ભિન્ન નથી અને શરીર ભિન્ન નથી એવી માન્યતા સુસ્થિર છે.

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે. ॥સૂ૦ ૧૪૫॥

अम्हं असणं साहेज्जासित्ति कट्टु कट्ठाण अडविं अणुपविट्ठा। तए णं से पुरिसे तओ मुहुत्तंतराओ तेसिं पुरिसाणं असणं साहेमित्ति कट्टु जेणेव जोइभायणे तेणेव उवागच्छइ जोइभायणे जोइं विज्झायमेव पासइ, तएणं से पुरिसे जेणेव से कट्ठे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तं कट्ठं सव्वओ समंता समभिलोएइ नो चेव णं तत्थ जोइं पासइ, तए णं से पुरिसे परियरं बंधइ फरसुं गिण्हइ तं कट्टु दुहा फालियं करेइ सव्वओ समंता समभिलोएइ नो चेव णं तत्थ जोइं पासइ एवं जाव संखेज्जहा फालियं करेइ सव्वओ समंता समभिलोएइ नो चेव णं तत्थ जोइं पासइ, तए णं से पुरिसे तंसि दुहा फालिए वा जाव संखेज्जहा फालिए वा जोइं अपासमाणे भंते तंते परितंते निव्विण्णे समाणे फरसुं एगंते एडेइ, परियरं मुयइ एवं वयासी—अहो! मए तेसिं पुरिसाणं असणे नो साहिएत्ति कट्टु ओहयमण-संकप्पे चिंता सोगसागरसंपविट्ठे करयलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठिए झियायइ तए णं ते पुरिसा कट्ठाइं छिंदंति जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति, तं पुरिसं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासंति एवं वयासी-किं णं तुमं देवाणुप्पिया! ओहयमणसंकप्पे जाव झियायसि? तए णं से पुरिसे एवं वयासी—तुज्झे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं अणुपविसमाणा मम एवं वयासी—अम्हे णं देवाणु-प्पिया! कट्ठाणं अडविं जाव अणुपविट्ठा, तए णं अहं तत्तो मुहुत्तंत-राओ तुज्झं असणं साहेमित्ति जेणेव जोइभायणे जाव झियामि, तए णं

तेसिं पुरिसाणं एगे पुरिसे छेए दक्खे पत्तट्ठे जाव उवएसलद्धे ते पुरिसे एवं वयासी—गच्छह णं तुज्झे देवाणुप्पिया! ण्हाया कयबलिकम्मा जाव हव्वमागच्छेह जा णं अहं असणं साहेमित्ति कट्टु परिअरं बंधइ फरसुं गिण्हइ सरं करेइ सरेण अरणिं महइ जोइं पाडेइ जोइं संधुक्खेइ तेसिं पुरिसाणं असणं साहेइ, तए णं ते पुरिसा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति, तए णं से पुरिसे तेसिं पुरिसाणं सुहासणवरगयाणं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवणेइ। तए णं ते पुरिसा तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा वीसाएमाणा जाव विहरंति। जिमियभुत्तुत्तरागयावि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं पुरिसं एवं वयासी—अहो! णं तुमं देवाणुप्पिया जड्डे मूढे अपंडिए णिव्विण्णाणे अणुवएसलद्धे जे णं तुमं इच्छसि कट्ठंसि दुहा फालियंसि वा जाव जोइं पासित्तए, से एएणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ मूढतराए णं तुमं पएसी! ताओ कट्ठहाराओ ८। सू० १४६।

छाया—ततः खलु केशिकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्—मूढतरकः खलु त्वं प्रदेशिन्! ततः काष्ठहारात्, कः खलु भदन्त! काष्ठ

'तए णं केसिकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं केसिकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) इसके बाद केशीकुमारश्रमणने प्रदेशी राजा से इस प्रकार कहा (मूढतराए णं तुमं पएसी! ताओ कट्ठहाराओ) हे प्रदेशिन्! तुम उस काष्ठहर से भी

'तएणं केसिकुमारसमणे' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(तए णं केसिकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी) ત્યાર બાદ કેશીકુમારશ્રમણે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું (मूढतराए णं तुमं पएसी! ताओ कट्ठहाराओ) હે પ્રદેશિન્! તમે અને પેલા કાષ્ઠહર કરતાં પણ વધારે

हारकः! प्रदेशिन्! ते यथानामकाः केचित् पुरुषाः वनार्थिनः वनोपजीविनः वनगवेषणया ज्योतिश्च ज्योतिर्भाजनं च गृहीत्वा काष्ठानामटवीमनुप्रविष्टाः, ततः खलु ते पुरुषाः तस्याः अग्रामिकायाः यावत् किञ्चिद्देशमनुप्राप्ताः सन्तः एकं पुरुषमेवमवादिषुः—वयं खलु देवानुप्रिय! काष्ठानामटवीं प्रविशामः, इतः खलु त्वं ज्योतिर्भाजनात् ज्योतिर्गृहीत्वाऽस्माकम-

---

मुझे अधिक मूर्ख प्रतीत होते हो (के णं भंते! कट्ठहरए) हे भदन्त! वह काष्ठहर कैसा था? इस प्रकार जब प्रदेशीने कहा—तब (पएसी) केशीकुमारश्रमणने कहा—हे प्रदेशिन्! सुनो (से जहा णामए केइ पुरिसो वणत्थी वणोवजीवी वणगवेसणयाए जोइं च जोइभायणं च गहाय कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा) कितनेक वनार्थी और वनोपजीवी काष्ठहारक पुरुष थे। वन की गवेषणा करतेर किसी एक अटवी में प्रविष्ट हो गये. साथ में उन्होंने अग्नि - रखने का आधारभूत पात्र ले रखा था. उस अटवी में इन्धन बहुत था. (तए ण ते पुरिसा तीसे अग्गमियाए अडवीए किंचि देसं अणुपत्ता समाणा) जब वे पुरुष उस ग्रामरहित अटवी में कुछ दूर तक पहुंच चुके, तब (एगं पुरिसं एवं वयासी) उन्होंने एक पुरुष से ऐसा कहा—(अम्हे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं पविसामो) हे देवानुप्रिय! हमलोग इस काष्ठप्रधान अटवी में आगे प्रविष्ट होते हैं (एत्तो णं तुमं जोइभायणाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि) तबतक तुम

મૂર્ખ લાગે છે. (के णं भंते! कट्ठहारए) હે ભદંત તે કાષ્ઠહર કેવા હતા? આ પ્રમાણે જ્યારે પ્રદેશી રાજાએ કહ્યુ—ત્યારે (पएसी!) કેશીકુમારશ્રમણે કહ્યું કે હે પ્રદેશિન્! સાંભળો (से जहानामए केइ पुरिसा वणत्थी वणोवजीवी वणगवेसणयाए जोइंच जोइभायणं च गहाय कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा). કેટલાક વનાર્થી અને વનોપજીવી કાષ્ઠાહારક પુરુષો હતા. તેઓ વનમાં શોધતા શોધતાં કોઇ એક અટવીમાં પ્રવિષ્ટ થઇ ગયા. તેમણે પોતાની સાથે અગ્નિ તેમજ અગ્નિને મૂકવામાં માટે આધારભૂત પાત્ર લઇ રાખ્યાં હતા. તે અટવીમાં લાકડાઓ પુષ્કળ પ્રમાણમાં હતા. (तए णं ते पुरिसा तीसे अग्गमियाए अडवीए किंचिदेसं अणुपत्ता समाणा) જ્યારે તે બધા તે ગ્રામરહિત નિર્જન અટવીમાં થોડી દૂર ગયા ત્યારે (एगं पुरिसं एवं वयासी) તેમણે એક પુરુષને આ પ્રમાણે કહ્યું. (अम्हे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं पविसामो) હે દેવાનુપ્રિય! અમે બધા કાષ્ઠ પ્રધાન અટવીમાં વધુ આગળ પ્રવેશીએ છીએ. (एत्तो णं तुमं जोइभायणाओ जोइं

शन साधयेः इति कृत्वा काष्ठानामटवीमनुप्रविष्टाः. ततः खलु स पुरुषः ततो मुहूर्तान्तरात् तेषां पुरुषाणामशन साधयामीति कृत्वा यत्रैव ज्योतिर्भाजन तत्रैव उपागच्छति. ज्योतिर्भाजने ज्योतिर्विध्यातमेव पश्यति, ततः खलु स पुरुषः यत्रैव तत् काष्ठ तत्रैव उपागच्छति, उपागम्य तत्

यहीं पर रह कर अग्नि के इस पात्र से अग्नि को लेकर हम लोगों के लिये भोजन तैयार करलो (अह तं जोइ भायणे जोई विज्झवेत्त) यदि उस पात्र में अग्नि बुझ जावे (एत्तो णं तुम कट्ठाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि तिकट्टु कट्ठाण अडविं अणुपविट्ठा) तो देखो जो यह लकडी पडी है सो इसमें से अग्नि को उत्पन्न कर लेना और हमलोगों के लिये भोजन बना लेना इस प्रकार कह कर वे उस इन्धन वाली अटवी में आगे प्रविष्ट हो गये (तएणं से पुरिसे तओ मुहुत्त-तराओ तेसिं पुरिसाणं असणं साहेमित्ति कट्टु जेणेव जोइभायणे तेणेव उवागच्छइ) उनके चले जाने पर उस पुरुषने ऐसा विचार किया–कि चलो जल्दी से उन लोगों के लिये भोजन तैयार करलूं–ऐसा विचार करके वह जहां पर वह अग्नि का पात्र रखा था वहां पर गया (जोइ-भायणे जोइं विज्झायमेव पासइ) वहां जाकर उसने उस ज्योतिपात्र मे अग्नि को बुझा हुआ ही देखा. (तए णं से पुरिसे जेणेव से कट्ठे तेणेव

गहाय अम्ह असणं साहेज्जासि) ત્યાં સુધી તમે અહીં રહીને અગ્નિના આ પાત્રમાંથી અગ્નિને લઇ અમારા માટે ભોજન તૈયાર કરો. (अह तं जोइभायणे जोइं विज्झवेत्ता) જો આ પાત્રમા અગ્નિ ઓળવાઇ જાય. (एत्तो ण तुमं कट्ठाओ जोइं गहाय अम्ह असणं साहेज्जासि त्ति कट्टु कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा) તો જુઓ, આ લાકડુ પડયું છે, તેમાથી અગ્નિ ઉત્પન્ન કરી લેજો અને અમારા માટે ભોજન તૈયાર કરજો. આ પ્રમાણે બધી વિગત સમજાવીને તેઓ તે પુષ્કળ લાકડાવાળી અટવીમા આગળ પ્રવિષ્ટ થઇ ગયા. (तए णं से पुरिसे तओ मुहुत्ततराओ तेसिं पुरिसाणं साहेमित्ति कट्टु जेणेव जोइभायणे तेणेव उवागच्छइ) તેઓ બધા જ્યારે ત્યાંથી જતા રહ્યા ત્યારે તેણે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો કે–સારૂં જલ્દી તેઓ બધા માટે જમવાનું તૈયાર કરી લઉં. આમ વિચાર કરીને તે જ્યાં અગ્નિ પાત્ર હતું ત્યા ગયો. (जोइभायणे जोइ विज्झाय-मेव पासइ) ત્યા જઇને તેણે તે અગ્નિપાત્રમા અગ્નિને ઓળવાઇ ગયેલ જ જોયો. (तए णं से पुरिसे जेणेव से कट्ठे तेणेव उवागच्छइ) ત્યાર પછી તે પુરૂષ

काष्ठं सर्वतः समन्तात् समभिलोकते, नो चैव खलु तत्र ज्योतिः पश्यति, ततः खलु स पुरुषः परिकरं बध्नाति, गृह्णाति, तत् काष्ठं द्विधा स्फाटितं करोति सर्वतः समन्तात समभिलोकते नो चैव खलु तत्र ज्योतिः पश्यति, एवं यावत् संख्येयधा स्फाटितं करोति सर्वतः समन्तात् समभिलोकते नो चैव खलु तत्र ज्योतिः पश्यति, ततः खलु स पुरुषः तस्मिन् काष्ठे द्विधा स्फाटिते वा यावत् संख्येयधा स्फाटिते वा ज्योतिरपश्यन् श्रान्तः तान्तः परितान्तः निर्विण्णाः सम पा

उवागच्छइ) इसके बाद वह पुरुष वहां गया जहां वह काष्ठ पडा हुआ था (उवागच्छित्ता तं कट्ठं सव्वओ समंता समभिलोएइ) वहां जाकर के उसने उस काष्ठ को चारों ओर से अच्छी तरह से देखा (णो चेव णं जोइं पासेइ) परन्तु उसमें उसे अग्नि दिखाई नहीं दी (तए णं से पुरिसे परियरं बंधइ) तब उस पुरुषने अपनी कमर बांधी (फरसुं गिण्हइ) कुल्हाडी उठाई और (तं कट्ठं दुहा फालिहं करेइ) उस काष्ठ के दो टुकडे कर दिये (सव्वओ समंता समभिलोएइ) फिर उसे चारों ओर से अच्छी तरह से उसने देखा (णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ) परन्तु उसमें उसे अग्नि दिखाई नहीं दी (एवं जाव संखेज्जहा फालिहं करेइ) इसी प्रकार से फिर उसके यावत् संख्यात टुकडे तक कर दिये (सव्वओ समंता समभिलोएइ) परन्तु सब तरफ से अच्छी तरह देखने पर भी (णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ) उसे उनमें अग्नि दिखाई नहीं दी (तए णं से पुरिसे तंसि कट्ठंसि दुहा फालिए वा जाव संखेज्जहाफालिए वा जोइं अपास

त्यां गयो ज्यां पेलुं काष्ठ (लाकडुं) पडेलुं हतुं (उवागच्छित्ता तं कट्ठं सव्वओ समंता समभिलोएइ) त्यां जइने तेणे ते लाकडाने चारे बाजुथी सारी रीते जोयुं (णो चेव णं जोइं पासेइ) पण तेमां तेने अग्नि देखायो नहि. (तएणं से पुरिसे परियरं बंधइ) त्यारे ते पुरुषे पोतानी केड बांधी. (फरसुं गिण्हइ) कुहाडी हाथमां लीधी अने (तं कट्ठं दुहा फालिहं करेइ) ते लाकडाना बे ककडा करी नाख्या. (सव्वओ समंता समभिलोएइ) पछी तेणे चारे तरफथी तेने जोयुं. (णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ) पण तेमां तेने अग्नि जोवामां आव्यो नहि. (एवं जाव संखेज्जहा फालिहं करेइ) आ प्रमाणे पछी तेणे तेना यावत् सेंकडो ककडाओ करी नाख्या. (सव्वओ समंता समभिलोएइ) पण तेमने चारे तरफ सारी रीते जोवा छतांये (णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ) तेने तेमनामां अग्नि देखायो नहि. (तएणं से पुरिसे तंसि कट्ठंसि दुहा फालियं वा जाव संखेज्जहा फालिए

शुमेकान्ते एडति (मुञ्चति) परिकरं मुञ्चति एवमवादीत् अहो ! मया तेषां पुरुषाणामशनं नो साधितमिति अपहतमनःसंकल्पचिन्ताशोकसागरसप्रविष्टः करतलपर्यस्तमुखः आर्तध्यानोपगतः भूमिगतदृष्टिको ध्यायति ततः खलु ते पुरुषाः काष्ठानि छिन्दन्ति, यत्रैव स पुरुषः तत्रैवोपागच्छन्ति,

---

माणे संते परितंते निव्विण्णे समाणे परसुं एगंते एडेइ) इसके बाद जब उस पुरुष को उस काष्ठ के दो टुकडे यावत् संख्यात टुकडे करने पर भी जब अग्नि दिखाइ नहीं दी, तब वह थक कर, क्लान्त होकर, परितान्त होकर विशेष दुःखित हुआ और उसने उस कुल्हाडी को किसी एकान्त स्थान में रख दिया (परियरं मुयइ) कमर का बंधन भी खोल दिया (एवं वयासी) इस प्रकार कहने लगा (अहो मए तेसिं पुरिसाणं असणे नो साहिए त्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पे चिंतासोगसागरसंपविट्ठे करतलपल्लत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठीए झियाइ) अरे ! मैं उन पुरुषों के लिये भोजन तैयार नहीं कर सका अब क्या करूं ! इस प्रकार विचार कर वह बडा ही दुःखित हुआ उसकी समस्त मानसिक अभिलाषाएँ नष्ट हो गइ और वह चिन्ता, एवं शोक रूपी समुद्र में निमग्न हो गया. कपोल पर हथेली रख कर आर्तध्यान करने लगा दृष्टि उसकी नीचे जमीन की ओर हो गई –इस प्रकार वह चिन्ता में फंस गया (तए णं ते पुरिसा कट्ठाइं छिदंति) अब उन पुरुषोंने जब लकडियों को काटलिया– तब वे (जेणेव

त्रा जोइं अपासमाणे संते तंते निव्विण्णे समाणे परसुं एगंते एडेइ) त्यार पछी ज्यारे ते पुरुषने ते काष्ठना बे टुकडाओ यावत् संख्यात टुकडाओ कर्या पछी पण ज्यारे अग्नि जोवामां आव्यो नहि, त्यारे ते थाकीने, क्लान्त थईने, परितान्त थईने विशेष दुखित थयो अने तेणे ते कुहाडीने कोइ एकांत स्थाने मूकी दीधी (परियरं मुयइ) कमरनुं बंधन पण खोली नाख्युं (एवं वयासी) पछी ते आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो. (अहो मए तेसिं पुरिसाणं असणे नो साहिए त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पे चिंतासोगसागरसंपविट्ठे करतलपल्लत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठीए झियायइ) अरे ! हुं ते माणसो माटे भोजन बनावी शक्यो नहि हवे शुं करुं ? आ प्रमाणे विचार करीने ते खूब ज दुःखी थयो तेनी बधी मानसिक इच्छाओ नष्ट थई गई, अने ते चिंता अने शोकरूपी समुद्रमां निमग्न थई गयो कपाळ पर हथेळी मूकीने ते आर्तध्यान करवा लाग्यो तेनी नजर जमीन तरफ नीचे थई गई, आम ते चिंतामां डूबी गयो. (तए णं ते पुरिसा कट्ठाइं छिंदंति) हवे ते माणसोओ लाकडाओ कापी लीधा त्यारे तेओ

तं पुरुषमपहतमनःसंकल्पं यावत् ध्यायन्तं पश्यन्ति, एवमवादिषुः-किं खलु त्वं देवानुप्रिय ! अपहतमनःसंकल्पः यावत् ध्यायसि ? ततः खलु स पुरुष एवमवादीत्-यूय खलु देवानुप्रियाः! काष्ठानामटवीमनुप्रविशन्तः मम एवमवादिषुः-वय खलु देवानुप्रिय! काष्ठानामटवी यावत अनुप्रविष्टाः,

---

से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति) जहां वह पुरुष था, वहां पर आये तं पुरिसं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासंति) वहां आकरके उन्होंने उस पुरुष को मानसिक अभिलाषाओं से रहित हुआ और शोक तथा चिन्तारूपी सागर में निमग्न हुआ, कपोल पर हथेली रख कर आर्तध्यान करता हुआ, एवं नीचे दृष्टि किये हुए देखा, देखकर फिर उन्होंने (एवं वयासी) उससे ऐसा कहा-(किं णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पे जाव झियायसि) हे देवानुप्रिय ! तुम किस कारण से अपहतमनः संकल्प वाले बने हुए हो और यावत् चिन्ता कर रहे हो (तए णं से पुरिसे एवं वयासी) तब उस पुरुषने उनसे ऐसा कहा-(तुज्झे णं देवाणुप्पिया ! कट्ठाणं अडविं अणुपविसमाणा मम एवं वयासी) हे देवानुप्रियों ! आपलोग जब लकडी काटने के लिये अटवी में प्रविष्ट होने के लिये तैयार हुए थे-तब मुझसे ऐसा कहा था-(अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कट्ठाणं अडविं जाव अणुपविट्ठा) हे देवानुप्रिय हम लोग लकडो काटने के लिये इस जंगल में आगे जाते

(जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति) જ્યા તે પુરૂષ હતો, ત્યા ગયા. (तं पुरिसं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासंति) ત્યાં જઈને તેમણે તે પુરૂષને માનસિક ઇચ્છાઓ જેની નષ્ટ પામી છે એવો અને શોક તેમજ ચિંતા રૂપી સમુદ્રમાં નિમગ્ન થયેલ કપોલ પર હથેળી મૂકીને આર્તધ્યાન કરતો અને નીચી દૃષ્ટિ કરેલો જોયો. જોઇને પછી તેમણે (एवं वयासी) તેને આ પ્રમાણે કહ્યું-(किं णं तुमं देवाणुप्पिया! ओहयमणसंकप्पे जाव झियायसि) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે શા કારણથીઅપહત મન.સંકલ્પ વાળા થઇ ગયા છો અને યાવત્ ચિંતા કરી રહ્યા છો. (तएणं से पुरिसे एवं वयासी) ત્યારે તે પુરૂષે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું. (तुज्झे-णं देवाणुप्पिया ! कट्ठाणं अडविं अणुपविसमाणा मम एवं वयासी) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સૌ જ્યારે લાકડાઓ કાપવા માટે અટવીમા પ્રવિષ્ટ થવા તૈયાર થયા હતા ત્યારે મને આ પ્રમાણે કહ્યું હતું-(अम्हेणं देवाणुप्पिया ! कट्ठाणं अडविं जाव अणुपविट्ठा) હે દેવાનુપ્રિય ! અમે બધા લાકડાઓ કાપવા માટે આ અટવીમાં આગળ જઈએ છીએ. તો તમે ત્યા સુધી અગ્નિ પાત્રમાંથી અગ્નિ લઈને

ततःखलु अहं ततो मुहूर्तान्तरात् युष्माकमशनं साधयामि' इति कृत्वा यत्रैव ज्योतिर्भाजनं यावत् ध्यायामि, ततः खलु तेषां पुरुषाणामेकः पुरुषः

है—सो तुम तब तक अग्नि के पात्र से अग्नि को लेकर हम लोगों के लिये भोजन बनाना. यदि उस पात्र में अग्नि बुझ जावे तो तुम इस काष्ठ से ज्योति—अग्नि को तैयार कर लेना और हम लोगों के लिये भोजन बनाना, इस प्रकार कह कर आपलोग अटवी में प्रविष्ट हो गये, (तएणं अहं तत्तो मुहुत्तंतराओ तुज्झे असणं साहेमि त्तिकट्टु जेणेव जोइभायणे जाव झियामि) इसके बाद मैं ने ऐसा विचार किया कि चलो बहुत जल्दी आप लोगों के लिये भोजन बनादूं—ऐसा विचार कर ज्यों ही मैं जहां वह ज्योति भाजन (अग्निपात्र) रक्खा था, वहां पर गया—तो क्या देखता हूं कि उसमें अग्नि बुझी पडी है. फिर मै जहां वह काष्ठथा—वहां पर गया, वहां जाकर मैं ने उस काष्ठ को अच्छी तरह से सब ओर से देखा, परन्तु मुझे वहां अग्नि दिखाई नहीं दी, फिर मैं ने अपनी कमर कसी और कुठार को लेकर उस काष्ठ के दो टुकडे किये फिर मैं ने उसे सब ओर से अच्छी तरह देखा परन्तु फिर भी मुझे वहां अग्नि के दर्शन नहीं हुए इस तरह फिर मैं ने उसके तीन चार यावत् सैकडो तक टुकडे कर डाले और उन सब को अच्छी तरह से चारों ओर से देखा. परन्तु वहां कहीं भी

અમારા માટે ભોજન તૈયાર કરો તે પાત્રમાં અગ્નિ ઓળવાઇ જાય તો તમે તે કાષ્ઠમાંથી અગ્નિ ઉત્પન્ન કરી લેજો. અને અમારા માટે ભોજન તૈયાર કરજો, આમ કહીને તમે બધા અટવીમાં પ્રવિષ્ટ થઇ ગયા હતા (त एणं अहं तत्तो मुहुत्तंतराओ तुज्झे असणं साहेमि त्ति कट्टु जेणेव जोइभायणे जाव झियामि) ત્યાર પછી મે આ જાતનો વિચાર કર્યો કે ચાલો, બહુ જ જલદી તમારા માટે ભોજન તૈયાર કરી લઉં આમ વિચાર કરીને હું જ્યારે અગ્નિપાત્ર જ્યાં રાખ્યું હતું ત્યાં ગયો તો તેમાં મને અગ્નિ ઓળવઇ ગયેલ દેખાયો. ત્યાર પછી હું જ્યાં લાકડું હતું ત્યાં ગયો. ત્યાં જઇને મે તે કાષ્ઠને સારી રીતે જોયું, ચારે તરફ જોયું પણ મને તેમાં અગ્નિ દેખાયો નહિ પછી મેં કમ્મર બાંધી અને કુહાડી લઇને તે કાષ્ઠ (લાકડા)ના બે કકડાઓ કર્યા. પછી તે કકડાઓને ચારે તરફથી સારી રીતે જોયા મને તેમાં પણ અગ્નિ દેખાયો નહિ. આમ મે તેના ત્રણ ચાર ત સંખ્યાત કકડાઓ કરી નાખ્યા બધા કકડાઓને ચારે તરફથી સારી રીતે જોયા પણ ત્યાં મને જરા પણ અગ્નિ દેખાયો નહિ ત્યારે હું થાકીને, તાન્ત, પરિતાન્ત થઇને અને ખેદ

छेकः दक्षः प्राप्तार्थः यावत् उपदेशलब्धः तान् पुरुषान् एवमवादीत्--गच्छत खलु यूयं देवानुप्रियाः ! स्नाताः कृतबलिकर्माणः यावत् शीघ्रमागच्छत यावत् खलु अहमशनं साधयामीति कृत्वा परिकरं बध्नाति परशुं

मुझे अग्नि का नामतक भी नहीं पाया. तब मैंने थककर तान्त, परितान्त होकर और खेद खिन्न होकर कुल्हाडी को एकान्त में एक ओर रख दिया और कमर को खोल दिया—फिर मैंने ऐसा विचार किया—मैं अपहतमनः संकल्पवाला बना हुआ शोक एवं चिन्तारूपी समुद्र में डूबा हूं. कपोल पर हथेली रखकर बैठा हुआ हूं, आर्त्तध्यान कर रहा हूं और लज्जा के मारे जमीन की ओर देख रहा हूं (तएणं तेसिं पुरिसाणं एगे पुरिसे छेए दक्खे, पत्तट्ठे जाव उवएसलद्धे ते पुरिसे एवं वयासी) इस के बाद उन पुरुषों के बीच में एक पुरुष ऐसा था जो छेक—अवसर का ज्ञाता था, दक्ष—कार्यकुशल था, प्राप्तार्थ—अपनी कुशलता से जिसने साध्यार्थ—को अधिगत कर लिया था, यावत गुरूपदेश जिसने प्राप्त किया था. उसने उन काष्टहारक पुरुषों से ऐसा कहा—(गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! ण्हाया, कयबलिकम्मा जाव हव्वमागच्छेह, जा णं अहं असणं साहेमि त्ति कट्टु परिकरं बंधइ) हे देवानुप्रियों ! आप लोग जाइये, स्नान कीजिये, बलिकर्म—काक आदि को अन्नादि का भाग देने

खिन्न थईने कुहाडीने એક તરફ મૂકી દીધી અને બાંધેલી કેડ ખોલી નાખી પછી મેં આ જાતનો વિચાર કર્યો. હું તે માણુસો માટે ભોજન બનાવી શક્યો નહિ. આ કેવી દુઃખ અને આશ્ચર્યની વાત છે આ પ્રમાણે વિચાર કરીને હું અપહત મનઃ સંકલ્પવાળો થઈને શોક અને ચિંતારૂપી સમુદ્રમાં મગ્ન થઈને, કપોલ પર હથેલી મકીને બેઠો છું, અને આર્ત્તધ્યાન કરી રહ્યો છું. શર્મથી મારી નજર નીચી જમીન તરફ વળી ગઈ છે (तएणं तेसिं पुरिसाणं एगे पुरिसे छेए दक्खे, पत्तट्ठे जाव उवएस लद्धे ते पुरिसे एवं वयासी) ત્યાર પછી તે માણુસોમાં એક માણુસ એવો પણ હતો કે જે છેક યોગ્ય સમયને પિછાણનાર, દક્ષ—કાર્યકુશળ પ્રાપ્તાર્થ-પોતાની કુશળતાથી—જેણે સાધ્યાર્થ પ્રાપ્ત કરિ લીધો છે, એવો યાવત્ ગુરુપદેશ જેણે પ્રાપ્ત કર્યો છે એવો હતો. તેણે કાષ્ઠહારક માણસોને આ પ્રમાણે કહ્યું (गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! ण्हाया, कयबलिकम्मा जाव हव्वमागच्छेह, जा णं अहं असणं साहेमि त्ति कट्टु परिकरं बंधइ) હે દેવાનુપ્રિયો (તમે લોકો સ્નાન કરો, બલિકર્મ-કાગડા વગેરે અન્ન વગેરેનો ભાગ આપીને નિશ્ચિન્ત થઈ જાવ. યાવત

गृह्णाति गृहीत्वा शरं करोति शरेण अरणिं मथ्नाति ज्योतिः पातयति ज्योतिः संधुक्षते तेषां पुरुषाणामशनं साधयति ततः खलु ते पुरुषाः स्नाताः कृतबलिकर्माणः यावत् प्रायश्चित्ताः यत्रैव स पुरुषः तत्रैव उपागच्छन्ति, ततः खलु स पुरुषः तेषां पुरुषाणां सुखासनवरगतानां तद् विपुलमशनं पानं खादिमं

रूप कार्य से निश्चिन्त हो जाइये, यावत् कौतुक मंगलरूप प्रायश्चित्त कर लीजिये और फिर जल्दी आजाइये तबतक मैं आपलोगों के लिये भोजन तैयार करता हूं। ऐसा कहकर उसने अपनी कमर कसी और (फरसुं गिण्हइ) कुल्हाडी को उठाया (सरं करेइ, सरेण अरणिं महेइ) उससे पहिले उसने लडकी को इतना छीला कि जिससे वह बाण के जैसी शलाई के रूप में हो गई, फिर उससे उसने अरणिकाष्ठ का मंथन किया (जोइं पाडेई) मथन करने से अग्नि उसमें प्रकट हो गई (जोइं संधुक्खेइ) प्रकट हुई उस अग्नि को उसने पवन वगैरह आदि साधनों से विशेष चैतन्य किया, अर्थात् धोंका (तेसिं पुरिसाणं असणं साहेइ) अग्नि के तैयार हो जाने पर फिर उसने उन सब पुरुषों का भोजन बना दिया (तएणं ते पुरिसा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छइ) इतने में वे पुरुष स्नान करके, बलिकर्म-काकआदि को अन्नादि का भाग दे करके यावत्-कौतुक मंगलरूप प्रायश्चित्त करके उस स्थान पर आये-

કૌતુક મંગળરૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત કરી લો. અને પછી જલદી અહીં ઉપસ્થિત થઇ જાવ. આટલામાં હું તમારા માટે ભોજન તૈયાર કરૂં. આમ કહીને તેણે પોતાની કેડ બાંધી અને (फरसुं गिण्हइ) કુહાડી હાથમાં લીધી (सरं करेइ सरेण अरणिं महेइ) તેણે સૌ પહેલા લાકડાને એવી રીતે છોલ્યું કે જેથી તે બાણ જેવી શલાકા જેવું થયું પછી તેનાથી તેણે અરણિ કાષ્ઠનું મથન કર્યું (जोइं पाडेइ) મથન કરવાથી તેમાથી અગ્નિ પ્રકટ થઈ ગયો (जोइं संधुक्खेइ) પ્રકટ થયેલ તે અગ્નિને પવન વગેરે સાધનોથી તેને સવિશેષ પ્રજ્વલિત કર્યો (तेसिं पुरिसाणं असणं साहेइ) અગ્નિ જ્યારે પ્રજ્વલિત થઇ ગયો ત્યારે તેણે તે બધા લોકો માટે ભોજન તૈયાર કર્યું (तएणं ते पुरिसा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छइ) આટલામાં તે બધા માણસો સ્નાન કરીને, બલિકર્મ-કાગડા વગેરેને અન્ન વગેરેનો ભાગ આપીને યાવત કૌતુક મંગળરૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત કરીને તે જ્યાએ આવી ગયા. જ્યા તે પુરૂષ હતો. (तए णं से पुरिसे तेसिं पुरिसाणं सुहासणवरगयाणं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवणेइ तएण ते

स्वादिमम् उपनयति, ततः खलु ते पुरुषाः तद् विपुलमशनं पानं खादिमं स्वादिमम् आस्वादयन्तो विस्वादयन्तो यावद् विहरन्ति, जिमितभुक्तोत्तरागता अपि च खलु सन्तः आचान्ताः चोक्षाः परमशुचिभूताः तं पुरुषमेवमवादिषुः-अहो ! ! खलु त्वं देवानुप्रिय ! जडः मूढः अपण्डितः निर्विज्ञानः अनुपदेशलब्धः यः खलु त्वामन्वेषमि काष्ठे द्विधा स्फाटिते वा यावत्

जहां कि वह पुरुष था. (तएण से पुरिसे तेसिं पुरिसाणं सुहासणवरगया णं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवणेइ, तएण ते पुरिसा तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा जाव विहरंति) वहां आकरके वे सबके सब पुरुष अपने२ सुखासन पर बैठ गये. उनके बैठ जाने पर फिर उस पुरुष ने उस प्रचुर खाद्य आदि सामग्री को लाकर उनके समक्ष रख दिया और परोस दिया, उन सबने उस भोजन सामग्री चारों प्रकार के आहार को-उसका स्वाद जानने के लिये पहिले तो चखा, रुचि से उसे खाया (जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं पुरिसं एवं वयासी) खा पीकर जब वे निश्चिन्त हो गये-तब वहां से उठे, और उठकर आचमन किया, आचमन-कुल्ला करने के बाद फिर उन्होने अपने हाथ मुह आदि को अच्छे प्रकार से धोकर साफ किया. इस तरह परम शुचियुक्त होकर फिर उन्होंने उस पहिले पुरुष से ऐसा कहा-(अहो णं तुमं देवाणुप्पिया ! जड्डे, मूढे, अपडिए निव्विण्णाणे, अणुवएसलद्धे, जे णं तुमं इच्छसि कट्ठंसि दुहा

तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा जाव विहरंति) त्यां जइने तेओ बधा पुरुषो पोतपोताना स्थाने सुखासन पर बेसी गया.. तेओ ज्यारे बेसी गया त्यारे ते पुरुषे ते प्रचुर खाद्य वगेरे सामग्रीने लावीने तेमनी सामे मूकी दीधी अने पीरसी दीधी. तेओ बधाए ते भोजन सामग्रीने चारे प्रकारना आहारने-तेना स्वादने जाणवा माटे पहेला तो तेने चाख्यो पछी खूब रुचिपूर्वक तेने जम्या (जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं पुरिसं एवं वयासी) खाई-पीने ज्यारे तेओ निश्चंत थई गया त्यारे तेओ त्याथी उभा थया अने उभा थईने आचमन-कोगळा-करीने पछी तेमणे पोताना हाथ मों वगेरेने सारी रीते धोईने स्वच्छ कर्यां. आ प्रमाणे परम शुचियुक्त थईने पछी तेमणे ते पहेला पुरुषने आ प्रमाणे कह्युं. (अहो णं तुमं देवाणुप्पिया ! जड्डे ! मूढे अपंडिए निव्विण्णाणे, अणुवएसलद्धे, जे णं

ज्योतिर्द्रष्टुम्, तदेतेनार्थेन प्रदेशिन्! एवमुच्यते मूढतरकः खलु त्वं प्रदेशिन्! ततः काष्ठहारकात्। ॥ सू० १४६ ॥

टीका--'तए णं केसिकुमारसमणे' इत्यादि-ततः खलु केशिकुमारश्रमणः प्रदेशिन राजानमेवमवादीत्-हे प्रदेशिन! ततः-तस्मात् काष्ठहारात् पुरुषात् त्वं मूढतरकः-अतीव मूर्खः खलु प्रतिभासि! तत्र प्रदेशी हेतुं पृच्छति-हे भदन्त! कः खलु असौ काष्ठहारकः? केशी प्राह-हे प्रदेशिन्!

फलियंसि वा जाव जोइं पासित्तए) हे देवानुप्रिय! तुम जड हो, अग्नि का उत्पन्न करने के साधन से अनभिज्ञ हो, मूर्ख हो-विवेक रहित हो, अपण्डित हो-प्रतिभा से युक्त नहीं हो, निर्विज्ञान-कुशलता तुम में नहीं है, अनुपदेशलब्ध-तुम ने इस विषय में गुरु का उपदेश प्राप्त नहीं किया है, अर्थात् अशिक्षित हो, इसीलिये लकडी में अग्नि को पाने के लिये तुमने उसे फाडा है, दो टुकडे किये है, तीन टुकडे किये हैं, चार टुकडे किये हैं. यावत् संख्यात टुकडे किये हैं, फिर भी तुम उसमें अग्नि नहीं देख सके-अतः तुम सच्चेरूप में मूढत्वादि पूर्वोक्त विशेषणों से शून्य नहीं हो. (से एएणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ मूढतराए णं तुमं पएसी! ताओ कट्ठहाराओ) इस प्रकार से मूढतरत्वसाधक दृष्टान्त का कथन कर उपसंहार करते हुए अब केशी प्रदेशी से कहते हैं-हे प्रदेशिन्! तुम इस दृष्टान्तोक्त पुरुष की अपेक्षा भी अधिक मूर्ख हो जो तुम पुरुष के शरीर को छिन्न भिन्न करके उसके जीव को देखने के लिये अभिलाषी बने हो।

तुमं इच्छसि कट्ठंसि दुहा फालियंसि वा जाव जोइं पासित्तए) હે દેવાનુપ્રિય! તમે જડ છો, અગ્નિ ઉત્પન્ન કરવાના સાધનથી અનભિજ્ઞ છો, મૂર્ખ છો, વિવેક રહિત છો, અપંડિત છો, પ્રતિભા રહિત છો, નિર્વિજ્ઞાન-કુશળતા રહિત છો, અનુપદેશલબ્ધ-તમોએ આ બાબતમા ગુરૂનો ઉપદેશ પ્રાપ્ત કર્યો નથી, એટલે કે તમે અશિક્ષિત છો, એથી જ લાકડીમાંથી અગ્નિ મેળવવા માટે તમે તેના કકડા કરી નાખ્યા છે. બે કકડા કરી નાખ્યા છે. ત્રણ કકડા કરી નાખ્યા છે, ચાર કકડાઓ કરી નાખ્યા છે યાવત્ સંખ્યાત કકડાઓ કરી નાખયા છે. છતાં એ તમને તેમાં અગ્નિ દેખાયો નહિ. એથી તમે ખરેખર મૂઢત્વ વગેરે પૂર્વોકત વિશેષણોથી રહિત નથી. (से एएणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ मूढतराए णं तुमं पएसी! ताओ कट्ठहाराओ) આ પ્રમાણે મૂઢતરત્વ સાધક દૃષ્ટાંત કહીને ઉપસંહાર કરતા કેશી પ્રદેશીને કહેવા લાગ્યા કે હે પ્રદેશિન! તમે આ દૃષ્ટાન્તમાં આવેલ પુરૂષ કરતાં પણ વધારે મૂર્ખ છો કેમકે તમે માણસના શરીરના કકડા કરીને તેમના જીવને જોવા તત્પર થયા હતા,

ते यथानामकाः अनिर्दिष्टनामानः केचित् पुरुषाः वनार्थिनः-वनमेवार्थोऽस्त्येषामिति वनार्थिनः-वनप्रयोजनयुक्ताः वनोपजीविनः वनेन वन्यकाष्ठादिना उपजीविनः जीवननिर्वाहकारिणः काष्ठहारका इत्यर्थः, वनगवेषणया-वनजिज्ञासया ज्योतिः-अग्निं च ज्योतिर्भाजनम्-अग्निपात्रं च गृहीत्वा काष्ठानाम्-इन्धनानाम् स्थानभूताम् अटवीम् अनुप्रविष्टाः, ततः-तदनन्तरम् ते पुरुषाः तस्याः अग्रामिकायाः-जनवसतिरहितायाः, अटव्याः किञ्चिद्देशं-स्वल्पदेशम् अनुप्राप्ताः-क्रमेण गताः सन्तः एकं पुरुषम् एवमवादिषुः-हे देवानुप्रिय! वयं काष्ठानामटवीं प्रविशामः, इतः खलु त्वं ज्योतिर्भाजनात्-अग्निपात्रात् ज्योतिः अग्निं गृहीत्वा अस्माकमशनं साधयेः-निष्पादयेः. अथ-भोजननिष्पादनसमये ज्योतिर्भाजने तत्-पूर्वतो रक्षितं ज्योतिः विध्यायेत्--शाम्येत् तदा इतः-एतस्मात् काष्ठात् खलु त्वं ज्योतिः-अग्नि गृहीत्वा अस्माकमशनं साधयेः इति कृत्वा-इत्याज्ञाप्य ते काष्ठहारकाः काष्ठानामटवीमनुप्रविष्टाः, ततः-तेषां गमनानन्तरं खलु स पुरुषः ततः-मुहूर्तान्तरात्-किञ्चित्कालानन्तरम् तेषां-वनं प्रविष्टानां पुरुषाणाम् अशनं साधयामीति कृत्वा-इत्यभिप्रेत्य यत्रैव-यस्मिन्नेव स्थाने ज्योतिर्भाजनमासीत् तत्रैव-तस्मिन्नेव स्थाने उपागच्छति, परन्तु ज्योतिर्भाजने-अग्निपात्रे ज्योतिः-अग्निम् विध्यातमेव-प्रशान्तमेव पश्यति, ततः खलु सः-अशननिष्पादनार्थी पुरुषः यत्रैव तत् काष्ठं तत्रैव उपागच्छति. उपागत्य तत् काष्ठं सर्वतः समन्तात् समभिलोकते नो चैव-नैव खलु तत्-काष्ठे ज्योतिः-वह्निं पश्यति, ततः-तदनन्तरम् स पुरुषः परिकरं कटिबन्धनं बध्नाति परशुं-कुठारं गृह्णाति तत् काष्ठं द्विधा स्फाटितं-विदारितं करोति-सर्वतः समन्तात् समभिलोकते नो चैव खलु तत्-काष्ठे ज्योतिः-वह्निं पश्यति, एवम्-अनेन प्रकारेण यावत्--यावत्पदेन 'त्रिधा स्फाटितं चतुर्धा स्फाटितम्' इत्येषां पदानां संग्रहो बोध्यः, संख्येयधा-संख्यातखण्डं स्फाटितं करोति कृत्वा सर्वतः समन्तात् समभिलोकते, नो चैव तत् ज्योतिः पश्यति, ततः-तदनन्तरम् खलु स पुरुषः तस्मिन्-कृतकुठारप्रहारे काष्ठे द्विधा स्फटिते यावत् संख्येयधा-संख्यातखण्डशः स्फाटिते वा ज्योतिः अपश्यन् श्रान्तः-श्रमं प्राप्तः, तान्तः-क्लान्तः, परितान्तः-विशेषतःक्लान्तः, निर्विण्णः-खिन्नः सन् परशुं-कुठारम् एकान्ते-रहसि पडति-देशीयोऽयमेडधातुर्मोचनार्थः, तेन 'मुञ्चति' इत्यर्थः. मुक्त्वा परिकरं-कटिबन्धनं मुञ्चति, मुक्त्वा एवमवादीत्-अहो!!-

विस्मयोऽत्र यत् मया मन्दभाग्येन तेषां पुरुषाणामशन-भोजनं नो साधितम्, इति कृत्वा-इति विचिन्त्य अपहतमनःसंकल्पः-नष्टमनोऽभिलाषः, चिन्ताशोकसागरसंप्रविष्टः--चिन्ताशोकसमुद्रनिमग्नः, करतलपर्यस्तमुखः-करतलनिहितकपोलः, मुखशब्दस्य मुखावयवकपोलपरत्वात्, आर्तध्यानोपगतः-आर्तध्यानयुक्तः, भूमिगतदृष्टिक-पृथिवीतलनिरीक्षणतत्परः-अधोमुख., ध्यायति-चिन्तां करोति. ततः इतश्च ते-अटवीमनुप्रविष्टाः पुरुषाः काष्ठानि छिन्दन्ति, छित्त्वा यत्रैव सः अशननिष्पादनार्थी पुरुषः तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य तं पुरुषम् अपहतमनःसंकल्पं यावत्-यावत्पदेन "चिन्ताशोकसागरसंप्रविष्टं, करतलपर्यस्तमुखम्, आर्तध्यानोपगतं, भूमिगतदृष्टिकम्" इत्येषां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः, ध्यायन्त-चिन्तां कुर्वन्तं

टीकार्थ स्पष्ट है-इस सूत्र का भावार्थ ऐसा है-कि जिस प्रकार प्रथम पुरुष को काष्ठ में अग्नि के दर्शन नहीं हुए और द्वितीय पुरुष को हो गये. उसी प्रकार तुम्हें भी उस चोर पुरुषके शरीर में छिन्नभिन्न करने पर भी उसको जीव के दर्शन नहीं हो सके एतावता यह कैसा कहा जा सकता है कि जीव दिखाई नहीं देने से जीव नाम का कोई स्वतंत्र पदार्थ नहीं है. इसलिये जीव और शरीर एक हैं ऐसी तुम अपनी मान्यता का परित्याग कर यह मानो कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है. ये दोनों एक नहीं हैं। यहां सूत्र में जो 'करतलपर्यस्तमुखः' ऐसा पद आया है -उनमें मुखशब्द मुख के अवयवभूत कपोल अर्थ में आया है 'अपहतमनःसंकल्प जाव' में जो यह यावत् पद आया है-उससे 'चिन्ताशोकसागरसंप्रविष्टः, करतल पर्यस्तमुखः, आर्त्तध्यानोपगतः, एवं भूमिगतदृष्टिकः'

ટીકાર્થ આ સુત્રનો સ્પષ્ટ જ છે આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે જેમ પહેલા માણસને કાષ્ઠમાં અગ્નિના દર્શન થયા નથી અને બીજા માણસને થયા તેમજ તે ચોર પુરૂષના શરીરના કકડે કકડા કરવા છતાંએ તેના જીવના દર્શન તમને થયા નથી એનાથી આ કેવી રીતે કહી શકાય કે જીવ દેખાતો નથી. તેથી જીવ નામનો કોઇ સ્વતંત્ર પદાર્થ જ નથી- એથી જીવ અને શરીર એક જ છે. એવી તમારી જે માન્યતા છે તેને તમે છોડી દો અને આ વાત સ્વીકારી લોકે જીવ ભિન્ન છે અને શરીર ભિન્ન છે એઓ બન્ને એક નથી. અહીં સૂત્રમાં જે 'करतल पर्यस्तमुखः' આ જાતનું પદ છે તેમા મુખ શબ્દ મુખના અવયવભૂત કપોલ અર્થમા આવેલ છે "अपहतमनः संकल्पं जाव"-માં જે યાવત્ પદ આવેલ છે, તેથી 'चिन्ताशोकसागरसंप्रविष्टः करतलपर्यस्तमुखः आर्त्तध्यानोपगतः एवं

पश्यन्ति, दृष्ट्वा एवम् अनुपद वक्ष्यमाणं वचनम्, अवादिषुः–किं–कारणं खलु ? हे देवानुप्रिय ! त्वम् अपहतमनःसंकल्पः यावत्–ध्याय-सि ?–चिन्तां करोषि ?, ततः–तदनन्तरम् खलु स पुरुषः एवमवादीत्–हे देवानुप्रियाः ! यूयं खलु काष्ठानामटवीमनुप्रविशन्तः मम एवमवादिष्ट–कथितवन्तः, किमित्याह–हे देवानुप्रिय ! वयं खलु काष्ठानामटवीं यावत्–यावत्पदेन "प्रविशामः, इतःखलु त्वं ज्योतिर्भाजनात् ज्योतिर्गृहीत्वाऽस्माकमशनं साधयेः, अथ तज्ज्योतिर्भाजने ज्योतिर्विध्यायेत् इतः खलु त्वं काष्ठात् ज्योतिर्गृहीत्वाऽस्माकमशन साधयेरिति कृत्वा काष्ठानामटवीम्" इत्येषां पदानां संग्रहो बोध्यः, अनुप्रविष्टाः, ततः–तदनन्तरं खलु अहं ततो–मुहूर्तान्तरात् युष्माकमशनं साधयामीति कृत्वा यत्रैव ज्योतिर्भाजनं यावत्–यावत्पदेन "तत्रैव उपागच्छामि ज्योतिर्भाजने ज्योतिर्विध्यातमेव पश्यामि, ततः खलु अहं यत्रैव तत् काष्ठं तत्रैव उपागच्छामि, उपागम्य तत् काष्ठं सर्वतः समन्तात् समभिलोके नो चैव तत्र ज्योतिः पश्यामि, ततः खलु अहं परिकरं बध्नामि परशुं गृह्णामि तत् काष्ठं द्विधा स्फाटितं करोमि कृत्वा सर्वतः समन्तात् समभिलोके, नो चैव तत्र ज्योतिः पश्यामि, एवं यावत् त्रिधा चतुर्धा संख्येयधा स्फाटितं करोमि सर्वतः समन्तात् समभिलोके नो चैव तत् ज्योतिः पश्यामि, तत् खलु अहं तस्मिन् काष्ठे द्विधा स्फाटिते वा यावत् त्रिधा चतुर्धा संख्येयधा वा स्फाटिते ज्योतिरपश्यन् श्रान्तः तान्तः परितान्तः निर्विण्णः सन् परशुमेकान्ते (एडामिदे०) मुञ्चामि मुक्त्वा

इन पदों का ग्रहण हुआ है। 'काष्ठानामटवीं यावत्' में आये हुए यावत्पद से 'प्रविशामः, इतः खलु त्वं ज्योतिर्भाजनात् ज्योतिर्गृहीत्वाऽस्माकमशनं साधयेः, अथ तज्ज्योतिर्भाजने ज्योतिर्विध्यायेत्–इतः खलु त्वं काष्ठात् ज्योतिर्गृहीत्वा अस्माकमशनं साधयेरिति कृत्वा काष्ठानामटवीम्' इस पाठ का संग्रह हुआ है। 'एवं यावत् संख्येयधा' में आये हुए यावत्पद से 'त्रिधा स्फाटितं, चतुर्धा स्फाटितम्' इन पदों का संग्रह हुआ है। 'एडति' यह शब्द देशीय

भूमिगत इष्टक" આ પદોનું ગ્રહણ થયું છે. 'काष्ठानामटवीं यावत्' માં આવેલ યાવત્ પદથી 'प्रविशामः इतः खलु त्वं ज्योतिर्भाजनात् ज्योतिर्गृहीत्वाऽस्माकमशनं साधयेः, अथ तज्ज्योति भाजने ज्योतिर्विध्यायेत्–इतः खलु त्वं काष्ठात् ज्योतिर्गृहीत्वा अस्माकमशनं साधयेरिति कृत्वा काष्ठानामटवीं" આ પાઠનો સંગ્રહ થયો છે 'एवं यावत् संख्येयधा' માં આવેલ યાવત્ પદથી 'त्रिधा स्फाटितं चतुर्धास्फाटितं' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે "एडत्ति' આ

परिकरं मुञ्चामि एवमवादिषम्-अहो ! ! मया तेषां पुरुषाणामशनं नो साधितमिति कृत्वा अपहतमनः संकल्पः चिन्ताशोकसागरसंप्रविष्टः करतल पर्यस्तमुखः आर्तध्यानोपगतो भूमिगतदृष्टिकः" इत्येषां सङ्ग्रहो बोध्यः, एषां व्याख्याऽस्मिन्नेव सूत्रे पूर्वं कृता, ध्यायामि-चिन्तां करोमि, ततः-तदनन्तरं तेषां पुरुषाणां मध्याद् एकः कोऽपि पुरुषः छेकः-अवसरज्ञः, दक्षः-कार्य-कुशलः, प्राप्तार्थः-निजकौशलेनाधिगतसाध्यरूपार्थः, यावत्-यावत्पदेन-"बुद्धः, कुशलः, महामतिः विनीतः विज्ञानप्राप्तः" इत्येषां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः, एषां व्याख्या पूर्वं गता, तथा उपदेशलब्धः-प्राप्तगुरूपदेशः, शिक्षित इति यावत्, एतादृश एकः पुरुषः तान्-काष्ठहारकान् पुरुषान् एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! यूयं गच्छत खलु स्नाताः-कृतस्नानाः कृतबलि-कर्माणः-कृतवायसादिनिमित्तान्नदानाः, यावत्-प्रायश्चित्ताः-यावत्पदेन-कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताः" इत्येतत्पदसङ्ग्रहो बोध्यः, एतादृशाः सन्तः शीघ्रमागच्छत, कियता कालेन ? इति जिज्ञासायामाह-यावत्-यावत्कालेन खलु अहम् अशनं-भोजनं साधयामि-निष्पादयामि. इति कृत्वा-इत्युक्त्वा परिकरं बध्नाति-कटिबन्धनं करोति, परशु-कुठारं गृह्णाति, गृहीत्वा शरं-बाणसदृशं प्रतनुकाष्ठं करोति तेन शरेण-तनूकृतकाष्ठेन अरणिं-काष्ठ विशेषं मथ्नाति-संघर्षति, ज्योतिः-अग्निं पातयति-निष्काशयति, पातयित्वा ज्योतिः-वह्निं संधुक्षते-संदीपयति, संदीप्य तेषां पुरुषाणामशनं साधयति, ततः-अशननिष्पादनानन्तरम् खलु ते पुरुषाःस्नाताः कृतबलिकर्माणः यावत् प्रायश्चित्ताः-कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताः सन्तः यत्रैव स पुरुष आसीत् तत्रैव उपागच्छन्ति, ततः खलु स पुरुषः तेषां पुरुषाणाम्, सुखासनवरगतानां-

है इसमें एड धातु मोचन अर्थ में है। 'अहो' शब्द विस्मयार्थक है। 'पत्तट्ठ जाव' में जो यावत्पद आया है-उससे यहां 'बुद्धः, कुशलः, महामतिः, विनीतः, विज्ञानप्राप्तः' इन पदों का संग्रह हुआ है। इन पदों की व्याख्या पहिले की जा चुकी है। 'कयबलिकम्मा जाव' में आये हुए यावत् पद से 'कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताः' इस पद का संग्रह हुआ है। 'दुहा फालियंसि

શબ્દ દેશીય છે. આમાં "एड" ધાતુ 'મોચન' અર્થમાં છે. 'अहो' શબ્દ વિસ્મયાર્થક છે. 'पत्तट्ठे जाव" મા જે યાવત્ પદ આવેલ છે. તેથી અહીં 'बुद्धः, कुशलः, महामतिः विनीतः, विज्ञानप्राप्तः,' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. આ પદોની વ્યાખ્યા પહેલાં કરવામાં આવી છે. 'कयबलिकम्मा जाव' મા આવેલ યાવત્ પદથી 'कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताः' આ પદનો સંગ્રહ થયો છે. 'दुहा फा

सुखदोत्तमासनोपविष्टानाम्, सताम् पुरतः तत्-साधितं, विपुलं-पुष्कलम्, अशनं पानं खादिमं स्वादिमम् उपनयति-परिवेशयति, ततः खलु ते पुरुषाः तद्विपुलमशनं पानं खादिमं स्वादिमम् आस्वादयन्तः-सामान्यतः स्वादयन्तः, विस्वादयन्तः-विशेषेण स्वादयन्तः, यावत्-यावत्पदेन-"परिभाजयन्तः परिभुञ्जाना' इत्यनयोःपदयोः सङ्ग्रहो बोध्यः, तत्र परिभाजयन्तः-परितो वण्टयन्तः, परिभुञ्जाना-परितः-आतृप्ति भुञ्जाना, विहरन्ति-तिष्ठन्ति। जिमितभुक्तोत्तरागता-जिमितं-चतुर्विधमशनं तस्य भुक्तं-भोजनं तदुत्तरं-तदनन्तरं कालम् आगता-प्राप्ताः अपि च सन्तः आचान्ता-कृताऽऽचमनाः, चोक्षाः सामान्यतः शुद्धाः, परमशुचिभूताः-गण्डूषादिभिर्विशेषतः शुद्धाः, तम् पुरुषम्, एवम्-अनुपदं वक्ष्यमाणं वचनम् अवादिषुः-अहो ! ! देवानुप्रिय ! त्व खलु जडः जडसदृशः-विशिष्टचेतनारहितत्वात्, मूढः-मूर्खः, अपण्डितः सदसद्विवेकविकलत्वात्, निर्विज्ञानः- कौशलरहितः, अनुपदेशलब्धः अप्राप्त गुरूपदेशः-अशिक्षितश्चासि, यस्त्वम् खलु द्विधा स्फाटिते काष्ठे यावत् त्रिधा चतुर्धा संख्येयधा वा स्फाटिते काष्ठे ज्योतिः वह्निं द्रष्टुमिच्छसि, इति मूढतरत्वसाधकदृष्टान्तमुक्त्वोपसंहरति-हे प्रदेशिन् तदेतेन-अनन्तरोक्तेन अर्थेन-दृष्टान्तरूपेण, एवम्-इत्थम् उच्यते-वक्ष्यते यद् हे प्रदेशिन्! तस्मात् अपाचकात् काष्ठहारात् मूढतरः-अतिमूर्खः असि ॥ सू० १४६॥

मूलम्--तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी-जुत्तए णं भंते ! अइदक्खाणं बुद्धाणं कुसलाणं महामईण विणयाणं विण्णाणपत्ताणं उवएसलद्धाणं अह इमीसाए महइ महालयाए परिसाए मज्झे उच्चावएहिं आउसेहिं आउसित्तए, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसित्तए, एव उच्चावयाहिं निब्भछणाहिं निब्भछित्तए, उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडित्तए ? ॥सू० १४७॥

वा जाव' में यावत् पद से 'त्रिधा, चतुर्धा, संख्येयधा वा स्फाटिते काष्ठे" इन पदों का संग्रह हुआ है ॥ सू. १४६ ॥

વા જાવ' મા આવેલ યાવત્ પદથી 'त्रिधा, चतुर्धा, संख्येयधा वा स्फाटिते काष्ठे' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. ॥સૂ૦ ૧૪૬॥

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्-युक्तः खलु भदन्त ! युष्माकम् अतिच्छेकानां दक्षाणां बुद्धानां कुशलानां महामतीनां विनीतानां विज्ञानप्राप्तानाम् उपदेशलब्धानाम् अहम् अस्याः महातिमहालयाः परिषदो मध्ये उच्चावचैः आक्रोशैः आक्रोष्टुम्, उच्चावचाभिरुद्धर्षणाभिरुद्धर्षयितुम्, उच्चावचाभिर्निर्भर्त्सनाभिर्निर्भर्त्सयितुम्, उच्चावचाभिर्निश्छोटनाभिर्निश्छोटयितुम् ? ।सू० १४७।।

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ-(तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी) इसके बाद प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा-(जुत्तएणं भंते ! अइदक्खाणं बुद्धाणं कुसलाणं महामईण विणीयाणं, विण्णाणपत्ताणं, उवएसलद्धाणं) हे भदन्त ! अतिच्छेक-अवसरज्ञ, दक्ष-चतुर, बुद्ध-तत्वज्ञ, कुशल-कर्तव्या-कर्तव्य निर्णायक. महामति औत्पत्तिकी आदिबुद्धियों से युक्त, विनीत-शिष्ट, विज्ञानप्राप्त-सत् असत के विवेक से संपन्न, एवं उपदेशलब्ध-गुरु के उपदेश को प्राप्त करने वाले ऐसे आपके लिये (अहं इमीसाए महइमहालियाए परिसाए मज्झे) मुझ से इस अतिविशाल परिषदा के बीच में (उच्चावएहिं आउसेहिं आउसित्तए, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसित्तए) उच्चावच-नाना प्रकार के कठिनवचनरूप आक्रोशों से संलाप करना नानाप्रकार की अनादर सूचक वचनरूप उद्धर्षणाओं से मुझे उद्धर्षित करना, (एवं उच्चावयाहिं निब्भंछणाहिं निब्भंछित्तए, उच्चावयाहिं

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी) त्यार पछी प्रदेशी राजाએ કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું-(जुत्तएणं भंते ! अइदक्खाणं बुद्धाणं कुसलाणं महामईणं विणीयाण, विण्णाणपत्ताणं, उवएसलद्धाणं) હે ભદંત ! અતિચ્છેક-અવસરજ્ઞ, દક્ષ-ચતુર, બુદ્ધ-તત્ત્વજ્ઞ, કુશળ-કર્તવ્યાકર્તવ્ય નિર્ણાયક, મહામતિ-ઔત્પત્તિકી વગેરે બુદ્ધીઓથી યુકત, વિનીત-શિષ્ટ, વિજ્ઞાન પ્રાપ્ત-સત્ અસતના વિવેકથી યુકત અને ઉપદેશલબ્ધ-ગુરૂના ઉપદેશને પ્રાપ્ત કરનાર એવા તમારા વડે (अहं इमीसाए महइमहालियाए परिसाए मज्झे) મારી સાથે આ અતિવિશાળ પરિષદાની વચ્ચે (उच्चावएहिं आउसेहिं आउसित्तए, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसित्तए) ઉચ્ચાવચ-અનેક જાતના કઠોર વચનરૂપ આક્રોશોથી સંલાપ કરવું-અનેક પ્રકારના અપમાન સૂચક વચનરૂપ ઉદ્ઘર્ષણાઓથી ઉદ્ઘર્ષિત કર

टीका--"तए णं पएसी" इत्यादि—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्-हे भदन्त ! अनिच्छेकानाम्-अवसरज्ञानां, दक्षाणाम्-चतुराणां, बुद्धानाम्-तत्त्वज्ञानां, कुशलानाम्-कर्तव्याकर्तव्यनिर्णायकानां, महामतीनाम्-औत्पत्तिक्यादिबुद्धियुक्तानां विनीतानाम्-शिष्टानां, विज्ञानप्राप्तानाम्-सदसद्विवेकसम्पन्नानाम्, उपदेशलब्धानां प्राप्तगुरूपदेशानाम्, युष्माकम् अस्याः उपस्थितायाः, महाति महालयायाः अतिविशालायाः परिषदः सभाया मध्ये उच्चावचैः-नानाविधैः, आक्रोशैः- कठिनवचनरूपैः, आक्रोष्टुम्-संलपितुम्, उच्चावचाभिः-नानाविधाभिः उद्घर्षणाभिः-अनादर सूचकवचनलक्षणाभिः, उद्घर्षयितुम्-वक्तुम्, उच्चावचाभिः-नानाविधाभिः, निर्भर्त्सनाभिः-अवहेलनाभिः, निर्भर्त्सयितुम् अवहेलयितुम-उच्चावचाभिः-नानाप्रकाराभिःनिश्छोटनाभिः-नीरसवचनावलीभिः, निश्छोटयितुम्-संभाषितुम, अहं किं युक्तः ?-युक्तोऽस्मि-योग्योऽस्मि ? सभासमक्षमेतादृग्वचनरूपो व्यवहारो मत्कृते भवादृशानां महापुरुषाणां नोचित इति भावः ॥ सू० १४७ ॥

मूलम्—तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ?। जाणामि चत्तारि परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा-खत्तियपरिसा १, गाहावइपरिसा२, माहणपरिसा ३, इसिपरिसा ४। जाणासि णं तुमं पएसी! एयासि चउण्हं परिसाणं कस्स का दंडणीई पण्णत्ता ? हंता !! जाणामि-जे णं खत्तियपरिसाए अवरज्झइ से णं हत्थच्छिण्णए वा

निच्छोडणाहिं निच्छोडित्तए) नाना प्रकार की अवहेलनारूप निर्भर्त्सनाओं द्वारा मेरी निर्भर्त्सना करना तथा नानाप्रकार की नीरसवचनरूप निश्छोटनाओं द्वारा मुझ से बोलना क्या योग्य है ? अर्थात् आप जैसे महापुरुषों को सभा के समक्ष ऐसा वचनरूप व्यवहार मेरे साथ करना उचित नहीं है।

टीकार्थ—स्पष्ट है ॥ सू० १४७ ॥

(एवं उच्चावयाहिं निब्भंछणाहिं निब्भंछित्तए, उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडित्तए) અનેક પ્રકારના અવહેલનારૂપ નિર્ભત્સનાઓવડે મારી ભર્ત્સના કરવી તેમજ અનેક પ્રકારની નીરસવચનરૂપ નિશ્છોટનાઓ વડે મને ગમે તેમ બોલવું શું યોગ્ય છે ? મતલબ કે તમારા જેવા મહાપુરુષોને સભાની વચ્ચે આ જાતના વચનોનું ઉચ્ચારણ કરવું નહિ શોભે. ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે ॥ સૂ૦ ૧૪૭ ॥

पायच्छिण्णए वा सीसच्छिण्णए वा सूलाइए वा एगाहच्चे कूडाहच्चे जीवियाओ ववरोविज्जइ ? । जे णं गाहावइपरिसाए अवरज्झइ से णं तएण वा वेढेण वा पलालेणं वा वेढित्ता अगणिकाएणं झामिज्जइ २। जे णं माहणपरिसाए अवरज्झइ से णं अणिट्ठाहिं अकंताहि जाव अमणामाहिं वग्गूहिं उवालंभित्ता कुंडियालंछणए वा सुणगलंछणए वा कीरइ, निव्विसए वा आणविज्जइ ३ । जे णं इसिपरिसाए अवरज्झइ से णं णाइअणिट्ठाहिं जाव णाइ अमणामाहिं वग्गूहिं उवालब्भइ ४ । एवं च ताव पएसी ! तुमं जाणासि तहावि णं तुम ममं वामं वामेणं, दंडं दंडेणं, पडिकूलं पडिकूलेणं, पडिलोमं पडिलोमेणं विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टसि ? ॥सू० १४८॥

छाया—ततः खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानमेवमवादीत्—जानामि खलु त्वं प्रदेशिन् ! कति परिषदः प्रज्ञप्ताः? । जानामि चतस्रः परिषदः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—क्षत्रियपरिषत् १, गाथापतिपरिषत् २, ब्राह्मणपरिषत्

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (केसी कुमारसमणे) केशीकुमारश्रमणने (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजा से ऐसा कहा—(जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ?,) हे प्रदेशिन् ! तुम जानते हो—कितनी परिषदाएँ कही गई हैं ? प्रदेशीने कहा—(जाणामि चत्तारि परिसाओ पण्णत्ताओ) हां भदन्त ! जानता हूं—चार परिषदा कही गई है। (तं जहा—

'तएणं केसीकुमारसमणे' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएणं) त्यार पछी (केसी कुमारसमणे) केशी कुमार श्रमणे (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं. (जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ?) हे प्रदेशिन् ! तमे जाणो छो के परिषदाओ केटली कहेवाय छे ? प्रदेशीए कह्युं (जाणामि चत्तारि परिसाओ पण्णत्ताओ) हा जी, भदंत ! हुं जाणुं छुं के चार जातनी परिषदाओ कहेवामां आवी छे. (तं जहा, खत्तियपरिसा १, गाहावइपरिसा २, माहणपरिसा ३, इसिपरिसा ४) जे आ प्रमाणे छे-क्षत्रिय परिषदा, १ गाथापति परिषदा २, ब्राह्म

३, ऋषिपरिषत् ४। जानासि खलु त्वं प्रदेशिन् ! एतासां चतसृणां परिषदां (मध्ये) कस्य का दण्डनीतिः प्रज्ञप्ता ? हन्त ! ! जानामि- यः खलु क्षत्रिय परिषदि अपराध्यति स खलु हस्तच्छिन्नको वा पादच्छिन्नको वा शीर्ष च्छिन्नको वा शूलायितो वा एकाहत्यं कूटाहत्यं जीवितात् व्यपरोप्यते ?। यः खलु गाथापतिपरिषदि अपराध्यति स खलु त्वचा वा वेष्टेन वा पला लेन वा वेष्टयित्वा अग्निकायेन ध्मात्यते २। यः खलु ब्राह्मणपरिषदि

खत्तियपरिसा१ गाहावइपरिसा२, माहणपरिसा३, इसिपरिसा४) जो इस प्रकार से हैं. क्षत्रियपरिषदा१, गाथापतिपरिषदा२, ब्राह्मणपरिषदा३ और ऋषिपरिषदा४, (जाणासि णं तुमं पएसी ! एयासि चउण्ह परिसाणं कस्स का दंडणीई पण्णत्ता) हे प्रदेशिन् ! तुम जानते हो-इन चार परिषदाओं के बीच में किस अपराधी के लिये किस प्रकार दण्डनीति कही गई है ? (हंता, जाणामि-जे णं खत्तियपरिसाए अवरज्झइ से णं हत्थच्छिण्णए वा पायच्छिण्णए वा, सीसच्छिण्णए वा सूलाइ वा एगाहच्चे, कूडाहच्चे जीवियाओ ववरो- विज्जइ) हां जानता हूं-क्षत्रियपरिषदा में-क्षत्रिय वर्ग जो कोई क्षत्रीय अपने वर्ग में जिस किसी का भी अपराध करता है उसका या तो हाथ काट दिया जाता है, अथवा पग काट दिया जाता है. या शिर काट दिया जाता है, या शूली पर उसे चढा दिया जाता है, या उसे एक ही घाव से या पर्वत ऊपर से गिरा देने से प्राणरहित कर दिया जाता है। (जे णं गाहावइपरि- साए अवरज्झइ-से णं तएण वा वेढेण वा पलालेणं वा वेढित्ता अगणिकाए णं ज्झामिज्जइ२) गाथापति परिषदा में-गृहपतिवर्ग में-जो कोई गाथापति जिस किसी क

પરિષદા ૩, અને ઋષિ પરિષદા ૪, (जाणासि णं तुमं पएसी ! एयासिं चउण्हं परिसाणं कस्स का दंडणीई पण्णत्ता) હે પ્રદેશિન્ ! તમે જાણો છો કે આ ચાર પરિષદાઓમાં કઈ જાતની દંડનીતિ કહેવામાં આવી છે ? (हंता, जाणामि- जेणं खत्तियपरिसाए अवरज्जइ सेणं हत्थच्छिण्णए वा पायच्छिण्णए वा सीसच्छिण्णए वा सूलाइवा, एगाहच्चे कूडाहच्चे जीवियाओ ववरोविज्जइ) હાજી, જાણું છું. ક્ષત્રિય પરિષદામાં ક્ષત્રિયવર્ગમાં જો કોઈ ક્ષત્રિય પોતાની જાતિમા કે પરજાતિમાં ગમે તેનો અપરાધ (ગુનો) કરે છે તો તેનો કાતો હાથ કાપી નાખવા માં આવે છે, અથવા પગ કાપી નાખવામાં આવે છે, કે માથું કાપી નાખવામાં આવે છે કે તેને એક જ ઘામાં મારી નાખવામાં આવે છે કે પર્વત પરથી તેને ધકેલીને પ્રાણુરહિત કરી નાખવામાં આવે છે. (जे णं गाहावइ परिसाए अवरज्जइ-से णं तएणं वा, वेढेण वा, पलालेणं वा वेढित्ता अगणिकाएणं जामिज्जइ २)

अपराध्यति स खलु अनिष्टाभिः अकान्ताभिः यावत् अमनोऽमाभिः वाग्भिः उपालभ्य कुण्डिलाञ्छनको वा शुनकलाञ्छनको वा क्रियते, निर्विषयो वा आज्ञाप्यते ३ । यः खलु ऋषिपरिषदि अपराध्यति स खलु नात्यनिष्टाभिः यावत्-नात्यमनआमाभिः वाग्भिः उपलभ्यते ४। एवं च तावत् प्रदेशिन् !

भी अपराध करता है, वह वृक्षादि की छाल से अथवा तृणादिनिर्मित रस्सी से, या पलाल से परिवेष्टित किया जाकर अग्नि से जला दिया जाता है- (जे ण माहणपरिसाए अवरज्झइ, से णं अणिट्ठयाहिं अकंताहिं जाव अमणामाहिं वग्गूहिं उवालंभित्ता कुंडियालंछणए वा सुणगलंछणए वा कीरइ, निव्विसए वा आणविज्जइ) ब्राह्मण परिषदा में जो ब्राह्मण जिस किसी का भी अपराध करता है, वह अनिष्ट-सामान्यरूप से अनभिलषित, अकान्त-विशेषरूप से अनभिलषित-अप्रिय-प्रेमवर्जित, अमनोज्ञ असुन्दर एवं अमन आम-मनः प्रतिकूल ऐसी वाणियों से उपालंभ युक्त किया जाता है, तथा तप्तलोहे के तकुये द्वारा कमण्डलु के जैसे आकार वाले लांछन से ललाट में चिह्नित किया जाता है, अथवा कुत्ते के पग के जैसे आकारवाले चिह्न से लांछित किया जाता है, अथवा देश से बाहर निकाल दिया जाता है. तुम हमारे देश से निकल जाओ ऐसी आज्ञा उसके लिये दी जाती है३. (जे ण इसिपरिसाए अवरज्झइ से णं णाइ अणिट्ठाहिं जाव णाइ अमणामाहिं वग्गूहिं उवालब्भइ ४) तथा जो ऋषि परिषदा में-ऋषिवर्ग में-ऋषि

ગાથાપતિ પરિષદામાં-ગૃહપતિ વર્ગમાં જે કોઈ ગાથાપતિ ગમે તેનો અપરાધ કરે તો તે વૃક્ષ વગેરેની છાલથી અથવા તૃણ વગેરેથી નિર્મિત દોરી કે પલાલથી પરિવેષ્ટિત કરાઈને અગ્નિવડે સળગાવવામાં આવે છે. (जे णं माहणपरिसाए अवरज्जइ, से णं अणिट्ठयाहिं अकंताहिं जाव अमणामाहिं वग्गूहिं उवालंभित्ता कुडियालंछणए वा सुणगलंछणए वा कीरइ निव्विसए वा आणविज्जइ) બ્રાહ્મણ પરિષદામાં જે બ્રાહ્મણ ગમે તેનો અપરાધ કરે છે તો તે અનિષ્ટ-સામાન્ય રૂપથી, અનભિલાષિત, અકાંત-વિશેષરૂપથી અનભિલષિત, યાવત્ અપ્રિય-પ્રેમવર્જિત, અમનોજ્ઞ-અસુંદર અને અમન આમ મનઃપ્રતિકૂલ એવી વાણીઓથી ઉપાલંભયુકત કરવામાં આવે છે તેમજ તપ્ત થયેલ લોખંડના સળિયા વડે કમંડલું જેવા આકારથી યુક્ત ચિહ્નથી લલાટમાં ચિન્હિત કરવામાં આવે છે. અથવા કૂતરાના પગ જેવા આકારવાળા ચિન્હથી લાંછિત કરવામાં આવે છે. અથવા દેશ બહાર કરવામાં આવે છે તમે અમારા દેશથી જતા રહો. એવી આજ્ઞા તેને આપવામાં આવે છે. ૩, (जेणं इसिपरिसाए अवरज्जइ से णं णाइ अणिट्ठाहिं जाव णाइ अमणामाहिं वग्गूहिं उवालब्भइ ४)

त्वं जानासि तथापि खलु त्वं मा वामवामेन, दण्डदण्डेन, प्रतिकूलप्रतिकूलेन, प्रतिलोम प्रतिलोमेन, विपर्यासविपर्यासेन वर्तसे ॥ सू० १४८॥

टीका—"तए णं केसी" इत्यादि—ततः तदनन्तरं खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम् एव—वक्ष्यमाणप्रकारं वचनम् अवादीत्—कथितवान्—हे प्रदेशिन् ! त्वं जानासि किं परिषदः—वर्गाः कति—कतिसंख्यकाः प्रज्ञप्ताः ?। प्रदेशी राजा प्राह—जानामि—परिषदश्चतस्रः—चतुःसंख्यकाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—ता यथा—क्षत्रियपरिषत् १, गाथापतिपरिषत् २, ब्राह्मणपरिषत् ३, ऋषिपरिषत् ४। केशी कुमारश्रमणः पृच्छति—हे प्रदेशिन् ! जानामि खलु

जिस किसी का भी अपराध करता है वह न अति अनिष्ट, यावत्—न अति अकांत, न अति अप्रिय, न अति अमनोज्ञ और न अति अमन आम ऐसी वाणियों द्वारा उपालंभयुक्त किया जाता है. (एवं ताव पएसी ! तुमं जाणासि—तहा वि णं तुमं ममं वामं वामेणं, दंडं दंडेणं, पडिकूल पडिकूलेणं,पडिलोमं पडिलोमेणं, विवज्जासं विवज्जासेणं वट्टसि) हे प्रदेशिन तुम इस पूर्वोक्त प्रकारवाली नीति को—दण्ड नीति को—निश्चय से जानते हो, फिर भी तुम मेरे प्रतिवामवामरूप से अति विरुद्धव्यवहार से, दण्ड दण्डरूप से—दण्डवत् स्तब्धरूप व्यवहार से—अति अहङ्कार युक्त व्यवहार से, प्रतिकूल प्रतिकूलरूप से अति विपक्षी भूत व्यवहार से, प्रतिलोमप्रतिलोम से—अतिविपरीतरूप व्यवहार से और विपर्यास विपर्यास से—सर्वथा विरुद्धरूप व्यवहार से प्रवृत्त हो रहे हो।

टीकार्थ स्पष्ट है ॥१४८॥

તેમજ જે ઋષિ પરિષદામાં-ઋષિવર્ગમાં કોઇ પણ ઋષિ અપરાધ કરે છે તે ન અતિ અનિષ્ટ યાવત્ ન અતિ એકાંત ન અતિ અમનોજ્ઞ અને ન અતિ અમન આમ એવી વાણીઓ વડે ઉપાલંભયુકત કરવામા આવે છે. (एवं ताव पएसी ! तुमं जाणासि —तहा वि णं तुमं ममं वामं वामेणं दंडं दंडेणं पडिकूलं, पडिकूलेणं, पडिलोमं पडिलोमेणं. विवज्जासं विवज्जासेणं वट्टसि) હે પ્રદેશિન્ ! તમે આ પૂર્વોકત નીતિને–દંડનીતિને–સારી રીતે જાણો છો, છતાં એ તમે મારા પ્રતિ વામ વામરૂપથી-અતિ વિરૂદ્ધ વ્યવહારથી, દણ્ડ દણ્ડરૂપથી-દણ્ડવત્ સ્તબ્ધરૂપ વ્યવહારથી અતિ અહંકારયુકત વ્યવહારથી, પ્રતિકૂળ, પ્રતિકૂળરૂપથી અતિ વિપક્ષિ વ્યવહારથી પ્રતિલોમ પ્રતિલોમથી-અતિ વિપરીતરૂપ વ્યવહારથી અને વિપર્યાસથી સર્વથા વિરૂદ્ધરૂપ વ્યવહારથી પ્રવૃત્ત થઇ રહ્યા છો. ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે. ॥ સૂ. ૧૪૮ ॥

त्वं ? एतासां चतसृणां परिषदां मध्ये कस्य अपराधिनः का-किंप्रकारा दण्डनीतिः-दण्डविधानरूपा प्रज्ञप्ता-कथिता ? । प्रदेशी प्राह-हन्त ! जानामि तदेवाह-क्षत्रियपरिषदि-क्षत्रियवर्गे यः खलु कश्चित क्षत्रियः स्ववर्गे परवर्गे वा यस्य कस्यापि, अपराध्यति-अपराधं करोति स खलु हस्तच्छिन्नकः-छिन्नहस्तः क्रियते, वा-अथवा पादच्छिन्नकः, अथवा शीर्षच्छिन्नकः, वा अथवा शूलायितः-शूलारोपितः। वा-अथवा एकाहत्यम्-एकाघातेन, कूटाहत्यं-पर्वतपातेन जीवितात्-प्राणेभ्यः व्यपरोप्यते-पृथक् क्रियते १। गाथापतिपरिषदि गृहपतिवर्गे यः खलु कश्चिद् गाथापति र्यस्य कस्यापि अपराध्यति स खलु त्वचा-वृक्षादित्वचा वा अथवा वेष्टेन तृणादिनिर्मितरज्ज्वा, वा अथवा पलालेन-प्रसिद्धेन वेष्टयित्वा-परिवेष्ट्य अग्निकायेन-अग्निना ध्मापयते-ज्वाल्यते २। ब्राह्मणपरिषदि-ब्राह्मणवर्गे यः खलु कश्चिद ब्राह्मणो यस्यकस्यापि अपराध्यति स खलु अनिष्टाभिः-सामान्यतोऽनभिलषिताभिः अकान्ताभिः-विशेषतोऽनभिलषिताभिः, यावच्छब्देन-"अप्रियाभि-प्रेमवर्जिताभिः-असुन्दरीभिः" इति सग्राह्यम्, अमनोऽमाभिः मनप्रतिकूलाभिः वाग्भिः-वाणीभिः उपालभ्य उपालम्भं दत्वा कुण्डिकालाञ्छनकः-कुण्डिका-कमण्डलुः तदाकारक लाञ्छनकं-तप्तशलाकया ललाटे चिह्नं यस्य स तथाभूतः, वा अथवा शुनकलाञ्छनकः-ललाटे शुनकपदाकारक चिह्नं यस्य स तथाभूतः क्रियते, वा-अथवा निर्विषयः-निर्गमितो यथा भवेत्तथा आज्ञाप्यते-'त्वमस्माद्देशान्निर्गच्छ' इत्याज्ञा तस्मै दीयत इति भावः ।३। ऋषिपरिषदि-ऋषिवर्गे यः खलु कश्चित ऋषिर्यस्य कस्यापि अपराध्यति स खलु नात्य निष्टाभिः यावत्-यावच्छब्देन-नात्यकान्ताभिः नात्यप्रियाभिः, नात्यमनोज्ञाभि" इति सग्राह्यम्, नात्यमनोऽमाभिः वाग्भिः-वाणीभिः उपलभ्यते-तस्मै उपालम्भो दीयते इति भावः ४। केशी कुमारश्रमणः कथयति-हे प्रदेशिन् एवं-पूर्वोक्तप्रकारां दण्डनीतिं तावत्-निश्चयेन त्वं जानासि तथापि त्वं मां प्रति वामवामेन-अतिशयवामेन-अतिविरुद्धेन व्यवहारेण, एवं दण्डदण्डेन-अतिदण्डरूपेण-दण्डवत्स्तब्धरूपेण-अत्यहङ्कारयुक्तेनेत्यर्थः। प्रतिकूलं प्रतिकूलेन-अप्रतिकूलेन-विपक्षीभूतेनेत्यर्थः प्रतिलोमप्रतिलोमेन-अतिप्रतिलोमेन-अतिविपरीतेनेत्यर्थः विपर्यासविपर्यासेन अतिविपर्यासेन-सर्वथा विरुद्धेनेत्यर्थः, एतादृशेन व्यवहारेण वर्तसे ॥सू० १४८॥

मूलम्—तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-एवं खलु अहं देवाणुप्पिएहिं पढमिल्लुएणं चेव वागरणेणं संलत्ते तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था—जहा जहा णं एयस्स पुरिसस्स वामं वामेणं जाव विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिस्सामि तहा तहा णं अहं नाणं च नाणोवलंभं च चरणं च चरणोवलंभं च दंसणं च दंसणोवलंभं च जीवं च जीवोवलंभं च उवलभिस्सामि, त एएणं अहं कारणेणं देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं जाव विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिए ॥सू० १४९॥

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत् एवं खलु अहं देवानुप्रियैः प्राथमिकेनैव व्याकरणेन संलपितः तदा खलु मम अयमेतद्रूप आध्यात्मिकः यावत् संकल्पः समुदपद्यत, यथा यथा खलु

'तए णं पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (पएसी राया) प्रदेशी राजाने केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) केशी कुमारश्रमण से ऐसा कहा—(एवं खलु अहं देवाणुप्पिएहिं पढमिल्लुएणं चेव वागरणेणं संलत्ते) हे भदन्त ! आप देवानुप्रिय के द्वारा मैं सर्व प्रथम बोला गया हूं अर्थात्—आप देवानुप्रिय ! मुझ से सब से पहिले बोले हैं—आप के साथ मेरी यह सब से प्रथम भेट है, इसके पहिले हमारा आपका कोई मिलन नहीं हुआ है (तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था) अतः जब

'तए णं पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यारपछी (पएसी राया) प्रदेशी राजाએ (केसिं कुमार समणं एवं वयासी) કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું–(एवं खलु अहं देवाणुप्पिएहिं पढमिल्लुएणं चेव वागरणेणं संलत्ते) હે ભદંત ! આપ દેવાનુપ્રિયવડે હું સૌથી પહેલાં બોલાયો છું એટલે કે આપ દેવાનુપ્રિય ! મારી સાથે સૌથી પહેલા બોલ્યા છો. આપની સાથે આ મારી પહેલી મુલાકાત છે. એના પહેલાં આપની મારી સાથે ભેટ નહોતી થઈ. (तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था) એથી જ્યારે તમે મારી સાથે સર્વ પ્રથમ આ પ્રમાણે

एतस्य पुरुषस्य वामवामेन या तु विपर्यासविपर्यासेन वर्तिष्ये तथा नथ खलु अहं ज्ञानं च ज्ञानोपालम्भं च चरणं च चरणोपालम्भं च दर्शनं च दर्शनोंपालम्भं च जीवं च जीवोपालम्भं च उपलप्स्ये. तत् एतेनाहं कारणेन देवानुप्रियाणा वामवामेन यावद् विपर्यासविपर्यासेन वर्तितः ॥सू० १४९॥

टीका—'तए णं पएसी' इत्यादि—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिन कुमारश्रमणमेवमवादीत्—एवं खलु अहं देवानुप्रियैः—भवद्भिः प्राथमिकेनैव—व्याकरणेन—संलापेन, संलपितः—संभाषितः, तदा खलु मम अयमेतद्रूप—

आप मुझ से सर्व प्रथम इस प्रकार से बोलेतो मेरे मन में यह इस प्रकार का यावत् संकल्प उत्पन्न हुआ कि (जहा २ णं एयस्स पुरिसस्स वामं वामेण जाव विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिस्सामि, तहा २ णं अहं नाणं च नाणोवलंभं च चरणोलंवभ च. दंसणं च दंसणोवलंभं च जीवं च जीवोवलंभं च उवलंभिस्सामि) मैं जैसा इस पुरुष के साथ वाम वामरूप से यावत्—दण्ड दण्डरूप से, प्रतिकूल प्रतिकूलरूप से प्रतिलोम प्रतिलोमरूप से एवं विपर्यास विपर्यासरूप से व्यवहार करूंगा, वैसा वैसा २ मैं ज्ञान को—पदार्थ ज्ञान को ज्ञानोपालम्भको—ज्ञान की प्राप्ति को. चारित्र को, चारित्रके लाभ को, तत्त्वार्थश्रद्धानरूप सम्यक्त्व को, दर्शनलाभ को जीव के स्वरूप को, और जीव के स्वरूपकी प्राप्ति को पा जाऊंगा (तं एएणं अहं कारणेणं देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं जाव विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिए) अतः इसी कारण से आप देवानुप्रिय के साथ मैं अतिविरुद्धरूपव्यवहार से यावत् सर्वथा विरुद्धरूप व्यवहार से प्रवर्तित हुआ हूं।

બોલ્યા તે મારા મનમાં આ જાતનો યાવત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે (जहा २ णं एयस्स पुरिसस्स वामं वामेणं जाव विवच्चास विवच्चासेण वट्टिस्सामि, तहा २ णं अहं नाणं च नाणोवलंभं च चरणं च चरणोवलंभं च. दंसणं च दंसणोवलंभं च जीवं च. जीवोवलभं च उवलंभिस्सामि) હું જેમ જેમ આ પુરૂષની સાથે વામ વામરૂપથી યાવત-દંડદંડરૂપથી પ્રતિકૂળપ્રતિકૂળરૂપથી, પ્રતિલોમ પ્રતિલોમ રૂપથી અને વિપર્યાસ વિપર્યાસરૂપથી વ્યવહાર કરીશ—આચરણ કરીશ તેમ તેમ હું જ્ઞાનને, પદાર્થ જ્ઞાનને, જ્ઞાનોપલભને જ્ઞાનપ્રાપ્તિને ચારિત્રને, ચારિત્ર લાભને, તત્ત્વાર્થ શ્રદ્ધાનરૂપ સમ્યક્ત્વને, દર્શનલાભને, જીવના સ્વરૂપને અને જીવના સ્વરૂપની પ્રાપ્તિને મેળવીશ. (तं एएणं अहं कारणेणं देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं जाव विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिए) એટલા માટે આપ દેવાનુપ્રિયની સાથે મેં અતિ વિરૂદ્ધરૂપ વ્યવહારથી યાવત્ સર્વથા વિરૂદ્ધરૂપ વ્યવહારથી પ્રવર્તિત થયો છું.

वक्ष्यमाणप्रकारकः, आध्यात्मिकः–आत्मगतो विचारः यावत्–यावच्छब्देन–'चिन्तितः, कल्पितः, प्राथितः, मनोगतः' इति ग्राह्यम्। संकल्पः–विचार समुदपद्यत–संजातः, तदेवाह–यथा यथा खलु अहम् एतस्य पुरुषस्य वाम वामेन–अतिविरुद्धेन व्यवहारेण यावत्–यावच्छब्देन–'दण्डदण्डेनः प्रतिकूल प्रतिकूलेनः प्रतिलोमप्रतिलोमेन' इति संग्राह्यम्, विपर्यासे–विपर्यासेन' एत- मर्थोऽस्यव्यवहितपूर्वसूत्रे गतः, वर्तिष्ये तथा तथा खलु अहं ज्ञानं च–पदार्थ- ज्ञानं च ज्ञानोपालम्भं–ज्ञानप्राप्तिं च च–पुनः चरणं–चारित्रं चरणोपालम्भं चारित्रलाभं च–पुनः दर्शनं–तत्त्वार्थश्रद्धानरूपं सम्यक्त्वं दर्शनोपालम्भं– दर्शनलाभं च–पुनः जीवो–जीवस्वरूपं –जीवोपालम्भं–जीवस्वरूपः प्राप्तिम् उपलप्स्ये–प्राप्स्यामि: तद् एतेन खलु कारणेन अहं देवानु- प्रियाणां समीपे वामवामेन–प्रतिविरुद्धेन व्यवहारेण यावत् विपर्यासविपर्या- सेन–सर्वथाविरुद्धेन व्यवहारेण वर्तितः–अहं वामवामादिकं व्यवहारं वर्तितवानिति भावः। ॥ सू० १४९ ॥

मूलम्—तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–जाणासि णं ! कइ ववहारगा पण्णत्ता? हंता ! ! जाणामि चत्तारि ववहारगा पण्णत्ता, तं जहा–देइ नामेगे णो सण्णवेइ १, सण्णवेइ नामेगे नो देइ २। एगे देइ वि सण्णवेइवि ३। एगे णो देइ णो

टीकार्थ स्पष्ट है. इस सूत्र का भावार्थ ऐसा है कि प्रदेशी राजाने केशी कुमार श्रमण से अपने द्वारा किये गये प्रतिकूल व्यवहार के प्रति ऐसा कहा हे भदन्त ! आप की और हमारी यह प्रथम भेट है. इसमें जो आपने मुझसे संभाषण किया–उससे मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि मै इनके प्रति जैसा २ टेढा चलूंगा–विरुद्ध व्यवहारकरूंगा–वैसा २ मुझे इनसे ज्ञान आदि प्राप्त होगा अतः मैने आपके साथ इस प्रकार का व्यवहार किया है ॥ सू० १४९॥

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમાર શ્રમણને પોતાના વડે આચરેલ પ્રતિકૂલ વ્યવહારને લઈને આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે હે ભદંત ! આપની અને મારી આ પહેલી ભેટ છે. આમાં જે આપશ્રીએ મારી સાથે સંભાષણ કર્યું તેથી મને નિષ્કર્ષરૂપે આ જાતની પ્રતીતિ થઈ કે હું તમારા પ્રતિ જેમ જેમ વિરુદ્ધ બોલીશ તેમ તેમ મને તમારાથી જ્ઞાન વગેરેની પ્રાપ્તિ થશે. આ કારણથી જ મેં આપની સાથે આ જાતનું આચરણ કર્યું છે. ॥સૂ૦૧૪૯॥

सण्णवेइ ४। जाणासि णं तुमं पएसी ? एएसिं चउण्हं पुरिसाणं के ववहारी के अववहारी ? ! हंता ! ! जाणामि तत्थ णं जे से पुरिसे देइ णो सण्णवेइ सेणं पुरिसे ववहारी, तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ सण्णवेइ से णं पुरिसे ववहारी २, तत्थ णं जे से पुरिसे देइ वि सण्णवेइ वि से पुरिसे ववहारी ३, तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ णो सण्णवेइ से णं अववहारी ४। एवामेव तुमंपि ववहारी, णो चेव णं तुमं पएसी ! अववहारी ॥सू० १५०॥

छाया—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिराजमेवमवादीत्—जानासि खलु त्वं प्रदेशिन् ! कति व्यवहारकाः प्रज्ञप्ताः ? । हन्त ! ! जानामि—चत्वारो व्यवहारकाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा—ददाति नामैकः नो संज्ञापयति १, संज्ञापयति नामैको नो ददाति २, एको ददाति अपि संज्ञायति अपि ३,

---

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (केसी कुमारसमणे) केशीकुमारश्रमणने (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजा से ऐसा कहा—(जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ ववहारगा पण्णत्ता ?) हे प्रदेशिन् ! व्यवहार कितने होते हैं. क्या तुम इस बात को जानते हो ? (हंता, जाणामि) हां, भदंत ! जानता हुं (चत्तारि ववहारगा पण्णत्ता) व्यवहार चार कहे गये हैं। (तं जहा—देइ, नामेगे, णो सण्णवेइ १ सण्णवेइ नामेगे णो देइ २, एगे देइ वि, सण्णवेइ

'तएणं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यार पछी (केसीकुमारसमणे) केशी कुमार श्रमणे (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं—(जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ ववहारगा पण्णत्ता ?) हे प्रदेशिन् ! शुं तमे जाणो छो के व्यवहार केटली जातना होय छे ? (हंता, जाणामि) हां, भदंत ! जाणुं छुं (चत्तारि ववहारगा पण्णत्ता) व्यवहार चार कहेवाय छे. (तं जहा देइ, नामेगे, णो सण्णवेइ १, सण्णवेइ नामेगे णो देइ २, एगे देइ वि, सण्णवेइ वि ३, एगे

एको नो ददाति नो संज्ञापयति ४ । जानासि खलु त्वं प्रदेशिन् ! एतेषां चतुर्णां पुरुषाणां को व्यवहारी ? कोऽव्यवहारी ? हन्त !! जानामि । तत्र खलु यः स पुरुषो ददाति नो संज्ञापयति स खलु पुरुषो व्यवहारी । तत्र खलु यः स पुरुषो नो ददाति संज्ञापयति स खलु पुरुषो व्यवहारी । तत्र खलु यः स पुरुषो ददात्यपि संज्ञापयत्यपि स पुरुषो व्यवहारी । तत्र खलु

वि ३, एगे णो देइ णो सण्णवेइ ४, जो इस प्रकार से हैं-एक कोई पुरुष किसी वस्तु को किसी के लिये देता तो है. पर उसके साथ वह मिष्ट भाषण द्वारा अच्छा संतोषप्रदव्यवहार नहीं करता है १, एक पुरुष मिष्ट भाषण द्वारा दूसरे के प्रति संतोषप्रद व्यवहार तो करता है, परन्तु देता कुछ भी नहीं है २, एक पुरुष देता भी है और लेने वाले के प्रति मिष्टवचनद्वारा संतोषप्रद व्यवहार भी करता है ३, एक पुरुष ऐसा होता है जो न देता है और न मिष्टवचन द्वारा संतोषप्रद व्यवहार ही करता है-४, (जाणासि णं तुमं पएसी ! एएसिं चउण्हं पुरिसाणं के ववहारी के अववहारी ?) केशी ने प्रदेशी से पूछा—हे प्रदेशिन् ! तुम जानते हो इन चार व्यवहारी पुरुषों के बीच में कौन व्यवहारी है और कौन अव्यवहारी है? तब प्रदेशीने केशिकुमार श्रमण से कहा—(हंता, जाणामि-तत्थ णं जे से पुरिसे देइ णो सण्णवेइ से णं पुरिसे ववहारी?) हां, जानता हुं, इनमें जो पुरुष देता है और सम्यग् आलाप से संतोष उत्पन्न नहीं कराता है वह पुरुष व्यवहारी कहा जाता है (तत्थ णं जे से पुरिसो णो

णो देइ णो सण्णवेइ ४) જે આ પ્રમાણે છે. એક માણસ કોઇ પણ વસ્તુ કોઇને આપે તો છે પણ તેની સાથે તે મિષ્ટ સંભાષણવડે અચ્છો સંતોષપ્રદ વ્યવહાર કરતો નથી ? એક માણુસ મિષ્ટ ભાષણવડે બીજાની સાથે સંતોષપ્રદ વ્યવહાર તો કરે છે પણ આપતો કંઇ નથી ૨, એક માણુસ આપે પણ છે અને લેનાર માણુસને મિષ્ટ વચનો વડે સંતોષ પણ આપે છે. ૩, એક માણસ એવા પણ હોય છે કે જે કંઇ પણ આપતો નથી અને મિષ્ટ વચનોથી સંતોષજનક વ્યવહાર પણ કરતો નથી (जाणासि तुमं पएसी ! एएसिं चउण्हं पुरिसाणं के ववहारी के अववहारी ?) કેશીએ પ્રદેશીને પ્રશ્ન કર્યો કે હે પ્રદેશિન્ ! તમે જાણો છો કે આ ચાર વ્યવહારી છે ? ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યું. (हंता, जाणामि, तत्थ णं जे से पुरिसे देइ णो सण्णवेइ से णं पुरिसे ववहारी ?) હાં, જાણું છું. આમાં જે માણુસ આપે છે અને સારા વચનોથી સંતોષ આપતો નથી તે પુરૂષ વ્યવહારી કહેવાય છે. (तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ सण्णवेइ से णं पुरिसे ववहारी २)

यः स पुरुषो नो ददाति नो संज्ञापयति स खलु अव्यवहारी। एवमेव त्वमपि व्यवहारी, नो चैव खलु त्वं प्रदेशिन्! अव्यवहारी ॥सू० १५०॥

टीका—"तए णं केसीकुमारसमणे" इत्यादि--ततः--अनन्तरोक्तप्रकारेण वर्त्तनानन्तरं खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिराजम् एवमवादीत्—

देइ सण्णवेइ से णं पुरिसे ववहारी२) तथा जो पुरुष देता नहीं है किन्तु सम्यग् आलाप से संतोष उत्पन्न करता है वह पुरुष व्यवहारी है। (तत्थ णं जे से पुरिसे देइ वि, सण्णवेइ वि, से पुरिसे ववहारी३) तथा जो पुरुष देता भी है और सम्यक् आलाप द्वारा संतोष भी उत्पन्न कराता है वह पुरुष व्यवहारी है। (तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ णो सण्णवेइ से पुरिसे से णं अववहारी) तथा जो पुरुष न देता है और न सम्यक् संभाषण द्वारा संतोष उत्पन्न करता हैं वह पुरुष अव्यवहारी है। (एवामेव तुमं पि ववहारी णो चेव णं तुमं पएसी! अववहारी) इसी तरह से अर्थात् भङ्गत्रयोक्त पुरुष, के बीच में एक भंग विशेष की तरह हे प्रदेशिन्! तुम भी व्यवहारी हो, चतुर्थ भङ्गोक्त पुरुष की तरह तुम अव्यवहारी नहीं हो—तात्पर्य कहने का यह है कि यद्यपि हे प्रदेशिन्! तुमने सम्यक् आलाप द्वारा सन्तुष्ट कर मुझसे व्यवहार नहीं किया है—फिर भी मेरे विषय में भक्ति और बहुमान तो किया ही है—अतः तुम आद्यभङ्गोक्त पुरुष की तरह व्यवहारी ही हो—अव्यवहारी नहीं हो।

તેમજ જે પુરૂષ આપતો નથી પણ સારા સંભાષણથી સંતોષ ઉત્પન્ન કરે છે તે વ્યવહારી છે. (तत्थ णं जे से पुरिसे देइ, वि, सण्णवेइ वि. से पुरिसे ववहारी.३) તેમજ જે પુરૂષ આપે પણ છે અને સમ્યક આલાપવડે સંતોષ પણ ઉત્પન્ન કરે છે તે પુરૂષ વ્યવહારી છે. (तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ णो सण्णवेइ से पुरिसे णं अववहारी) તેમજ જે પુરૂષ આપતો નથી તેમજ સમ્યક આલાપ પણ કરતો નથી એટલે કે સારા સંભાષણથી સંતોષ ઉત્પન્ન કરતો નથી તે પુરૂષ અવ્યવહારી છે. (एवामेव तुमं पि ववहारी णो चेव णं तुमं पएसी! अववहारी) આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ તમે પણ વ્યવહારી છો.

ચતુર્થ ભંગમાં કહ્યા મુજબ તમે અવ્યવહારી નથી. તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે હે પ્રદેશિન્! તમોએ સમ્યક્ આલાપરૂપ સારો વ્યવહાર મારી સાથે કર્યો નથી છતાએ મારા વિષયમાં ભક્તિ અને બહુમાન તો તમે કર્યાં છે એવી તમે આદ્યભંગોક્ત પુરૂષની જેમ વ્યવહારી જ છો. અવ્યવહારી નથી.

हे प्रदेशिन् त्वं जानासि खलु यत् कति-कियन्तो व्यवहारकाः-व्यवहाराः-प्रवृत्तयः प्रज्ञप्ताः?" इति प्रश्नानन्तरं प्रदेशी प्राह-हन्त! जानामि, तत्र ज्ञायमानविषयं प्रकाशयति-चत्वारः-चतुः संख्यकाः व्यवहाराः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-एकः-कश्चित् पुरुषः ददाति-किञ्चिद् वस्तु कस्मैचित् समर्पयति किन्तु न संज्ञापयति-सम्यगालापेन संतोषं नोत्पादयति १। एकः संज्ञापयति किंतु नो ददाति २। एको ददात्यपि संज्ञापयत्यपि ३। एको नो ददाति नो संज्ञापयति ४। इति चत्वारो भङ्गाः। तत्र केशी प्रदेशिनं पृच्छति-हे प्रदेशिन्! त्वं जानासि खलु एतेषां चतुर्णां पुरुषाणां दान-तदसंज्ञापन १-संज्ञापनाऽदान २-दानसंज्ञापनोभय ३-तदुभयराहित्यरूप ४ वृत्तिसम्पन्नानां मध्ये कः पुरुषो व्यवहारी? इति जानासि? इति प्रश्ने प्रदेशी प्राह-हन्त!! जानामि-तदेव दर्शयति "तत्थ ण" इत्यादिना-तत्र-भङ्गचतुष्टये खलु यः सः-प्रथमभङ्गोक्तः पुरुषः 'ददाति नो संज्ञापयति' सः-दान-तदसंज्ञापनसम्पन्नः खलु पुरुषः व्यवहारी कथ्यते १। एवं तत्र खलु यः सः-द्वितीयभङ्गोक्तः, 'नो ददाति नो संज्ञापयति'-संज्ञापनाऽदानसम्प-

---

टीकार्थ—जब केशिकुमारश्रमणने प्रदेशी राजा से ऐसा पूछा कि हे प्रदेशिन्! तुम जानते हो कि व्यवहार कितने प्रकार का होता है? इस प्रकार से पूछने का कारण यह हुआ कि प्रदेशी राजाने १४९ वें सूत्र में अपने द्वारा कृतव्यवहार के विषय में सफाई उपस्थित की है. केशीकुमारश्रमण के प्रश्न को सुनकर उसने कहा हां, भदन्त! जानता हूं व्यवहार चार प्रकार का होता है. एक व्यवहार में देनेवाला पुरुष किसी के लिये कोई वस्तु देता है परन्तु अपने सम्यक् आलाप से-बातचीत से वह उनके लिये संतोष उत्पन्न नहीं कराता है, दूसरे व्यवहार में देनेवाला

ટીકાર્થ—જ્યારે કેશી કુમાર શ્રમણે પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે પ્રશ્ન કર્યો કે હે પ્રદેશિન્! તમે જાણો છો કે વ્યવહાર કેટલા પ્રકારનો હોય છે? આ પ્રમાણે જે પ્રશ્ન કરવામાં આવ્યો છે તેનું કારણ એ છે કે પ્રદેશી રાજાએ ૧૪૯ મા સૂત્રમાં જે જાતનું આચરણ કર્યું છે તેના સંબંધમાં સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવ્યું છે. કેશી કુમાર શ્રમણના પ્રશ્નને સાંભળીને તેણે કહ્યું હાં ભદંત! જાણું છું. વ્યવહાર ચાર પ્રકારનો હોય છે પ્રથમ વ્યવહારમાં દાનકર્તા પુરુષ કોઈના માટે કોઈ વસ્તુ આપે છે, પણ પોતાના સમ્યક્ આલાપથી-સારી મીઠી વાતચીતથી તે સામેના માણસને સંતોષ આપતો નથી દ્વિતીય વ્યવહારમાં દાનકર્તા પુરુષ પોતાની મીઠી વાણીથી બીજાને

न्नः सः खलु पुरुषो व्यवहारी २, एवं तत्र यः सः तृतीयभङ्गोक्तः पुरुषः ददात्यपि संज्ञापयत्यपि' सः-दान-तत्संज्ञापनसम्पन्नः पुरुषो व्यवहारी ३।

पुरुष अपनी मिष्ट भाषणरूप प्रवृत्ति से दूसरे को संतोष तो उत्पन्न करा देता है, परन्तु अपनी वस्तु उसे देता नहीं है. तृतीय व्यवहार में देनेवाला अपनी वस्तु दे भी देता है और अपनी मिष्ट भाषणरूप प्रवृत्ति से उसे संतोष भी उत्पन्न करदेता है, चतुर्थ व्यवहार में-कोई देता भी नहीं है और संतोष भी उत्पन्न नही कराता है. इस प्रकार ये चार भङ्ग हैं। इन में केशीकुमारश्रमण प्रदेशी राजा से पूछते हैं-हे प्रदेशिन् ! तुम जानते हो कि इन चार-दान-तदसंज्ञापन, संज्ञापन दाने संज्ञापन उभय एवं तदुभय रहितरूप वृत्तिसंपन्न पुरुषों के मध्य में कौन पुरुष व्यवहारी है? तब प्रदेशीने कहा हां, भदन्त ! जानता हूं, इस भङ्गचतुष्टय में जो प्रथम भङ्गोक्त पुरुष है-देता तो है मिष्टभाषण द्वारा संतोष उत्पन्न नहीं कराता है-वह दान तदसंज्ञापन सम्पन्न पुरुष व्यवहारी कहा जाता हैं अर्थात् जो 'ददाति नो संज्ञापयति' इस भंगवाला है वह व्यवहारी है इसी तरह जो द्वितीयभङ्ग में कहा गया है संज्ञापयति, नो ददाति' वह संज्ञापना अदान संपन्नपुरुष व्यवहारी है. इसी प्रकार जो तृतीय भंग में कहा गया है 'ददात्यपि' संज्ञापयत्यपि' ऐसा वह दान तत्संज्ञासम्पन्न पुरुष व्यवहारी

સંતોષ આપી દે છે પણ પોતાની વસ્તુ સામેવાળા માણસને આપતો નથી. તૃતીય વ્યવહારમા દાનકર્તા પોતાની વસ્તુ આપી પણ દે છે અને પોતાની મધુર ભાષણરૂપ પ્રવૃત્તિથી તે સામેના માણસને સંતુષ્ટ પણ કરી દે છે. ચતુર્થ વ્યવહારમાં તે કોઈ પણ વસ્તુ યાચકને આપતો પણ નથી અને મધુર સંલાપથી સામેના માણસને સંતુષ્ટ પણ કરતો નથી. આ પ્રમાણે આ ચાર ભંગ છે એના સંબંધમા કેશી કુમારશ્રમણ પ્રદેશી રાજાને પ્રશ્ન કરે છે કે હે પ્રદેશિન્ ! તમે જાણો છો કે આ ચાર-દાન તદસંજ્ઞાપન, સંજ્ઞાપન, દાને સંજ્ઞાપન ઉભય અને તદુભય રહિતરૂપ વૃત્તિ સંપન્ન પુરુષોમા કોણ વ્યવહારી છે? ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યુ-હા ભદંત ! જાણું છું. આ ભંગ ચતુષ્ટયમા જે પ્રથમ ભંગોકત પુરૂષ છે-તે આપે તો છે પણ મિષ્ટ ભાષણવડે સંતોષ ઉત્પન્ન કરતો નથી તે દાન તદસંજ્ઞાપન સમ્પન્ન પુરૂષ વ્યવહારી કહેવાય છે. એટલે કે જે 'ददाति नो संज्ञापयति' આ ભંગવાળો છે તે વ્યવહારી છે આ પ્રમાણે જે દ્વિતીય ભંગ કહેલ છે 'संज्ञापयति, नो ददाति' તે સંજ્ઞાપના અદાન સંપન્ન પુરૂષ વ્યવહારી છે. આ પ્રમાણે જે તૃતીય ભંગમા કહેલ છે-ददात्यपि संज्ञापयत्यपि' એવો તે દાન તત્સંજ્ઞાપના સમ્પન્ન પુરૂષ વ્યવહારી છે. પણ જે ચતુર્થ

तत्र खलु यः सः–चतुर्थभङ्गोक्तः पुरुषः 'नो ददाति नो संज्ञापयति' सः–अदानासंज्ञापनोभयसम्पन्नः पुरुषः उभयविधव्यवहाररहिततया अव्यवहारी। एवमेव–भङ्गत्रयोक्तपुरुषाणां मध्ये एकभङ्गविशेषवदेव हे प्रदेशिन्! त्वं खलु अव्यवहारी चतुर्थभङ्गोक्तपुरुषवत् नो चैव–नैवासि। यद्यपि त्वं सम्यक्संलापेन मां संतोष्य न वर्तसे, तथापि मम विषये भक्ति–बहुमानं च करोषि अतस्त्वमाद्यभङ्गोक्तपुरुषवद् व्यवहार्येव नत्वव्यवहारीति भावः॥सू. १५०॥

मूलम्––तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी –तुब्भे णं भंते! अइच्छेया दक्खा जाव उवएसलद्धा समत्था णं भंते! मम करयलंसि वा आमलयं जीवं सरीराओ अभिनिवट्टित्ता णं उवदंसित्तए ?

तेणं कालेणं तेणं समएणं पएसिस्स रण्णो अदूरसामंते वाउयाए संवुत्ते, तणवणस्सइकाए एयइ वेयइ चलइ, फंदइ घट्टइ उदीरइ तं तं भावं परिणमइ, तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–पाससि णं तुमं पएसिराया ! एयं तणवणस्सइं एयंत

है. परन्तु जो चतुर्थ भंगोक्तपुरुष है 'नो ददाति नो संज्ञापयति' वह आदान असंज्ञापनारूप उभयवृत्ति संपन्न पुरुष उभयविधव्यवहार रहित होने के कारण अव्यवहारी है। इसी तरह से हे प्रदेशिन्! इन तीन भंगो में कहे गये पुरुषों के बीचमें एकभङ्गोक्त पुरुष विशेष की तरह तुम भी हो. चतुर्थ भङ्गोक्त पुरुष की तरह अव्यवहारी नहीं हो. यद्यपि तुमने सम्यक् आलाप द्वारा मुझे संतोष उत्पन्न कराकर प्रवृत्तिरूप व्यवहार नहीं किया है फिर भी मेरे विषय में भक्ति और बहुमान तो किया ही है, इसलिये तुम आद्यभङ्गोक्त पुरुष की तरह व्यवहारी ही हो, अव्यवहारी नहीं हो ॥सू. १५०॥

ભંગોકત પુરૂષ છે. 'नो ददाति नो संज्ञापयति' તે આદાન અસંજ્ઞાપના રૂપ ઉભયવૃત્તિ સંપન્ન પુરૂષ ઉભયવિધ વ્યવહાર રહિત હોવાથી અવ્યવહારી છે. આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ ! આ ત્રણ ભંગોમાં કહેલ પુરૂષોમાં પ્રથમ ભંગોકત પુરૂષ વિશેષની જેમ તમે પણ છો ચતુર્થ ભંગોકત પુરુષની જેમ તમે અવ્યહારી નથી. તમે સમ્યક આલાપદ્વારા મને સંતોષ આપીને પ્રવૃત્તિરૂપ વ્યવહાર કર્યો નથી છતાંએ મારા વિષયમાં ભકિત અને બહુમાન તો તમોએ કર્યા જ છે. એથી તમે આદ્ય ભંગોકત પુરૂષની જેમ વ્યવહારી જ છો, અવ્યવહારી નથી. ॥સૂ૦ ૧૫૦॥

जाव त त भोव परिणमंत? हंता! पासामि। जाणासि णं तुमं पएसी! एय तणवणस्सइं कायं किं देवो चालेइ असुरो वा चालेइ णागो चालेइ किंनरो वा चालेइ किंपुरिसो वा चालेइ महोरगो वा चालेइ गंधव्वो वा चालेइ? हंता जाणामि–णो देवो चालेइ जाव णो गंधव्वो चालेइ। वाउकाए चालेइ पाससि णं तुमं पएसी! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स सकम्मस्स सरागस्स समोहस्स सवेयस्स्स सलेसस्स ससरीरस्स रूवं? णो इणट्ठे समट्ठे। जइ णं तुमं पएसिराया! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स जाव ससरीरस्स रूवं न पाससि तं कहं णं पएसी! तव करयलंसि वा आमलगं जीवं उवदंसिस्सामि?। एवं खलु पएसी! दसट्ठाणाइं छउमत्थे मणुस्से सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ, तं जहा–धम्मत्थिकायं १, अधम्मत्थिकायं २, आगासत्थिकायं ३, जीवं असरीरबद्धं ४, परमाणुपोग्गलं ५, सद्दं ६, गंधं ७, वायं अयं जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ ९, अयं सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्सइ वा नो वा करिस्सइ १०। एयाणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ, तं जहा धम्मत्थिकायं जाव नो वा करिस्सइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा अन्नो जीवो तं चेव? ॥सू० १५१॥

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणमेवमवादीत्–एष खलु भदन्त! अतिच्छेकाः दक्षाः यावत् उपदेशलब्धाः समर्थाः खलु भदन्त!

'तएणं पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ––(तए णं) इसके बाद (पएसी राया) प्रदेशीने (केसिकुमार-समणं एवं वयासी) केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा–(तुब्भे णं भंते! अइच्छेया

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

(सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (पएसी राया) प्रदेशी [illegible] (केसिकुमार समणं एवं वयासी) [illegible]–तुब्भे णं भंते!

मम करतले वा आमलकं जीवं शरीराद् अभिनिवर्त्य खलु उपदर्शयितुम्?।
तस्मिन् काले तस्मिन् समये प्रदेशिनो राज्ञः अदूरसामन्ते वायुकायः संवृत्तः, तृणवनस्पतिकायः एजते व्यजते चलति स्पन्दते घट्टते उदीर्ते तं तं भावं परिणमते। ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिराजमेवमवादीत्–पश्यसि

दक्खा जाव उवएसलद्धा समत्था णं भंते! ममं करयलंसि वा आमलयं जीवं सरीराओ अभिनिवट्टित्ता णं उवदंसित्तए) हे भदन्त! आप अवसर के ज्ञान में अतिनिपुण हैं दक्ष हैं–कार्य के सम्पादन में कुशल हैं, यावत् उपदेशलब्ध हैं–गुरु के उपदेश को प्राप्त किये हुए है. इसलिये हे भदन्त! शरीर से जीव को निकाल कर क्या आप हस्ततल में स्थित आंवले की तरह उसे मुझे दिखा सकते हैं? (तेणं कालेणं तेणं समएणं पएसिस्स रण्णो अदूरसामंते वाउयाए संवुत्ते) उस काल और उस समय में प्रदेशी राजा के नजदीक–न अतिदूर और न अतिपास स्थान पर वायुकायप्रवृत्त हुआ (तणवणस्सइकाए एयई, वेयइ, चलेइ, फंदई, घट्टइ, उदीरइ, तं नं भावं परिणमइ) इमसे तृणवनस्पतिकाय सामान्यतः एवं विशेषतः कंपित होने लगा, इधर से उधर रुकने लगा. परस्पर में संघर्षित होने लगा एवं कोई२ जमीन ऊपर ही रुक गया. इस तरह वह तृणवनस्पतिकाय एजनादिरूप भिन्न२ प्रकार के व्यापार में परिणत हो गया (तए णं

अइच्छेया दक्खा जाव उवएसलद्धा समत्था णं भंते! ममं करयलंसि वा आमलयं जीवं सरीराओ अभिनिवट्टित्ता णं उवदंसित्तए) હે ભદંત! આપ અવસરને સરસ રીતે જાણવામાં અતિ નિપુણ છો, કાર્યના સંપાદનમાં કુશળ છો, યાવત્ ઉપદેશ લબ્ધ છો, ગુરૂના ઉપદેશને પ્રાપ્ત કરેલ છો. એથી જ હે ભદન્ત! શરીરમાંથી જીવને બહાર કાઢીને શું તમે હસ્તામલકવત્ મને બતાવી શકો છો? (तेणं कालेणं तेणं समएणं पएसिस्स रण्णो अदूरसामंते वाउयाए संवुत्ते) તે કાળે અને તે સમયે પ્રદેશી રાજાની પાસે ન અતિ દૂર અને ન અતિ પાસેના સ્થાન પર વાયુકાય પ્રવૃત્ત થયો. (तणवणस्सइकाए एयइ, वेयइ, चलइ, फंदइ, घट्टइ, उदीरइ, तं तं भावं परिणमइ) એનાથી તૃણવનસ્પતિકાય સામાન્યત. અને વિશેષતઃ કંપિત થવા લાગ્યો. આમથી તેમ નમવા માંડ્યો, પરસ્પર સંઘર્ષિત થવા લાગ્યો, અને કોઈક જમીન પર જ નમી ગયો આ પ્રમાણે તે તૃણ વનસ્પતિ કાય એજનાદિરૂપ ભિન્ન ભિન્ન પ્રકારના વ્યાપારમાં પરિણત થઈ ગયો. (तए णं

खलु त्वं प्रदेशिराज! एतं तृणवनस्पतिकायम् एजमानं यावत् तं तं भावं परिणममानम्! हन्त! पश्यामि। जानासि खलु त्वं प्रदेशिन्! एतं तृणवनस्पतिकायं किं देवश्चालयति असुरो वा चालयति नागो वा चालयति किन्नरो वा चालयति किंपुरुषो वा चालयति महोरगो वा चालयति गन्धर्वो वा चालयति! हन्त!! जानामि-नो देवश्चालयति जाव नो गन्धर्वश्चालयति

केसीकुमारसमणे पएसिरायं एवं वयासी-पाससि णं तुमं पएसी राया! एयं तणवणस्सइं एयंत जाव तं तं भाव परिणमतं') तब केशीकुमारश्रमणने प्रदेशी राजा से इस प्रकार कहा-हे प्रदेशिन! तुम इस तृणवनस्पतिकाय को सामान्य विशेषरूप से कंपित होते हुए यावत् एजनादिरूप भिन्न२ प्रकार के व्यापार में परिणत होते हुए देख रहे हो न? तब प्रदेशी राजाने कहा (हंता, पासामि) हां, भदन्त! देख रहा हूं (जाणासि णं तुमं पएसी! एयं तणवणस्सइकायं किं देवो चालेइ, असुरो वा चालेइ, णागो वा चालेइ, किन्नरो वा चालेइ, किंपुरिसो वा चालेइ, महोरगो वा चालेइ, गंधव्वो वा चालेइ) तब केशीकुमारश्रमणने उससे कहा हे प्रदेशिन्! तुम जानते हो कि इस तृणवनस्पतिकाय को कौन चलाता है? क्या देव चलाता है, या नाग चलाता है या किन्नर चलाता है, या किंपुरुष चलाता है, या महोरग चलाता है या गंधर्व चलाता है? प्रदेशीने कहा-(हंता, जाणामि) हां, भदन्त! जानता हूं (णो देवो चालेइ जाव णो गंधव्वो चालेइ वाउकाए

केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-पाससि णं तुमं पएसि राया! एयं तणवणस्सइं एयंतं जाव तं तं भाव परिणमंति) त्यारे केशी कुमार श्रमणे प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं के हे प्रदेशिन! तमे आ तृणवनस्पतिकायने सामान्य विशेषरूपथी कंपित थता यावत् एजनादिरूप भिन्न प्रका[illegible] [illegible]मा परिणत जुओ छो? त्यारे प्रदेशी राजाए कह्युं (हंता पासामि) [illegible]
(जाणासि णं तुमं पएसी! एयं तणवणस्सइकायं
वा चालेइ, णागो वा चालेइ, किन्नरो वा चालेइ
महोरगो वा चालेइ, गंधव्वो वा चालेइ) त्यारे
हे प्रदेशिन्! तमे जाणो छो के आ तृणवनस्पति[illegible]
चलावे छे? के असुर चलावे छे? के नाग चलावे
के किंपुरुष चलावे छे, के गंधर्व चलावे छे? प्रदे[illegible]
हा भदंत! [illegible] हुं (णो देवो चालेइ, ज[illegible]

वायुकायः चालयति। पश्यसि खलु त्वं प्रदेशिन्! एतस्य वायुकायस्य सरूपिणः सकर्मणः सरागस्य समोहस्य सवेदस्य सलेश्यस्य रूपम्? नायमर्थः समर्थः। यदि खलु त्वं प्रदेशिराज एतस्य वायुकायस्य सरूपिणो यावत् सशरीरस्य रूपं न पश्यसि तत् कथं खलु प्रदेशिन्! तव करतले इव आमलकं जीवमुपदर्शयिष्यामि!। एवं खलु प्रदेशिन्! दश स्थानानि छद्मस्थो मनुष्यः सर्वभावेन न जानाति, न पश्यति, तद्यथा–धर्मास्तिकायम् १, अधर्मास्तिकायम् २, आकाश-

---

चालेइ) इसे न देव चलाता है, यावत् न गंधर्व चलाता है। (पाससि णं तुमं पएसि! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स सरागस्स समोहस्स सवेयस्स सलेसस्स ससरीरस्स रूवं) केशीकुमारश्रमणने तब उससे कहा–हे प्रदेशिन्! तुम इस सरूपी, सकर्मा, सराग, समोह, सवेद, सलेश्य, सशरीर वायुकाय के रूप को देखते हो? (णो इणट्ठे समट्ठे) तब प्रदेशीने कहा–हे भदन्त! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् वायुकाय के रूप को मैं नहीं देखता हूं तब उससे केशीकुमारश्रमणने कहा–(जइ णं तुमं पएसि राया! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स जाव ससरीरस्स रूवं न पाससि तं कहं णं पएसी! तव करयलंसि वा आमलगं जीवं उवदंसिस्सामि) हे प्रदेशिराजन्! जब तुम इस सरूपी यावत् सशरीर वायुकाय के रूप को नहीं देख पा रहे हो–तो फिर मैं हे प्रदेशिन्! कैसे तुम्हें करतलस्थित आंवले की तरह जीव दिखा सकता हूं। (एवं खलु पएसी! दसट्ठाणं छउमत्थे मणुस्से

चालेइ) આને ન દેવ ચલાવે છે, યાવત્ ન ગંધર્વ ચલાવે છે. વાયુકાય ચલાવે છે. (पाससि णं तुमं पएसि! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स सकम्मस्स सरागस्स समोहस्स सवेयस्स सलेसस्स ससरीरस्स रूवं) કેશીકુમાર શ્રમણે ત્યારે તેને કહ્યું–હે પ્રદેશિન્! તમે આ સરૂપી, સકર્મા, સરાગ, સમોહ, સવેદ, સલેશ્ય સશરીર, વાયુકાયના રૂપને જુઓ છો? (णो इणट्ठे समट्ठे) ત્યારે પ્રદેશીએ કહ્યું–હે ભદંત! આ અર્થ સમર્થ નથી એટલે કે વાયુકાયના રૂપને હું જોતો નથી. ત્યાર પછી ફરી કેશી કુમાર શ્રમણે તેને કહ્યું. (जइ णं तुमं पएसि राया! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स जाव ससरीरस्स रूवं न पाससि तं कहं णं पएसी! तव करयलंसि वा आमलगं जीवं उवदंसिस्सामि) હે પ્રદેશિ[illegible]! [illegible] તમે આ [illegible] યાવત સશરીર વાયુકાયનારૂપને જોઈ શકતા નથી [illegible] હે પ્રદેશિન્! હું કેવી રીતે તમને કરતલ સ્થિત આમળાની જેમ જીવને [illegible] (एवं खलु पएसी! दसट्ठाणाइं छउमत्थे मणुस्से सव्व- [illegible] ન પાસઇ) એમ હે પ્રદેશિન્! છદ્મસ્થ જીવ આ દશ સ્થાનોને

स्तिकायम्३, जीवमशरीरबद्धम्४ परमाणुपुद्गलं५, शब्दं६, गन्धं७, वातम्८, अयं जिनो भविष्यति वा नो भविष्यति९, अयं सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति वा नो वा करिष्यति१०। एतानि चैव उत्पन्नज्ञानदर्शनधरः अर्हन् जिनः केवली सर्वभावेन जानाति पश्यति, तद्यथा-धर्मास्तिकाय यावत् नो वा करिष्यति, तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन्! यथा-अन्यो जीवः तदेव९ ॥ सू० १५१॥

सव्वभावेणं न जाणइ, न पासइ) क्यों कि हे प्रदेशिन्! छद्मस्थ जीव इन इन दश स्थानों को सर्वभाव से नहीं जानता है और नहीं देखता है (तं जहा) वे दशस्थान इस प्रकार से है (धम्मत्थिकाय १, अधम्मत्थिकाय २, आगासत्थिकायं ३, जीवं असरीरबद्धं ४, परमाणुपोग्गल ५, सद्दं ६, गंध ७, वायं ८ अय जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ९, अय सव्वदुक्खाणं अंतो करिस्सइ नो वा करिस्सइ१०) धर्मास्तिकाय१, अधर्मास्तिकाय२, आकाशास्तिकाय३, अशरीर बद्ध जीव४, परमाणुपुद्गल५, शब्द६, गंध७, वात८ यह जिन होगा, या नहीं होगा९, और यह समस्त दुखों का अन्त करेगा या नही करेगा१० (एयाणि चेव उप्पण्णनाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ) इन्हे तो उत्पन्न ज्ञान दर्शन धारी अर्हन्त जिन केवली सर्वभाव से जानते है। (तं जहा धम्मत्थिकाय जाव नो वा करिस्सइ-तं सद्दहाहि णं तुम पएसी! जहा अन्नो जीवो तं चेव) अतः जब अर्हन्त जिन केवली धर्मास्तिकायादि१० स्थानों को जानते देखते है

सर्वभावथी જાણતો નથી અને જોતો નથી (तं जहा) ते દશસ્થાનો આ પ્રમાણે છે (धम्मत्थिकायं १, अधम्मत्थिकायं २, आगासत्थिकायं ३, जीवं असरीरबद्धं ४, परमाणुपोग्गलं ५, सद्दं ६ गंध ७ वायं ८, अयं जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ ९, अयं सव्वदुक्खाणं अंतो करिस्सइ १०) ધર્માસ્તિકાય ૧, અધર્માસ્તિકાય ૨, આકાશાસ્તિકાય ૩, અશરીર બદ્ધ જીવ ૪, પરમાણુ પુદ્ગલ ૫, શબ્દ ૬, ગંધ ૭, વાત ૮, આ જિન થશે કે નહિ થશે ૯ અને આ [illegible] દુઃખોનો અન્ત કરશે કે નહિ કરશે ૧૦ (एयाणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ) [illegible] દર્શનધારી અર્હંત જિન કેવલી [illegible] (तं जहा धम्मत्थिकाय जाव नो वा करिस्सइ तं सद्दहाहि णं तुम पएसी! जहा अन्नो जीवो तं चेव) [illegible]

टीका-'तए णं पएसी राया' इत्यादि-ततः खलु प्रदेशी राजा केशिकुमारश्रमणम् एवमवादीत्-हे भदन्त! यूय खलु अतिच्छेकाः-अवसरज्ञानातिनिपुणाः, दक्षा-कार्यसम्पादनकुशलाः, यावत्-यावत्पदेन 'प्राप्तार्थाः बुद्धाः कुशलाः महामतयः विनीताः विज्ञानप्राप्ताः' इत्येषां पदानां सङ्ग्रहः एषां व्याख्या पूर्वं गता। उपदेशलब्धाः-प्राप्तगुरूपदेशाः, अतो हे भदन्त यूयं शरीरात् जीवमभिनिवर्त्य--निस्काश्य करतले-हस्ततले स्थितम् आमलकमिव मम उपदर्शयितुं समर्थाः--शक्ताः।

और छद्मस्थ इन्हे जानता देखता नही है तो हे प्रदेशिन्! तुम श्रद्धा करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है. इत्यादि।

टीकार्थ स्पष्ट है-'दुक्खा जाव उवएसलद्धा' में जो यावत् पद आया है उससे यहां 'प्राप्तार्थाः, बुद्धाः, कुशलाः, महामतयः, विनीताः, विज्ञानप्राप्ताः' इन पदों का संग्रह हुआ है, इन पदों की व्याख्या पहिले की जा चुकी है। उस काल और उस समय में का तातत्पर्य है जब प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से शरीर से निकालकर जीव को हस्तामलकवत् दिखाने की बात कही तब। 'एयंतं जाव तं तं' में जो यावत् पद आया है उससे यहां 'व्येजमानं, चलन्तंःस्पन्दमानं, घट्टमानम्' इन पदों का संग्रह हुआ है। इन पदोंकी व्याख्या इसी सूत्र में पहिले की जा चुकी है. इन पदों में वायुकाय एकेन्द्रिय जीव है-अतः वह रूप युक्त है, कर्म सहित है, रागसहित है, मोहसहित है, नपुंसकवेद सहित है, औदारिक, वैक्रिय, तैजस और कार्मण इस चार

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ જ છે. 'दुक्खा जाव उवएसलद्धा' માં જે યાવત પદ આવેલ છે તેથી અહીં 'प्राप्तार्थाः बुद्धाः. कुशलाः. महामतयः, विनीताः. विज्ञानप्राप्ताः. આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. આ પદોની વ્યાખ્યા પહેલા કરવામાં આવી છે. તે કાળે અને તે સમયે જે કહેવામા આવ્યું છે તેની સ્પષ્ટતા આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે પ્રદેશી રાજાએ કેશી કુમાર શ્રમણને શરીરમાથી બહાર કાઢીને જીવને હસ્તામલકવત્ બતાવવાની વાત કહી ત્યારે (एयंतं जाव त त) મા જે યાવત્ પદ છે તેથી અહીં "व्येजमानं. चलन्तं. स्पन्दमान, घट्टमानम्" આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. આ પદોની વ્યાખ્યા આ જ સૂત્રમાં પહેલા કરવામાં આવી છે. આ પદોમાં પ્રત્યયકૃત જ વિશેષતા છે. વાચ્યાર્થ કૃત વિશેષતા નથી વાયુકાય એકેન્દ્રિય જીવ છે. એથી તે રૂપયુક્ત છે કર્મસહિત છે, રાગસહિત છે, મોહસહિત છે, નપુંસક સહિત છે, ઔદારિક, વૈક્રિય, તૈજસ અને કાર્મણ આ ચાર શરીરવાળો છે. રૂપયુ

तस्मिन् काले-केशिकुमारश्रमण प्रति जीवस्य शरीरान्निष्काशनपूर्वक कराऽऽमलकवदुपदर्शनप्रार्थनाकाले तस्मिन् समये-अवसरे प्रदेशिनो राज्ञः अदूरसामन्ते नातिदूरे-नातिसमीपे वायुकायः संवृत्तः-प्रवृत्तोऽभवत्, तेन तृणवनस्पतिकायः एजते-सामान्यतः कम्पते, ततो व्येजते-विशेषतः कम्पते, चलति-चपलो भवति, स्पन्दते-ईषच्चलति, घट्टते-परस्परं संघर्षं प्राप्नोति, उदीर्ते-उत्कम्पते एवं तं तं भावम्-एजनादिरूपं व्यापारं परिणमते-प्राप्नोति, ततः-वायुकायसंवर्तनवशात् तृणवनस्पतिकायस्यैजनादिभावोपगमनानन्तरम् खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिराजमेवमवादीत्-हे प्रदेशिराज! त्वं पश्यसि-चक्षुर्गोचरं करोषि खलु एतम्-इमम् तृणवनस्पतिम्, एजमानं यावत्-यावत्पदेन-'व्येजमानं चलन्तं स्पन्दमानं घट्टमानम् उदीरयाणम्' इत्येषां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः एषां व्याख्याऽत्रैव सूत्रे पूर्वं कृता, तत्र प्रत्ययकृतो विशेषः, धात्वर्थस्त्वविशेष एव द्रष्टव्यः। तं तं भावं परिणममानम्. ?। इति केशिप्रश्ने प्रदेशी प्राह-हन्त! पश्यामि। पुनः केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिराजं पृच्छति-हे प्रदेशिन! त्वं खलु जानासि एतं वनस्पतिकायं किं देवश्चालयति? किं वा असुरश्चालयति? किं वा नागः-नागदेवश्चालयति! किं वा किन्नरः-तदाख्यदेवविशेषश्चालयति! किं वा किंपुरुषश्चालयति! किं वा महोरगः-व्यन्तरविशेषो देवश्चालयति। किं वा गन्धर्वश्चालयति!। प्रदेशी प्राह-हन्त!! जानामि-नो देवश्चालयति, यावत्-नो गन्धर्वश्चालयति, तर्हि कश्चालयति! इति जिज्ञासायामाह-वायुकायश्चालयति। केशी पृच्छति-हे प्रदेशिन्! त्वमेतस्य स्वकीयेऽदूरसामन्ते संप्रवृत्तस्य वायुकायस्य रूप पश्यसि, तस्य कीदृशस्येत्यत्राऽऽह सरूपिणः-रूपयुक्तस्य सकर्मणः-कर्मसहितस्य सरागस्य-रागसहितस्य समोहस्य-मोहसहितस्य सवेदस्य-नपुंसक वेदसम्पन्नस्य सलेश्यस्य-कृष्णनीलकापोतलेश्यात्रययुक्तस्य सशरीरस्य-औदारिकवैक्रियतैजसकार्मण शरीरचतुष्टययुक्तस्य एतादृशस्य वायुकायस्य रूपं किं पश्यसि। इति पूर्वेणान्वयः। इति प्रश्ने प्रदेशी प्राह-नायमर्थः समर्थः-तादृशस्य वायुकायस्य दर्शनरूपोऽर्थः न सङ्गतः- न तस्य रूपं पश्यामीति भावः। केशीकुमार-

---

शरीरोंवाला है. कृष्ण, नील एवं कापोत इन तीन लेश्याओंवाला है यही बात सरूपी आदि विशेषणों द्वारा वायुकाय में प्रकट की गई है। अवशिष्ट सुगम पदों का अर्थ स्पष्ट है ॥ सू. १५१ ॥

[illegible] ... વાળો છે ... [illegible] ... વિશેષણો ॥
[illegible] ... સુગમ પદો ... [illegible] ... ॥૧૫૧॥

श्रमणो वायुकायस्याशक्यदर्शनत्वे प्रदेशिनमाह—हे प्रदेशिराज! यदि त्वं खलु एतस्य वायुकायस्य सरूपिणः यावत्—सशरीरस्य रूपं न पश्यसि तत्—तदा कथं—केन प्रकारेण खलु करतले आमलकं वा—इव जीवं तव उपदर्शयिष्यामि? वायुकायस्य तत्र जीवस्य च समानरूपत्वादेकस्याशक्यदर्शनत्वेऽपरस्यापि अशक्यदर्शनत्वात्। वक्ष्यमाणच्छद्मस्थमनुष्यस्य जीवादिस्थानानां सर्वभावेन ज्ञानदर्शनाऽयोग्यत्वात् कथं चक्षुर्गोचरं कारयिष्यामीति भावः। तदेव दर्शयति—हे प्रदेशिन्! एवम् वक्ष्यमाणप्रकारेण खलु छद्मस्थो मनुष्यः दशस्थानानि वक्ष्यमाणानि धर्मास्तिकायादीनि सर्वभावेन सम्पूर्णतया न जानाति,—न पश्यति। कानि तानीत्याह तद्यथा—धर्मास्तिकायम् १, अधर्मास्तिकायम् २, आकाशास्तिकायम् ३, जीवशरीरबद्धम्—शरीरतोऽसंस्पृष्टम् ४, परमाणुपुद्गलम् ५, शब्दम् ६, गन्धम् ७, वातं—वायुम् ८, अयं जिनो भविष्यति वा—अथवा नो—न भविष्यतीति? ९, अयं सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति वा नो करिष्यती ति १०। एतानि दशस्थानानि उत्पन्नज्ञानदर्शनधरः अर्हन् जिनः केवली एव सर्वभावेन—साकल्येन जानाति तथा पश्यति, तद्यथा—धर्मास्तिकायं यावत्—नो वा करिष्यति तत्तस्मात्कारणात् हे प्रदेशिन्! त्वं श्रद्धेहि, यथा—अन्यो जीवः तदेवपूर्वोक्तमेव—अन्यच्छरीरम्, नो तज्जीवःस्स शरीरम् इति ॥ सू० १५१ ॥

मूलम्—तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी से नूणं भंते! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे? हंता पएसी हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे। से णूणं भंते! हत्थिउ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव अप्पकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव एवं अप्पाहारनीहारउस्सासनीसासइड्ढियतराए अप्पजुइयतराए चेव, एवं कुंथुओ हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव जाव?, महज्जुइयतराए चेव। हंत? हत्थीओ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव कुंथुओ वा हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव तं चेव। कम्हा णं भंते! हत्थिस्स कुंथुस्स य समे चेव जीवे? पएसी से जहाणामए-कूडागारसाला सिया जाव निवायगंभीरा, अह णं केइ पुरिसे जोइं च

पदीवं च गहाय तं कूडागारसालं अंतो२ अणुपविसइ, तीसे कूडागारसालाए सव्वओ समंता घणनिचियनिरंतराइं णिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेइ, तीसे कूडागारसालाए वहुमज्झदेसभाए तं पईवं पलीवेज्जा, तए णं से पईवे तं कूडागारसालं अंतो२ ओभासइ उज्जोवेइ तावइ पभासइ, णो चेव णं बाहिं। अह णं से पुरिसे तं पईवं इड्डरएणं पिहेज्जा, तए णं से पईवे तं इड्डरयं अंतो२ ओभासेइ४, णो चेव णं इड्डरगस्स बाहिं णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं। एवं गोकिलिंजेणं, पच्छियपिडएणं गंडमणियाए, आढएणं, अद्धाढएणं, पत्थएणं, अद्धपत्थएणं, कुलवेणं चाउब्भाइयाए, अट्ठभाइयाए, सोलसियाए, बत्तीसियाए, चउसट्ठियाए, दीवचंपएण, तए णं से पईवे दीवचंपगस्स अंतो२ ओभासेइ४, नो चेव णं दीवचंपगस्स बाहिं नो चेव णं चउसट्ठियं नो चेव णं चउसट्ठियाए बाहिं, णो चेव णं कूडागारसालं णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं, एवामेव पएसी ! जीवे वि जं जारिसयं पुव्वकम्मनिबद्धं बोंदिं णिव्वत्तेइ तं असंखेज्जेहिं जीवपएसेहिं सचित्तं करेइ खुड्डियं वा महालियं वा, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा–अण्णो जीवो तं चेव णं १०। ॥ सू. १५२ ॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत्–स नून भदन्त ! [illegible] ? [illegible] ! प्रदेशिन् !

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) इसके बाद (से पएसी राया केसिं कुमारसमणं [illegible]) उस प्रदेशी राजाने केशि कुमारश्रमण से [illegible]

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि।

[illegible]—(तए णं) [illegible] (से पएसी राया केसिं कुमारसमणं [illegible]) [illegible]

हस्तिनश्च कुन्थोश्च सम एव जीवः। अथ नूनं भदन्त! हस्तिनः कुन्थुः अल्प कर्मतर एव अल्पक्रियतर एव अल्पास्रवतर एव, एवम् अल्पाहारनीहारोच्छ्वासनिःश्वासऋद्धिकतरः अल्पद्युतिकतर एव, एवं च कुन्थुतः हस्ती महाकर्मतर एव महाक्रियतर एव यावत् महाद्युतिकतरएव ? हन्त! प्रदेशिन्!

कुमारश्रमण से ऐसा कहा-(से णूणं भंते! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे) हे भदन्त! हाथी का जीव और कुंथु का जीव क्या तुल्यपरिमाण वाला है या न्यूनाधिकपरिमाणवाला है? तब केशीकुमारश्रमण ने उससे कहा-(हंता, पएसी! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे) हां प्रदेशिन! हाथी का और कुंथुका जीव तुल्यपरिमाणवाला है, न्यूनाधिक परिमाणवाला नहीं है। (से णूणं भंते! हत्थीउ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरियतराए चेव, अप्पासवतराए चेव) हे भदन्त! हस्ती की अपेक्षा कुन्थु क्या अल्पकर्मवाला ही होता है? अत्यल्प कायिकादि क्रिया वाला ही होता है? अत्यल्प आस्रव वाला ही होता है? (एवं अप्पाहार नीहारउस्सासनीसासइड्ढियतराए, अप्पजुइयतराए चेव) अल्पतर आहारवाला ही होता है? अल्पतर नीहार वाला ही होता है? अल्पतर उच्छ्वास निश्वास वाला ही होता है? अल्पतर ऋद्धिवाला ही होता है? अल्पतर द्युति शरीर की कान्ति वाला ही होता है। (एवं कुंथुओ हत्थी महाकम्मतराए चेव, महाकिरियतराए चेव जाव महज्जुइयतराए चेव) इसी प्रकार से

भंते! हत्थिस्सय कुंथुस्स य समे चेव जीवे) હે ભદંત! હાથીનો જીવ કુંથુનો જીવ શું તુલ્ય પરિણામ વાળો છે કે ન્યૂનાધિક પરિમાણવાળો છે? ત્યારે કેશી કુમાર શ્રમણે તેને કહ્યું-(हंता, पएसो! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे) હાં પ્રદેશિન! હાથીનો અને કુંથુનો જીવ તુલ્ય પરિણામવાળો છે. ન્યૂનાધિક પરિણામવાળો નથી. (से णूणं भंते! हत्थिउ थुकुंथू अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरियतराए चेव, अप्पासवतराए चेव) હે ભદંત! હાથીની અપેક્ષાએ શું કુંથુ અલ્પકર્મવાળું જ હોય છે? અત્યલ્પકાયિક વગેરે ક્રિયાવાળું હોય છે? અત્યલ્પ આસ્રવયુક્ત હોય છે! (एवं अप्पाहारनीहारउस्सासनीसास-इड्ढियतराए, अप्पजुइयतराए चेव) અલ્પતર આહારવાળું જ હોય છે! અલ્પતર નીહારવાળું જ હોય છે? અલ્પતર ઉચ્છ્વાસ નિશ્વાસ યુક્ત હોય છે! (एवं कुंथुओ हत्थी महाकम्मतराएचेव, महाकिरियतराए चेव जाव महज्जुइयतराए चेव) આ પ્રમાણે કુંથુની અપેક્ષાએ શું હાથી મહાકર્મતર હોય છે,

हस्तितः कुन्थुश्च अल्पकर्मतर एव, कुन्थुतो वा हस्ती महाकर्मतर एव तदेव। कस्मात् खलु भदन्त! हस्तिनश्च कुन्थोश्च सम एव जीवः। प्रदेशिन्! तद् यथानामकं कूटाऽऽकारशाला स्यात्, यावत् निर्वातगम्भीरा, अथ खलु कश्चित् पुरुषः ज्योतिर्वा प्रदीपं वा गृहीत्वा तां कूटाऽऽकारशालाम् अन्तरन्तरनुप-

---

कुन्थु की अपेक्षा हाथी क्या महाकर्मतर ही होता है, महाक्रियातर ही होता है? यावत् महाद्युतितर ही होता है? इस प्रदेशी के प्रश्न के उत्तर में केशी कुमारश्रमणने कहा-(हंता, पएसी! हत्थिआ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव, कुंथुओ वा हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव-तं चेव) हां, प्रदेशिन! ऐसी ही बात है-हाथी से कुन्थु अल्पतर कर्मवाला ही होता है, इत्यादि इसी प्रकार कुन्थु की अपेक्षा से हाथी महाकर्मतरवाला ही होता है, महाक्रियावाला ही होता है इत्यादि। (कम्हा णं भंते! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे) अब प्रदेशी इस प्रकार पूछता है कि-हे भदन्त! आपने जो हाथी और कुन्थु के जीव को समानपरिमाणवाला कहा है सो इसका क्या कारण है? केशीकुमारश्रमणने उससे कहा-(पएसी! से जहा नामए कूडागारसाला सिया जाव निवायगंभीरा) हे प्रदेशिन्! जैसे एक कूटाकारवाली पर्वत के शिखर के आकार जैसी शाला हो और यावत् वह निर्वात-वायुप्रवेश रहित होने के कारण गंभीर हो. (अह णं केइ पुरिसे जोई पदीवं च गहाय तं कूडागारसालं अंतोर अणुपविसइ) अब कोई

विंशति, तस्याः कूटाकारशालायाः सर्वतः समन्तात् घननिचितनिरन्तराणि निश्छिद्राणि द्वारवदनानि पिदधाति, तस्याः कूटाऽऽकारशालाया बहुमध्य देशभागे तं प्रदीप प्रदीपयेत्, ततः खलु स प्रदीपः तां कूटाऽऽकारशालाम् अन्तरन्तः अवभासयति उद्द्योतयति तापयति प्रभासयति, नो चैव खलु बहिः अथ खलु स पुरुषः तं प्रदीपम् इड्डुरकेण पिदध्यात्, ततः खलु

पुरुष अग्नि और दीपक को लेकर उस कूटाकारशाल के भीतर घुसकर बिलकुल ठीक मध्यभाग में जाकर खडा हो जाता है (तीसे कूडागारसालाए सव्व समंता घणनिचियनिरंतराइं णिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेइ) फि(व उस कूटाकारशाला के चारों ओर के सब दरवाजों को इस तरह से बन्द कर देता हैं कि जिससे उनके आपस में किवाड इस प्रकार से सट जाते हैं कि उनमें जरासा भी छिद्र नहीं रहने पाता है. इस तरह से दरवाजों को अच्छी तरह से बन्द कर (तीसे कूडागारसालाए बहुमज्जदेसभाए तं पईवं पलीवेज्जा) फिर वह उस कूटाकारशाला के बहुमध्य देशभाग में उस प्रदीप को प्रज्वलित करता है. (तए णं से पईवे तं कूडागारसालं अंतो२ ओभासइ) इस तरह वह दीपक उस कूटाकारशाला के पूरे भागको ही प्रकाशित करता है (उज्जोवेइ, तावइ पभावइ) उद्योतित करता हैं, तापित करता है एवं घटपटादि पदार्थों को दिखाने से उसे प्रभासित करता है (णो चेव णं बाहिं) उस कूटाकारशाला के बाहिरी भाग को वह न प्रकाशित करता है, न उद्योतित करता है, न तापित करता है और न घटपटादिकों को

पविसइ) હવે કોઇ પુરૂષ અગ્નિ તેમજ દીપક લઇને તે કૂટાકારશાળાની અંદર પ્રવિ થઈને એકદમ તેના મધ્યભાગમા જઇને ઉભો થઇ જાય છે. (तीसे कूडागारसालाए सव्वओ समंता घणनिचियनिरंतराइं णिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेइ પછી તે માણુસ તે કૂટાકાર શાળાના ચારે તરફના બધા દ્વારોને એવી રીતે બં કરી દે છે તેના પરસ્પર એકદમ બંધ થયેલા કમાડોમાંથી નાનું સરખું પણ કાણુ રહેતું નથી. (तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए तं पईवं पलीवेज्जा પછી તે માણુસ તે કૂટાકારશાળાના બહુમધ્ય દેશભાગમાં તે દીપકને પેટાવે છે (तए णं से पईवे तं कूडागारसाल अंतो २ ओभासइ) આ પ્રમાણે દીપક તે કૂટાકાર શાળાના અંદરના ભાગને જ પ્રકાશિત કરે છે, (उज्जोवेइ, तावइ पभावइ) ઉદ્યોતિત કરે છે, તાપિત કરે છે, અને ઘટપટ વગેરે પદાર્થોને બતાવીને તેમને પ્રતિભાસિત કરે છે (णो चेव णं वाहिं) તે કુટાકાર શાળાના બહારના ભાગને તે પ્રકાશિત કરતો નથી, ઉદ્યોતિત કરતો નથી, સંતાપિત કરતો નથી અને

स प्रदीपः तद् इट्टरकम् अन्तरन्तः अवभासयति४, नो चैव खलु इट्टरकस्य बहिः, नो चैव खलु कूटाऽऽकारशालायाः बहिः। एवं गोकिलिञ्जेन, पक्षिपिटकेन, गण्डमाणिकया, आढकेन, अर्धाढकेन, प्रस्थकेन, अर्धप्रस्थकेन, कुडवेन, अर्द्धकुडवेन, चतुर्भागिकया, अष्टभागिकया, षोडशिकया, द्वात्रिंशत्कया,

---

दिखाने से उसे प्रभासित करता है। (अह णं से पुरिसे तं पईवं इट्टरएणं पिहेज्जा, तएणं से पईवे तं इट्टरयं अंतोर ओभासेइ४) यदि वह पुरुष उस दीपक को किसी बडे ढक्कन से ढंक देता है-तो वह दीपक उस बडे ढक्कन के भीतरी भाग को ही प्रकाशित करता है यावत् उसे प्रभासित करता है (णो चेव णं इट्टरगस्स बाहिं णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं) उस बडे ढक्कन के बाहिरी भाग को एवं कूटाकारशाला के बाह्यदेश को प्रकाशित यावत् प्रभासित नहीं करता है। (एवं गोकिलिंजेणं, पच्छिपिंडएणं, गंडमणियाए, आढएणं, अद्धाढएणं, पत्थएणं, अद्धपत्थएणं कुलवेणं, चाउब्भाइयाए, अट्ठभाइयाए, सोलसियाए) इसी तरह उस दीप को गोकिलिञ्ज से-गाय को खाना जिसमें रखा जाता है ऐसी कुण्डिका से, तथा पक्षी के आकारवाले वंशशलाका निर्मित पात्र विशेष से, गण्डमणिका से-धान्य नापनिका से, आढक से, अर्धाढक से, प्रस्थक से, अर्धप्रस्थक से, कुडवसे, अर्धकुडव से, न मव देश विशेष में प्रसिद्ध धान्यमापक पात्र विशेषों से ढक देता है तथा चतुर्भागिका से, अष्टभागिका

घटपट वगेरे पदार्थोने बतावीने तेमने प्रतिभासित पण करतो नथी. (अह णं से पुरिसे तं पईवं इट्टरएणं पिहेज्जा, तए णं से पईवे तं इट्टरयं अंतो२ ओभासेइ ४) हवे जो ते पुरुष ते दीपकने मोटा ढांकणाथी ढांकी दे तो ते दीपक ते मोटा ढांकणाना अंदरना भागने ज प्रकाशित करे छे, यावत् तेने प्रतिभासित करे छे. (णो चेव णं इट्टरगस्स बाहिं णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं) ते मोटा ढांकणाना बहारना भागने तेमज ते कूटाकारशालाना बाह्य प्रदेशने प्रकाशित यावत् तेने प्रतिभासित करतो नथी (एवं गोकिलिंजेणं पच्छिपिंडएणं, गंडमणियाए, आढएणं, अद्धाढएणं, पत्थएणं, अद्धपत्थएणं, कुलवेणं, चाउब्भाइयाए, अट्ठभाइयाए, सोलसियाए) [illegible]

चतुष्षष्टया, दीपचम्पकेन, ततः खलु स प्रदीपः दीपचम्पकस्य अन्तरन्तः अवभासयति४, नो चैव खलु दीपचम्पकस्य बहिः नो चैव खलु चतुष्षष्टिका, नो चैव खलु चतुष्षष्टिकाया बहिः, नो चैव खलु कूटाऽऽकारशालां, नो चैव खलु कूटाऽऽकारशालाया बहिः, एवमेव प्रदेशिन्! जीवोऽपि यां यादृशीं पूर्वकर्मनिबद्धां बोन्दिं निर्वर्तयति तामसंख्येयैर्जीवप्रदेशैः सचित्तां करोति क्षुद्रिकां वा महतीं वा, तत् श्रद्धेहि खलु त्वं प्रदेशिन्! यथा अन्यो जीवः तदेव खलु१० ।सू. १५२।

से, षोडशभागिका से इन सब चतुर्भागिका से चतुष्षष्टिकापर्यन्त के मगधदेशप्रसिद्ध रसमापक पात्रविशेषों से ढक देता है तथा दीप के ढंकने से ढंक देता है (तए ण से पईवे दीवपंचगस्स अंतो २ ओभासेइ) तो वह प्रदीप जिन २ से ढंका गया है उन्हीं २ के भीतरी को ही प्रकाशित करता है, उनके बाहिरी भाग को नहीं इसी तरह से वह दीपचम्पक के ही भीतरी भाग को प्रकाशित करता है, (णो चेव णं दीवचंगस्स बाहिं नो चेव णं चउसट्ठियं, नो चेव णं चउसट्ठियाए बाहिं, णो चेव णं कूडागारसालं, कूडागारसालाए बाहिं) दीपचम्पक के बाहिरी भाग को नहीं-या दीपक के बाहिर के प्रदेश को नहीं, चतुष्षष्टिका को नहीं, चतुष्षष्टिका के बाहिर के प्रदेश को नहीं, कूटाकारशाला को, और कूटाकारशाला के बाहर के प्रदेश को नहीं प्रकाशित करता है (एवामेव पएसी ! जीवे वि जे जारिसयं पुव्वकम्मनिबद्धं बोंदिं णिव्वत्तेइ)

અષ્ટ ભાગીકાથી, ષોડશ ભાગીકાથી (बत्तीसियाए, चउसट्ठियाए, दीवचंपएणं) બત્તીસિકાથી, ચતુષ્ષષ્ટિકાથી, આ બધી ચતુર્ભાગિકાથી ચતુષ્ષષ્ટિકા પર્યન્તના મગધ દેશ પ્રસિદ્ધ રસમાપક પાત્રવિશેષોથી ઢાંકી દે છે તેમજ દીપચંપકથી-દીપકના ઢાંકણાથી ઢાંકી દે છે. (तए ण से पईवे दीवचंपगस्स अंतो २ ओमासेइ) તો તે પ્રદીપ જે જે વસ્તુથી ઢાંકવામાં આવ્યો છે તે તે વસ્તુના અંદરના ભાગને જ પ્રકાશિત કરે છે. તેમના બહારના ભાગને પ્રકાશિત કરતો નથી આ પ્રમાણે તે દીપચંપકના અંદરના ભાગને જ પ્રકાશિત કરે છે (णो चेव णं दीवचपगस्स बाहिं, नो चेव णं चउसट्ठिम, नो चेव णं चउसट्ठियाए बाहिं, णो चेव णं कूडागारसालं, णो चेव ण कूडागारसालाए बाहिं) દીપચંપકના બહારના ભાગને નહીં કે દીપક ચંપકના બહારના પ્રદેશને નહીં, ચતુષ્ષષ્ટિકાને નહીં, ચતુષ્ષષ્ટિકાના બહારના પ્રદેશને નહી કૂટાકાર શાળાને નહીં, અને કૂટાકારશાળાના બહારના પ્રદેશને પ્રકાશિત કરતો નથી. एवामेव-पएसी ! जीवे वि जे जारिसयं पुव्वकम्मनिबद्धं बोंदिं णिव्वत्तेइ) આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ જીવ પણ પૂર્વ-

टीका—'तए णं से पएसी राया' इत्यादि–ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम् एवमवादीत्–हे भदन्त ! स शरीराद्भिन्नः जीवः नूनं–निश्चयेन हस्तिनः कुन्थोः–त्रीन्द्रियक्षुद्रप्राणिविशेषस्य च समः–तुल्यपरिमाण एव न. न्यूनाधिकपरिमाणः ? इति प्रश्नः । केशी प्राह–हन्त ! हे प्रदेशिन् !

इसी तरह से हे प्रदेशिन् ! जीव भी पूर्वभवोपार्जित कर्मद्वारा निबद्ध जैसे शरीर को उत्पन्न–प्राप्त करता है (तं असंखेज्जेहिं जीवपएसेहिं सचित्तं करेइ खुड्डियं वा महालियं वा) चाहे वह छोटा हो या बडा उसे अपने असंख्यात प्रदेशों से सचित्त–जीव युक्त कर लिया करता है. (तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा अण्णो जीवो तं चेव णं १०) इसलिये हे प्रदेशिन! तुम इस बात पर विश्वास करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है इत्यादि।

टीकार्थ—इस मूलार्थ के ही अनुरूप है–परन्तु जो विशेषता है–वह इस प्रकार से है–कुन्थु वह तीन इन्द्रियों वाला–ते इन्द्रिय जीव है. और हाथी पांच इन्द्रियों वाला–पंचेन्द्रिय जीव है. जब केशीकुमार श्रमणने १५१वें सूत्र में प्रदेशी से ऐसा कहा कि वायुकायिक जीव में और तुम्हारे जीव में समानता है–तो प्रदेशी के चित्त में ऐसी आशंका का उठना स्वभाविक ही है कि कुन्थु के जीव में और हाथी के जीव में समानता है या असमानता है ? इसीलिये उसने ऐसा प्रश्न पूछा है. इसके समाधान में केशीने उससे ऐसा कहा कि हे प्रदेशिन ! जीव में–चाहे वह

ભવોપાર્જિત કર્મદ્વારા નિબદ્ધ શરીરને ઉત્પન્ન–પ્રાપ્ત કરે છે (तं असंखेज्जेहिं जीवपएसेहिं सचित्तं करेइ खुड्डियं वा महालियं वा) પછી ભલે તે નાનું હોય કે મોટું–ગમે તેવડું હોય તેને પોતાના અસંખ્યાત પ્રદેશોથી સચિત્ત જીવયુક્ત કરી લે છે (तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा अण्णो जीवो तं चेव णं १०) એટલા માટે હે પ્રદેશિન્ ! તમે આ વાત પર વિશ્વાસ કરો કે જીવ અન્ય છે અને શરીર અન્ય છે વગેરે.

हस्तिनः कुन्थोश्च जीवः सम एव। प्रदेशी कथयति-हे भदन्त! तत्र-हस्ति-कुन्थ्वोर्मध्ये हस्तितः-हस्तिनमपेक्ष्य, अत्र ल्यब्लोपे कर्मणि पञ्चमी कुन्थुः नूनं-निश्चयेनाल्पकर्मतरः-अत्यल्पाऽऽयुरादिरूपकर्मवान् एव, अल्पक्रियतरः-अत्यल्पकायिकादिक्रियावान एव, अल्पास्रवतरः-अत्यल्पप्राणातिपातादिरूपा स्रववान् एव, एवम्-अनेन प्रकारेण अल्पाऽऽहारनीहारोच्छ्वासनिःश्वासऋद्धिकतरः अल्पद्युतिकतरः अल्पशब्दस्य सर्वत्र सम्बन्धात् अल्पाहारतर एव अल्पं-नीहारतर एव अल्पोच्छ्वासतर एव अल्पऋद्धिकतर एव, अत्र ऋद्धिः परि-वारादिरूपा ग्राह्या, अल्पद्युतिकतर एवेत्यर्थः, द्युतिश्च-शरीरकान्तिरूपा। एवं-यथा-हस्तिनमपेक्ष्य कुन्थुरल्पतरकर्मत्वादिविशिष्ट उक्तस्तथा, कुन्थुतः-कुन्थुमपेक्ष्य हस्ती-महाकर्मतरः-अधिकायुरादिकरूपकर्मवान्, एव, महाक्रि-यतर यावत् यावत्-यावत्पदेन-महास्रवतर एव महानीहारतर एव महोच्छ्वा-सतर एव महर्द्धिकतर एव महाद्युतिकतर एव' इत्येषां सङ्ग्रहो बोध्यः। इति प्रश्ने केशी प्राह-हन्त! प्रदेशिन्! हस्तितः कुन्थुरल्पकर्मतर एव कुन्थुतो वा हस्ती महाकर्मतर एव, तदेव-पूर्वोक्तमेव-कुन्थुपक्षे अल्पक्रियतर एव अल्पास्रवतरः हस्तिपक्षे-महाक्रियतर एव महास्रवतर एवेत्यादि बोध्यम्। इति हस्ति-कुन्थ्वोः परस्परं कर्मादिभेदं श्रुत्वा प्रदेशी तयोर्जीवसाम्ये कारणं पृच्छति-'कस्मात् खलु भदन्त! इत्यादि-हे भदन्त! कस्मात् कारणात् खलु हस्तिनः कुन्थोश्च जीवः सम एव?, केशी प्राह-हे प्रदेशिन्! तद् यथाना-मकं-यथादृष्टान्तम् कूटाऽऽकारशाला-पर्वतशिखराकारा स्यात्, यावत्-याव-त्पदेन द्विधातो लिप्ता गुप्ता गुप्तद्वारेति पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः, निर्वात-

---

कुन्थु का हो चाहे हाथी का हो सब में समानता है एक जीव में असं-ख्यात प्रदेश होते हैं. इन प्रदेशों की अपेक्षा सब समान है. कोई भी जीव ऐसा नहीं है कि जिसमें इन प्रदेशों की समानता न हो. पूर्वो-पार्जित शरीर नाम कर्म आदि के द्वारा जिस जीव को जैसा शरीर प्राप्त होता है वह जीव उसमें अपने प्रदेशों को संकोच विस्तारवाला बना लेता है.

જીવમાં-પછી ભલે તે કુન્થુંનો હોય કે હાથીનો સમાનતા છે. એક જીવમાં અસં-ખ્યાત પ્રદેશો હોય છે. આ પ્રદેશોની અપેક્ષાએ આપણે વિચાર કરીએ તો બધા જીવો સમાન જ છે. કોઈ પણ આવો નથી કે જેમા આ પ્રદેશોની સમાનતા હોય નહિ. પૂર્વોપાર્જિત શરીર નામકર્મ વગેરે વડે જે જીવને જેવું શરીર પ્રાપ્ત થાય છે તે જીવ તેમા પોતાના પ્રદેશોને સંકોચ વિસ્તારયુકત બતાવી લે છે, દાખલા તરીકે

गम्भीरा, अथ खलु कोऽपि पुरुषः 'ज्योतिः-अग्निं च दीपं च गृहीत्वा तां-कूटाकारशालाम्, अन्तरतः-अत्यन्ताभ्यन्तरे अनुप्रविशति। तस्याः कूटाकारशालायाः सर्वतः-सर्वदिक्षु, समन्तात्-सर्वविदिक्षु घननिचितनिरन्तराणि-घन-निबिडं यथा स्यात्तथा निचितानि-संघातितानि निरन्तराणि-अन्तररहितानि तानि तथा, अस्य 'द्वारवदनानी'-त्यनेन सम्बन्धः, पुनः निश्छिद्राणि छिद्ररहितानि द्वारवदनानि-द्वारमुखानि, पिदधाति-आच्छादयति, तस्याः-कूटाऽऽकारशालायाः बहुमध्यदेशभागे-अत्यन्तमध्यप्रदेशे तं प्रदीपं प्रदीपयेत्-प्रज्वालयेत्, ततः खलु स प्रदीपः तां कूटाकारशालाम् अन्तरन्तः-सर्वान्तर्भागे-सर्वान्तर्भागावच्छेदेनेति भावः। अवभासयति-प्रकाशयति, उद्द्योतयति-उत्कर्षेण प्रकाशयति, तापयति-संतप्तां करोति प्रभासयति-घटपटादि दर्शनया प्रकर्षेण प्रकाशमानां करोति, किन्तु बहिः-कूटाकारशालाया बहिर्भागं नो चैव-नैव अवभासयति उद्द्योतयति तापयति प्रभासयति। अथ खलु स पुरुषः तं प्रदीपम् इड्डरकेण-महापिटकेन-आवरणविशेषेण पिदध्यात्-आच्छादयेच्चेत्, ततः खलु सः-पिहितः प्रदीपः तत्-प्रदीपपिधानभूतम् इड्डरकम् अन्तः आभ्यन्तरावच्छेदेन अवभासयति किन्तु इड्डरकस्य बहिः-बहिःप्रदेशं नो चैव-नैव खलु अवभासयति तथा कूटाकारशालायाः बहिः नो चैव अवभासयति, एवम्-अनेन प्रकारेण गोकिलिञ्जेन-गोकिलिञ्जं-गवां भक्ष्यप्रदानकुण्डिका, तेन, तथा पच्छिपिटकेन-पच्छिपिटकः-पच्छापाकारो वंशशलाकानिर्मितपात्रविशेषः, तेन, तथा गण्डमाणिकया-गण्डमाणिका-धान्यमापनिका, तथा, आढकेन, अर्धाढकेन, प्रस्थकेन, अर्धप्रस्थकेन, कुडवेन, अर्धकुडवेन, आढकादारभ्यार्धकुडवपर्यन्तानि धान्यमापकानि देशविशेषप्रसिद्धानि पात्रविशेषाणि तैः प्रदीपं पिदध्यादिति पूर्वेण सम्बन्धः, तथा चतुर्भागिकया, अष्टभागिकया, षोडशिकया, द्वात्रिंशिकया, चतुःषष्टिकया-चतुर्भागिकादि चतुष्षष्टिकापर्यन्ता मगधदेशप्रसिद्धा रस रसमानविशेषाः तैः प्रदीपं पिदध्यादिति पूर्वेणान्वयः, एवं-दीपचम्पकेन-दीपपिधानेन प्रदीपं पिदध्यादिति पूर्वेणान्वयः, ततः खलु सः-पिहितः प्रदीपः दीप-

उससे दीप का मुख ढँके (एक पात्र से ढँक दिया जाये तो वह उस कोठे भर को नहीं किन्तु उसका प्रकाश फैल सकता है प्रकाशित करता है और इसी दीपक को यदि किसी के लोहे बर्तन के अन्दर बन्द कर दिया

चम्पकस्य अन्तः-मध्यभागम् अवभासयति उद्द्योतयति तापयति प्रभासयति नो चैव खलु दीपचम्पकस्य बहिः, नो चैव खलु चतुष्टिकां नो चैव खलु चतुष्षष्टिकाया बहिः, एवं दीपचम्पकाच्छादितो दीपः, नो चैव खलु द्वात्रिंशिकां, नो चैव खलु द्वात्रिंशिकायाः बहिः, इत्यादि पश्चादानुपूर्वक्रमेण यावत् नो चैव कूटाकारशालाम्, नो चैव कूटाकारशालाया बहिः अवभासयति उद्द्योतयति तापयति प्रभासयति' इति योजना कार्या एवमेव-प्रदीपदृष्टान्तानुसारेणैव हे प्रदेशिन्! जीवोऽपि यां कांचित्-यादृशीं-पूर्वकर्मनिबद्धां-पूर्वभवोपार्जितकर्मनिबद्धां बोन्दि-तनुं निर्वर्तयति-उत्पादयति तां बोन्दिम् असंख्येयैः असंख्यातैः जीवप्रदेशैः सचित्ता-जीवयुक्तां करोति-सम्पादयति, तां बोन्दिं कीदृशीम्? इति जिज्ञासायामाह क्षुद्रिकाम्-अतिलघ्वीम्, महतीं-विशालाम् वा सचित्तां करोति' इति पूर्वेणान्वयः। तत्-तस्मात्-दीपदृष्टान्तेन जीवस्य पूर्वभवकृतकर्मनिबद्धातिलघुमहाशरीरानुप्रवेशनकारणात् हे प्रदेशिन्! त्वं श्रद्धेहि-मद्वचने श्रद्धां कुरु, यथा-अन्यो जीवः तदेव-पूर्वोक्तमेव अन्यच्छरीरम् नो तज्जीवः स शरीरम, इति। ॥ सू० १५२ ॥

मूलम्--तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-एवं खलु भंते! मम अज्जगस्स एसा सन्ना जाव समोसरणं जहा तज्जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं। तयाणंतरं च णं मम पिउणो वि एसा सण्णा जाव समोसरणं। तयाणंतरं च णं मम

जाता है तो वह उसके भीतरी भाग को ही प्रकाशित करता है. आदि तो जिस प्रकार से दीपक के प्रकाश में संकोच विस्तार करने का स्वभाव है, उसी प्रकार से जीव में भी अपने प्रदेशों को संकोच विस्तार करने का स्वभाव है यही सब विषय इस सूत्र में स्पष्ट किया गया है. 'हत्थीउ कुंथू' इसका अर्थ है हस्ती की अपेक्षा करके। ऋद्धि शब्द से यहां परिवारादिरूप ऋद्धि गृहीत हुई है ॥ सू० १५२ ॥

તે જેમ દીપકના પ્રકાશમાં સંકોચ વિસ્તાર કરવાનો સ્વભાવ છે તેમજ જીવમાં પણ પોતાના પ્રદેશોને સંકુચિત કે વિસ્તૃત કરવાનો સ્વભાવ છે. આ બધી વાતો આ સૂત્રમાં સ્પષ્ટ કરવામાં આવી છે. 'હત્થી ઉ કુંથૂ' એનો અર્થ 'હાથીની અપેક્ષાએ' એવો છે. ઋદ્ધિ શબ્દથી અહીં પરિવારાદિરૂપ ઋદ્ધિનું ગ્રહણ થયું છે. ॥સૂ૦ ૧૫૨॥

वि एसा सण्णा जाव समोसरणं, तं नो खलु अहं बहुपुरिसपरंपरागयं कुलनिस्सियं दिट्ठिं छंडेस्सामि ॥ सू० १५३ ॥

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम्—एवमवादीत् एवं खलु भदन्त ! मम आर्यकस्य एषा संज्ञा यावत् समवसरणं यथा—तज्जीवस्तच्छरीरम्, नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम्, तदनन्तरं च खलु मम पितुरपि एषा संज्ञा यावत् समवसरणम्। तदनन्तरं ममापि एषा संज्ञा यावत् समवसरणम्, तत् नो खलु अहं बहुपुरुषपरम्परागतां कुलनिश्रितां दृष्टिं मोक्ष्यामि ॥ सू० १५३ ॥

'तए णं पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं) इसके बाद (पएसी राया) प्रदेशी राजाने (केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा (एवं खलु भंते ! मम अज्जगस्स एसा सन्ना जाव समोसरणं जहा तज्जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं) हे भदन्त मेरे आर्यक—पितामह की यह संज्ञा थी, यावत् समवसरण था—कि वही जीव है वही शरीर है—जीव शरीर से भिन्न नहीं है शरीर जीव से भिन्न नहीं है (तयाणंतरं च णं ममं पिउणो वि एसा सण्णा जाव समोसरणं,) उसके बाद मेरे पिताकी भी ऐसी ही संज्ञा यावत् ऐसा ही समवसरण रहा, (तयाणंतरं च णं मम वि एसा सण्णा जाव समोसरणं तं नो खलु बहुपुरिसपरंपरागयं कुलनिस्सियं दिट्ठिं छंडेस्सामि) बाद में मेरी भी यही संज्ञा यावत् ऐसा ही समवसरण है—अतः अनेक पुरुष परम्परा से चली आई हुई इस कुलाश्रित दृष्टि को नहीं छोडूंगा. इसलिये जीव और शरीर एक ही है भिन्न २ नहीं है।

चम्पकस्य अन्तः-मध्यभागम् अवभासयति उद्द्योतयति तापयति प्रभासयति नो चैव खलु दीपचम्पकस्य बहिः, नो चैव खलु चतुष्टिकां नो चैव खलु चतुष्षष्टिकाया बहिः, एवं दीपचम्पकाच्छादितो दीपः, नो चैव खलु द्वात्रिंशिकां, नो चैव खलु द्वात्रिंशिकायाः बहिः, इत्यादि पश्चादानुपूर्वक्रमेण यावत् नो चैव कूटाकारशालाम्, नो चैव कूटाकारशालाया बहिः अवभासयति उद्द्योतयति तापयति प्रभासयति' इति योजना कार्या एवमेव-प्रदीपदृष्टान्तानुसारेणैव हे प्रदेशिन्! जीवोऽपि यां कांचित्-यादृशीं-पूर्वकर्मनिबद्धां-पूर्वभवोपार्जितकर्मनिबद्धां बोन्दि-तनुं निर्वर्तयति-उत्पादयति तां बोन्दिम् असंख्येयैः असंख्यातैः जीवप्रदेशैः सचित्ता-जीवयुक्तां करोति-सम्पादयति, तां बोन्दिं कीदृशीम्? इति जिज्ञासायामाह क्षुद्रिकाम्-अतिलघ्वीम्, महतीं-विशालाम् वा सचितां करोति' इति पूर्वेणान्वयः। तत्-तस्मात्-दीपदृष्टान्तेन जीवस्य पूर्वभवकृतकर्मनिबद्धातिलघुमहाशरीरानुप्रवेशनकारणात् हे प्रदेशिन्! त्वं श्रद्धेहि-मद्वचने श्रद्धां कुरु, यथा-अन्यो जीवः तदेव-पूर्वोक्तमेव अन्यच्छरीरम् नो तज्जीवः स शरीरम्, इति। ॥ सू० १५२ ॥

मूलम्--तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-एवं खलु भंते! मम अज्जगस्स एसा सन्ना जाव समोसरणं जहा तज्जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं। तयाणंतरं च णं मम पिउणो वि एसा सण्णा जाव समोसरणं। तयाणंतरं च णं मम

जाता है तो वह उसके भीतरी भाग को ही प्रकाशित करता है आदि तो जिस प्रकार से दीपक के प्रकाश में संकोच विस्तार करने का स्वभाव है, उसी प्रकार से जीव में भी अपने प्रदेशों को संकोच विस्तार करने का स्वभाव है. यही सब विषय इस सूत्र में स्पष्ट किया गया है. 'हत्थीउ कुंथू' इसका अर्थ है हस्ती की अपेक्षा करके। ऋद्धि शब्द से यहां परिवारादिरूप ऋद्धि गृहीत हुई हैं ॥ सू० १५२ ॥

ते. જેમ દીપકના પ્રકાશમાં સંકોચ વિસ્તાર કરવાનો સ્વભાવ છે તેમજ જીવમાં પણ પોતાના પ્રદેશોને સંકુચિત કે વિસ્તૃત કરવાનો સ્વભાવ છે. આ બધી વાતો આ સૂત્રમાં સ્પષ્ટ કરવામા આવી છે. 'હત્થી ઉ કુંથૂ' એનો અર્થ 'હાથીની અપેક્ષાએ' એવો છે. ઋદ્ધિ શબ્દથી અહીં પરિવારાદિરૂપ ઋદ્ધિનું ગ્રહણ થયુ છે. ॥સૂ૦ ૧૫૨॥

वि एसा सण्णा जाव समोसरणं, त नो खलु अहं बहुपुरिसपरंपरागयं कुलनिस्सियं दिट्ठि छंडेस्सामि ॥ सू० १५३ ॥

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम्—एवमवादीत् एवं खलु भदन्त ! मम आर्यकस्य एषा संज्ञा यावत् समवसरणं यथा—तज्जीवस्तच्छरीरम्, नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम्, तदनन्तरं च खलु मम पितुरपि एषा संज्ञा यावत् समवसरणम् । तदनन्तरं ममापि एषा संज्ञा यावत् समवसरणम्, तत् नो खलु अहं बहुपुरुषपरम्परागतां कुलनिश्रितां दृष्टिं मोक्ष्यामि ॥ सू० १५३ ॥

'तए णं पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तएणं) इसके बाद (पएसी राया) प्रदेशी राजाने (केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा (एवं खलु भंते ! मम अज्जगस्स एसा सन्ना जाव समोसरणं जहा तज्जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं) हे भदन्त मेरे आर्यक—पितामह की यह संज्ञाथी, यावत समवसरण था—कि वही जीव है वही शरीर है—जीव शरीर से भिन्न नही है शरीर जीव से भिन्न नहीं है (तयाणंतरंच णं मम पिउणो वि एसा सण्णा जाव समोसरणं,) उनके बाद मेरे पिताकी भी ऐसी ही संज्ञा यावत् ऐसा ही समवसरण रहा, (तयाणंतरं च णं मम वि एसा सण्णा जाव समोसरण तं नो खलु बहुपुरिसपरंपरागयं कुलनिस्सियं दिट्ठिं छंडेस्सामि) बाद में मेरी भी यही संज्ञा यावत ऐसा ही समवसरण है—अतः अनेक पुरुष परम्परा से चली आई हुई इस कुलाधीनमान्यता को नही छोडुंगा, इसलिये जीव और शरीर एक ही है भिन्न २ नहीं है।

'तए णं पएसी राया' इत्यादि ।

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यारबाद (पएसी राया) प्रदेशी राजाए (केसिं कुमारसमणं एवं वयासी) केशीकुमार श्रमणने आ प्रमाणे कह्युं-(एवं खलु भंते ! मम अज्जगस्स एसा सन्ना जाव समोसरणं जहा तज्जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं) हे भदंत ! मारा आर्यक-पितामहनी आ संज्ञा हती यावत् समवसरण हतुं के तेज जीव छे, तेज शरीर छे, जीव शरीर करता भिन्न नथी. (तयाणंतरं च णं मम पिउणो वि एसा सण्णा जाव समोसरणं) त्यार पछी मारा पितानी पण एवीज संज्ञा यावत् एवुं ज समवसरण हतुं (तयाणंतरं च णं मम वि एसा सण्णा जाव समोसरणं तं नो खलु बहुपुरिसपरंपरागयं कुलनिस्सियं दिट्ठि छंडेस्सामि) त्यार पछी मारी पण एवीज संज्ञा यावत् समोवसरण छे एटला माटे अनेक पुरुष परंपराथी चाली आवती आ कुलाधीन मान्यता ने हुं त्यजीश नहीं एथी जीव अने शरीर एकज छे भिन्नभिन्न नथी.

टीका—'तए णं पएसी राया' इत्यादि ततः खलु प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम्, एवमवादीत्—एवं खलु हे भदन्त ! मम आर्यकस्य—पितामहस्य एषा संज्ञा यावत्—यावत्पदेन एषा प्रतिज्ञा एषा दृष्टिः एषा हेतुः एष उपदेशः एषः संकल्पः एषा तुला एतद् मानम् एतत् प्रमाणम्" इत्येषां पदानां संग्रहो बोध्यः समवसरणमासीत् । एषां व्याख्या—एकत्रिंशदधिकैकशततमसूत्रतो विज्ञेया । यथा—तज्जीवः तच्छरीरम् नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरम्, इति मम पितामहस्य मन्तव्यमासीत् । तदनन्तरं च खलु मम पितुरपि एषा—अनन्तरोक्ता संज्ञा यावत् समवसरणमासीत् । तदनन्तरं च खलु ममापि एषा संज्ञा यावत् समवसरणमस्ति, तत्—तस्मात् कारणात् खलु अहं बहुपुरुषपरम्परागतां—पितामहादिपरम्परासमागतां कुलनिश्रितां कुलनिश्रया समागतां दृष्टिम् नो मोक्ष्यामि—न त्यक्ष्यामि— अपि तु तज्जीवः स शरीरं नो अन्यो जीवोऽन्यच्छरीरमिति मतमेव स्वीकरिष्यामि ।।सू०१५३।।

मूलम्—तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी—मा णं तुमं पएसी ! पच्छाणुताविए भवेज्जासि, जहा व से पुरिसे अयहारए। के णं भंते ! से अयहारए ?। पएसी ! से जहाणामए केई पुरिसा अत्थत्थिया अत्थगवेसिया अत्थलुद्धया अत्थकंखिया अत्थपिवासिया अत्थगवेसणयाए विउलं पणियभंडमायाए सुबहुं भत्तपाण पत्थयणं गहाय एगं महं अगामियं छिन्नावायं दीहमद्धं अडविं अणुपविट्ठा ।

टीकार्थ—स्पष्ट है—'सन्ना जाव समोसरणं' में जो यह यावत् पद आया है उस से यहां—एषा प्रतिज्ञा एषा दृष्टिः एषा रुचिः, एष हेतुः, एषः उपदेशः, एषः संकल्पः, एषा तुला, एतद् मानम् एतत् प्रमाण) इन पदों का संग्रह हुआ है. इन सब पदों की व्याख्या तथा 'समवसरण' इस पद की व्याख्या १३० वे सूत्र में की जा चुकी है। अतः मैं जीव शरीर की अभिन्नता को ही स्वीकार करूंगा, भिन्नता को नहीं ।। सू० १५३ ।।

ટીકાર્થ—સ્પષ્ટ જ છે. 'सन्ना जाव समोसरणं' માં જે યાવત્ પદ છે તેથી અહીં 'एषा प्रतिज्ञा एषा दृष्टिः एष उपदेशः एषः संकल्पः एषा तुला, एतत मानम् एतद् प्रमाणम्" આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. આ સર્વ પદોની વ્યાખ્યા ૧૩૦ મા સૂત્રમાં કરવામાં આવી છે. એથી હું જીવ તેમજ શરીરની અભિન્નતાને જ સ્વીકારીશ ભિન્નતાને નહિ. ॥સૂ૦ ૧૫૩॥

तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए अडवीए जाव कंचिदेसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं अयागरं पासंति, अयसणं सव्वओ समंता आइण्णं वित्थिणं सच्छडं उवच्छडं फुडं अणुगाढं पासंति, पासित्ता हट्ठा तुट्ठा जाव हियया अन्नमन्नं सद्दावेंति, एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! अयागरे इट्ठे कंते जाव मणामे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं अयभारगं बंधित्तएत्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, अयभारं बंधंति अहाणुपुव्वीए संपत्थिया। तए णं ते पुरिसा अगामियाए जाव अडवीए किंचिदेसं अणुपत्ता समाणा एगं महं तउआगरं पासंति, तउएणं सव्वओ समंता आइण्णं तं चेव जाव सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! तउआगरे इट्ठे जाव मणामे, अप्पेणं चेव तउएणं सुबहुं अए लब्भइ, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति अयभारं छड्डेंति तउयभारं बंधंति। तत्थ एगे पुरिसे णो संचाएइ अयभारं छड्डेत्तए तउयभारं बंधित्तए, तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! तउआगरे जाव सुबहुं अए लब्भइ, तं छड्डेहि, णं देवाणुप्पिया! अयभारगं, तउयभारगं बंधाहि। तए णं से पुरिसे एवं वयासी—दूराहडे मए देवाणुप्पिया! अए, चिराहडे मए देवाणुप्पिया! अए, अइगाढबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए, असिढिलबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए, धणियबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया! अए, णो संचाएमि अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तए। तए णं ते

पुरिसा तं पुरिसं जाहे णो संचायंति बहूहिं आघवणाहि य पण्णव-णाहि य परूवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा परूवित्तए वा तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया ! एवं तंबागरं रुप्पागरं, सुवण्णागरं रयणागरं, वइरागरं । तए णं ते पुरिसा जेणेव सया जणवया जेणेव साइं साइं नगराइं तेणेव उवागच्छंति, वयरविक्किणणं करेंति, सुबहु दासीदासगोमहिसगवेलगं गिण्हंति, अट्ठतलमूसिय पासायवडिंसगे, कारावेंति, ण्हाया कयबलिकम्मा कायकोउयमंगलपायच्छित्ता उप्पिं पासायवरगया फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणा उवगिज्जमाणा उवलालिज्ज-माणा इट्ठे सद्दफरिसरसरूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्च-णुभवमाणा विहरंति । तए णं से पुरिसे अयभारेण जेणेव सए नयरे तेणेव उवागच्छइ, अयभारगं गहाय अयविक्किणणं करेइ तंसि अप्पमोल्लंसि निट्ठियंसि खीणपरिव्वए ते पुरिसे उप्पिं पासाय-वरगए जाव विहरमाणे पासइ, पासित्ता एवं वयासी—अहो! णं अहं अधण्णो अपुन्नो अकयत्थो अकयलक्खणो हिरिसिरिवज्जिओ हीणपुण्णचाउद्दसे दुरंतपंतलक्खणे। जइ णं अहं मित्ताण वा णाईण, वा नियगाण वा वयणं सुणेंतओ तो णं अहंपि एवं चेव उप्पिं पासायवरगए जाव विहरेंतओ । से तेणट्ठेणं पएसी ! एवं वुच्चइ-मा तुमं पएसी ! पच्छाणुताविए भविज्जासि, जहा व से पुरिसे अयभारए ॥ सू० १५४ ॥

छाया—ततः खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिं राजानमेवमवादीत् मा खलु त्वं प्रदेशिन्! पश्चादनुतापिको भवेः, यथा वा स पुरुषोऽयोहारकः। कः खलु भदन्त! सोऽयोहारकः?। प्रदेशिन्! ते यथा नामकाः केचित् पुरुषा अर्थार्थिकाः अर्थगवेषकाः अर्थलुब्धकाः अर्थकांक्षिनः अर्थपिपासिताः अर्थगवेषणायै विपुलं पणितभाण्डमादाय सुबहुभक्तपानपथ्यदनं गृहीत्वा एकां महतीम् अग्रामिकां छिन्नाऽऽपातां दीर्घाध्वाम् अटवीमनुप्रविष्टाः। ततः खलु ते पुरुषाः तस्याः अग्रामिकाया यावत्

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं) इसके बाद (केसीकुमारसमणे) केशीकुमार श्रमणने (पएसिंरायं एवं वयासी) प्रदेशी राजा से ऐसा कहा (मा णं तुमं पएसी! पच्छाणुताविए भवेज्जासि—जहा व से पुरिसे अयहारए) हे प्रदेशिन! तुम पश्चात्तापयुक्त मत बनो जैसा कि वह अयोहारक—लोहवणिक—पश्चात्तापयुक्त बना,

अब प्रदेशी उससे परिचय को जानने के अभिप्राय से पूछता है (के णं भंते! से अयहारए) हे भदन्त! वह अयोहारक कौन था? इस पर केशीकुमारश्रमण कहते हैं—(पएसी! से जहाणामए केई पुरिसा अत्थत्थिया अत्थगवेसिया अत्थलुद्धया, अत्थकंखिया, अत्थपिवासिया, अत्थगवेसणयाए विउलं पणियभंडमायाए सुबहुं भत्तपाणपत्थयणं गहाय एगं महं अगामियं छिन्नावायं दीहमद्धं अडविं अणुपविट्ठा) हे प्रदेशिन्। अनिर्दिष्ट नामवाले कितनेक पुरुष जो कि धन के अर्थी थे, धन के गवेषक थे, धन के लोलुप थे, धनकी कांक्षा से युक्त थे, धनकी प्यासवाले थे, धनकी गवेषणा के लिये विपुल क्रयाणक-

---

'तए णं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तए णं) त्यार पछी (केसीकुमारसमणे) केशी कुमारश्रमणे (पएसिं रायं एवं वयासी) प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं (मा णं तुमं पएसी! पच्छाणुताविए भवेज्जासि—जहाव से पुरिसे अयहारए) हे प्रदेशिन! तमे पेला अयोहारक-लोह वणिक्-नी जेम, पश्चात्ताप न करो. हवे प्रदेशी तेना संबंधमां बधी विगत जाणवा माटे आ प्रमाणे पूछे छे-(किं णं भंते! से अयहारए) हे भदंत ते अयोहारक लोखंडनो वेपारी कोण हतो? तेना जवाबमां केशी कुमार श्रमण कहे छे-(पएसी! से जहाणामए केई पुरिसा अत्थत्थिया अत्थगवेसिया अत्थलुद्धया, अत्थकंखिया, अत्थपिवासिया, अत्थगवेसणयाए विउलं पणियभंडमायाए सुबहुं भत्तपाणपत्थयणं गहाय एगं महं अगामियं छिन्नावायं दीहमद्धं अडविं अणुपविट्ठा) हे प्रदेशिन! अनिर्दिष्ट नामवाळा केटलाक पुरुषो के जेओ धनार्थी हता, धनना गवेषक हता, धनना लोलुप हता

अटव्याः कंचित् देशमनुप्राप्ताः सन्तः एकं महान्तम् अयआकारं पश्यति, अयसा सर्वतः समन्ताद् आकीर्णं विस्तीर्णं सच्छटम् उपच्छटं स्फुटम् अनुगाढं पश्यन्ति, दृष्ट्वा हृष्टाःतुष्टाः यावत् हृदयाः अन्योऽन्यं शब्दयन्ति, एवमवादिषुः—एष खलु देवानुप्रियाः ! अयआकरः इष्टः कान्तः यावत् मनआमः, तत् श्रेयः खलु देवानुप्रियाः

वस्तु समूह को लेकर तथा साथ में पर्याप्त अशनपानरूप पाथेयलेकर एक विशाल अटवी में जो वसति से रहित थी, हिंसक जतुओं के भय से मनुष्यों का गमनागमनरूप संचार जिसमें विलकुल नहीं था और दीर्घमार्गयुक्त थी जा पहुँचे (तए णं से पुरिसा तीसे अग्गमियाए अडवीए कंचिदेसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं अयागरं पासंति) इसके बाद वे पुरुष जब उस अग्रामिका, छिन्नापात-युक्ता एवं दीर्घाध्वावाली अटवी के और आगेके प्रदेश में आ चुके तव उन्होंने वहां पर एक लोहे की खान को देखा (अएणं सव्वओ समंता आइण्णं सच्छडं उवच्छडं फुडं अणुगाढं पासंति] यह खान सब तरफ से लोहेसे आकीर्ण बनी हुई थी. स्पष्टरूप में नहीं थी बहुत विस्तारवली थी समीचीन छटा—चाकचिक्यवाली थी. छटायुक्त थी. स्पष्टरूप में नहीं थी. (पासित्ता हट्ठतुट्ठा जाव हियया अन्नमन्नं सद्दावेति) इस लोहे की खान देखकर वे बहुत अधिक हृष्ट एवं तुष्ट यावत् हृदयवाले हुए और फिर उन्होंने आपस मे एक दूसरे को बुलाया (एवं वयासी) बुलाकर ऐसा कहा (एस णं देवाणुप्पिया ! अयागरे इट्ठे कंते,

---

ધનની કાંક્ષાથી યુક્ત હતા, ધનની તરસવાળા હતા, ધનની ગવેષણા માટે વિપુલ ક્રયાણક વસ્તુ સમૂહને લઈને તેમજ સાથે પર્યાપ્ત અશનપાનરૂપ પાથેય લઈને એક વિશાળ અટવીમા—કે જે એકદમ નિર્જન હતી, હિંસક જંતુઓના ભયથી માણસોની અવરજવર જેમાં સદંતર બંધ હતી અને દીર્ઘ માર્ગ યુકત હતી જઈ પહોંચ્યા. (त एणं ते पुरिसा तीसे अग्गमियाए अडवीए कंचिदेसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं अयागारं पासंति) ત્યાર પછી તે માણસોને અગ્રામિકા, છિન્નાપાત યુકત અને દીર્ઘાધ્વાવાળી અટવીની અંદર ખૂબ આગળ જતા રહ્યા ત્યા તેમણે લોખંડની મોટી ખાણ જોઈ (अएण सव्वओ समंता आइण्णं वित्थिण्ण सच्छडं उवच्छडं फुडं अणुगाढं पासंति) આ ખાણ ચોમેર લોખંડથી આકીર્ણ હતી. બહુ જ વિસ્તાર યુકત હતી. સમીચીન છુટા એટલે કે ચાકચિક્ય વાળી હતી, છટાયુકત હતી. સ્પષ્ટરૂપથી દેખાતી હતી- અને એક પુંજ રૂપમાં હતી છિન્નભિન્ન રૂપમા ન હતી. (पासित्ता हट्ठतुट्ठा जाव हियया अन्नमन्नं सद्दावेत्ति) તે લોખંડની ખાણુને જોઈને બહુજ વધારે હૃષ્ટતુષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળા થયા અને પછી તેમણે પરસ્પર એકબીજાને બોલાવ્યા. (एवं वयासी) બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું (एस ण देवाणुप्पिया ! अयागरे इट्ठे, कंते, जाव मणामे)

अस्माकम् अयोभारकं बद्धम्, इति कृत्वा अन्योऽन्यस्य एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति, अयोभारं बध्नन्ति, यथाऽनुपूर्वि प्रस्थिताः । ततः खलु ते पुरुषाः अग्रामिकाः यावत् अटव्याः किञ्चिद्देशम् अनुप्राप्ताः सन्तः एकं महान्तं त्रप्वाकरं पश्यन्ति, त्रपुणा सर्वतः समन्तात् आकीर्णं तदेव यावत् शब्दयित्वा एवमवादिषुः—एष खलु देवानुप्रियाः ! त्रप्वाकरः इष्टः यावत् मनओमः, अल्पेनैव त्रपुणा सुबहु अयो लभ्यते, तत् श्रेयः

जाव मणामे] हे देवानुप्रियो ! यह लोहे की खान इष्ट है, यावत् मनोज्ञ है (तं सेयं खलु देवाणुप्पिया । अम्हं अयभारगं बंधित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति) अतः उचित है कि हम लोग इस लोहे के भार यहां से ले लेवें इस प्रकार विचार करके उन्होंने आपसके इस विचार को निश्चय का रूप दे दिया (अयभारं बंधंति) और लोहे को वहां से ले लिया (अहाणुपुव्विए संपत्थिया) और लेकर वहां से क्रमशः चल दिया (तए णं ते पुरिसा अगामियाए जाव अडवीए कंचिदेसं अणुपत्ता समाणा एगं महं तउआगरं पासंति) इसके बाद वे चलते २ जब और अधिक आगे निकल गये तब उन्होंने उस अग्रामिक आदि विशेषणवाली अटवी में एक बहुत बडी त्रपु—रांगा की खान को देखा (तए णं सव्वओ समंता आइण्णं तं चेव जाव सद्दावेत्ता एवं वयासी) संतुष्ट यावत् हृदय वाले हुए बाद में उन्होंने आपस में एक दूसरे को बुलाया बुलाकर ऐसा कहा—(एस णं देवाणुप्पिया ! तउआगारे इट्ठे जाव मणामे] हे देवानुप्रिया ! यह रांगा

તે લોખંડની ખાણ ઇષ્ટ છે. કાંત યાવત મનોજ્ઞ છે (तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं अयभारगं बंधित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति) એથી અમારા માટે આ વાત બરાબર છે કે અમે બધા આ લોખંડના ભારને અહીંથી લઈ જઈએ આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે પરસ્પર કરેલ આ વિચારને નિશ્ચયાત્મકરૂપ આપ્યું (अयभारं बंधंति) અને લોખંડને ત્યાંથી લઈ લીધું (अहाणुपुव्विए संपत्थिया) અને લઈને ત્યાંથી ક્રમશઃ આગળ ચાલતા થયા. (तए णं ते पुरिसा अगामियाए जाव अडवीए कंचिदेसं अणुपत्ता समाणा एगं महं तउआगरं पासंति) ત્યાર પછી તેઓ જતા જતા જ્યારે ખૂબ દૂર નીકળી ગયા ત્યારે તેમણે અગ્રામિકા વગેરે વિશેષણોથી યુક્ત અટવીમાં એક બહુ વિશાળ ત્રપુ રાંગા (કથીર)ની ખાણને જોઈ. (तए णं सव्वओ समंता आइण्णं तं चेव जाव सद्दावेत्ता एवं वयासी) તે રાંગાની ખાણ ચોમેર રાંગાથી ભરાયેલી હતી, યાવત્ એક પુંજ રૂપમાં હતી આ ખાણને જોઈને તેઓ સર્વે ખૂબજ ખુશ થઈ અને સંતુષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળા થયા ત્યાર પછી તેમણે એક બીજાને બોલાવ્યા અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું (एस णं देवाणुप्पिया ! तउआगारे इट्ठे जाव मणामे) હે દેવા

खलु देवानुप्रियाः! अस्माकम् अयोभारकं मुक्त्वा त्रपुकभारकं बद्धुम्, इतिकृत्वा अन्योऽन्यस्य अन्तिके एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति, अयोभारं मुञ्चन्ति, त्रपुकभारं बध्नन्ति! तत्र खलु एकः पुरुषो नो शक्नोति अयोभारं मोक्तुम् त्रपुकभारं बद्धुम्। ततः खलु ते पुरुषाः तं पुरुषमेवमवादिषुः-एष खलु देवानुप्रिय! त्रप्वाकरः यावत सुबहुअयो लभ्यते, तद् मुञ्च खलु देवानुप्रिय! अयोभारकम, त्रपुकभारकं बधान। ततः स पुरुषः एवमवादीत्-दूराऽऽहृतं मया देवानुप्रियाः! अयः, चिराऽऽहृतं मया

खान इष्ट यावत् मन आम-अर्तिहर होने से मन गम्य है [अप्पे णं चेव तउएण सुबहुं अए लब्भइ) थोडे से ही रांगा से बहुत अधिक लोहा हमें मिल सकता है (तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेति) अतः हमारी भलाई अब इसी में है कि हम इस लोहे के भार को छोडकर इस रांगा को यहां से बांध ले, इस प्रकार का विचार करके उन्होंने आपस के इस कृत विचार को निश्चय का स्थान दे दिया. (अयभारं छड्डेंति, तउयभारं बंधेंति) और लोहके भार को छोडकर रांगा के भार को बांध लिया। (तत्थ णं एगे पुरिसे णो संचाएइ, अयभारं छड्डेत्तए, तउएभारं बंधित्तए) परन्तु इनमें एक पुरुष ऐसा भी था-जो लोहे के भार को छोडने में और रांगा के भार को ग्रहण करने में बांधने में असमर्थ था, अर्थात वह ऐसा करना नहीं चाहता था. (तएणं ते पुरिसा

नुप्रियो! આ રાંગાની ખાણ ઇષ્ટ યાવત્ મન આમ-અર્તિહર હોવા બદલ મનગમ્ય છે. (अप्पे णं चेव तउएणं सुबहुं अए लब्भइ) થોડા રાંગાથી અમને ઘણું લોખંડ મળી શકે છે. (तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! अयभारगं, छडेत्ता तउयभारगं बंधित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति) એથી અમારા માટે એ જ સારૂં છે કે અમે લોખંડના ભારને ત્યજીને આ રાંગાને અહીંથી બાંધી લઈએ. આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે પરસ્પર કૃત આ વિચારને નિશ્ચયાત્મકરૂપ આપી દીધું. (अयभारं छडेंति, तउयभारं बंधति) અને લોખંડના ભારને મૂકીને તાંબાના ભારને સાથે લઈ લીધો. (तत्थ णं एगे पुरिसे णो संचाएइ, अयभारं छडेत्तए, तउए भारं बंधित्तए) પણ તે બધામાં એક માણસ એવો પણ હતો કે જે લોખંડના ભારને ત્યજીને રાંગાને ગ્રહણ કરવાની વાતને ઉચિત માનતો ન હતો (तएणं ते पुरिसा तं पुरिसं एवं वयासी) ત્યારે તે પુરૂષોએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યું-(एस णं देवाणुप्पिया! तउआगरे जाव सुबहुं अए लब्भइ) હે દેવાનુપ્રિય! આ રાંગાની ખાણ છે, ઇષ્ટ કાંત વગેરે વિશેષણોથી યુક્ત છે. થોડા રાંગાથી પણ આપણે ઘણું લોખંડ મેળવી શકીએ તેમ છીએ. (तं छड्डेहि णं देवाणुप्पिया!

देवानुप्रियाः ! अयः, अतिगाढबन्धनबद्धं मया देवानुप्रियाः ! अयः, अशिथिल-बन्धनबद्धं मया देवानुप्रियाः ! अयः, अत्यन्तगाढबन्धनबद्धं देवानुप्रियाः ! अयः, नो शक्नोमि अयोभारकं त्यक्त्वा त्रपुकभारकं बद्धुम् । ततः खलु ते पुरुषाः तं

तं पुरिसं एवं वयासी) तब उन पुरुषोंने उस पुरुष से ऐसा कहा—(एस णं देवाणुप्पिया ! तउ आगरे जाव सुबहु अए लब्भइ) हे देवानुप्रिय ! यह रांगे की खान है. इष्ट कान्त आदि विशेषणोंवाली है. थोडे से रांगा से ही बहुत अधिक लोहा प्राप्त किया जा सकता है। (तं छड्डेहि ण देवाणुप्पिया ! अयभारगं, तउयभारगं बंधाहि) इसलिये ! तुम हे देवानुप्रिय ! इस लोहे के भार को छोड दो और रांगा के भार को बांध लो—लेलो (तएण से पुरिसे एवं वयासी) तब उस पुरुषने ऐसा कहा (दूराहडे मए देवाणुप्पिया ! अए, चिराहडे मए, देवाणुप्पिया ! अए अइगाढबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया ! अए, असिढिलबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया ! अए, धणियबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया ! अए, णो संचाएमि अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तए) हे देवानुप्रियो ! इसलोहके भारको मैं बहुत दूर से लाया हूं, बहुत समय से इसे लादे हुए हूं, हे देवानुप्रियो ! मैंने इसे बहुत ही गाढ बंधन से बांधा है अर्थात् बहुत अधिक कसकर बांधा हुआ है. अशिथिल बंधन से—अब खुल सके ऐसे बन्धन मे नहीं बांधा है किन्तु हे देवानुप्रियो ! मैंने इस लोहे को प्रचुर बंधन से बांधा है, अतः अब मैं अयोभार को छोडकर त्रपुक भारको ग्रहण करने के लिये समर्थ नहीं हूं अर्थात् लोहे के भार को छोड कर रांगा के भार को नहीं लूं। (तएणं से

अयभारगं, तउयभारगं बंधाहि) એટલા માટે તમે હે દેવાનુપ્રિયો ! આ લોખંડના ભારને મૂકી દો અને રાંગાના ભારને બાંધી લો. (तएणं से पुरिसे एवं वयासी) ત્યારે તે પુરુષે આ પ્રમાણે કહ્યું—(दूराहडे मए देवाणुप्पिया ! अए, चिराहडे मए, देवाणुप्पिया अए गाढबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया ! अए, धणियबंधणबद्धे मए देवाणुप्पिया ! अए, णो संचाएमि अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तए) હે દેવાનુપ્રિયો ! આ લોખંડના ભારને [illegible] દૂરથી લાવ્યો છું, ઘણા સમયથી મેં આને ઉપાડી રાખ્યો છે હે દેવાનુપ્રિયો ! આને [illegible] ગાઢ બંધન બાંધ્યો છે એટલે કે મેં આને કસીને બાંધ્યો છે [illegible] એવા બંધનથી બાંધ્યો નથી પણ હે દેવાનુપ્રિયો ! મેં આ લોખંડના [illegible] બંધનથી બાંધ્યો છે એટલા માટે હવે [illegible] આ લોખંડના ભારને [illegible] ગ્રહણ કરવામાં સમર્થ નથી એટલે કે લોખંડના ભારને [illegible] હું છોડીશ નહીં. (तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं जाहे णो संचाएंति बहूहिं

पुरुषं यदा नो शक्नुवन्ति बहुभिः आख्यापनाभिश्च प्रज्ञापनाभिश्च प्ररूपणाभिश्च आख्यापयितुं वा प्रज्ञापयितुं वा प्ररूपयितुं वा तदा यथाऽऽनुपूर्व्या संप्रस्थिताः। एवं ताम्राऽऽकरं रूप्याऽऽकरं सुवर्णाऽऽकरं वज्राऽऽकरं। ततः खलु ते पुरुषाः यत्रैव स्वानि स्वानि नगराणि तत्रैव उपागच्छन्ति, वज्रविक्रयणं कुर्वन्ति, सुबहु

पुरिसा तं पुरिसं जाहे णो संचायंति बहूहिं आघवणाहि य, पण्णवणाहि य, परूवणाहि य, आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा परूवित्तए वा तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया) तब उन पुरुषों ने जब कि उसे अनेक दृष्टान्तरूप आख्यापनाओं द्वारा, हेयोपादेय–प्रतिबोधक प्रज्ञापनाओं द्वारा, तथा यथार्थ स्वरूपनिरूपक प्ररूपणाओं द्वारा समझाया परन्तु वह नहीं समझा, वहां से आगे क्रमशः प्रयाण करना प्रारंभ कर दिया. (एवं तंबागरं, रुप्पागरं, सुवण्णागरं, वइरागरं) ज्यों २ वे आगे चले उन्होंने वैसे २ ताम्र की खान को, रूप्य की खान को सुवर्ण की खान को, रत्न की खान को और हीरे की खान को देखा (तएणं ते पुरिसा जेणेव सया जणवया जेणेव साइं साइं नगराइं तेणेव उवागच्छंति) वहां २ से अल्प मूल्य की उन २ ताम्रादिरूप वस्तुओं का परित्याग करते हुए और लोह भार-ग्रहण करने में ही आदर बुद्धिवाले बने हुए उस पुरुष को उन २ वस्तुओं के भरने के विषय में समझाने पर भी उसकी हठाग्राहिता को छुडवाने में असमर्थ बने हुए वे सब पुरुष जहां अपने २ जनपद-देश थे और उनमें जहां २ अपने २ नगर थे वहां पर वज्रमणियों को लिये हुए आये (वइरविक्किणणं करेंति) वहां

आघवणाहि य पण्णवणाहि य, परूवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा परूवित्तए वा, तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया) ત્યાર પછી તે પુરૂષોએ ઘણાં દૃષ્ટાંત રૂપ આખ્યાપનાઓ દ્વારા, હેયોપાદેય પ્રતિબોધક પ્રજ્ઞાપનાઓ દ્વારા, તેમજ યથાર્થ સ્વરૂપ નિરૂપક પ્રરૂપણાઓ દ્વારા સમજાવ્યો, પણ તે માન્યો નહિ, ત્યાંથી બધાઓએ ક્રમશઃ ચાલવા માંડયું. (एवं तंबागरं, रुप्पागरं, सुवण्णागरं, रयणागरं, वइरागरं) જેમ જેમ તેઓ આગળ વધતા ગયા તેમ તેમ તેમણે તાંબાની ખાણોને, ચાંદીની ખાણોને, સુવર્ણની ખાણોને, રત્નની ખાણોને અને હીરાઓની ખાણોને જોઇ. (तए णं ते पुरिसा जेणेव सया जणवया जेणेव साइं साइं नगराइं तेणेव उवागच्छंति) ત્યાંથી અલ્પમૂલ્યની તે તામ્રાદિ વસ્તુઓને મૂકીને અને લોહભાર ગ્રહણ કરવામાં જ પ્રવૃત્ત થયેલા તે માણસને તેઓએ મૂલ્યવાન્ વસ્તુઓને લેવા માટે આગ્રહ કર્યો છતાંએ તેની હઠાગ્રાહિતાને છોડાવવામાં અંતે નિષ્ફળ ગયા. અને આમ તેઓ બધા જ્યાં પોતપોતાનો જનપદ-દેશ હતો અને તેમાં પણ જ્યાં પોતપોતાનું નગર હતું ત્યાં વજ્રમણિઓ વગેરે લઇ પહોંચી ગયા. (वइरविक्किणणं करेंति)

दासीदासगोमहिषगवेलकं गृह्णन्ति, अष्टतलोच्छ्रितप्रासादावतंसकान् कारयन्ति. स्नाताः कृतबलिकर्माणः कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताः उपरिप्रासादवरगताः स्फुटद्भिर्मृदङ्गमस्तकैः द्वात्रिंशद्बद्धकैर्नाटकैर्वरतरुणीसंप्रयुक्तैरुपनर्त्यमाना उपगीयमानाः उपलाल्यमानाः इष्टान् शब्द-स्पर्श-रसरूपगन्धान् पञ्चविधान् मानुष्यकान कामभोगान प्रत्यनुभवन्तो

आकरके इन्होंने वज्रमणियो का विक्रय किया. (सुवहुदासीदासगोमहिसगवेलगं गिण्हंति) और उसे प्राप्त द्रव्य से अनेक दासी, दास, गो महिष तथा गवेलको को खरीदा अर्थात् इनका संग्रह किया (अट्ठतलमूसियपासायवडिंसगे कारावेंति) और आठ खण्डों से सुशोभित ऊचे २ श्रेष्ठ प्रासादो का निर्माण कराया (ण्हायाकयबलिकम्मा, कयकोउयमंगलपायच्छित्ता) स्नान करके बलिकर्म—वायसादिको अन्नादि का भाग देने रूप बलिकर्म करके एवं कौतुक, मंगलरूप प्रायश्चित्त करके वे उन (उप्पिं पासायवरगया) प्रासादों के ऊपर ही रहते (फुट्टमाणेहिं, मुइंगमत्थएहिं, बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं, वरतरुणी संपउत्तेहिं) और वहीं रहकर वे अतिवेग से ताडित किये गये मृदङ्गों के निनादों से तथा सुन्दर २ तरुणियों द्वारा अभिनीत किये गये बत्तीस प्रकार के नाटकों से (उवणच्चिज्जमाणा) उपनर्त्यमान (उवगिज्जमाणा, उवलालिज्जमाणा) उपगीयमान और उपलाल्यमान होते हुए (इट्ठे सद्दफरिस-रस-रूव-गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति) इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध इन पाच प्रकार के मनुष्यसंबंधी कामभोगों को भोगते २ आनन्दपूर्वक अपना समय व्यतीत करने लगे (नगरं मे

त्यां पहोंचीने तेमणे वज्रमणिओनुं वेचाण कर्युं (सुबहुदासीदासगोमहिसगवेलगं गिण्हंति) अने जे द्रव्य मळ्युं तेनाथी घणा दासी दास, गो, महिष तेमज गवेलकोनी खरीदी करी. एटले के एमनो संग्रह कर्यो. (अट्ठतलमूसियपासायवडिंसगे कारावेंति) अने आठ माळाओथी सुशोभित ऊंचा ऊंचा श्रेष्ठ प्रासादोनुं निर्माण कराव्युं (ण्हाया कयबलिकम्मा. कयकोउयमंगलपायच्छित्ता) स्नान करीने, बलिकर्म-कागडा वगेरेने अन्न वगेरेनो भाग आपीने अने कौतुक मंगल रूप प्रायश्चित्त करीने तेओ ते (उप्पिं पासायवरगया) प्रासादोनी उपर ज रहेवा लाग्या (फुट्टमाणेहिं. मुइंगमत्थएहिं. बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं, वरतरुणी संपउत्तेहिं) अने त्यां रहीने तेओ अतिवेगथी प्रताडित करेल, मृदंगना निनादोथी तेमज सुंदर सुंदर तरुण स्त्रीओ द्वारा अभिनीत करायेल बत्रीस प्रकारना नाटकोथी (उवणच्चिज्जमाणा) उपनृत्यमान (उवगिज्जमाणा उवलालिज्जमाणा) उपगीयमान अने उपलाल्यमान थता (इट्ठे सद्द फरिस—रस—रूव गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति) इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप गंध आ पांच प्रकारना मनुष्य संबंधी कामभोगोने भोगवता [illegible]

विहरन्ति । ततः खलु स पुरुषः अयोभारेण यत्रैव स्वं नगर तत्रैव उवागच्छन्ति, अयोभारकं गृहीत्वाऽयोविक्रयणं करोति, तस्मिन अल्पमूल्यनिष्ठिते क्षीण-परिव्ययः तान् पुरुषान् उपरि प्रासादवरगतान् यावद् विहरतः पश्यति, दृष्ट्वा

पुरिसे अयभारेण जेणेव सए नयरे तेणेव उवागच्छइ) अब वह पहिला पुरुष कि जिसने हित वचनों की अवहेलना की और लाह के भार को ही अच्छा समझा उस लोहभार के साथ ही अपने नगर में आया (अयभारगं गहाय अय-विक्किणणं करेइ) वहां आकारके उसने उस लोहे के भार को लेकर बेचना प्रारंभ किया (तंसि अप्पमोल्लंसि. निट्ठियंसि, हीणपरिव्वए ते पुरिसे उप्पिं पासाय-वरगए जाव विहरमाणे पासइ) जब वह पूरा विक चुका—तो उससे जो उसे द्रव्य प्राप्त हुआ, वह वहुत थोडा सा प्राप्त हुआ—क्यो कि वह लोह उसका अल्पमूल्य में बिका अतः उससे प्राप्त द्रव्य आहार वस्त्र आदि के लाने में ही समाप्त हो गया. इस तरह क्षीणपरिव्ययवाले बने हुए उस पुरुष ने उन वज्र-विक्रयी पुरुषों को जो कि अपने २ रम्य प्रासादों में रहकर यावत्—अतिवेग से ताडित (बजाते) हुए मृदङ्गों के निनादों से एवं ३२ प्रकार के सुन्दर २ तरुण युवतियों द्वारा अभिनीत किये गये नाटकों से उपनर्त्यमान थे और उपलाल्यमान थे एवं इष्ट शब्द-स्पर्श रस, रूप, गंध, इनपांचप्रकार के मनुष्य-भव संबंधी कामभोगों को भोगते हुए आनन्द के साथ अपना समय व्यतीत

પોતાનો સમય પસાર કરવા લાગ્યા. (तए णं से पुरिसे अयभारेण जेणेव सए नयरे तेणेव उवागच्छइ)હવે તે પેલો લોખંડના ભારવાળો માણસ કે જેણે બીજા લોકોના હિત વચનો સાભળ્યા નહિ અને લોખંડના ભારને ઉત્તમ માન્યો હતો--- નગરમા આવ્યો. (अयभारगं गहाय अयविक्किणण करेइ) ત્યાં આવીને તેણે તે લોખંડના ભારને લઈને વેચાણ પ્રારંભ કર્યું (तंसि अप्पमोल्लसि निट्ठियंसि हीणपरिव्वए ते पुरिसे उप्पि पासायवरगए जाव विहरमाणे पासइ) જ્યારે તે લોખંડનો ભાર વેચાઈ ગયો ત્યારે તેનાથી જે દ્રવ્ય મળ્યું હતું તે અત્યલ્પ હતું કેમકે તે લોખંડ અલ્પ મૂલ્યમાં જ વેચાયું હતું. તેનાથી જે અલ્પધન પ્રાપ્ત થયું હતું. તે તો આહાર વસ્ત્ર વગેરેની ખરીદીમાં જ પૂરું થઈ ગયું હતું. આ પ્રમાણે તે ક્ષીણ પરિતાપવાળા તે પુરૂષે તે વજ્ર વિક્રયી પુરૂષોને કે જેઓ પોત-પોતાના રમ્ય પ્રાસાદોમા રહીને યાવત્ અતિવેગથી પ્રતાડિત થયેલ મૃદંગોના નિનાદોથી અને ૩૨ પ્રકારના સુંદર સુંદર તરૂણ સ્ત્રીઓ દ્વારા અભિનીત કરાયેલા નાટકોથી ઉપ-નર્ત્યમાન હતા, ઉપગીયમાન હતા, અને ઉપલાલ્યમાન હતા અને ઇષ્ટ, શબ્દ, સ્પર્શ રસ, રૂપ. ગંધ, આ પાંચ જાતના મનુષ્ય ભવ સંબંધી કામ ભોગોનો ઉપભોગ કરતાં આનંદપૂર્વક પોતાનો સમય પસાર કરી રહ્યા હતા જોયા. (पासित्ता एवं वयासी

एवमवादीत्–अहो!! खलु अहम् अधन्यः अपुण्यः अकृतार्थः अकृतलक्षणः ह्रीश्रीवर्जितः हीनपुण्यचातुर्दशो दुरन्तप्रान्तलक्षणः। यदि खलु अहं मित्राणां वा ज्ञातीनां वा निजकानां वा वचनम् अश्रोष्यं तदा खलु अहमपि एवमेव उपरि प्रासादवरगतः यावद् व्यहरिष्यम्। तत् तेनार्थेन प्रदेशिन्! एवमुच्यते–मा त्वं! प्रदेशिन्! पश्चादनुतापितो भवेः, यथा वा स पुरुषोऽयोहारक। ॥ सू० १५४ ॥

कर रहे थे देखा (पासित्ता एवं वयासी–अहोणं अहं अधन्नो, अपुन्नो, अकयत्थो अकयलक्खणो हिरिसिरिवज्जिओ हीणपुण्णचाउद्दसे दुरंतपंतलक्खणे) तो देखकर इस प्रकार विचार किया–अरे! मैं कितना अधन्य हूं, पुण्यहीन हूं, अकृतार्थ हूं, शुभलक्षण रहित हूं, लज्जा लक्ष्मी दोनों से वर्जित हूं, हीनपुण्यचातुर्दश हूं अर्थात् हीनपुण्यवाला हूं इसी लिये कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में जन्मा हूं, दुरन्त प्रान्तलक्षणवाला हूं–दुष्टावसानवाले अमनोज्ञ लक्षणों से युक्त हूं (जइ णं अहं मित्ताण वा णाईण वा णियगाण वा वयणं सुणेतओ तो णं अहं पि एवं चेव उप्पि पासायवरगए जाव विहरेंतओ) यदि मैं साथ गये हुए मित्रों के, अथवा पितृव्यादि ज्ञातिजनों के या अपने हितैषियों के वचनों को मान लेता, तो मैं भी इन्हीं साथ के आये हुए वज्रविक्रेता पुरुषों की तरह ही प्रासादों में रहता हुआ विविध सुख सम्पन्न बनकर अपने समय को आनन्दपूर्वक व्यतीत करता (से तेणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ, मा तुमं पएसी! पच्छाणुतावीए भविज्जासि, जहा व से पुरिसे अयभारए) इसी कारण हे प्रदेशिन्! मैंने ऐसा कहा है कि

अहो णं अहं अधन्नो, अपुन्नो अकयत्थो, अकयलक्खणो हिरिसिरिवज्जिओ हीणपुण्णचाउद्दसे दुरंतपंतलक्खणे) तेमने जोईने आ प्रमाणे विचार कर्यो के अरे! [illegible] केटलो अभागियो छुं अधन्य छुं, पुण्यहीन छुं, अकृतार्थ [illegible] शुभलक्षण रहित छुं, लज्जा लक्ष्मी बन्नेथी वर्जित छुं हीनपुण्यचातुर्दश छुं, एटले के हीन पुण्यवाळो छुं [illegible] पक्षनी चतुर्दशीना दिवसे [illegible] पाम्यो छुं, दुरन्त प्रान्त लक्षणवाळो छुं दुष्टावसानवाळा अमनोज्ञ लक्षणोथी युक्त [illegible] (जइ णं अहं मित्ताण वा णाईण वा णियगाण वा वयणं सुणेतओ तो णं अहं पि एवं चेव उप्पि पासायवरगए जाव विहरेंतओ) [illegible] मित्रो [illegible] पितृव्यादि ज्ञातिजनोना के पोताना हितैषीओना वचनो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (से तेणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ मा तुमं पएसी! पच्छाणुतावीए भविज्जासि, जहा व से पुरिसे अयभारए) एथी ज हे प्रदेशिन्! में [illegible] कह्युं छे [illegible]

टीका—"तए णं केसीकुमारसमणे" इत्यादि—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिराजम् एवमवादीत्—हे प्रदेशिन्! त्वं खलु पश्चादनुतापिकः—पश्चात्तापयुक्तो मा भवेः, यथा—येन प्रकारेण सः—वक्ष्यमाणः अयोहारकः—लोहवणिक् पश्चादनुतापिकोऽभूत्।, प्रदेशी तत्परिचयं पृच्छति—कः खलु हे भदन्त! सः अयोहारकः? इति प्रश्नः। केशीकुमारश्रमण आह—ते यथानामकाः—अनिर्दिष्टनामानः केचित् पुरुषाः अर्थार्थिकाः—धनार्थिनः, अर्थगवेषिकाः—धनान्वेषिणः, अर्थलुब्धकाः—धनलोलुपाः अर्थकाङ्क्षिताः—धनकाङ्क्षायुक्ताः, अर्थपिपासिताः—धनपिपासायुक्ताः, अर्थगवेषणार्थं—धनगवेषणार्थं विपुलं पणितभाण्डं—क्रयाणकवस्तुजातम् आदाय तथा—सुबहु—पर्याप्तं भक्तपानपथ्यदनम् अशनपानरूपं पाथेयं गृहीत्वा एकां

जैसा यह अयोहारक पुरुष पश्चात्तापयुक्त हुआ है—इसी प्रकारसे तुम्हे न होना पडे-अतःतुम मेरे कहे हुए पर श्रद्धा करो और मानो किजीव और शरीर भिन्न है इत्यादि।

टीकार्थ—इसी मूलार्थ के जैसा है-परन्तु जहां पर विशेषता है-वह इस प्रकार से है "हट्ठतुट्ठा जाव हियया" में जो यावत् पद आया है. उससे- "चित्तानन्दिताः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्" इन पदों का संग्रह हुआ है. इन पदों की व्याख्या पूर्वोक्त जैसी ही है. "इट्ठे, कंते जाव" में जो यह यावत्-पद आया है-उससे यहां पर "प्रियः, मनोज्ञः' मन आमः" इन पदोंका ग्रहण हुआ है. इष्ट शब्द का अर्थ-मनोरथ को पूरा करनेवाला है. कान्त शब्द का अर्थ-सहायकारी होने से अभिलषणीय है, प्रिय शब्द का अर्थ-उपकारक होने से प्रेम का उत्पादक है, तथा-मनोज्ञ शब्द का अर्थ-हितकारी होने से मनोहर ऐसा है और मन आम शब्द का अर्थ आर्तिहर होने से मनोगम्य ऐसा

હાન્ક પુરૂષ પશ્ચાત્તાપ-યુક્ત થયો છે-તેમ તમારી પણ સ્થિતિ થાય નહિ, એથી તમે મારી વાત પર શ્રદ્ધા રાખો અને મારી વાત માની લો કે જીવ અને શરીર ભિન્ન ભિન્ન છે ઇત્યાદિ.

ટીકાર્થ—આ મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે. પણ જ્યા વિશેષતા છે તે આ પ્રમાણે છે. "हट्ठतुट्ठा जाव हियया" મા જે યાવત્ પદ છે તેથી 'चित्तानन्दिताः, परमसौमनस्यिताः हर्षवशविसर्पद्' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. આ પદોની વ્યાખ્યા પહેલાં મુજબ જ છે. "'इट्ठे, कंते जाव" મા જે યાવત પદ છે તેથી અહીં 'प्रियः, मनोज्ञः, मनः आम" આ પદોનું ગ્રહણ થયું છે. ઇષ્ટ શબ્દનો અર્થ મનોરથ ને પૂરનાર છે કાંત શબ્દનો અર્થ સહાયકારી હોવાથી અભિલષણીય છે, પ્રિય શબ્દનો અર્થ-હિતકારી હોવાથી પ્રેમનો ઉત્પાદક છે, તથા મનોજ્ઞ શબ્દનો અર્થ-હિતકારી હોવાથી મનોહર એવો થાય છે. મનઃ આમ શબ્દનો અર્થ આર્તિહર હોવાથી મનો-

महतीं—विशालाम् अग्रामिकाम्—वसतिरहितां, छिन्नाऽऽपाताम्—छिन्नः—हिंसकजन्तु-भयेनोपहत आपात -मनुष्याणां गमनागमनं यत्र ताम् दीर्घाध्वां—दीर्घमार्गाम्, अटवीम् अनुप्रविष्टाः। ततः खलु ते पुरुषाः तस्याः अग्रामिकायाः यावत् छिन्ना-ऽऽपातायाः दीर्घाध्वाया अटव्याः कंचिद्देशम्-अटवीविभागम्, अनुप्राप्ताः सन्तः तत्र एकम् अयआकरं-लोहखनिम्, पश्यन्ति-दृष्टवन्तः, तमाकरम् अयसा-लोहेन सर्वत्र-सर्वदिक्षु, समन्तात्-सर्वविदिक्षु आकीर्ण-व्याप्तं, विस्तीर्ण-विस्तारप्राप्तम्, सच्छटं-सती-समीचीना छटा-चाकचिक्यं यत्र तम्, उपच्छटं-छटायुक्तम्, स्फुटं-प्रकटम्, अनुगाढं-पुञ्जरूपं पश्यति-दृष्टवन्तः, दृष्ट्वा हृष्टतुष्ट यावत्-यावत्पदेन "चित्तानन्दिताः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्" इत्येषां सङ्ग्रहो बोध्यः, हर्षवशविसर्पद्" इत्यस्य "हृदया" इत्यनेन योगात् "हर्षवशविसर्पद्धृदयाः" इति, एतद्रूपाख्या प्राग्वत्, एतादृशाः सन्तः अन्योऽन्यं-परस्परं, शब्दयन्ति-आह्वयन्ति, शब्दयित्वा एवमवादिषुः-उक्तवन्तः—हे देवानुप्रियाः! एषः-अयं खलु अयआकरः-लोहाऽऽकरः इष्टः कान्तः यावत् यावत्पदेन-"प्रियः, मनोज्ञः मनआम" इति पदानां संग्रहः, तत्र इष्टः-मनोरथपूरकः, कान्तः सहायकारित्वादभिलषणीयः, प्रियः-उपकारिकत्वेन प्रेमोत्पादकः, मनोज्ञः-हितकारित्वान्मनोहरः, मनआमः-आनन्दकरत्वान्मनोगम्यः, अस्ति तत्-तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रियाः! अस्माकम् अयो-भारं-लोहभारं बद्धुं ग्रहीतु श्रेयः-प्रशस्तम् इतिकृत्वा-इति निश्चित्य अन्योऽन्यस्य-परस्परस्य एतम्-अयोभारग्रहणरूपम् अर्थम्-प्रतिशृण्वन्ति-कर्तव्यतया स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य अयोभारं-लोहभारं बध्नन्ति, बद्ध्वा यथानुपूर्वि-यथाक्रमं संप्रस्थिताः-अग्रे गन्तुं प्रवृत्ताः। ततः खलु ते पुरुषाः अग्रामिकायाः यावत्—"छिन्नाऽऽपातायाः दीर्घाध्वायाः अटव्याः किञ्चिद्देश-किञ्चित्प्रदेशम् अनुप्राप्ताः सन्तः एकं महान्तं त्रप्वाकरं-त्रपु-धातुविशेषस्तस्याऽऽकरं पश्यन्ति-दृष्टवन्तः तम् त्रपुकेण सर्वतः समन्तात् आकीर्णं तदेव-पूर्वोक्तमेव "विस्तीर्णं, सच्छटम्, उपच्छटं स्फुटं गाढं पश्यन्ति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टाः, चित्तानन्दिताः परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्धृदयाः,

---

है। 'अग्गामियाए जाव" में आये हुए इस यावत्पद से "छिन्नापातायाः दीर्घाध्वायाः" इन पदों का संग्रह हुआ है "तचेव" इस पाठ से "विस्तीर्णः सच्छटम् उपच्छटं स्फुटं गाढं पश्यन्तिः दृष्ट्वा हृष्टतुष्टाः, चित्तानन्दिताः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्धृदयाः अन्योन्यं शब्दयन्ति" इस पाठ का यहां ग्रहण

[illegible] 'अग्गामियाए, जाव' [illegible] छिन्नापातायाः, दीर्घाध्वायाः [illegible] 'तंचेव' [illegible] 'विस्तीर्णं, सच्छटम्, उपच्छटं, स्फुटं, गाढं पश्यन्ति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टाः, चित्तानन्दिताः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्धृदयाः अन्योन्यं शब्दयन्ति [illegible]

टीका—"तए णं केसीकुमारसमणे" इत्यादि—ततः खलु केशीकुमार-श्रमणः प्रदेशिराजम् एवमवादीत्—हे प्रदेशिन् ! त्वं खलु पश्चादनुतापिकः—पश्चात्तापयुक्तो मा भवेः, यथा—येन प्रकारेण सः—वक्ष्यमाणः अयोहारकः—लोहवणिक् पश्चादनुतापिकोऽभूत्।, प्रदेशी तत्परिचयं पृच्छति—कः खलु हे भदन्त ! सः अयोहारकः ? इति प्रश्नः। केशीकुमारश्रमण आह—ते यथानामकाः—अनिर्दिष्टनामानः केचित् पुरुषाः अर्थार्थिकाः—धनार्थिनः, अर्थगवेषिकाः—धनान्वेषिणः, अर्थलुब्धकाः—धनलोलुपाः अर्थकाङ्क्षिताः—धनकाङ्क्षायुक्ताः, अर्थपिपासिताः—धनपिपासायुक्ताः, अर्थगवेषणायै—धनगवेषणार्थं विपुलं पणितभाण्डं—क्रयाणकवस्तुजातम् आदाय तथा—सुबहु—पर्याप्तं भक्तपानपथ्यदनम् अशनपानरूपं पाथेयं गृहीत्वा एकां

जैसा यह अयोहारक पुरुष पश्चात्तापयुक्त हुआ है—इसी प्रकारसे तुम्हे न होना पडे-अतःतुम मेरे कहे हुए पर श्रद्धा करो और मानो किजीव और शरीर भिन्न है इत्यादि।

टीकार्थ—इसी मूलार्थ के जैसा है-परन्तु जहां पर विशेषता है-वह इस प्रकार से है "हट्ठतुट्ठा जाव हियया" में जो यावत् पद आया है, उससे-"चित्तानन्दिताः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्" इन पदों का संग्रह हुआ है. इन पदों की व्याख्या पूर्वोक्त जैसी ही है. "इट्ठे, कंते जाव" में जो यह यावत्-पद आया है-उससे यहां पर "प्रियः, मनोज्ञः' मन आमः" इन पदोंका ग्रहण हुआ है. इष्ट शब्द का अर्थ-मनोरथ को पूरा करनेवाला है. कान्त शब्द का अर्थ-सहायकारी होने से अभिलषणीय है, प्रिय शब्द का अर्थ-उपकारक होने से प्रेम का उत्पादक है, तथा-मनोज्ञ शब्द का अर्थ-हितकारी होने से मनोहर ऐसा है और मन आम शब्द का अर्थ आर्तिहर होने से मनोगम्य ऐसा

હારક પુરૂષ પશ્ચાત્તાપ-યુકત થયો છે-તેમ તમારી પણ સ્થિતિ થાય નહિ, એથી તમે મારી વાત પર શ્રદ્ધા રાખો અને મારી વાત માની લો કે જીવ અને શરીર ભિન્ન ભિન્ન છે ઇત્યાદિ.

ટીકાર્થ—આ મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે. પણ જ્યા વિશેષતા છે તે આ પ્રમાણે છે. "हट्ठतुट्ठा जाव हियया" મા જે યાવત્ પદ છે તેથી 'चित्तानन्दिताः, परमसौमनस्यिताः हर्षवशविसर्पद्' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. આ પદોની વ્યાખ્યા પહેલાં મુજબ જ છે. '"इट्ठे, कंते जाव" મા જે યાવત્ પદ છે તેથી અહીં 'प्रियः, मनोज्ञः, मनः आम" આ પદોનું ગ્રહણ થયું છે. ઇષ્ટ શબ્દનો અર્થ મનોરથ ને પૂરનાર છે કાંત શબ્દનો અર્થ સહાયકારી હોવાથી અભિલષણીય છે, પ્રિય શબ્દનો અર્થ-હિતકારી હોવાથી પ્રેમનો ઉત્પાદક છે, તથા મનોજ્ઞ શબ્દનો અર્થ-હિતકારી હોવાથી મનોહર એવો થાય છે મનઃ આમ શબ્દનો અર્થ આર્તિહર હોવાથી મનો-

महतीं—विशालाम् अग्रामिकाम्—वसतिरहितां, छिन्नाऽऽपाताम्—छिन्नः—हिंसकजन्तुभयेनोपहत आपात-मनुष्याणां गमनागमनं यत्र ताम् दीर्घाध्वां—दीर्घमार्गाम्, अटवीम् अनुप्रविष्टाः। ततः खलु ते पुरुषाः तस्याः अग्रामिकायाः यावत् छिन्नाऽऽपातायाः दीर्घाध्वाया अटव्याः कंचिद्देशम्-अटवीविभागम्, अनुप्राप्ताः सन्तः तत्र एकम् अयआकरं-लोहखनिम्, पश्यन्ति-दृष्टवन्तः, तमाकरम् अयसा-लोहेन सर्वत्र-सर्वदिक्षु, समन्तात्-सर्वविदिक्षु आकीर्णं-व्याप्तं, विस्तीर्णं-विस्तारप्राप्तम्, सच्छटं-सती-समीचीना छटा-चाकचिक्यं यत्र तम्, उपच्छटं—छटायुक्तम्, स्फुटं—प्रकटम्, अनुगाढं-पुञ्जरूपं पश्यति-दृष्टवन्तः, दृष्ट्वा हृष्टतुष्ट यावत्-यावत्पदेन "चित्तानन्दिताः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्" इत्येषां सङ्ग्रहो बोध्यः, हर्षवशविसर्पद्" इत्यस्य "हृदया" इत्यनेन योगात् "हर्षवशविसर्पद्धृदयाः" इति, एतद्व्याख्या प्राग्वत्, एतादृशाः सन्तः अन्योऽन्यं—परस्परं, शब्दयन्ति—आह्वयन्ति, शब्दयित्वा एवमवादिषुः—उक्तवन्तः—हे देवानुप्रियाः! एषः—अयं खलु अयआकरः-लोहाऽऽकरः इष्टः कान्तः यावत् यावत्पदेन—"प्रियः, मनोज्ञः मनआम" इति पदानां संग्रहः, तत्र इष्टः-मनोरथपूरकः, कान्तः सहायकारित्वादभिलषणीयः, प्रियः-उपकारिकत्वेन प्रेमोत्पादकः, मनोज्ञः—हितकारित्वान्मनोहरः. मनआमः—आर्तिहरत्वान्मनोगम्यः, अस्ति तत्—तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रियाः। अस्माकम् अयोभारं-लोहभारं बद्धं ग्रहीतु श्रेयः—प्रशस्तम् इतिकृत्वा—इति निश्चित्य अन्योऽन्यस्य—परस्परस्य एतम्—अयोभारग्रहणरूपम् अर्थम्—प्रतिशृण्वन्ति-कर्तव्यतया स्वीकुर्वन्ति. प्रतिश्रुत्य अयोभारं—लोहभारं बध्नन्ति, बद्ध्वा यथानुपूर्वि-यथाक्रमं संप्रस्थिताः-अग्रे गन्तु प्रवृत्ताः। ततः खलु ते पुरुषाः अग्रामिकायाः यावत्—"छिन्नाऽऽपातायाः दीर्घाध्वायाः अटव्याः किञ्चिद्देशं—किञ्चिद्दूरप्रदेशम् अनुप्राप्ताः सन्तः एकं महान्तं त्रप्वाकरं—त्रपु—धातुविशेषस्तस्याऽऽकरं, पश्यन्ति—दृष्टवन्तः तम् त्रपुकेण सर्वतः समन्ताद् आकीर्णं तदेव-पूर्वोक्तमेव "विस्तीर्णं, सच्छटम्, उपच्छटं स्फुटं गाढं पश्यन्ति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टाः. चित्तानन्दिताः. परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्धृदयाः,

---

हैं। 'अग्गामियाए जाव" में आये हुए इस यावत्पद से "छिन्नापातायाः" दीर्घाध्वायाः" इन पदों का संग्रह हुआ है. "तं चेव" इस पाठ से "विस्तीर्णः सच्छटम् उपच्छटं स्फुटं गाढं पश्यन्तिः दृष्ट्वाहृष्ट तुष्टाः, चित्तानन्दिताः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्धृदयाः अन्योन्यं शब्दयति" इस पाठ का यहां ग्रहण

गम्य એવે। થાય છે. 'अग्गमियाए, जाव' મા આવેલ આ યાવત્ પદથી छिन्नापातायाः,दीर्घाध्वायाः, આ પદોને સગ્રહ થયો છે 'तंचेव' આ પાઠથી 'विस्तीर्ण सच्छटम्, उपच्छटम्, स्फुटं, गाढं पश्यन्ति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टाः, चित्तानन्दिताः, परमसौमनस्यिताः, हर्षवशविसर्पद्धृदयाः अन्योन्यं शब्दयन्ति" આ પાઠ ગ્રહણ

अन्येऽन्यं शब्दयन्ति, शब्दयित्वा. एवम् अवादिषुः-हे देवानुप्रियाः ! एष खलु त्रप्वाकरः यावत्-यावत्पदेन "इष्टः, कान्तः, प्रियः, मनोज्ञः" सङ्ग्राह्यम् मनआमः अल्पेनैव त्रपुकेण सुबहु-अतिप्रचुरम् अयः-लोहः लभ्यते-प्राप्यते, तत्-तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रियाः ! अयोभारं मुक्त्वा-विहाय त्रपुकभारं बद्धुं श्रेयः. इति कृत्वा अन्योऽन्यस्य अन्तिके-समीपे एतम्-त्रपुभारग्रहणरूपम् अर्थम् प्रतिशृण्वन्ति कर्तव्यतया स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य अयोभारं मुञ्चन्ति-त्यजन्ति त्रपुकभारं बध्नन्ति -गृह्णन्ति, तत्र-त्रपुभारग्रहणविषये खलु एकः-कश्चित् पुरुषः अयोभारं मोक्तुं-त्यक्तुं नो शक्नोति, तथा-त्रपुकभारं बद्धुं-ग्रहीतुं नो शक्नोति, ततः खलु ते पुरुषाः तम्-लोहभारवन्तं पुरुषम् एवमवादिषुः—हे देवानुप्रिय ! एष खलु त्रप्वाकरः. यावत्-यावत्पदेन-"इष्टः, कान्तः. प्रियः, मनोज्ञः, मनआमः, अल्पेनैव त्रपुकेण" इत्येषां सङ्ग्रहो बोध्यः, सुबहु-अतिप्रचुरम् अयः-लोहः, लभ्यते तत्-तस्मात् कारणात् हे देवानुप्रिय ! अयोभारकं-लोहभारं मुञ्च-त्यज तथा त्रपुकभारकं बधान-गृहाण, ततः खलु सः-लोहभारवाहकः पुरुषः एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः-मया अयः-लोहः दूराऽऽहृतं-दूरात्-दूरप्रदेशाद् आहृतम्-आनीतम्, हे देवानुप्रियाः ! मया अयः-चिराऽऽहृतम्-चिरात्-बहुकालाद् आहृतम्.ऊढम्, हे देवानुप्रियाः ! मया अयः अतिगाढबन्धनबद्धम्-अत्यन्तदृढबन्धनेन बद्धम् अत एव हे देवानुप्रियाः ! मया अयः अशिथिलबन्धनबद्धम्-अशिथिलबन्धनेन दृढबन्धनेन बद्धम् हे देवानुप्रियाः ! मया अयः प्रचुरबन्धनबद्धम्-"घणिअ" इति प्रचुरार्थो देशीयः शब्दः, अतोऽहम् अयोभारं त्यक्त्वा त्रपुकभारकं बद्धुं-ग्रहीतुं नो चैव शक्नोमि । ततः खलु ते पुरुषाः तम्-लोहभारवाहकं पुरुषं यदा बहुभिः-बह्वीभिः आख्यापनाभिः-दृष्टान्तरूपाभि" च पुनः प्रज्ञापनाभिः हेयोपादेयप्रतिबोधिकाभिश्च

किया गया है। "इट्ठे जाव मणामे" में आये हुए यावत्पद से 'इष्टः कान्तः प्रियः, मनोज्ञः" इन पदों का संग्रह हुआ है! "तउ आगरे जाव" पद से भी इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ, मन आम" इन पदों का संग्रह किया गया है। "घणिय" यह शब्द देशीय है और प्रचुर अर्थ का वाचक है ॥ १५४ ॥

थयो छे. "इट्ठे जाव मणामे' मा आवेल यावत् पदथी 'इष्टः, कान्तः, प्रियः, मनोज्ञः आ पदोनो संग्रह थयो छे. 'तउआगरे जाव' पदथी पण 'इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ, मन आम' आ पदोनुं ग्रहण थयुं छे. 'घणिय' आ शब्द देशीय छे अने प्रचुर अर्थनो वाचक छे. ॥सू. १५४॥

प्ररूपणाभिः—यथार्थस्वरूपनिरूपिकाभिश्च आख्यापयितुं वा प्रज्ञापयितुं वा प्ररूपयितुं वा नो शक्नुवन्ति—समर्था नाभवन, तदा यथानुपूर्वि-यथाक्रमम्, संप्रस्थिताः—ततोऽग्रे प्रयाताः। एवम्—अनेन प्रकारेण ताम्राऽऽकरं, रूप्याऽऽकरं, सुवर्णाऽऽकरं, रत्नाऽऽकरं, वज्राऽऽकरं, हीरकखनिं पश्यन्ति इत्यादि लोहत्रप्वाकरदर्शनवदेव सर्वं वर्णन बोध्यम्। ततः—लोहभारग्रहणकृताऽऽदरदुर्बुद्धिपुरुषस्यानेकथा प्रबोधकवाक्यप्रपञ्चैः प्रबोधनाऽसामर्थ्यानन्तरं खलु ते अल्पमूल्यकपूर्वपूर्ववस्तुपरित्यागपूर्वकबहुमूल्योत्तरोत्तरवस्तुग्रहणबद्धाऽऽदरतया गृहीतवज्रमणिभाराः पुरुषाः यत्रैव स्वाः— स्वकीयाः जनपदाः—देशाः, यत्रैव स्वानि स्वानि—निजानि निजानि नगराणि तत्रैव उपागच्छन्ति। वज्रविक्रयण—वज्रमणिविक्रय कुर्वन्ति—कृतवन्तः। तद्विक्रयेण लब्धबहुद्रव्यैः सुबहुदासीदासगोमहिषगवेलकं—सुबहु—अतिप्रचुरं यद् दासी—दास—गो महिष—गवेलकः—तत्र दासी—दास—गो—महिषाः प्रसिद्धाः, गवेलकाः—मेषाश्चेत्येषां समाहारस्तथा, तत् गृह्णन्ति, अष्टतलोच्छ्रित प्रासादावतंसकान —अष्टौ तलानि यत्र ते अष्टतलाः—अष्टभूमिकाः, ते च ते उच्छ्रिताः—उन्नताः गगनचुम्बिनः प्रासादावतंसकाः—श्रेष्ठप्रासादास्तान कारयन्ति, तत्र च स्नाताः कृतस्नानाः, कृतबलिकर्माणः—कृतवायसादिनिमित्तान्नविभागाः, कृतकौतुलमङ्गलप्रायश्चित्ताः दुःस्वप्नादिफलविघाताय धृतदध्यक्षताश्रयाः सन्तः उपरि—ऊर्ध्वं प्रासादवरगताः—मनोहर प्रासादस्थिताः विहरन्तीत्युत्तरेणान्वयः, किं कुर्वन्तो विहरन्तीत्याह—स्फुटद्भिः—अतिरभसा स्फालनात् स्फुटद्भिरिव:, मृदङ्गमस्तकैः मृदङ्गमुखपुटैः, द्वात्रिंशद्बद्धकैः— द्वात्रिंशत्प्रकाररचना युक्तैः नाटकैः, तैः कीदृशैः ? इत्यत्राऽऽह—वरतरुणीसंप्रयुक्तैः—विशिष्ट स्त्रीसम्पादितैः, उपनर्त्यमानाः, नृत्यंदृश्यमानाः, उपगीयमानाः गानं श्राव्यमाणाः, उपलाल्यमानाः विलास्यमानाः, इष्टान अभिलषितान, शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान, पञ्चविधान् मानुष्यकान् कामभोगान् प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति तिष्ठन्ति।

ततः खलु इतश्च सः—अवहेलितहितवचनो लोहभारवाहकः पुरुषः अयोभारेण सह यत्रैव स्वं-निज नगरं, तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तत्र अयोभारकं गृहीत्वा अयोविक्रयणं करोति। तस्मिन्—लोहविक्रयलब्धे, अल्पमूल्ये-स्वल्पद्रव्ये आहारवस्त्राद्यानयनेन निष्ठिते-समाप्ते सति स लोहवणिक् पुरुषः क्षीणपरिव्ययः-क्षीणः-मन्दः परिव्ययः-परितो व्ययः-द्रव्योपयोगो यस्य तथाभूतः, तान्-वज्रविक्रयिण-पुरुषान् उपरि—ऊर्ध्वभागे, प्रासादवरगतान्—रम्यप्रासादस्थितान यावद् विहरमाणान् स्फुटद्भिर्मृदङ्गमस्तकैः द्वात्रिंशद्बद्धैः नाटकैः वरतरुणीसंप्रयुक्तैः उपनर्त्यमानान् उपगीयमानान् उपलाल्यमानान इष्टान शब्द—स्पर्श-रस-रूप-गन्धान् पञ्चविधान्

ष्यकान कामभोगान प्रत्यनुभवन्तो विहरमाणान् पश्यन्ति। दृष्ट्वा एवम्-अनुपदं वक्ष्यमाणं वचनम् अवादीत्-अहो! विग्मयः खलु अहम् अधन्यः-धन्यो न, अपुण्यः-पुण्यहीनः, अकृतार्थः अकृतेष्टसिद्धिकः, अकृतलक्षणः-शुभलक्षणहीनः, ह्रीश्रीवर्जितः-लज्जालक्ष्मीहीनः, हीनपुण्यचातुर्दशः-हीनपुण्यः-क्षीणपुण्यः, अत एव चातुर्दशः-कृष्णचतुर्दश्यां जातः, दुरन्तप्रान्त लक्षणः-दुरन्तं-दुष्टावसानम् अत एव प्रान्तम् अमनोज्ञं लक्षणं यस्य स तथा-कुलक्षणयुक्तः, अहमस्मि। यदि-चेत् खलु अहं मित्राणां-सहगतानां वा-अथवा ज्ञातीनां-पितृव्यादीनां वा निजकानां-हितैषिणां वा वचनम् अश्रोष्यं-श्रवणपथमानेष्यम् तदा-तर्हि खलु अहमपि एवमेव-मत्सहागतवज्रमणिविक्रयि-पुरुषवदेव, उपरि-ऊर्ध्वभागे, प्रासादवरगतः-सुन्दरप्रासादस्थितः वज्रमणिविक्रयिसदृशो भूत्वा यावद् व्यहरिष्यम्-अस्थास्यम् विविधसुखसम्पन्नोऽभविष्यम्। तत्-तस्माद्धेतोः, तेन-अनन्तरोक्तेन अर्थेन-लोहवणिगूरूपेण दृष्टान्तेन, हे प्रदेशिन! एवम्-इत्थम्, उच्यते-कथ्यते यत् हे प्रदेशिन! त्वं पश्चादनुतापिको मा भवेः, यथा-येन प्रकारेण सः-अन्तरोक्तः, अयोहारकः पश्चादनुतापिकोऽभूत्। ॥सू० १५४॥

मूलम्-तए णं से पएसी राया संबुद्धे केसिकुमारसमणं वंदइ जाव एवं वयासी-णो खलु भंते! अहं पच्छाणुताविए भविस्सामि जहा चेव से पुरिसे अयभारए। तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह। धम्मकहा, जहा चित्तस्स तहेव जाव गिहिधम्मं पडिवज्जइ, जेणेव सेयविया नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए।१५५॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा संबुद्धः केशिकुमारश्रमणं वन्दते यावत् एवमवादीत्-नो खलु भदन्त! अहं पश्चादनुतापिको भविष्यामि यथैव स पुरुषो

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—(तएणं से पएसी राया संबुद्धे) इस तरह से बहुत समझाने पर वह प्रदेशी राजा बोध को प्राप्त हो गया (केसिकुमारसमणं जाव वंदइ

'तए णं से पएसी राया' इत्यादि।

સૂત્રાર્થ—(तएणं से पएसी राया संबुद्धे) આ પ્રમાણે બહુ જ સમજાવવાથી તે પ્રદેશી રાજાને બોધ પ્રાપ્ત થયો. (केसि कुमारसमणं जाव वंदइ एवं वयासी) પછી તેણે

ऽयोहारकः। तदिच्छामि खलु देवानुप्रियाणामन्तिके केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं निशमयितुम्। यथासुखं देवानुप्रियाः! मा प्रतिबन्धं कुरुत धर्मकथा, यथा चित्रस्य तथैव यावत् गृहिधर्मं प्रतिपद्यते. यत्रैव श्वेतांविका नगरी तत्रैव प्राधारयद् गमनाय ॥ सू० १५५ ॥

एवं वयासी) फिर उसने वंदना की यावत् केशिकुमारश्रमण से ऐसा कहा-(णो खलु भंते! अहं पच्छाणुताविए भविस्सामि, जहा चेव से पुरिसे अयहारए) हे भदंत! मैं उस अयोहारक-लोहवणिक पुरुष की तरह पश्चादनुतापित नहीं होऊंगा (तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए) अतः मैं आप देवानुप्रिय से केवलिप्रज्ञप्त धर्म सुनने का अभिलाषी हो रहा हूं (अहा सुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह) तव केशीकुमारश्रमण ने उससे कहा-हे देवानुप्रिय! आप को जिससे सुख ऊपजे एसा करो परन्तु इस विषय में विलम्ब करना ऊचित नहीं है। (धम्म कहा) प्रदेशी राजाको तव केशीकुमारश्रम ने मुनिधर्म और गृहस्थधर्म का ऊपदेश दिया. (जहा चित्तस्स तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ) यहां वह धर्मकथा १११वें सूत्र में जैसी कही गई है वैसी जाननी चाहिये. तव प्रदेशी राजाने द्वादशविधरूप गृहीधर्म स्वीकार करलिया. (जेणेव सेयविया णयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए) इस प्रकार गृहिधर्म धारणकर वह प्रदेशी राजा जहां श्वेतांविका नगरीथी उस ओर चलदिया-

કેશી કુમારશ્રમણને વંદના કરી યાવત્ કેશિકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યુ-(णो खलु भंते! अहं पच्छाणुताविए भविस्सामि, जहा चेव से पुरिसे अयहारए) હે ભદંત! હું તે અયોહારક લોહવણિક પુરૂષની જેમ પશ્ચાદનુતાપિક થઇશ નહિ. (तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए) એથી હું આપ દેવાનુપ્રિય પાસેથી કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મને સાભળવાની અભિલાષા રાખું છુ. (अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंध करेइ) ત્યારે કેશીકુમાર શ્રમણે તેને કહ્યું હે દેવાનુપ્રિય! તમને જેમા આનંદ થાય તેમ કરો. પણ આ વિષયમા વિલબ ઉચિત નથી. (धम्मकहा) પ્રદેશી રાજાને ત્યારે કેશી કુમાર શ્રમણે મુનિધર્મ અને ગૃહસ્થધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. (जहा चित्तस्स तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ) અહીં તે ધર્મકથા ૧૧ મા સૂત્ર પ્રમાણે કહેવામા આવી છે. ત્યારે પ્રદેશી રાજાએ દ્વાદશ વિધરૂપ ગૃહીધર્મનો સ્વીકાર કર્યો (जेणेव सेयंविया णयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए) આ પ્રમાણે ગૃહીધર્મ ધારણ કરીને તે પ્રદેશી રાજા જ્યાં શ્વેતાંબિકા નગરી હતી તે તરફ રવાના થઇ ગયો.

टीका—"तए णं से पएसी राया" इत्यादि—ततः खलु स प्रदेशी राजा संबुद्धः बोधं प्राप्तः, सन् केशिकुमारश्रमणम् वन्दते-स्तौति, यावत्-यावत्पदेन 'नमस्यति सत्करोति सम्मानयति कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यं पर्युपास्ते" इत्येषां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः। एषां व्याख्या गता। वन्दनाद्यनन्तरम् एवमवादीत्-हे भदन्त! अहं खलु पश्चादनुतापिको नो भविष्यामि, यथा येन प्रकारेण सः-अनन्तरोक्तः अयोहारकः-लोहवणिक्, पुरुषः पश्चादनुतापिकोऽभवत्, तत् तस्मात् कारणाद् अह खलु देवानुप्रियाणां भवताम् अन्तिके पार्श्वे केवलिप्रज्ञप्तं, धर्मं भवसागरनिमज्जत्प्राणिगणोद्धरणधुरीणं श्रुतचरित्रलक्षणं निशमयितुं श्रोतुम्, इच्छामि अभिलषामि। केशी प्राऽऽह-हे देवानुप्रिय! यथासुखं यथा-तुभ्यं रोचते तथा कुरु इति भावः, किन्तु प्रतिबन्धं विलम्ब मा कुरु। धर्मकथा अनगारागारधर्मकथा, यथा चित्रस्य, द्वादशाधिकैकशततमसूत्रप्रोक्ता तथैव तद नुसारिण्येव विज्ञेया। ततः प्रदेशी गृहिधर्मं द्वादशविधं प्रतिपद्यते स्वीकरोति, प्रतिपद्य स यत्रैव श्वेतांबिका नगरी तत्रैव गमनाय प्राधारयत् मनसि निश्चितवान। ॥सू०१५५॥

मूलम्—तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-जाणासि णं तुमं पएसी! कइ आयरिया पन्नत्ता?, हंता जाणामि,

---

टीकार्थ—स्पष्ट है "वंदइ जाव एवं वयासी" में जो-यावत्पद आया है, उससे-"नमस्यति-सत्करोति-सम्मानयति-कल्याणं मङ्गलं दैवतं-चैत्यं-पर्युपास्ते" इन पदों का संग्रह हुवा है, तात्पर्य-कहने का यह है कि-जब प्रदेशी राजा बोध को प्राप्त हो गया, तब उसने केशी कुमार श्रमण की स्तुति की, उन्हे नमस्कार किया उनका सत्कार किया सन्मान किया और-कल्याणरूप मङ्गलरूप एवं-देवस्वरुप उन चैत्य ज्ञान प्रदाता गुरुदेव की उसने पर्युपासना की, फिर उसने भवसागर में डूबते हुवे प्राणियों का उद्धार करने में समर्थ ऐसे श्रुत चारित्ररूप धर्म को सुनने की अपनी अभिलाषा प्रकट की ॥ सू. १५५ ॥

टीकार्थ—સ્પષ્ટજ છે 'वंदइ जाव एवं वयासी' માં જે યાવત્ પદ આવેલ છે. તેથી 'नमस्यति—सत्करोति सम्मानयति कल्याणं—मङ्गलं—दैवतं—चैत्यं—पर्युपास्ते' આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. તાત્પર્ય આમ છે કે જ્યારે પ્રદેશી રાજાને બોધ પ્રાપ્ત થઈ ગયો ત્યારે તેણે કેશી કુમાર શ્રમણની સ્તુતિ કરી તેમને નમસ્કાર કર્યો, તેમનો સત્કાર કર્યો, સન્માન કર્યું અને કલ્યાણરૂપ, મંગલરૂપ અને દૈવસ્વરૂપ તે ચૈત્યજ્ઞાન પ્રદાતા ગુરૂદેવની તેમણે પર્યુપાસના કરી. ત્યાર પછી તેમણે ભવસાગરમાં ડૂબતા પ્રાણીઓના ઉદ્ધારમાં સમર્થ એવા શ્રુત ચારિત્રરૂપ ધર્મને સાંભળવાની પોતાની ઇચ્છા પ્રકટ કરી ॥સૂ. ૧૫૫॥

तओ आयरिआ पण्णत्ता, तं जहा—कलायरिए१, सिप्पायरिए२, धम्मायरिए३। जाणासि ण तुम पएसी ! तेसिं तिण्हं आयरियाणं कस्स का विणयपडिवत्ती पउंजियव्वा ?। हंता ! जाणामि, कलायरियस्स सिप्पायरियस्स उवलेवणं संमज्जणं वा करेज्जा, पुरओ पुप्फाणि वा आणवेज्जा मंडावेज्जा भोयावेज्जा वा विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलएज्जा पुत्ताणुपुत्तियं वित्ति कप्पेज्जा२। जत्थेव धम्मायरियं पासिज्जा तत्थेव वंदेज्जा णमंसेज्जा सक्कारेज्जा सम्माणेज्जा कल्लाणं मगलं देवय चेइय पज्जुवासेज्जा फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेज्जा पाडिहारिएणं पीढफलगसिज्जासंथारएणं उवनिमतेज्जा३। एवं जाणासि तहावि णं तुमं मम वाम वामेणं जाव वट्टित्ता ममं एयमट्ठं अक्खामित्ता जेणेव सेयविया णयरी तेणेव पहारत्थ गमणाए ॥ सू० १५६ ॥

छाया—ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम् एवम् अवादीत्—जानासि खलु त्वं प्रदेशिन् ! कति आचार्याः प्रज्ञप्ताः ?, हन्त ! जानामि त्रय

"तएणं केसी कुमारसमणे" इत्यादि।

सूत्रार्थ—"तएण" इसके बाद "केसी कुमारसमणे" केशीकुमारश्रमणने "पएसिं" रायं एवं वयासी" प्रदेशी राजा से ऐसा कहा "जाणासि णं तुमं पएसी ? कइ आयरिया पण्णत्ता—" हे प्रदेशिन्—! तुम जानते हो कितने आचार्य कहे गये हैं—? प्रदेशीने कहा—"हंता ? जाणामि—तओ आयरिया

'तएणं केसीकुमारसमणे' इत्यादि।

सूत्रार्थ—'तएणं' त्यार पछी 'केसी कुमारसमणे' केशी कुमार श्रमणे 'पएसिं रायं एवं वयासी' प्रदेशी राजाने आ प्रमाणे कह्युं 'जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ आयरिया पण्णत्ता" हे प्रदेशिन् तमे जाणो छो के आचार्यो केटला प्रकारना कहेवाय छे ? प्रदेशीए कह्युं–'हंता ! जाणामि—तओ आयरिया पण्णत्ता" हा भदंत !

आचार्याः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-कलाऽऽचार्यः १, शिल्पाऽऽचार्यः २, धर्माऽऽचार्यः ३। जानासि खलु त्वं प्रदेशिन्! तेषां त्र णामाचा णां कस्य का विन प्रतिपत्तिः प्रयोक्तव्या? हन्त! जनामि-कलाऽऽचार्यस्य शिल्पाऽऽचार्यस्य उपलेपनं संमार्जनं वा कुर्यात्, पुरतः पुष्पाणि वा आनयेत् मार्जयेत् माडयेत् भोजयेत् वा विपुलं जीविताहं प्रीतिदानं दद्यात् पौत्रानुपुत्रिकीं वृत्तिं वल्पयेत् २। यत्रैव धर्माऽऽचार्यं पश्येत्

पण्णत्ता-" हां भदन्त-! जानता हूं-तीन आचार्य कहे गये हैं। "तं जहा-कलायरिए-सिप्पायरिए-धम्मायरिए" जो इस प्रकार से हैं-कलाचार्य-१ शिल्पाचार्य-२ और तीसरा धर्माचार्य। 'जाणामि ण तुमं पएसी-" तेसिं तिण्हं आयरियाणं कस्स का विणयपडिवत्ती पउंजियव्वा-" हे प्रदेशिन्-! तुम जानते हो, इन तीन आचार्यों में किस आचार्यका कैसा विनय प्रकार करने को कहा गया है-! प्रदेशीने कहा-"हंता? जाणामि 'हां भदन्त ३ जानता हूं कलायरियस्स सिप्पायरियस्स उवलेवणं समज्जणं वा करेज्जा पुरओ पुप्फाणि वा आणवेज्जा मंडावेज्जा भोयाविज्जा वा विउलं जीवियारिहं पीइदाण दलएज्जा पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेज्जा-" कलाचार्य और-शिल्पाचार्य के शरीर में तेल का मर्दन करना, उन्हें स्नान कराना, तथा-उनके समक्ष पुष्प माला र भेटके रूप में रखना, पुष्पमाला आदिसे उन्हें अलङ्कृत करना भोजन कराना उनकी आजीविका के योग्य सहर्ष प्रीतिदान देना वस्त्रादि प्रदान करना, एवं-पुत्र

જાણું છું-ત્રણ આચાર્યો કહેવાય છે "तं जहा-कलायरिए सिप्पायरिए धम्मायरिए" તે આ પ્રમાણે છે-કલાચાર્ય. ૧ શિલ્પાચાર્ય ૨ અને ધર્માચાય ૩, "जाणासि णं तुमं पएसी तेसिं तिण्हं आयरियाण कस्स का विणयपडिवत्ती, पउंजियव्वा" હે પ્રદેશિન્ તમે જાણો છો કે આ ત્રણ આચાર્યોમા કયા આચાર્યને કઈ જાતનો વિનય પ્રકાર કરવા કહેવામા આવ્યો છે ?, પ્રદેશીએ કહ્યું-"हंता ? जाणामि" હા, ભદન્ત ? જાણું છું. "कलायरियस्स सिप्पायरियस्स उवलेवण समज्जणं वा करेज्जा पुरओ पुप्फाणि वा आणवेज्जा भंडावेज्जा भोयावेज्जा वा विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलएज्जा पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेज्जा' કલાચાર્ય અને શિલ્પાચાર્યના શરીરમાં તેલની માલીશ કરવી, તેમને સ્નાન કરાવવું તેમજ તેમની સામે પુષ્પોની ભેટ મૂકવી, પુષ્પમાળા વગેરેથી તેમને અલંકૃત કરવા ભોજન કરાવવું, તેમની આજીવિકા માટે યોગ્ય સહર્ષ પ્રીતિદાન આપવું અને પુત્ર-પૌત્ર વગેરેના ભરણ-પોષણ યોગ્ય આજીવિકાની વ્યવસ્થા

तत्रैव वन्देत नमस्येत सत्कुर्यात् सम्मानयेत् कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्य पर्युपासीत, प्रासुकैषणीयेन अशन पान खादिमस्वादिमेन प्रतिलम्भयेत्, प्रातिहारिकेण पीठफलकशय्यासंस्तारकेण उपनिमन्त्रयेत, एवं च तावत् त्वं प्रदेशिन ! एव जानासि तथापि खलु त्व मम वामवामेन यावद् वर्तित्वा मम एतमर्थम् अक्षामित्वा यत्रैव श्वेतविका नगरी तत्रैव प्राधारयत् गमनाय। ॥ सू० १५६ ॥

पौत्रादि के निर्वाह योग्य आजीविका लगा देना. इस प्रकार से यह कलाचार्य ७२ –प्रकार की कलाओं को सिखानेवालों की, और–शिल्पाचार्य विज्ञान सिखानेवालों का विनयप्रतिपत्ति है। "जत्थेव धम्मायरिय पासिज्जा, तत्थेव वंदेज्जा, णमंसेज्जा, सक्कारेज्जा, सम्माणेज्जा, कल्लाणं–मंगलं–देवय चेइयं पज्जुवासेज्जा–' तथा–धर्माचाय की विनय प्रतिपत्ति इस प्रकारसे है–जहां पर भी धर्माचार्य को देखलिया जावे, वहीं पर उनकी वन्दना करना, नमस्कार करना, सत्कार करना, सम्मान करना. कल्याण–मङ्गल–देवस्वरूप उन चेत्य ज्ञानदायक की पर्युपासना करना, तथा–"फासुएसणिज्जेणं असण–पाण–खाइम–साइमेणं पडिलाभेज्जा, पाडिहारिएणं पीढ–फलग–सिज्जा संथारएणं उवनिमंतेज्जा–" प्रासुक एषणीय अशन पान खादिम स्वादिम रूप चारों प्रकारके आहार से उन्हें प्रतिलाभित करना, पडिहारिपीठफलक शय्या संस्तारक को ग्रहण करने के लिये उनसे प्रार्थना करना–३, इस प्रकार की यह धर्माचार्य की विनयप्रतिपत्ति है–। "एव ताव तुम पएसी–? एव जाणासि तहाविण तुमं मम वामं वामेण

કરવી. આ પ્રમાણે આ કલાચાર્ય કે જે ૭૨ પ્રકારની કલાઓનુ શિક્ષણ આપે છે અને શિલ્પાચાર્ય-વિજ્ઞાનનુ શિક્ષણ આપનારની વિનયપ્રતિપત્તિ છે 'जत्थेव धम्मायरियं पासिज्जा, तत्थेव वंदेज्जा, णमंसेज्जा सक्कारेज्जा, सम्माणेज्जा, कल्लाण मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जा" તેમજ ધર્માચાર્યની વિનયપ્રતિપત્તિ આ પ્રમાણે છે–જ્યા ધર્માચાર્ય દેખાય કે તરતજ ત્યા તેમને વન્દન કરવા, નમસ્કાર કરવા સત્કાર કરવો, સન્માન કરવુ, કલ્યાણ-મંગળ દેવસ્વરૂપ તે જ્ઞાનદાયકની પર્યુપાસના કરવી તેમજ "फासुएसणिज्जेण असणपाणखाइमसाइमेण पडिलाभेज्जा, पाडिहारिएण पीढफलगसिज्जा संथारएण उवनिमंतेज्जा" પ્રાસુક એષણીય અશન-પાન ખાદિમ સ્વાદિમ રૂપ ચાર પ્રકારના આહારથી તેમને પ્રતિલાભિત કરવા, સમર્પણીય પીઠફલક, શય્યાસંસ્તાર ને ગ્રહણ કરવા માટે તેમને વિનતી કરવી ૩, આ જાતની આ ધર્માચાર્યની વિનય પ્રતિપત્તિ છે "एवं ताव तुम पएसी? एवं जाणासि तहाविण तुमं मम वामं वामेण जाव वट्टित्ता मम एयमट्ठ अक्खामित्ता जेणेव सेयविया णयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए" હે પ્રદેશિન્! જ્યારે તમે આ પ્રમાણે

टीका—"तए णं केसीकुमारसमणे" इत्यादि–ततः खलु केशीकुमारश्रमणः प्रदेशिनं राजानम् एवमवादीत्–हे प्रदेशिन्! त्वं जानासि यत् कति–कियन्त आचार्याः प्रज्ञप्ताः ?। इति प्रश्ने प्रदेशी प्राह हन्त! जानामि, यत् त्रयः–त्रिसंख्यकाः आचार्याः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा–कलाऽऽचार्यः–द्वासप्तति प्रकारकलाशिक्षकः १, शिल्पाऽऽचार्यः–विज्ञानशिक्षकः २, धर्माऽऽचार्यः–धर्मोपदेशकः ३। पुनः केशी पृच्छति–हे प्रदेशिन्! त्वं जानासि खलु यत् तेषाम्–अनन्तरोक्तानां त्रयाणामाचार्याणां मध्ये कस्याऽऽचार्यस्य का–कीदृशी ? विनयप्रतिपत्तिः–विनयप्रकारः प्रयोक्तव्या कर्तव्या ?। हन्त! जनामि, तत्र कलाऽऽचार्यस्य शिल्पाऽऽचार्यस्य च उपलेपनं तैलाभ्यङ्गः, तथा–संमज्जनं–स्नपनं कुर्यात्–स्नपयेदित्यर्थः, तथा पुरतः–तयोरग्रे, पुष्पाणि वा समानयेत्, मण्डयेत्–पुष्पमाल्यादिनाऽलङ्कुर्यात्, भोजयेत्–भोजनं कारयेत्, विपुलं–बहु जीविताहं–जीवनयोग्यं प्रीतिदान–सहर्ष वस्त्रादिदानं दद्यात्, तथा पुत्रानुपौत्रिकीं–पुत्रपौत्रादि निर्वाहयोग्यां वृत्तिं जीविकां कल्पयेत्–सम्पादयेत् २। इति कलाऽऽचार्य–शिल्पाऽऽचार्ययोर्विनयप्रतिपत्तिमुक्त्वा धर्माऽऽचार्यस्य तां कथयितुं प्रक्रमते–यत्रैव–यस्मिन्नेव स्थले धर्माऽऽचार्यं पश्येत्

जाव वट्टित्ता मम एयमट्ठं अक्खामित्ता जेणेव सेयविया णयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए–" हे प्रदेशिन् ३ जब तुम इस प्रकार से विनयप्रतिपत्ति को जानते हो तब भी तुमने मेरे प्रति प्रतिकूलरूप व्यवहार से यावत् प्रवृत्ति करके उस प्रतिकूल व्यवहार जनित अपराध को क्षमा कराये विना जहांश्वेतविका नगरीथी वहीं पर जानेका निश्चय किया ॥ सू० १५६ ॥

टीकार्थ–स्पष्ट हैं, "कल्लाणं–मंगलं–देवयं–चेइयं पज्जुवासेज्जा–" इन पदों की व्याख्या चतुर्थ सूत्रमें की जा चुकी है। "वामं वामेणं–" इस यावत् पदसे–"दण्ड दण्डेन–प्रतिकूल प्रतिकूलेन–प्रतिलोम प्रतिलोमेन–विपर्यासं विपर्यासेन" इन पदों का संग्रह हुवा है, इन् पदोंकी व्याख्या पीछे की जा चुकी है. ॥सू० १५६॥

વિનય પ્રતિપત્તિ ને જાણો છો છતા એ તમો એ મારા પ્રત્યે પ્રતિકૂલ રૂપ વ્યવહારથી યાવત્ પ્રવૃત્તિ કરીને પ્રતિકૂલ વ્યવહાર જનિત અપરાધને ક્ષમા કરાવ્યા વગર જ્યાં શ્વેતાંબિકા નગરી છે ત્યા જવાનો તમે નિશ્ચય કર્યો. ॥ સૂ. ૧૫૬ ॥

ટીકાર્થ—સ્પષ્ટ છે "कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जा" આ પદોની વ્યાખ્યા ચોથા સૂત્રમાં આવી છે. "वामं वामेण" માં આવેલ યાવત્ પદથી "दण्ड दण्डेन प्रतिकूलप्रतिकूलेन प्रतिलोम प्रतिलोमेन विपर्यासं विपर्यासेन" આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે. આ પદોની વ્યાખ્યા પહેલાં કરવામાં આવી છે. ॥ ૧૫૬ ॥

तत्रैव-तस्मिन्नेव स्थले वन्देत नमस्येत सत्कुर्यात् सन्मानयेत् कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यं पर्युपासीत'' एतेषां व्याख्या चतुर्थसूत्रतो बोध्या, तथा तं धर्माचार्यं प्रासुकैषणीयेन-अचित्तकल्पनीयेन अशन-पान-खादिम-स्वादिमेन-अशनादि चतुर्विधाऽऽहारेण प्रतिलम्भयेत्-चतुर्विधाहारं तस्मै दद्यादिति भावः, तथा तं प्रातिहारिकेण-पुनः समर्पणीयेन पीठफलकशय्यासंस्तारकेण उपनिमन्त्रयेत्-तद्ग्रहणे प्रार्थयेत् ३। एवं तावत् प्रथमं प्रदेशिन्! त्वमेवम्-अनन्तरोक्तप्रकारां विनयरूपां प्रतिपत्तिं जानासि, तथाऽपि खलु त्वं मम वामवामेन-प्रतिकूलतरेण व्यवहारेण यावत्-यावत्पदेन "दण्डदण्डेन, प्रतिकूलप्रतिकूलेन, प्रतिलोम-प्रतिलोमेन विपर्यासविपर्यासेन" इत्येषां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः, व्याख्याऽपि तत्रैव विलोकनीया, वर्तित्वा-उक्तव्यवहारेण युक्तो भूत्वा मम एत-मया सह प्रतिकूलव्यवहारजनितम् अर्थम्-अपराधम् अक्षामयित्वा यत्रैव श्वेताम्बिका नगरी तत्रैव गमनाय प्राधारयत्-निश्चय कृतवान्। ॥ सू० १५६ ॥

मूलम्—तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी एवं खलु भंते! मम एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु अहं देवाणुप्पियाणं वामंवामेणं जाव वट्टिए तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोगकिंसुय-सुयमुह-गुंजद्ध-रागसरिसे कमलागरनलिणिसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पिए वंदित्तए नमंसित्तए एयमट्ठं भुज्जो भुज्जो सम्मं विणएणं खामित्तएत्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

तए णं से पएसी राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते हट्ठतुट्ठ जाव हियए जहेव कूणिए। तहेव निग्गच्छइ, अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे पंचविहेणं अभिगमेणं वंदइ नमंसइ, एयमट्ठं भुज्जो भुज्जो सम्मं विणएणं खामेइ ॥सू० १५७॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणमेवमवादीत्-एवं खलु भदन्त ! मम एतद्रूपः आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत-एवं खलु अहं देवानुप्रियाणां वामवामेन यावत् वर्तितः, तत् श्रेयः खलु मे कल्यं प्रादुष्प्रभातायां रजन्यां फुल्लोत्पलकमलकोमलोन्मीलिते अथाऽऽपाण्डुरे प्रभाते रक्ताशोक-किंशुक-शुकमुख-गुञ्जार्द्धरागसदृशे कमलाकरनलिनीषण्ड-बोधके उत्थिते सूरे सहस्ररश्मौ दिनकरे तेजसा ज्वलति अन्तःपुरपरिवारैः सार्द्धं संपरिवृतो देवानुप्रियान् वन्दि-

मूलार्थ—"तए णं से पएसी राया—" इत्यादि

"तएणं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी—" ३५९

इसके बाद—प्रदेशी राजाने केशी कुमारसमण से ऐसा कहा—"एवं खलु भंते !—मम एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था" हे भदन्त—३ मुझे ऐसा आध्यात्मिक यावत् संकल्प उत्पन्न हुवा. "एवं खलु अहं देवाणुप्पियाणं वामं वामेण जाव वट्टिए. तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमल-कोमलुम्मिलियम्मि अहा पांडुरे पभायाए रत्तासोग किंसुय—सुयमुह गुंजद्धराग-सरिसे, कमलागरनलिणिसंडबोहए—" मैंने आप देवानुप्रिय के साथ प्रतिकूल रूप से यावत् व्यवहार किया है, अतः—मुझे यही श्रेयस्कर है कि—मैं कल जब रजनी प्रभातयुक्त हो जावेगी, अर्थात्—रात्रि समाप्त हो जावेगी. और कमल तथा—हरिणविशेषके नेत्र ये दोनों विकसित हो जावेगे, अर्थात् कमल जब खिल जावेगा. और—हरिणविशेष की आंखे शयन करलेने के बाद खुल जावेगी. तथा—प्रभातका रङ्ग जब पीत घवल हो जावेगा. रक्ताशोक-किंशुक-

'तएणं से पएसी राया' इत्यादि।

सूत्रार्थ—'तएणं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी ॥१५७॥ त्यार पछी प्रदेशी राजाએ કેશીકુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું 'एव खलु भंते! मम एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था' હે ભદંત! એવો આધ્યાત્મિક યાવત્ સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો. "एवं खलु अहं देवाणुप्पियाण वामं वामेण जाव वट्टिए तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभाया ए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहापांडुरे पभाए रत्तासोगकिंसुयसुयमुहगुंजद्धरागसरिसे कमलागार नलिणिसंडबोह ए" મેં આપ દેવાનુપ્રિયની સાથે પ્રતિકૂળરૂપથી યાવત્ વ્યવહાર કર્યો છે. તેથી મારા માટે એજ વાત શ્રેયસ્કર છે કે હું આવતી કાલે જ્યારે રાત્રિ પ્રભાત યુકત થઈ જશે, એટલે કે રાત્રિ પૂરી થઇ જશે, અને કમળ તથા હરિણ વિશેષના નેત્રો વિકસિત થઈ જશે, એટલે કે કમળ જ્યારે વિકસિત થઇ જશે અને હરિણ વિશેષની આંખો નિદ્રા ત્યાગ કર્યા બાદ ઉઘડી જશે તેમજ પ્રભાતનો રંગ જ્યારે પીત ધવલ (પીળો અને સફેદ) થઇ જશે, રકતાશોક, કિંશુક

त्वा नमस्यित्वा एतमर्थं भूयो भूयः सम्यग् विनयेन क्षामयितुम्, इति कृत्वा यामेव दिशं प्रादुर्भूतः, तामेव दिशं प्रतिगतः ।

ततःखलु स प्रदेशी राजा कल्यं प्रादुष्प्रभातायां रजन्यां यावत् तेजसा ज्वलति हृष्टतुष्ट यावद् हृदयः यथैव कूणिकः तथैव निर्गच्छति अन्तःपुरपरि-

---

पलाश-शुकमुख एवं-गुञ्जा-रत्ती के अधस्तन का अर्धभाग जैसा लाल. तथा-सरोवरों में कमलिनी कुल का विकाशक, "उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते—" ऐसा सहस्रकिरणोंवाला एवं-दिनकर्ता सूर्य जब अपने तेज से प्रज्वलित होता हुवा आकाश में उदित हो जावेगा, तब-"अंतेउर परियालसद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पिए वंदित्तए नमंसित्तए एयमट्ठ भुज्जो-२ सम्मं विणएणं-खामित्तए त्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए. तामेव दिसिं पडिगए" मैं अन्तःपुर परिवार से युक्त होकर आप देवानुप्रिय की वन्दना-नमस्कार और-पूर्वोक्त अपराध रूप अर्थ को विनय के साथ प्रशस्त नम्र भावसे बार-२ क्षमापना के लिये आऊंगा. इस प्रकार केशी स्वामी से निवेदन कर वह जिस दिशा से आया था-उसी दिशा की ओर चला गया. "तएणं से पएसी राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते-" इसके बाद दूसरे दिन जब रजनी रात्री प्रभातप्राय-समाप्त हो चुकी और-प्रभात हो गया यावत् सूर्य अपने तेज से देदीप्यमान हो उठा-तब वह-"हट्ठ तुट्ठ जाव हियए जहेव कूणिए तहेव निग्गच्छइ—" हृष्ट-तुष्ट यावत् हृदयवाला होकर कूणिक नरेश की तरह अपने स्थान से निकला

પલાશ, શુકમુખ અને ગુંજાના નીચેના અર્ધા ભાગ જેવો લાલ તેમજ સરોવરોમાં કમલીની કુલનો વીનાશક 'उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते" એવા સહસ્ર કીરણોવાળો અને દીનકર્તા સૂર્ય જ્યારે પોતાના તેજથી પ્રજવલીત થતો આકાશમા ઉદય પામશે, ત્યારે अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पिए वंदित्तए नमंसित्तए एयमट्ठ भुज्जो २ सम्मं विणएणं खामित्तए त्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए" ત્યારે અંતઃપુર પરિવારની સાથે આપ દેવાનુપ્રિયને વંદન અને નમસ્કાર કરવા માટે અને પૂર્વોક્ત અપરાધરૂપ અર્થને સવિનય પ્રશસ્ત નમ્ર ભાવથી વારંવાર ક્ષમાપના માટે આવીશ. આ પ્રમાણે કેશીકુમારને વિનંતી કરીને તે જે દિશા તરફથી આવ્યો હતો તેજ દિશા તરફ જતો રહ્યો. "तएण से पएसी राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते" ત્યાર પછી બીજા દિવસે જ્યારે રાત્રિ પૂરી થઇ અને પ્રભાત થયું યાવત્ સૂર્ય પોતાના તેજથી પ્રકાશિત થઇ ગયો. ત્યારે તે "हट्ठतुट्ठ जाव हियए जहेव कूणिए तहेव निग्गच्छइ" હૃષ્ટ તુષ્ટ યાવત્ હૃદયવાળો થઈને કુણિક રાજાની જેમ પોતાના સ્થાનથી

वारैः सार्द्धं संपरिवृतः पञ्चविधेन अभिगमेन वन्दते नमस्यति, एतमर्थं भूयोभूयः सम्यग् विनयेन क्षामयति ॥ सू० १५७ ॥

टीका—"तए णं पएसी राया" इत्यादि—ततः खलु स प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम्, एवमवादीत्—हे भदन्त! एवं खलु मम एतद्रूपः—अनुपदं वक्ष्यमाण-स्वरूपः आध्यात्मिकः—आत्मगतः क्षमापनारूपोऽर्थोऽङ्कुर इव, यावत्-यावत्पदेन "चिन्तितः, कल्पितः, प्रार्थितः, मनोगतः, सङ्कल्पः' इत्येषां पदानां सङ्ग्रहो बोध्यः, तत्र

"अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे पंचविहेणं अभिगमेणं वंदइ-नमंसइ—" निकलते ही वह अन्तःपुर परिवार से परिवेष्टित हो गया. इस तरह से प्रदेशी राजाने पांच प्रकारके अभिगम से केशीकुमार श्रमण की वन्दनाकी-उनकी स्तुति की. "एयमट्ठं भुज्जो भुज्जो-सम्मं विणएणं खामेइ—" स्तुति नमस्कार करके फिर उसने अपने प्रतिकूल आचरण से जनित अपराध की वार-२ अच्छी तरह से विनम्र भावसे युक्त हो कर क्षमा कराई, अर्थात्-क्षमा मांगी—

टीकार्थ—प्रदेशी राजाने केशीकुमारश्रमण से इस प्रकार कहा-हे भदन्त! अब मुझे इस प्रकार का यह आध्यात्मिक विचार उत्पन्न हुवा. कि-मैं अपने प्रतिकूल आचरण से जनित अपराध की आप से वार-वार क्षमा करावें, यहविचार आत्मगत होने से पहले तो अङ्कुर की तरह उत्पन्न हुआ. अतः—उसे आध्यात्मिक रूपसे प्रकट किया गया है, बाद में यावत् पदसे चिन्तितः-कल्पितः—प्रार्थितः-मनोगतः इन विशेषणों वाला हुवा है कि—यह विचार स्मरणरूप बन

नीકળ્યો. "अंतेउरपरियालसाद्ध संपरिवुडे पंचविहेणं अभिगमेणं वंदइ-नमंसइ" નીકળતાં જ તે પોતાના અંતઃપુર પરિવારથી વીંટળાઈ ગયો. આ પ્રમાણે તૈયાર થયેલા પ્રદેશી રાજાએ કેશી કુમારશ્રમણની પાસે જઈને પાંચ પ્રકારના અભિગમથી કેશી કુમારશ્રમણની વન્દના કરી તેમની સ્તુતિ કરી, નમસ્કાર કર્યા. "एयमट्ठं भुज्जो २ सम्मं विणएणं खामेई" સ્તુતિ તેમજ નમસ્કાર કરીને પછી તેણે પોતાના પ્રતિકૂળ આચરણથી થયેલ અપરાધની વારવાર સારી રીતે વિનમ્ર ભાવથી યુક્ત થઈને ક્ષમા માંગી.

ટીકાર્થ—પ્રદેશી રાજાએ કેશીકુમારશ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું-હે ભદન્ત! હવે મને આ જાતનો આધ્યાત્મિક વિચાર ઉત્પન્ન થયો છે કે હું મારા પ્રતિકૂળ આચરણથી થયેલ અપરાધ બદલ આપશ્રી પાસેથી વારંવાર ક્ષમા માંગું. આ વિચાર આત્મગત હોવાથી પહેલાં તો અંકુરની જેમ ઉત્પન્ન થયો. એથી તેને આધ્યાત્મિક રૂપે પ્રકટ કરવામાં આવ્યો છે. ત્યાર પછી યાવત્ પદથી "चिन्तितः, कल्पितः, प्रार्थितः मनोगतः', આ વિશેષણોથી યુક્ત થયો છે, વિચારને જે ચિંતિત પદથી

चिन्तितः-पुनः पुनः स्मरणरूपो विचारो द्विपत्रित इव, ततः कल्पितः स एव व्यवस्थायुक्तः 'क्षामयेयम्ः' इति परिणतो विचारः पल्लवित इव, स एव प्रार्थितः-इष्टरूपेण स्वीकृतः पुष्पित इव, मनोगतः मनसि दृढरूपेण निश्चयः "इत्थमेव मया कर्तव्यम्' इति विचारः फलित इव समुदपद्यत-समुत्पन्नः-एवं खलु अहं देवानुप्रियाणां-भवतां वामवामेन यावत्-यावत्पदेन "दण्डदण्डेन प्रतिकूलप्रतिकूलेन प्रतिलोम प्रतिलोमेन विपर्यासविपर्यासेन' इत्येषां सङ्ग्रहो बोध्यः, एषां व्याख्या पूर्वं गता, वर्तितः-प्रवृत्तः तत्-तस्मात्कारणात् मे मम श्रेयः-प्रशस्तं यत्

गया. अर्थात्-मुझे अपने अपराध की आपसे क्षमा कराना है. ऐसी स्मृति मुझे बार-बार आने लगी. इसलिये-यह विचार द्विपत्रित अङ्कुर की तरह प्रथम अवस्था की अपेक्षा कुछ विशेष पुष्ट होने से चिन्तित प्रकट किया गया है। तथा वही विचार जब व्यवस्थायुक्त हो गया. कि मुझे अवश्य ही इस रूपसे क्षमा कराना है तो द्वितीय अवस्थाकी अपेक्षा और-अधिक पुष्ट हो जाने के कारण यह पल्लवित हुवे अङ्कुर की तरह कल्पित पद से विशेषित किया गया है. तथा जब वही विचार इष्ट रूप से स्वीकृत कर लिया गया. तो वह पुष्पित हुवे अङ्कुर की तरह हो गया. और जब वही विचार मनमें दृढ रूपसे निश्चय की स्थिति में परिणत हो गया के ऐसा ही मुझे करना है. तो फलित हुवे अङ्कुर की तरह वह हो गया. क्या विचार उत्पन्न हुवा इसी बात को वह अब प्रकट करता है कि हे भदन्त-! मैंने आप देवानुप्रिय के साथ बहुत अधिक प्रतिकूलरूपसे. यावत् दण्ड दण्डरूपसे. अतिशय प्रतिकूलरूपसे व्यवहार किया है.

વિશેષિત કરષામા આવ્યો છે તેનુ કારણુ આ છે કે તે વિચાર સ્મરણુરૂપ થઇ ગયો હતો. એટલે કે મને મારા અપરાધની આપશ્રીના પાસેથી ક્ષમા કરાવવી છે, એવી સ્મૃતિ વારંવાર આવવા લાગી, એથી આ વિચાર દ્વિ પત્રિત અંકુરની જેમ પ્રથમ અવસ્થા કરતા કંઇક વિશેષ પુષ્ટ હોવાથી ચિ તિત રૂપમા-પ્રકટ કરવામા આવ્યો છે. તથા તેજ વિચાર જ્યારે વ્યવસ્થાયુકત થઈ ગયો-કે મારે ચોક્કસ આવિને ક્ષમા યાચના કરવી છે તો દ્વિતીય અવસ્થા કરતા વધારે તે વિચાર પુષ્ટ થઇ જવાથી એ પલ્લવિત થયેલા અંકુરની જેમ કલ્પિત પદથી વિશેષિત કરવામા આવ્યો છે તેમજ જ્યારે તે જ વિચાર ઇષ્ટ રૂપથી સ્વીકૃત થઇ ગયો તો તે પુષ્પિત થયેલ અકુરની જેમ થઇ ગયો અને જ્યારે તે વિચાર મનમા દૃઢરૂપથી નિશ્ચયની સ્થિતિમા પરિણુત થઇ ગયો કે એવું જ મારે કરવુ છે તો ફલિત થયેલ અકુરની જેમ તે થઇ ગયો. શો વિચાર ઉત્પન્ન થયો? એજ વાતને હવે સ્પષ્ટ કરતાં કહે છે કે-હે ભદંત! મેં આપ દેવાનુપ્રિયની સાથે બહુજ પ્રતીકૂળ રૂપેથી યાવત્ દંડ દંડ રૂપથી-અતિશય પ્રતીકૂળરૂપથી અતિશય પ્રતિલોમરૂપથી અને અતિશય વિપરીત રૂપથી વ્યવહાર કર્યો છે, એથી મારા

कल्य-श्वः प्रादुष्प्रभातायां प्रकाशप्रकाशितायाम्, रजन्यां रात्रौ फुल्लोत्पलकमलकोमलोन्मीलिते—फुल्लं विकसितं यद् उत्पलं—कमलं, तच्च कमलं च हरिणविशेषश्चेति फुल्लोत्पलकमलौ, तयोर्यत् कोमलं मृदु उन्मीलनं तत्र फुल्लोत्पलपत्राणां विकसनं हरिणनयनयोः शयनानन्तरं पुटमोचनम् च यस्मिन् तत् फुल्लोत्पलकमलकोमलोन्मीलितं तस्मिन्, अथ प्रभातानन्तरम् आ—समन्तात् पाण्डुरे पीनधवले प्रभाते प्रातःकाले रक्ताशोककिंशुक शुकमुख गुञ्जार्द्धरागसदृशे तत्र रक्ताशोकः रक्तवर्णो शोकः, किंशुकः पलाशः, शुकमुखं, गुञ्जार्द्धरागः गुञ्जाया अधस्तनार्द्धस्य रागः, एतैः रक्तवर्णैः सदृशे तुल्ये, अस्य "सूरे" इति परेण सम्बन्धः, एवमग्रेतनानामपि, कमलाकरनलिनीषण्डबोधके सरोवरगतकमलिनीकुलविकाशके सूरे सूर्ये उत्थिते

इसलिये मेरा कल्याण अब इसी में है कि मैं दूसरे दिन जबकि रात्रि प्रभात के रूप में परिणत हो जावे. अर्थात् प्रातःकाल हो जाय. और इसमें कमल उत्पल एवं हरिण विशेष की आंखे निद्राविगम के बाद प्रफुल्लित हो जाय कमल विकसित हो जाय एवं हरिणों के नेत्र अच्छी तरह से खुल जाय तथा वह प्रभात समन्तात पीत धवल प्रकाशवाला हो जावे, एवं सहस्रकिरणों से सम्पन्न तथा दिवसविधायक सूर्य जो कि कमलाकर सरोवर में नलिनी कुलका बोधक-विकाश करनेवाला होता है जब रक्ताशोक किंशुक शुकमुख और गुञ्जार्ध गुंन्जा के सदृश उदित हो जावे तथा उसका प्रकाश अच्छी तरह से फैल जावे तब मैं अन्तःपुर परिजनों से परिवृत्त होकर आप देवानुप्रिय, की वन्दना के लिये नमस्कार के लिये आऊं और अपने पूर्वोक्त अपराधरूप अर्थकी आपसे बार २ विनम्र भाव युक्त हो कर क्षमा मांगू, इस प्रकार से वह प्रदेशी राजा केशीश्रमणकुमार के प्रति निवेदन कर अपने स्थान पर गया.। दूसरे दिन जब पूर्वोक्तरूप से प्रभात

માટે હવે એજ શ્રેયસ્કર છે કે હું આવતી કાલે જ્યારે રાત્રે પ્રભાતમા પરિણુત થઈ જાય એટલે કે સવાર થઇ જાય, કમળ ઉત્પલ અને હરિણુ વિશેષેની આંખો નિદ્રા રહિત થઇને પ્રફુલ્લિત થઇ જાય. કમળો વિકસિત થઇ જાય અને હરિણોના નેત્રો સારી રીતે ઉઘડી જાય તથા પ્રભાત સમંતાત્ પીતધવલ પ્રકાશયુકત થઇ જાય અને સહસ્ર કિરણોથી સંપન્ન તેમજ દિવસ વિધાયક સૂર્ય કે જે કમલાકર સરોવર મા નલિની કુલને વિકસિત કરનાર છે. રકતાશોક, કિંશુક, શુક મુખ અને ગુંજાર્ધની સદૃશ તે ઉદિત થઇ જાય તેમજ તેનો પ્રકાશ સારી રીતે પ્રસરી જાય, ત્યારે હુ અંતઃપુર પરિજનોથી પરીવૃત્ત થઇને આપ દેવાનુપ્રિયને વંદન તેમજ નમસ્કાર કરવા માટે અહીં આવું. અને પૂર્વોકત અપરાધ બદલ આપશ્રી પાસેથી વિનમ્ર થઇને વાર વાર ક્ષમા યાચના કરૂં. આ પ્રમાણે તે પ્રદેશી રાજા કેશીકુમારશ્રમણને વિનંતી કરીને સ્વસ્થાને ગયો બીજા દિવસે જ્યારે પૂર્વોકતરૂપથી પ્રભાત પૂર્ણરૂપે વિકસિત થઇ ગયું ત્યારે તે

उदिते सति, पुनः कीदृशे तस्मिन ? सहस्ररश्मौ-किरणसहस्रसम्पन्ने दिनकरे-दिवसकरणशीले तेजसा-दीप्त्या ज्वलति-देदीप्यमाने सति, अन्तःपुरपरिवारैः राज्ञीपरिवारैः संपरिवृतः-युक्तः सन् अहं देवानुप्रियान् वन्दितुं नमस्यितुम्, एतमर्थं-पूर्वोक्तापराधरूपमथ भूयोभूयः-पुनः पुनः सम्यग् विनयेन-प्रशस्तनम्रभावेन क्षामयितुम्। इतिकृत्वा-केशिस्वामिने इति निवेद्य यामेव दिशं समाश्रित्य प्रादुर्भूतः तामेव दिशं प्रतिगतः।

ततः खलु स प्रदेशी राजा कल्यं-श्वः प्रादुष्प्रभातायां रजन्यां यावत्-यावत्पदेन अनन्तरप्रोक्तोपरितनपदानां फुल्लोत्पलादीनां सङ्ग्रहो बोध्यः, तदर्थश्च तत्रैव ज्ञेयः। तेजसा ज्वलति हृष्टतुष्ट यावत्-यावत्पदेन चित्तानन्दितः, परमसौम स्यितः, हर्षवश विसर्पद्धृद -ः, इत्येतत्पदसङ्ग्रहो बोध्यः। यथा-येन प्रकारेण कूणिकः-तन्नामा श्रेणिकराजपुत्र औपपातिकसूत्रे वर्णितो निर्गतः, तथैव-तेनैव प्रकारेण निर्गच्छति-स्वभवनान्निःसरति, तन्निर्गमनवर्णनमौपपातिकसूत्रतो बोध्यमिति तात्पर्यम्। निर्गत्य अन्तःपुरपरिवारैः संपरिवृतः-वेष्टितः पञ्चविधेन-पञ्चप्रकारेण सचितानां द्रव्याणां व्युत्सर्जनेन १, अचित्तानां द्रव्याणामव्युत्सर्जनेन २,

---

काल का सूर्य उदित हो गया. तब वह हृष्टतुष्ट यावत् चित्तानन्दित हुवा. परमसौमयित हुवा हर्षवश विसर्पत् हृदयवाला (परम आनंदयुक्त हुवा) औपपातिकसूत्र में वर्णित श्रेणिक राजपुत्र कूणिक नरेशकी तरह अपने भवन से निकला. कूणिक नरेश के निकलने का वर्णन औपपातिक सूत्र में किया गया है। निकलते ही वह अन्तःपुर परिवार जनो से परिवेष्टित कर लिया गया. और पांच प्रकार के अभिगम से युक्त हो कर वह प्रदेशी राजा केशीकुमारश्रमणकी वन्दना आदि करने के लिये चल दिया. वहां पहूंचकर उसने उनका वन्दना की नमस्कार किया. और स्वकृत प्रतिकूल आचरणजनित अपराधो की बडे विनम्रभावयुक्त होकर क्षमा मांगी. । पांच प्रकारके अभिगम इस प्रकारसे १ सचित्तद्रव्योंका परित्यागकर

હૃષ્ટ તુષ્ટ યાવત્ ચિત્તાનંદિત થયો, પરમસૌમનસ્યિત થયો, હર્ષ વિસર્પત હૃદયવાળો થયો. ઔપપાતિકસૂત્રમાં વર્ણિત શ્રેણિક રાજપુત્ર કૂણિક નરેશની જેમ પોતાના ભવનથી તે નીકળ્યો. કૂણિક નરેશના નીકળવાનું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે બહાર નીકળતાં જ તે અન્તઃપુર પરિવાર જનોથી વીંટળાઇ ગયો-ઘેરાઇ ગયો અને પાંચ પ્રકારના અભિગમથી યુક્ત થઇને તે પ્રદેશી રાજા કેશી કુમારશ્રમણની વંદના વગેરે કરવા માટે નીકળી પડ્યો ત્યાં પહોંચીને તેણે તેમને વંદન અને નમસ્કાર કર્યા અને સ્વકૃત પ્રતિકૂળ આચરણજ જનિત અપરાધો બદલ તેણે વિનમ્રભાવ યુક્ત થઇને ક્ષમા માગી પાંચ પ્રકારના અભિગમો આ પ્રમાણે છે - ૧, સચિત્ત દ્રવ્યોનો

एकशाटिकोत्तरासङ्गकरणेन३, चक्षुःस्पर्शे अञ्जलिकरणेन४, मनस एकत्वकरणेन५, चेत्येवं रूपेण अभिगमेन-विनयविधिविशेषेण, वन्दते-स्तौति. नमस्यति-नमस्करोति वन्दित्वा नमस्यित्वा च एतमर्थ -प्रतिकूलाचरणजनितापराधरूपं भूयोभूयः-वारं-वारम् सम्यग् विनयेन-प्रशस्ततरविनम्रभावेन क्षामयति-क्षमां कारयति। ॥सू.१५७॥

मूलम्—तए णं केसी कुमारसमणे पएसिस्स रण्णो सूरिकंतप्पमुहाणं देवीणं तीसे य महइमहालयाए परिसाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ। तए णं से पएसी राया धम्मं सोच्चा निसम्म उट्ठाए उट्ठेइ केसिकुमारसमणं वंदइ नमंसइ जेणेव सेयविया नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० १५८ ॥

छाया—ततः खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिनो राज्ञः सूर्यकान्ता-प्रमुखानां देवीनां तस्यां च महाऽतिमहालयायां परिषदि चातुर्यामं धर्मं परिकथयति। ततः खलु स प्रदेशी राजा धर्मं श्रुत्वा निशम्य उत्थया उत्तिष्ठति केशिकुमार-श्रमणं वन्दते नमस्यति यत्रैव श्वेतविका नगरी तत्रैव प्राधारयद् गमनाय ॥सू.१५८॥

देना, ण अचित्त द्रव्यों का परित्याग नहीं करना, २ एक शाटिका उत्तरासङ्ग करना-विना सीये वस्त्रसे उत्तरासग करना, है-देखते ही हाथ जोड लेना, और-५. मनकी एकाग्रता करना. ॥सू. १५७॥

सूत्र-"तए णं केसीकुमारसमणे-" इत्यादि-॥१५८॥

मूलार्थ—"तएण" इसकेबाद "केसीकुमारसमणे" केशीकुमारश्रमणने "पएसिस्स रण्णोसूरिकंतप्पमुहाणं देवीणं तीसेय. महइ महालयाए परिसाए-" प्रदेशी राजा के समक्ष एवं उसकी सूर्यकान्ता आदि प्रमुख रानियों के समक्ष उस विशाल परिषदा में "चाउज्जाम धम्मं" अहिंसा-सत्य-अस्तेय, एवं-अपरिग्रह रूप चातुर्याम धर्मका उपदेश दिया. "तएणं से पएसी राया धम्मं सोच्चा

પરિત્યાગ કરવો, ૨, અચિત્ત દ્રવ્યોનો પરિત્યાગ નહિ કરવો, ૩ એક શાટિકા ઉત્તરાસઙગ કરવો, ૪ વગર સીવેલા વસ્ત્રોથી ઉત્તરાસઙગ કરવો જોતાની સાથે જ હાથ જોડી લેવા અને ૫, મનની એકાગ્રતા કરવી ॥ સૂ ૧૫૭ ॥

સૂત્રાર્થ—"तए णं केसीकुमारसमणे इत्यादि"

મૂલાર્થ—"त एण" ત્યાર પછી "केसी कुमारसमणे" કેશી કુમાર શ્રમણે "पएसिस्स रण्णो सूरिकंप्प मुहाण देवीण तीसेय महइ महालयाए परिसाए" પ્રદેશી રાજાની સામે તેમજ તેની સૂર્યકાન્તા વગેરે પ્રમુખ રાણીઓની સામે તે વિશાળ પરિષદામાં 'चाउज्जाम धम्म" અહિંસા, સત્ય, અસ્તેય અને અપરિગ્રહરૂપ ચાતુર્યામ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. "तएणं से पएसी राया धम्मं सोच्चा निसम्म

टीका—"तए णं केशिकुमारसमणे" इत्यादि—ततः खलु केशिकुमारश्रमणः प्रदेशिनो राज्ञः सूर्यकान्ता प्रमुखानां देवीनां तस्यां तत्र स्थितायां च महाऽतिमहालयायाम् अतिबृहत्याम्, परिषदि चातुर्यामम्—अहिंसा-सत्या-ऽस्तेया-ऽपरिग्रहैर्विभक्तचतुर्महाव्रतरूपं धर्मं परिकथयति—प्ररूपयति। उपलक्षणाद् द्वादशविधं गृहिधर्मं परिकथयति ततः खलु स प्रदेशी राजा धर्मम्-अनगारागारधर्मं श्रुत्वा सामान्यतः श्रवणगोचरं कृत्वा निशम्य—विशेषतो हृद्यवधार्य उत्थया—उत्थानप्रयासेन उत्तिष्ठति, उत्थाय केशिकुमारश्रमणं वन्दते—स्तौति, नमस्यति-नमस्करोति, वन्दित्वा नमस्यित्वा च यत्रैव श्वेतांबिका नगरी तत्रैव गमनाय प्राधारयत्—निश्चितवान्। ॥सू. १५८॥

मूलम्—तए णं केसी कुमारसमणे पएसिराय एवं वयासी—मा णं तुमं पएसी! पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि, जहा से वणसंडेइ वा णट्टसालाइ वा इक्खुवाडएइ वा खलवाडएइ वा। कहं णं भंते! वणसंडे पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भवइ? पएसी! जहा णं वणसंडे पत्तिए

निसम्म उट्ठाए उट्ठेइ—" इसके बाद प्रदेशी राआ धर्म सुन कर और उसे हृदय में धारणकर अपने आप वहां से उठा—"केसीकुमारसमणं वंदइ नमंसइ—" उठकर उसने केशीकुमार श्रमण की वन्दना की उन्हें नमस्कार किया. "जेणेव सेयंविया नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए—" वन्दना-नमस्कार कर फिर वह अपनी नगरी की ओर चलदिया। टीकार्थ—स्पष्ट है-केशीकुमारश्रमणने चातुर्याम धर्म के उपदेश और-साथ-साथ १२ प्रकाररूप गृहस्थ धर्म का भी उपदेश दिया. ऐसा कथन उपलक्षण से जान लेना चाहिये ॥ सू. १५८ ॥

उट्ठाए उट्ठेइ" त्यार पछी प्रदेशी राजा धर्म सांभळीने अने तेने हृदयमां धारण करीने पोतानी मेळे ज त्यांथी ऊभो थयो "केसीकुमारसमणं वंदइ नमंसइ" ऊभा थईने तेणे केशी कुमारश्रमणनी वंदना करी तेमने नमस्कार कर्या. "जेणेव सेयविया नयरी तेत्रैव पहारेत्थ गमणाए" वंदना तेमज नमस्कार करीने पछी ते पोतानी नगरी तरफ रवाना थई गयो.

टीकार्थ—स्पष्ट छे केशीकुमारश्रमणे चातुर्याम धर्मनो उपदेश अने तेनी साथे साथे १२ प्रकाररूप गृहिधर्मनो पण उपदेश आप्यो हतो, एवुं कथन उपलक्षणथी जाणी लेवुं जोईए. ॥ सू. १५८ ॥

पुप्फिए फलिए हरिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ, तया णं वणसंडे रमणिज्जे भवइ, जया णं वणसंडे नो पत्तिए नो पुप्फिए नो फलिए नो हरिए नो हरियगरेरिज्जमाणे णो सिरीए अईव उवसोमेमाणे चिट्ठइ जया णं जुन्ने झडे परिसडिय-पंडुपत्ते सुक्करुक्खे इव मिलायमाणे चिट्ठइ तयाणं वणसंडे अर-मणिज्जे भवइ १। जया णं णट्टसाला वि गिज्जइ वाइज्जइ नच्चि-ज्जइ हासज्जइ रमिज्जइ तयाणं णट्टसाला रमणिज्जा भवइ, जया णं नट्टसाला णो गिज्जइ जाव णो रमिज्जइ, तया णं णट्टसाला अरमणि-ज्जा भवइ २। जया णं इक्खुवाडे छिज्जइ भिज्जइ पीलिज्जइ खज्जइ पिज्जइ दिज्जइ तया णं इक्खुवाडे रमणिज्जे भवइ, जया णं इक्खु-वाडे णो छिज्जइ जाव तया इक्खुवाडे अरमणिज्जे भवइ ३, जयाणं खलवाडे उच्छुब्भइ मलिज्जइ खज्जइ दिज्जइ तया णं खलवाडे रमणिज्जे भवइ, जयाणं खलवाडे नो इच्छुब्भइ जाव अरमणिज्जे भवइ ४। से तेणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ मा णं तुम पएसी! पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि जहा वणसंडेइ वा जाव खलवाडेइ वा ॥ सू० १५९॥

छाया—ततः खलु केशिकुमारश्रमणः प्रदेशिराजमेवमवादीत्—मा खलु त्वं प्रदेशिन्! पूर्वं रमणीयो भूत्वा पश्चाद् अरमणीयो भवेः, यथा स वनषण्ड इति

"तए णं केसीकुमारसमणे-" इत्यादि—॥ सू. १५९ ॥

मूलार्थ—"तए णं—" इसके वाद "केसी कुमारसमणे-" केशी कुमारश्रमणने पएसी रायं एवं वयासी-" प्रदेशी राजा से ऐसा कहा—"मा णं तुमं पएसी?

सूत्रार्थ—"तए णं केसीकुमारसमणे" इत्यादि ॥ सू. १५९ ॥

મૂલાર્થ—"तएणं" ત્યાર પછી "केसीकुमारसमणे" કેશી કુમાર શ્રમણે "पएसी रायं एवं वयासी" પ્રદેશી રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું—"मा णं तुमं पएसी ! पुव्विं

वा नाटयशाला इति वा इक्षुवाटकम् इति वा खलवाटकम् इति वा कथं खलु भदन्द ! वनषण्डः पूर्व रमणीयो भूत्वा पश्चाद् अरमणीयो भवति ? । प्रदेशिन् ! यथा खलु वनषण्डः । पत्रितः पुष्पितः फलितः हरितः हरितकराराज्यमानः श्रिया अतीव उपशोभमानः तिष्ठति, तदा खलु वनषण्डो रमणीयो भवति, यदा खलु

पुव्वि रमणीए भवित्ता पच्छा-अरमणिज्जे भविज्जासि-" हे प्रदेशिन्-! तुम पहले रमणीय होकर बाद में अरमणीय मत बनना. अर्थात्-धार्मिक होकर अधार्मिक मत बन जाना "जहा से वणसंडेइवा-णट्टसालाइवा-इक्खुवाडएइवा-खलवाडएइ वा-" जैसे पूर्व में रमणीय होकर वनषण्ड अरमणीय बन जाता है, अथवा नाटयशाला, या इक्षु पीडन स्थान या-खलवाटक पूर्व में रमणीय होकर अरमणीय बनजाते है. अब प्रदेशी पूछता है-"कहं णं भंते ? वणसंडे पुव्वि रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भवइ-" हे भदन्त ? वनषण्ड पूर्व में रम-णीय होकर बाद में अरमणीय किस प्रकार से हो जाता है-३ "उत्तर में प्रभु कहते हैं-"पएसी जहा णं वणसंडे पत्तिए-पुप्फिए-फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अईव उवसोभेमाणे-तयाणं वणसंडे रमणिज्जे भवइ-" हे प्रदेशिन् ? वनषण्ड जब पत्रों से युक्त होता है-पुष्प सम्पन्न होता है-फलित फलों से सहित होता है, हरियाली से युक्त होता है. हरे हरे पत्ते आदि से अतिशय सुहावना होता है तब वनषण्ड अपनी शाभासे सुशोभित होता हुवा रमणीय होता है,

---

रमणीए भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि" હે પ્રદેશિન્ ! તમે પહેલા રમણીય થઇને પછી અરમણીય બનશો નહિ, એટલે કે ધાર્મિક થઇને અધાર્મિક બનશો નહિ, "जहा से वणसडेइ वा णट्टसरलाइवा इक्खुवाडएइवा खल वाडइवा" જેમ પહેલા રમણીય થઈને વનખંડ પછી અરમણીય થઇ જાય છે અથવા નાટયશાળા કે ઇક્ષુ-પીડનસ્થાન કે ઇક્ષનાટક પહેલા રમણીય થઇને પછી અરમણીય થઇ જાય છે. હવે પ્રદેશી પ્રશ્ન કરે છે "कहणं भंते ! वणसंडे पुव्वि रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भवइ" હે ભદંત ! વનષંડ પહેલા રમણીય થઇને પછી અરમણીય કઇ રીતે થઇ જાય છે ૩, ઉત્તરમા કહે છે "पएसी जहाणं वणसंडे पत्तिए पुप्फिए फलिए हरिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अईव उवसोभेमाणे तयाणं वण-संडे रमणिज्जे भवइ" હે પ્રદેશિન્ વનષંડ જ્યારે પત્રોથી યુકત હોય છે, પુષ્પ સપન્ન હોય છે, ફળ યુકત હોય છે હરીતિમાથી યુકત હોય છે તેમજ લીલા પાંદડાઓ વગેરેથી આ અતિશય સોહામણો હોય છે, ત્યારે તે વનખંડ પોતાની શોભાથી સુશોભિત થતો રમણીય હોય છે. એટલે કે આ પ્રમાણે વનખંડ રમણીય કહેવાય છે.

वनषण्डा नो पत्रितो नो पुष्पितो नो फलितो नो हरितः नो हरितरराराज्यमाना नो श्रिया अतीव उपशोभमानः तिष्ठति, यदा खलु जीर्णः शन्नः परिशटित पाण्डुपत्रः शुष्कवृक्ष इव म्लायन तिष्ठति तदा खलु वनषण्डो नो खलु रमणीयो भवति।

यदा खलु नाट्यशालाऽपि गीयते वाद्यते नर्त्यते हस्यते रम्यते तदा खलु नाट्यशाला रमणीया भवति, यदा खलु नाट्यशाला नो गीयते यावत् नो रम्यते तदा खलु नाट्यशाला अरमणीया भवति।

अर्थात्—इस प्रकार से वनषण्ड रमणीय कहा जाता है. जयागं वणसंडे नो पत्तिए—नो पुप्फिए—नो फलिए नो हरिए—नो हरियगरेरिज्जमाणे, णो सिरीए अईव उव सोममाणे चिट्टइ—परन्तु—जब वही वनषण्ड पत्रित (पत्रवाला) नहीं रहता है. पुष्पित (पुष्पवाला) नहीं रहता है-फलित नहीं रहता है-हरा नहीं रहता है, एवं-हरे २ पत्तों आदिसे अतिशय सुहावना नहीं रहता है, तब अपनी शोभा से रहित हो जाता है, तथा—"जयाणं जुन्ने झड़े पडिसडियपंडुपत्ते सुक्करुक्खे इव मिलायमाणे चिट्ठइ—" जब वही वन जीर्ण पत्रादिकों से रहित हो जाता है, पत्ते आदि सब जब झर जाते हैं, विकृत पाण्डुवर्णवाले पत्र जब उसमें हो जाते हैं, तथा—शुष्क वृक्ष की तरह जब वह म्लान हो जाता है. "तयाण वणसंडे अरमणिज्जे भवई—" तब वह वनखण्ड अरमणीय बन जाता है-? "जयाणं णट्टसाला विगिज्जइ—वाइज्जइ—नच्चिज्जइ—हसिज्जइ रमिज्जइ—तयाणं णट्टसाला रमणिज्जा भवइ—' इसी तरहसे-हे प्रदेशिन् ? जब तक नाट्य शाला गानयुक्त होती रहती है, वादित्रों की ध्वनि से वाचालित होती है,

---

"जयाणं वणसंडे नो पत्तिए—न' पुप्फिए—नो फलिए नो हरिए—नो हरियगरेरिज्जमाणे, णो सिरीए अईव उवसोभमाणे चिट्टइ" પણ તેજ વનષંડ જ્યારે પત્રિત રહતો નથી, પુષ્પિત રહતો નથી, ફલિત રહેતો નથી, લીલો રહેતો નથી અને લીલા લીલા પાંદડાઓ વગેરેથી અતિશય શોભાયમાન રહેતો નથી ત્યારે તે પોતાની શોભાથી રહિત થઈ જાય છે તથા "जयाणं जुन्ने झडे प[illegible]सडियपंडुपत्त सुक्करुक्खे इव मिलायमाणे चिट्ठइ" જ્યારે તે વન જીર્ણ પત્ર દંડોથી યુકત થઈ જાય છે, પાદડાઓ વગેરે બધા ખરી પડે પડે છે, તેમા પાદડાઓ વિકૃત તેમજ પાંડુવર્ણવાળા થઈ જાય છે તેમજ શુષ્ક વૃક્ષની જેમ જ્યારે તે મ્લાન થઈ જાય છે "तयाण वणसंडे अरमणिज्जे भवइ" ત્યારે તે વનષંડ અમરણીય થઈ જાય છે."जयाण णट्टसाला विगिज्जइ वाइज्जइ नच्चिज्जइ हसिज्जइ रमिज्जइ तयाणं णट्टसाला रमणिज्जा भवइ' આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્ જ્યાં નાટયશાળામાં સંગીત ચાલતું રહે છે, તેમાં વાજિંત્રો વાગતા રહે છે, તેમાં નાચ થતુ રહે છે, પાત્રોના હાસ્યથી જ્યાં સુધી તે મુખરિત થતી રહે છે અને વિવધ

यदा खलु इक्षुवाटकं छिद्यते भिद्यते पीडयते खाद्यसे पीयते दीयते तदा खलु इक्षुवाटक रमणीयं भवति, यदा खलु इक्षुवाटकं नो छिद्यते यावत् तदा इक्षुवाटकम् अरमणीय भवति।

यदा खलु खलवाटकम् अवक्षिप्यते मर्द्यते उद्वाय्यते खाद्यते दीयते तदा खलु खलवाटकं रमणीयं भवति तत् तेनार्थेन प्रदेशिन्! एवमुच्यते मा खलु त्व

उसमें नाच होता रहता है. पात्रो की हस्सी से जब तक वह खिल खिलाती रहती है, एवं विविध प्रकार की क्रीडाओं की क्रीडास्थला बनी रहती है. तब तक वह नाटयशाला सुहावनी लगती है. "जयाणं णट्टसाला णो गिज्जइ, जाव णो रमिज्जइ, तयाणं णट्टसाला अरमणिज्जा भवइ-२" और-जब वह नाटयशाला गीतों से रहित हो जाती है, बादित्रों की तुमुल ध्वनि से विहीन हो जाती है. यावत्-विविध प्रकार की क्राडाओं से वह शून्य हो जाती है, तब वही नाटयशाला अरमणीक हो जाती है-२। "जयाण इक्खुवाडे छिज्जइ-भिज्जइ-पीलिज्जइ-खज्जइ-पिज्जइ-दिज्जइ, तयाण इक्खुवाडे रमणिज्जे भवइ, जयाण इक्खुवाडे णो-छिज्जइ-जाव तया इक्खुवाडे अरमणिज्जे भवइ-३' इसी तरह जब तक हे प्रदेशिन्! इक्षु-सेलडी क्षेत्रमें इक्षु कटते रहते हैं पत्ते आदि उनसे दूर किये जाते रहते हैं उन्हें यन्त्रद्वारा पीडित कर उनका रस निकाला जाता रहता है बना हुवा गुड वहां चखा जाता रहता है लोग वहां निकाले हुवे रस को पीते रहते है, तथा-मिलने जुलने वालों को इक्षु दिया जाता रहता है. तब तक तो-वह इक्षुवाट रमणीय बना रहता है और जब तक इक्षु-

પ્રકારની ક્રીડાઓની તે ક્રીડા સ્થલી રહે છે. ત્યા સુધી તે નાટયશાળા સોહામણી લાગે છે "जयाणं णट्टसाला णो गिज्जइ, जाव णो रमिज्जइ तयाणं णट्टसाला अरमणिज्जा भवइ २" અને જ્યારે નાટયશાળા ગીતરહીત થઇ જાય છે, વાજિત્રોની તુમુલ તુમુલ ધ્વનિ રહિત્ થઇ જાય છે યાવત વિવિધ પ્રકારની ક્રીડાઓથી શૂન્ય થઇ જાય છે, ત્યારે તે જ નાટયશાળા અરમણીક થઇ જાય છે૨ "जयाणं इक्खुवाडे छिज्जइ भिज्जइ, पीलिज्जइ खज्जइ पिज्जइ, दिज्जइ, तयाण इक्खुवाडे रमणिज्जे भवइ, जयाणं इक्खुवाडे णो छिज्जइ जाव तजा इक्खुवाडे अरमणिज्जे भवइ ३" આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્! જ્યા સુધી ઇક્ષુ શેરડીના ખેતરમા શેરડી કપાતી રહે છે, પાંદડાઓ વગેરેની સાફસૂફી થતી રહે છે, યંત્રમા નાખીને તેમાથી રસ નીકળતો રહે છે, તૈયાર થયેલ ગોળ ત્યાં લોકો વડે ચખાતો રહે છે, ત્યાંથી પસાર થતા લોકો શેરડીમાથી નીકળેલો રસ પીતા રહે છે, તથા મળવા માટે આવનારાઓને શેરડી અપાતી રહે છે ત્યાંસુધી તો તે ઇક્ષુવાટ રમણીય રહે છે અને જ્યારે તે ઇક્ષુવાટમાં પૂર્વોક્ત

प्रदेशिन्! पूर्वं रमणीयो भूत्वा पश्चाद् अरमणीयो भवेः यथा वनखण्ड इति वा यावत् खलवाटम् इति वा ॥सू. १५९॥

टीका—"तए णं केसी कुमारसमणे" इत्यादि—ततः खलु केशी कुमारश्रमणः प्रदेशिराजम् एवमवादीत—मा खलु प्रदेशिन्! त्वं पूर्वम्—आदौ रमणीयः—धार्मिको भूत्वा पश्चाद् अरमणीयः—अधार्मिको मा भवेः, यथा—येन प्रकारेण वनषण्ड इति वा नाट्यशाला—नाट्यभवनम् इति वा इक्षुवाटकम्—इक्षुपीलनस्थानम्

वाटमें ये पूर्वोक्त सब काम बन्द कर दिये जाते है,—अर्थात्—इन कार्यों से वह रहित बन जाता है. तब वही इक्षुवाट अरमणीय लगने लगता है "जयाणं खलवाडे उच्छुब्भइ—मलिज्जइ उड्डिज्जइ खज्जइ-दिज्जइ, तया णं खलवाडे रमणिज्जे भवइ, जयाणं खलवाडे णो उच्छुब्भइ, जाव—अरमणिज्जे भवइ ४' इसी प्रकार से हे प्रदेशिन्—? खलिहान जबतक धान्य के ढेर लगे रहते हैं. दाय कण मर्दन होती रहती है, उडावनी होती रहती है, वहीं पर उसकी रक्षार्थ रक्षक के निमित्त लाया हुवा भोजन खाया जाता रहता है. दूसरों को वहीं पर जब तक अनाज वगैरह दिया जाता रहता है. तबतक तो वह खलिहान रमणीय लगता रहता है, और-जब यह सब काम होना उसमें बन्द हो जाता है तब वह अरमणीय लगने लगता है—४ "से तेणट्ठेणं पएसी-? एवं वुच्चइ-मा णं तुमं पए-सी? पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा—अरणिज्जे भविज्जासि जहा वणसंडे वा जाव खलवाडेइ वा—" इसी लिये हे प्रदेशिन्—? मैंने ऐसा कहा है कि—तुम पहले रमणीय होकर अरमणीय मत बन जावो, जैसे—कि वनषण्ड यावत् खलवाट हो जते हैं—

બધી ક્રિયાઓ બંધ થઇ જાય છે ત્યારે તે ઇક્ષુવાટ અરમણીય લાગવા માંડે છે. "जयाणं खलवाडे उच्छुब्भइ—मलिज्जइ, उड्डिज्जइ, खज्जइ, दिज्जइ, तयाणं खलवाडे रमणिज्जे भवइ, जयाणं खलवाडे णो उच्छुब्भइ, जाव—अरमणिज्जे भवइ ४' આ પ્રમાણે હે પ્રદેશિન્! ખળામાં જ્યાં સુધી ધાન્યના ઢગલાઓ રહે છે, કણુસલાં ગૂંદીને અનાજ કઢાતું રહે છે, અનાજ ઉપણાતું રહે છે, ત્યાંના રખેવાળ માટે ત્યાં પહોંચાડેલું ભોજન જમાતું રહે છે. બીજાઓને ત્યાં જ્યાં લગી અનાજ વગેરે અપાતા રહે છે ત્યાં સુધી તે ખળું રમણીય લાગે છે. અને જ્યારે આ બધું કામ બંધ થઇ જાય છે, ત્યારે તે અરમણીય લાગવા માંડે છે ४ "से तेणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ—मा णं तुमं पएसी! पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा—अरमणिज्जे भविज्जासि जहा वणसंडेइ वा जाव खलवाडेइ वा" એટલા માટે હે પ્રદેશિન્! મેં આમ કહ્યું છે કે તમે પહેલાં રમણીય થઇને પછી અરમણીય બનશો નહિ. જેવી રીતે વનષંડ યાવત્ ખળું થઇ જાય છે.

इति वा खलवाटकम् इति वा पूर्वं रमणीयं भूत्वा पश्चादरमणींयं भवतीति ! तत्र प्रदेशी पृच्छति—हे भदन्त ! कथं—केन प्रकारेण बनषण्डः पूर्वं रमणीयो भूत्वा पश्चादरमणीयो भवति ? । एवं नाटयशालेक्षुवाट—खलवाटविषयेऽपि प्रश्नयोजना कर्तव्या। तत्र क्रमेण तेषां रमणीयत्वारमणीयत्वे प्रदर्शयितु केशी प्राह—'पएसी' इत्यादि—हे प्रदेशिन् ! यथा वनषण्डः पत्रितः—पत्रसम्पन्नः, पुष्पितः—पुष्पसम्पन्नः फलितः—फलसम्पन्नः, हरितः—हरितत्वसम्पन्नः हरितकराराज्यमानः—हरितवर्णं पत्रपल्लवादिभिरतिशयेन शोभमानः, अत एव श्रिया—शोभया, अतीव—अत्यन्तम् उपशोभमानः—शोभां प्राप्नुवन् यदा तिष्ठति—वर्तते, तदा—तस्मिन् काले च स बनषण्डो नो पत्रितः नो पुष्पितः नो फलितः नो हरितः नो हरितकराज्यमानः अत एव नो श्रियाऽतीवोपशोभमानो भवति, यदा च जीर्णः—जीर्णपत्र पल्लवादियुक्तः शन्नः—प्रपतितपत्रादिकः, अत्र शदो झडादेशः, परिशटितपाण्डुपत्रः—विकृतपाण्डुवर्णपत्रयुक्तः शुष्कवृक्ष इव म्लायन्—म्लानतां गच्छन् सन् तिष्ठते, तदा खलु वनषण्डो नो रमणीयो भवति १। प्रदेशी पृच्छति—हे भदन्त ! नाटयशाला कथं रमणीया भूत्वा चारमणीया भवति ? केशी प्राह—हे प्रदेशिन् ! यदा खलु नाटयशालाऽपि गीयते—गानयुक्ता भवति वाद्यते—वाद्यवादनयुक्ता भवति नृत्यते—नृत्ययुक्ता भवति, हस्यते—हास्ययुक्ता भवति, रम्यते—क्रीडनयुक्ता भवति, तदा खलु सा रमणीया भवति, यदा खलु नो गीयते—यावत् नो वाद्यते ना नर्त्यते नो हस्यते नो रम्यते, तदा खलु सा अरमणीया भवति २ ।

अथेक्षुवाटविषयकप्रश्ने केशी प्राह—हे प्रदेशिन ! यदा खलु इक्षुवाटम् इक्षुक्षेत्रे इक्षुः छिद्यते—द्विधा क्रियते, भिद्यते—विदार्यते, पीडयते-यन्त्रेण रसो निःसार्यते, खाद्यते-गुडादिकम्, पीयते—रसः, दीयते—इक्ष्वादिकं, तदा खलु इक्षुवाटं रमणीयं भवति । यदा खलु इक्षुवाटं नो छिद्यते यावत् नो पीडयते नो खाद्यते नो पीयते नो दीयते, तदा इक्षुवाटम् अरमणीयं भवति । ३ ।

टीकार्थ—स्पष्ट है, "झडे" यहांपर शद् के स्थान में झड आदेश हुवा है. संस्कृत में इस की छाया "शन्नः" ऐसी होती हैं । केशीने—इस सूत्र द्वारा प्रदेशी राजा को पहिले रमणीय होकर अरमणीय वन जाने वाले वनपण्ड आदिचार को दृष्टांतरूप में रखकर यह समझाया है कि—तुम ऐसे मत वन जाना. ॥१५९॥

ટીકાર્થ—સ્પષ્ટ છે 'झडे' અહીં 'शद्'ના સ્થાને 'झड' આદેશ થયો છે. સંસ્કૃત મા એની છાયા 'शन्न' હોય છે. કેશીએ આ સૂત્ર વડે પ્રદેશી રાજાને પહેલા રમણીય થઈને પછી અરમણીય થઈ જનારા વનષંડ વગેરેને દૃષ્ટાંત રૂપમા આપીને આ સમજાવવામા આવ્યુ છે કે તમે એવા થશો નહિ. ॥સૂ. ૧૫૯॥

अथ खलवाटविषयप्रश्ने केशी प्राह-हे प्रदेशिन ! यदा खलु खलवाटं सस्यकणमर्दनपरिष्करणस्थानम् तत्र धान्यम्-अवक्षिप्यते-पुञ्जीक्रियते, मद्यते-वलीवर्दादिभिः, उड्डाप्यते-पवने पूयते, खाद्यते, दीयते तदा खलु खलवाटं रमणीयं भवति । यदा खलु नो अवक्षिप्यते यावत् नो मद्यते नो उड्डाप्यते, नो खाद्यते नो दीयते तदा अरमणीयं भवति ४। तत् हे प्रदेशिन ! तेन-वनषण्डादि दृष्टान्तरूपेण अर्थेन एवम् उच्यते-कथ्यते-यत् हे प्रदेशिन ! त्वं पूर्वं रमणीयो भूत्वा पश्चादरमणीयो मा भवेः, यथा वनषण्ड इति वा यावत्-नाटयशालेति वा इक्षुवाटम् इति वा खलवाटम् इति वा ॥सू. १५९॥

मूलम्--तए णं पएसी केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-णो खलु भंते ! अहं पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणीज्जे भविस्सामि जहा वणसंडेइ वा जाव खलवाडेइ वा, अहं सेयवियानयरीपमुक्खाइं सत्त गामसहस्साइं चत्तारि भागे करिस्सामि, एगं भागं बलवाहणस्स दलइस्सामि, एग भागं कुट्ठागारे छुभिस्सामि, एगं भागं अंतेउरस्स दलइस्सामि, एगेणं भागेणं महइमहालयं कूडागारसालं करिस्सामि, तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं दिन्नभइभत्तवेयणेहिं विउलं असणं पाणं खाइमं उवक्खडावेत्ता बहूणं समणमाहणभिक्खुयाणं पंथियवहियाणं परिभाएमाणे बहूहिं सीलव्वयगुणव्वयवेरमणव्वयपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सामित्ति कट्टु जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए । ॥ सू० १६० ॥

छाया--ततः खलु प्रदेशी केशिनं कुमारश्रमणम् एवमवादीत्-नो खलु भदन्त ! अहं पूर्वं रमणीयो भूत्वा पश्चादरमणीयो भविष्यामि, यथा वनषण्ड इति वा यावत् खलवाटमिति वा, अह खलु श्वेतविकानगरी प्रमुखानि सप्त ग्रामसहस्राणि चतुरो भागान् करिष्यामि, एकं भागं बलवाहनस्य दास्यामि, एकं भागं कोष्ठागारे क्षेप्स्यामि, एकं भागमन्तःपुराय दास्यामि, एकेन भागेन महाऽतिमहालयां कूटाऽऽकारशालां करिष्यामि, तत्र खलु बहुभिः पुरुषैः दत्तभृतिभक्त-

"तए णं पएसी के-सिं" इत्यादि ॥१६० सूत्र॥

सूत्रार्थ—'तएणं' इसके बाद 'पएसी' प्रदेशी राजाने—"केसिं कुमारसमणं एवं वयासी—" केशीकुमारश्रमण से ऐसा कहा—"णो खलु भंते! अहं पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविस्सामि जहा वणसंडेइ वा जाव-खलवाडेइ वा—" हे भदन्त! मैं पहले रमणीय होकर अब वनषण्ड, अथवा यावत खलवाट सेलडीका खेत की तरह अरमणीय नहीं बनूंगा. "अहं सेयविया नयरी पमुक्खाइं सत्त गामसहस्साइं चत्तारिभागे करिस्सामि—" मैं श्वेताबिका नगरी प्रमुख सातहजार ग्रामों को चार विभागों में विभक्त करूंगा. "एकं भागं बलवाहणस्स दलइस्सामि—" इन में से एक भाग तो बल—और वाहन के लिये दूंगा. "एगे भागे कुट्टागारे छुभिस्सामि-" दूसरा भाग कोष्ठागार में प्रजापालन के लिये रक्खूंगा. "एगं भागं अंतेउरस्स दलइस्सामि—" एक भाग को तीसरेको मैं अन्तःपुर रक्षा के लिये दूंगा. "एगेणं-भागेणं महइमहालयं कूडागारसालं करिस्सामि—" एक भाग से चौथे से मैं एक बहुत ही विशाल कूटागारशाला बनवाऊंगा —"तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं दिन्नभइभत्तवेयणेहिं विउल असण पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता बहूणं समण—माहण—भिक्खुयाणं पंथिय पहियाण परिभाएमाणे—" उसमें जनेक पुरुषो को सवेतनिक रूपमें रक्खूंगा.

"तए णं पएसी केसिं" इत्यादि ॥१६०॥

સૂત્રાર્થ—'तए ण' ત્યાર પછી 'पएसी' પ્રદેશી રાજાએ 'केसिं कुमारसमणं एवं वयासी' કેશી કુમાર શ્રમણને આ પ્રમાણે કહ્યું "णो खलु भंते! अहं पुव्विं रमणिज्ज भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविस्सामि जहा वणसंडेइ वा जाव खलवाडेइ वा" હે ભદંત! હું પહેલા રમણીય થઇને હવે વનષંડ કે યાવત્ ખળાની જેમ અરમણીય થઇશ નહિ "अहं सेयंविया नयरी पमुक्खाइं सत्तगामसहस्साइं चत्तारि भागे करिस्सामि" હુ શ્વેતવિકા નગરી પ્રમુખ સાત હજાર ગામોને ચાર ભાગોમા વિભાજિત કરીશ, "एकं भागं बलवाहणस्स दलइस्सामि" આમાથી એક ભાગ બલ (સેના) અને વાહન માટે આપીશ "एगे भागे कुट्टागारे छुभिस्सामि" બીજો ભાગ કોષ્ઠાગારમા પ્રજા પાલન માટે જુદો રાખીશ. 'एगं भागं अंतेउरस्स दलइस्सामि" ત્રીજા એક ભાગને હુ અન્તઃપુરની રક્ષા માટે આપીશ "एगेणं भागेणं महइमहालयं कूडागारसालं करिस्सामि" ચોથા એક ભાગથી હું એક વિશાળ કૂટાગાર શાળા બનાવડાવીશ "तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं दिन्नभइभत्तवेयणेहिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता बहूणं समणमाहणभिक्खुयाणं पंथियपहियाणं परिभाएमाणे" તેમા ઘણા પુરૂષોને હું પગાર આપીને નીમીશ. તેઓ ત્યાંજ જમશે. તે માણસો પાસેથી હુ વિપુલ માત્રામાં અશન—પાન—

वेतनैः विपुलम् अशनं पानं खादिमं स्वादिमम् उपस्कार्य बहुभ्यः श्रमण ब्राह्मण-भिक्षुकेभ्यः पथिकप्राघुणेभ्यः परिभाजयन् बहुभिः शीलव्रतगुणव्रतविरमणव्रत-प्रत्याख्यानपोषधोपवासैः आत्मानं भावयमानो विहरिष्यामि, इति कृत्वा यामेव दिशं प्रादुर्भूतः तामेव दिशं प्रतिगतः ॥सू. १६०॥

टीका—"तए णं पएसी" इत्यादि–ततः खलु प्रदेशी राजा केशिनं कुमारश्रमणम् एवमवादीत्–हे भदन्त ! अहं पूर्वं रमणीयो भूत्वा पश्चादरमणीयो नो भविष्यामि यथा–येन प्रकारेण वनपण्ड इति वा यावत् नाट्यशालेतिवा इक्षु-वाटमिति वा खलवाटमिति वा, वनपण्डादिवत् पूर्वं रमणीयो भूत्वा पश्चादर-मणीयो नो भविष्यामीति, तदेव स्पष्टयति अहं खलु श्वेतविकानगरी प्रमुखानि सप्त ग्रामसहस्राणि-सप्त सहस्रपरिमितग्रामान् चतुरो भागान्–चतुर्धा विभक्तान्

वही वे भोजन करेंगे. उनसे मैं विपुल मात्रा में अशन-पान-खादिम स्वादिम रूप चारों प्रकारके आहार को तैयार कराऊंगा फिर–अनेक श्रमण माहण भिक्षुकों के लिये. तथा पथिकरूप प्राघूर्णिकों के (अतिथिविशेष) लिये उस आहार को देता हुवा, एवं–'बहूहिं सीलव्वयगुणव्वयवेरमणव्वयपच्चक्खाण पोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सामि त्तिकट्टु जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए–" अनेकशील व्रतों से गुणव्रतों से प्रत्याख्यान और-पौषधोपवासोंसे आत्मा को मैं वासित करता हुवा. इस प्रकार कह कर वह प्रदेशी राजा जिस दिशा से आया था-उसी दिशा को चला गया.

टीकार्थ—स्पष्ट है प्रदेशी राजाने जो इस सूत्र द्वारा अपना अभिप्राय प्रकटित किया है वह मैं वनषण्डादि कों की तरह पूर्वमें रमणीय होकर अरम-णीय नहीं होने की पुष्टि के निमित्त प्रगट किया है इसी बात की पुष्टि अपने सात हजार ग्रामों को चार विभागों में विभक्त करने की है. इसमें एक–२

ખાદિમ-સ્વાદીમરૂપ ચારે પ્રકારના આહારો તૈયાર કરાવડાવીશ. પછી ઘણા શ્રમણ માહણ ભિક્ષુકો માટે તેમજ પથિકરૂપ પ્રાઘૂર્ણિકોને તે આહાર આપતો एवं बहूहिं सीलव्वयगुणव्वयवेरमणव्वयपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सामि त्ति कट्टु जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए" ઘણા શીલ-વ્રતોથી ગુણવ્રતોથી, પ્રત્યાખ્યાન અને પૌષધોપવાસોથી આત્માને હું વાસિત કરતો રહીશ આ પ્રમાણે કહીને પ્રદેશી રાજા જે દિશા તરફથી આવ્યો હતો તે દિશા-એથી જ જતો રહ્યો.

ટીકાર્થ—સ્પષ્ટ જ છે. પ્રદેશી રાજાએ આ સૂત્રવડે જે પોતાનો અભિપ્રાય પ્રકટ કર્યો છે તે વનષંડ જેમ પહેલાં રમણીય થઈને પછી અરમણીય થઈ જાય છે તેમ તે થશે નહિ એ વાતને સ્પષ્ટ કરવામા આવી છે. પોતાના સાત હજાર ગામોને ચાર ભાગોમાં જે રાજાએ વિભાજિત કર્યા છે તે પણ એ વાતને જ પુષ્ટ કરે છે એમાં

करिष्यामि, तत्र भागान् इत्यत्र 'भज्यन्त इति भागाः' इति कर्मव्युत्पत्तिर्बोध्या, भावव्युत्पत्त्या तु कर्मणि षष्ठयापत्तिः स्यात्। तेषु चतुर्षु भागेषु एकं भागं पादोनसहस्रद्वयरूपं बलवाहनाय–तत्र बलाय-सैन्याय-वाहनाय-हस्त्यश्वाद्यर्थं दास्यामि १, एकं–द्वितीयं भाग कोष्ठागारे–प्रजापालनाय कोशे क्षेप्स्यामि२, मूले क्षिपे श्छुभादेशः, एकं-तृतीय भागम् अन्तः पुराय-अन्तःपुररक्षणाय दास्यामि३, चतुर्थेन भागेन महातिमहालयाम्–अतिमहतीं–परमविशालाम्, कूटाऽऽकारशालां करिष्यामि, तत्र कूटाऽऽकारशालायां बहुभिः-बहुसंख्यैः पुरुषैः, कीदृशैः ? दत्तभृतिभक्तवेतनैः–दत्ताः भृतयो–जीविकाः, भक्तानि–आहाराः, वेतनानि–मासिकवृत्तयश्च येभ्यस्ते दत्तभृतिभक्तवेतनास्तैः पुरुषैरिति सम्बन्धः, विपुलं-प्रचुरम् अशनं पानं खादिमं स्वादिमम्' इति चतुर्विधाऽऽहारम् उपस्कार्य–सम्पाद्य बहुभ्यः श्रमण-ब्राह्मणभिक्षुकेभ्यः, तथा-पथिकप्राघुणेभ्यः-पथिकरूपाः प्राघुणाः पथिकप्राघुणाः, न तु सम्बन्धमाश्रित्य प्राघुणाः, तेभ्यः, परिभाजयन्–ददत्, बहुभिः शीलव्रत-गुणव्रत-विरमणव्रत-प्रत्याख्यान पोषधोपवासैः आत्मानं भावयमानो विहरिष्यामि, इति कृत्वा–इति कथयित्वा यामेव दिशं समाश्रित्य प्रादुर्भूतः तामेव दिशं प्रतिगतः। ॥सू० १६०॥

भाग में पोते दो-दो हजार ग्राम आते हैं। सैन्यका नाम–बल, और हस्ती अश्व आदिका नाम वाहन है। प्रजाओं की अच्छी तरह से पालन हो इस अभिप्राय से उसने एक भाग कोश–भण्डार में रखदिया "छुभिस्सामि" की संस्कृत छाया "क्षेप्स्यामि" है क्षिप् का प्राकृत में छुभादेश हुवा है. भृति शब्द का अर्थ जीविका. भक्त शब्द का अर्थ आहार एव–वेतन शब्द का अर्थ पगार है। पथिक प्रघूर्ण से पथिकरूप से प्राघुण लिये गये हैं नकि–सम्बन्ध को आश्रित करके प्राघूर्ण लिये गये हैं ॥सू० १६०॥

દરેકે દરેક વિભાગમા પોણા બે-બે હજાર ગામ છે સૈન્યનું નામ બલ અને હાથી ઘોડા વગેરેનુ નામ વાહન છે. પ્રજાનું સારી રીતે પાલન થઇ શકે તેટલા માટે તેણે એક ભાગ કોશ–ભંડારમા મૂકયો છે. "छुभिस्सामि" ની સંસ્કૃત છાયા "क्षेप्स्यामि" છે. ક્ષિપ્ ને પ્રાકૃતમા છુભાદેશ થયો છે ભૃતિ શબ્દનો અર્થ જીવિકા ભકત શબ્દનો અર્થ આહાર અને વેતન શબ્દનો અર્થ પગાર છે પથિક પ્રાઘૂર્ણ-(અતિથિરૂપ મહેમાન)થી પથિકરૂપથી પ્રાઘૂર્ણ (મહેમાન) લેવામા આવ્યા છે સંબંધને આશ્રિત કરીને પ્રાઘૂર્ણ લેવામા આવ્યા નથી ॥સૂ. ૧૬૦॥

मूलम्—तए णं से पएसी राया कल्लं जाव तेयसा जलंते सेयाविपामोक्खाइं सत्त गामसहस्साइं चत्तारि भाए कीरइ, एगं भागं वलवाहणस्स दलइ जाव कूडागारसालं करेइ, तत्थ णं वहूहिं पुरिसेहिं जाव उवक्खडावेत्ता वहूणं समण० जाव परिभाएमाणे विहरइ।

तए णं से पएसी राया समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ, जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च वलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च पुरं च अंतेउरं च जणवयं च अणाढायमाणे यावि विहरइ। ॥ सू० १६१ ॥

छाया—ततः खलु स प्रदेशी राजा कल्यं यावत् तेजसा ज्वलति श्वेताम्बिकाप्रमुखानि सप्त ग्रामसहस्राणि चतुरो भागान् करोति, एकं भागं बलवाहनाय ददाति यावत् कूटाऽऽकारशालां करोति, तत्र खलु वहुभिः पुरुषैः यावत् उपस्कार्य बहुभ्यः श्रमण० यावत् परिभाजयन् विहरति।

"तए णं पएसी राया—" इत्यादि।

सूत्रार्थ—"तएणं" इसके बाद "पएसी राया कल्लं" प्रदेशी राजाने दूसरे ही दिन "जाव तेयसा जलंते-" यावत् तेजसे सूर्य प्रकाशित होजाने पर "सेयंविया पामोकखाइ सत्तगामसहस्साइ चत्तारि भाए किरइ—" श्वेतांविका प्रमुख सातहजार ग्रामों को चार विभागो में विभाजित कर दिया. "एगे भागे बलवाहणस्स दलयइ" इनमें एक भाग बल वाहन के लिये वितरण करदिया. "जाव-कूडागार सालं करेइ-" यावत् चतुर्भाग कूटागारशाला को बनवाने के निमित्त दे दिया. "तत्थ णं वहूहिं पुरिसेहिं जाव-उवक्खडावेत्ता वहूणं समण० जाव परिभाए माणे विहरइ—" जब

'तएणं पएसी राया' इत्यादि

સૂત્રાર્થ—'तएणं' ત્યાર બાદ (पएसी राया कल्लं) પ્રદેશી રાજાએ બીજા દિવસે जाव तेयसा जलंते' યાવત તેજથી જ્યારે સૂર્ય પ્રકાશિત થઈ ગયો ત્યારે "सेयंविया पामोक्खाइं सत्तगामसहस्साइं चत्तारि भाए कीरइ" શ્વેતાંબિકા પ્રમુખ સાત હજાર ગામોને ચાર ભાગોમા વહેંચી નાખ્યા. "एगे भागे वलवाहणस्स दलयइ" આમા એક ભાગ-બલ-વાહન માટે આપ્યો "जाव कूडागारसालं करेइ" યાવત્ ચોથો ભાગ કૂટાગારશાળા બનાવવા માટ આપ્યો. "तत्थ वहूहिं पुरिसेहिं जाव उवक्खडावेत्ता वहूणं समण० जाव परिभाएमाणे विहरइ"

ततः खलु स प्रदेशी राजा श्रमणोपासको जातः अभिगत-जीवाजीवः यावद् विहरति, यत्प्रभृति च खलु प्रदेशी राजा श्रमणोपासको जातः, तत्प्रभृति च खलु राज्यं च राष्ट्रं च बलं च वाहनं च कोशं च कोष्ठागारं च अन्तःपुरं च जनपदं च अनाद्रियमाणश्चापि विहरति । ॥सू० १६१॥

टीका—"तए णं से पएसी" इत्यादि—ततः खलु स प्रदेशी राजा कल्पं यावत् एकोनषष्ट्यधिकैकशततम १५९ सूत्रोक्तपाठानुसारेण सूर्ये तेजसा-दीप्त्या ज्वलति-प्रकाशमाने सति श्वेतांबिकाप्रमुखानि सप्त ग्रामसहस्राणि-ग्रामाणां सप्त

कूटागार शाला बनकर तैयार हो गई तब उसमें उसने अनेक पुरुषों द्वारा यावत् चारों प्रकार का अशन-आहार निष्पन्न कराकर उससे अनेक श्रमणादि जनोंको प्रतिलाभित करता था याने देता था "तएण से पएसी राया समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ—" इसके बाद वह प्रदेशी राजा श्रमणोपासक हो गया. जीव तत्त्व और अजीव तत्त्व के स्वरूप का भलीभांति से ज्ञाता बन गया. इत्यादि. जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च पुरं च अंतेउरं च जणवयं च अणाढायमाणे यावि विहरइ—" अब वह प्रदेशी राजा जिस दिन से श्रमणोपासक बना. उसी दिन से अपने राज्य के प्रति. राष्ट्र के प्रति बल के प्रति. वाहन के प्रति, कोष के प्रति, कोष्ठागार के प्रति अंतःपुर के प्रति और जनपद के प्रति उपेक्षाभाव धारण करलिया. इस सूत्र का टीकार्थ—स्पष्ट है. यहां यावत्पद से—"कल्लं जाव" के इस यावत् पदसे १५९ वें सूत्र है जो पाठ इसके विषय में

જ્યારે કૂટાગારશાળા તૈયાર થઈ ગઈ ત્યારે તેમાં તેણે ઘણા પુરૂષો વડે યાવત્ ચારે જાતનો અશન આહાર બનાવડાવ્યા અને તેનાથી ઘણા શ્રમણ વગેરેને પ્રતિલાભિત કર્યા "तए णं से पएसी राया समणोवासए जाव अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ" ત્યાર પછી તે પ્રદેશી રાજા શ્રમણોપાસક થઈ ગયો. જીવતત્ત્વ અને અજીવતત્ત્વના સ્વરૂપનો સારી રીતે જ્ઞાતા થઈ ગયો વગેરે. "जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च, बलं च वाहणं च, कोसं च, कोट्ठागारं च, पुरं अंतेउरं च, जणवयं च अणाढायमाणे यावि विहरइ" હવે તે પ્રદેશી રાજાએ જે દિવસથી શ્રમણોપાસક થયો. તેજ દિવસથી પોતાના રાજ્ય તરફ, રાષ્ટ્ર તરફ, સેના તરફ, વાહન તરફ, ભંડાર (કોષ) તરફ કોષ્ઠાગાર પ્રતિ, અંતઃપુર પ્રતિ અને જનપદ પ્રતિ ઉપેક્ષા ભાવ ધારણ કરી લીધો

ટીકાર્થ-આ સૂત્રનો સ્પષ્ટ જ છે. અહીં યાવત્ પદથી "कल्लं जाव" ના આ યાવત્ પદથી ૧૫૯ મા સૂત્રમાં જે પાઠ એના વિષે ગૃહીત થયો છે તે જાણવો.

सहस्राणि चतुरो भागान्—चतुर्धा विभक्तानि करोति, कृत्वा तेषु चतुर्षु भागेषु एकं-प्रथमं भागं बलवाहनाय ददाति, द्विषष्ट्यधिकशततम-सूत्रोक्तानुसारेण कूटाऽऽकारशालां करोति। तत्र खलु बहुभिः पुरुषैः यावत् उपस्कार्य बहुभ्यः श्रमण० यावत् द्विषष्टयधिकैकशततमसूत्रोक्तानुसारेण श्रमणब्राह्मणभिक्षुकेभ्यः पथिकप्राघुणेभ्यः परिभाजयन् विहरति।

ततः खलु स प्रदेशी राजा श्रमणोपासकः—श्रावको जातः कीदृशः? इत्याह—अभिगतजीवाजीवः चतुर्दशोत्तरशततमसूत्रोक्तविशेषणविशिष्टो भूत्वा विहरति। यत्प्रभृति च—यद्दिनादारभ्य खलु प्रदेशी राजा श्रमणोपासको जातः, तत्प्रभृति—तद्दिनादारभ्य च खलु राज्यं—राष्ट्रं, बलं, वाहनं, कोशं, कोष्ठागारम् पुरम् जनपदं च अनाद्रियमाणः—उपेक्षमाणः चापि विहरति ॥सू० १६१॥

मूलम्—तए णं तीसे सूरियकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च जाव अंतेउरं च ममं च जणवयं च अणाढायमाणे विहरइ, तं सेयं खलु मे पएसिरायं केणवि सत्थप्पओगेण वा अग्गिप्पओगेण वा मंतप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा उद्दवेत्ता सूरियकंतं कुमारं रज्जे ठवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणीए पालेमाणीए विहरित्तएत्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता सूरियकंतं कुमारं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च जाव अंतेउरं च जणवयं च माणुस्सए य कामभोगे अणाढायमाणे विह-

कहा गया है वह गृहीत किया गया है "जाव कूडागारसालं—" में आगत यावत् पद से १६२ सूत्र में जो पाठ कहा गया है वह यहां गृहीत किया गया है। इसी तरह से "पुरिसेहिं जाव—" में आगत यावत् पद से भी १६२ वें सूत्र में कथित इस विषय का पाठ ग्रहण किया गया है ॥१६१॥

'जाव कूडागारसालं' માં આવેલ યાવત્ પદથી ૧૬૨ માં સૂત્રમા જે પાઠ છે તેનું ગ્રહણ કરવામાં આવ્યું છે. આ પ્રમાણે "पुरिसेहिं जाव" માં આવેલ યાવત્ પદથી ૧૬૨માં સૂત્રમા કથિત આ વિષે ના પાઠનુ ગ્રહણ થયું છે. ॥૧૬૧॥

रइ त सेय खलु तव पुत्ता ! पएसिं रायं केणइ सत्थप्पओगे" वा जाव उद्दवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणस्स पालेमाणस्स विहरित्तए। तए णं सूरियकंते कुमारे सूरियकंताए देवीए एवं वुत्ते समाणे सूरियकंताए देवीए एयमट्ठं णो आढाइ णो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ, तए णं तीए सूरियकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—मा णं सूरियकंते कुमारे पएसिस्स रण्णो रहस्सभेयं करिस्सइत्ति कट्टु पएसिस्स रण्णो छिद्दाणि य मम्माणि य रहस्साणिय य विवराणिय अंतराणि य पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ ॥ सू० १६२॥

छाया—ततः खलु तस्याः सूर्यकान्ताया देव्याःअयमेतद्रूप आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत—यत्प्रभृति च खलु प्रदेशी राजा श्रमणोपासको जातस्तत्प्रभृति च खलु राज्यं च राष्ट्रं च यावत् अन्तःपुरं च मां च जनपदं च अनाद्रियमाणो विहरति, तच्छ्रेयः खलु मे प्रदेशिनं राजानं केनापि शस्त्रप्रयोगेण वा अग्निप्रयो-

---

"तएणं तीसे सूरियकंताए देवीए" इत्यादि ॥

मूलार्थ—'तए णं—' इसके बाद 'तीसे सूरियकंताए देवीए—' उस सूर्यकान्ता देवी को 'इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—' यह इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत् विचार उत्पन्न हुवा—'जप्पभिइ च ण पएसी राया समणोवासए जाए—' जिस दिन से प्रदेशी राजा श्रमणोपासक हुवे हैं 'तप्प-भियं च ण रज्ज च—' उसी दिन से उन्होंने राज्य के प्रति, राष्ट्र के प्रति. यावत् अन्तःपुर के प्रति, तथा—मेरे प्रति, और-जनपद देश के प्रति उपेक्षा

"तएण तीसे सूरियकंताए देवीए" इत्यादि।

મૂલાર્થ—"तए ण" ત્યાર પછી "तीसे सूरियकंताए देवीए" તે સૂર્યકાન્તા દેવીને "इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था" આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત વિચાર ઉત્પન્ન થયો. "जप्पभियं च णं पएसी राया समणोवासए जाए" જે દિવસથી પ્રદેશી રાજા શ્રમણોપાસક થયા છે, "तप्पभियं च ण रज्जं च" તે જ દિવસથી તેમણે રાજ્ય પ્રતિ, રાષ્ટ્રના પ્રતિ, યાવત અંતપુર પ્રતિ તેમજ મારા પ્રતિ અને જનપદ-દેશના પ્રતિ ઉપેક્ષા ધારણ કરી લીધી છે "तं सेयं खलु मे पएसिं रायं

गेण वा मन्त्रप्रयोगेण वा विषप्रयोगेण वा उपद्रूत्य सूर्यकान्तं कुमारं राज्ये स्थापयित्वा स्वयमेव राज्यश्रियं कारयन्त्याः पालयन्त्या विहर्तुम्, इतिकृत्वा एवं संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य सूर्यकान्तं कुमारं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—यत्प्रभृति च खलु प्रदेशी राजा श्रमणोपासको जातः, तत्प्रभृति च खलु राज्यं च यावत् अन्तःपुरं च खलु जनपदं च मानुष्यकांश्च कामभोगान् अनाद्रियमाणो विहरति

धारण कर रखा है "तं सेयं खलु मे पएसिं रायं केणवि सत्थप्पओगेणं वा–अग्गिप्पओगेण वा–मंतप्पओगेणवा-विसप्पओगेण वा–उद्दवेत्ता सूरियकंतं कुमारं रज्जे ठवित्ता–" अतः–अब मुझे यही उचित है कि मैं प्रदेशी राजा को किसी अस्त्र के प्रयोग से अथवा–अग्नि के प्रयोग से. मारकर सूर्यकान्त पुत्र को राज्य में स्थापित करके "सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणीए पालेमाणीए विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ–' अपने आप स्वयं ही राज्य लक्ष्मी का भोग करती हुई, उसका पालन करती हुई, आनन्द से रहूं–? इस प्रकार का उसने विचार किया–"संपेहित्ता-सूरियकंतं कुमार सद्दावेइ–' ऐसा विचार करके फिर उसने अपने सूर्यकान्त पुत्रको बुलाया. "सद्दावित्ता एवं वयासी–" बुलाकर उससे ऐसा कहा–"जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च जाव अंतेउरं च जणवयं च माणुस्सए च कामभोगे अणाढायमाणे विहरइ–जिस दिन से प्रदेशी राजा श्रमणोपासक बने हैं उस दिन से उन्होंने राज्य की ओर–यावत् अन्तःपुर की ओर और जनपद की ओर, एवं–मनुष्य भव-

केण वि सत्थप्पओगेण वा अग्गिप्पओगेण वा–मंतप्पओगेण वा विसप्पओगेणवा उद्दवेत्ता सूरियकंतं कुमारं रज्जे ठवित्ता" એથી મારા માટે હવે એજ ઉચિત છે કે હું પ્રદેશી રાજાને કોઈ શસ્ત્રના પ્રયોગથી કે અગ્નિના પ્રયોગથી કે મંત્રના પ્રયોગથી કે વિષના પ્રયોગથી મારી નાખીને સૂર્યકાંત પુત્રને રાજપાટને બેસાડીને 'सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणीए पालेमाणीए विहरित्तइ त्ति कट्टु एवं संपेहेइ" પોતેજ રાજ્ય લક્ષ્મીનો ઉપભોગ કરીને તેનું રક્ષણ કરતા આનંદપૂર્વક સમય પસાર કરૂં આ પ્રમાણે તેણે વિચાર કર્યો. "संपेहित्ता सूरियकंतं कुमारं सद्दावेइ" આ જાતનો વિચાર કરીને પછી તેણે પોતાના સૂર્યકાંત પુત્રને બોલાવ્યો. "सद्दावित्ता एवं वयासी" બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું. "जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च जाव अंतेउरं च जणवयं च माणुस्सए च कामभोगे अणाढायमाणे विहरइ" જે દિવસથી પ્રદેશી રાજા શ્રમણોપાસક થયા છે તે દિવસથી તેમણે રાજ્ય તરફ, યાવત્ અંતઃપુર તરફ જનપદ તરફ, મનુષ્યભવ સંબંધી કામભોગો તરફ ધ્યાન આપવું બંધ કર્યું છે.

तच्छ्रेयः खलु तव पुत्र ! प्रदेशिनं राजानं केनापि शस्त्रप्रयोगेण वा यावत् उपद्रुत्य स्वयमेव राज्यश्रियं कारयतः पालयतो विहर्तुम्। ततः खलु सूर्यकान्तः कुमारः सूर्यकान्तया देव्या एवमुक्तः सन् सूर्यकान्ताया देव्या एतमर्थं नो आद्रियते नो परिजानाति तूष्णीकः संतीष्ठते। ततः खलु तस्याः सूर्यकान्तायाः देव्या अयमेतद्रूप आध्यात्मिकः यावत् समुदपद्यत—मा खलु सूर्यकान्तः कुमारः

सम्बन्धी कामभोग की ओर लक्ष्य देना बन्द करदिया है, अर्थात्—इन सब बातों को अब वे आदर की दृष्टि से नहीं देखते हैं "तं सेयं खलु वि पुत्ता ? पएसिं रायं केणइ सत्थप्पओगेण वा जाव उद्दवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणस्स पालेमाणस्स विहरित्तए–" अतः-हे पुत्र-३ अब यही योग्य है कि तुम प्रदेशी राजा को किसी भी शस्त्र के प्रयोग से अथवा अग्निप्रयोग से—यावत् विषय के प्रयोग से मारकर स्वयं राज्यश्री का भोग करो उसका पालन करो 'तएणं सूरियकंते कुमारे सूरियकंताए देवीए एवं वुत्ते समाणे सूरियकंताए देवीए एयमट्ठं णो आढाइ, णो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ–" इस प्रकार सूर्यकान्ता देवी द्वारा कहे गये सूर्यकान्तकुमारने उसकी इस बात को आदर की दृष्टि से नही देखा. औरन्न तो उसकी उसने अनुमोदना ही की, किन्तु इस बात को सुनकर वह केवल चुपचाप ही रहा—"तएणं तीए सूरियकंताए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–" इसके बाद उस सूर्यकान्ता देवी को इस प्रकार का यह आध्यात्मिक यावत् संकल्प-विचार उत्पन्न हुवा-"मा णं

એટલે કે તેઓ હવે આ બધી વસ્તુઓને આદરની દૃષ્ટિએ જોતા નથી. "तं सेयं खलु वि पुत्ता ? पएसिं राय केणइ सत्थप्पओगेण वा जाव उद्दवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणस्स पालेमाणस्स विहरित्तए" એથી હે પુત્ર ! હવે એજ ઉચિત જણાય છે કે તમે પ્રદેશી રાજાને કોઇ પણ શસ્ત્રના પ્રયોગથી કે યાવત્ વિષ પ્રયોગથી મારી નાખો અને પોતે રાજ્યલક્ષ્મીનો ઉપભોગ કરો, તેનુ રક્ષણ કરો. "तए णं सूरियकंते कुमारे सूरियकंताए देवीए एवंवुत्ते समाणे सूरियकंताए देवीए एयमट्ठं णो आढाइ, णो परियाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठइ" આ પ્રમાણે સૂર્યકાન્તા દેવી વડે કહેવાયેલ સૂર્યકાન્ત કુમારે તેની વાત પ્રત્યે આદર બતાવ્યો નહિ અને તેની વાતની તેણે અનુમોદના પણ કરી નહિ પણ તે તેની સામે મૂગો થઇને ઉભો જ રહ્યો "तए णं तीए सूरियकंताए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था" ત્યાર પછી તે સૂર્યકાન્તા દેવીને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ સંકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે "माणं सूरियकंते कुमारे-

प्रदेशिनो राज्ञः इमं रहस्यभेदं करिष्यति, इति कृत्वा प्रदेशिनो राज्ञः छिद्राणि च मर्माणि च रहस्यानि च विवराणि च अन्तराणि च प्रतिजाग्रती प्रतिजाग्रती विहरति ॥ सू० १६२ ॥

टीका—"तए णं तीसे" इत्यादि—ततः खलु तस्याः सूर्यकान्ताया देव्याः प्रदेशिराजस्य पट्टराज्या अयमेतद्रूपः—वक्ष्यमाणप्रकारकः आध्यात्मिकः—आत्मगतो विचारः यावत्—यावत्पदेन "चिन्तितः कल्पितः प्रार्थितः मनोगतः संकल्पः" इति संग्राह्यम्, अर्थस्तु पूर्वसूत्रे गतः, समुदपद्यत—संजातः, तदेव दर्शयति—यत्प्रभृति—यद्दिनादारभ्य च खलु प्रदेशी राजा श्रमणोपासकः—श्रावको जातः, तत्प्रभृति तद्दिनादारभ्य च खलु राज्यं—स्वाम्यमात्य—सुहृत्-कोप—राष्ट्र—दुर्ग-

सूरियकंते कुमारे पएसिस्स रण्णो रहस्सभेयं करिस्सइ त्ति कट्टु पएसिस्स रण्णो छिद्दाणिय-मम्माणिय-रहस्साणिय-विवराणिय—अंतराणिय पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ—" सूर्यकान्तकुमार प्रदेशी राजा के पास, अर्थात्—प्रदेशी राजा से मेरी इस मन्त्रणा को प्रकाशित न करदे ? अतः—वह इस विचार से प्रदेशी राजा के छिद्रों को, दोषों को, मर्मों को, कुकृत्यरूप लक्षणों को-रहस्यों को एकान्तस्थान में सेवित निषिद्ध आचरणों को, विवरों को, निर्जनस्थानों को, और—अवकाश लक्षणरूप अन्तरों को बडी सावधानी के साथ बार-२ देखने लगी—अर्थात्—इन सब पर वह कडी दृष्टि रखने लगी. ॥

टीकार्थ—स्पष्ट है. "अज्झत्थिए जाव" में आगत इस यावत् पदसे—चिन्तित कल्पित प्रार्थित मनोगत संकल्प, इन पदों का संग्रह हुवा है। इन विचार के विशेषणों का अर्थ पहले प्रकट किया जा चुका है। "रज्जं च जाव अंतेउरं च—" में आगत यावत् पद से-"बलं वाहनं कोष कोष्ठागार

पएसिस्स रण्णो रहस्सभेयं करिस्सइ त्ति कट्टु पएसिस्स रण्णो छिद्दाणिय मम्माणिय रहस्साणिय, विवराणिय अंतराणिय पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ" सूर्यकांत कुमार प्रदेशी राज्यनी पासे—એટલે કે પ્રદેશી રાજાને મારી આ વાત કહી દે નહિ એથી તે પ્રદેશી રાજાના છિદ્રોને, દોષોને, મર્મોને, કુકૃત્યરૂપ લક્ષણોને, રહસ્યોને, એકાન્ત સ્થાનમા સેવિત નિષિદ્ધિ આચરણોને, વિવરોને, નિર્જન સ્થાનોને અને અવકાશ લક્ષણરૂપ અન્તરોને બહુજ સાવધાનીપૂર્વક વારંવાર જોવા લાગી. એટલે કે બધી હિલચાલ પર દૃષ્ટિ રાખવા માડી

ટીકાર્થ—સ્પષ્ટ જ છે. "अज्झत्थिए जाव"માં આવેલા યાવત્ પદથી "चिन्तितः, कल्पितः प्रार्थितः मनोगतः संकल्पः" આ પદોનો સંગ્રહ થયો છે, આ પદોનો અર્થ પહેલાં સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યો છે. "रज्जं च जाव अंतेउरं च" માં આવેલ યાવત પદથી

बलरूपेण समाङ्गम्, राष्ट्रं-देशं यावत्-यावच्छब्देन "बलं-सैन्यं, वाहनं-रथादिकम्, कोषं-रत्नादिभाण्डागारम्, 'कोष्ठागारं-धान्यस्थापनगृहम्, पुरं-नगरम्" इति संग्राह्यम्, अन्तःपुरम्-अन्तःपुरस्थपरिवारम् च पुनः मां च-तथा जनपदं-विजितदेशं च अनाद्रियमाणः-तच्चिन्तामकुर्वाणो विहरति-तिष्ठति, तत् तर्हि मे-मम श्रेयः-समीचीनं खलु प्रदेशिनं राजानं केनापि शस्त्रप्रयोगेण-खड्गादिप्रयोगेण, वा-अथवा अग्निप्रयोगेण-अग्निना दाहनरूपेण,-मन्त्रप्रयोगेण-मन्त्रजापरूपेण, वा-अथवा, विषप्रयोगेण-विषप्रदानरूपेण, उपद्रुत्य-मारयित्वा सूर्यकान्तं सूर्यकान्तनामकं, कुमारं-मम पुत्रं राज्ये स्थापयित्वा संनिवेश्य स्वयमेव-अहं स्वयं राज्यश्रियं-राज्यलक्ष्मीं कारयन्त्याः-बलवाहनादिभिः संवर्धयन्त्याः, पालयन्त्याः-रक्षयन्त्याः विहर्तुं-स्थातुम् । इतिकृत्वा-इति वितर्क्य एवं-पूर्वोक्तानुसारेण संप्रेक्षते-निर्धारयति, निर्धार्य सूर्यकान्तं कुमारं शब्दयति आह्वयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यत्प्रभृति च खलु प्रदेशी राजा श्रमणोपासको जात-

---

पुर-" इन पदों का संग्रह हुवा है. । अन्तःपुर शब्द से अन्तःपुरस्थ परिवार का ग्रहण किया गया है । तथा-जनपद से विजित देश लिया गया है, इस सूत्र का भावार्थ ऐसा है कि-जब सूर्यकान्ता देवीने यह जान लिया कि प्रदेशी राजा श्रमणोपासक बन चुका है, और-अपने बल-वाहन आदि की संभाल करने आदि की ओर उसका जैसा ध्यान होना चाहिये अब वैसा नहीं रहा है, और न वह मेरी भी अब कुछ चाहना करता है, तब उसके मनमें इस को दूर करने के लिये ऐसा विचार उठाकि-जैसे भी बने, चाहे-अग्निप्रयोग से हो, या शस्त्रादि से हो, अवश्य ही इस प्रदेशी राजा का विनाश कर देना चाहिये, तथा-इसके स्थान पर सूर्यकान्त पुत्र को स्थापित कर देना चाहिये. इसी में अब भलाई है। ऐसा विचार कर उसने पुत्र को बुलाया

"बल वाहन कोष कोष्ठागारं पुरं" આ પદોનો સંગ્રહ થયો અન્તઃપુર શબ્દથી અન્તઃપુરસ્થ પરિવારનું ગ્રહણ થયું છે તેમજ જનપદથી વિજિત (છતેલા) દેશનો અર્થ લેવામાં આવ્યો છે આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે સૂર્યકાંતા દેવીએ આ વાત જાણી લીધી કે પ્રદેશી રાજા શ્રમણોપાસક થઈ ગયો છે અને પોતાના બલ-વાહન વગેરેની સંભાળ રાખતો નથી અને મારી તરફ પણ તેનું ધ્યાન નથી ત્યારે તેના મનમાં તે કાંટાને દૂર કરવાનો વિચાર ઉત્પન્ન થયો કે ગમે તે રીતે અગ્નિ-પ્રયોગથી, કે શસ્ત્રાદિ પ્રયોગથી આ રાજાને મારી નાખવો જોઈએ તથા તેની ખાલી પડેલી જગ્યાપર સૂર્યકાંત પુત્રને ગાદીએ બેસાડવો જોઈએ. આમાં જ હવે રાજ્યની ભલાઈ છે આમ વિચાર કરીને તેણે પુત્રને બોલાવ્યો અને પોતાના આ વર્તના

स्तत्प्रभृति च खलु राज्यं च यावत् अन्तःपुरं च जनपदं च तथा मानुष्यकान्-मनुष्यसम्बन्धिनः कामभोगान्-अनाद्रियमाणः-अनादरदृष्ट्या पश्यन् विहरति, तच्छ्रेयः खलु तव हे पुत्र ! प्रदेशिनं राजानं केनापि शस्त्रप्रयोगेण वा यावत् अग्न्यादिप्रयोगेण वा उपद्रुत्य-मारयित्वा स्वयमेव राज्यश्रियं कारयतः पालयतो विहर्तुम् । ततः खलु स सूर्यकान्तः कुमारः सूर्यकान्ताया देव्याः स्वमातुः एतमर्थं नो आद्रियते-कामपि स्वीकृतिचेष्टां न दर्शयति, नो परिजानाति-नानुमोदयति । तर्हि किं करोति ? इत्याह-तूष्णीकः-किञ्चिदप्यवदन्नेव संतिष्ठते । ततः खलु तस्याः सूर्यकान्तायाः देव्या अयमेतद्रूपः वक्ष्यमाणप्रकारकः आध्यात्मिकः-आत्मगतो विचारः यावत् चिन्तितः कल्पितः प्रार्थितः मनोगतः संकल्पः समुदपद्यत-समुत्पन्नः, तदेवाऽऽह-सूर्यकान्तः खलु कुमारः प्रदेशिनो राज्ञः समीपे इमं मत्कथितं रहस्यभेदं-गुप्तमन्त्रणाप्रकाशनं मा करिष्यति-मा कुर्यात्, इति कृत्वा-इति विचार्य प्रदेशिनो राज्ञः छिद्राणि-दूषणानि, मर्माणि-कुकृत्यलक्षणानि, एकान्तस्थानसेवितनिषिद्धाचरणानि, विवराणि-निर्जनस्थानरूपाणि, अन्तराणि-अवकाशलक्षणानि प्रतिजाग्रती प्रतिजाग्रती-अन्वेषयन्ती २ विहरति-तिष्ठति ॥सू० १६२॥

मूलम्-तए णं सा सूरियकंता देवी अन्नया कयाइं पएसिस्स रण्णो अतरं जाणइ असण-पाण-खाइम-साइम-सव्ववत्थगंधमल्लालंकारेसु विसप्पओगं पउंजइ । पएसिस्स रण्णो ण्हायस्स जाव सुहासणवरगयस्स ते विससंजुत्ते असण-पाण-खाइम-साइम-सव्ववत्थगंधमल्लालंकारे निसिरेइ । तए णं तस्स पएसिस्स रण्णो तं विससंजुत्तं असणं-पाणं-खाइमं-साइमं आहारेमाणस्स समाणस्स

और-अपने इस प्रकार के विचारों को उसे सुनाया, पर उस विचार को पुत्रने अच्छा नहीं समझा. तब-सूर्यकान्ता के हृदय को उस विचारने आलोडित करदिया की-कहीं ऐसा न हो कि मेरे इस विचार को सूर्यकान्त, प्रदेशी राजा से प्रकट कर दे, अतः-वह प्रदेशी राजा के छिद्रादिकों को देखने की ताकमें रहनेलगी.॥१६२

વિચારો તેની સામે સ્પષ્ટ કર્યા. પણ પુત્રે આ વાતને સારી માની. નહિ ત્યારે સૂર્યકાન્તાના મનમાં આ જાતનો વિચાર થયો કે મારી આ વાત એ પ્રદેશી રાજા સામે પ્રકટ કરી દેશે તો શું થશે ? એટલા માટે તે હવે પ્રદેશી રાજાના છિદ્રો વગેરે જોવા લાગી. ॥સૂ. ૧૬૨॥

सरीरंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउला पगाढा कक्कसा कडुया फरुसा निट्ठुरा चंडा तिव्वा दुक्खा दुग्गा दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंते यावि विहरइ ॥ सू० १६३ ॥

छाया—ततः खलु सा सूर्यकान्ता देवी अन्यदा कदाचित् प्रदेशिनो राज्ञः अन्तरं जानाति अशन-पान-खादिम-स्वादिम- सर्ववस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेषु विष प्रयोगं प्रयुनक्ति, प्रदेशिने राज्ञे स्नाताय यावत् सुखासनवरगताय तान् विषसंयुक्तान् अशन-पान-खादिम-स्वादिम-सर्ववस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारान् निसृजति। ततः खलु तस्य

"तएणं सूरियकंतादेवी" इत्यादि—

मूलार्थ—'तएणं' इसके बाद 'सूरियकंतादेवी' सूर्यकान्तादेवीने 'अन्नया कयाइ" किसी एकदिन 'पएसिस्स रन्नो' प्रदेशी राजाके 'अंतरं जाणइ' षष्ठपारणा के अवसररूप अन्तर को जान लिया और असण- पाणखाइम- साइम सव्वत्थगंधमल्लालंकारेसु विसप्पओगं पउंजइ-" अशन- पान खाद्यरूप आहारों में, तथा–वस्त्र–गन्ध–माला अलङ्कारों में विष का संप्रयोग करदिया. पएसिस्स रणो ण्हाए जाव सुहसणवरगयस्स ते विससंजुत्ते असण पाण खाइमसाइमसव्ववत्थगंधमल्लालंकारे निसिरेइ--" प्रदेशी राजा जब स्नान करके यावत् सुखदरूप श्रेष्ठ आसनपर आसीन था, तब उसके लिये उसने–उन विषसंप्रयुक्त अशन पान-खाद्य-स्वाद्यरूप आहार को परोसा. तथ-पहिरने के लिये वस्त्र-गन्ध-माला. एवं-अलङ्कारों को दिया. 'तए णं तस्स पएसिस्स रणो ते विससंजुत्तं असणं-

---

"तए णं सूरियकंता देवी" इत्यादि।

મૂલાર્થ—"तएणं" ત્યાર પછી "सूरियकंता देवी" સૂર્યકાંતા દેવીએ–"अन्नया कयाइ" કોઈ એક દિવસે "पएसिस्स रन्नो" પ્રદેશી રાજાને "अंतरं जाणइ" ષષ્ઠ પારણાનો અવસર રૂપ અંતર (તક) જાણી લીધો અને "असणपाणखाइम-साइमसव्ववत्थगंधमल्लालंकारेसु विसप्पओगं पउंजइ" અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ આહારોમાં તેમજ વસ્ત્ર ગન્ધ માલા અલંકારોમાં વિષ સંપ્રયોગ કરી દીધો. "पएसिस्स रण्णो ण्हायस्स जाव सुहासणवरगयस्स ते विससंजुत्ते असणपाण-खाइमसाइमसव्ववत्थगंधमल्लालंकारे निसिरेइ" પ્રદેશી રાજા જ્યારે સ્નાન કરીને યાવત્ સુખદરૂપ શ્રેષ્ઠ આસન પર આસીન હતા ત્યારે તેમના માટે તેણે તે વિષસંપ્રયુકત અશન, પાન, ખાદ્ય, સ્વાદ્યરૂપ આહાર પીરસ્યું. તેમજ પહેરવા માટે વસ્ત્ર–ગન્ધ–માળા અને અલંકારો આપ્યાં. "तए णं तस्स पएसिस्स रण्णो ते विस-

प्रदेशिनो राज्ञः तद्विषसंयुक्तम् अशनं पान खादिमं स्वादिमम् आहरतः सतः शरीरे वेदना प्रादुर्भूता-उज्ज्वला विपुला प्रगाढा कर्कशा कटुका परुषा निष्ठुरा चण्डा तीव्रा दुःखा दुर्गा दुरध्यासा पित्तज्वरपरिगतशरीरो दाहव्युत्क्रान्तश्चापि विहरति ॥ सू० १६३ ॥

पाणं-खाइमं-साइमं-आहारेमाणस्स समाणस्स सरीरंसि वेयणा पाउब्भूया, उज्जला-विउला-पगाढा-कक्कसा-कडुया-फरुसा-निठुरा-चंडा-तिव्वा दुक्खा दुग्गा-दुरहियासा-पित्तज्जरपरिगयसरीरे-दाहवक्कंते यावि विहरइ—" इसके बाद उस प्रदेशी राजा के शरीर में उस विषसंप्रयुक्त आहार के करने से वेदना उत्पन्न हो गई। यह वेदना उज्ज्वलथी दुःखदाई होने से सुख लेश से रहितथी-विपुलथी. सकल शरीर में व्याप्त होने से विस्तीर्ण थी, अत्यन्त-प्रगाढ थी, कर्कश-कठोर थी.। जैसे-कर्कशपाषाण का संघर्ष शरीर की सन्धियों को तोड देता है, उसी प्रकार इसे कर्कश कहा गया है. अप्रीति जनक होने से यह कटुक थी. मन में अति रूक्षता की जनक होने से दुर्भेद्य थी. चण्ड-रौद्र थी तीव्र-तीक्ष्ण थी. दुःखद स्वरूप होने से दुःख थी. चिकित्सा से भी दुर्गम्य होने के कारण दुर्गथी. दुस्सह होने से दुरध्यासथी। इस प्रकार की वेदनाउत्पन्न हो ने के कारण वह राजा पित्तज्वर से आक्रान्त शरीर वाला हो गया. और-समस्त शरीर भरमें उसको दाह पडने लगी. । टीकार्थ-स्पष्टहै-॥१६३॥

संजुत्तं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारेमाणस्स समाणस्स सरिरंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउला पगाढा कक्कसा— कडुया—फरुसा—निठुरा—चंडा तिव्वा—दुक्खा-दुग्गा—दुरहियासा—पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंते यावि विहरइ' त्यार-पछी ते प्रदेशी राजाना शरीरमा ते विष संप्रयुक्त आहार करवाथी वेदना उत्पन्न थई गई. आ वेदना ઉજ્જવળ હતી,દુઃખદ હોવાથી સુખ રહિત હતી, વિપુલ હતી, સમસ્ત શરીરમા વ્યાપ્ત હોવાથી વિસ્તીર્ણ હતી, પ્રગાઢ હતી, કર્કશ-કઠોર હતી જેમ કઠોર પથ્થરની રગડ શરીરના સંધિ ભાગોને તોડી નાખે છે, તેમ તે વેદના પણ આત્મ પ્રદેશોને તોડતી હતી એથી જ એને કર્કશ કહેવામા આવી છે અપ્રીતિજનક હોવાથી એ કટુક હતી, મનમા અતિ રૂક્ષતાજનક હોવાથી પરૂષ હતી, ર નિષ્ઠુર હતી, અશકય હતી, ચંડ રૌદ્ર તીવ્ર તીક્ષ્ણ હતી, દુખદ સ્વરૂપ હોવાથી દુઃખરૂપ હતી, ચિકિત્સાથી પણ દુર્ગમ્ય હતી એથી તે દુર્ગ હતી, દુસ્સહ હોવાથી દુરધ્યાસ હતી, આ જાતની વેદના ઉત્પન્ન થઈ હોવાથી તે રાજા પિત્તજવરા-કાન્ત શરીરવાળો થઈ ગયો. અને તેના આખા શરીરમાં બળતરા થવા માંડી.

ટીકાર્થ—સ્પષ્ટ જ છે. ॥ સૂ ૧૬૩ ॥

टीका—"तए णं सा" इत्यादि—ततः खलु सा सूर्यकान्ता देवी अन्यदा कदाचित्—कस्मिंश्चित् काले प्रदेशिनो राज्ञः अंतरम्—अवकाशं—षष्ठपारणावसर-मित्यर्थः, जानाति, अशन-पान-खादिम-सर्ववस्त्र-गन्ध-माल्यालङ्कारेषु—अशनादिसर्व-वस्तुपु विषप्रयोगं—विषसंयोगं, प्रयुनक्ति-करोति एवं कृत्वा स्नाताय—कृतस्नानाय, यावत्—सुखासनवरगताय—सुखदरूपश्रेष्ठासनोपविष्टाय प्रदेशिने राज्ञे तान् विषसंयुक्तान् अशनपान-खादिम स्वादिम-सर्ववस्त्र-गन्ध-माल्या-ऽलङ्कारान् निसृजति-ददाति। ततः तदनन्तरं खलु तस्य प्रदेशिनो राज्ञः तं विषसंयुक्तम् अशनं-पानं-खादिमं स्वादिममिति चतुर्विधाऽऽहारम् आहरतः गृह्णतः सतः शरीरे वेदना प्रादुर्भूता—समुत्पन्ना, सा कीदृशी? इत्याह—उज्ज्वला—दुःखदतया उग्रा सुखलेश-रहितेत्यर्थः, विपुला-सकलशरीरव्यापकत्वाद् विस्तीर्णा, अतएव प्रगाढा-अतिश-यिता, कर्कशा कठोरा, यथा कर्कशपाषाणसंघर्षः शरीरसन्धींस्त्रोटयति तथैवात्म प्रदेशांस्त्रोटयन्ती या वेदना जायते सा कर्कशेत्युच्यते, कटुका—अप्रीतिजनिका, परुषा मनसोऽतीव रूक्षत्वोत्पादिका निष्ठुरा—अशक्यप्रतीकारत्वेन दुर्भेद्या, अत एव चण्डा-रौद्रा, तीव्रा—तीक्ष्णा दुःखा-दुःखदस्वरूपा, दुर्गा—चिकित्सादुर्गम्या, दुर-ध्यासा—दुःसहा, एवम्भूता वेदना समुद्भूता, तेन कारणेन स राजा पित्तज्वर परिगतशरीरः—पित्तज्वरेण परिगतम्—आक्रान्तं शरीरं यस्य स तथा, अत एव दाहव्युत्क्रान्तः—दाहव्याप्तः सन् चापि विहरति—तिष्ठति। ॥ सू० १६३॥

मूलम्—तए णं से पएसी राया सूरियकंताए देवीए अन्नाणं संपलद्धं जाणित्ता सूरियकंताए देवीए मणसावि अप्पदुस्समाणे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, पोसहसालं पमज्जेइ, उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहेइ दब्भसंथारगं संथरेइ, दब्भसंथारगं दुरुहइ, पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—नमोत्थुणं अरहंताणं जाव संप-त्ताणं नमोत्थुणं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मो-वदेसगस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए. पासउ मे भगवं तत्थगए इहगयं-त्तिकट्टु वंदइ नमसइ, पुव्विंपि णं मए केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए थूलपाणाइवाए पच्चक्खाए जाव थूल-

परिग्गहे पच्चक्खाए तं इयाणिं पि णं तस्सेव भगवओ अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि, सव्वं असणं० चउव्विहंपि आहारं जावज्जीवाए पच्चक्खामि, जंपि य मे सरीरं इट्ठं जाव फुसंतुत्ति एवंपि य णं चरिमेहिं ऊसासनीसासेहिं वोसिरामि-त्ति कट्टू आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे उववायसभाए देवत्ताए उववन्ने । ॥सू० १६४॥

इति पएसिरायस्स वण्णणं समत्तं ।

छाया—ततः खलु प्रदेशी राजा सूर्यकान्ताया देव्या आत्मानं संप्रलब्धं ज्ञात्वा सूर्यकान्ताया देव्या मनसाऽपि अप्रद्विषन् यत्रैव पोषधशाला तत्रैव उपागच्छति पोषधशालां प्रमार्जयति, उच्चारप्रस्रवणभूमिं प्रतिलेखयति, दर्भसंस्तारकं संस्तृणाति, दर्भसंस्तारकम् दुरोहति पौरस्त्याभिमुखः संपल्यङ्कनिषण्णः करतलपरिगृहीतं

"तए णं से पएसी राया" इत्यादि ।

मूलार्थ—"तए णं-" इसके बाद "से पएसी राया-" वह प्रदेशी राजा "सूरियकंताए-देवीए अत्ताणं संपलद्धं, जाणित्ता—" सूर्यकान्ता देवी की यह उत्पात (करामत) है इस प्रकार जान कर भी—"सूरियकंताए देवीए मणसा वि अप्पदुस्समाणे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ—" उस सूर्यकान्ता देवी के प्रति मनसे भी द्वेषभाव नहीं करता हुवा जहां पौषधशाला थी वहां पर गया—"पोसहसालं पमज्जेइ-" वहां जा करके उसने पोषधशाला की प्रमार्जना की "उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ-" उच्चार प्रस्रवण भूमि की प्रतिलेखना

"तए णं से पएसी राया" इत्यादि

મૂલાર્થ - 'तएणं' ત્યાર પછી 'से पएसी राया' તે પ્રદેશી રાજા 'सूरियकंताए देवीए अत्ताणं संपलद्धं जाणित्ता'' સૂર્યકાન્તા દેવીએ આ બધુ કર્યું છે આમ જાણવા છતાંએ "सूरियकंताए देवीए मणसा वि अप्पदुस्समाणे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ" તે સૂર્ય કાંતા દેવી પ્રત્યે મનથી પણ દ્વેષભાવ ન કરતા જ્યાં પૌષધશાળા હતી ત્યાં ગયો. (पोसहसालं पमज्जेइ) ત્યાં જઈને તેણે પૌષધશાળાની પ્રમાર્જના કરી. "उच्चारपासवण भूमिं पडिलेहेइ "ઉચ્ચાર-પ્રસવણ ભૂમિની

शिर आवर्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-नमोऽस्तु खलु अर्हद्भयः यावत् संप्राप्तेभ्यः नमोऽस्तु खलु केशिने कुमारश्रमणाय मम धर्माऽऽचार्याय धर्मोपदेशकाय, वन्दे खलु भगवन्तं तत्रगतम् इहगतः, पश्यतु मां भगवान् तत्रगतः इह गतम्' इति कृत्वा वन्दते नमस्यति, पूर्वमपि खलु मया केशिनः कुमारश्रमणस्यान्तिके स्थूलप्राणातिपातः प्रत्याख्यातः यावत् स्थूलपरिग्रहः प्रत्याख्यातः,

की-"दब्भसंथारगं संथरेइ-" और फिर दर्भ का संथारा बिछाया "दब्भसंथारगं दुरूहइ-" उसे बिछा कर वह उस पर बैठ गया. "पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने-" वहां आरूढ होकर वह पूर्व दिशा की ओर मुह करके पर्यङ्कासन से बैठ गया. "करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अजलिं कट्टु एवं वयासी-' और दोनों हाथों की अंजली बनाकर एवं-उसे मस्तक पर घुमाकर इस प्रकार से कहने लगा. "नमो थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमो थुणं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स-" अर्हन्त भगवन्तों के लिये नमस्कार हो, मेरे धर्मोपदेशक धर्माचार्य केशीकुमार श्रमण के लिये नमस्कार हो, "वंदामि णं भगवंतं तत्थ य इहगए-" यहां रहा हुवा मैं वहां पर रहे हुवे भगवान् को वन्दना करता हूं, "-पासउ मे भगवं तत्थगए इहगय त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ-" वहां पर रहे हुवे वे भगवान् यहां रहे हुवे मुझे देखे-इस प्रकार कह कर उस प्रदेशी राजाने उनकी वन्दना की नमस्कार किया. 'पुव्विं पि णं मए केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए थूलपाणाइवाए पच्चक्खाए, जाव थूलपरिग्गहे पच्चक्खाए" पहलेभी मैंने केशी

પ્રતિલેખના કરી "दब्भसंथारगं संथरेइ" અને પછી દર્ભનું આસન ત્યાં પાથર્યું. "दब्भसंथारगं दुरूहइ" તેને પાથરીને તે તના પર ઉભો થઈ ગયો. "पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने" ત્યાં આરૂઢ થઈને તે પૂર્વ દિશા તરફ મુખ કરીને પર્યંકાસનથી બેસી ગયો. 'करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी' અને બન્ને હાથોની અજંલિ બનાવીને અને તેને મસ્તક પર ફેરવી તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો. "नमोत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोत्थुणं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स" અર્હંત ભગવતને મારા નમસ્કાર છે મારા ધર્મોપદેશક ધર્માચાર્ય કેશીકુમાર શ્રમણને મારા નમસ્કાર છે "वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए" અહીં રહીને હું ત્યાં વર્તમાન ભગવાનને વંદન કરું છું. 'पासउ मे भगवं तत्थगए इहगय त्ति कट्टु वंदइ, नमंसइ" ત્યાં રહેતા ભગવાન મને અહીં જુએ આ પ્રમાણે કરીને તે પ્રદેશી રાજાએ તેમને વંદન કર્યાં નમસ્કાર કર્યા "पुव्विं पि णं मए केसिस्स कुमारसम-णस्स अंतिए थूलपाणाइवाए पच्चक्खाए, जाव थूल परिग्गहे पच्चक्खाए"

तद् इदानीमपि खलु तस्यैव भगवतः अन्तिके सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि यावत् सर्वं परिग्रहम् प्रत्याख्यामि, सर्वं क्रोध यावत् मिथ्यादर्शनशल्यं प्रत्याख्यामि अकरणीयं योगं प्रत्याख्यामि, सर्वम् अशन० चतुर्विधमपि आहार यावज्जीवं प्रत्याख्यामि, यद पि च मे शरीरम् इष्टं यावत् स्पृशन्तु इति एतदपि च खलु चरमैः उच्छ्वासनिःश्वासैः व्युत्सृजामि, इति कृत्वा आलोचितप्रतिक्रान्तः समाधि-

कुमारश्रमण के पास स्थूल प्राणातिपातका यावत् स्थूल परिग्रह का प्रत्याख्यान किया है–'तं इयाणिं पि णं तस्सेव भगवओ अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि–" अब भी मैं उन्ही भगवान् के पास उसी सब प्राणातिपात का प्रत्याख्यान करता हूं, "जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि–" यावत् समस्त परिग्रह का प्रत्याख्यान करता हूं। सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि–" समस्त क्रोध का प्रत्याख्यान करता हू. यावत् मिथ्यादर्शन शल्य का प्रत्याख्यान करता हूं। "अकरणिज्जं जोगे पच्चक्खामि–" अकरणीय योग (अशुभ योगका) का प्रत्याख्यान करता हूं, "सव्वं असणं० चउव्विहं वि आहार जाव ज्जीवाए पच्चक्खामि–" अशन–पान आदि रूप चार प्रकार के आहार का यावज्जीव त्याग करता हूं "जं पिय मे सरीरं इट्ठं जाव फुसंतु त्ति एवं पि य णं चरिमेहिं उसासनीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु–" मैने पहले जिस इष्टादि विशेषण विशिष्ट शरीर की रक्षा की इस अभिप्राय से कि–इसे शीत उष्ण आदि परिग्रह तथा-सर्पादिकृत उपसर्ग आदिकी बाधा न पहुंचाये–अब मैं उसी शरीर का अन्तिम उच्छ्वास–निश्वासों तक परित्याग करता हू. इस प्रकार विचार करके–"आलो-

પહેલાં પણ મેં કેશીકુમારશ્રમણની પાસે સ્થૂલ પ્રાણાતિપાતનું યાવત સ્થૂલ પરિગ્રહનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું હતું "तं इयाणिं पि णं तस्सेव भगवओ अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि' હવે પણ હુ તે જ ભગવાનની પાસે તેજ સમસ્ત પ્રાણુપાતિનું પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છુ. "जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि" યાવત સમસ્ત પરિગ્રહનું પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છુ "सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि" સમસ્ત ક્રોધનું પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છું યાવત મિથ્યાદર્શન શલ્યનું પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છુ. "अकरणिज्जं जोगे पच्चक्खामि" અકરણીય યોગનું પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છુ "सव्वं असणं० चउव्विहं वि आहारं जावज्जीवाए पच्चक्खामि" અશન-પાન વગેરે રૂપ ચાર પ્રકારના આહારનો યાવત જીવન ત્યાગ કરૂં છું "जं पि य मे सरीरं इट्ठं जाव फुसंतु त्ति एवं पि य णं चरिमेहिं उसासनीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु" મેં પહેલા જે ઇષ્ટ વગેરે વિશેષણ વિશિષ્ટ શરીરની રક્ષા કરી તે આ પ્રયોજનથી કે આને શીતઉષ્ણ વગેરે પરીષહો તથા સર્પાદિકૃત ઉપસર્ગ વગેરે બાધા પહોંચાડે નહિ હવે હુ તે જ શરીરનો અંતિમ ઉચ્છવાસ નિઃશ્વાસો સુધી પરિત્યાગ કરૂં છુ. આ

प्राप्तः कालमासे कालं कृत्वा सौधर्मे कल्पे सूर्याभे विमाने उपपातसभायां देवतया उपपन्नः ॥ सू० १६४ ॥

इति प्रदेशिराजस्य वर्णनं समाप्तम् ।

टीका—"तए णं से पएसी" इत्यादि—ततःखलु स प्रदेशी राजा सूर्यकान्ताया देव्या-स्वराज्या आत्मानं-स्व संप्रलब्धं—विषप्रदानेन वञ्चितं सूर्यकान्तया मारणार्थं महाविषं दत्तमिति ज्ञात्वा सूर्यकान्ताया देव्या मनसाऽपि—मनोमात्रेणापि अप्रद्विषन्—द्वेषमकुर्वन् यत्रैव पौषधशाला तत्रैवोपागच्छति, पौषधशालां प्रमार्जयति, उच्चारप्रस्रवणभूमिं प्रतिलेखयति, दर्भसंस्तारकं संस्तृणाति दर्भसंस्तारकं दूरोहति-अधिरोहति दर्भसंस्तारकोपर्युपविशतीत्यर्थः, पौरस्त्याभिमुखः—पूर्वदिगभि-

इयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे उववायसभाए देवत्ताए उववन्ने—" उसने पहले गुरू को सन्मुख करके जिन अतिचारों का प्रत्याख्यान किया था अब उन्हें पुनः अकरण विषय से अतिक्रान्त करके, अर्थात्-आलोचनापूर्वक मिथ्यादुष्कृत देकरके चित्त की समाधि प्राप्त करता हू. और—इसी स्थिति में वह कालमास में काल करके सूर्याभविमान में उपपात सभा में देव पर्याय से उत्पन्न हो गया. ॥

टीकार्थ—प्रदेशी राजाने जब जाना कि-मेरी रानी सूर्यकान्ताने ही मुझे मारने के लिये विष प्रदान कर इस स्थिति पर पहुंचाने का निमित्त उपस्थित किया है तो वह इस हालत में भी उसके प्रति द्वेषभाव से रहित बना रहकर जहां पौषधशाला थी वहां पर चला गया. वहां जाकर उसने पौषधशाला की प्रमार्जना की उच्चार प्रस्रवण भूमि की प्रतिलेखना की. और—दर्भ का संस्तारक बिछाया. बिछाकर फिर वह उसपर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके

પ્રમાણે વિચાર કરીને 'आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे उववायसभाए देवत्ताए उववन्ने' તેણે પહેલા ગુરુની સામે જે અતિચારોનુ પ્રત્યાખ્યાન કર્યું હતુ હવે તેમને ફરી અકરણ વિષયથી અતિક્રાંત કરીને-એટલે કે 'આલોચનાપૂર્વક મિથ્યા દુષ્કૃત આપીને ચિત્તની સમાધિ પ્રાપ્ત કરૂ છુ' અને આવી સ્થિતિમા તે કાલમાસમા કાલ કરીને સૂર્યાભવિમાનમા ઉપપાત સભામા દેવ પર્યાયથી જન્મ પામ્યો.

ટીકાર્થ—પ્રદેશી રાજાએ જ્યારે આ વાત જાણી કે મારી રાણી સૂર્યકાન્તાએજ મને મારવા માટે વિષ આપ્યુ છે અને મારી આ દશા કરી છે તો તે પરિસ્થિતિમા પણ સૂર્યકાન્તા પ્રત્યે અદ્વેષભાવથી વ્યવહાર કરીને જ્યા પૌષધશાળા હતી ત્યા ગયો. ત્યા જઈને તેણે પૌષધશાળાની પ્રમાર્જના કરી ઉચ્ચારપ્રસ્રવણ ભૂમિની પ્રતિલેખના કરી અને દર્ભસંસ્તારક પાથર્યો ત્યારપછી તે તેની ઉપર પૂર્વ દિશા તરફ

मुखः स पर्यङ्क निषण्णः—पर्यङ्कासनेन समुपविष्टः सन् करतलपरिगृहीतं शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्—नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यः यावत् सम्प्राप्तेभ्यः। अत्र यावत् शब्देन नमोऽत्थु णं" पाठः सर्वोऽपि वाच्यः। तथा नमोऽस्तु खलु केशिने कुमारश्रमणाय मम धर्माचार्याय धर्मोपदेशकाय, वन्दे खलु भगवन्तं तत्र गतम् इह गतः—अत्र स्थितोऽहम्, पश्यतु मे—मम मामित्यर्थः, भगवान् केशि-कुमारश्रमणस्तत्रगत इहगतम्, इति कृत्वा वन्दते नमस्यति, कथयति—पूर्वमपि खलु मया केशिनः कुमारश्रमणस्य अन्तिके—समीपे स्थूलप्राणातिपातः प्रत्याख्यातः? यावत्—यावच्छब्देन "स्थूलमृषावादः प्रत्याख्यातः२ थूलादत्ताऽऽदानं प्रत्याख्यातम् ३, इति संग्राह्यम, स्थूलपरिग्रहः प्रत्याख्यातः४, तद् इदानीमपि खलु तस्यैव

पल्यङ्कासन से बैठ गया. दोनों हाथो को जोड़ा-और—आवर्त कर इस प्रकार कहने लगा. अर्हन्तों को नमस्कार हो. यहां—यावत् शब्द से "नमोत्थुणं" पाठ पूरा उसने पढा यह समझ लेना चाहिये। इस प्रकार कहते कहते उसने ऐसा भी कहा कि—मुझे धर्म का उपदेश देने वाले जो मेरे धर्माचार्य केशी कुमारश्रमण हैं- उन्हें भी मेरा नमस्कार हो, वे यद्यपि—यहां पर मेरे पास वर्तमान में नहीं हैं अतः जहां पर भी वे विराजमान हों मैं यहां रहा हुवा उन्हें नमस्कार करता हूं. वहां रहे हुवे वे भगवान् केशीकुमार श्रमण यहां रहे हुवे मुझे देखे इस प्रकार कहकर उसने उनको वन्दना की—नमस्कार किया, वन्दना—नमस्कार कर फिर वह इस प्रकार से कहने लगा मैंने पहले भी केशीकुमार श्रमण के समीप स्थूल प्राणातिपात का प्रत्याख्यान किया है-यावत् स्थूल मृषावाद का प्रत्याख्यान किया है. स्थूल अदत्तादान का प्रत्याख्यान किया है. और—स्थूल परिग्रह का प्रत्याख्यान किया

મુખ કરીને પર્યંકાસનની મુદ્રામા બેસી ગયા ત્યાર બાદ તેણે બન્ને હાથોની અંજલિ બનાવી અને તેને મસ્તક પર ફેરવીને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો. અર્હંતોને નમસ્કાર છે, અહી યાવત્ પદથી "નમોત્થુણં" પૂરોપાઠ તે બોલ્યો એ વાત સમજવી જોઈએ. આ પ્રમાણે કહેતાં કહેતા તેણે આ પ્રમાણે કહ્યુ કે મને ધર્મોપદેશ આપનાર મારા ધર્માચાર્ય કેશીકુમાર શ્રમણને મારા નમસ્કાર છે તેઓ અહીં હમણા વિદ્યમાન નથી છતાંએ તેઓશ્રી જ્યા વિરાજતા હોય હું અહી રહીને તેમને નમસ્કાર કરૂ છું. ત્યા રહેતા તે ભગવાન કેશીકુમારશ્રમણ અહીં રહેલા મને જુવે. આ પ્રમાણે કહીને તેણે તેમને વદન કરી નમસ્કાર કર્યા. વદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તે આમ કહેવા લાગ્યો કે મેં પહેલાં પણ કેશીકુમારશ્રમણની પાસે સ્થૂલ પ્રાણાતિપાતનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું છે યાવત સ્થૂલ મૃષાવાદનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું છે, સ્થૂલ અદત્તાદાનનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું છે અને સ્થૂલ પરિગ્રહનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું છે. હવે હુ તેજ કેશી

भगवतः-केशिकुमारश्रमणस्यैव अन्तिके तदाज्ञावर्तित्वेन तस्मिन् भगवति विद्यमाने सति समीपे इव समीपे सम्प्रति सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि यावत्-यावच्छब्देन एवं मृषावादं प्रत्याख्यामि, सर्वमदत्तादानं प्रत्याख्यामि, इति सङ्ग्राह्यम्, सर्वं परिग्रहं प्रत्याख्यामि तथा क्रोधं यावत् यावच्छब्देन-मान-मायां लोभं रागं द्वेषं कलहमभ्याख्यानं पैशुन्यं परपरिवादं रत्यरती मायामृषा' इति सङ्ग्राह्यम्. मिथ्यादर्शनशल्यं प्रत्याख्यामि, सर्वम् अशनमिति-अशनं खाद्यं स्वाद्यं चतुर्विधमाहारं यावज्जीवं-प्राणधारणपर्यन्तं प्रत्याख्यामि यदपि च मे शरीरम् इष्टं यावत् स्पृशतु अत्र यावच्छब्देन कान्तत्वादिविशेषणविशिष्टं शरीरं शीतोष्णादयः परीषहाः सर्पादिकृता उपसर्गाः कर्कशकठोरादयः स्पर्शाश्च मा स्पृशतु इत्यन्तं संग्रा-

है. अब मैं उसी केशीकुमारश्रमण के पास इनकी आज्ञा के वशवर्ती होने के कारण उन्हें अपने समीप रहा हुवा जैसा मानकर समस्त प्राणातिपात का प्रत्याख्यान करता हूं. समस्त मृषावाद का प्रत्याख्यान करता हूं और समस्त अदत्तादान का प्रत्याख्यान करता हूं और समस्त परिग्रह का प्रत्याख्यान करता हूं. । तथा क्रोध को यावत् मान माया लोभ का राग-द्वेष, कलह का प्रत्याख्यान पैशुन्य परिवाद अरति माया मृषा का, एवं-मिथ्यादर्शनशल्य का प्रत्याख्यान करता हूं। तथा—समस्त अशनका पानका खाद्यका स्वाद्यका, यावज्जीव-प्राणधारण पर्यन्त परित्याग करता हूं, तथा—कान्तत्वादि विशेषणों से युक्त जिस शरीर की मैंने शीतोष्ण आदिपरीषहों से सर्पादिकृत उपसर्गों से एवं—कर्कश कठोर आदि स्पर्शों से ये सब इसे स्पर्श न करे इस ख्याल से रक्षा की इसका भी मैं अब अन्तिम श्वासोच्छ्वास तक यावज्जीव तक परित्याग करता हूं । तात्पर्य इसका इस प्रकार से है—मैंने इस शरीर

કુમારશ્રમણની પાસે તેમની આજ્ઞાને વશ હોવાને લીધે તેઓ મારી પાસે જ છે એમ માનીને સમસ્ત પ્રાણાતિપાતનુ પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છુ. સમસ્ત મૃષાવાદનું પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છુ સમસ્ત અદત્તાદાનનુ પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છું અને સમસ્ત પરિગ્રહનુ પ્રત્યાખ્યાન કરૂં છુ તેમજ ક્રોધનુ યાવત્ માન માયા લોભ રાગ દ્વેષ કલહનુ પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છું પૈશુન્ય પરિવાદ અરતિ માયા મૃષા અને મિથ્યાદર્શનશલ્યનુ પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છુ તેમજ સમસ્ત અશનનું પાનનુ ખાદ્યનુ સ્વાદ્યનુ યાવત્ જીવન પ્રાણ ધારણ પર્યન્ત વિસર્જન કરૂ છું. તેમજ કાન્ત ઇત્યાદિ વિશેષણોથી યુક્ત જે શરીરની મેં શીતોષ્ણ વગેરે પરીષહોથી સર્પાદિકૃત ઉપસર્ગોથી અને કર્કશ કઠોર વગેરે સ્પર્શોથી-એઓ આ શરીરને સ્પર્શે નહિ એ હેતુથી રક્ષા કરી છે તેનો પણ હું હવે અંતિમ શ્વાસોચ્છ્વાસ સુધી પરિત્યાગ કરૂં છું તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે

ह्यम, तथाहि—कान्तं, प्रियं मनोज्ञं, मनआमं, धैर्य—धैर्यस्वरूपं वैश्वसिकं विश्वास योग्यं, संमतम्, अनुमतं बहुमतं, भाण्डकरण्डकसमानं, रत्नकरण्डकभूतमिदं शरीर मा खलु शीतं मा खलु उष्णं, मा खलु क्षुधा मा खलु पिपासा, मा खलु व्यालाः—सर्पाः, मा खलु चोराः, मा खलु दंशाः, मा खलु मशकाः, मा खलु वातिकः-वातसम्बन्धी रोगातङ्कः एवं पैत्तिकः श्लैष्मिकः सान्निपातिकः इत्यादि का विविधा रोगातङ्काः, तत्र रोगाः—ज्वरादयः, आतङ्काः—सद्योघातिशूलादयः, तथा परीषहाः—क्षुधादयः, उपसर्गाः सर्पादिकृता उपद्रवाः, स्पर्शाः—कर्कशकठोरा दयः, मा स्पृशन्तु—मे शरीरे मा संलग्ना भवन्तु इति—इति बुद्ध्या संरक्षितम् एतदपि च खलु शरीरं चरमैः—अन्तिमैः उच्छ्वासनिःश्वासैः व्युत्सृजामि—त्यजामि,

को कान्त प्रिय-मनोज्ञ मन आम धैर्यस्वरूप विश्वासयोग्य, संमत-अनुमान, तथा—बहुमत माना एवं रत्न रखने के पिटारे के जैसा बहुमूल्य माना। अतः—इस की तरह से मैंने संभाल रक्खी इसे शीत से बाधा न हो जावे, उष्णसे संताप न हो जावे, क्षुधा से कष्ट न हो जावे. पिपासा से यह आकुलित न हो जावे. सर्पादि कृत उपद्रवों से यह पीडित न हो जावे. चोरों द्वारा इसे आपत्ति में पडना न पडे. दंश—मशक इसे काट न लेवे. वात सम्बन्धी रोगातङ्को—ज्वरादि रोगो सद्योघाति शूलादिकों से यह दुःखित न हो जावे पैत्तिक-श्लैष्मिक—सान्निपातिक रोगातङ्क इसे मलिन न करदे कर्कश—कठोर आदि स्पर्श करके इसके सौन्दर्य का अपहरण न करे, इस प्रकार से मैंने इसकी हरतरह के खूब रक्षाकीथी, परन्तु—अब मैं ऐसे प्रिय इस शरीर के साथ अपना सम्बन्ध जीवन के अन्तिमक्षण तक यावज्जीव तक विच्छेद

કે મે આ શરીરને કાંત, પ્રિય, મનોજ્ઞ, મન આમ, ધૈર્યસ્વરૂપ, વિશ્વાસ યોગ્ય, સંમત—અનુત્તમ તેમજ બહુમત જાણ્યો અને રત્ન મૂકવાની પેટીની જેમ બહુ મૂલ્યવાન માન્યુ એથી જ આની મે બધી રીતે સંભાળ રાખી. આને ઠંડીથી પીડા ન થાય, ઉષ્ણતાથી સંતાપ ન થાય, ક્ષુધાથી કષ્ટ ન થાય, તરસથી વ્યાકુળ ન થાય સર્પાદિકૃત ઉપદ્રવોથી આ પીડિત ન થાય ચોરો વડે આ આફતમા ન ફસાઈ પડે, દંશ-મશક આને કષ્ટ ન આપે વાત સંબંધી રોગાતંકો—જ્વરાદિ રોગો, સદ્યોઘાતિ શૂલાદિકોથી આ શરીર દુઃખિત ન થાય, પૈતિક શ્લૈષ્મિક, સાન્નિપાતિક રોગાતંક આ શરીરને મલિન ન કરે, કર્કશ કઠોર વગેરેના સ્પર્શથી એના સૌન્દર્યનું અપહરણ ન કરે આ પ્રમાણે મે બધી રીતે આ શરીરની ખૂબ રક્ષા કરી હતી પણ હવે હું આ એવા પ્રિય શરીરની સાથે પોતાનો સંબંધ જીવનના અંતિમ ક્ષણ સુધી છોડી દઉં છું આમ વિચાર કરીને તે પ્રદેશી

इति कृत्वा—इत्यालोच्य स प्रदेशी राजा आलोचितप्रतिक्रान्तः—आलोचिताः—पूर्वं गुरुमभिमुखीकृत्य प्रकाशिताः अतिचाराः ते पश्चात् प्रतिक्रान्ताः—पुनरकरणविषयीकृता येनासौ तथा—आलोचनापूर्वकप्रदत्तमिथ्यादुष्कृत इत्यर्थः समाधि-प्राप्तचित्त समाधिकः सन् कालमासे—कालावसरे कालं कृत्वा—मृत्युं प्राप्य सूर्याभे विमाने उपपातसभायां देवतया—देवत्वेन उपपन्नः—समुत्पन्नः । ॥सू० १६४॥

इति प्रदेशिराजस्य वर्णनं समाप्तम् ॥

अथ प्रदेशिराजजीवस्य सूर्याभदेवस्याऽऽगामिभववर्णनमाह—

मूलम्—तए णं सूरियाभे देवे अहुणोववन्नमए चेव समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छइ, तं जहा—आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणपाणपज्जत्तीए भासमणपज्जत्तीए, तं एवं खलु भो ! सुरियाभेणं देवेणं दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए । ॥सू० १६५॥

छाया—ततः खलु स सूर्याभो देवः अधुनोपपन्नक एव सन् पञ्चविधया पर्याप्त्या पर्याप्तिभावं गच्छति, तद्यथा आहारपर्याप्त्या१, शरीरपर्याप्त्या२, इन्द्रियपर्याप्त्या३, आन-

---

करता हूं. इस तरह विचार कर वह प्रदेशी राजा आलोचित प्रतिक्रान्त होकर समाधि में तल्लीन हो गया. और—काल मास मे मरण प्राप्त कर सूर्याभविमान में—उपपात सभा में देव पर्याय से उत्पन्न हो गया. ॥सू० १६४॥

(प्रदेशी राजा वर्णनसमाप्त.)

"प्रदेशी राजा के जीव-सूर्याभ देव के आगामी भवका वर्णन

"तए णं से सूरियाभे देवे अहुणोववन्नए—" इत्यादि

मूलार्थ—"तए णं सूरियाभे देवे—" इसकेबाद तत्काल उत्पन्न हुआ ही वह सूर्याभदेव पाच प्रकार की पर्याप्तियों से पर्याप्त हो गया. "तं जहा—आहार

રાજા આલોચિત પ્રતિક્રાંત થઈને સમાધિમાં તલ્લીન થઈ ગયો અને કાલ માસમાં મરણ પામીને સૂર્યાભવિમાનમાં ઉપપાત સભામાં દેવ પર્યાયથી ઉત્પન્ન થયો. ॥સૂ ૧૬૪॥

પ્રદેશી રાજાનું વર્ણન સમાપ્ત

"પ્રદેશી રાજાના જીવ—સૂર્યાભદેવનું આગામી ભવનું વર્ણન"

"तएणं से सूरियाभे देवे अहुणोववन्नए" इत्यादि.

મૂલાર્થ—"तएणं सूरियाभे देवे" ત્યાર પછી ઉત્પન્ન થતાં જ તે સૂર્યાભદેવ પાંચ પ્રકારની પર્યાપ્તિઓથી યુક્ત થઈ ગયો "तं जहा—आहारपज्जत्तीए, सरीर

प्राणपर्याप्त्या४, भाषामनःपर्याप्त्या ५, तद् एवं खलु भो ? सूर्याभेन देवेन दिव्या देवर्द्धिः, दिव्या देवद्युतिः दिव्यो देवानुभावः लब्धः प्राप्तः अभिसमन्वागतः ॥ सू० १६५॥

टीका—"तए णं से सूरियाभे देवे" इत्यादि—ततः खलु स सूर्याभो देवः अधुनोपपन्नक एव—तत्कालोत्पन्नक एव सन् पञ्चविधया पर्याप्त्या पर्याप्तिभाव गच्छति. पर्याप्तिपञ्चकशब्दार्थः पूर्वं त्र्यशीतितमसूत्रे गतः । एवम् अनेन कारणेन प्रदेशिराजभवे आस्तिकभावपूर्वकश्रावकधर्माराधनरूपेण आलोचितप्रतिक्रान्तत्वसमाधिमरणादिरूपेण च कारणेन भो—हे गौतम ! सूर्याभदेवेन इयं दिव्या देवर्द्धिः—विमानादिरूपा. दिव्या देवद्युतिः—शरीराभरणादिकान्तिः, दिव्यो देवानुभावः—देवप्रभावः, लब्धः- उपार्जितः, प्राप्तः—स्वाधीनीभूतः, अभिसमन्वागतः- भोग्यत्वेन सम्यगभिमुखमागतः ॥सू० १६५॥

पज्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए. इंदियपज्जत्तीए, आणपाणपज्जत्तीए, भासमणपज्जत्तीए—" वे पांच पर्याप्ति इस प्रकार से हैं—आहारपर्याप्ति-शरीरपर्याप्ति-इन्द्रियपर्याप्ति-श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति और-भाषा मनःपर्याप्ति, "तं एवं खलु भो ? सूरियाभेणं देवेणं दिव्वा देविड्ढी-दिव्वा देवजुई-दिव्वे देवाणुभावे-लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए-" इस तरह से इस सूर्याभदेवने प्रदेशी राजा के भवमें अन्तिम भवपूर्वक श्रावक धर्म की आराधना की थी. फिर-आलोचित प्रतिक्रान्त होकर यह समाधि प्राप्त हुआ था. इन्ही सब कारणों से इसने सूर्याभदेव के पर्याय में यहदिव्यदेवर्द्धि-विमानादि-दिव्य देवद्युति-शरीराभरणादि कान्ति और दिव्यदेवानुभाव-देवप्रभाव उपार्जित किया है प्राप्त किया है. अपने अधीन किया है. और उसे योग्यरूप होने के कारण अच्छी तरह से उसे भोगा है—

टीकार्थ—स्पष्ट है. पांच प्रकार की पर्याप्तियों का स्वरूप पहिले ८३-वें सूत्रमें प्रगट किया गया है ॥सू० १६५॥

पज्जत्तीए. इंदियपज्जत्तीए, आणपाण पज्जत्तीए, भासमणपज्जत्तीए" ते पांच पर्याप्तिओ आ प्रमाणे छे-आहार पर्याप्ति, शरीर पर्याप्ति, ईन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति अने भाषा मनः पर्याप्ति "तं एवं खलु भो ! सूरियाभेणं देवेणं दिव्वा देविड्ढी—दिव्वा देवजुई—दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए" आ प्रमाणे ते सूर्याभदेवे प्रदेशी राजाना भवमां आस्तिक भावपूर्वक श्रावक धर्मनी आराधना करी हती अने पछी आलोचित प्रतिक्रांत थईने ते समाधि प्राप्त थयो हतो. आ बधा कारणोथी तेणे सूर्याभदेवना पर्यायमां दिव्य देवर्द्धि विमानादि दिव्यदेवद्युति शरीराभरणादि कांति अने दिव्य देवानुभाव देवप्रभाव उपार्जित कर्यां छे, मेळव्या छे. स्वाधीन बनाव्या छे. अने तेने भोग्यरूप होवाथी सारी रीते तेनो उपभोग कर्यो छे.

टीकार्थ स्पष्ट छे पांच प्रकारनी पर्याप्तिओनुं स्वरूप पहेलां ८३ मा सूत्रमां प्रकट करवामां आव्युं छे. ॥१६५॥

मूलम्—सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । से णं भंते ! सूरियाभे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवंति तं जहा—अड्ढाइ दित्ताइ विउलाइ वित्थिण्णविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइं बहुधणबहुजायरूवरययाइं आओगपओगसंपउत्ताइ विच्छड्डियपउरभत्तपाणाइ बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूयाइ बहुजणस्स अपरिभूयाइ, तत्थ अन्नयरम्मि कुलम्मि पुत्तत्ताए पच्चायाइस्सइ ॥ सू० १६६ ॥

छाया—सूर्याभस्य खलु भदन्त ! देवस्य कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! चत्वारि पल्योपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता । स खलु भदन्त ! सूर्याभो देव तस्माद्देवलोकाद् आयुःक्षयेण भवक्षयेण स्थितिक्षयेण अनन्तरं चयं त्यक्त्वा कुत्र

सूरियाभस्स णं भंते ? देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता—" इत्यादि

मूलार्थ—प्रश्न—"सूरियाभस्स णं भंते ? देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता—" हे भदन्त ? सूर्याभदेव की स्थिति कितनी कही गई है—? उत्तर—"गोयमा ? चत्तारि पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता—" हे गौतम ? चार पल्योपम की सूर्याभदेव की स्थिति कही गई है। प्रश्न—"से ण भंते ? सूर्याभ देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ कहिं उववज्जिहिइ—" हे भदन्त ? वह सूर्याभ देव उस देवलोकसे आयु क्षय-

---

"सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" इत्यादि.

मूलार्थ—प्रश्न "सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता" हे भदन्त ! सूर्याभदेवनी स्थिति केटली कहेवामां आवी छे ? उत्तर—"गोयमा ? चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता—" हे गौतम ! सूर्याभदेवनी स्थिति चार पल्योपम जेटली कहेवामां आवी छे प्रश्न—"से ण भंते ! सूरियाभे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ कहिं उववज्जिहिइ—" हे भदन्त ! ते सूर्याभदेव ते देवलोकथी आयुक्षय-भवक्षय

गमिष्यति ? कुत्रोत्पत्स्यते ? महाविदेहे वर्षे यानि इमानि कुलानि भवन्ति. तद्यथा-आढ्यानि दीप्तानि विपुलानि विस्तीर्णविपुलभवनशयनासनयानवाहनानि बहुधन-बहुजातरूपरजतानि आयोगप्रयोगसंप्रयुक्तानि विच्छर्दितप्रचुरभक्तपानानि बहुदासीदासगोमहिषगवेलकप्रभूतानि बहुजनस्य अपरिभूतानि. तत्र अन्य-मस्मिन् कुले पुत्रतया यास्यति ॥ सू० १६६ ॥

भवक्षय, एवं-स्थितिक्षय के बाद अनन्तर देव शरीर को छोडकर कहां जावेगा-? कहां उत्पन्न होवेगा-? उत्तर-"गोयमा-! महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवंति, तं जहा-अड्ढाइं दित्ताइं विउलाहिं विच्छिन्नविउलभवणसयणासणजाणवाहणाइं बहुधणबहुजायरूवरययाइं-" हे गौतम-? महाविदेह क्षेत्र में जो ये कुल हैं, कि जो-आढ्य हैं-दीप्त हैं-विपुल हैं, विस्तीर्ण-विपुल भवनवाले हैं विस्तीर्ण विपुलशयनासनवाले हैं विस्तीर्ण विपुल यान-वाहनवाले है, बहुधनवाले हैं बहुतर जातरूपवाले हैं बहुरजतवाले हैं 'आओगपओगसंपउत्ताइं विच्छड्डियपउरभत्तपाणाइं बहु दासीदास गो महिस गवेलगप्पभूयाइं', बहुजणस्स अपरिभूयाइं-" आयोग प्रयोग जिन से व्याप्त होते रहते हैं, दीनजनों के लिये जहां से प्रचुर मात्रा में भक्तपान प्राप्त होता है, जिन के पास दासी-दास अनेक संख्या में सेवा करने के लिये उपस्थित रहता है, प्रचुर मात्रा में जहां गो-महिष, एवं-अजा मेष आदि पशु कायम बने रहते हैं, तथा-कोईभी जन जिनका तिरस्कार नहीं कर सकता है, "तत्थ अन्नयरंसि कुलम्मि पुत्तताए पच्चायाइस्सइ-" उन कुलों में से किसी एक कुल में पुत्ररूप से उत्पन्न होगा. ॥

અને સ્થિતિક્ષય પછી દેવ શરીરને ત્યજીને કયાં જશે ? કયાં ઉત્પન્ન થશે ? ઉત્તર-"गोयमा ! महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवंति, तं जहा-अड्ढाइं दित्ताइं विउलाहिं वित्थिन्न विउलभवणसयणासणजाणवाहणाइं बहुधण बहुजायरूव रययाइं" હે ગૌતમ ! મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાં જે કુલો છે-જે આઢય છે, દીપ્ત છે, વિપુલ છે, વિસ્તીર્ણ ભવનોવાળા છે, વિસ્તીર્ણ વિપુલ શયનાસનવાળાઓ છે, વિસ્તીર્ણ વિપુલ યાન-વાહન વાળાઓ છે, બહુધન સંપન્ન છે, બહુતર જાતરૂપવાળા છે, બહુરજતવાળા છે. "आओगपओगसंपउत्ताइं विच्छड्डियपउरभत्तपाणाइं, बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूयाइं, बहुजणस्स अपरिभूयाइं" તેમનાથી આયોગ પ્રયોગ વ્યાપૃત થતો રહે છે, દીનજનો માટે જ્યાંથી પ્રચુર માત્રામાં ભકત-પાન પ્રાપ્ત થતા રહે છે, જેમની પાસે દાસીદાસ ઘણી સંખ્યામાં સેવા-ચાકરી કરવા ઉપસ્થિત રહે છે, જ્યાં પુષ્કળ માત્રામાં ગાય મહિષ અને અન્ય, મેષ વગેરે પશુઓ વિદ્યમાન રહે છે, તેમજ કોઈ પણ માણસ જેમનો અનાદર કરી શકતો નથી. "तत्थ अन्नयरंसि कुलम्मि पुत्तत्ताए पच्चायाइस्सइ" તે કુલોમાંથી તે કોઈ પણ એક કુલમાં પુત્રરૂપે ઉત્પન્ન થશે.

टीका—"सूरियाभस्स णं" इत्यादि—गौतमस्वामी पृच्छति—हे भदन्त! सूर्याभस्य खलु देवस्य कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता?। भगवानाह—हे गौतम! सूर्याभस्य देवस्य सौधर्मदेवलोके चत्वारि पल्योपमानि—चतुःपल्योपमपरिमिता स्थितिः प्रज्ञप्ता। गौतमस्वामी प्राह—हे भदन्त! स खलु सूर्याभो देवस्तस्माद् देवलोकात् आयुःक्षयेण—देवसम्बन्ध्यायुः कर्मदलिकनिर्जरणेन, भवक्षयेण-देवभवगत्यादिकर्मनिर्जरणेन स्थितिक्षयेण-सौधर्मे कल्पे सूर्याभे विमाने देवानां या दशसागरोपमस्थितिः प्रोक्ता तत्क्षयेण, अनन्तरं-तत्पश्चात् चयं-देवशरीरं त्यक्त्वा कुत्र गमिष्यति? कुत्रोत्पत्स्यते? भगवानाह-हे गौतम! स सूर्याभदेवजीवः सौधर्मदेवलोकाच्च्युत्वा महाविदेहे वर्षे यानि इमानि-वक्ष्यमाणानि कुलानि भवन्ति, तद्यथा तान्येव दर्शयति आढयानि-समृद्धानि, दीप्तानि-प्रशंसनीयवादुज्ज्व-

टीकार्थ—गौतम स्वामीने प्रभु से ऐसा पूछा है कि हे भदन्त-! सूर्याभदेव की कितने काल की स्थिति कही गई है—? इसके उत्तर में प्रभुने उन से कहा—गौतम-! सूर्याभदेवकी चार पल्योपम की स्थिति सौधर्म देवलोक में कही गई है। उसके बाद गौतमने पुनः प्रभु से ऐसा पूछा है कि हे भदन्त-! जब सूर्याभदेव के देव सम्बन्धी आयुकर्म के दलिकों की निर्जरा हो जावेगी, देव भव रूप गत्यादि कर्म की निर्जरा हो जावेगी, तथा स्थितिक्षय-सौधर्म कल्प में सूर्याभविमान में कितनेक देवों की चार पल्योपम की स्थिति कही गई है, उनमें—सूर्याभदेव की भी चार पल्योपम की स्थिति वह भी जब क्षपित हो जावेगी तब वह देव शरीर से चवकर कहां जावेगा—? कहां उत्पन्न होगा—? इसके उत्तर में प्रभुने कहा—हे गौतम? सूर्याभदेव जीव सौधर्म देवलोक से चवकर महाविदेह क्षेत्र मे जो ये कुल हैं कि जो—आढय—समृद्ध है, दीप्त

ટીકાર્થ--ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુને આ જાતને પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદંત ! સૂર્યાભ દેવની સ્થિતિ કેટલા કાલની કહેવાય છે ? એના ઉત્તરમા પ્રભુએ કહ્યું-ગૌતમ ! સૌધર્મ દેવલોકમા સૂર્યાભદેવની સ્થિતિ ચાર પલ્યોપમ જેટલી કહેવામા આવી છે. ત્યારપછી ગૌતમે ફરી પ્રભુને પ્રશ્ન કર્યો કે હે ભદંત ! જ્યારે સૂર્યાભદેવના દેવ સંબંધી આયુકર્મના દલિકોની નિર્જરા થઇ જશે ભવક્ષય-દેવભવરૂપ ગત્યાદિ કર્મની નિર્જરા થઇ જશે, તેમજ સ્થિતિક્ષય સૌધર્મ કલ્પમા સૂર્યાભવિમાનમા કેટલાક દેવોની ચારપલ્યોપમ જેટલી સ્થિતિમા કહેવાય છે, તેમા સૂર્યાભદેવની પણ ચારપલ્યોપમ જેટલી સ્થિતિ કહેવાય છે તે પણ જ્યારે ક્ષપીત થઇ જશે, ત્યારે તે દેવ શરીર ત્યજીને ક્યા જશે ? ક્યા ઉત્પન્ન થશે ? એના જવાબમા પ્રભુએ કહ્યુ હે ગૌતમ ! સૂર્યાભદેવનો જીવ સૌ ધર્મ દેવ લોકથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા જે કુલો આઢ્ય-સમૃદ્ધ છે,

लानि, विपुलानि परिवारादिना विशालानि, तथा विस्तीर्णविपुलभवनशयनाऽऽसनयानवाहनानि, तत्र विस्तीर्णानि-क्षेत्रेण महान्ति, विपुलानि-संख्यया प्रचुराणि भवनानि-गृहाणि शयनानि-शयनीयानि, आसनानि-पीठफलकादीनि, यानानि-रथ शकटादीनि, वाहनानि गजाश्वादीनि येषु (कुलेषु) तानि, तथा बहुधनबहुजात रूपरजतानि—तत्र—बहूनि—प्रचुराणि धनानि—गरिम धरिम—मेय—परिच्छेद्यरूपाणि, बहूनि—प्रचुराणि जातरूपाणि—सुवर्णानि रजतानि—रूप्याणि येषु तानि, तथा—आयोगप्रयोगसंप्रयुक्तानि, तत्र आयोगस्य—अर्थलाभस्य प्रयोगाः उपायाः, संयुक्ता—व्यापृता यैस्तानि, तथा-विच्छर्दितप्रचुरभक्तपानानि विच्छर्दितानि-उदारबुद्ध्या बहुपाचनेनावशिष्टानि, अथवा—विच्छर्दितानि—त्यक्तानि दीनेभ्यो दत्तानि प्रचुराणि बहूनि भक्तपानानि- यैस्तानि, तथा- बहुदासीदासगोमहिषगवेलकप्रभूतानि—तत्र बहवो दासी—दासाः प्रसिद्धाः, प्रभूताः—प्रचुराः गोमहिषगवेलकाः—तत्र गो—महिषाः प्रसिद्धाः गवलेका—अजा मेषाश्च येषां तानि, तथा—बहुजनस्य अपरिभूतानि—अपरिभवनीयानि एतादृशानि यानि कुलानि सन्ति तत्र—तेषां कुलेषु मध्ये

प्रशंसनीय होने से उज्ज्वल है, विपुल-परिवार आदि जनों की अपेक्षा विशाल है. क्षेत्र की अपेक्षा विस्तीर्ण, एव संख्या की अपेक्षा प्रचुर गृहो वाले है, विस्तीर्ण विपुल शयन शय्या-एवं-आसनों वाले है, पीठ-फलक दिवाले है, रथ-शकट-आदिरूप यानों वाले हैं-एवं-गज अश्वादिरूप वाहनों वाले हैं, तथा-प्रचुर गरिम धरिम मेय परिच्छेद्यरूप धनवाले हैं, प्रचुर जातरूप-सुवर्णवाले हैं, प्रचुर रजत-चान्दीवाले हैं, तथा-अर्थ के लाभरूप प्रयोग जिनसे व्यापृत हुवे हैं. उदार बुद्धि से जिनमें बहुतसा अन्न पान बनवाया जाता है, और—खाने के बाद अवशिष्ट बचता है। अर्थात्-दीनों को देने के लिये जिनमें प्रचुर अन्न-पान तैयार किया जाता है, जिस में वहुत दासी-दास हैं, बहुतही गो महिष-और

दीप्त-प्रशंसनीय હોવાથી ઉજ્જવળ છે, વિપુલ—પરિવાર વગેરેના લોકોની દૃષ્ટિએ વિશાળ છે. ક્ષેત્રની અપેક્ષાએ વિસ્તીર્ણ છે, સંખ્યાની દૃષ્ટિએ પ્રચુર ગ્રહોવાળા છે, વિસ્તીર્ણ વિપુલ શયન શય્યા અને આસનો વાળા છે, પીઠ ફલક વગેરેવાળા છે, ગજ અશ્વ વગેરે રૂપ વાહનો વાળા છે, તેમજ પ્રચુર ગરિમ, ધરિમ મેય પરિચ્છેદ્યરૂપ ધનવાળા છે, પ્રચુર જાતરૂપ—સુવર્ણવાળા છે, પ્રચુર રજત—ચાંદીવાળા છે, તથા અર્થલાભરૂપ પ્રયોગ જેમનાથી વ્યાપૃત થયેલ છે, ઉદાર બુદ્ધિથી જેઓ પુષ્કળ અન્નપાન બનાવડાવે છે અને જમ્યા પછી પણ ત્યા અવશિષ્ટ રહે છે એટલે કે ગરીબોને પવા માટે જેઓ પ્રચુર અન્નપાન તૈયાર કરાવડાવે છે જેમની પાસે ઘણાં દાસી

अन्यतमस्मिन्—कस्मिंश्चिदेकस्मिन् कुले पुत्रतया—पुत्रत्वेन पुत्रो भूत्वेत्यर्थः प्रत्या यास्यति प्रत्यागमिष्यति पुनर्मानुषभवे जन्म ग्रहीष्यतीत्यर्थः ॥सू० १६६॥

मूलम्—तए णं तंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि अम्मापिऊणं धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ। तए णं तस्स दारगस्स माया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं विइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं लक्खणवंजणगुणोववेयं माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगं ससिसोम्माकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पयाहिसि ॥सू०१६७॥

छाया—ततः खलु तस्मिन् दारके गर्भगते एव सति अम्बापित्रोः धर्मे दृढा प्रतिज्ञा भविष्यति। ततः खलु तस्य दारकस्य माता नवसु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु अर्धाष्टमेषु रात्रिन्दिवेषु व्यतिक्रान्तेषु सुकुमालपाणिपादम् अहीनप्रतिपूर्ण-

गवेलक अजा-मेष हैं, एवं-जो अनेक जनों द्वारा भी अपरिभूत हैं ऐसे कुलों में से किसी एक कुल में पुत्ररूप से-उत्पन्न होगा. ॥सू० १६६॥

"तएणं तंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि" इत्यादि

मूलार्थ—"तएणं तंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि-" जब वह दारक गर्भ में आवेगा-तब इस को गर्भ में आते ही-"अम्मापिउण धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ-" माता-पिता को धर्म में दृढ प्रतिज्ञा होगी "तएणं तस्स दारगस्स माया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं विइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं-" नौ मास साढे सात दिन जब पूरा हो जावेंगे तब उस दारक की माता सुकुमार हाथ-पग वाले-"अहीणपडिपुण्णपंचिंदिय-

દાસો છે, ઘણી ગાયો તેમજ મહિષ, ગવેલક અજા, મેષ છે અને જે ઘણાં માણસો વડે પણ અપારિભૂતછે એવા કુળોમાંથી તે કોઈ એક કુળમાં પુત્રરૂપે જન્મ પામશે ॥સૂ૦૧૬૬॥

"तएणं तंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि इत्यादि।

મૂલાર્થ—"तएणं तंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि" જ્યારે તે દારક ગર્ભમાં આવશે-ત્યારે તેને ગર્ભમાં આવતાં જ "अम्मापिउणं धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ" માતાપિતાને ધર્મમાં દૃઢ પ્રતિજ્ઞા થશે "तएणं तस्स दारगस्स माया नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं विइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं" નવ માસ અને સાડા સાત દિવસો જ્યારે પૂરા થઈ જશે ત્યારે તે દારકની માતા સુકુમાર હાથપગવાળા "अहीणपडिपुण्णपंचिंदिय सरीर

पञ्चेन्द्रियशरीरं लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेतं मानोन्मानप्रमाणप्रतिपूर्ण सुजातसर्वाङ्ग सुन्दराङ्गं शशिसौम्याऽऽकारं कान्तं प्रियदर्शनं सुरूपं दारकं प्रजनिष्यते ॥सू० १६७॥

टीका—"तए णं तंसि दारगंसि" इत्यादि-व्याख्या निगदसिद्धा ॥सू० १६७॥

मूलम्—तए णं तस्स दारगस्स अम्मा-पियरो पढमे दिवसे ठिइवडियं करेहिंति. तइयदिवसे चंदसूरदंसावणियं करिस्सति. छट्ठे दिवसे जागरियं जागरिस्संति, एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते संपत्ते वारसाहे दिवसे णिव्वित्ते असुइजायकम्मकरणे चोक्खे संमज्जिओव-लित्ते विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडाविस्संति, मित्त-णाइणियगसयणसंबंधिपरिजणं आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा भोयणमंडवंसि सुहासणवरगया तेणं मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणेणं सद्धि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा परि-भुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं चेव णं विहरिस्संति, जिमियभुत्त-

---

सरीरं-" अहीन परिपूर्ण पांचों इन्द्रियों से युक्त शरीरवाले-"लक्खण० वंजण गुणोववेय, माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगं ससिसोमाकार-कंत पियदंसणं सुरूवं दारयं पयाहिसि-" लक्षणव्यञ्जन गुणों वाले, मानोन्मान प्रमाण प्रतिपूर्ण सुजात सर्वाङ्ग सुन्दर शरीरवाले. चन्द्रमा के जैसे सौम्य आकार-वाले, कान्त-प्रियदर्शनयुक्त, एव-सुरूप सम्पन्न ऐसे, पुत्र को जन्म देगी. टीकार्थ–स्पष्ट है. ॥सू० १६७॥

અહીન પરિપૂર્ણ પાંચે ઇન્દ્રિયોથી યુક્ત શરીર વાળા "लक्खणवंजणगुणोववेयं, माणुम्माणप्पमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगं ससिसोमाकार कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पयाहिसि" લક્ષણ વ્યંજન ગુણોવાળા, માનોન્માન પ્રમાણ પ્રતિપૂર્ણ સુજાત સર્વાંગ સુંદર શરીરવાળા ચન્દ્ર જેવા સૌમ્ય આકારવાળા, કાંત–પ્રિયદર્શન યુક્ત અને સુરૂપ સંપન્ન એવા પુત્રને જન્મ આપશે.

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ છે. ॥સૂ૦ ૧૬૭॥

रागयाविय णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया त मित्तणाइ-णियगसयणसंबंधिपरिजणं विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्का-रिस्संति, सम्माणिस्संति, तस्सेव मित्तणाइ णियगसयणसबंधिपरि-जणस्स पुरओ एवं वइस्सति-जम्हा णं देवाणुप्पिया! अम्ह इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि धम्मे दढा पइण्णा जाया तं होउ णं अम्हं एस दारए दढपइण्णे णामेणं। तए णं तस्स दारगस्स अम्मा पियरो नामधेज्जं करिस्संति-दढपइ-ण्णेति। तए णं तस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेण ठिइवडियं च १, चंदसूरियदंसणावणियं च २, धम्मजागरियं च ३, नामधिज्जकरणं च ४, परंगमणं च ५, पचंकमणं च ६, पच्चक्खाणयं च ७, जेमं-णगं च ८, परिवड्ढावणगं च ९ पजंपावणगं च १०, कन्नवेहणं च ११, संवच्छरपडिलेहणगं च १२ चूडावयावणं च १३, उवणयणं च १४, अन्नाणि व बहूणि गब्भाहाण जम्मणाइयाइं कोउगाइं महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं करिस्संति ॥ सू० १६८ ॥

छाया—ततः खलु तस्य दारकस्य अम्बापितरौ प्रथमे दिवसे स्थिति-पतितां करिष्यतः, तृतीयदिवसे चन्द्रसूरदर्शनिकां करिष्यतः, षष्ठे दिवसे

'तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो—" इत्यादि

मूलार्थ—"तएणं-" इसके बाद "तस्स दारगस्स—" उस दारकके, "अम्मापियरो-" मातापिता—"पढमे दिवसे—" प्रथम दिवस "ठिइवडिय—" कुलपरम्परा से आगत पुत्र जन्मोत्सव रूप क्रिया-"करेहिंति—" करेंगे-तइयदिवसे "तृतीय दिवस—"चंदसूर दंसणावणिय करिस्संति—" चन्द्रदर्शनरूप एवं—सूर्यदर्शनरूपक्रिया

"तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो" इत्यादि।

મૂલાર્થ—"तए णं" ત્યાર પછી "तस्स दारगस्स" તે દારકના "अम्मापियरो" માતાપિતા "पढमे दिवसे" પ્રથમ દિવસે "ठिइपडिय" કુલ પરંપરાગત પુત્ર-જન્મોત્સવ રૂપ વિધિઓ "करेहिंति" કરશે. "तइयदिवसे" ત્રીજા દિવસે "चंदसूर दंसणावणियं करिस्संति" ચન્દ્રદર્શન રૂપ અને સૂર્યદર્શનરૂપ ક્રિયાઓ કે

जागरिकां जागरिष्यतः, एकादशे दिवसे व्यतिक्रान्ते, संप्राप्ते द्वादशाहे दिवसे, निवृत्ते अशुचिजातकर्मकरणे चोक्षे संमार्जितोपलिप्ते (गृहे) विपुलम् अशनपान-खाद्यस्वाद्यम् उपस्कारयिष्यतः, मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनम् आमन्त्र्य

जो कि–पुत्र जन्मोत्सव पर की जाती है–करेंगे. "छट्टे दिवसे जागरियं जागरिसंति–" छट्ठे दिन रात्रि जागरणरूप क्रिया करेंगे। "एक्कारसमे दिवसे वीइक्कते संपत्ते बारसाहे दिवसे णिव्वित्ते असुइ जायकम्मकरणे–" ग्यारहवां दिन जब व्यतीत हो जावेगा, और–१२–वां, दिन जब प्रारम्भ होगा तब उस दिन जन्म सम्बन्धी अशुचिता की निवृत्ति हो चुकने के बाद–"चोक्खे समज्जिओवलित्ते विउल असण पाण खाइम साइमं उवक्खडाविस्संति–" गृह की शुद्धि, क्रिया करेंगे। पहले उस वे सम्मार्जनी–बुहारी से कूडा–कचरा निकाल कर साफ करेंगे और–फिर उसे गोमय–आदि से लीपे–पोते करेंगे। इस प्रकार शुद्धिक्रिया हो जाने पर फिर वे अशन–पान–खाद्य, एवं–स्वाद्यरूप चार प्रकार के आहार को पकावेंगे–"मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणं आमंतेत्ता, तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता–" इसके बाद वे मित्रजनों को ज्ञाति के जनों को–मातापिता आदिकों को, अपने पुत्रादिकों को, पितृव्यादिक स्वजनों को स्वश्वशुर-पुत्रश्वशुर आदिको दासी-दास आदिरूप परिजनों को आमन्त्रित करेंगे, फिर–स्नानकर बलिकर्म-काक आदि को अन्न

पुत्र જન્મોત્સવ સમયે કરવામાં આવે છે કરશે. "छट्ठे दिवसे जागरियं जागरिस्संति" છઠ્ઠા દિવસે રાત્રિ જાગરણ કરશે "एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते संपत्ते बारसाहे दिवसे णिव्वित्ते असुइ जायकम्म करणे" અગિયારમો દિવસ જ્યારે પૂરો થશે અને બારમો દિવસ પ્રારંભ થશે ત્યારે તે દિવસે જન્મ સંબંધી અશુચિતાની નિવૃત્તિ થઈ જશે તે પછી "चोक्खे समज्जिओवलित्ते विउलअसणपाणखाइम साइम उवक्खडा विस्संति" ઘરને શુદ્ધ કરવાના કાર્યો કરશે. પહેલા તેઓ સમ્માર્જની–સાવરણી–થી કચરો સાફ કરશે અને પછી તેને ગોમય વગેરેથી લીપીને સ્વચ્છ બનાવશે. આ પ્રમાણે શુદ્ધિ ક્રિયા થઈ જવા બાદ પછી તે અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર પ્રકારના આહારોને બનાવરાવશે. मित्तणाइ णियग सयण संबंधि परिजणं आमंतेत्ता, तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा कय कोउय मंगल पायच्छित्ता" ત્યાર પછી તેઓ મિત્રજનોને જ્ઞાતિજનોને, માતાપિતા વગેરેને, પોતાના પુત્રાદિકોને, પિતૃવ્યાદિક સ્વજનોને, સ્વશુર–પુત્ર–શ્વસુર વગેરેને, દાસી દાસ વગેરે પરિજનોને આમંત્રિત કરશે. પછી સ્નાન કરીને બલિકર્મ–કાગડા વગેરે પક્ષીઓને અન્ન વગેરેનો ભાગ આપશે. કૌતુક મંગલ પ્રાયશ્ચિત્ત કરશે. सुद्धप्पावेसाइं

ततः पश्चात् स्नातौ कृतबलिकर्माणौ कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तौ शुद्धप्रवेश्यानि माङ्गल्यानि वस्त्राणि प्रवरपरिहितौ अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरौ भोजनमण्डपे सुखासनवरगतौ तेन मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनेन सार्धं विपुलम् अशनं पानं खाद्यं स्वाद्यम् आस्वादयन्तौ विस्वादयन्तौ परिभुञ्जानौ परिभाजयन्तौ एवमेव खलु विहरिष्यतः। जिमितभुक्तोत्तरागतावपि च खलु सन्तौ आचान्तौ चोक्षौ परमशुचिभूतौ तं मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनं विपुलेन वस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्करिष्यतः सम्मानयिष्यतः, तस्यैव मित्रज्ञातिनिजकस्वजन-

आदिका भाग करेंगे कौतुक-मङ्गलप्रायश्चित्त करेंगे-"सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा भोयणमंडवंसि–" फिर शुद्ध माङ्गलिकवस्त्रों को जो कि–राजसभा में जानेके लिये पहिरने योग्य होते हैं उन्हें पहिरेंगे, बाद में अल्प वजनवाले–और–विशेष मूल्यवाले ऐसे अलङ्कारों को धारण करेंगे, इस तरह सब प्रकारसे सजधजकर, फिर–भोजनमण्डप में–भोजनशाला में–"सुहासणवरगया–" अपने-अपने श्रेष्ठ आसन पर बैठ कर– "तेणं मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणेणं सद्धिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं चेव णं विहरिस्संति–" उन मित्र ज्ञाति निजक स्वजन सम्बन्धिजन एवं-परिजन के साथ इस विपुल अशन-पान खाद्य, एवं–स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार का पहले आस्वादन करेंगे-फिर विशेष आस्वादन करेंगे, उसे रुचिपूर्वक खायेंगे, एक दूसरे को देंगे–"जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा, परमसुइभूया तं मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणं विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारिस्संति,

मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा भोयणमंडवंसि" પછી રાજ્યસભામાં જવા માટે પહેરવા યોગ્ય શુદ્ધ માંગલિક વસ્ત્રો ધારણ કરશે. ત્યાર બાદ અલ્પભારવાળા અને વિશેષ કીમતી એવા અલંકારો ધારણ કરશે આ પ્રમાણે સર્વ રીતે સુસજ્જ થઈને પછી તેઓ ભોજન મંડપમાં–ભોજનશાળામાં– "सुहासणवरगया" પોતપોતાના શ્રેષ્ઠ આસનો પર બેસીને "तेणं मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणेणं सद्धिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं चेव णं विहरिस्संति" તે મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન સંબંધિજનો અને પરિજનોની સાથે તે વિપુલ અશન પાન ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચતુર્વિધ આહારનો પહેલા આસ્વાદન કરશે પછી વિશેષ આસ્વાદન કરશે તેને રુચિપૂર્ણ થઈને જમશે પરસ્પર એક બીજાઓને આપશે जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा, परमसुइभूया तं मित्तणाइणियगसयणसंबंधि परिजणं विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारिस्संति

सम्बन्धिपरिजनस्य पुरत एवं वदिष्यतः—यस्मात् खलु देवानुप्रियाः ! आवयोः अस्मिन् दारके गर्भगते एवं सति धर्मे दृढा प्रतिज्ञा जाता तद् भवतु खलु आवयोः एष दारको दृढप्रतिज्ञो नाम्ना। ततः खलु तस्य दारकस्य अम्बापितरौ नामधेयं करिष्यतः दृढप्रतिज्ञ इति। ततः खलु तस्य अम्बापितरौ अनुपूर्वेण स्थितिपतितां च १, चन्द्रसूर्यदर्शनिकां च २, धर्मजागरिकां च ३, नाम

संमाणिस्संति—" भोजन कर चुकने के अनन्तर फिर वे अपने-अपने उपवेशन (बेठने के) स्थानपर बैठ कर शुद्ध जल से आचमन कर चोखे होंगे, इस तरह परमशुचिभूत हुवे वे—मित्र, ज्ञाति, निजक स्वजन, सम्बन्धि परिजनों को विपुल वस्त्र गन्ध माल्य अलङ्कारों से सत्कृत करेंगे। एवं—मानपूर्वक उनका आदर करेंगे—"त सेव मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणस्स पुरओ एवं वइस्सति—" फिर वे-उन्हीं मित्र-ज्ञाति-निजक-स्वजन सम्बन्धी परिजनों के समक्ष इस प्रकार कहेंगे-"जम्हा णं देवाणुप्पिया ! अम्हं इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि धम्मे दढा पइण्णा जाया-" हे देवानुप्रियों ? जिस कारण से इस दारक के गर्भ में आते ही हम लोगों की धर्म में दृढ प्रतिज्ञा हुयी, "ते होऊण अम्हं एस दारए दढपइण्णो णामेणं—" इस कारण यह हमारा दारक दृढप्रतिज्ञ इस नामवाला हो—"तएणं तस्स दारगस्स अम्मा पियरो नामधेज्जं करिस्संति दढपइण्णोत्ति—" इस तरह उस दारक के मातापिता उसका दृढ प्रतिज्ञ ऐसा नाम करेंगे। "तएणं तस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठिइवडियं च-१ चंदसूरियदंसणावणियं च

संमाणिस्संति" ભોજન બાદ તેઓ પોતપોતાના ઉપવેશન સ્થાનપર બેસીને શુદ્ધ જળથી આચમન કરીને પવિત્ર થશે. આ પ્રમાણે પરમશુચિભૂત થયેલા તે મિત્ર જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન, સંબંધી પરિજનોને વિપુલ વસ્ત્ર, ગંધ, માલ્ય અલંકારોથી સત્કૃત કરશે. અને સમ્માનપૂર્વક તેમનો આદર કરશે "तस्सेव मित्तणाइणियग सयणसंबंधिपरिजणस्स पुरओ एवं वइस्संति" પછી તેઓ તે મિત્ર-જ્ઞાતિ નિજક સ્વજન-સંબંધી પરિજનોની સામે આ પ્રમાણે કહેશે—"जम्हाणं देवाणुप्पिया ! अम्हं इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि धम्मे दढा पइण्णा जाया." હે દેવાનુપ્રિયો ! આ દારક જ્યારથી અમારા ગર્ભમાં આવ્યો છે ત્યારપછી અમારી મનમાં ધર્મ પ્રત્યે દૃઢ પ્રતિજ્ઞા જાગી છે. "तं होऊ णं अम्हं एस दारए दढपइण्णो णामेण" આથી અમારો આ દારક દૃઢ પ્રતિજ્ઞ આ નામવાળો થાય "तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करिस्संसि दढपइण्णोत्ति" આ પ્રમાણે તે દારકના માતાપિતા તેનું દૃઢપ્રતિજ્ઞ એવું નામ રાખશે. "तएण तस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठिइवडियं च १ चंदसूरियदंसणावणियं च २ धम्मजागरियं

धेयकरणं च ४, परगमनं च (पर्यङ्गनं च) ५ प्रचङ्क्रमणकं च ६ प्रत्याख्यानकं च ७ जेमनकं च ८ प्रतिवर्घापनकं च ९ प्रजल्पनकं च १० कर्णवेधनं च ११ संवत्सरप्रतिलेखनकं १२ चूडापनयनं च १३ उपनयनं च १४ अन्यानि च बहूनि गर्भाधानजन्मादिकानि कौतुकानि महता ऋद्धिसत्कारसमुदयेन करिष्यतः ॥ सू० १६८ ॥

टीका-"तए णं तस्स" इत्यादि-ततः खलु तस्य दारकस्य अम्बापितरौ प्रथमे दिवसे-जन्मदिने स्थितिपतितां-स्थित्या-कुलमर्यादया पतिता-समागता

-२ धम्मजागरियं च-३ नामधिज्जकरणं च-४ परंगमणं च-५ पचंकमणं च-६ पच्चक्खाणयं च-७ जेमणगं च-८ पडिवद्धावणगं च-९ पजंपावणगं च-१० कन्नवेहण च-११ संवच्छरपढिलेहणग च-१२" क्रमशः-जब वे स्थितिप्रतिज्ञ -१चंद्रसूर्यदर्शन-२ धर्मजागरण-३ नामकरण-४ इन उत्सवों को करचुकेगे- तब इनके बाद-परमगमन५ प्रचङ्क्रमण-६ प्रत्याख्यान-७ अन्नप्राशन-८ प्रतिवर्धापन-९ प्रजल्पनक-१० कर्णवेधन-११ संवत्सर प्रतिलेखनक-१२ "चूडावणयणं-१३ उवणयणं च-१४ अन्नाणिय वहूणि गब्भाहाणजम्मणाइयाइ कोउगाइं महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं करिस्संति-" चूडानपयन, और-१४ उपनयन इन अवशिष्ट उत्सवों को करेगे. तथा-इनके अतिरिक्त और भी वहुत से गर्भाधानादि सम्बन्धी अपनी ऋद्धि के अनुरूप सत्कार करने आदिरूप से करेगे-।

टीकार्थ-उस दारक के वालक मातापिता प्रथम जन्मदिवस के समय कुल मर्यादासे चली आई पुत्रजन्मोत्सव क्रिया करेंगे, इसी के निमित्त तीसरे दिन वे

च ३ नामधिज्जकरणं च ४, परंगमणं च ५, पचंकमणं च ६, पच्चक्खाणयं च ७, जेमणग च ८, पडिवद्धावणगं च ९, पजंपावणगं च १०, कन्नवेहणं च ११, संवच्छरपडिलेहणगं च १२," અનુક્રમે જયારે તેઓ સ્થિતિ પ્રતિજ્ઞ ૧ ચન્દ્ર સૂર્યદર્શન ૨, ધર્મજાગરણ ૩, નામકરણ ૪, આ ઉત્સવો ઉજવી લેશે ત્યાર બાદ પરગમન ૫, પ્રચઙ્ક્રમણ ૬, પ્રત્યાખ્યાન ૭, અન્ન પ્રાશન ૮, પ્રતિવર્ધાપન ૯, પ્રજલ્પનક ૧૦ કર્ણવેધન ૧૧, સવત્સર પ્રતિલેખનક ૧૨, "चूडावणयणं १३, उन्नयणं च १४, अन्नाणिय वहूणि गब्भाहाण जम्मणाइयाइं कोउगाइं महया इड्ढि सक्कारसमुदएणं करिस्संति" ચૂડાપનયન અને ૧૪ ઉપનયન આ અવશિષ્ટ ઉત્સવો ઉજવશે તેમજ બીજા પણ ઘણા ગર્ભાધાન સંબંધી સત્કાર કરવારૂપ કાર્યો પોતાની ઋદ્ધિ અનુસાર કરશે.

ટીકાર્થ:—તે દારકના માતાપિતા જન્મને પહેલે દિવસે કુલપરંપરાગત પુત્ર જન્મોત્સવ ક્રિયાઓ કરશે. એ નિમિત્તે જ ત્રીજા દિવસે તેઓ ચન્દ્ર-સૂર્યદર્શન કરશે

पुत्रजन्मोत्सवरूपा क्रिया, तां करिष्यतः, तृतीयदिवसे चन्द्रसूर्यदर्शनिकां—चन्द्र-दर्शन-सूर्यदर्शनरूपां पुत्रजन्मोत्सवविशेषलक्षणां प्रक्रियां करिष्यतः, षष्ठे दिवसे जागरिका रात्रिजागरणरूपां क्रियां जागरिष्यतः—करिष्यतः, एकादशे दिवसे व्यतिक्रान्ते—व्यतीते सम्प्राप्ते—समागते द्वादशाहे—द्वादशम् अहो यस्मिन् तत्तस्मिन् तादृशे दिवसे द्वादशाहे दिवसे इत्यर्थः, अशुचिजातकर्मकरणे—अशुचीतां—जन्माशौचवतां कुटुम्बितां जातकर्मणः—नवजातशिशुसम्बन्धिसंस्कारस्य करणं—विधानं, तस्मिन् निवृत्ते समाप्ते सति जन्माशौचनिवर्तनानन्तरमित्यर्थः, चोक्ष-स्वच्छ, संमार्जितोपलिप्ते—संमार्जिते—मार्जन्या कचवरापनयनेन संशोधिते उपलिप्ते—गोमयादिना कृतलेपे गृहे, विपुलं—प्रचुरम् अशनपानखाद्यस्वाद्यम् उपस्कारयिष्यतः—पाचयिष्यतः मित्र-ज्ञाति-निजक-स्वजन-सम्बन्धि-परिजनं-तत्र मित्राणि—सुहृदः, ज्ञातयः-मातापितभ्रात्रादयः, निजकाः—स्वकीयाः पुत्रादयः, स्वजनाः—पितृव्यादयः सम्बन्धिनः-स्वश्वशुरपुत्रश्वशुरादयः, परिजनो-दासी-दासादिः, एतेषां समाहारे तत् आमन्त्र्य, ततः पश्चात् स्नातौ-कृतस्नानौ कृतबलिकर्माणौ—काकादिभ्यः कृता-

---

चन्द्र—सूर्य दर्शनरूप क्रिया करेंगे। अर्थात्—नव जात शिशु को चन्द्र—सूर्यका दर्शन करावेंगे—। जब ग्यारहवां दिन व्यतीत हो जावेगा, और-१२ बारहवां दिन प्रारम्भ हो जावेगा. तब वे जातकर्म क्रिया करेंगे, इस क्रिया में—नव जात शिशु के उत्पन्न हो जाने से अशुचिता कुटुम्ब के लोगों में मानी जाती है, अर्थात् जन्म सम्बन्धी अशुचिता इस दिन समाप्त हो जाती है, घर बगैरह की लिपाइ- पोताइ की जाती है. वस्त्रों को धुलवाकर स्वच्छ कराया जाता है। इस तरह अशुचि व्यपरोपण करके फिर वे अशन आदिरूपचारों प्रकार के आहार को बनवावेंगे. और—अपने मित्र—सुहृज्जनों को माता-पिता-भाइ आदिरूप ज्ञातिजनों को, पुत्रादिरूप निजजनों को, पितृव्य—आदिरूप—स्वजनों को, अपने-श्वशुर एवं—पुत्र श्वशुर आदि सम्बन्धिजनोंको, एवं—दासीदास आदि परिचारक

એટલે કે નવજાત શિશુને ચન્દ્ર—સૂર્યના દર્શન કરાવશે જ્યારે અગિયારમો દિવસ પૂરો થશે અને બારમો દિવસ પ્રારંભ થશે ત્યારે તેઓ જાતકર્મ વિધિ કરશે. આ વિધિમાં નવજાત શિશુના જન્મથી કુટુંબના લોકોમાં જે અશુચિતા મનાય છે તેને સાફ-સફાઈ વગેરે કરીને દૂર કરવામાં આવે છે એટલે કે જન્મ સંબંધી અશુચિતા આ દિવસે મટી જાય છે. ઘર વગેરે લીપવામાં આવે છે. વસ્ત્રો ધોવડાવી સ્વચ્છ કરવામાં આવે છે. આ પ્રમાણે અશુચિ વ્યપરોપણ કરીને પછી તેઓ અશન-પાન વગેરે રૂપ ચાર પ્રકારના આહારો બનાવડાવશે અને પોતાના મિત્ર સુહૃદ્ જન, માતા પિતા. ભાઈ વગેરે રૂપ જ્ઞાતિજનોને, પુત્રાદિરૂપ નિજજનોને, પિતૃવ્ય વગેરે રૂપ સ્વજનોને. પોતાના શ્વશુર અને પુત્ર શ્વશુર વગેરે સંબંધીજનોને અને દાસીદાસ વગેરે

न्नभागौ कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तौ—कृतानि सम्पादितानि कौतुकानि—मषीतिलकादीनि मङ्गलानि-मङ्गलकराणि दुःस्वप्नादिफलनिवारणार्थं सर्षपदध्यक्षतादीनि तान्येव प्रायश्चित्तानि अवश्यकरणीयत्वात् याभ्यां तौ तथा, शुद्धप्रवेश्यानि-शुद्धानि पवित्राणि स्वच्छानि च प्रवेश्यानि राजसभाप्रवेशयोग्यानि, मङ्गल्यानि-मङ्गलजनकानि वस्त्राणि प्रवरपरिहितौ-सुष्ठुतया धारीति धारितवन्तौ, अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरौ-तत्र अल्पानि-स्तोकभाराणि महार्घाणि-महामूल्यानि आभरणानि-भूषणानि, तैः अलङ्कृतं-भूषितं शरीरं ययोस्तौ तथा, भोजनमण्डपे-भोजनशालायां, सुखासनवरगतौ—निजनिजश्रेष्ठासने सुखरूपेण समुपविष्टौ सन्तौ तेन मित्र ज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनेन सार्धं विपुलम् अशनं पानं खाद्यं स्वाद्यम् आस्वादयन्तौ, परिभुञ्जानौ-रुचिपूर्वकं भुञ्जानौ, परिभाजयन्तौ—अन्येभ्यः प्रयच्छन्तौ. एवमेव-अनयैव रीत्या खलु विहरिष्यतः-स्थास्यतः। जिमितभुक्तोत्तरागतावपि-जिमितौ भुक्तवन्तौ भुक्तोत्तर-भोजनोत्तरकालम् आगतौ-निजनिजोपवेशन स्थाने समागतौ

परिजनों को जीमने के लिये आमन्त्रित करेगे। फिर स्नान से, काकआदि कों के लिये-कृतान्न विभागसे मषीतिलकादिरूप कौतुकों से, मङ्गलकर दुःस्वप्न आदि अवाञ्छनीय फल की निवृत्ति के लिये सरसों-दधि-अक्षतरूप प्रायश्चित्त से निपटकर राजसभा मे प्रवेश के समय पहनने योग्य स्वच्छ-पवित्र-माङ्गलिकवस्त्रों को अच्छी तरह पहनकर, एवं—अल्पभारवाले अमोल अलङ्कारों से शरीर को सुशोभित करनेके बाद भोजनशालामें आवेगे, और—वहांपर अपने योग्य स्थापित श्रेष्ठ आसनपर बैठकर आमन्त्रित होकर आये हुवे उन मित्र-ज्ञाति-निजक-स्वजन-सम्बन्धीजन के साथ रुचिपूर्वक भोजन करेगे, एक दूसरे के लिये मनोविनोद करते हुवे भोजन करलेने की क्रिया समाप्त हो जावेगी, तब वे हाथ मुख धोकर अपने स्थानपर आकर विराजमान हो जावेगे, वहां शुद्धोदक

પરિજનને જમવા માટે આમંત્રિત કરશે. પછી સ્નાનથી, કાગડા વગેરેને અન્નભાગ આપવાથી મષીતિલક વગેરેરૂપ કૌતુકોથી મંગલ કરીને દુઃસ્વપ્ન વગેરે અવાછનીય ફળની નિવૃત્તિ માટે સરસવ, દધિ, અક્ષતરૂપ પ્રાયશ્ચિતથી નિવૃત્ત થઈને રાજસભામા જવા યોગ્ય વસ્ત્રો સારી રીતે પહેરીને અને અલ્પભારયુકત બહુ કીમતી અલંકારોથી શરીરને સુશોભિત કરીને પછી તે ભોજનશાળામા જશે, અને ત્યા પોતાને યોગ્ય સ્થાપિત શ્રેષ્ઠ આસનો પર બેસીને આમંત્રિત મહેમાનો—મિત્ર—જ્ઞાતિ- નિજક સ્વજન-સંબંધીજન અને પરિજનોની સાથે રૂચિપૂર્વક જમશે. મનોવિનોદ કરતા એકબીજાને પીરસાવશે. આ પ્રમાણે આનંદપૂર્વક જમવાનું કામ પુરૂ થઈ જશે ત્યાર પછી તેઓ હાથ મુખ ધોઇને પોતપોતાના સ્થાનપર આવીને વિરાજમાન થઈ જશે. ત્યા શુદ્ધોદ-

सन्तौ आचान्तौ- शुद्धोदकयोगेन कृताऽऽचमनौ चोक्षौ—लेपसिक्थाद्यपनयनेन स्वच्छौ, अत एव परमशुचिभूतौ अतीव पवित्रौ, तं मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनं विपुलेन प्रचुरेण, वस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण—तत्र वस्त्राणि-क्षौमिक-कार्पासिक-दुकूलरूपाणि, गन्धाः- पुष्पनिर्यासामोदपरिमलरूपाणि सुगन्धद्रव्याणि, माल्यानि-पुष्पमालाः, अलङ्काराणि-कटककुण्डलाद्याभरणानि तेषां समाहारः, तेन सत्करिष्यतः-तत्प्रदानेन सत्कारं करिष्यतः, सम्मानयिष्यतः—मानपूर्वकमादरिष्येते, ततः तस्यैव मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनस्य पुरतः—अग्रे, एवं-वक्ष्यमाणप्रकारेण वदिष्यतः—कथयिष्यतः, तदेवाह—हे देवानुप्रियाः! मित्रादयः! यस्मात् खलु कारणात् अस्मिन् नवजाते दारके शिशौ गर्भगते एव सति—गर्भगते सति आवयोः धर्मे-जिनप्ररूपिते धर्मे प्रतिज्ञा-मतिः दृढा-निश्चला जाता, तत्—तस्मात् कारणात् आवयोः एष दारको नाम्ना दृढप्रतिज्ञो भवतु। ततः-तदनन्तरं खलु तस्य दृढप्रतिज्ञस्य दारकस्य अम्बा पितरौ अनुपूर्वेण-अनुक्रमेण स्थितिपतितां१, चन्द्र-

---

से आचमन कर परमशुचि बने हुवे वे अपने मित्रजनों का, ज्ञातिजनों का, निजकजनों का, स्वजनों का, सम्बन्धिजनों का, और परिजनों का विपुल-प्रचुर वस्त्रसे, रेशमी-एवं-सूतीवस्त्रोंसे गन्धसे, पुष्परस के आमोद परिमल से, पुष्पमालाओं से, कटककुण्डल आदिरूप अलङ्कारों से सत्कार करेंगे एवं मानपूर्वक उनका आदर करेंगे.। फिर वे—उन्हीं मित्र-ज्ञाति-निजक-स्वजन-सम्बन्धी परिजनों के समक्ष ऐसा कहेंगे—हे देवानुप्रिय ? मित्रादिको ? जिस कारण से यह दारक जब गर्भ में आया था तब से हमलोगों की धर्ममें-जिन प्ररूपित मार्ग में मति दृढ—निश्चल हो गई थी, इस कारण हमलोगों का यह—पुत्र नाम से दृढप्रतिज्ञ हो" ऐसा कहकर वे ल उसका "दृढ प्रतिज्ञ—" नाम रक्खेगे उस दृढप्रतिज्ञ बालक के मातापिता क्रमशः—स्थिति पतिता—१ चन्द्र-सूर्य

દકથી આચમન કરીને પરમશુચિ થયેલા તેઓ પોતાના મિત્રજનોનો, નિજકજનોનો સ્વજનોનો, સંબંધીજનોનો અને પરિજનોનો વિપુલ-પ્રચુર વસ્ત્રોથી, રેશમી અને સુતી વસ્ત્રોથી, પુષ્પરસના આમોદ પરિમલથી, પુષ્પમાલાઓથી, કટક કુંડળરૂપ અલંકારોથી સત્કાર કરશે અને સન્માનપૂર્વક તેમનો આદર કરશે. પછી તેઓ પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન, સંબંધી પરિજનોની સામે આ પ્રમાણે કહેશે કે હે દેવાનુપ્રિયો ! મિત્રવરો ! જ્યારથી આ દારક ગર્ભમાં આવ્યો છે ત્યારથી અમારી ધર્મમાં-જિન પ્રરૂપિત માર્ગમા મતિ દૃઢ નિશ્ચલ થઈ ગઈ છે. આથી અમારો આ પુત્ર દૃઢ પ્રતિજ્ઞ નામથી સંબોધિત થાય. આમ કહીને તે લોકો 'દૃઢપ્રતિજ્ઞ' એ પ્રમાણે તેનું નામ રાખશે તે દૃઢ પ્રતિજ્ઞદારકના માતાપિતા અનુક્રમે સ્થિતિ પતિતા ૧, ચન્દ્રસૂર્ય દર્શનિકા ૨,

सूर्यदर्शनिकां२, धर्मजागरिकां३, नामधेयकरणं४, 'परगमणं' इत्यस्य 'परगमनं पर्यङ्गनं चे'तच्छाया, तत्र परगमनं-स्वगृहाद् बहिर्गमनम्, पर्यङ्गनम्,-अङ्गुलिग्रहण-पूर्वकं भवनाङ्गणे भ्रामणं ५, प्रचङ्क्रमणं-स्वतोभ्रमणम् ६, प्रत्याख्यानकम्-आरोग्यार्थं व्रतादिकरणम् ७, जेमनकम्-अन्नप्राशनम्८, प्रतिवर्धापनकम्-आशीर्वाद-दायकेभ्यो द्रव्यादिदानम्९ प्रजल्पनकं-'माता, पिता' इत्यादिशब्दपाठनम्१०, कर्णवेधनम्११, संवत्सरप्रतीलेखनकम् जन्मदिनोत्सवम्१२, चूडापनयनं-मुण्डनोत्सवम्१३, उपनयनम्-अध्ययनार्थं कलाचार्यसमीपे नयनम्१४, एतांश्चतुर्दशोत्सवान् करिष्यतः अन्यानि च बहूनि गर्भाधानजन्मादिकानि गर्भाधानादिसम्बन्धीनि कौतुकानि-उत्सवजातानि महता ऋद्धिसत्कारसमुदयेन-ऋद्धिः वस्त्रसुवर्णादिसम्पत् त । सत्कारः-जनसत्कारकरणं, तस्य समुदयः-समूहः, तेन करिष्यतः ।सू०१६८।

मूलम्---तए णं से दढपइण्णे दारगे पंचधाईपरिक्खित्ते, तं जहा खीरधाईए१, मज्जणधाईए२, मंडणधाईए३, अंकधाईए४, किला-

---

दर्शनिका-२ धर्म जागरिका-३ नामकरण-४ परंगमण-५ परगृहगमन-अपने घरसे बाहर निकलने रूप परगमन, अथवा-अङ्गुलिग्रहणपूर्वक भवनाङ्गणमें फिरने रूप पर्यङ्गमन, प्रचंक्रमण-स्वतःभ्रमण-६ प्रत्याख्यान-आरोग्य आदिके लिये व्रतादिकरण-७ जेमनक-अन्नप्राशन-८ प्रतिवर्धापनक-आशीर्वाददायकों के लिये द्रव्यादि देना-९ प्रजल्पनक-मातापिता-इत्यादि शब्दों का उच्चारण करानां-१० कर्णवेधन-११ संवत्सर प्रतिलेखनक-जन्म दिनोत्सव-वर्षगांठ,१२ चूडापनयन-मुंण्डनोत्सव-१३ और-उपनयन, अध्ययनार्थ कलाचार्य के पास ले जाना १४ इन चौदह प्रकारके उत्सवों को, तथा---इनसेभिन्न और भी अनेक गर्भाधानादि सम्बन्धी कौतुकों को-उत्सवों को, ऋद्धि सत्कार समुदायसे करेंगे. ।सू०१६८।

धर्मजागरिका ३, नामकरण ४, परंगमण ५, परगमन-पर्यंगमन पोताना घेरथी बीजा घेर जवुं ते परगमन, अथवा अंगुलि ग्रहणपूर्वक भवनांगणमां ज फरवु ते पर्यंगमन, प्रचंक्रमण-स्वतःभ्रमण ६, प्रत्याख्यान आरोग्य वगेरे माटे व्रतादिकरण ७ जेमनक अन्नप्राशन ८, प्रतिवर्धापनक आशीर्वाद आपनाराओने द्रव्य वगेरे आपवुं ९, प्रजल्पनक-मातापिता वगेरे शब्दोनु उच्चारण करवुं. १०, कर्णवेधन ११, संवत्सर प्रतिलेखनक जन्म दिवसोत्सव---वर्षगांठ चूडापनयन, मुंडनोत्सव १३ अने उपनयन अध्ययन कलाचार्य पासे लइ जवु ते १४, आ चौद प्रकारना उत्सवोने तेमज एमनाथी भिन्न बीजा पण घणा गर्भाधान संबंधी कौतुकोने उत्सवो ऋद्धि सत्कार समुदायपूर्वक करशे. ।।सू० १६८।।

वणधाइए५, अन्नाहि य बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं वामणियाहिं१, वडभियाहिं२, बब्बरीहिं३, बाउसियाहिं४, जोण्हियाहिं५, पल्हवियाहिं ६, ईसिणियाहिं७, वासिणियाहिं८, लासियाहिं९, लउसियाहिं १०, दविडीहिं११, सिंहलीहिं१२, आरबीहिं १३, पक्कणीहिं १४, बहलीहिं १५, मुरुंडीहिं १६, सबरीहिं१७, पारसीहिं१८, णाणादेसीहिं विदेसपरिमंडियाहिं सदेसनेवत्थगहियवेसाहिं इंगियचिंतियपत्थियवियाणियाहिं निउणकुसलाहिं विणीयाहिं चेडियाचक्कवालतरुणीवंदपरियालपरिवुडे वरिसधरकंचुइज्जमहत्तरगवंदपरिक्खित्ते हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे २ अंकाओ अंकं परिभुज्जमाणे २ उवनच्चिज्जमाणे २ उवगाइज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २ उवगूहिज्जमाणे २ अवयासिज्जमाणे २ परियंदिज्जमाणे २ परिचुंबिज्जमाणे २ रम्मेसु मणिकुट्टिमतलेसु परंगिज्जमाणे २ गिरिकंदरमल्लीणेविव चंपगवरपायवे निव्वाघायंसि सुहसुहेणं वरिवड्ढिस्सइ ॥ सू० १६९॥

छाया:—ततः खलु स दृढप्रतिज्ञो दारकः पञ्चधात्रिभिः परिक्षिप्तः, तद्यथा—क्षीरधात्र्या१, मज्जनधात्र्या२, मण्डनधात्र्या ३ अङ्कधात्र्या४. क्रीडनधात्र्या ५.

"तए णं से दढपइण्णे दारगे—इत्यादि—

मूलार्थ—"तए णं—" इसके बाद—"से दढपइण्णे—" दृढप्रतिज्ञ बालक—"पंचधाई परिक्खित्ते-" इन पांच धायमाताओं से युक्त—"तं जहा—खीरधाइए—मज्जणधाइए—मंडणधाइए-अंकधाइए—किलावणधाइए—" जैसे—क्षीरधायमाता से, दूध पिलानेवाली उप माता से, मज्जनधायमाता से, स्नान करानेवाली उप

"तए णं से. दढपइण्णे दारगे" इत्यादि।

મૂલાર્થ—'तए णं" ત્યાર પછી "से दढपइण्णे" તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ બાળક "पंचधाई परिक्खित्ते" આ પાંચ ધાય માતાઓથી "तं जहा—खीरधाइए-मज्जणधाइए—मंडणधाइए—अंकधाइए, किलावणधाइए" જેમકે ક્ષીરધાય માતાથી ધવડાવનાર ઉપમાતાથી, મજ્જનધાય માતાથી, સ્નાન કરાવનાર ઉપમાતાથી, મંડનધાયમાતાથી,

अन्याभिश्च बहुभिः कुब्जाभिश्चिलातिकाभिर्वामनिकाभिः १, वटभिकाभिः२, वर्वरीभिः३, बकुशिकाभिः ४, यौनिकाभिः५, पल्हविकाभिः६, इसिनिकाभिः७, वासिनिकाभि८ लासिकाभिः ९, लाकुशिकाभिः १० द्राविडीभिः ११. सिंहलीभिः १२, आरबीभिः १३, पक्कणीभिः १४, बहलीभिः १५, मुरुण्डीभिः १६, शबरीभिः १७, पारसीभिः १८, नानादेशीयाभिः विदेशपरिमण्डिताभिः स्वदेशनेपथ्यगृहीतवेषाभिः इङ्गितचिन्तितप्रार्थित विज्ञायिकाभिः

माता से, मण्डन धाय माता से—मषीतिलक आदि द्वारा मण्डन 'अलङ्कृत' करानेवाली उपमाता से अङ्कधात्री माता से—उत्सङ्ग—गोद में लेकर खिलाने वाली—उप—माता से, क्रीडनधात्री माता से—विविध प्रकार की क्रीडाएं करानेवाली उप माता से. इन पांच प्रकार की धात्रियों से युक्त हुवा—"अन्नाहिय बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं वामणयाहिं वडभियाहिं बब्बराहिं बाउसयाहिं जोण्हियाहिं पल्हवियाहिं ईसिणियाहिं वासिणियाहिं लासियाहि—" तथा—इन से अतिरिक्त और भी अनेक प्रकार की वक्रपृष्ठवाली—एवं अनार्यदेशोत्पन्न ठुमकी—ह्रस्व-शरीरवाली—१ वटभिका—२ हीन एकपार्श्व भागवाली बर्बरा—३ बर्बरदेशोत्पन्ना बकुशिका—४ यौनिका—५ पल्हविका—६—ईसिनिका—७ वासिनिका—८ लासिका-९ "लउसियाहिं" लकुशिका १० "दविडीहिं—" द्राविडी—११ "सिंहलीहिं आरबीहिं—पक्कणीहिं—बहलीहिं—मुरुंडीहिं—सब्बरीहिं—" पारसीहिं सिंहिली—१३ आरबी, पक्कणी—१४ बहली—१५ मुरण्डी—१६ शबरा—१७ पारसी—१८ 'णाणा देसीहिं—' अपने—अपने नामानुरूप देशों में उत्पन्न हुवी—तथा—"विदेसपरिमंडियाहिं—"

મષીતિલક વગેરે દ્વારા મંડન કરાવનાર ઉપમાતાથી, અંકધાત્રી માતાથી, ઉત્સંગ ખોળામાં બેસાડીને રમાડનાર ઉપમાતાથી યુક્ત થયેલો "अन्नाहिय बहूहिं खुज्जाहिं चिलाइयाहिं वामणियाहि वडभियाहिं बब्बराहिं बउसियाहिं-जोण्हियाहिं पल्हवियाहिं ईसिणियाहिं वासिणियाहिं लासियाहिं" તેમજ બીજી પણ અનેક પ્રકારની વક્રપૃષ્ઠવાળી અને અનાર્યદેશોત્પન્ન ઠીંગણી ૧, વટભિકા ૨, હીન એક પાર્શ્વભાગવાળી, બર્બરા ૩ બર્બર દેશોત્પન્ના, બકુશિકા ૪ યૌનિકા ૫, પલ્હવિકા ૬, ઇસિનિકા ૭, વાસિનિકા ૮, લાસિકા ૯ "लउसियाहिं" લકુશીકા ૧૦, "दविडीहिं" દ્રાવિડી ૧૧, "सिंहलीहिं आरबीहिं ह-बहलीहिं-मुरुंडिहिं सब्बरीहिं पारसीहिं" સિંહિલી ૧૩. આરબી પક્કણી ૧૪. વહલી ૧૫ મારૂંડી ૧૬ શર્બરા ૧૭. પારસી ૧૮. "णाणादेसीहिं" પોતપોતાના દેશોમા ઉત્પન્ન થયેલી. તથા 'विदेसपरिमंडियाहिं" વીદેશી વેશભૂષામા સુસજ્જ "सदेस-नेवत्थगहियवेसाहिं, इंगियचिंतियपत्थियवियाणियाहिं, निउणकुसलाहिं

निपुणकुशलाभिः विनीताभिः चेटिकाचक्रवालतरुणीवृन्दपरिवार—परिवृतः वर्षधरकञ्चुकिमहत्तरकवृन्दपरिक्षिप्तः हस्ताद् हस्तं संह्रियमाणाः २ अङ्कात् अङ्कं परिभोज्यमानः २ उपनृत्यमानः २ उपगीयमानः २ पलाल्यमानः २ उपगूह्यमानः २ श्लिप्यमाणः २ परिवन्द्यमानः २ परिचुम्ब्यमानः २ रम्येषु मणिकुट्टिमतलेषु पर्यङ्क्यमाणः २ गिरिकन्दरालीन इव चम्पकवरपादपः निर्व्याघाते सुखसुखेन परिवर्धिष्यते ॥ सू० १६९ ॥

विदेश के वेष से सजी हुवी, 'सदेसनेवत्थगहियवेसाहिं, इंगियचिंतियपत्थियवियाणियाहिं निउणकुसलाहिं, विणीयाहिं—' और अपने देश में वस्त्राभूषणों को जिस तरह से पहिरा जाता है, उस तरह से वेष को धारण करनेवाली, तथा—इङ्गित—चिन्तित-प्रार्थित को अच्छी तरह से समझ लेने वाली, नारियों के बीच कुशल, विनय सम्पन्न, स्त्रियों से, तथा "चेडियाचक्कवालतरुणीवंदपरियालपरिवुडे, वरिसघरकंचुइज्जमहत्तरगवंदपरिक्खित्ते—" और भी दासियों के समूह से एवं युवतियों के समूह से परिवेष्टित हुवा, तथा-वर्षधर, कञ्चुकी, और महत्तरक इन के समूह से परिवेष्टित हुवा, एवम्—"हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे-२ उपलालिज्जमाणे-२ उवगूहिज्जमाणे-२ अवयासिज्जमाणे-परियंदिज्जमाणे २ परिचुंबिज्जमाणे-२ रम्मेसु मणिकुट्टिमतलेसु परंगिज्जमाणे २" एक हाथ से दूसरे हाथों में बारंबार जाता हुवा, एक गोदी से दूसरी गोदी में बारबार नृत्य क्रिया दिखाने से संतुष्ट किया गया, बारबार-मधुर वचनादि द्वारा लाड लडाया गया, बारबार-२ दृष्टि दोष को दूर करने के लिये वस्त्रादिकों द्वारा ढांका गया, बारबार हृदय से लगाकर आलि-

विणीयाहिं' અને પોતપોતાના દેશમાં વસ્ત્રાભૂષણો જે રીતે પહેરાય છે તે રીતે વેષધારણ કરનારી તથા ઇંગિત ચિંતિત અને પ્રાર્થિત ને સારી રીતે જાણનારી સ્ત્રીવર્ગમાં કુશળ વિનય સંપન્ન. સ્ત્રીઓથી તેમજ "चेडियाचक्कवालतरुणीवंदपरियालपरिवुडे, वरिसधरकंचुइज्जमहत्तरगवंदपरिक्खित्ते" બીજી પણ દાસીઓના સમૂહથી અને યુવતીઓના સમૂહથી પરિવેષ્ટિત થયેલો તેમજ વર્ષધર કંચુકી અને મહત્તરક એમના સમૂહોથી પરિવેષ્ટિત થયેલો અને "हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे २ उपलालिज्जमाणे २, उवगूहिज्जमाणे २, अवयाहिज्जमाणे २, परियंदिज्जमाणे २ परिचुंबिज्जमाणे २, रम्मेसु मणिकुट्टिमतलेसु परंगिज्जमाणे २" એક હાથેથી બીજા હાથમાં વારંવાર જતો એકના ખોળામાંથી બીજાના ખોળામાં વારંવાર લઇ જવાતો, વારંવાર નૃત્ય ક્રિયા બતાવીને સંતુષ્ટ કરાયેલો, વારંવાર મધુર વચનો વડે લાડ કરીને, વારંવાર દષ્ટિ દોષને દૂર કરવા માટે વસ્ત્રાદિકોથી ઢાંકેલો,

टीका:—"तए णं से दढपइण्णे" इत्यादि—ततः खलु स दृढप्रतिज्ञो दारकः पञ्चधात्रीभिः—बालस्य स्तन्यपानादिकारिकाभिः पञ्चभिर्धात्रीभिः परिक्षिप्तः—परिवृतः, मूले "पंचधाईपरिक्खित्ते" इत्यत्र 'पंचधाई' इति लुप्ततृतीयान्तं पदं, तेन 'पञ्चधात्रीभिः' इतिच्छाया, तद्यथा—क्षीरधात्र्या—स्तन्यपायिकया १, मज्जनधात्र्या—स्नपनकारिकया २, मण्डनधात्र्या—मषीतिलकादिभिर्मण्डनकारिकया ३, अङ्कधात्र्या उत्सङ्गस्थापिकया ४, क्रीडनधात्र्या—क्रीडनकारिकया ५। एवं प्रकाराभिः पञ्चभिर्धात्रीभिः परिवृतः—युक्तः। तथा—अन्याभिः—एतदतिरिक्ताभिरपि बहुभिः—बहुप्रकाराभिः, कुब्जाभिः—वक्रपृष्ठाभिः, चिलातिकाभिः—अनार्यदेशोत्पन्नाभिः, काभिः ? इत्याह—वामनिकाभिः—ह्रस्वकायाभिः१, वटभिकाभिः—मडहकोष्ठाभिः—हीनैकपार्श्वभागाभिरित्यर्थः२, बर्बरीभिः—बर्बरदेशोद्भवाभिः३, बकुशिकाभिः४, यौनिकाभिः५, पल्हविकाभिः ६, इसिनिकाभिः ७, वासिनिकाभिः ८, लासिकाभिः ९, लकुशिकाभिः १०, द्राविडीभिः ११, सिंहलीभिः १२, आरबीभिः १३, पक्कणीभिः १४, बहलीभिः १५ मुरुण्डीभिः १६, शबरीभिः १७, पारसीभिः १८, एवमेताभिः तत्तन्नामानुरूपनानादेशीयाभिः—अनेकदेशोद्भवाभिः विदेशपरिमण्डि-

---

ङ्गन किया गया, 'चिरकाल तक जीवित रहो—' इस तरह के शुभाशीर्वादों से वधाया गया, वारवार चुम्बन किया गया—"रमेसु मणिकुट्टिमतलेसु परगिज्जमाणे-२ गिरिकंदरमल्लीणे विव चंपगवरपायवे निव्वाघायंसि, सुहसुहेणं परिवड्ढिस्सइ—" तथा रम्य—रमणीय मणिकुट्टिमतलों में रत्न जडित-अङ्गणों में वार-२ चलता हुवा. गिरिगुहा में स्थित चंपकवृक्ष की तरह निराबाध स्थान में सुखपूर्वक वृद्धि को प्राप्त करेगा.

टीकार्थ—मूलार्थ जैसा ही है, परन्तु फिर भी जो विशेषता है वह ऐसी है-"पंचधाई परिक्खित्ते-' यहां-पंचघाई. पद लुप्त तृतीयाविभक्ति वाला है, अतः—इसकी छाया-पंच धात्रीभिः ऐसी करनी चाहिये। "विदेशपरिमण्डि-

---

વારવાર હૃદયને ચાંપીને આલિંગન કરેલો "ઘણું જીવો" આ જાતના શુભાશીર્વાદોથી વધામણી આપેલો વારંવાર ચુંબિત કરેલો, "रंमेसु मणिकुट्टिमतलेसु परंगिज्जमाणे २ गिरिकंदरमल्लीण विव चंपगवरपायवे निव्वाधायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढिस्सइ" તેમજ રમ્ય-રમણીય મણિકુટ્ટિમતલોમા, રત્નજડિત આંગણાઓમા વારવાર ચાલતો, ગિરિગુહામા સ્થિત ચંપક વૃક્ષની જેમ સુખપૂર્વક મોટો થતો ગયો

ટીકાર્થ—મૂલાર્થ પ્રમાણે જ છે. પણ છતાએ જે વિશેષતા જણાય છે તે આ પ્રમાણે છે "पंचधाई परिक्खित्ते" અહીં "पंचधाई" પદ લુપ્તતૃતીયા વિભક્તિયુક્ત છે. એથી "पंचधात्रीभिः" એવી છાયા કરવી જોઇએ. "विदेशपरिमण्डिताभिः

ताभिः:-विदेश इति विदेशवेषः, तेन परिमण्डिताभिः विभूषिताभिः, स्वदेश-नेपथ्यगृहीतवेषाभिः—स्वदेशे निजदेशे यन्नेपथ्यंवस्त्राऽऽभूषणानां परिधानादिरचना तद्वद् गृहीतो वेषो याभिस्ता तथा, ताभिः. इङ्गितचिन्तितप्रार्थितविज्ञायिकाभिः तत्र इङ्गितं निपुणमतिगम्यं अभिप्रायरूपं प्रवृत्तिनिवृत्तिसूचकमीपद्भ्रूशिरःकम्पादिकं, चिन्तितं-हृदयगतं, प्रार्थितम्-अभिलषितं च विजानन्ति यास्तास्तथा ताभिः, निपुण-कुशलाभिःनिपुणानां चतुरनारीणां मध्ये याः कुशलाः-दक्षास्ताभिः, विनीताभिः-विनय-सम्पन्नाभिः परिक्षिप्त' इति पूर्वेण सम्बन्धः। पुनश्च चेटिकाचक्रवालतरुणीवृन्द-परिवारपरिवृतः-चेटिकाचक्रवालः दासीसमूहः, तरुणीवृन्दं युवति समूहः, तस्य परिवारेण परिवृतः परिवेष्टितः, पुन वर्षधरकञ्चुकिमहत्तरकवृन्दपरिक्षिप्तः, तत्र वर्षधराः अन्तःपुरकार्यकारिणो नपुंसकाः, कञ्चुकिनः अन्तःपुरप्रयोजननिवेदकाः अन्तःपुरप्रतीहारा वा, महत्तरकाः अन्तःपुरकार्यचिन्तकाः, तेषां वृन्देन—समूहेन परिक्षिप्तः परिवृतः स हस्ताद् हस्तम् एकं हस्ताद् अन्यहस्तं संह्रियमाण २=वारं वारं नीयमानः अत्र विप्सायां द्वित्वम्, एवमग्रेऽपि, एवम् अङ्काद् अङ्कम् एकस्या उत्सङ्गाद् अन्यस्या उत्सङ्गं परिभोज्यमानः-पाल्यमानः, उपनृत्यमानः, नर्तन दर्शनेन परितोष्यमाणः, उपगीयमानः गानं श्राव्यमानः, उपलाल्यमानः ललित मधुरवचनादिना लाल्यमानः उपगूह्यमानः दृष्टिदोषादिनिवारणार्थं वस्त्रादिभिराच्छाद्यमानः, श्लिष्यमाणः हृदयसंलग्नेन आलिङ्ग्यमानः परिष्वज्यमानः "चिरं जीव्याद्" इत्याद्याशीर्वचनैः स्तूयमानः, परिचुम्ब्यमानः, परिचुम्ब्यमानः, रम्येषु

ताभिः" में जो विदेश शब्द आया है वह "विदेश वेष अर्थ में है, इङ्गित वह चेष्टा विशेष है जो निपुणमतिद्वारा ही जाना जाता है, यह प्रवृत्ति निवृत्ति का सूचक होता है, तथा इस में थोडे से रूपमें शिरकम्पानादि किया जाता है.। हृदयङ्गत अभिप्राय का नाम चिन्तित हैं, तथा—अभिलषित का नाम-प्रार्थित है.। अन्तःपुर में जो कार्य करने के लिये नियुक्त किये जाते हैं, एवं जो नपुंसक होते हैं-इनका नाम वर्षघर हैं। अन्तःपुर सम्बन्धी प्रयोजनों का निवेदक होते हैं, अथवा-अन्तःपुर में जो प्रतिहारका काम करते हैं वे-कञ्चुकी

મા જે વિદેશ શબ્દ આવેલ છે તે 'વિદેશ વેષ' અર્થમાં વપરાયેલ છે. ઇંગિત-તે ચેષ્ટા વિશેષ છે. જે નિપુણમતિ વડે જ જાણી શકાય છે. આ પ્રવૃત્તિનિ સૂચક હોય છે. તથા એમાં ધીમેધીમે શિરકમ્પનાદિ કરવામાં આવે છે હૃદયગત અભિપ્રાય ને ચિંતિત કહે છે. તથા અભિલષિતને પ્રાર્થિત કહે છે અંતઃપુરમા જે કામ કરે છે અને જે નપુંસક હોય છે તે વર્ષધર છે અંતઃપુર સંબંધી પ્રયોજનો જે નિવેદક હોય છે, અથવા અંતઃપુરમાં જે પ્રતિહારનું કામ કરે છે તે કંચુકી

रमणियेषु मणिकुट्टीमतलेषु रत्नजटिताङ्गणेषु पर्यङ्कमाणः२=पुनः पुनश्चङक्रम्यमाणः, सन् गिरीकन्दरालीनः गिरिगुहास्थितः चम्पकवर पादप इव श्रेष्ठ चम्पकवृक्ष इव नीर्व्याघाते नीराबाधे स्थाने सुखपूर्वकं परिवर्धिष्यते वृद्धिं प्राप्स्यति ॥सू० १६९॥

मूलम्—तए णं त दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो साइरेग अट्ठ-वासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहिकरणणक्खत्तमुहुत्तंसि ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्त सव्वालकारविभूसियं करेत्ता महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं कलायरियस्स उवणेहिति। तए णं से कलायरिए त दढपण्णं दारग लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउण-रुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य गथओ य करणओ य सिक्खावेहिइ य, सेहावेहिइ य तं जहा—लेहं १ गणियं २ रूवं ३ नट्ट ४ गीय ५ वाइयं ६ सरगय ७ पुक्खरगयं ८ समतालं ९ जूयं १० जणवायं ११ पासग १२ अट्ठावयं १३ पोरेवच्च १४ दगमट्टियं १५ अन्नविहिं १६ पाणविहिं १७ वत्थविहिं १८ विलेवणविहि १९ सयणविहिं २० अज्जं २१ पहेलियं २२ मागहियं २३ णिद्दाइयं २४ गाहं २५ गीइयं २६ सिलोगं २७ हिरण्णजुत्ति २८ सुवण्णजुत्ति २९ आभरणविहिं ३० तरुणीपडिकम्म ३१ इत्थिलक्खणं ३२ पुरिसल-क्खणं ३३ हयलक्खणं ३४ गयलक्खणं ३५ कुक्कुडलक्खणं ३६ छत्त-लक्खणं ३७ चक्कलक्खणं ३८ दंडलक्खणं ३९ असिलक्खणं ४० मणिलक्खणं ४१ कागणिलक्खणं ४२ वत्थुविज्जं ४३ णगरमाणं ४४

कहलाते है, अन्तः-पुर मे क्या क्या कार्य होता है, इत्यादिका चिन्तवन करने वाले होते हैं, वे-महत्तरक हैं ॥ सू० १६९ ॥

કહેવાય છે. અંતઃપુરમાં શું શું કામ થવાનું છે તેની વિચારણા કરનારા મહત્તરક કહેવાય છે ॥ સૂ૦ १६९ ॥

खंधावारमाणं ४५ चारं ४६ पडिचारं ४७ वूहं ४८ चक्कवूहं ४९ गरुलवूहं ५० सगडवूहं ५१ जुद्धं ५२ नियुद्धं ५३ जुद्धजुद्धं ५४ अट्ठिजुद्धं ५५ मुट्ठिजुद्धं ५६ बाहुजुद्धं ५७ लयाजुद्धं ५८ ईसत्थं ५९ छरुप्पवायं ६० धणुवेयं ६१ हिरण्णपागं ६२ सुवण्णपागं ६३ मणिपागं ६४ धाउपागं ६५ सुत्तखेडं ६६ वट्टखेडं ६७ णालियाखेडं ६८ पत्तच्छेज्जं ६९ कडगच्छेज्जं ७० सजीवनिज्जीवं ७१ सउणरुयं ७२ इति। ॥सू० १७० ॥

छाया—ततः खलु तं दृढप्रतिज्ञं दारकम् अम्बापितरौ सातिरेकाष्टवर्षजातकं ज्ञात्वा शोभने तिथिकरणनक्षत्रमुहूर्ते स्नातं कृतबलिकर्माणं कृतकौतुकमंगलप्रायश्चित्तं सर्वालङ्कारविभूषितं कृत्वा महता ऋद्धिसत्कारसमुदयेन कलाचार्यस्य उप-

"तए णं तं दृढपइण्णं" इत्यादि

मूलार्थ—"तए णं" इसके बाद—"दढपइण्णं—" दृढ प्रतिज्ञ "दारगं" दारक बालक को—"अम्मापियरो" मातापिता "साइरेगअट्ठवासजायगं जाणित्ता—" आठ वर्ष से कुछ अधिक का हुवा जानकर—"सोभणंसि तिहिकरणणक्खत्त-मुहुत्तंसि ण्हायं" शोभनतिथि नक्षत्र मुहूर्त में उसे स्नान कराकर-"कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं, सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता—" उससे बलिकर्म काकआदि को अन्नादि का भाग देकर, कौतुकमङ्गलरूप प्रायश्चित्तकराकर, एवं—उसे समस्त अलङ्कारों से विभूषितकर—"महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं कला-यरियस्स उवणेहिंति—" अपनी विशाल ऋद्धि के अनुरूप सत्कारपूर्वक कला-

"तए णं तं दढपइण्णं" इत्यादि।

મૂલાર્થ—'तए णं' ત્યાર પછી 'दढपइण्णं' દૃઢપ્રતિજ્ઞ 'दारगं' દારક-બાળકને 'अम्मा पियरो' માતાપિતાઓએ "साइरेगअट्ठवासजायगं जाणित्ता' આઠ વર્ષ કરતાં થોડા મોટો થયેલ જાણીને 'सोभणंसि तिहिकरणक्खत्तमुहुत्तंसि ण्हाय' શોભનતિથિ નક્ષત્ર મુહૂર્તમાં તેને સ્નાન કરાવશે, 'कयबलिकम्मं, कयकोउयमंगल-पायच्छित्तं, सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता' તેના વડે બલિકર્મ-કાગડા વગેરેને અન્ન વગેરેનો ભાગ અપાવડાવીને, કૌતુક મંગલરૂપ પ્રાયશ્ચિત્ત કરાવીને અને તેને સમસ્ત અલંકારોથી વિભૂષિત કરીને 'महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं कलायरियस्स उवणेहिंति' પોતાની વિશાળ ઋદ્ધિના અનુરૂપ સત્કારપૂર્વક કલાચાર્યની પાસે મોકલશે,

नेष्यन्ति। ततः खलु स कलाऽऽचार्यः तं दृढप्रतिज्ञं दारकं लेखादिका गणितप्रधानाः शकुनरुतपर्यवसानाः द्वासप्तति कलाः सूत्रतश्च अर्थतश्च करणतश्च शिक्षयिष्यति च साधयिष्यति च, तद्यथा—लेखं १, गणितं २ रूपं ३ नाटयं ४, गीतं ५, वादितं ६, स्वरगतं ७, पुष्करगतं ८, समतालं ९, द्यूत १०, जनवादं ११, पाशकम् १२, अष्टापदं १३, पौरकृत्य १४, दकमृत्तिकाम् १५, अन्नविधिं १६, पानविधि १७, वस्त्रविधिं १८. विलेपनविधिं १९, शयनविधिम् २०, आर्यां २१, प्रहेलिका २२, मागधिकां २३, निद्रायिकां २४, गाथां २५,

चार्य के पास भेजेगे। "तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरि कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य गंथओ य करणओ य सिक्खावेहि इय सेहावेहि इय—" वह कलाचार्य उस दृढप्रतिज्ञ दारक को लेखादिक गणित प्रधान कलासे लेकर शकुनरुत तक की ७२ कलाओं को सूत्र-अर्थ और—तदुभय, एवं-करणरूप सिखावेगा, एवं इन्हें सिद्ध भी करावेगा, "तं जहा—लेहं १ गणियं २ रूवं ३ नट्टं ४ गीय-५-वायय—६ सरगयं—७ पुक्खरगयं—८ समताल—९—" वे बहत्तर कला इस प्रकार से हैं लेखन—१ गणित—२ रूप—३ नाटय—४ गीत—५ वादित्र—६ स्वरगत—७ पुष्करगत—८ समताल—९ "जूयं—" द्यूत-१० "जणवाय-" जनवाद-११ -"पासगं" पाशक—"अट्ठावय-" अष्टापद—"पोरेकच्चं-" पौरकृत्य-"दगमट्टिय-" दकमृत्तिका—"अन्नविहिं" अन्नविधि- पाणविहिं- पानविधि-'वत्थविहिं' वस्त्रविधि 'विलेवणविहिं-' विलेपनविधि-'सयणविहिं-' शयनविधि-'अज्जं-' आर्या-'पहेलियं-' प्रहेलिका-'मागहियं-' मागधिका-'णिद्दाइयं-' निद्रायिका-'गाहं-' गाथा-'गीइयं-'

'तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओय अत्थओय गंथओय करणओय सिक्खावेहिइय सेहावेहिइय' ते कलाचार्य ते दृढप्रतिज्ञदारकने लेखादिक गणित प्रधान कलाथी माडीने शकुनरुत सुधीनी ७२ कलाओने सूत्र अर्थ अने तदुभय अने करणरूपथी शीखवशे अने एमने सिद्ध पण करावशे तं जहा लेहं १, गणियं २, रूवं ३, नट्टं ४ गीय ५, वाइय ६, सरगय ७, पुक्खरगय ८, समतालं ९, ते ७२ कलाओ आ प्रमाणे छे-लेखन १ गणित २, रूप ३ नाटय ४, गीत ५, वादित्र ६, स्वरगत ७ पुष्करगत ८, समताल ९, 'जूयं' द्यूत १० 'जणवायं' जनवाद ११, 'पासगं' पाशक, 'अट्ठावयं' अष्टापद 'पोरेकच्चं' पौरकृत्य 'दगमट्टियं' दकमृत्तिका, 'अन्नविहिं' अन्नविधि 'पाणविहिं' पानविधि वत्थविहिं वस्त्रविधि 'विलेवणविहिं विलेपनविधि सयणविहिं' शयनविधि. 'अज्जं' आर्या, 'पहेलियं' प्रहेलिका 'मागहियं' मागधिका, 'णिद्दाइयं' निद्रायिका 'गाहं' गाथा, गीइयं गीतिका

गीतिकां २६, श्लोकं २७, हिरण्ययुक्तिं २८, सुवर्णयुक्तिम् २९, आभरणविधिं ३०, तरुणीप्रतिकर्म ३१, स्त्रीलक्षणं ३२, पुरुषलक्षणं ३३, हयलक्षणं ३४, गजलक्षणं ३५, कुक्कुटलक्षणं ३६, छत्रलक्षणं ३७, चक्रलक्षणं ३८, दण्डलक्षम् ३९, असिलक्षणं ४०, मणिलक्षणं ४१ काकिणीलक्षणं ४२, वास्तुविद्या ४३, नगरमानं ४४, स्कन्धावारमानं ४५, चारं ४६, प्रतिचारं ४७ व्यूहं ४८, चक्रव्यूहं ४९, गरुडव्यूहं ५०, शकटव्यूहं ५१, युद्धं ५२ नियुद्धं ५३ युद्धयुद्धम् ५४, अस्थियुद्धं ५५ मुष्टियुद्धं ५६ बाहुयुद्धं ५७ लतायुद्धम् ५८, इष्वस्त्रं ५९, त्सरुप्रवादं ६० धनुर्वेदं ६१ हिरण्यपाकं ६२ सुवर्णपाकं ६३ मणिपाकं ६४,

---

गीतिया-'सिलोगं-' श्लोक-'हिरण्णजुत्तिं-' हिरण्ययुक्ति-'सुवण्णजुत्तिं' सुवर्णयुक्ति 'आभरणविहिं-' आभरणविधि-'तरुणीपडिकम्मं-' तरुणीप्रतिकर्म-'इत्थिलक्खणं-' स्त्रीलक्षण-'पुरिसलक्खणं' पुरुषलक्षण 'हयलक्खणं-' हयलक्षण-'गयलक्खणं-' गजलक्षण 'कुक्कुडलक्खणं-' कुक्कुटलक्षण-'छत्तलक्खणं-' छत्रलक्षण-'चक्कलक्खणं' चक्रलक्षण-'दंडलक्खणं-' दण्डलक्षण 'असिलक्खणं-' असिलक्षण-'मणिलक्खणं' मणिलक्षण-'कागणिलक्खणं-' काकिणीलक्षण-'वत्थुविज्जं-' वास्तुविद्या-'णगरमाणं'-'नगरमानं-'खंधावारमाणं-' स्कन्धावारमान-'चारं-पडिचारं-वूहं-चक्कवूहं' चार-प्रतिचार-व्यूह-चक्रव्यूह, 'गरुडवूहं-सगडवूहं-जुद्धं-निजुद्धं जुद्धजुद्धं-अट्ठिजुद्धं-मुट्ठिजुद्धं-बाहुजुद्धं-लयाजुद्धं-इसत्थं-छरुप्पवायं-' गरुडव्यूह-युद्ध-नियुद्ध-युद्धयुद्ध-अस्थियुद्ध-मुष्टियुद्ध-बाहुयुद्ध-लतायुद्ध-इष्वस्त्र-त्सरुप्रवाद, 'धणुव्वेयं-हिरण्णपागं-सुवण्णपागं मणिपागं-धाउपागं-सुत्तखेडं-वट्टखेडं-जालियाखेडं-पत्तच्छेज्जं-' धनुर्वेद-हिरण्यपाक-

---

'सिलोगं' શ્લોક, 'हिरण्णज्जुत्तिं' હિરણ્યયુક્તિ 'सुवण्णजुत्तिं' સુવર્ણયુક્તિ, आभरणविहिं' આભરણવિધિ, 'तरुणीपडिकम्मं' તરૂણી પ્રતિકર્મ 'इत्थिलक्खणं' સ્ત્રીલક્ષણ 'पुरिसलक्खणं' પુરૂષલક્ષણ. 'हयलक्खणं' હયલક્ષણ 'गयलक्खणं' ગજલક્ષણ. 'कुक्कुडलक्खणं' કુક્કુટલક્ષણ. 'छत्त लक्खणं' છત્ર લક્ષણ. 'चक्कलक्खणं' ચક્રલક્ષણ 'दंडलक्खणं' દંડ લક્ષણ. 'असिलक्खणं' અસિ લક્ષણ. 'मणिलक्खणं' મણિલક્ષણ 'कागणिलक्खणं' કાકિણી લક્ષણ. 'वत्थुविज्जं' વાસ્તુવિદ્યા. 'णगरमाणं' નગરમાન 'खंधावारमाणं' સ્કંધાવાર માન 'चारं पडिचारं वूहं-चक्कवूहं' ચાર-પ્રતિચાર-વ્યૂહ-ચક્રવ્યૂહ. 'गरुडवूहं-सगडवूहं-जुद्धं-निजुद्धं-जुद्धजुद्धं-अट्ठिजुद्धं-मुट्ठिजुद्धं-बाहुजुद्धं लयाजुद्धं-इसत्थं-छरुप्पवायं" ગરૂડ વ્યૂહ. શકટ વ્યૂહ. યુદ્ધ નિયુદ્ધ. યુદ્ધ-યુદ્ધ અસ્થિ યુદ્ધ. મુષ્ટિયુદ્ધ. બાહુયુદ્ધ, લતાયુદ્ધ. ઇષ્ટવસ્ત્ર ત્સરૂ પ્રવાદ. "धणुव्वेयं हिरण्णपागं सुवण्णपागं मणिपागं धाउपागं सुत्तखेडं वट्टखेडं णालियाखेडं पत्तच्छेज्जं" ધનુર્વેદ. હિરણ્યપાક. સુવર્ણપાક. મણિપાક. સૂત્રખેલ વર્ત

धातुपाकं ६५ सूत्रखेलं ६६ वर्तखेलं ६७ नालिकाखेलं ६८ पत्रच्छेद्य ६९, कटकच्छेद्यं ७० सजीवनिर्जीव ७१ शकुनरुतम् ७२, इति ॥ सू० १७० ॥

टीका—'तए णं त दढपइण्णं' इत्यादि—ततः खलु तं दृढप्रतिज्ञ दारकम् अम्बा-पितरौ-तन्माता-पितरौ, सातिरेकाष्टवर्षजातकं-संजातकिञ्चिदधिकाष्टवर्षक ज्ञात्वा-परिभाव्य शोभने तिथिकरण-नक्षत्रमुहूर्ते—तिथिश्च करणं च नक्षत्रं च मुहूर्तं चेत्येतेषां समाहारः तिथिकरण-नक्षत्रमुहूर्तं, तत्र शोभनशब्दस्य सर्वत्र सम्बन्धात् शोभनायां तिथौ—नन्दा जया पूर्णारूपायां, शोभने करणे—स्थिरसंज्ञके, शोभने नक्षत्रे—विद्याऽध्ययनयोग्ये ज्ञान-वृद्धिकारके मृगशीर्षाऽऽर्द्रापुष्यः-अश्लेषा-मूल,-पूर्वाफाल्गुनी,-पूर्वाषाढा,-पूर्वाभाद्रपद,-हस्त-चित्रा-रूपे नक्षत्रदशकेऽन्यतमे-शोभने मुहूर्ते-शुभायां वेलायां स्नातं—कृत स्नानं, कृतबलिकर्माणं—काकादिभ्यः कृतान्नभागं कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तं—कृता-नि—रम्पादितानि कौतुकानि—मषीतिलकादीनि मङ्गलानि—मङ्गलविधायकानि दध्य-क्षतादीनि तान्येव प्रायश्चित्तानि—दुःस्वप्नादि विघातार्थमवश्यकरणीयत्वात् प्रा-

---

सुवर्णपाक-मणिपाक-धातुपाक-सूत्रखेल वर्त्त खेल—नालिकाखेल—पत्रच्छेद्य. 'कडग च्छेज्जं-सजीवनिज्जीवं—सउणरुयं-७२-त्ति-' कटकच्छेद्य सजीवनिर्जीव-और शकुनरुत.७२।

टीकार्थ—जब दृढप्रतिज्ञ दारक आठ वर्ष से अधिक वय का हो जावेगा—तव उसके मातापिता उसे शुभ तिथि में—नन्दा—जया—पूर्णारूप तिथि में, शुभकरण में—स्थिरनामके शुभकरण में, तथा—विद्याध्यनयोग्य—ज्ञानवृद्धिकारक मृगशीर्ष—आर्द्रा—पुष्य-अश्लेषा-मूल-फाल्गूनी-पूर्वाषाढा-पूर्वाभाद्रपद-हस्त-और चित्रा रूप नक्षत्र दशकमें, और शुभवेलामें कलाचार्य के पास ले जावेगे। इसके पहले वे उस वालक को स्नान करावेंगे, वायस—काक आदिकों को देने के लिये उससे अन्न का विभाग कराकर वितरित करावेगे. वह मषी तिलक आदि रूप कौतुक को तथा—दुःस्वप्न आदिरूप अमंगल के विघातक—होने से अवश्य करणीय ऐसे दध्यक्षतादिरूप प्रायश्चित्तको करेगा. और फिर वह समस्त

ખેલ. નાલિકા ખેલ પત્રચ્છેદ્ય "कडगच्छेज्जं सजी निज्जीवं सउणरुयं ७२ ति" કટકચ્છેદ્ય. સજીવનિર્જીવ અને શકુન રૂત ૭૨.

ટીકાર્થ.—જ્યારે દૃઢપ્રતિજ્ઞદારક આઠ વર્ષ કરતા મોટો થઈ જશે ત્યારે તેના માતાપિતા તેને શુભતિથિમા નંદા જયા પૂર્ણારૂપ તિથિમા, શુભકરણમાં, સ્થિર નામના શુભકરણમા, તથા વિદ્યાધ્યયન યોગ્ય જ્ઞાનવૃદ્ધિકારક મૃગશીર્ષા આર્દ્રા પુષ્ય અશ્લેષા મૂલ-પૂર્વાફલ્ગુની પૂર્વાષાઢા પૂર્વાભાદ્રપદ હસ્ત અને ચિત્રા એ નક્ષત્રદશકમા અને શુભવેલામા કલાચાર્યની પાસે લઈ જશે. અને પહેલા તેઓ તે બાળકને સ્નાન કરાવશે, વાયસ વગેરેને આપવા માટે તેની પાસેથી અન્નવિભાગ કરાવીને વિતરિત કરશે તે મષીતિલક વગેરે રૂપ કૌતુકને તેમજ દુઃખસ્વપ્ન વગેરે રૂપ અમંગલના વિઘાતક હોવાથી અવશ્યકરણીય એવા દધ્યક્ષતાદિ રૂપ પ્રાયશ્ચિત્તને કરશે.

श्चित्तरूपाणि येन स तम्, सर्वालङ्कारविभूषितं—परिधृतकटककुण्डलाद्याभरणम् सर्वे-समस्ताः हस्तचरणकण्ठादिसमस्तावयवयोग्या अलङ्काराः—वस्त्राभरणरूपाः तैः विभूषितं-सज्जितं परिहितशुद्धप्रवेश्यवस्त्र परिधृतकटककुण्डलाद्याभरणं च, एतादृशं सुसज्जित दृढप्रतिज्ञ दारकं कृत्वा महता ऋद्धिसत्कारसमुदयेन-ऋद्धिः वस्त्रसुवर्णादिसम्पत् तथा सत्कारः सत्कारयुक्तः समुदयः—समागतजनसमुदायो यत्र स तेन-महोत्सवपूर्वकमित्यर्थः कलाचार्यस्य—कलाशिक्षकस्य समीपे उपनेष्यतः। ततः खलु स कलाऽऽचार्यः तं दृढप्रतिज्ञ दारकं लेखादिकाः गणितप्रधानाः शकुनरुत पर्यवसानाः द्वासप्तति कलाः सूत्रतः—मूलतः अर्थतः—अर्थोपदर्शनतः, ग्रन्थतः—ग्रन्थरूपेण तासां लेखनतः करणतः—प्रयोगतश्च शिक्षयिष्यते—अध्यापयिष्यति साधयिष्यति साध्याः कारयिष्यतिश्च। तद्यथा—ताः कला यथा-लेखम् लेखः-अक्षर-विन्यासः तद्विषया कलाविज्ञानं लेखएवोच्यते तं लेखम्-लेखविज्ञानम् कला-

---

अलङ्कारों से कटक-कुण्डलादिरूप आभरणों से अपने को सुसज्जित करेगा. तत् पश्चात्—वह सभा में प्रवेश योग्य शुद्ध वस्त्रों को धारण करेगा. इस प्रकार से सुसज्जित हुवे उस दृढप्रतिज्ञ कुमार को वे मातापिता अपनी ऋद्धि के अनुसार वस्त्र सुवर्णादि सम्पत्ति के अनुरूप समागत जन—समुदाय के साथ सत्कारपूर्वक—महोत्सव पूर्वक उसे कलाचार्य के पास ले जावेंगे। तब वह—कलाशिक्षक उस दृढप्रतिज्ञ दारक को गणितप्रधान लेखादिक कलाओं को शकुनिरुतान्त (पक्षिके शुकुन देखने तककी) कलातक यथावत् सिखावेगा. ये सब कलाएँ ७२-होती है। सूत्र से तथा अर्थोपदर्शन से, एवं तदुभय से—अर्थात् सूत्र और अर्थ दोनों प्रकार से और—प्रयोगरूप से वह इन सब कलाओं के। उसे पढावेगा. पढाकर वह इन कलाओं में क्रियात्मकरूप से उसे निपुण भी करदेगा। उन ७२ कलाओं के नाम इस प्रकार से हैं—लेख अक्षरविन्यास, इस विषय का

પછી તે સમસ્ત અલંકારોથી કટક કુંડલાદિ રૂપ આભરણોથી પોતાના શરીરને સુસજ્જિત કરશે. ત્યાર પછી તે શુદ્ધ વસ્રો ધારણ કરશે. આ પ્રમાણે સુસજ્જિત થયેલા તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કુમારને તેના માતાપિતા પોતાની ઋદ્ધિ મુજબ વસ્ત્રસુવર્ણ વગેરે સંપત્તિના અનુરૂપ આવેલ જનસમુદાયની સાથે સત્કારપૂર્વક, મહોત્સવપૂર્વક તેને કલાચાર્ય પાસે લઈ જશે ત્યારે તે કલાશિક્ષક તે દૃઢપ્રતિજ્ઞદારકને ગણિત પ્રધાન લેખાદિક કલાઓથી શકુનિરૂતાન્ત સુધીની સમસ્ત કલાઓને યથાવત શીખવાડશે. આ બધી કલાઓ ૭૨ છે સૂત્રરૂપે, અર્થોપદર્શનરૂપે, ગ્રન્થરૂપે અને પ્રયોગરૂપે તે કલાચાર્ય તેને સમસ્ત કલાઓનો અભ્યાસ કરાવશે. અભ્યાસ કરાવીને તે તેને ક્રિયાત્મક રૂપમાં પણ નિપુણ બનાવશે. તે ૭૨ કલાઓના નામ આ પ્રમાણે છે. લેખ—અક્ષરવિન્યાસ આ વિષયનું જે વિજ્ઞાન હોય છે તે પણ 'લેખ' જ છે આ 'લેખ'માં અક્ષર વગેરે લખ-

ऽऽचार्यः शिक्षयिष्यतीति सम्बन्धः एवमग्रेऽपि संयोजना कर्तव्या। लेखो लिपि विषयभेदाद् द्विविधः तत्र लिपिः ब्राम्ह्यादिभेदेनाष्टादशविधा, सा च समवायाङ्गसूत्रगताऽष्टादशसमवायोक्ता बोध्या। अथवा लाटादिदेशभेदतोऽनेकविधा भवति। पुनश्च वल्कलकाष्ठदन्तलोहताम्ररजतपाषाणाद्याधारेषु लेखनोत्किरणस्यूतव्यूतच्छिन्नभिन्नदग्धसंक्रान्तितोऽक्षरविन्यासरूपा लिपिरनेकविधा भवति। विषयमाश्रित्य स्वामिभृत्यपितापुत्रकलत्रपतिगुरुशिष्यशत्रुमित्रादिविषया कार्श्य स्थौल्यवैषम्यपङ्क्तिवक्रत्वपदच्छेदादिभेदभिन्ना चानेकविधा भवति १. गणितम्—पट्टिकादि प्रसिद्धमेकद्व्यादि संकलनगुणभागादिरूपम् २. रूपम् लेप्यशिलासुवर्णरजतमणिवस्त्रचित्रादिलक्षणम् ३। नाटयम्—साभिनयनिरभिनयभेदभिन्नं

जो विज्ञान हो जाता है वह भी लेख ही है, इस लेख में अक्षरादिके लिखने में निपुण हो जाना यह—लेखकला है, यह लेख-लिपि, एवं-विषय भेदसे दो प्रकार का है. इनमें—ब्राह्मी आदि के भेद से लिपि १८—प्रकार की है. यह—विषय "समवायाङ्गसूत्र में १८-वें समवान में कहा गया है। अथवा—लाटादि के भेद से लिपि अनेक प्रकार भी होती है, पुनः-वल्कल—काष्ठदन्त—लोह—ताम्र—रजत—पाषाण—आदि आधारों के ऊपर अक्षरों का लिखना, उन पर अक्षरों का टांकी आदि से अङ्कित—(उकेरना) इत्यादिरूप से अक्षरविन्यासरूप लिपि अनेक प्रकार की है। विषय की अपेक्षा भी स्वामी—भृत्य—पिता-पुत्र—कलत्र—पति—गुरु—शिष्य—शत्रु और—मित्रादि को विशय करने वाली जो लिपि है वहभी कृशता स्थूलता आदिरूप से विन्यास की अपेक्षा अनेक प्रकार होती है १। गणितरूप कला गुणा—भाग, वीजगणित-रेखागणित आदि होती है २। रूपकला-लेख्य, शिला, सुवर्ण, रजत—आदि के ऊपर चित्र को उतारनेरूप या—

વામા કુશળતા મેળવવી તે લેખકલા છે આ લેખ—લિપિ અને વિષ્યભેદથી બે પ્રકારનો છે આમા બ્રાહ્મી વગેરેના ભેદથી ૧૮ પ્રકારની લિપિ છે આ વિષય 'સમવાયાઙ્ગ' સૂત્રમા ૧૮ મા સમવાયમા આવેલ છે અથવા લાટાદિના ભેદથી લિપિના ઘણા પ્રકારો છે. અને વલ્કલ, કાષ્ઠ, દંત, લોહ. તામ્ર, રજત પાષાણ વગેરે આધારો પર અક્ષરો લખવાં. તેમની ઉપર ટાકણુથી ટાકવુ વગેરે રૂપમા અક્ષર વિન્યાસ લિપિ ઘણા પ્રકારની છે. વિષયની અપેક્ષાએ પણ સ્વામી ભૃત્ય, પિતા. પુત્ર, કલત્ર પતિ, ગુરૂ, શિષ્ય, શત્રુ અને મિત્ર વગેરેને વિશય કરનારી જે લિપિ છે તે પણ કૃશતા સ્થૂલતા વગેરે રૂપથી વિન્યાસની અપેક્ષાએ અનેક પ્રકારની હોય છે ૧.ગણિતકલા ગુણા—ભાગ બીજ ગણિત, રેખા ગણિત વગેરે પ્રકારની હોય છે. ૨.રૂપકલા—લેખ્ય, શિલા સુવર્ણ, રજત વગેરેની ઉપર ચિત્રને ઉતારવા રૂપ કે લેખન રૂપ હોય છે ૩ નાટયકલા અભિનય સહિત

नर्तनम् ४। गीतम्—गन्धर्वकलाज्ञानविज्ञानरूपम् ५। वादितम्—ततविततादि भेदभिन्नं वाद्यम् ६। स्वरगतम्—षड्जऋषभादिस्वरज्ञानम् ७। पुष्करगतम्—मृदङ्गमुरजादिभेदयुक्तं विज्ञानम्, अस्य वाद्यान्तर्गतत्वेऽपि यत्पृथक्कथनं तत् परमसङ्गीताङ्गत्वख्यापनार्थम् ८। समतालम्—समः-अन्यूनाधिकमात्रः तालः-गीतादिमानकालो यत्र तत् समतालविज्ञानमित्यर्थः ९। द्यूत—प्रसिद्धम् १०। जनवादं—द्यूतविशेषः ११। पाशकम्—पाशैः खेलनरूपं द्यूतम् १२। अष्टापदम्-सारिफलद्यूतमेव १३। पौरकृत्यम्-पुरस्य कृतिः-निर्माणं तद्विषयं विज्ञानं पौरकृत्यं-पुरनिर्माणकलेत्यर्थः, तत् अत्र त्रिविधः पाठ उपलभ्यते तथाहि-पोरेकच्च' 'पोरेवच्चं' 'पोरेकव्वं' इति। प्रत्येकस्य छायापि तदनुसारेणैव भवति—'पोरेकृत्यम्' पौरपत्यम् 'पुरःकाव्यम्' इति। तत्र पोरेकच्चं' इत्यस्य व्याख्याऽत्र कृता 'पोरेवच्चं' पौरपत्यम्—नगररक्षककला, 'पोरेकव्वं' पुरःकाव्यम—पुरतःपुरतः काव्यरूपवाणी निस्सारणं शीघ्रकवित्वमित्यर्थः।१४। दकमृत्तिकम्-उदकसंयुक्तमृत्तिका विवेकद्रव्यप्रयोग-

लिखने रूप होती है. ३। नाट्यकला-अभिनयसहित, विना अभिनय के भेद से दो प्रकार की होती है ४। गीतकला—गाने आदि में निपुणता प्राप्त करनेरूप होती है. ५। वादित्रकला—तत, वितत आदिरूप वादित्रों के बजाने रूप होती है ६। स्वरकला—षड्ज, ऋषम—आदि के ज्ञान करानेरूप होती है ७। पुष्करगतकला—मृदङ्ग, मुरज आदि के बजानेरूप होती है। यद्यपि—यह कला वादित्रकला में अन्तर्भूत हो जाती है, फिर भी—इसे जो स्वतन्त्ररूप से अलग कला कही गई है सो-यह सङ्गीतकला-में उसका उत्कृष्ट अङ्ग है. इस बात को प्रकट करने के लिये कहा गया है ८। गीतादिकों का मान काल जहां होता है, उसका नाम ताल है, इस ताल का जो विज्ञान है वह समताल विज्ञान है ९। जूआ खेलने की चतुराइ का नाम द्यूतकला है १०। जनवाद-यह भी एक प्रकार का विशेष जूआ है, ११। पाशों से द्यूत खेलने की विशेष निपुणता का नाम पाशकला है. १२। सारिफल द्यूतरूप अष्टापद कला होती है १३। नगर के निर्माण करने की कला का नाम पौरकृत्यकला-

અભિનય આમ બે પ્રકારની હોય છે. ગીતકલા-સંગીત વગેરેમા નિપુણતા પ્રાપ્ત કરવી તે છે ૫ વાદિત્રકલા તત, વિતત વગેરે વાજિંત્રોને વગાડવા તે છે ૬. સ્વરકલા-ષડજ, ઋષભ વગેરેનું જ્ઞાન મેળવવું તે છે ૭. પુષ્કરગત કલા-મૃદંગ, મુરજ વગાડવા તે છે, જો કે આ કલા વાજિંત્રકલાની અન્તર્ભૂત થઈ જાય છે પણ છતાંએ આને જે સ્વતંત્ર રૂપમાં જુદી કલા ગણી છે તેનું કારણ આ છે કે આ કલાનું સંગીત કલામાં અતીવ મહત્ત્વપૂર્ણ સ્થાન છે ૮. ગીત વગેરેનો જે માનકાલ હોય છે તેનુ નામ તાલ છે, આ તાલનુ જે વિજ્ઞાન છે તે સમતાલ વિજ્ઞાન છે ૯. જુગાર રમવાની કુશળતાનું નામ દ્યૂત- ૧૦. જનવાદ પણ એક જાતનો વિશેષ જુગાર છે ૧૧. પાસાઓથી જુગાર રમવામાં નિપુણતા મેળવવાનું નામ 'પાશકલા' છે ૧૨. સારિફલ દ્યૂતરૂપ અષ્ટાપદકલા ૧૩ નગરની નિર્માણકલા પૌરકૃત્યકલ છે ૧૪, ઉદક (પાણી)મા મળેલી માટીને જે

पूर्विका त पृथक्करणकलाऽप्युपचाराद् दकमृत्तिका ताम् १५। अन्नविधिम्—अन्न पाककलाम् १६। पानविधि—जलोत्पादनकलां तत्संशोधनकलां वा १७। वस्त्र-विधिम्-वस्त्रोत्पादनकलां तद्धारणकलां वा १८। विलेपनविधि-शरीरोपरिचन्दना-दिलेपकलां यक्षकर्दमादिलेप परिज्ञानम् १९। शयनविधिम् शयनं-शय्या पल्यङ्कादि. तद्विषया कला ताम् २०। आर्याम्-मात्राच्छन्दो विशेषनिर्माणकलाम् २१। प्रहेलिकाम्—गूढाशयपद्यरूपाम् २२। मागधिकाम्—भाषाच्छन्दोविशेषाम् २३।

है. १४। उदक में मिली हुई मिट्टी को दूर करनेवाले द्रव्य का ज्ञान होना, और-उसका सम्बन्ध कराकर पानी और मिट्टी को दूर कर देना यह—दकमृत्तिका कला है जैसे—निर्मली—फिटकिडी डालकर गन्दे पानी को निर्मल करदिया जाता है. १५। भोजन बनाने की चतुराई का नाम अन्नविधि कला है, १६। भूमि का देखकर यहां जल निकलेगा इस प्रकारके विज्ञान का नाम पानविधि कला है. १७। वस्त्रों का निर्माण करने की चतुराई का नाम, या—वस्त्रों को सुन्दर ढग से पहनने की चतुराई का नाम वस्त्रविधि कला है. १८। शरीर के ऊपर चन्दनादि का लेप करने की चतुराई का नाम-विलेपनविधि है, १९। पल्यङ्क आदि विषयक ज्ञान होना—अर्थात् इस प्रकारका पल्यङ्क शुभ होता है—इस प्रकार का पल्यङ्क शुभ नहीं होता है, ऐसा ज्ञान होना इसका नाम—शयनविधि कला है २०। मात्रावाले छन्दों का निर्माण करना. यह—आर्या कला है, २१। गूढ आशयवाले पद्यों की निर्माणकला प्रहेलिका कला है. २२। भाषाछन्द विशेष का नाम-मागधिका है, इसके निर्माण की चतुराई का नाम मागधिकाकला है, २३। निद्रा लाने की विद्या

દ્રવ્યથી જુદી પાડી શકાય તેનું જ્ઞાન થવુ અને તેનો સંબંધ કરાવીને પાણી અને માટીને જુદા જુદા કરવા આ દકમૃત્તિકા કલા છે જેમકે નિર્મલી-ફટકડી નાખીને ગંદા પાણીને સાફ કરવામાં આવે છે ૧૫ ભોજન તૈયાર કરવાની કુશળતાનુ નામ અન્ન વિધિ કલા છે ૧૬ જમીનને જોઇને અહીંથી પાણી નીકળશે આ જાતના વિજ્ઞાનનું નામ 'પાનવિધિ કલા' છે ૧૭ વસ્ત્રોના નિર્માણની કુશળતાનું નામ અથવા તો વસ્ત્રોને સુંદર ઢંગથી પહેરવાની કળાનુ નામ વસ્ત્રવિધિ કળા છે ૧૮ શરીરની ઉપર ચન્દન વગેરેનો લેપ કરવાની કુશળતાનું નામ વિલેપનવિધિ છે ૧૯ પલ્યંકાદિ વિષયકજ્ઞાન થવું એટલે કે આ જાતનો પલ્યંક શુભ હોય છે. આ જાતનો પલ્યંક શુભ નથી હોતો આવું જ્ઞાન થવું, આનુ નામ શયનવિધિ કલા છે ૨૦ માત્રાવાળા છંદોનુ નિર્માણ કરવું તે આર્યાકલા છે ૨૧ ગૂઢ આશયયુક્ત પદ્યોનો નિર્માણક્રમ 'પ્રહેલિકા-કલા' છે ૨૨ ભાષા છન્દ વિશેષનું નામ માગધિકા છે. એની નિર્માણ કુશળતા માગધિકા કલા છે ૨૩ નિદ્રા આવવાની 'દ'

निद्रायिकाम्—अवस्वापनी विद्यारूपां कलाम् २४। गाथागीतिका चेति कलाद्वय-मार्याभेदरूपाम् २५ २६। श्लोकम्—श्लोकरचनाकलाम् कवित्वकलामित्यर्थः २७। हिरण्ययुक्तिम्—हिरण्यस्य-रजतस्य युक्तिः—निर्माणविधिस्ताम् २८। सुवर्ण युक्तिम् सुवर्णस्य युक्तिः—निर्माणविधिस्ताम् २९। आभरणविधिम्—भूषणनिर्माणकलाम् ३०। तरुणीपरिकर्म—स्त्रीणां वर्णादिवृद्धिरूपाम् ३१। स्त्री-लक्षणम्, पुरुषलक्षणम्, एतद्द्वयं सामुद्रिकशास्त्रप्रसिद्धं विज्ञानम् ३२—३३। हय-गज-कुकुट-च्छत्र-चक्र-दण्डानां प्रसिद्धानां सप्तानां तत्तल्लक्षणज्ञानकलाः ३४—४०। मणिलक्षणम्-रत्नादि—परीक्षणम ४१। काकिणीलक्षणम्—काकिणी—चक्रवर्तिनो

का ज्ञान होना उसका नाम—निद्रायिका कला है, इस कलावाला दूसरे को इस कला के प्रभाव से निद्रा में मग्न कर देता है २४। गाथा-और गीतिका ये दोनों कलाएं आर्या का ही मेदरूप होती है,२५-२६ श्लोकरचना करने की चतुराई का नाम—श्लोककला है, इसका दूसरानाम—कवित्वकला भी है २७। हिरण्य युक्ति—चान्दी बनाने की कला २८ सुवर्णयुक्ति-सोना बनाने की कला २९ भूषणों के निर्माण की विधि का जानना. आभरणविधि कला है. ३०। स्त्रियों के वर्णादिक में विधान का जानना. तरुणीपरिकर्मकला है. ३१। स्त्रीयों के शुभाऽशुभ लक्षणो का जानना. स्त्रीलक्षणकला है. ३२। पुरुषलक्षणों का जानना यह पुरुष लक्षणकला-है.३३। दोनों कलाएँ सामुद्रिकशास्त्र से सम्बन्धित हैं। घोडा—हाथी—कुकूट—छत्र—चक्र-दण्ड असि (तलवार) इन सातों के शुभाऽशुभ लक्षणों का जानना इसका नाम उस उस नाम की कला है ३४—४०। रत्नादिकों की परीक्षा करना इसका नाम मणिलक्षण कला है.४१। काकिनी कला में—चक्रवर्ती के रत्न विशेष की परीक्षा

જ્ઞાન થવું તે 'નિદ્રાયિકા કલા છે આ કલાને જાણનારને બીજાને આ કલાના પ્રભાવ-થી નિદ્રામગ્ન કરે છે૨૪. ગાથા અને ગીતિકા આ બન્ને કલાઓ આર્યાનાજ ભેદરૂપમા છે ૨૫-૨૬ શ્લોક રચનામા કુશળતાનું નામ શ્લોક કલા છે. આનું બીજુ નામ કવિત્વકલા પણ છે ૨૭ હિરણ્ય યુકિત ચાંદી બનાવવાની કલા, ૨૮ સુવર્ણને યુકિત-સોનું બનાવવાની કળા૨૯ આભરણવિધિ—આભૂષણોને બનાવવાની વિધીને જાણવી તે આભરણવિધિ કલા છે ૩૦. સ્ત્રીઓના વર્ણાદિકમા વૃદ્ધિવિધાન જાણવું તે તરૂણી પરિકર્મ કલા છે૩૧. સ્ત્રીઓના શુભાશુભ લક્ષણો જાણવા તે સ્ત્રીલક્ષણ કલા છે૩૨. પુરૂષ લક્ષણો જાણવા એ પુરૂષ લક્ષણ કલા છે૩૩. એ બન્ને કલાઓ સામુદ્રિકશાસ્ત્રની સાથે સંબંધ રાખે છે ઘોડા—હાથી—કુકકુટ—છત્ર-ચક્ર—દંડ—અસિ—(તરવાર) એ સહિતના શુભા-શુભ લક્ષણો જાણવા તેના નામો તે તે કલા વિશિષ્ટ સમજવા ૩૪-૪૦રત્નાદિકોની પરીક્ષા તે મણિલક્ષણ કલા છે૪૧. કાકિણી કલામા—ચક્રવર્તીના રત્નવિશેષની પરીક્ષા તેના લક્ષણોના

रत्नविशेषस्तस्य लक्षणम् ४२। वास्तुविद्याम्—गृहभूमेर्गुणदोषज्ञानरूपाम् ४३। नगरमानम्—नगरस्य दशयोजनाऽऽयाम-नवयोजनव्यासादि-प्रमाणज्ञानम् ४४। स्कन्धावारमानम्-सेनानिवेशप्रमाणज्ञानम् ४५। चारम्-चारो-ज्योतिश्चारः, तद्विज्ञानम् ४६। प्रतिचारम्—प्रतिचरण प्रतिचारः—रोगिणः प्रतीकारकरणं, तद्विषयकज्ञानम् ४७। व्यूहम्—सामान्यतः सैन्यरचनं, तद्विषयज्ञानम् ४८। चक्रव्यूहम्—चक्राऽऽकृतिकसैन्यरचना ४९। गरुडव्यूहम्—गरुडाऽऽकृतिकसैन्यरचनाम् ५०। शकटव्यूहम्—शकटाऽऽकृतिकसैन्यरचनाम् ५१। युद्धम्—युद्धकलाम् ५२। नियुद्धम्—मल्लयुद्धकरणकलाम् ५३। युद्धयुद्धम्-खड्गादिप्रक्षेपणपूर्वकमहायुद्धकलाम् ५४। अस्थियुद्धम्-अस्थिभिः—कूर्परादिभिः प्रहरणं, तत्कलाम्। यद्वा 'दृष्टियुद्धम्' इति

करने के लक्षणों को जानना ४२। गृहभूमि के गुण दोषों का ज्ञान होना इसका नाम वास्तु विद्या कला है,४३ नगरकी दशयोजन लम्बाई और नौ योजन चौडाई आदि प्रमाण का ज्ञान होना यह नगरमान कला है ४४। सेनानिवेश के प्रमाण का होना—स्कन्धावार मानकला है ४५। नक्षत्रादिक ज्योतिष्कों की चाल का ज्ञान होना चारककला है.४६। रोगों के प्रतिकार करने के उपायों का ज्ञान होना प्रतिचारकला है. ४७। सामान्यरूप में सैन्यरचना का ज्ञान होना, यह व्यूह कला है. ४८। चक्राकाररूप में सैन्य की रचना करना चक्रव्यूहकला है. ४९। गरुड के आकार में सैन्य की रचना करना यह गरुड व्यूहकला है. ५०। शकट के रूपमें सैन्य की रचना करने का ज्ञान होना यह शकटव्यूहकला है ५१। युद्ध करने का ज्ञान होना यह युद्धकला है, ५२। मल्लयुद्ध करने का ज्ञान होना यह मल्लयुद्ध या नियुद्धकला है ५३। तलवार आदि चलाते हुवे घमासान युद्ध करना यह युद्धयुद्धकला है. ५४। अस्थि—कोहनी आदि से प्रहार करने की चतुराई का

આધારે કરવામા આવે છે ૪૨ ગૃહભૂમિના ગુણદોષોનું જ્ઞાન થવું તે વાસ્તુવિદ્યાકલા છે ૪૩ નગરની દશ યોજન લબાઈ અને નવયોજન પહોળાઇ વિગેરે પ્રમાણનુ જ્ઞાન થવું તે 'નગરમાન કલા' છે.૪૪ સેનાનિવેશના પ્રમાણનું જ્ઞાન થવુ તે સ્કંધાવારમાન કલા છે.૪૫ નક્ષત્રાદિક જ્યોતિષ્કોની ગતિનુ જ્ઞાન થવુ તે ચાર કલા છે ૪૬ રોગોને મટાડવાના ઉપાયોનુ જ્ઞાન તે પ્રતિચાર કલા છે.૪૭ સામાન્ય રૂપથી સૈન્યરચનાનુ જ્ઞાન થવુ તે વ્યૂહ કલા છે ૪૮ ચક્રાકારરૂપમાં સૈન્યરચના કરવી ચક્રવ્યૂહ કલા છે ૪૯ ગરુડના આકારથી સૈન્યની રચના કરવી તેનું નામ ગરુડવ્યૂહ કલા છે ૫૦ શકટના રૂપમાં સૈન્યની રચના કરવાનુ જ્ઞાન થવું તે શકટવ્યૂહ કલા છે ૫૧ યુદ્ધ કરવાનુ જ્ઞાન થવું તે યુદ્ધ કલા છે ૫૨ મલ્લયુદ્ધ કરવાનુ જ્ઞાન થવુ તે મલ્લયુદ્ધ કે નિયુદ્ધકલા છે. ૫૩ તરવાર વગેરે ફેરવતાં ભયંકર યુદ્ધ કરવુ તે યુદ્ધયુદ્ધ કલા છે ૫૪ અસ્થિ—કોણી વગેરેથી પ્રહાર કરવાની કુશળતાનુ નામ અસ્થિયુદ્ધ કલા છે અથવા દૃષ્ટિ યુદ્ધ [illegible]

पाठः प्रतिद्वन्द्विनोश्चक्षुषो र्निर्निमेषावस्थानं, तत्कलाम् ५५। मुष्टियुद्धम्—मुष्टिभिः प्रहरणम् ५६। बाहुयुद्धम्-बाहुभिः प्रहरणम् ५७। लतायुद्धम्—लतावृक्षमिव शत्रुं गाढं परिवेष्ट्य प्रहरणम् ५८। इष्वस्त्रम् नागवाणादिदिव्यास्त्रप्रक्षेपणम् ५९। त्सरुप्रवादम्—त्सरुः—खड्गमुष्टिः, अवयवे समुदायोपचारात् त्सरुशब्देनात्र खड्गो गृह्यते, तस्य प्रवादो यत्र शास्त्रे तत् त्सरुप्रवादं-खड्गशिक्षाशास्त्रमित्यर्थः ६०। धनुर्वेदम्-धनुःशिक्षणशास्त्रम् ६१। हिरण्यपाक-सुवर्णपाकौ—रजत—सुवर्णयोः रसायन क्रिया तद्विषयककलाद्वयम् ६२-६३। मणिपाकम्—मणिनिर्माणकलाम् ६४। धातुपाकम्—रजत ताम्रादिधातुनिर्माणकलाम् ६५। सूत्रखेल-वर्त्तखेल-नालिकाखेलाः लोकतः प्रत्येतव्याः ६६—६८। पत्रच्छेद्यम-अनेकपत्रेषु विवक्षित पत्रच्छेदनकलाम् ६९। कटक-

नाम अस्थियुद्धकला है.। अथवा 'दृष्टियुद्ध' इस पाठ में प्रतिस्पर्धी की आंखों को अपनी चितवन से निमेषरहित कर देना सो दृष्टियुद्ध है. ५५। मुष्टियों से प्रहार करना. इसका नाम मुष्टियुद्धकला है ५६। बाहुओं से प्रहार करना. इसका नाम-बाहु युद्धकला है. ५७। लता जैसे वृक्षों को लपेट लेती है. इसी प्रकार से शत्रु को घेरे में डालते हुवे गाढरूप से लपेटकर फिर उस पर प्रहार करना. लतायुद्ध है. ५८। नागवाण आदि दिव्यरत्नों का प्रक्षेपण करना, इसका नाम—इष्वस्त्रकला है. ५९। त्सरुशब्द का अर्थ तलवार की मूठ है. यहां अवयव में समुदाय के उपचार से त्सरुशब्द से खड्ग का ग्रहण किया गया है+इस खड्ग—तलवार को चलाने में निपुण होना इसका नाम—त्सरु प्रवाद है ६०। धनुष चलाने की क्रिया में निपुणता प्राप्त करना यह—धनुर्वेद कला है, ६१। रजत और सोना को रसायन क्रिया जानना वह हिरण्यरूप, सुवर्ण पाक कला है ६२-६३। मणियों का निर्माण विधान को जानना मणि निर्माण कला है, ६४ अथवा—रजत ताम्रादि धातुओं का निर्माण

શત્રુની આંખોને પોતાની દૃષ્ટિથી નિમેષ રહિત કરવી તે દૃષ્ટિયુદ્ધ છે ૫૫. મુષ્ટિકાઓથી પ્રહાર કરીને લડવું તે મુષ્ટિ યુદ્ધ કલા છે. ૫૬ બાહુઓથી લડવું તે બાહુ યુદ્ધ કલા છે. ૫૭ લતા જેમ વૃક્ષોને પરિવેષ્ટિત કરી લે છે તેમજ શત્રુને ચારે તરફ ઘેરીને ગાઢરૂપથી તેને વચ્ચે લઇને તેનાપર હુમલો કરવો તે લતાયુદ્ધ છે ૫૮. નાગબાણ વગેરે દિવ્યરત્નોનું પ્રક્ષેપણ કરવું તેનું નામ ઇષ્વસ્ત્રકલા છે ૫૯. ત્સરૂ શબ્દનો અર્થ તરવારની મૂઠ છે. અહીં અવયવમાં સમુદાયના ઉપચારથી ત્સરૂ શબ્દથી ખડ્ગનું ગ્રહણ કર્યું છે. ખડ્ગને ચલાવવામા કુશળતા મેળવવી તેનું નામ ત્સરૂપ્રવાદ છે ૬૦ ધનુષ ચલાવવામાં નિપુણતા મેળવવી તે ધનુર્વેદ કલા છે ૬૧ રજત અને સુવર્ણના રસાયણની ક્રિયા જાણીને રજત અને પાક કલા છે ૬૨ ૬૩ મણિઓના નિર્માણની કલા જાણવી તે મણિ નિર્માણકલા છે ૬૪. અથવા તામ્ર વગેરે ધાતુઓનું નિર્માણ કરવું આ ધાતુપાકકલા છે ૬૫. નટોની જેમ સૂત્રપર—

च्छेद्यम् शत्रुसैन्येषु विवक्षित शत्रुहननम् ७० सजीवनिर्जीवं-सजीवं मृतधात्वादीनां सजीवकरणं सहजस्वरूपापादनम्, निर्जीवम् सुवर्णादिधातूनां प्रयोगविशेषेण मारणम्, पारदस्य मूर्च्छाप्रापणं वा ७१। शकुनरुतम्-पक्षिशब्दम्ः, पक्षिशब्दज्ञानम्, यद्वा 'शकुनरुत'-शब्देन शकुनशास्त्रं गृह्यते, तेन वसन्तराजादिशकुनशास्त्रोक्तसर्वशकुनज्ञानं वा ७२। इति आसां द्वासप्ततिकलानां क्रमन्यासः, कुत्रचिन्नामनिर्देशोऽपि च संग्रहसमयविपर्यासेन पृथक् पृथगुपलभ्यतेऽतो यत्र यद्रूपः पाठो लभ्यते तत्र

करना यह-धातुपाक कला है, ६५। नटों की तरह सूत्रपर-वर्त्तपर, और-नालिका पर चढ कर खेलना-ये तत्-तत् नामवाली कलाएं हैं ६६-६८। अनेकपत्रों मे से किसी विवक्षित पत्र का छेदन करना पत्रच्छेद्य कला है. ६९। शत्रु की सेना में रह कर फिर विवक्षित शत्रु को मार देना यह कटकच्छेद्य कला है. ७०। भस्मसात् किये गये सुवर्णादि धातुओं को निरुत्थ भस्म होने से पहले तक प्रयोजन विशेष के आजाने पर उस भस्म को पुनः सुवर्ण कर देना, तथा-एक राज्य से दूसरे राज्य में सुवर्ण को ले जाने का राजकीय प्रतिबन्ध रहने पर उन वाञ्छनीय सुवर्णादिधातुओं को प्रयोगविशेष से मारना, अथवा-पारे को मूर्च्छित करना-अर्थात्-अजीर्णत्व-नपुंसकत्व आदि अट्ठारह दोषों को पारों से निकाल देना यह सजीव निर्जीव कला है. ७१। पक्षियों की बोली को पहिचान लेना. अर्थात्-वसन्त राज आदि कृत शकुनशास्त्रदृष्टि से सब पक्षियों का ज्ञान होना यह-शकुनरुत कला हैं ७२। इन बहत्तर कलाओं का क्रम और कहीं कहीं उनका नाम निर्देश भी संग्रह समय की भिन्नता से पृथक् पृथक् रूपसे उपलब्ध-प्राप्त

वर्तपर अने नालीकापर चढीने रमवु ए तत्-तत नामवाळी कळाओ छे ६६-६८ अनेक पत्रोमांथी कोई खास पत्रनु छेदन करवुं पत्रच्छेद्यकला छे. ६९ शत्रुनी सेनामां रहीने पछी कोई विशेष शत्रुने ज मारवु कटकच्छेद्य कलाछे ७० भस्मरूपमां परिणत थयेला सुवर्णादि धातुओने निरुत्थ भस्म होवाथी पहेलां प्रयोजन विशेषने लीधे फरी भस्मने सुवर्ण वगेरे बनाववुं तेमज एक राज्यमांथी बीजा राज्यमां सुवर्णने लई जवानो राजकीय प्रतिबंध होवा छतां ए ते वांछनीय सुवर्णादि धातुओने प्रयोग विशेषथी मारवा के पाराने मूर्च्छित करवो. एटले के अजीर्णत्व वगेरे अढार दोषोने पारामांथी काढवा आ सजीव निर्जीवकला छे ७१ पक्षीओनी बोलीने समजी लेवी एटले के वसंतराज वगेरे कृत शकुनशास्त्रनी दृष्टिए बधा पक्षीओनी बोलीने समजवी शुकनशुकन जाणवुं ते शकुनरुत कला छे. ७२ आ बोंतेर कलाओनो क्रम अने तेना नाम नि

च्छेद्यम् शत्रुसैन्येषु विवक्षित शत्रुहननम् ७० सजीवनिर्जीवं–सजीव
सजीवकरणं सहजस्वरूपापादनम्, निर्जीवम् सुवर्णादिधातूनां प्रयोग
पारदस्य मूर्च्छापणं वा ७१। शकुनरुतम–पक्षिशब्दम्ः, पक्षि
'शकुनरुत'-शब्देन शकुनशास्त्रं गृह्यते, तेन वसन्तराजादिशकुन
ज्ञानं वा ७२। इति आसां द्वासप्ततिकलानां क्रमन्यासः, कुत्रचिन्न
संग्रहसमयविपर्यासेन पृथक् पृथगुपलभ्यतेऽतो यत्र यद्रूपः पाठो

करना यह–धातुपाक कला है, ६५। नटों की तरह सूत्रपर–वर्त्तपर
पर चढ कर खेलना–ये तत्–तत् नामवाली कलाएं हैं ६६-६८।
किसी विवक्षित पत्र का छेदन करना पत्रच्छेद्य कला है. ६९। शत्रु
कर फिर विवक्षित शत्रु को मार देना यह कटकच्छेद्य कला है. ७०
गये सुवर्णादि धातुओं को निरुत्थ भस्म होने से पहले तक प्र
आजाने पर उस भस्म को पुनः सुवर्ण कर देना, तथा–एक
राज्य में सुवर्ण को ले जाने का राजकीय प्रतिबन्ध रहने पर
सुवर्णादिधातुओं को प्रयोगविशेष से मारना, अथवा–पारे को मू
अर्थात्–अजीर्णत्व–नपुंसकत्व आदि अट्ठारह दोषों को पारों से
यह सजीव निर्जीव कला है. ७१। पक्षियों की बोली को पहिचान
वसन्त राज आदि कृत शकुनशास्त्रदृष्टि से सब पक्षियों का ज्ञा
शकुनरुत कला हैं ७२। इन बहत्तर कलाओं का क्रम और कहीं
नाम निर्देश भी संग्रह समय की भिन्नता से पृथक् पृथक् रूपसे

वर्तपर અને નાસીકાપર ચઢીને રમવું એ તત્–તત્ નામવાળી કળાએ
પત્રોમાથી કોઇ ખાસ પત્રનું છેદન કરવું પત્રચ્છેદ્યકલા છે. ૬૯ શત્રુની સે
કોઇ વિશેષ શત્રુને જ મારવુ કટકચ્છેદ્ય કલાછે.૭૦ ભસ્મરૂપમા પરિણ
ધાતુઓને નિરૂત્થ ભસ્મ હોવાથી પહેલા પ્રયોજન વિશેષને લીધે ફરી
વગેરે બનાવવું તેમજ એક રાજ્યમાંથી બીજા રાજ્યમાં સુવર્ણને

पाठः प्रतिद्वन्द्विनोश्चक्षुषो र्निर्निमेषावस्थानं, तत्कलाम् ५५। मुष्टियुद्धम्—मुष्टिभिः प्रहरणम् ५६। बाहुयुद्धम्-बाहुभिः प्रहरणम् ५७। लतायुद्धम्—लतावृक्षमिव शत्रुं गाढं परिवेष्ट्य प्रहरणम् ५८। इष्वस्त्रम् नागवाणादिदिव्यास्त्रप्रक्षेपणम् ५९। त्सरुप्रवादम्—त्सरुः—खड्गमुष्टिः, अवयवे समुदायोपचारात् त्सरुशब्देनात्र खड्गो गृह्यते, तस्य प्रवादो यत्र शास्त्रे तत् त्सरुप्रवादं-खड्गशिक्षाशास्त्रमित्यर्थः ६०। धनुर्वेदम्-धनुःशिक्षाशास्त्रम् ६१। हिरण्यपाक-सुवर्णपाकौ—रजत—सुवर्णयोः रसायन क्रिया तद्रूपयकलाद्वयम् ६२-६३। मणिपाकम्—मणिनिर्माणकलाम् ६४। धातुपाकम्—रजत ताम्रादिधातुनिर्माण कलाम् ६५। सूत्रखेल-वर्त्तखेल-नालिकाखेलाः लोकतः प्रत्येतव्याः ६६—६८। पत्रच्छेद्यम-अनेकपत्रेषु विवक्षित पत्रच्छेदनकलाम् ६९। कटक-

---

नाम अस्थियुद्धकला है.। अथवा 'दृष्टियुद्ध' इस पाठ में प्रतिस्पर्धी की आंखों को अपनी चितवन से निमेषरहित कर देना सो दृष्टियुद्ध है. ५५। मुष्टियों से प्रहार करना. इसका नाम मुष्टियुद्धकला है ५६। बाहुओं से प्रहार करना. इसका नाम-बाहु युद्धकला है. ५७। लता जैसे वृक्षों को लपेट लेती है. इसी प्रकार से शत्रु को घेरे में डालते हुवे गाढरूप से लपेटकर फिर उस पर प्रहार करना. लतायुद्ध है. ५८। नागबाण आदि दिव्यरत्नों का प्रक्षेपण करना, इसका नाम—इष्वस्त्रकला है. ५९। त्सरुशब्द का अर्थ तलवार की मूठ है. यहां अवयव में समुदाय के उपचार से त्सरुशब्द से खड्ग का ग्रहण किया गया है+इस खड्ग—तलवार को चलाने में निपुण होना इसका नाम—त्सरु प्रवाद है ६०। धनुष चलाने की क्रिया में निपुणता प्राप्त करना यह—धनुर्वेद कला है, ६१। रजत और सोना को रसायन क्रिया जानना वह हिरण्यरूप, सुवर्ण पाक कला है ६२-६३। मणियों का निर्माण विधान को जानना मणि निर्माण कला है, ६४ अथवा—रजत ताम्रादि धातुओं का निर्माण

શત્રુની આંખોને પોતાની દૃષ્ટિથી નિમેષ રહિત કરવી તે દૃષ્ટિયુદ્ધ છે ૫૫. મુષ્ટિકાઓથી પ્રહાર કરીને લડવુ તે મુષ્ટિ યુદ્ધ કલા છે. ૫૬ બાહુઓથી લડવું તે બાહુ યુદ્ધ કલા છે. ૫૭ લતા જેમ વૃક્ષોને પરિવેષ્ટિત કરી લે છે તેમજ શત્રુને ચારે તરફ ઘેરીને ગાઢરૂપથી તેને વચ્ચે લઇને તેનાપર હુમલો કરવો તે લતાયુદ્ધ છે ૫૮. નાગબાણ વગેરે દિવ્યરત્નોનું પ્રક્ષેપણ કરવું તેનુ નામ ઇષ્વસ્ત્રકલા છે ૫૯. ત્સરૂ શબ્દનો અર્થ તરવારની મૂઠ છે. અહીં અવયવમા સમુદાયના ઉપચારથી ત્સરૂ શબ્દથી ખડ્ગનું ગ્રહણ કર્યું છે. ખડ્ગને ચલાવવામા કુશળતા મેળવવી તેનુ નામ ત્સરૂપ્રવાદ છે ૬૦ ધનુષ ચલાવવામાં નિપુણતા મેળવવી તે ધનુર્વેદ કલા છે ૬૧ રજત અને સુવર્ણના રસાયણની ક્રિયા જાણીને રજત અને સ્વર્ણ પાક કલા છે ૬૨ ૬૩ મણિઓના નિર્માણની કલા જાણવી તે મણિ નિર્માણકલા છે ૬૪. અથવા ... તામ્ર વગેરે ધાતુઓનુ નિર્માણ કરવુ આ ધાતુપાકકલા છે ૬૫. નટોની જેમ સૂત્રપર—

पाठः प्रतिद्वन्द्विनोश्चक्षुषो र्निर्निमेषावस्थानं, तत्कलाम् ५५। मुष्टियुद्धम्-मुष्टिभिः प्रहरणम् ५६। बाहुयुद्धम्-बाहुभिः प्रहरणम् ५७। लतायुद्धम्-लतावृक्षमिव शत्रुं गाढं परिवेष्ट्य प्रहरणम् ५८। इष्वस्त्रम् नागबाणादिदिव्यास्त्रप्रक्षेपणम् ५९। त्सरुप्रवादम्-त्सरुः-खड्गमुष्टिः, अवयवे समुदायोपचारात् त्सरुशब्देनात्र खड्गो गृह्यते, तस्य प्रवादो यत्र शास्त्रे तत् त्सरुप्रवादं-खड्गशिक्षाशास्त्रमित्यर्थः ६०। धनुर्वेदम्-धनुःशिक्षाशास्त्रम् ६१। हिरण्यपाक-सुवर्णपाकौ-रजत-सुवर्णयोः रसायनक्रिया तद्विषयकलाद्वयम् ६२-६३। मणिपाकम्-मणिनिर्माणकलाम् ६४। धातुपाकम्-रजत ताम्रादिधातुनिर्माणकलाम् ६५। सूत्रखेल-वर्त्तखेल-नालिकाखेलाः लोकतः प्रत्येतव्याः ६६-६८। पत्रच्छेद्यम-अनेकपत्रेषु विवक्षित पत्रच्छेदनकलाम् ६९। कटक-

नाम अस्थियुद्धकला है.। अथवा 'दृष्टियुद्ध' इस पाठ में प्रतिस्पर्धी की आंखों को अपनी चितवन से निमेषरहित कर देना सो दृष्टियुद्ध है. ५५। मुष्टियों से प्रहार करना. इसका नाम मुष्टियुद्धकला है ५६। बाहुओं से प्रहार करना. इसका नाम-बाहु युद्धकला है. ५७। लता जैसे वृक्षों को लपेट लेती है. इसी प्रकार से शत्रु को घेरे में डालते हुवे गाढरूप से लपेटकर फिर उस पर प्रहार करना. लतायुद्ध है. ५८। नागबाण आदि दिव्यरत्नों का प्रक्षेपण करना, इसका नाम-इष्वस्त्रकला है. ५९। त्सरुशब्द का अर्थ तलवार की मूठ है. यहां अवयव में समुदाय के उपचार से त्सरुशब्द से खड्ग का ग्रहण किया गया है+इस खड्ग—तलवार को चलाने में निपुण होना इसका नाम—त्सरु प्रवाद है ६०। धनुष चलाने की क्रिया में निपुणता प्राप्त करना यह—धनुवेद कला है, ६१। रजत-और सोना को रसायन क्रिया जानना वह हिरण्यरूप, सुवर्ण पाक कला है ६२-६३। मणियों का निर्माण विधान को जानना मणि निर्माण कला है, ६४ अथवा-रजत ताम्रादि धातुओं का निर्माण

શત્રુની આંખોને પોતાની દૃષ્ટિથી નિમેષ રહિત કરવી તે દૃષ્ટિયુદ્ધ છે ૫૫. મુષ્ટિકાઓથી પ્રહાર કરીને લડવુ તે મુષ્ટિ યુદ્ધ કલા છે. ૫૬ બાહુઓથી લડવું તે બાહુ યુદ્ધ કલા છે. ૫૭ લતા જેમ વૃક્ષોને પરિવેષ્ટિત કરી લે છે તેમજ શત્રુને ચારે તરફ ઘેરીને ગાઢરૂપથી તેને વચ્ચે લઇને તેનાપર હુમલો કરવો તે લતાયુદ્ધ છે ૫૮. નાગબાણ વગેરે દિવ્યરત્નોનું પ્રક્ષેપણ કરવુ તેનુ નામ ઇષ્વસ્ત્રકલા છે ૫૯. ત્સરૂ શબ્દનો અર્થ તરવારની મૂઠ છે. અહીં અવયવમા સમુદાયના ઉપચારથી ત્સરૂ શબ્દથી ખડ્ગનું ગ્રહણ કર્યું છે. ખડ્ગને ચલાવવામા કુશળતા મેળવવી તેનુ નામ ત્સરૂપ્રવાદ છે ૬૦ ધનુષ ચલાવવામાં નિપુણતા મેળવવી તે ધનુર્વેદ કલા છે ૬૧ રજત અને સુવર્ણના રસાયણની ક્રિયા જાણીને રજત અને સ્વર્ણ પાક કલા છે ૬૨ ૬૩ મણિઓના નિર્માણની કલા જાણવી તે મણિ નિર્માણકલા છે ૬૪. અથવા રજત તામ્ર વગેરે ધાતુઓનુ નિર્માણ કરવુ આ ધાતુપાકકલા છે ૬૫. નટોની જેમ સૂત્રપર-

च्छेद्यम् शत्रुसैन्येषु विवक्षित शत्रुहननम् ७० सजीवनिर्जीव-सजीव' मृतधात्वादीनां सजीवकरणं सहजस्वरूपापादनम्, निर्जीवम् सुवर्णादिधातूनां प्रयोगविशेषेण मारणम्, पारदस्य मूर्च्छाप्रापणं वा ७१। शकुनरुतम-पक्षिशब्दम्ः, पक्षिशब्दज्ञानम, यद्वा 'शकुनरुत'-शब्देन शकुनशास्त्रं गृह्यते, तेन वसन्तराजादिशकुनशास्त्रोक्तसर्वशकुन-ज्ञानं वा ७२। इति आसां द्वासप्तनिकलानां क्रमन्यासः, कुत्रचिन्नामनिर्देशोऽपि च संग्रहसमयविपर्यासेन पृथक् पृथगुपलभ्यतेऽतो यत्र यद्रूपः पाठो लभ्यते तत्र

करना यह—धातुपाक कला है, ६५। नटों की तरह सूत्रपर—वर्त्तपर, और—नालिका पर चढ कर खेलना—ये तत्—तत् नामवाली कलाएं हैं ६६-६८। अनेकपत्रों में से किसी विवक्षित पत्र का छेदन करना पत्रच्छेद्य कला है. ६९। शत्रु की सेना में रह कर फिर विवक्षित शत्रु को मार देना यह कटकच्छेद्य कला है. ७०। भस्मसात् किये गये सुवर्णादि धातुओं को निरुत्थ भस्म होने से पहले तक प्रयोजन विशेष के आजाने पर उस भस्म को पुनः सुवण कर देना, तथा—एक राज्य से दूसरे राज्य में सुवर्ण को ले जाने का राजकीय प्रतिबन्ध रहने पर उन वाञ्छनीय सुवर्णादिधातुओं को प्रयोगविशेप से मारना, अथवा-पारे को मूर्च्छित करना—अर्थात्—अजीर्णत्व—नपुंसकत्व आदि अट्ठारह दोषों को पारों से निकाल देना यह सजीव निर्जीव कला है. ७१। पक्षियों की बोली को पहिचान लेना. अर्थात्—वसन्त राज आदि कृत शकुनशास्त्रदृष्टि से सब पक्षियों का ज्ञान होना यह—शकुनरुत कला हैं ७२। इन बहत्तर कलाओं का क्रम और कहीं कहीं उनका नाम निर्देश भी संग्रह समय की भिन्नसा से पृथक् पृथक् रूपसे उपलब्ध—प्राप्त

वर्तपर અને નાસીકાપર ચઢીને રમવું એ તત્—તત્ નામવાળી કળાઓ છે.૬૬-૬૮અનેક પત્રોમાંથી કોઇ ખાસ પત્રનુ છેદન કરવું પત્રચ્છેદ્યકલા છે. ૬૯ શત્રુની સેનામા રહીને પછી કોઇ વિશેષ શત્રુને જ મારવુ કટકચ્છેદ્ય કલાછે.૭૦ ભસ્મરૂપમા પરિણત થયેલા સુવર્ણાદિ ધાતુઓને નિરૂત્થ ભસ્મ હોવાથી પહેલા પ્રયોજન વિશેષને લીધે ફરી ભસ્મ ને સુવર્ણ વગેરે બનાવવું તેમજ એક રાજ્યમાંથી બીજા રાજ્યમા સુવર્ણને લઈ જવાનો રાજકીય પ્રતિબધં હોવા છતાં એ તે વાછનીય સુવર્ણાદિ ધાતુઓને પ્રયોગ વિષયથી મારવા કે પારાને મૂર્છિત કરવો એટલે કે અજીર્ણત્વ વગેરે અઢાર દોષોને પારામાંથી કાઢવા આ સજીવ નિર્જીવકલા છે ૭૧ પક્ષીઓની બોલીને સમજી લેવી એટલે કે વસતરાજ વગેરે કૃત શકુનશાસ્ત્રની દૃષ્ટિએ બધા પક્ષીઓની બોલીને સમજવી શુભાશુભ જાણવુ તે શકુનરુત કલા છે. ૭૨ આ બોંતેર કલાઓનો ક્રમ અને તેના નામ નિર્દેશ

तद्रूपेण व्याख्या विधेयेति तत्त्वम्। पूर्वोक्तप्रकारा द्वासप्ततिकलाः कलाचार्यो दृढप्रतिज्ञं शिक्षयिष्यतीति भावः। ॥ सू० १७० ॥

मूलम्--तए णं से कलायरिए तं दृढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य गंथओ य करणओ य सिक्खावेत्ता सेहावेत्ता अम्मापिऊणं उवणेहिइ। तए णं तस्स दृढपइण्णस्स दारयस्स अम्मापियरो तं कलायरियं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारिस्संति, सम्माणिस्संति, विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलइस्संति, दलइत्ता पडिविज्जेहिंति ॥ सू० १७१ ॥

छाया—ततः खलु स कलाचार्यस्तं दृढप्रतिज्ञं दारकं लेखादिकाः गणितप्रधानाः शकुनरुतपर्यसानाः द्वासप्ततिं कलाः सूत्रतश्च अर्थतश्च ग्रन्थतश्च करणतश्च शिक्षयित्वा साधयित्वा अम्बा-पित्रोः उपनेष्यति। ततः खलु तस्य दृढप्रतिज्ञस्य

होता हैं इसलिये जहां जहां जिस जिस रूप से पाठ मिले वहां। उस उस रूपसे व्याख्या समजनी चाहिए ॥ सू० १७० ॥

"तए णं से दृढपइण्णे-"दारए इत्यादि-

मूलार्थ—'तए णं' इसके बाद 'कलायरिय-' कलाचार्यने 'तं दृढपइण्णं-' उस दृढप्रतिज्ञकुमार को 'लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ-' गणित प्रधान लेखादिक कलाएं-'सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ अत्थओ गंथओ य करणओ य-सिक्खावेत्ता सेहावेत्ता अम्मापिऊणं उवणेहिइ-' पहली लेह कला से लेकर अन्तिम शकुनरुत कलातक जिन की संख्या ७२-प्रगट की जा चुकी है,

---

પણ સંગ્રહ સમયના ભિન્નપણાથી જુદાજુદારૂપે પ્રાપ્ત થાય છે. જેથી જ્યાં જ્યાં જે જે રૂપથી પાઠ મળેલ છે ત્યા ત્યા તે તે રૂપથી તેની વ્યાખ્યા સમજવી. ॥સૂ૦૧૭૦॥

"तएणं से कलायरिए-इत्यादि।

મૂલાર્થ—'तए णं' ત્યાર પછી 'कलायरिए' કલાચાર્યે 'तं दृढपइण्णं' તે દૃઢ પ્રતિજ્ઞ કુમારને 'लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ' ગણિત પ્રધાન લેખાદિક કલાઓ 'सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ अत्थओ गंथओ य करणओ सिक्खावेत्ता सेहावेत्ता अम्मापिऊणं उवणेहिइ" અંતિમ શકુનરુત કલા સુધીની સમસ્ત ૭૨ કલાઓને સૌથી પહેલા સૂત્ર-રૂપમાં, ત્યારપછી અર્થરૂપમાં ગ્રંથરૂપમાં

दारकस्य अम्बा-पित्रोः उपनेष्यति । ततः खलु तस्य दृढप्रतिज्ञस्य दारकस्य अम्बापितरौ तं कलाचार्यं विपुलेन अशनपानखादिमस्वादिमेन वस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्कारयिष्यतः, सम्मानयिष्यतः, विपुलं जीविकार्हं प्रीतिदानं दास्यतः दत्त्वा प्रतिविसर्जयिष्यतः ॥ सू० १७१ ॥

टीका—'तए णं' इत्यादि—ततः खलु स कलाचार्यः तं दृढप्रतिज्ञं दारकं लेखादिकाः—लेखः—अक्षरविन्यासः आदौ—प्राथम्ये यासां ताः—लेखप्रथमा इत्यर्थः, तथा—गणितप्रधानाः—गणितं प्रधानं यासु ता—गणितमुख्या इत्यर्थः, तथा शकुनरुतपर्यवसानाः—शकुनरुतं—पक्षिशब्दः पर्यवसाने-अन्ते यासां तास्तथा—पक्षिशब्दपरिज्ञानान्ताः, द्वासप्तति—द्वासप्ततीसंख्यकाः पूर्वोक्ताः कला सूत्रत शब्दतश्च, अर्थतश्च ग्रन्थतः ग्रन्थरूपेण तासां लेखनतश्च, करणतः प्रयोगतश्च शिक्षयित्वा-अध्याप्य, साधयित्वा साध्याः कारयित्वा तस्य दृढप्रतिज्ञस्य, अम्बापित्रोरन्तिके उपनेष्यति प्रापयिष्यति । ततः खलु तस्य दृढप्रतिज्ञस्य दारकस्य अम्बापितरौ तं कलाचार्यं विपुलेन प्रचुरेण अशनपानखादिमस्वादिमेन वस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण च सत्कारयिष्यतः सम्मानयिष्यतः, विपुलं प्रचुरं जिवितर्हं यावज्जीवं जीवितयोग्यं प्रीतिदानम् उपहारं, दास्यतः, दत्त्वा प्रतिविसर्जयिष्यतः ॥सू.१७१॥

प्रथमतः सूत्र रूप से—बाद में अर्थ रूप से—ग्रन्थरूप से, एवं—तदुभय-सूत्र और अर्थ दोनों रूप से सिखलाकर, एवं—उन्हें पहले उन्हीं के हाथ से सिद्ध कराकर उसके माता पिता के पास उसको ले आवेगा—'तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारयस्स अम्मापियरो तं कलायरियं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारिस्संति—' तब उस दृढप्रतिज्ञ कुमार के मातापिता उस कलाचार्य का विपुल अशन-पान-खादिम, एवं-स्वादिमरूप चार प्रकार के आहार से, तथा-वस्त्र-गन्ध-माला और-अलङ्कारों से सत्कार करेंगे-'सम्माणेस्संति-' विउलं जीवियारिहं, पीइदाणं दलइस्संति, दलइत्ता पडिविसिज्जेहिंति-'

અને કરણરૂપમાં પ્રયોગરૂપમાં શીખવી અને તે કલાઓને પહેલા તેના જ હાથવડે પ્રયોગરૂપમા સિદ્ધ કરાવીને પછી તેને તેના માતાપિતાની પાસે લઇ જશે. 'तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारयस्स अम्मापियरो तं कलायरियं विउलेणं असणपाण-खाइमसाइमेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारिस्संति" ત્યારબાદ તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કુમારના માતાપિતા તે કલાચાર્યને વિપુલ અશન-પાન-ખાદિમ-અને સ્વાદિમરૂપ ચાર પ્રકારના આહારથી તેમજ વસ્ત્ર ગન્ધ માલા અને અલંકારોથી સત્કૃત કરશે "सम्माणेस्संति विउलं जीवियारिहं, पीइयाणं दलइस्संति, दलइत्ता पडिविसिज्जेहिंति"

मूलम्—तए णं से दढपइण्णे दारए उम्मुक्कवालभावे विण्णायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते वावत्तरिकलापंडिए णवंगसुत्तपडिबोहए अट्ठारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए गीयरई गंधव्वणट्टकुसले सिंगारागारचारुवेसे संगयगयहसियभणियचेट्ठियविलाससंलावुल्लावनिउणजुत्तोवयारकुसले हयजोही गयजोही रहजोही वाहुजोही वाहुप्पमद्दी अलंभोगसमत्थे साहस्सिए वियालयारी यावि भविस्सइ।सू.१७२।

छाया—ततः खलु स दृढप्रतिज्ञो दारक उन्मुक्तवालभावो विज्ञातपरिणतमात्रो यौवनकमनुप्राप्तो द्वासप्ततिकलापण्डितो नवाङ्गसुप्तप्रतिबोधकः अष्टादश-

---

सत्सम्मान करेंगे, फिर-विपुल प्रीतिदान जो कि-उनको जीवनभर के लिये जीविका वा योग्य हो सकेगा-देगे, यह सब कुछ करके, फिर वे उस कलाचार्य को विसर्जित कर देगे, । टीकार्थ—स्पष्ट हैं ॥ सू० १७१ ॥

"तए णं से दढपइण्णे दारए-इत्यादि—

मूलार्थ – "तए णं से दढपइण्णे-" इसके वाद वह दृढप्रतिज्ञ कुमार जिसका "उमुक्कबालभावे विण्णायपरिणयमित्ते-" बालभाव व्यतीत हो चला है, और —विज्ञान जिसका शीघ्रता से परिपक्व अवस्था में पहुच गया है. "जोव्वणगमणुपत्ते-"यौवनावस्थाशाली हुवा. "बावत्तरिं कलापंडिए—णवंगसुत्तपडिबोहए—अट्ठारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए-" ७२—कलाओं में विशेषरूपसे निष्णात हुवा. सुप्त अपने नवाङ्गों को दो कान-दो नेत्र-दो नासिकाछिद्र—एक जीभ

સમ્માનીત કરશે પછી તેમની જીવિકા માટે પર્યાપ્ત થાય તેટલું પ્રીતિદાન તેમને આપશે. આ બધું કરીને પછી તેઓ તેમને વિસર્જિત કરશે.

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ છે. ॥સૂ૦ ૧૭૧॥

"तए णं से दढपइण्णे दारए" इत्यादि ।

મૂલાર્થ—तए णं से दढपइण्णे" ત્યાર પછી તે દઢપ્રતિજ્ઞ કુમાર-કે જેમનું "उम्मुक्कबालभावे विण्णायपरिणयमित्ते" બાળપણુ પસાર થઈ ગયું છે અને જેમનું વિજ્ઞાન એકદમ પરિપકવાવસ્થા સુધી પહોંચી ગયું છે. "जोव्वणगमणुपत्ते" યુવાવસ્થા સંપન્ન થશે. "वावत्तरिं कलापंडिए णवंगसुत्तपडिबोहए—अट्ठारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए" ૭૨ કલાઓમાં વિશેષરૂપથી નિષ્ણાત થયેલો તે પોતાના સુપ્ત અંગોને-બે કાન, બે નેત્ર, બે નાસિકાછિદ્ર, એક જીભ, એક સ્પર્શન ઇન્દ્રિય, અને

विधदेशीप्रकारभाषाविशारदो गीतरतिः गान्धर्वनाट्यकुशलः शृङ्गारागारचारुवेषः संगतगतहसितभणितचेष्टितविलाससंलापोल्लापनिपुणयुक्तोपचारकुशलो हययोधी रथयोधी। बाहुयोधी बाहुप्रमर्दी अलंभोगसमर्थः साहसिको विकालचारी चापि भविष्यति ।सू०१७२

एक स्पर्शन, एवं-एक मन-उनको व्यक्त-जागृत करता हुवा, अठ्ठारह प्रकारकी भाषाओं में विशारद हुवा. "गीयरई-गंधव्वणट्टकुसले-सिगारागारचारुवेसे-संगयगयहसियभणियचेट्ठियविलाससंलावुल्लावनिउणजुत्तोवयारकुसले-" गीत-एवं-रति में अनुरागयुक्त हुवा, गान्धर्व गान में-एवं नाट्य क्रिया में पारङ्गत हुवा, तथा-शृङ्गारके गृह की तरह सुन्दर वेष से युक्त हुवा, समुचित गमनमें-समुचितहास में-समुचित बोलने मे-बातचीत करने में-समुचित चेष्टा में समुचित विलास में-नेत्र जनित विकार में-समुचित संलाप में-एवं समुचित काकुभाषण में-दक्ष हुवा, तथा-समुचित व्यवहारों में कुशल हुवा, तथा-"हयजोही गयजोही-रहजोही-बाहुजोही-बाहुप्पमद्दी-अलं भोगसमत्थे-साहसिए-वियालयारी यावि भविस्सइ-" हययुद्ध करने में कुशल हुवा गजयुद्ध करने में कुशल हुवा, रथयोधी हुवा बाहुप्रयोधी हुवा, बाहुप्रमर्दी हुवा, बाहु से कठिन भी वस्तु को चूर-२ करने में समर्थ हुवा, भोग में समर्थ हुवा. । अकेलाही सहस्र व्यक भटों के साथ युद्ध करने में समर्थ हुवा, । अथवा-साहसिक-अधिक साहस से युक्त हुवा, मध्यरात्रि में भी विचरण करनेवाला होगा. ।

એકમત-વ્યકત જાગૃત કરતો અઢાર પ્રકારનો દેશીય ભાષાઓમા વિશારદ થશે. "गीयरई-गंधव्वणट्टकुसले सिगारागारचारुवेसे संगयगयहसियभणियचेट्ठिय विलाससंलावुल्लावनिउणजुत्तोवयारकुसले" ગીત અને રતિમાં અનુરાગયુકત થયેલો, ગાંધર્વગાનમા અને નાટયક્રિયામા પારંગત થયેલો તેમજ શૃંગાર ગૃહની જેમ સુંદર વેષથી સુસજ્જ થયેલો તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ સમુચિત ગમનમા, સમુચિત હાસમાં સમુચિત બોલવામા વાતચીત કરવામાં, સમુચિત ચેષ્ટામા, સમુચિત વિલાસમાં-નેત્ર-જનિતવિકારમા, સમુચિત સંલાપમા અને સમુચિત કાકુ-ભાષણમા પણ દક્ષ થઇ જશે આ પ્રમાણે તે સમુચિત વ્યવહારોમા કુશળ થશે. તેમજ "हयजोही-गयजोही-रहजोही-बाहुजोही-बाहुप्पमद्दी-अलंभोगसमत्थे-साहसिए वियालयारी यावि भविस्सइ" હયયુદ્ધ કરવામા ગજ યુદ્ધ કરવામાં કુશળ થશે. તે રથયોધી થશે, બાહુયોધી થશે, બાહુમર્દી થશે, બાહુથી અતિ કઠોર વસ્તુને ચૂર્ણ વિચૂર્ણ કરવામાં સમર્થ થશે ભોગમાં સમર્થ થશે. એકલો જ તે સહસ્ર સંખ્યક ભટોની સાથે યુદ્ધ કરવામા સમર્થ થશે. અથવા સાહસિક-અધિક સાહસયુકત થશે. આમ તે મધ્યરાત્રિમાં પણ વિચરણ કરનાર થશે.

टीका—"तए णं से' इत्यादि-ततः खलु स दृढप्रतिज्ञो नाम दारकः उन्मुक्त-बालभावः-व्यतिक्रान्तबाल्यावस्थो विज्ञातपरिणतमात्रः-विज्ञातं-विज्ञानं परिणत-मात्रं-सद्यः परिपक्क यस्य स तथा-परिपक्वविज्ञान इत्यर्थः, यौवनकम्-युवावस्थाम् अनुप्राप्तः-अनुगतो द्वासप्ततिकलापण्डितः- पूर्वोक्तद्वासप्ततिकलाऽभिज्ञो नवाङ्ग सुप्तप्रतिबोधकः-'द्वे श्रोत्रे, द्वे नेत्रे, द्वे, नासिके, एका जिह्वा एका त्वग् एकं मनः' इत्येतेषां नवानां—नवसंख्यकानाम्—अङ्गानाम्—अवयावानां सुप्तानां बाल्याद्व्यक्तचेतनावत्त्वात् सुप्तसदृशानां प्रतिबोधकः यौवनाऽऽगमेन व्यक्तं चैतन्यं यस्य स तथा=स्व स्व विषयग्रहणसमर्थ नवाङ्गयुक्त इत्यर्थः, तथा-अष्टादशविध देशीप्रकार-भाषाविशारदः—अष्टादशविधायाम्-अष्टादशभेदायां देशीप्रकारायां-देशीस्वरूपायां भाषायां विशारदः-निष्णातः—अष्टादशभाषाऽभिज्ञ इत्यर्थः, तथा—गीतरतिः गीते गाने रतिः-अनुरागो यस्य स तथा=गीतानुरागयुक्त इत्यर्थः, तथा गान्धर्वनाटचकुशलः—गान्धर्वे—गन्धर्वस्येदं गान्धर्वं तस्मिन्-गाने, नाटचे-नटकर्मणि च कुशलः-गान्धर्व-विद्यायां च पारङ्गत इत्यर्थः, तथा-शृङ्गारागारचारुवेषः—शृङ्गारः—अलङ्कारादिकृता शोभा तस्य अगारमिव=गृहमिव चारुवेषः-रुचिरवेषो यस्य स तथा—सविच्छित्त्य-लङ्कारालङ्कृतशरीर इत्यर्थः, तथा—संगतगतहसितभणितचेष्टितविलाससंलापोल्लापनिपुणयुक्तोपचारकुशलः—संगतेषु- तत्र गतं गमनं हसितं-हासः भणितम्-उक्तिः चेष्टितं-चेष्टा, विलासः—नेत्रजन्यो विकारः, तदुक्तं—"विलासो नेत्रजो ज्ञेयः" इति, संलापः—परस्परभाषाणम्, उक्तं च—"संलापो भाषणं मिथः" इति, उल्लापः—काक्वा भाषणम्, उक्तं च—"उल्लापः काकुभाषणम्" इति, एतेषामितरेतरयोगद्वन्द्वः,

टीकार्थ—उसका स्पष्ट है. "नवाङ्गसुप्तप्रतिबोधक—" का—मतलब ऐसा है कि बाल्यावस्था में जो—श्रोत्र-आदि अङ्ग अव्यक्त चेतनावाले होने से सुप्त जैसे रहते हैं, वेही—यौवन अवस्था में व्यक्त चेतनावाले हो जाने से जागृत जैसे हो जाते हैं। तात्पर्य कहने का यह है कि यौवनावस्था में अपने अपने विषय को ग्रहण करने में ये समर्थ हो जाते हैं। "विलासो नेत्र जो ज्ञेयः—संलापो भाषणं मिथः—" इस कथन के अनुसार नेत्र विकार का नाम विलास, और-भाषण का नाम-संलाप है। "उल्लापः काकुभाषणम्" के अनुसार काकुभाषण

ટીકાર્થ—આ સૂત્રનો અર્થ સ્પષ્ટ છે. "नवाङ्गसुप्तप्रतिबोधकः"નો અર્થ આ છે કે બાળપણમાં શ્રોત્ર (કાન) વગેરે અંગો સુપ્ત જેવાં હોય છે તેજ યુવાવસ્થામાં જાગૃત જેવા થઈ જાય છે. તાત્પર્ય આ છે કે યુવાવસ્થામાં એ અંગો પોતપોતાના વિષયને ગ્રહણ કરવામાં સમર્થ થઇ જાય છે "विलासो नेत्रजो ज्ञेयः संलापो भाषणं मिथः" આ કથન મુજબ નેત્રજ વિકારનું નામ વિલાસ અને ભાષણનું નામ સંભળાય છે. "उल्लापः काकुभाषणम्" મુજબ કાકુભાષણ સારગર્ભિત વ્યંગપૂર્ણ વચનોને કહે

तेषु निपुणः—दक्षः, तथा-युक्तोपचारकुशलः—युक्तेषु- समुचितेषु उपचारेषु-व्यवहारेषु कुशलः—चतुरः, पदद्वयस्य कर्मधारयः, तथा-हययोधी- हयेन युध्यते इत्येवंशीलः- हययुद्धकलाकुशल इत्यर्थः, एवं गजयोधी—रथयोधी बाहुयोधी—इतिपदत्रयमुन्नेयम्, तथा-बाहुप्रमर्दी—बाहुभ्यां प्रमर्दतीत्येवंशीलः—बाह्वाघातेन कठिनस्यापि वस्तुन श्चूर्णीकरणशील इत्यर्थः, तथा- अलंभोगसमर्थः—अत्यर्थं भोगानुभवसमर्थः साहस्रिक -सहस्रेण युध्यते इति-सहस्रसंख्यकभटैः सह एकाकयेव युद्धकर्ता, 'साहसिकः इतिच्छायापक्षेतु अतिसाहसयुक्तः, तथा-विकालचारी-विकालेऽपि मध्यरात्रेऽपि चरतीत्येवं शीलः अतिसाहसवत्त्वाद् मध्यरात्रेऽपि विचरणशीलश्चापि भविष्यतीति ।सू०१७२।

मूलम्—तए णं तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं जाव वियालयारिं च वियाणित्ता विउलेहिं अन्नभोगेहि य पाणभोगेहि य लयणभोगेहि य वत्थभोगेहि य सयणभोगेहि य उवनिमंतिहिंति । ॥ सू० १७३ ॥

छाया—ततः खलु तं दृढप्रतिज्ञं दारकम अम्बापितरौ उन्मुक्तबालभावं यावद् विकालचारिणं च विज्ञाय विपुलैः अन्नभोगैश्च पानभोगैश्च लयनभोगैश्च वस्त्रभोगैश्च शयनभोगैश्च उपनिमन्त्रयिष्यतः । ॥ सू० १७३ ॥

सारगर्भित व्यङ्ग्यवचन को कहते हैं, या-बच्चों के द्वारा का-का, कु-कु आदि तोतली बोली को भी काक भाषण कहते हैं । ॥सू० १७२ ॥

"तए णं दढपइण्णं दारगं-" इत्यादि-

सूत्रार्थ -"तए णं-" इसके बाद "तं दढपइण्णं दारगं-" उस दृढ प्रतिज्ञ दारक को "अम्मापियरो-" मातापिता "उम्मुक्कबालभावं जाव वियालचारिं च वियाणित्ता-" उन्मुक्तबालभाववाला यावत्-विकालचारी जानकर-"विउलेहिं अन्नभोगेहिंय—पाणभोगेहिं-" विपुल अन्न भोगों से विपुल पानभोगों से- "लयणभोगेहिं य वत्थभोगेहिय सयणभोगेहिय उवनिमंतिहिंति-" विपुल लयन-

---

છે. અથવા બાળકો વડે કા-કા-કુ કુ- વગેરે જે તોતડી બોલીને પણ કાકુ ભાષણ કહે છે સૂ. ॥ ૧૭૨ ॥

"तए णं दढपइण्णं दारगं" इत्यादि ।

મૂલાર્થ—"तए णं" ત્યાર પછી "तं दढपइण्णं दारगं" તે દઢપ્રતિજ્ઞ દારકને "अम्मापियरो" માતા પિતા 'उम्मुक्कबालभावं जाव वियालयारिं च वियाणित्ता" ઉન્મુક્ત બાલભાવ યુક્ત યાવત્ વિકાલચારી જાણીને 'विउलेहिं अन्नभोगेहिं य पाणभोगेहिं'

टीका—"तए णं" इत्यादि—ततः खलु तं दृढप्रतिज्ञं दारकं अम्बा-पितरौ-माता-पितरौ उन्मुक्तबालभावं-व्यतिक्रान्तबाल्यावस्थं यावत्—यावत्पदेन 'विज्ञातपरिणत-मात्रं यौवनकमनुप्राप्तं द्वासप्ततिकलापण्डितं—नवाङ्गसुप्तप्रतिबोधकम् अष्टादशविध-देशीप्रकारभाषाविशारदं गीतरतिं गान्धर्वनाट्यकुशलं शृङ्गारागारचारुवेषं सङ्गतगत-हसितभणितचेष्टितविलाससंलापोल्लापनिपुणयुक्तोपचारकुशलं हययोधिनं गजयोधिनं रथयोधिनं बाहुयोधिनं बाहुप्रमर्दिनम् अलम्भोगसमर्थं साहसिकम्' इत्येतानि पदा-नि संग्राह्याणि, तथा विकालचारिणं च विज्ञाय विपुलैः-प्रचुरैः अन्नभोगैः-अन्न-रूपभोग्यपदार्थैः, पानभोगैः—पेयरूपभोगपदार्थैः, लयनभोगैः—प्रासादरूपभोग्य पदार्थैः, वस्त्रभोगैः—वसनरूपभोग्यपदार्थैः शयनभोगैः—शयनरूपभोग्पपदार्थैश्च उप-निमन्त्रयिष्यत इति। दृढप्रतिज्ञं दारकं यौवनोन्मुखं दृष्ट्वा तन्मातापितरौ अन्ना-दिभोगानुभोक्तुंप्रेरयिष्यत इति सूत्राशय इति। ॥सू० १७३॥

तनुभोगों से विपुलवस्त्ररूप भोग्य पदार्थों से उपनिमन्त्रित करेंगे। अर्थात् उसे अब अन्नादि भोग्य विषय के लिये स्वतन्त्रता देंगे।

टीकार्थ—स्पष्ट है, "उम्मुक्कबालभाव जाव—" में जो यह यावत् पद आया है, उससे—"विज्ञातपरिणतमात्रं, यौवनकमनुप्राप्तम, द्वादश प्रतिकला पण्डितम, नबाङ्गसुप्तप्रतिबोधकम, अष्टादशविधदेशी प्रकार भाषाविशारद गीतरति, गन्धर्वनाट्य कुशलम्, शृङ्गारागारचारुवेषं, संगतगतहसितभणित-चेष्टितविलाससंलापो-ल्लाप निपुण युक्तोपचार कुशलं, हययोधिनम्, गजयोधिनम् रथयोधिन,, वाहुयोधिनं, बाहुप्रमार्दिनम् अलंभोगसमर्थम्, साहसिकम् साह-सिकम, इन पीछे के पाठों का ग्रहण हुवा है. ॥ सू० १७३ ॥

विधुल અન્ન ભોગોથી, વિપુલ પાન ભોગોથી 'लयणभोगेहिं य वत्थभोगेहिं य सयणभोगेहिं य उवनिमंतिहिंति' વિપુલ લયન તનુભોગોથી, વિપુલ વસ્ત્રરૂપ ભોગ્ય પદાર્થોથી ઉપનિમંત્રિત કરશે એટલે કે તેને અન્ન વગેરે ભોગ્ય વિષયક પદાર્થોને ભોગવવાની છૂટ આપશે.

ટીકાર્થ—સ્પષ્ટ છે 'उम्मुक्कबालभावं जाव' માં જે યાવત્ પદ આવેલ છે તેથી "विज्ञातपरिणतमात्र, यौवनकमनुप्रासम्, द्वादशप्रतिकलापंडितम् नवाङ्गसुप्त-प्रतिबोधकम्, અષ્ટાદશવિધ દેશી પ્રકાર ભાષા વિશારદ, ગીતરતિ, ગન્ધર્વ નાટ્ય કુશલમ્ શૃંગારાગાર ચારુવેષ, સંગતગતહસિત ભણિત ચેષ્ટિત વિલાસ સંલ્લાપોલ્લાપ નિપુણ યુકતોપચારકુશલ, હયયોધિનમ, ગજયોધિનમ્, રથયોધિનમ્, બાહુયોધિનમ્, બાહુપ્રમાર્દિનમ્, અલ ભોગસમર્થમ્, સાહસિકમ્, સાહસિકમ્ આ પાછળનું ગ્રહણ થયુ છે. ॥ ૧૭૩ ॥

मूलम्—तए णं दढपइण्णे दारए तेहिं विउलेहिं अन्नभोएहिं जाव सयणभोएहिं णो सज्जिहिइ णो गिज्झिहिइ णो मुच्छिहिइ णो अज्झोववज्जिहिइ । से जहा णामए पउमुप्पलेइ वा पउमेइ वा जाव सयसहस्सपत्तेइ वा पंके जाए जले संवुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरएणं, णोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव दढपइण्णे वि दारए कामेहिं जाए भोगेहि संवुड्ढे णोवलिप्पिहिइ कामरएणं, णोवलिप्पिहिइ भोगरएणं, णोवलिप्पिहिइ मित्तणाइणियगसयणसंबधिपरिजणेणं । से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिइ, मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सइ । से णं अणगारे भविस्सइ-ईरियासमिए जाव सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंते । तस्स णं भगवओ अणुत्तरेणं णाणेणं, एवं दंसणेणं चरित्तेणं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतीए गुत्तीए अणुत्तरेणं सव्वसंजमसुचरियतवफलणिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे कसिणे पडिपुण्णे निरावरणे णिव्वाघाए, केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिइ। तए णं से भगवं अरहा जिणे केवली भविस्सइ, सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियायं जाणिहिइ, तं जहा—आगइं गइं ठिइ चवणं उववायं तक्कं कड मणोमाणसियं खइयं भुत्तं पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्सभागी तं तं कालं मणवयकायजोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ । ॥ सू० १७४ ॥

छाया—ततः खलु स दृढप्रतिज्ञो दारक स्तेषु विपुलेषु अन्नभोगेषु यावच्छ-यनभोगेषु नो सङ्क्ष्यति, नो गर्थिष्यति, नो मूर्च्छिष्यति, नो अध्युपपत्स्यते। तद्यथानाम-पद्मोत्पलमिति वा पद्ममिति वा यावत् शतसहस्रपत्रमिति वा पङ्के जातं जले वृद्धं नोपलिप्यते पङ्करजसा, नोपलिप्यते जलरजसा, एवमेव दृढ प्रतिज्ञोऽपि दारकः कामैर्जातो भोगैः संवर्द्धितो नोपलेप्स्यते कामरजसा, नो पलेप्स्यते भोगरजसा, नोपलेप्स्यते प्रियज्ञातिनिजक स्वजनसम्बन्धिपरिजनेन।

"तए णं दढपइण्णे दारए—" इत्यादि—

मूलार्थ—'तए णं' उसके बाद— 'दढपइण्णे दारए तेहिं विउलेहिं अन्नभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं—" वह दढप्रतिज्ञ दारक उन विपुल अन्नरूप भोग्य पदार्थों में यावत्—शयनरूप भोग्य पदार्थों में—"णो सज्जिहिइ, णो गिज्झिहिइ, णो मुच्छिहिइ, णो अज्झोववज्जिहिइ—"आसक्ति नहीं करेगा, गृद्धिभावको प्राप्त नहीं होगा, मूर्च्छाभाव को प्राप्त नहीं होगा, उनमें—एक मनवाला नहीं बनेगा। 'से जहाणामए पउमुप्पलेइ वा, पउमेइ वा, जाव सयसहस्सपत्तेइ वा पंके जाए जले संवुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरयेणं णोवलिप्पइ जलरएणं—" जैसे-पद्म, अथवा—उत्पल, यावत्—शत सहस्रपत्रोंवाला कमल पङ्क में पैदा होता है, जल में बढता है, परन्तु—वह कीचड से जरा भी अंश में लिप्त नहीं होता है, पानीसे लिप्त नहीं होता है, "एवामेव दढपइण्णे वि दारए कामेहिं जाए भोगेहिं संवुड्ढे, णोवलिप्पिहिइ—कामरएणं, णोवलिप्पिहिइ भोगरएणं, णोवलिप्पिहिइ मित्तणाइ णियगसयणसंबंधिपरिजणेणं—" इसी तरह से वह दढप्रतिज्ञ दारक भी काम-

"तए णं दढपइण्णे दारए" इत्यादि।

મૂલાર્થ—'तए णं' પછી "दढपइण्णे दारए ते हिं विउलेहिं अन्नभोगेहिं जाव सयणभोगेहिं" તે દઢપ્રતિજ્ઞ દારક તે વિપુલ અન્નરૂપ ભોગ્ય પદાર્થોમાં યાવત શયનરૂપ ભોગ્ય પદાર્થોમાં "णो सज्जिहिइ, णो गिज्झिहिइ, णो मुच्छिहिइ, णो अज्झोववज्जिहिइ" આસક્તિ બતાવશે નહિ, ગૃદ્ધભાવ પ્રાપ્ત કરશે નહિ, મૂર્છાભાવ પ્રાપ્ત કરશે નહિ, તેમાં તલ્લીન થશે નહિ. -'से जहाणामए पउमुप्पलेइवा, पउमेइवा जाव सयसहस्सपत्तेइवा पंके जाए जले संवुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरयेणं णोवलिप्पइ जलरएणं" જેમ પદ્મ કે ઉત્પલ, યાવત્ શત સહસ્રપત્ર કમળ પંક (કાદવ)માં ઉત્પન્ન હોય છે પાણીમાં વૃદ્ધિ પ્રાપ્ત કરે છે, પણ તે સહેજ પણ કાદવથી લિપ્ત થતું નથી. "एवामेव दढपइण्णे वि दारए कामेहिं जाए भोगेहिं संवुड्ढे, णोवलिप्पिहिइ कामरएणं, णोवलिप्पिहिइ भोगरएणं णोवलिप्पिहिइ, मित्त-णियगसयणसंबंधिपरिजणेणं" આ પ્રમાણે તે દઢપ્રતિજ્ઞ દારકપણ કામથી

स खलु तथारूपाणां स्थविराणाम् अन्तिके केवलां बोधिं भंत्स्यते, मुण्डो भूत्वा आगारात् अनगारितां प्रव्रजिष्यति । स खलु अनगारो भविष्यति ईर्या . मितो यावत् सुहुतहुताशन इव तेजसा ज्वलन् । तस्य खलु भगवतोऽनुत्तरेण ज्ञानेन, एवं दर्शनेन चरित्रेण आलयेन विहारेण, आर्जवेन मार्दवेन लाघवेन क्षान्त्या गुप्त्या मुक्त्या अनुत्तरेण सर्व संयमसुचरिततपः फल निर्वाणमार्गेण आत्मानं भाव-

से उत्पन्न होगा—भोगों से वर्धित होगा, फिर भी वह काम से लिप्त नहीं होगा, भोगों से लिप्त नही होगा, मित्र-ज्ञाति-निजक-सम्बन्धि जन, और परिजनों में लिप्त नहीं होगा. । "से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए केवल बोहिं बुज्झिहिइ मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सइ-" वह तो केवल तथारूपवाले स्थविरों के पास केवल बोधि को प्राप्त होगा "से णं अणगारे भविस्सई ईरियासमिए जाव सुहुय हुयासणो इव तेयसा जलंते-" इस अगारावस्था में वह ईर्यासमिति आदि पांच समिति का पालन करेगा, यावत् अच्छीतरह जलती हुयी अग्नि की तरह वह अपने तेज से चमकेगा "तस्स णं भगवओ अणुत्तणं णाणेणं एवं दंसणेणं चरित्तेणं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतीए गुत्तीए मुत्तीए अणुत्तरेणं सव्वसंजम सुचरियतवफलणिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स—" अनुत्तरज्ञान से-अनुत्तरदर्शन से-अनुत्तरचारित्र से-अप्रतिबद्ध विहार से-आर्जवसे—मार्दव से-लाघव से-क्षमा से गुप्ति से-त्यागसे-अनुत्तर सर्वसंयम से-सुचरित्र से-तप से फल से-एवं निर्बाण मार्ग से आत्मा को

ઉત્પન્ન થશે, ભોગથી વર્દ્ધિત થશે, છતા એ કામથી લિપ્ત થશે નહિ, ભોગોથી લિપ્ત થશે નહિ, મિત્ર જ્ઞાતિ, નિજક સંબંધિજન અને પરિજનોમા લિપ્ત થશે નહિ" "से ण तहारूवाणं थेराणं अतिए—केवल बोहिं बुज्झिहिइ—मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सइ" તે તો ફક્ત તથારૂપ સ્થવિરોની પાસે કેવલ બોધિને પ્રાપ્ત કરશે. મુંડિત થશે એટલે કે અગારાવસ્થામાથી અનગારાવસ્થા પ્રાપ્ત કરશે. से णं अणगारे भविस्सइ ईरिया समिए जाव सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंते" આ અણગારાવસ્થામા તે ઇર્યાસમિતિ વગેરે પાચ સમિતિનું પાલન કરશે યાવત સારી રીતે પ્રજવલિત અગ્નિની જેમ તે પોતાના તેજથી ચમકશે. "तस्स णं भगवओ—अणुत्तरेणं णाणेणं एवं दंसणेण चरित्तेणं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेण खंतीए गुत्तीए मुत्तीए अणुत्तरेण सव्वसंजमसुचरिय तव फल णिव्वाणमग्गेण अप्पाणं भावेमाणस्स" અનુત્તર જ્ઞાનથી, અનુત્તર દર્શનથી, અનુત્તર ચારિત્રથી, અપ્રતિબદ્ધ વિહારથી, આર્જવથી, માર્દવથી, લાઘવથી, ક્ષમાથી, ગુપ્તિથી ત્યાગથી, અનુત્તર સર્વ સયમથી, સુચરિત્રથી, તપથી, ફળથી, અને નિર્માણ માર્ગથી

यमानस्य अनन्तम् अनुत्तरं कृत्स्नं प्रतिपूर्णं निरावरणं निर्व्याघातं केवलवरज्ञान-दर्शनं समुत्पत्स्यते। ततः खलु स भगवान् अर्हन् जिनः केवली भविष्यति, सदेवमनुजासुरस्य लोकस्य पर्यायं ज्ञास्यति, तद्यथा आगतिं गतिं स्थितिं च्यवनम् उपपातं तर्कं कृतं मनोमानसिकं खादितं भुक्तं प्रतिसेवितम् आविष्कर्म रहःकर्म अरहा अरहस्य भागी तस्मिंस्तस्मिन् काले मनोवाक्काययोगे वर्तमानानां लोके सर्वजीवानां सर्वभावान् जानन् पश्यन् विहरिष्यति। ॥सू० १७४॥

भावित करते हुवे उस भगवान् दृढकुमार के "अणंते अणुत्तरे कसिणे पडिपुण्णे निरावरणे णिव्वाघाए केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिइ—" अनन्त-अनुत्तर-कृत्स्न-प्रतिपूर्ण-निरावरण-निर्व्याघात ऐसे केवल ज्ञान, और केवलदर्शन उत्पन्न होंगे- "तए णं से भगवं, अरहा जिणे केवली भविस्सइ-" तब ये दृढकुमार भगवान् अर्हन्त जिन केवली हो जावेंगे। "सदेवमाणुयासुरस्स लोगस्स परियायं जाणिहिइ, तं जहा आगइं, गइं, ठिइं चवणं, उववायं, तक्कं, कडं मणोमाणसियं खाइयं-भुत्तं-पडिसेवियं—" मनुज-देव-असुर सहित लोक की पर्याय को जान लेंगे, जैसे—आगतिको-गति को- स्थिति को-च्यवन को-उपपात को तर्क को-कृतको मनोमानसिक को-खादित को-भुक्त को प्रतिसेवित को-प्रत्यक्ष में कृत को एकान्त में कृत को, इस तरह से मनुज, देव, असुर सहित लोक की पर्याय को वे जानेंगे। "अरहा अरहस्स भागी तं तं काल मणवयणकायजोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ-" इस तरह वे अनगार कि जिन को अप्रत्यक्ष कोई भी वस्तु नहीं रहेगी सावद्याचार से

આત્માને ભાવિત કરતા તે ભગવાન્ દૃઢકુમારને "अणंते अणुत्तरे कसिणे पडिपुण्णे निरावरणे णिव्वाघाए केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिइ" અનંત અનુત્તર કૃત્સ્ન પ્રતિપૂર્ણ નિરાવરણ નિર્વ્યાઘાત એવાં કેવળજ્ઞાન અને કેવળદર્શન ઉત્પન્ન થશે "तए णं से भगवं अरहा जिणे केवली भविस्सइ" ત્યારે તે દૃઢકુમાર ભગવાન અર્હંત જિન કેવલી થઈ જશે. "सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियायं जाणिहिइ, तं जहा आगइं, गइं, ठिइं, चवणं, उववायं, तक्कं, कडं, मणोमाणसियं खाइयं भुत्तं पडिसेवियं" મનુજ, દેવ, અસુર સહિત લોકની પર્યાયને જાણી લેશે, એટલે કે આગતિને, ગતિને, સ્થિતિને, ચ્યવનને, ઉપપાતને, તર્કને, કૃતને, મનોમાનસિકને ખાદિતને, ભુક્તને, પ્રતિસેવિતને પ્રત્યક્ષમાં કૃતને, એકાન્તકૃતને, આમ તે મનુજ દેવ, અસુર સહિત લોકની પર્યાયને જાણશે. "अरहा अरहस्स भागी तं तं काल वयणकायजोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाण सव्वभावे जाणमाणे माणे विहरिस्सइ" આ પ્રમાણે તે અનગાર કે જેમના માટે પ્રત્યક્ષ એવી કોઈ

टीका-तए णं से'' इत्यादि-ततः खलु स दृढप्रतिज्ञो दारकः तेषु पूर्वोक्तेषु विपुलेषु-प्रचुरेषु अन्नभोगेषु 'यावत्'-यावत्पदेन-पानभोगेषु लयनभोगेषु वस्त्रभोगेषु'' इति सङ्गृह्यते, तथा-शयनभोगेषु च नो सङ्क्ष्यति-आसक्तिं न करिष्यति नो गर्धिष्यति-गृद्धिमान् न भविष्यति, नोमूर्च्छिष्यति-मूर्च्छाभावं नो करिष्यति नो अध्युपपत्स्यते-तदेकमना नो भविष्यति। अमुमेवार्थं स दृष्टान्माह-''से जहा णामए'' इत्यादि-यथा-येन प्रकारेण उत्पलं लोकप्रसिद्धं 'नामकं' इति वाक्यालङ्कारे, पद्मोत्पलमिति वा, पद्ममिति वा-'यावत्'-यावत्पदेन-'कुसुममिति वा नलिनमिति वा सुभगमिति वा सुगन्धमिति वा पुण्डरीकमिति वा महापुण्डरीकमिति वा शतपत्रमिति वा सहस्रपत्रमिति वा' इति सङ्गृह्यते, तथा-शतसहस्रमिति वा-अत्र इतिशब्दः स्वरूपनिर्देशे, वा शब्दो विकल्पे, पङ्के-कर्दमे जातं-

---

वर्जित होने के कारण सुस्पष्ट सकल आचारवाले होते हुवे उस उस काल में मन-वचन-काय-योग में वर्तमान इस लोक के समस्त जीवों के समस्त भावों को जानते हुवे, और-देखते हुवे भूमण्डल में विहार करेंगे।

टीकार्थ—स्पष्ट है, परन्तु-इस में जो विशेषता है, वह इस प्रकार से है-वे दृढप्रतिज्ञदारक उन पूर्वोक्त विपुल अन्नभोगों में यावत्—पानभोगों में,- तथा-लयनयोगों में वस्त्रभोगों में आसक्ति नहीं करेंगे, गृद्धियुक्त नही बनेगे, मूर्च्छाभाव को नहीं धारण करेंगे, और-न उन में तल्लीन मन वाले होंगे, इस बात को दृष्टान्त द्वारा यों समझाया गया है-जैसे-पद्मोत्पल अथवा-पद्म, यावत् कुसुम, अथवा-नलिन या-सुभग, या-सुगन्ध, या-पुण्डरीक, या -महापुण्डरीक, या-शतपत्र, या-सहस्रपत्र, ये सब कमलजाति के भेदरूप कमल

વસ્તુ બાકી રહેશે નહિ સાવદ્યાચારથી વર્જિત હોવા બદલ સુસ્પષ્ટ સકલ આચારવાળા થઈને તે તે કાલમા મનવચન, કાય, યોગમા વર્તમાન આ લોકના સમસ્ત જીવોને સમસ્ત ભાવોને જાણતાં અને જોતા ભૂમંડલમા વિહાર કરશે

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ છે પણ આમા જે વિશેષતા છે તે આ પ્રમાણે છે તે દઢપ્રતિજ્ઞ દારક તે વિપુલ અન્નભોગોમા યાવત્ પાનભોગોમા, લયભોગોમા, વસ્રભોગોમા તેમજ શયનભોગોમા આસક્ત થશે નહિ ગૃદ્ધિયુક્ત બનશે નહિ, મૂર્છાભાવયુક્ત થશે નહિ અને તેમા તલ્લીન પણ થશે નહિ. એજ વાતને દષ્ટાંત વડે આ પ્રમાણે સમજાવવામા આવી છે કે જેમ પદ્મોત્પલ અથવા પદ્મ યાવત્ કુસુમ, અથવા નલિન કે સુભગ, કે સુગંધ, કે પુંડરીક, કે મહાપુંડરીક, કે શતપત્ર, કે સહસ્રપત્ર આ બધા કમલ જાતિના કમળો કર્દમ (કાદવ)મા ઉત્પન્ન હોય છે, પાણીમા વૃદ્ધિ પામે છે,

समुत्पन्न, जले संवृद्धं-वृद्धिं गतमपि नोपलिप्यते—नोपलिप्तं भवति, पङ्करजसा, नोपलिप्यते जलरजसा, इत्थं दृष्टान्तमुक्त्वा दार्ष्टान्तिकमाह—'एवमेव' इत्यादि। एवमेव-अनेन प्रकारेणैव दृढप्रतिज्ञोऽपि दारकः कामैः जातोऽपि भोगैः संवृद्धो वृद्धिं गतोऽपि कामरजसा नोपलेप्स्यते-उपलिप्तो न भविष्यति, भोगरजसा नोपलेप्स्यते-उपलिप्तो न भविष्यति, तथा मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनेन—तत्र मित्राणि-सुहृदः, ज्ञातयः माता-पिता-भ्रात्रादयः निजकाः-स्वकीयाः पुत्रादयः, स्वजनाः-पितृव्यादयः सम्बन्धिनः—स्वश्वशुरपुत्रश्वशुरादयः, परिजनाः-दासीदासादयः एतेषां समाहारस्तेन सह नोपलेप्स्यते-उपलिप्तो नो भविष्यति। अपितु स खलु दृढप्रतिज्ञः अनगारो भविष्यति, कीदृशोऽनगारो भविष्यति? 'ईरियासमिए इत्यादि। ईर्यासमितः ईर्यासमितिनायुक्तः, 'यावत्' यावत्पदेन-भासासमिए एसणासमिए आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपरिट्ठावणियासमिए मणगुत्ते वयगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी अममे अकिंचणे छिण्णगंथे

यद्यपि-कीचड से उत्पन्न होते हैं, जल में वृद्धि पाते हैं, परन्तु फिर भी कीचड रज से लिप्त नहीं होते हैं। जलरज से सम्बन्धित नहीं होते हैं, इसी प्रकार से-दृढप्रतिज्ञ भी दारक काम से उत्पन्न हुवा है भोगों से संवर्धित हुवा है, फिर भी वह काम रज से उपलिप्त नहीं बनेगा, मित्रजनों से ज्ञातिजनों से माता पिता, भ्राता आदि कों से निजजनों से पुत्रादिकों से स्वजनों से पितृव्यादि कों से सम्बन्धित जनों से श्वशुर पुत्रश्वशुर आदि से, एवं परिजनों से दासीदास आदि कों से सम्बद्ध नहीं होगा। किन्तु वह दृढप्रतिज्ञ अनगार होगा। ईर्यासमिति का पालन करेगा, यावत् भाषा समिति का एषणा समिति का, आदानभाण्डमात्र निक्षेपणसमिति का उच्चारप्रस्रवण खेल सिंधाण जल्ल परिष्ठापनिका समिति का पालन करेगा, मनोगुप्ति का वचन गुप्ति का कायगुप्तिका पालन करेगा यहां ऐसा समझना चाहिये। हित मितप्रिय वचन बोलना इसका नाम भाषासमिति है। इस

પણ છતા એ કાદવથી લિપ્ત થતા નથી. આમ તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ દારક પણ કામથી ઉત્પન્ન થશે ભોગોથી સંવર્દ્ધિત થશે છતાએ તે કામરજથી ઉપલિપ્ત નહિ થશે, મિત્રજનોથી પુત્રાદિકોથી સ્વજનોથી પિતૃવ્યાદિકોથી સંબધીજનોથી શ્વશુર, પુત્રશ્વશુર વગેરેથી અને પરિજનોથી, દાસીદાસ વગેરેથી સમ્બદ્ધ થશે નહિ. પણ તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ અનગાર થશે. ઈર્યાસમિતિનુ પાલન કરશે, યાવત ભાષા સમિતિનું, એષણા સમિતિનું, આદાન ભાંડમાત્ર નિક્ષેપણસમિતિનું ઉચ્ચાર પ્રસવણ-ખેલ, સિંઘાણ જલ્લ-પરિસ્થાપનિકા સમિતિનું પાલન કરશે. મનોગુપ્તિનું, વચોગુપ્તિનું, કાયગુપ્તિનું પાલન કરશે. આમ જ સમજવું જોઈએ, હિત-મિત પ્રિયવચન બોલવુ તેનુ નામ 'ભાષા સમિતિ છે.

छिण्णसोए निरुवलेवे कंसपाईव मुक्कतोए संखे इव निरंजणे जीवे विव अप्पडिहयगई जच्चकणगंपिव जायरूवे आदरिसफलगे इव पगडभावे कुम्मे इव गुत्तिंदिए, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे, गगणमिव णिरालंबणे, अणिलो इव निरालए, चंदोइव सोमलेसे, सूरो इव दित्ततेए, सागरो इव गभीरे, विहग इव सव्वआ विप्पमुक्के, मंदरो इव अप्पकंपे, सारयसलिलं इव सुद्धहियए, खग्गिविसाणं इव एगजाए, भारंडपक्खीव अप्पमत्ते, कुंजरो इव सोडीरो, वसभो इव जायत्थामे, सीहो इव दुद्धरिसे, वसुन्धरा इव सव्वफासविसहे' इति संग्राह्यम् । एतच्छाया च—भाषासमित एषणासमित आदानभाण्डमात्रनिक्षेपणासमितः उच्चारप्रस्रवणखेलशिङ्घाणजल्लपरिष्ठापनिकासमितो मनोगुप्तो वचोगुप्तः कायगुप्तो गुप्तो गुप्तेन्द्रियो गुप्तब्रह्मचारी अममः अकिञ्चनः, छिन्नग्रन्थः, छिन्नस्रोताः, निरुपलेपः, कांस्यपात्रीव मुक्ततोयः, शङ्ख इव निरञ्जनः, जीव इव अप्रतिहतगतिः, जात्यकनकमिव जातरूपः, आदर्शफलक इव प्रकटभावः, कूर्म इव गुप्तेन्द्रियः पुष्करपत्रमिव निरुपलेपः गगनमिव निरालम्बनः अनिल इव निरालयः, चन्द्र इव सोमलेश्यः, सूर इव दीप्ततेजाः, सागर इव गम्भीरः, विहग इव सर्वतो विप्रमुक्तः, मन्दर इव अप्रकम्पः शारदसलिलमिव शुद्धहृदयः, खड्गिविषाणमिव एकजातः, भारण्डपक्षीव अप्रमत्तः, कुञ्जर इव शौण्डीरः, वृषभ इव जातस्थामा, सिंह इव दुर्द्धर्षः, वसुन्धरेव सर्वस्पर्शविषहः-इति । तत्र भाषासमित —भाषासमितियुक्तः, एषणासमितः-एषणायां-भक्ताद्येषणायाम् उद्गमादिदोषवर्जनपूर्वकं समितः—समिति युक्तः, विशुद्धाहारादिग्रहणान्वेषणोपयोगयुक्त इत्यर्थः । तथा आदानभाण्डमात्रनिक्षेपणासमितः—आदाने ग्रहणे—अस्य भाण्डामात्रयोरित्यनेन सम्बन्धः, प्रत्यासत्तिन्यायात् साहचर्यात् देहली दीपन्यायाद् वा, भाण्डस्य—पात्रस्य मात्रस्य—वस्त्राद्युपकरणस्य च निक्षेपणायाम्—अवस्थापने समितः—प्रतिलेखनप्रमार्जनपूर्वकं प्रवृत्ति-

---

समिति से युक्त होना इसका नाम भाषासमिति युक्त है, । भक्त आदि की एषणा में उद्गमादि दोषवर्जनपूर्वक जो समित होना. इसका नाम एषणासमिति है, अर्थात् विशुद्ध आहार आदि का ग्रहण करने और अन्वेषण करने मे उपयोगयुक्त होना, उसका नाम—एषणासमित है । भाण्ड—पात्र—मात्र वस्त्रादि उपकरण का निक्षेपण रखने मे एवं—अवस्थापन मे समित होना. इसका

ભકત વગેરેની એષણામા ઉદ્ગમાદિ દોષવર્જનપૂર્વક સમિત થશે તેનુ નામ એષણા સમિતિ છે એટલે કે વિશુદ્ધ આહાર વગેરે ગ્રહણ કરવા અને અન્વેષણ કરવામા ઉપયોગ યુકત થવું તેનુ નામ એષણા સમિતિ છે. ભાંડ-પાત્ર-માત્ર-વસ્ત્રાદિ ઉપકરણના નિક્ષેપણમા અને અવસ્થાનમા સમિતિયુકત થવુ તેનુ નામ આદાનભાંડમાત્ર નિક્ષેપણા

युक्त इत्यर्थः, तथा—उच्चारप्रस्रवणखेलशिङ्घाणजल्लपरिष्ठापनिकासमितिः—तत्र उच्चारः—पुरीषं, प्रस्रवणं—मूत्रं, खेलः—श्लेष्मा-उपलक्षणत्वान्निष्ठीवनस्यापि थूंकइति भाषाप्रसिद्धस्यापि ग्रहणम् शिङ्घाणं नासिकामलं, जल्लः—स्वेदजमलम्, एतेषां परिष्ठापनिका, परिष्ठापना-परित्यागः, सैव परिष्ठापनिका, तस्या समितः—सम्यगुपयुक्तः, तथा—मनोगुप्तः—मनोगुप्तिस्त्रिधा—तत्र आर्तरौद्र-ध्यानानुबन्धि कल्पनाजालवियोगरूपा प्रथमा १, शास्त्रानुसारिणी पर-लोकसाधिका धर्मध्यानानुबन्धिनी माध्यस्थ्यपरिणतिर्द्वितीया २, मनोवृत्तिनिरोधेन योगनिरोधावस्थाभाविनी आत्मरमणरूपा तृतीया ३, तदुक्तं योगशास्त्रे—

"विमुक्तकल्पनाजालं समत्वे सुप्रतिष्ठितम् ।
आत्मारामं मनस्तज्ज्ञै र्मनोगुप्तिरुदाहृता ।१।" इति ।

नाम-आदानभाण्डमात्रनिक्षेपणासमिति है, अर्थात्-प्रतिलेखन, प्रमार्जनपूर्वक प्रवृत्ति से युक्त होना. इसका नाम आदानभाण्डमात्रनिक्षेपणा समिति है। उच्चार नाम-पुरिषका है, प्रस्रवण नाम-मूत्र का है, खेल नाम श्लेष्मा का है, उपलक्षण से थूक का भी यहां ग्रहण किया गया है. । शिङ्घाणनाम से यहां नासिका का मल गृहीत होता है, (नासामलं तु सिंघाणं इति अमरः)। स्वेदज मैल का नाम—जल्ल है. इनकी परिष्ठापनिका में त्यागमें समित होना, उसका नाम—उच्चारप्रस्रवणखेलशिङ्घाणजल्लपरि-ष्ठापनसमिति है । मनोगुप्ति-तीन प्रकार की हैं, इनमें-आर्त रौद्र ध्यानानु-बन्धी कल्पनाजाल का परित्याग करना इसका नाम प्रथम मनोगुप्ति है—१ शास्त्रानुसारिणी-परलोक साधिका-धर्मध्यानानुबन्धिनी. एवं माध्यस्थ परिणतिरूप द्वितीय मनोगुप्ति है—२ मनोवृत्ति के निरोध से योग निरोधकरनेवाली भाविनी जो-आत्मरमणरूप गुप्ति है. वह तृतीय मनोगुप्ति है. । योगशास्त्र में कहा है—

સમિતિ છે. એટલે કે પ્રતિલેખન, પ્રમાર્જનપૂર્વક, પ્રવૃત્તિયુકત થવું તે આદાન-ભાંડ માત્ર નિક્ષેપણા સમિતિ છે. પુરીષનું નામ ઉચ્ચાર મૂત્રનું નામ પ્રસ્રવણ, શ્લેશ્માનું નામ ખેલ છે. ઉપલક્ષણથી થૂકનું પણ અહીં ગ્રહણ કરવામા આવ્યું છે શિંઘાણ નામ અહીં નાસિકા મલ માટે પ્રયુકત થયેલ છે. (शिंघाण काचपात्रे च लोह-नासिक्ययोर्मले इति मेदिनी कोषः) સ્વેદજમલનું નામ જલ્લ છે, એમની પરીષ્ઠાપનિકામા-ત્યાગમા સમિત થવું તેનુ નામ ઉચ્ચાર પ્રસ્રવણ ખેલ શિંઘાણ જલ્લ પરિષ્ઠાપન સમિત છે. મનોગુપ્તિ ત્રણ પ્રકારની છે. આમા આર્તરૌદ્રધ્યાનાનુબન્ધી કલ્પનાઓનો પરિત્યાગ કરવો તે પ્રથમ મનોગુપ્તિ છે. શાસ્ત્રાનુસારિણી પરલોક સાધિકા ધર્મધ્યાનાનુબંધિની અને માધ્યસ્થ પરિણતિરૂપ દ્વિતીય મનોગુપ્તિ છે. ૨, મનોવૃત્તિના નિરોધાવસ્થાભાવિની જે આત્મરક્ષણ ગુપ્તિ છે તે તૃતીય મનોગુપ્તિ છે. યોગશાસ્ત્રમાં

एवंविधया त्रिविधयाऽपि मनोगुप्त्या युक्त इत्यर्थः, तथा—वचोगुप्तः=वचनगुप्तियुक्तः, वचनगुप्तिश्चतुर्विधा, तथाहि- सत्या १, मृषा २, सत्यामृषा ३, असत्यामृषा चेति। उक्तं च—

'सच्चा तहेव मोसा य, सच्चा-मोसा तहेव य।
चउत्थी असच्चमोसाय, वयगुत्ती चउव्विहा। (उत्त० २४ २२ गा०)इति,

छाया—"सत्या तथैव मृषा च, सत्यामृषा तथैव च।
चतुर्थ्यसत्यमृषा च, वचोगुप्तिश्चतुर्विधा। इति।

तथा-कायगुप्तः कायगुप्तियुक्तः, कायगुप्तिस्तु गमनागमनप्रचलनादि क्रियाणां गोपनम्, सा द्विविधा— चेष्टानिवृत्तिरूपं १, यथागमं

जिसमें-कल्पना जाल विमुक्त हों, और—समत्व में जो सुप्रतिष्ठित हो—ऐसा मन आत्माराम है—आत्मारूपी उद्यान (बाग) है. इसमें-रमण करना मनोगुप्ति है.। इस प्रकार की तीन गुप्तियों से मनका युक्त होना इसका-नाम मनोगुप्ति से गुप्त होना है.। इसी प्रकार से वचनगुप्ति से युक्त होना सो—वचनगुप्ति से गुप्त होना है, वचनगुप्ति चार प्रकार की है,—सत्यावचोगुप्ति—१ मृषावचोगुप्ति—२ सत्यामृषावचोगुप्ति—३ और—असत्यामृषावचोगुप्ति है—४ उक्तञ्च—"सच्चा तहेव मोसाय सच्चामोसा तहेवय.।

चउत्थी असच्च मोसा-य वयगुत्ती चउव्विहा—॥१॥

(उत्त० २४—२२ गाथा-) कायगुप्ति से युक्त होना इसका नाम—काय गुप्त है—१ गमनाऽऽगमनादिरूप प्रचलनादि क्रियाओं का गोपन करना कायगुप्ति है—२ यह कायगुप्ति चेष्टानिवृत्तिरूप. एवं—यथागम चेष्टा नियमनरूप से दो प्रकार की

કહ્યુ છે કે જેમા કલ્પનાજાલ વિમુકત હોય અને સમત્વમા જે સુપ્રતિષ્ઠિત હોય એવુ મન આત્મારામ છે આત્મારૂપી ઉદ્યાન છે આમા રમણ કરવુ તે મનોગુપ્તિ છે. "विमुक्तकल्पनाजाल समत्वे सुप्रतिष्ठितम्। आत्मारामं मनस्तज्ज्ञैर्मनोगुप्तिरुदाहृता ॥१॥ આ જાતની ત્રણ ગુપ્તિઓથી મનયુકત થવુ તેનુ નામ મનોગુપ્તિથી ગુપ્ત થવુ છે આ પ્રમાણે વચનગુપ્તિથી યુકત થવુ તે વચનગુપ્તિથી ગુપ્ત થવુ છે. વચનગુપ્તિ ચાર પ્રકારની છે સત્યામનો ગુપ્તિ ૧, મૃષા મનોગુપ્તિ ૨, સત્યામૃષામનોગુપ્તિ ૩, અને અસત્યામૃષામનો ગુપ્તિ ૪

કહ્યું છે,—"सच्चा तहेव मोसाय सच्चामोसा तहेव य।

चउत्थी असच्चमोसाय वय गुत्तीचउव्विहा ॥१॥

(ઉત્ત૦ ૨૪—૨૨ ગાથા) કાયગુપ્તિથી યુકત થવુ તેનુ નામ કાયગુપ્ત છે ૧, ગમનાગમન-વગેરે રૂપ પ્રચલન વિગેરે ક્રિયાઓનુ ગોપન કરવુ કાયગુપ્તિ છે. ૨. આ કાય-ગુપ્તિ ચેષ્ટા નિવૃત્તિરૂપ અને યથાગમ ચેષ્ટા નિયમનરૂપથી બે પ્રકારની હોય છે

चेष्टानिग्रमरूपा च २। तत्र परीपहोपसर्गादि संभवेऽपि यत्कायोत्सर्गादि-करणादिना कायस्य निश्चलताकरणम् सर्वयोगनिरोधावस्थायां वा सर्वथा यत् कायचेष्टानिरोधनं सा प्रथमा। गुरुमापृच्छ्य शरीरसंस्तारकभूम्यादिप्रतिलेखना प्रमार्जनादिसमयोक्तक्रियाकलापपुरस्सरशयनासनादिविधेयम्, ततः शयनासन-निक्षेपादानादिपु स्वेच्छया चेष्टापरिहारेण नियता—शास्त्रनियमानुसारिणी या कायचेष्टा सा द्वितीयेति। उक्तं च—

"उपसर्गप्रसङ्गेऽपि कायोत्सर्गजुषो मुनेः।
स्थिरीभावः शरीरस्य कायगुप्तिर्निगद्यते ॥१॥
शयनाऽऽसननिक्षेपाऽऽदानसङ्क्रमणेपु च।
स्थानेपु चेष्टानियमः कायगुप्तिस्तु सा परा ।२। इति,

होती है। इनमें परीषह—और उपसर्ग के आने पर भी कायोत्सर्गकरणरूप क्रिया से शरीर को निश्चल कर देना होता है, अथवा—सर्वयोग निरोधावस्था में सर्वथा जो काय की चेष्टा का निरोध किया जाता है वह चेष्टा निवृत्तिरूप प्रथम कायगुप्ति है। गुरु को पूछ कर शरीर, संस्तारक, भूमि आदि की प्रतिलेखना प्रमार्जना आदि के समय में उक्त क्रियाकलाप पुरस्सर जो—शयन-आसन आदि करना होते हैं—सो उन शयनासनादिकों के निक्षेपन रखने में, एवं—आदान आदि कों में अपनी इच्छा से चेष्टा के परिहार से नियत(रखने में) अर्थात् गुरु को पूछकर के शयनआदि करना—शास्त्रनियमानुसारिणी जो काय चेष्टा है वह—यथागमचेष्टा नियमनरूप द्वितीयकायगुप्ति है.। २

उक्त भी है—"उपसर्गप्रसङ्गेऽपि" इत्यादि

अर्थात्—"उपसर्ग आने पर कायोत्सर्ग में मनको
स्थिर रखना यह कायगुप्ति है। तथा.

આમા પરીષહ અને ઉપસર્ગની સ્થિતિમા પણ કાયોત્સર્ગકરણરૂપ ક્રિયાથી શરીરને નિશ્ચલ કરવામા આવે છે. અથવા સર્વયોગ નિરોધાવસ્થામા જે સર્વથા કાયચેષ્ટાનો નિરોધ કરવામા આવે છે. અથવા સર્વયોગ નિરોધાવસ્થામા જે સર્વથા કાયચેષ્ટાનો નિરોધ કરવામાં આવે છે તે ચેષ્ટા નિવૃત્તિરૂપ પ્રથમ કાયગુપ્તિ છે. ૧, ગુરુની આજ્ઞા મેળવીને શરીર સંસ્તારક, ભૂમિ વગેરેની પ્રતિલેખના, પ્રમાર્જના વગેરેના સમયે ઉપર્યુક્ત ક્રિયાકલાપ પુરસ્સર જે શયન આસન વગેરે વિધેય હોય છે તો તે શય-નાસનાદિકોના નિક્ષેપમા અને આદાન આદિકોમા પોતાની ઈચ્છાથી ચેષ્ટાના પરિહારથી નિયતા-શાસ્ત્રનિયમાનુસારિણી જે કાયચેષ્ટા છે તે દ્વિતીય યથાગમ ચેષ્ટા નિયમનરૂપ દ્વિતીય કાયગુપ્તિ છે, ૨.

કહ્યુ છે:—उपसर्ग प्रसङ्गेऽपि कायोत्सर्गजुषोमुनेः।
स्थिरीभावः शरीरस्य कायगुप्तिर्निगद्यते ॥१॥

तथा–गुप्तः–अशुभयोगनिग्रहरूपगुप्त्या युक्तः, गुप्तब्रह्मचारी–गुप्तं नवभिर्ब्रह्मचर्यगुप्तिभी रक्षितं ब्रह्म=मैथुनविरमणं चरति तच्छीलः, अममः–ममत्वरहितः, अकिञ्चनः–धर्मोपकरणातिरिक्तवस्तुरहितः, छिन्नग्रन्थः-ग्रथ्नाति–बध्नाति आत्मानं कर्मणेति ग्रन्थः, स द्विविधो द्रव्यभावभेदात् द्रव्यतो–हिरण्यादि, भावतो मिथ्यात्वादिः, स द्विविधो ग्रन्थश्छिन्नो येन स तथा, छिन्नस्रोताः–छिन्नसंसारप्रवाहः, निरुपलेपः–कर्मबन्धहेतुरुपलेपो रागादिस्तेन रहितः. निरुपलेपत्वमेव सदृष्टान्तमाह–कांस्यपात्रीव मुक्ततोयः–मुक्त –त्यक्त तोयमिव तोयं संसारबन्ध-

---

शयनासन इत्यादि–शयन में, आसन में, लेने में रखने में, चलने में
काय को यतना पूर्वक रखना यह कायगुप्ति है

इस प्रकार से वे दृढप्रतिज्ञ अनगार इन पूर्वोक्त समितियों का तथा–गुप्तियों का पालन करनेवाले होंगे। तथा–वे गुप्त होंगे, अशुभ योगनिग्रहरूप गुप्ति से युक्त बनेंगे, गुप्तब्रह्मचारी होंगे, नौ वाटिका (वाड) द्वारा मैथुन विरमणरूप ब्रह्म की रक्षा करेंगे उत्तम-ममत्व रहित होंगे, वे-अकिञ्चन होंगे, धर्मोपकरण से अतिरिक्त अन्य वस्तुओं से विहीन होंगे। जो आत्मा को कर्म के साथ वान्धता है. वह ग्रन्थ है, यह–ग्रन्थ द्रव्य-ग्रन्थ, और-भावग्रन्थ के भेद से दो प्रकार का है। हिरण्य-सुवर्ण आदि बाह्यग्रन्थ है, एवं-मिथ्यात्व आदि भावग्रन्थ है. इन दोनों प्रकार के ग्रन्थ से वे रहित होंगे। संसारप्रवाह जिनका नष्ट हो चुका है. ऐसे होंगे, निरुपलेप होंगे, कर्मवन्धन का हेतु जो रागादिक उपलेप हैं उससे रहित होंगे। इसी बात को सूत्रकार दृष्टान्तद्वारा पुष्ट करते

शयनासननिक्षेपादाऽऽनसंक्रमणेषु च ।
स्थानेषु चेष्टा नियमः कायगुप्तिस्तु साऽपरा ॥२॥

આ પ્રમાણે તે દઢપ્રતિજ્ઞ અનગાર આ પૂર્વોકત સમિતિઓને તથા ગુપ્તિઓનું પાલન કરશે. તેમજ તેઓ ગુપ્ત થશે. અશુભયોગ નિગ્રહરૂપ ગુપ્તિથી યુકત બનશે. ગુપ્ત બ્રહ્મચારી થશે, નવ વાટિકાદ્વારા મૈથુન વિરમણરૂપ બ્રહ્મની રક્ષા કરશે ઉત્તમ મમત્વરહિત થશે, તે અકિંચન હશે. ધર્મોપકરણાતિરિકત વસ્તુઓથી રહિત થશે જે આત્માને કર્મની સાથે બાંધે છે તે ગ્રન્થ છે. આ ગ્રંથ દ્રવ્યગ્રંથ અને ભાવગ્રંથના રૂપમાં બે પ્રકારનો છે હિરણ્ય-સુવર્ણ વગેરે બાહ્ય ગ્રંથ છે અને મિથ્યાત્વ વગેરે ભાવગ્રંથ છે. આ બન્ને પ્રકારોના ગ્રંથોથી તે રહિત થશે જેમનો સંસારપ્રવાહ નાશ પામ્યો છે એવા તેઓ થશે નિરૂપલેપ થશે. કર્મબંધનના હેતુરૂપ રાગાદિક ઉપલેપોથી તેઓ રહિત થશે એજ વાતને સૂત્રકાર દષ્ટાંત દ્વારા પુષ્ટ કરે છે કે

हेतुत्वात् स्नेहो येन स तथा। यथा-कांस्यपात्र्यां पतितमपि जलं लिप्तं न भवति तथा संसारबन्धहेतुस्तस्मिन्नुपलिप्तो न भविष्यतीत्यर्थः, शङ्ख इव निरञ्जनः- अञ्जनमिवाञ्जनं-द्वेषादिकं तस्मान्निर्गतः-तद्रहितः, यथा-शङ्खे किमपि कज्जलादिद्रव्यं स्थितिं न लभते तथैव तस्मिन्ननगारे द्वेषादिकं न स्थास्यतीत्यर्थः, जीव इव अप्रतिहतगतिः-जीवो यथा अव्याहतगत्या सर्वत्र याति, तथाऽसौ देशनगरादिषु अप्रतिबन्धविहारित्वेन वादादिषु कुतीर्थिकमतनिराकरणसामर्थ्योपेतत्वेन च अस्खलितगतिर्भविष्यतीति। जात्यकनकमिव जातरूपः-तपःसंयमादिसमुद्भूतनैर्मल्यः, यथा शोधितं सुवर्णं निर्मलं भवति तथैवासौ रागादिरहितत्वेन निर्मलो भविष्यतीति, आदर्शफलक इव प्रकटभावः-आदर्शफलको यथा प्रतिबिम्बितान् मुखाद्यवयवान् यथाऽवस्थितं प्रकटी करोति, तथा तत्कृतधर्मदेश-

---

है-"कांस्यपात्रीव मुक्ततोयः-" कांसे के पात्र में पडा हुआ पानी जिस प्रकार पात्र में लिप्त नहीं होता ह-उसी प्रकार से संसार बन्धन का हेतु राग-द्वेष इनमें-उपलिप्त नहीं होंगे.। शङ्ख की तरह वे निरञ्जन होंगे, जैसे-शङ्खमें कज्जलादि द्रव्य ठहर नहीं सकता है, उसी प्रकार से इनमें राग द्वेषादिक नहीं ठहरेंगे जीव की तरह ये अप्रतिहतगतिवाले होंगे, जीव जिस प्रकार अपनी अव्याहतगतिद्वारा सर्वत्र चला जाता है, उसी प्रकार से-देश नगरादिकों में अप्रतिवन्धविहारी होने से, एवं-वादादिकों में कुतीर्थिक मत निराकरण करने की सामर्थ्य से युक्त होने से अस्खलित गतिवाले होंगे.। वे जातिमान् कनक के प्रकार होंगे, जिस प्रकार जात्यकनक-श्रेष्ठ सुवर्ण निर्मल होता है-उसी प्रकार से ये तपः संयमादि से समुत्पन्न निर्मलतावाले होंगे,। आदर्श-दर्पण जिस प्रकार अपने में प्रतिबिम्बित हुवे मुखादि अवयवों को यथाऽवस्थित प्रकट करता

"कांस्यपात्रीव मुक्ततोयः" કાંસાના પાત્રમા પડેલું પાણી જેમ તેમાં લિપ્ત થતુ નથી. તેમજ સંસાર બંધન હેતુ રાગદ્વેષમા તેઓ ઉપલિપ્ત થતા નથી શંખની જેમ તેઓ નિરંજન થશે જેમ શંખમા કાજલ વગેરે દ્રવ્યો સ્થિર થતા નથી તેમજ તેઓમાં રાગ દ્વેષાદિક સ્થિર થશે નહિ. જીવની જેમ તેઓ અપ્રતિહત ગતિવાળા થશે. જીવ જેમ પોતાની અવ્યાહત ગતિદ્વારા સર્વત્ર ગતિશીલ હોય છે, તેમજ દેશનગરાદિકોમાં અપ્રતિબંધ વિહારી હોવાથી અને વાદાદિકોમાં કુતીર્થિકમત નિરાકરણમા સામર્થ્યયુક્ત હોવાથી તેઓ અસ્ખલિત ગતિવાળા થશે. તેઓ જાત્યકનકની જેમ થશે. જેમ જાત્ય કનક-શ્રેષ્ઠ સુવર્ણ નિર્મળ હોય છે, તેમ તેઓ તપ સંયમ વગેરેથી સમુત્પન્ન નિર્મલતાયુક્ત થશે આદર્શ-દર્પણ જેમ સ્વપ્રતિબિંબિત મુખાદિ અવયવો તે યથાવસ્થિત પ્રકટ કરે છે તેમ તેઓશ્રીની ધર્મદેશનાથી મનુષ્યચિત્તરૂપ દર્પણમા જીવાજીવાદિ

नया जनानां चित्तदर्पणे जीवाजीवादिसकलपदार्थाः प्रकाशिष्यन्ते, इत्यर्थः, कूर्म इव गुप्तेन्द्रियः—कूर्मः-कच्छपः. यथा कूर्मो भयकारणे समुपपागते संवृतसर्वेन्द्रियो भवति, तथैवासौ संसारभ्रमणभयाद् विषयकषायसंरक्षितसकलेन्द्रियो भविष्यतीति। पुष्करपत्रमिव निरुपलेपः—यथा कमलपत्रं जलसंयोगेऽपि जलेन लिप्तं न भवति, तथैवासौ जलतुल्यस्वजनविषये वसन्नपि तत्सम्बन्धरहितो भविष्यतीति, गगनमिव निरालम्बनः—यथाऽऽकाशो निरवलम्बस्तिष्ठति तथैवासौ कुलग्रामनगराद्यालम्बनवर्जितो भविष्यतीति, अनिल इव निरालयः पवन-इव गृहरहितः, अप्रतिबन्धविहारित्वात, चन्द्र इव सौम्यलेश्यः—अनुपतापपरिणामसम्पन्नः, सूर इव दीप्ततेजाः द्रव्यतः शरीरदीप्त्या, भावतस्तपःप्रभृतिना देदीप्यमानः, सागर इव गम्भीरः—

है. उसी प्रकार उनकी धर्मदेशना से मनुष्यों के चित्तरूप दर्पण में जीव जीवादिरूप सकलपदार्थ प्रकाशित होंगे,। कूर्म—कच्छप जिस प्रकार भयकारणों के उपस्थित होने पर अपनी इन्द्रियों को गुप्त कर लेता है, उसी प्रकार से यह भी संसारपरिभ्रमणभयसे—विषय तापों से अपनी इन्द्रियों की रक्षा करने वाले होंगे. । जैसे—कमलपत्र जल के संयोग में भी उस से लिप्त नहीं होता है.उसी प्रकार से ये जल तुल्य स्वजनों के वीच में रहते हुवे भी उनके विषय में सम्बन्ध विहीन होंगे. । गगन की तरह ये निरालम्ब होंगे. । अनिल—वायु की तरह ये निरालय होंगे, अनिल को जैसे कोई गृह नहीं होता है, उसी प्रकार से अप्रतिवन्धविहारी होंगे. । चन्द्र के समान ये सौम्यलेश्यावाले होंगे सूर्य की तरह दीप्ततेज होंगे तेज द्रव्य—और भाव की अपेक्षा दो प्रकार का कहा गया है. इनमें शरीरादि की दीप्तिरूप द्रव्य तेज. और तप-आदि से होनेवाला तेज भावतेज है. । सागर की तरह ये गम्भीर होंगे, हर्ष—शोक

રૂપ સકલ પદાર્થ પ્રકાશિત થશે. કૂર્મ-કચ્છપ જેમ ભય ઉપસ્થિત થાય ત્યારે પોતાના અંગોને સંકોચી લે છે તેમ તેઓ પણ સંસાર-પરિભ્રમણ ભયથી વિષયતાપોથી પોતાની ઇન્દ્રિયોની રક્ષા કરનાર થશે. જેમ કમલપત્ર પાણીની સંયોગાવસ્થામાં પણ તેથી લિપ્ત થતું નથી તેમ તેઓ પાણીની જેમ સ્વજનોની વચ્ચે રહેવા છતાંએ તેમના વિષયમાં સંબંધ વિહીન થશે ગગનની જેમ તેઓ નિરાલંબ થશે આકાશ જેમ અવલંબન વગર છે તેમ તેઓ કુલ, ગ્રામ નગર વગેરે અવલંબનથી રહિત થશે. અનિલવાયુની જેમ તેઓ નિરાલય થશે અનિલને જેમ કોઈ ઘર નથી તેમ તેઓ પણ અપ્રતિબંધ વિહારી થશે ચન્દ્રની જેમ એઓ સૌમ્ય લેશ્યાયુક્ત થશે સૂર્યની જેમ તેઓ દીપ્ત તેજવાળા થશે તેજ દ્રવ્ય અને ભાવની અપેક્ષાએ બે પ્રકારનું છે આમાં શરીરાદિની દીપ્તિરૂપ દ્રવ્યતેજ અને તપ પ્રભૃતિથી જાયમાન તેજ ભાવતેજ છે

हर्षशोकादिकारणसंयोगेऽपि निर्विकारचित्तः, विहग इव सर्वतो विप्रमुक्तः–पक्षिवत्सङ्गरहितः, परिवारपरित्यागात् नियतवासरहितत्वाच्च, मन्दर इव अप्रकम्पः–मेरुवत् परिषहोपसर्गपवनैरविचलितः, शारदसलिलमिव शुद्धहृदयः–यथा शरदृतौ जलं निर्मलं भवति तथा रागद्वेषरहितत्वान्निर्मलचित्तो भविष्यतीति, खड्गिविषाणमिव एकजातः खड्गी–आरण्यजीवः तस्य विषाणं–शृङ्गं तद्वद् एकजातः–एकाकी रागादिसहायरहितः । तथा–भारण्डपक्षीव–भारण्डश्चासौ पक्षी च भारण्डपक्षी, अयं द्विजीवस्त्रिचरणयान् द्वाभ्यां ग्रीवाभ्यां द्वाभ्यां मुखाभ्यां च युक्तः, द्वयोर्जिवयोरेकमेवोदरं भवति, स चाप्रमत्त एव विहरति, तद्वत्

आदि कारणों के मिलने पर भी इनके चित्त में कोई क्षोभ उत्पन्न नहीं हो सकेगा. निर्विकार चित्तवाले होंगे। पक्षी की तरह सर्वतः विप्रमुक्त होंगे, सर्वसङ्ग से रहित रहेगे, परिबार आदि के परित्याग से और–नियत आवास से रहित होने से इनका ममत्वरूप सम्बन्ध किसी के साथ नहीं रहेगा. । मेरु–मन्दर की तरह ये अप्रकम्प होंगे, अर्थात् परीषह-उपसर्गरूप पवन इन्हें विचलित नहीं कर सकेगा, शारद सलिल की तरह शुद्ध होंगे–जिस प्रकार शारदऋतु में जल निर्मल रहता है उसी प्रकार राग-द्वेष रहित से ये निर्मल चित्त रहेंगे. खड्गी विषाण–गेंडोंकाशृङ्ग की समान ये एकजात होंगे रागादिरूप सहायकों से रहित होने के कारण एकाकी रहेंगे,। तथा–भारण्ड पक्षी की तरह अप्रमत्त होंगे, भारण्डपक्षी दो जीववाला होता है. इसके चरण तीन होते हैं–दो ग्रीवाओ से–दो मुखों से यह युक्त होता है, इन दो जीवों का पेट एक होता है. यह अप्रमत्त होकर विचरणशील होता है, इसी

સાગરની જેમ તેઓ ગભીર થશે. હર્ષ શોક વગેરે કારણો હોવા છતાં એ તેમના ચિત્તમાં કોઈપણ જાતનો વિકાર ઉત્પન્ન થશે નહિ. તેઓ નિર્વિકાર ચિત્તવાળા થશે, વિહગની જેમ તેઓ સર્વતઃ વિપ્રમુકત થશે તેઓ સર્વસંગથી રહિત થશે. પરિવાર વગેરેના ત્યાગથી અને નિયત આવાસથી રહિત હોવાથી તેઓ મમત્વરૂપ સંબંધ કોઈની સાથે બાંધશે નહિ મેરૂ–મંદરની જેમ તેઓ અપ્રકંપ થશે. એટલે કે પરીષહ ઉપસર્ગરૂપ પવન તેમને વિચલિત કરી શકશે નહિ. શારદ સલીલની જેમ તેઓ શુદ્ધ થશે. જેમ શરદઋતુમાં પાણી નિર્મળ રહે છે તેમ તેઓ પણ રાગદ્વેષ રહિત હોવાથી નિર્મળ ચિત્તવાળા થશે ખડ્ગી વિષાણ–ગેંડાઓના શીંગડાની જેમ તેઓ એક જાત થશે. રાગાદિરૂપ સહાયકોથી રહિત હોવા બદલ એકાકી રહેશે. તેમજ ભારંડ પક્ષીની જેમ અપ્રમત્ત થશે, ભારંડપક્ષી બે જીવયુકત હોય છે. તેને ત્રણ પગ હોય છે, બે ગ્રીવાઓ, બે મુખોથી તે યુકત હોય છે. આ બન્ને જીવોનું પેટ એકજ હોય છે,

अप्रमत्तः-तपःसंयमादिसंरक्षणे प्रमादरहितः। कुञ्जर इव शौण्डीरः-हस्तीव शूरः-कषायादिरिपुभञ्जनशीलः। वृषभ इव जातस्थामा-वृषभवत् संजातपराक्रमः। सिंह इव दुर्धर्षः-सिंहवत् परीषहादि मृगैर्दुरतिक्रमः। वसुन्धरेव सर्वस्पर्शविषहः-वसुन्धरा-पृथ्वी यथा सर्व सहमसह्यं वा स्पर्श सहते तथैवायम् अनुकूलप्रतिकूलपरीषहोपसर्गसहनशीलः। तथा-सुहुतहुताशन इव तेजसा ज्वलन्-यथा घृताद्याहुतिभिरग्निः प्रदीप्तो भवति तथैवायमपि तपःसंयमतेजसा ज्वलन्-दीप्यमानोऽनगारो भविष्यतीति पूर्वेण सम्बन्धः. तस्य-पूर्वोक्तविशेषणविशिष्टस्य खलु भगवतोऽनगारस्य अनुत्तरेण-सर्वोत्कृष्टेन ज्ञानेन, एवम्-अनेन प्रकारेण-अनुत्तरविशिष्टेन दर्शनेन 'अनुत्तर' शब्दस्य चारित्रादौ प्रत्येकत्र सम्बन्धः, ततश्च अनु-

---

प्रकार ये भी तपसंयम आदि के संरक्षण में प्रमाद रहित होंगे। कुञ्जर-हाथी के समान ये शूर होंगे, अर्थात्-कषाय आदि रिपुपुञ्जों का भञ्जन शील होंगे। वृषभ की तरह ये जातस्थामा होंगे-उत्पन्न पराक्रमवाले होंगे, सिंह की तरह दुर्धर्ष परीषहादिमृगों द्वारा दुर्धर्ष होंगे, पृथिवी की तरह सर्व स्पर्श सह होंगे-पृथ्वी जिस प्रकार सर्वसह्य एवं-असह्य स्पर्श को भी सहन करती है-इसी प्रकार से अनुकूल-प्रतिकूल परीषह एवं-उपसर्ग का ये सहन कर्त्ता होंगे। सुहुत हुताशन की तरह ये तेज से सदा जाज्वल्यमान रहेंगे। जिस प्रकार घृतादिक आहुति से अग्नि अधिकाधिक प्रज्वलित हो जाती है. इसी प्रकार ये भी तप-संयम के तेज से देदीप्यमान अनगार होंगे, इस प्रकार से इन पूर्वोक्त विशेषणों से विशिष्ट हुवे उन अनगार भगवान् दृढप्रतिज्ञ के सर्वोत्कृष्ट ज्ञानसे-सर्वोत्कृष्ट दर्शन से सर्वोत्कृष्ट चारित्र से-सर्वोत्कृष्ट

આ અપ્રમત્ત થઈને વિચરણશીલ હોય છે તેમ તેઓ પણ તપ સંયમ વગેરેનું રક્ષણ કરવામાં પ્રમાદ રહિત થશે, કુંજર-હાથીની જેમ તેઓ શૂર હશે. એટલે કે કષાય વગેરે રિપુઓને નષ્ટ કરવામાં સમર્થ થશે. વૃષભની જેમ તેઓ જાતસ્થામા થશે ઉત્પન્ન પરાક્રમવાળા થશે. સિંહની જેમ દુર્ધર્ષ-પરીષહાદિરૂપ મૃગો વડે દુર્ધર્ષ હશે વસુંધરાની જેમ સર્વસ્પર્શ સહ થશે, પૃથ્વી જેમ સર્વે સહ-અસહ્ય સ્પર્શને પણ સહન કરે છે તેમ અનુકૂલ-પ્રતિકૂલ પરીષહ અને ઉપસર્ગને તેઓ સહન કરતા થશે સુહુત હુતાશનની જેમ તેઓ તેજથી સદા જાજ્વલ્યમાન રહેશે. જેમ ઘૃત વગેરેની આહુતિથી અગ્નિ વધારે અને વધારે પ્રજ્વલિત થઈ જાય છે તેમ તેઓ પણ તપ સંયમના તેજથી દૈદીપ્યમાન અનગાર થશે આ પ્રમાણે આ પૂર્વોક્ત વિશેષણોથી વિશિષ્ટ થયેલા તે ભગવાન અનગાર દૃઢપ્રતિજ્ઞ સર્વોત્કૃષ્ટ જ્ઞાનથી, સર્વોત્કૃષ્ટ દર્શનથી, સર્વોત્કૃષ્ટ ચારિત્રથી સર્વોત્કૃષ્ટ

त्तरेण चारित्रेण अनुत्तरेण आलयेन—स्त्रीपशुपण्डकादिरहितवसतिसेवनेन, अनुत्तरेण विहारेण-विचरणेन, अनुत्तरेण आर्जवेन-सारल्येन, अनुत्तरेण मार्दवेन—मृदुत्वेन, अनुत्तरेण-लाघवेन द्रव्यतोऽल्पोपकरणरूपेण, भावतः—कषायतनुत्वरूपेण, अनुत्तरया क्षान्त्या—क्षमागुणेन, अनुत्तरया गुप्त्या-मनोवाक्कायगुप्त्या अनुत्तरया मुक्त्या निर्लोभतया, अनुत्तरेण सर्वसंयमसुचरिततपः फलनिर्वाणमार्गेण—सर्वसंयमस्य सर्वथा मनोवाक्कायानां निरोधस्य, तथा सुचरितस्य—आशंसादिदोषरहितस्य तपसो यत्फलं निर्वाणं-निर्वाणरूप फलं तस्य मार्गेण आत्मानं भावयमानस्य अनन्तम्—निरवसानम् अनुत्तरम्—सर्वोत्कृष्टं कृत्स्नं-सकलं, प्रतिपूर्णं—निश्शेषं, निरावरणम्—आवरणवर्जितम्, निर्व्याघातम्—अव्याहतम् केवलवरज्ञानदर्शनं-केवलं-सर्वोत्कृष्टत्वात् सहायवर्जितम् अतएव वरं—श्रेष्ठं यद् ज्ञानदर्शनं तत्—केवलज्ञानं केवलदर्शनं च समुत्पत्स्यते। ततः खलु स भगवान् अर्हन् जिनः केवली भविष्यति, तथा सोऽनगारः सदेवमनुजासुरस्य लोकस्य पर्यायं ज्ञास्यति, तद्यथा—आगतिं—देवलोका

निरवद्य स्थान से—पशु पण्डकादि वर्जित वसति के सेवन से—अनुत्तर विहार से अनुत्तर आर्जव से—सरलता से—अनुत्तर अल्पोपकरणरूप द्रव्य से, एवं—कषाय तनूकरणरूप भाव से—अनुत्तरक्षमागुण से-अनुत्तरगुप्ति से अनुत्तर निर्लोभतारूप मुक्ति से अनुत्तर सर्वसंयम के—मन वचन काय के-विरोध के तथा—सुचरित—आशंसादि दोष रहित तप के निर्वाणरूप फलके मार्ग से आत्मा को भावित करने से अनन्त निर्जरा से उभयलोक की भावना रहित मोक्षामार्ग से आत्मा को भावित करने से अनुत्तर, सर्वोत्कृष्ट, कृत्स्न—सकल, प्रतिपूर्ण, आवरण वर्जित. और—अव्याहत ऐसा सर्वोत्कृष्ट होने से सहायवर्जित, अतएव—श्रेष्ठ केवलज्ञान और—केवलदर्शन को प्राप्त करेंगे, तब—वे भगवान् अर्हन् जिन केवली हो जावेगे, तथा सदेव मनुजासुर लोककी पर्याय का ज्ञाता हो जावेगे, तथा वे आगति को—देवलोकादि से मनुष्य गति

આલાપથી, પશુપંડકાદિ વર્જિત વસતિકાના સેવનથી, અનુત્તર વિહારથી, અનુત્તર આર્જવથી, સરલતાથી અનુત્તર અલ્પોપકરણરૂપ દ્રવ્યથી અને કષાય તનૂકરણરૂપ ભાવથી। અનુત્તર ક્ષમાગુણથી અનુત્તર ગુપ્તિથી અનુત્તર નિર્લોભતારૂપ મુકિતથી. અનુત્તર સર્વ સંયમથી. મન વચન કાયના વિરાધના તેમજ સુચરિત-આશંસાદિ દોષરહિત તેમના નિર્વાણરૂપ ફળના માર્ગથી આત્માને ભાવિત કરવાથી અનંત નિરવસાન, અનુત્તર, સર્વોત્કૃષ્ટ, કૃત્સ્ન સકલ પ્રતિપૂર્ણ આવરણ વર્જિત અને અવ્યાહત એવા સર્વોત્કૃષ્ટ હોવાથી સહાય વર્જિત એથી શ્રેષ્ઠ કેવળજ્ઞાન અને કેવળદર્શનને પ્રાપ્ત કરશે. ત્યારે તે ભગવાન્ અર્હન જિન કેવલી જઈ જશે, તથા સદેવ મનુજાસુરલોકની

दिभ्यो मनुजगतावागमनं, गतिं–मनुष्यलोकाद् देवादिगतिषु गमनम्, स्थितिं–देवलोकादिष्ववस्थानम्, च्यवनं–देवलोकादायुःक्षयेण पतनम्, उपपातं–देवनारकयोर्जन्म. तर्कं–विचारम्, कृतं विहितं, मनोमानसिकम्–मनस्येव व्यवस्थितं मानसिकं–मनोगतं विचारं. क्षयितं–क्षयं प्राप्तं, भुक्तं–खादितं. प्रतिसेवितं–भोग्यवस्तुजातसेवनम्, आविष्कर्म–प्रत्यक्षे कृतम्, रहःकर्म–एकान्ते कृतम् । एवं स सदेवासुरमनुजस्य सर्वान् पर्यायान् ज्ञास्यतीति । अत एव सोऽनगारः अरहा-नास्ति रहः–अप्रत्यक्षं किमपि यस्य स तथा–सर्वज्ञः, तथा अरहस्यभागी–सावद्याचरणवर्जितत्वेन न रहस्यम्–एकान्तं भजते यः स तथा=सुस्पष्टसकलाचारश्च सन् तस्मिंस्तस्मिन् काले मनोवाक्काययोगवर्तमानानां सर्वलोके स्थितानां सर्वजीवानां सर्वभावान्–समस्तान् भावान् जानन् पश्यंश्च विहरिष्यति–विहारं करिष्यतीति । ॥सू० १७४॥

में आगमन को. गति को–मनुष्य लोक से देवादिगतियों में गमन को, स्थिति को–देवलोकादिकों में अवस्थिति को च्यवन को–देवलोक से आयुःक्षय के बाद चवन को, उपपात को–देवनारकों के जन्म को, तर्क को–विचार को कृत–किये हुवे को, मनोमानसिक को, मन में व्यवस्थित विचारधारा को, क्षपित को क्षयप्राप्त को, भुक्त को–खादित को, प्रतिसेवित को–भोग्यवस्तु जात के सेवन को, आविष्कर्म को–प्रत्यक्ष में किये हुवे को, रहःकर्म को–एकान्त में किये गये को–इस तरह से वे देव–मनुजाऽसुर सहित लोक की सब पर्यायों को जानेगे । अतएव-वे अनगार अरहाजिन की दृष्टि में अप्रत्यक्ष कुछ भी नहीं रहेगा. सर्वज्ञ अरहस्यभागी–सावद्याचरणवर्जित होने के कारण सुस्पष्ट सकलाचार के पालक बने हुवे, उस उस काल में मनोवाकाय योग में वर्तमान इसलोक सम्बन्धी सर्वजनों के सर्व भावों को जानते हुवे और–देखते हुवे विहार करेंगे।सू० १७४।

પર્યાયના જ્ઞાતા થશે ત્યારે તે **આગતિને**–દેવ લોકાદિથી મનુષ્ય ગતિમા આગમનને મનુષ્ય લોકમાથી દેવદિ ગતિઓમા ગમનને **સ્થિતિને**–દેવલોકાદિકોમા અવસ્થિતિને ચ્યવનને દેવલોકથી આયુક્ષય પછી પતનને. **ઉપપાતને**–દેવનારકોના જન્મને-**તર્કને**–વિચારને **કૃત**– કહેલાઓને. **મનોમાનસિકને** મનમાં વ્યવસ્થિત વિચારધારાને. **ક્ષપિતને**–ક્ષય પ્રાપ્તને **ભુકતને**–ખાદિતને **પ્રતિસેવિતને**–ભોગ્યવસ્તુ જાતના સેવનને **આવિષ્કર્મને**–પ્રત્યક્ષમા કરેલા કર્મોને. **રહઃકર્મને**, એકાન્તમા આચરેલા કર્મોને આ પ્રમાણે તે દેવ મનુજ અસુર સહિત લોકની સર્વ પર્યાયો તે જાણશે તેથી તે અનગાર અરહાજીનની દષ્ટિમા અપ્રત્યક્ષ એવુ કઇ રહેશે નહિ તેમને સર્વ-પ્રત્યક્ષ થઇ જશે સર્વજ્ઞ અરહસ્યભાગી સાવદ્યાચરણ વર્જિત હોવાથી સુસ્પષ્ટ સકલાચારોના પાલક થયેલા કાળમા મનોવાકકાય યોગમા વર્તમાન ઇહલોક સબધી સર્વજનોના સર્વભાવોને જાણતા અને જોતાં વિહાર કરશે. ॥૧૭૪॥

मूलम्—तए णं दृढपइन्ने केवली एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे बहूइं वासाइं केवलिपरियायं पाउणित्ता अप्पणो आउसेसं आभोएत्ता बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाइस्सइ, बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेइस्सइ—जस्सट्टाए कीरइ णग्गभावे केसलोए बंभचेरवासे अण्हाणगं अदंतवणं अणुवहाणगं भूमिसेज्जाओ फलहसेज्जाओ परघरपवेसो लद्धावलद्धाइं माणावमाणाइं परेसिं हीलणाओ निंदणाओ खिंसणाओ तज्जणाओ ताडणाओ गरहणाओ उच्चावया विरूवरूवा बावीसपरीसहा उवसग्गा गामकंटगा अहियासिज्जंति तमट्ठं आराहिस्सइ, चरिमेहिं ऊसासनीसासेहिं सिज्झहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं करेहिइ। ॥ सू० १७५ ॥

छाया—ततः खलु दृढप्रतिज्ञः केवली एतद्रूपेण विहारेण विहरन् बहूनि वर्षाणि केवलिपर्यायं पालयित्वा आत्मन आयुश्शेषम् आभुज्य बहूनि भक्तानि प्रत्याख्यास्यति बहूनि भक्तानि अनशनेन छेत्स्यति, यस्यार्थाय क्रियते नग्न-

"तए णं दढपइण्णे केवली—" इत्यादि—

मूलार्थ—"तए णं' इसके बाद—"दढपइन्ने केवली—" वे दृढप्रतिज्ञ केवली—"एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे—' इस प्रकार के विहार से विहार करते हुवे—"बहूइ वासाइ केवलिपरियायं—" अनेक वर्षों तक केवलीपर्याय को—"पाउणित्ता—" पालकर के—"अप्पणो आउसेसं आभोएत्ता—" एवं अपने आयु के अन्त को जान करके—"बहूइं भत्ताइ पच्चक्खाइस्सइ—" अपने अनेक भक्तों का प्रत्याख्यान करेंगे—"बहूइ भत्ताइ अणसणाए छेइस्सइ—" अनेक भक्तो

"तए णं दढपइण्णे केवली" इत्यादि।

मूलार्थ—"तएणं" त्यार पछी 'दढपइन्ने केवली" ते दृढप्रतिज्ञ केवली "एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे" आ प्रमाणे विहार करतां "बहूइ वासाइं केवलिपरियायं" घणा वर्षो सुधी केवली पर्यायनुं "पाउणित्ता" पालन करशे "अप्पणो आउसेसं आभोएत्ता" अने पोताना आयुष्यना अंत समयने जाणीने "बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाइस्सइ" पोताना घणा भक्तोनुं प्रत्याख्यान करशे बहूइं भत्ताइं अण-

भावः केशलोचो ब्रह्मचर्यवासः अस्नानकम् अदन्तवर्णः अनुपानत्कम् भूमिशय्याः फलकशय्याः परगृहप्रवेशः लब्धापलब्धानि मानापमानाः परेषांहीलनाः निन्दनाः खिंसनाः तर्जनाः ताडनाः गर्हणाः उच्चावचाः विरूपरूपाः द्वाविंशतिः परीषहा उपसर्गाः ग्रामकण्टकाः अधिसह्यन्ते, तमर्थम् आराधयिष्यति, चरमैरुच्छ्वासनिः श्वासैः सेत्स्यति भोत्स्यते मोक्ष्यते परिनिर्वास्यति सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति।सू. १७५।

का अनशन द्वारा छेदन करेंगे-अर्थात् संथारा करेंगे "जास्सट्ठाए कीरइ, णग्गभावे केसलोए बंभचेरवासे-" इस प्रकार भक्तों का प्रत्याख्यान करके, और-अनशन द्वारा उनका छेदन करके वे दृढप्रतिज्ञ केवली जिस अर्थ को सिद्ध करने के लिये साधुजनों द्वारा नग्नभाव-अचेलत्व-परिमित-वस्त्रधारणत्व-केशलुञ्चन ब्रह्मचर्य-वास-" "अण्हाणगं, अदंतवणं-अणुवहाणगं, भूमिसेज्जाओ, फलहसेज्जाओ, पर-घरपवेसो, लद्धावलद्धाइं, माणावमाणाइं-" स्नान नहीं करना-दन्तधावन करने का त्याग करना-पग में पगरखां मोझा आदि को नहीं पहनना-भूमिपर शयन करना-प्रसंगवश पाट पर सोना-भिक्षादिके निमित्त पर घर में प्रवेश करना-लाभाऽलाभ-मानाऽपमान-"परेसिंहीलणाओ -निंदणाओ - खिंसणाओ - तज्जणाओ - ताडणाओ - गरहणाओ-उच्चावया - विरूवरूवा-" दूसरोंद्वाराकृत हीलना-निन्दना-खिंसना तर्जना-ताडना-गर्हणा-अनु-कूल प्रतिकूल नाना प्रकार के -"बावीसपरीसहा उवसग्गा गामकंटगा अहियासिज्जंति-" बाइस परीषह, तथा-उपसर्ग एवं-इन्द्रियों के प्रतिकूल कंटक के समान शब्दादिक सहन किये जाते हैं-" तमट्ठ आराहिस्सइ, चरमेहिं ऊसासनीसासेहिं

सणाए छेइस्सइ" घणा ભકતોનું અનશનો વડે છેદન કરશે. "जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे केसलोए, बंभचेरवासे" આ પ્રમાણે ભકતોનુ પ્રત્યાખ્યાન કરીને અને અનશન દ્વારા તેમનું છેદન કરીને તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કેવલી જે અર્થની સિદ્ધિ માટે સાધુજનો વડે નગ્નભાવ અચેલત્વ પરિમિત વસ્ત્ર ધારત્વ, કેશલુંચન, બ્રહ્મચર્યવાસ, "अण्हाणगं अदंतवणं अणुवहाणगं, भूमिसेज्जाओ फलहसेज्जाओ, परघरपवेसो. लद्धावलद्धाइं, माणावमाणाइं-" સ્નાન રહિત રહેવુ, દન્તધાવનનો ત્યાગ કરવો, પગરખાઓ પહેરવા નહિ, ભૂમિપર શયન કરવુ ફલક પર સુવું ભિક્ષાદિ માટે પર ઘરમા જવુ લાભ અલાભ, માન અપમાન-"परेसिं हीलणाओ निंदणाओ खिंसणाओ तज्जणाओ ताडणाओ गरहणाओ उच्चावया विरूवरूवा" બીજાઓ વડે કરાયેલ હીલના-નિંદના, ખિંસના, તર્જના, તાડના. ગર્હણા અનુકૂલ પ્રતિકૂલ અનેક જાતની "बावीसपरीसहा उवसग्गा गामकंटगा अहियासिज्जंति" બાવીશ પરીષહો તેમજ ઉપસર્ગ અને ઇન્દ્રિયોના પ્રતિકૂલ શબ્દ વગેરે સહન કરવામાં આવે છે, 'तमट्ठं आराहिस्सइ, चरमेहिं, ऊसासनीसासेहिं सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ,

टीका—"तए णं" इत्यादि-ततः खलु दृढप्रतिज्ञः केवली एतद्रूपेण-पूर्वोक्तविधेन विहारेण विहरन्—विचरन् बहूनि वर्षाणि केवलिपर्यायं पालयित्वा आत्मनः—स्वस्य, आयुश्शेषम्—आयुषोऽवसानम् आभुज्य-परिज्ञाय बहूनि भक्तानि प्रत्याख्यास्यति, ततो बहूनि भक्तानि अनशनेन छेत्स्यति। इत्थं भक्तानि प्रत्याख्याय अनशनेन छित्त्वा च स दृढप्रतिज्ञः केवली, यस्यार्थाय-यन्मोक्षनिमित्तं क्रियते साधुभिः—नग्नभावः—अचेलत्वं-परिमितवस्त्रधारित्वं केशलोचः—स्वपरहस्तेन केशोत्पाटनं, ब्रह्मचर्यवासः—ब्रह्मचर्यधारित्वम्, अस्नानकम्—स्नानाभावः अदन्तवर्णः-दन्तोज्ज्वलीकरणाभावः, अनुपानत्कम्-उपानत्परिधानाभावः,

सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ, मुच्चिहिइ, परिनिव्वाहिइ, सव्वदुक्खाणमंतं करेहिइ—" उस-मोक्षरूपी अर्थ की आराधना करेंगे. और—आराधना करके अन्तिमश्वासोच्छ्वास से सिद्ध हो जावेंगे, बुद्ध हो जावेंगे, मुक्त हो जावेंगे, परिनिर्वात शिथिलीभूत हो जावेंगे, एवं-समस्त दुःखों का अन्त करेंगे।

टीकार्थ-इस प्रकार के विहार से विचरते हुवे वे दृढप्रतिज्ञ केवली अनेक वर्षों तक केवली पर्याय में विराजमान रहेंगे। जब-उनके आयुकर्मका पूर्ण-रूप से अन्त होने का समय आ जावेगा, तब—वे इस बात को जानकर अनेक भक्तों का प्रत्याख्यान करदेंगे, अनशन द्वारा अनेक भक्तों का छेदन करदेंगे। इस प्रकार भक्त प्रत्याख्यान करके-एवं-अनशन द्वारा उसका छेदन करके, वे दृढप्रतिज्ञ केवली जिसके लिये साधुजन नग्नभाव धारण करते हैं। अर्थात्—परिमित वस्त्रों को रखते हैं-अपने हाथों से केशों का लुञ्चन करते हैं पूर्णरूप से ब्रह्मचर्यावस्था में रहते हैं. मनवचनकाय से स्नान करने का परि-त्याग करते हैं—दन्तधावन का सर्वथा परिहार करते हैं, पगरखे-मोजा का पहिरना

परिनिव्वाहिइ, सव्वदुक्खाणमंतं करेहिइ" ते अर्थनी आराधना करीने अंतिम श्वासोच्छवासथी सिद्ध थई जशे. બુદ્ધ थई जशे. મુકત थई जशे. परिनिर्वातशिथली-भूत थई जशे. अने समस्तदुःखोनो अंत करशे.

टीकार्थ—આ પ્રમાણે વિહરતા દૃઢપ્રતિજ્ઞ કેવલી ઘણાં વર્ષો સુધી કેવલી પર્યાવમાં વિરાજમાન રહેશે. જ્યારે તેમના આયુષ્યની સમાપ્તિનો-સમય આવશે ત્યારે તેઓ આ વાત જાણીને અનેક ભકતોનું પ્રત્યાખ્યાન કરશે. અનશન વડે ઘણા ભકતોનું છેદન કરશે આ પ્રમાણે ભકતપ્રત્યાખ્યાન કરીને અને અનશન વડે તેમનું છેદન કરીને તે દૃઢપ્રતિજ્ઞ કેવલી જેના માટે સાધુજન નગ્નભાવ ધારણ કરે છે એટલે કે પરિમિત વસ્ત્રો રાખે છે, પોતાના હાથો વડે કેશલુંચન કરે છે. પૂર્ણરૂપથી બ્રહ્મચર્યાવસ્થામાં રહે છે. મન. વચન. કાયથી સ્નાન કરવાનો પરીત્યાગ કરે છે. દંતધાવનનો સર્વથા

उपलक्षणात् शकटाश्वादि वाहनराहित्यम्, भूमिशय्याः—भूमौ शयनानि, फलकशय्याः-फलकेषु शयनानि, आहाराद्यर्थं परगृहप्रवेशश्च । 'भूमिशय्याः-फलकशय्याः' इति पदद्वये 'क्रियते' इति बहुत्वेन विपरिणमय्य समन्वेतव्यमिति। तथा-तैः साधुभिः लब्धापलब्धानि-लाभालाभाः, मानापमानाः—सम्मानतिरस्काराः, तथा-परेषाम्-अन्येषाम् परकृता इत्यर्थः, हीलनाः-मर्मोद्घाटनानि, निन्दनाः—निन्दाः—जुगुप्साभाषण-रूपाः, खिसना—धिक् त्वां मुण्ड!' इत्यादिरूपाः, तर्जनाः— अङ्गुलि-प्रदर्शन-पूर्वकं 'ज्ञास्यसि रे जाल्म!' इत्यादिकवचनरूपाः, गर्हणाः—'चौरोऽयं लम्पटोऽयम्' इत्यादिवचनरूपाः—तथा—उच्चावचा—अनुकूलप्रतिकूलाः, विरूपरूपाः—नानाप्रकाराः, द्वाविंशतिः—द्वाविंशतिसंख्यकाः परीषहाः-क्षुधादिरूपाः, उपसर्गाः—

छोड देते हैं । उपलक्षण से गाडी की सवारी करना, घोडे आदि वाहन पर बैठना आदि-आदि को छोड देते हैं, भूमि पर शयन करते हैं, अथवा काठ के पट्टियो-तक्था आदि पर शयन करते हैं, आहार आदि प्रयोजन से परघर प्रवेश करते हैं, लाभाऽलाभ में जो समान भाव रखते हैं, मानाऽपमान की जो थोडी सी भी अपेक्षा नहीं रखते हैं। तथा दूसरो द्वारा कृत हीलनाओ को—मर्मोद्घाटन वचनों को—निन्दाओ को जुगुप्सा भाषणरूप वचनों को—खिसनाओं को—"हे मुण्ड! तुझे धिक्कार" इत्यादिरूप वचनो को तर्जनाओं को, अङ्गुली प्रदर्शनपूर्वक "हे जाल्म! तुझे खबर पडेगी—" इत्यादि रूप वचनों को—गर्हणाओं को, "यह चोर है, यह—लम्पट है—" इत्यादिरूप वचनों को तथा—अनुकूल प्रतिकूल नाना प्रकार के क्षुधादिरूप २२ बाईस—परीषहों को, तथा देवादिकृत उपसर्गो को, एवं-ग्रामकण्टकों को-ग्रामों को-इन्द्रिय समूह

ત્યાગ કરે છે પગરખા મોજા પહેરતા નથી ઉપલક્ષણથી ગાડીની સવારી કરવી. ઘોડા વગેરે વાહન પર બેસવુ વગેરેને ત્યજી દે છે. ભૂમિ પર શયન કરે છે લાકડાના પાટિયા વગેરે પર સૂવે છે. આહાર આદિ પ્રયોજનોને લીધે જ પરઘરમા પ્રવેશ કરે છે. લાભ અલાભમાં. સમાનભાવ રાખે છે માન અપમાનની જે લગીરે દરકાર રાખતા નથી તેમજ બીજાઓ દ્વારા કરાયેલ હીલનાઓને. મર્મોદ્ઘાટક વચનોને. નિંદાઓને જુગુપ્સા ભાષણરૂપ વચનોને ખિંસનાઓને "હે મુણ્ડ તને ધિક્કાર છે!" વગેરે રૂપ વચનોને તર્જનાઓને અંગુલી પ્રદર્શનપૂર્વક હે જાલ્મ! પછી તને ખબર ખબર પડશે" વગેરે રૂપ વચનોને. ગર્હણાઓને "આ ચોર છે આ લંપટ છે" ઇત્યાદિરૂપ વચનોને તેમજ અનુકૂલ પ્રતિકૂલ નાના પ્રકારની ક્ષુધાદિરૂપ ૨૨ પ્રકારના પરિ-ષહોને તથા દેવાદિકૃત ઉપદ્રવોને અને ગ્રામકંટકોને ગ્રામોને ઇન્દ્રિયસમૂહને દુઃખોત્પાદક

देवादिकृतोपद्रवाः, ग्रामकण्टकाः—ग्रामः इन्द्रियसमूहस्तस्य कण्टका इव कण्टकाः-इन्द्रियप्रतिकूलशब्दादयः, दुःखोत्पादकत्वान्मुक्तिमार्गे विघ्नहेतुत्वादेषां कण्टकत्वम् क्षुद्रजनरूक्षाऽऽलापा वा यस्य कृते अधिसहन्ते, तं-मोक्षरूपम् अर्थम्-आराधयिष्यति, आराध्य चरमैः अन्तिमैः उच्छ्वासनिश्वासैः सेत्स्यति, सकलकार्यकारितया सिद्धो भविष्यति, भोत्स्यते—विमलकेवलाऽऽलोकेन सकललोकालोकं ज्ञास्यति. मोक्ष्यते—सर्वकर्मभ्यो मुक्तो भविष्यति-परिनिर्वास्यति समस्तकर्मकृतविकाररहितत्वेन स्वस्थो भविष्यति. सर्वदुःखानां—शरीरमनःसम्बन्धिसमस्तक्लेशानाम् अन्तं नाशं करिष्यति-अव्याबाधसुखभाग् भविष्यतीत्यर्थः । ॥सू० १७५॥

शास्त्रमुपसंहरन् प्राह—

मूलम्—सेवं भंते ! सेवं भंते ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तपसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । ॥सू० १७६॥

छाया—तदेवं भदन्त ! तदेवं भदन्त ! इति भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयमानो विहरति ॥सू० १७६॥

को- दुःखोत्पादक होने से एवं-मुक्तिमार्ग में विघ्न के हेतुभूत होने से कण्टक-रूप प्रतिकुल शब्दादिकों को, अथवा—क्षुद्रजनों के रूक्षालापों को, जिसके निमित्त सहते हैं उस मोक्षरूप अर्थ की आराधना करके फिर वे-अन्तिम श्वासोच्छ्वास से सकल कार्य को कर चुकने से—कृतकृत्य हो जाने से सिद्ध हो जावेंगे, विमल केवल ज्ञानालोक से सकल लोकालोक का ज्ञाता बन जावेंगे, समस्त कर्मों से छूट जावेंगे, स्वस्थ हो जावेंगे, और—शरीरसम्बन्धी एवं-मन सम्बन्धी समस्त क्लेशों का नाश करेंगे, अर्थात्—अव्याबाधसुख का भोक्ता बनेंगे. ॥ सू० १७५ ॥

હોવાથી અને મુકિતમાર્ગમા વિઘ્નના હેતુભૂત હોવાથી અને કંટકરૂપ પ્રતિકૂલ શબ્દાદિકોને અથવા ક્ષુદ્રજનોના રૂક્ષ આલાપોને જેના માટે સહન કરે છે તે મોક્ષરૂપ અર્થની આરાધના કરશે આરાધના કરીને પછી તેઓ અંતિમ શ્વાસોચ્છવાસથી સકલ કામોને કરી લેવાથી કૃતકૃત્ય થઇ જવાથી સિદ્ધ થઇ જશે. વિમલ કેવલજ્ઞાનાલોકથી સકલ લોકાલોકના જ્ઞાતા થઇ જશે સમસ્ત કર્મોથી મુકત થઇ જશે. સ્વસ્થ થઇ જશે અને શરીર સંબંધી અને મનસબંધી સમસ્ત કલેશોનો નાશ કરશે. એટલે કે તેઓ અવ્યાબાધ સુખ ભોકતા થઇ જશે. ॥સૂ૦ ૧૭૫॥

टीका—"सेव भंते" इत्यादि—हे भदन्त! यद् भवद्भिरुक्तं तत् एवम्-इत्थम्, वास्तविकमिति यावत्, तदेवं भदन्त! इति विप्सा भगवद्वचने श्रद्धातिशयं प्रकटयति, इति—अनेन प्रकारेण उक्त्वा भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्थित्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयमानो विहरतीति ॥सू० १७६॥

श्री

अथ राजप्रश्नीयसूत्रस्य प्रशस्तिः—

गुर्जराभिधदेशेऽस्मिन् पुरं वीरमगामकम् ।
आपण-श्रावकश्रेणिसौधमण्डितवीथिकम् ॥ १ ॥
ग्रामाद् ग्रामान्तरं पङ्क्तिः साधुभिर्विहरन्निह ।
निर्वोढुं सांघमीं यात्रां परुद्दैशाख आगमम् ॥ २ ॥

'सेवं भंते-! सेवं भंते-!" भगव योगमे—"इत्यादि—

मूलार्थ—'सेव भंते-! सेव भंते-!' हे भदन्त-! जैसा आपने कहा है वह वैसा ही है, अर्थात्—आपने जो अपनी दिव्यध्वनि द्वारा प्रकट किया है वह वास्तविक ही है सर्वथा सत्य ही है-। इस प्रकार कहकर—"भगव गोयमे—" भगवान् गौतमने "समणं भगव वदइ नमंसइ—" श्रमण भगवान् को वन्दना की गुणस्तुति की, और—उन्हें नमस्कार किया—"वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तपसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ-" वन्दना नमस्कार कर फिर—वे संयम से और—तप से आत्मा को भावित करते हुवे अपने स्थान पर विराजमान हो गये ।

टीकार्थ—स्पष्ट है—'सेव भते-! सेव भते-!" ऐसा जो दो बार कहा गया है वह भगवद्वचन में श्रद्धातिशय प्रगट करने के लिये कहा गया है.।सू० १७६

'सेवं भंते! सेवं भंते! भगवं गोयमे इत्यादि ।

मूलार्थ—"सेवं भंते! सेवं भंते!" हे भदंत! जे प्रमाणे आपश्रीએ કહ્યું છે તે તેમજ છે એટલે કે આપશ્રીએ પોતાની દિવ્યધ્વનિદ્વારા જે કંઈ કહ્યું છે તે વાસ્તવિક જ છે સર્વથા સત્ય છે આ પ્રમાણે કહીને "भगव गोयमे" ભગવાન ગૌતમે समणं भगवं वंदइ नमंसइ" શ્રમણ ભગવાનને વંદના કરી, ગુણ સ્તુતિ કરી અને તેમને નમસ્કાર કર્યા "वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ" વંદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેઓ સંયમ અને તપથી આત્માને ભાવિત કરતાં પોતાના સ્થાને વિરાજમાન થઈ ગયા

ટીકાર્થ સ્પષ્ટ છે "सेवं भंते! सेवं भंते!" આમ જે બે વખત કહેવામાં આવ્યું છે તે ભગવત્ વચનમાં અતિ શ્રદ્ધા પ્રગટ કરવા માટે છે ॥ ૧૭૬ ॥

पुरे वीरमगामेऽस्मिन् सङ्घप्रार्थनया न्यधाम् ।
राजप्रश्नीयसूत्रस्य टीकामेनां सुबोधिनीम् ॥ ३ ॥
वैशाखस्य सिते पक्षे तृतीयायां गुरोर्दिने ।
त्रयोदशाधिके वर्षे द्विसहस्रे च वैक्रमे ॥ ४ ॥
अत्रत्यः सदयो मिलत्समुदयः श्री जैनसङ्घो मिथः–
प्रेमाऽभक्तहृदः सदा निजकृतौ धर्मे च बद्धाऽऽदरः ॥
शुद्धस्थानकवासिधर्ममहिमप्रोद्भावकः श्रावका–
ऽऽचारैः ख्यातिमुपागतो विजयते सम्यक्त्वसंशोभिनः ॥५॥

" प्रशस्ति का अर्थ "

गुजरात प्रांत में वीरमगाम नामका शहर है, यहां के मार्ग दूकानों एवं श्रावकजनों के सुन्दर-सुन्दर घरों से युक्त हैं। एक गाम से दूसरे गाम में विहार करते हुवे छह मुनियों के साथ–यहां संयम यात्रा का निर्वाह करने के लिये गतवर्ष के वैशाख मास में अर्थात् वि.संवत् २०१२ के वैशाखमें आये। यहां के श्रीसंघ की यहीं पर विराजने की विनन्ती से यहां मैंने राजप्रश्नीय सूत्र की इस सुबोधिनी टीका को सम्पूर्ण किया.। यह समय वैशाख शुक्ला अक्षय तृतीया गुरुवार विक्रम संवत् २०१३ का था.। यहां का जैन श्रीसंघ शुद्ध स्थानकवासी धर्म में तत्पर है, धर्म के प्रति इसके हृदय से बहुत अधिक आदरभाव है, और-यह श्री संघ प्रेमालु है, तथा शुद्ध स्थानकवासी धर्म का दिपाने वाला है. हृदय में इसके अति अधिक दयाभाव बना रहता है। श्रावक सम्बन्धी आचार विचार से यह प्रसिद्धि को प्राप्त कर लिया है, जैनधर्म के प्रति अधिक

પ્રશસ્તિનો અર્થ:—

ગુજરાત પ્રાંતમાં વીરમગામ નામક એક નગર છે આ નગરની શેરીઓ અને દુકાનો શ્રાવકજનોના ભવ્ય મકાનોથી યુકત છે એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરતા કરતા છ મુનિઓની સાથે વૈશાખ માસમા અહીં સયમયાત્રાના નિર્વાહ માટે આવ્યા અહીં-ના "શ્રીસઘે" આપશ્રીને અહીંજ બિરાજવાની વિનતી કરી તો તે સમયમાં જ મે ત્યા રહીને રાજપ્રશ્નીય સૂત્ર'ની આ સુબોધિની ટીકા સપૂર્ણ કરી આ સમય વૈશાખ શુકલ અક્ષય તૃતીયા વિક્રમ સવત્ ૨૦૧૩ ગુરૂવારને હતો અહીંનો જૈન શ્રીસંઘ' શુદ્ધ સ્થાનકવાસી છે, ધર્મ પ્રત્યે એના હૃદયમા ખૂબજ આદરભાવ છે આ શ્રીસઘ' પ્રેમળ છે તેમજ શુદ્ધ સ્થાનકવાસી ધર્મને દીપાવનાર છે એના હૃદય માં અત્યધિક દયાભાવ નિવાસ કરે છે શ્રાવક સંબધી આચારવિચારોથી આ જગત્માં ...દ્ધ છે જૈનધર્મ પ્રત્યે અધિકાધિક અનુરાગી હોવા બદલ સમ્યકત્વથી સુશોભિત

देवाधिदेवे भुवनैकनाथे तीर्थङ्करे तत्कथिते च धर्मे ।
श्रद्धां दधानं प्रतिवेश्म भाति सुश्राविकाश्रावकवृन्दमत्र ॥६॥
आचारपूताः समदृष्टिभूता जैनागमाऽऽचारनिदर्शरूपाः ॥
अस्मिन् पुरे सन्ति मृदुस्वाभावा जैनाः समस्ता गुरुभक्तिभाजः॥७॥

इतिश्री विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचक-पञ्चदशभाषाकलितललित-कलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थ-निर्मापक-वादिमानमर्दक श्री शाहू छत्रपति-कोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुर-राजगुरु - बालब्रह्मचारि - जैनशास्त्राचार्य-जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां सुबोधिन्याख्यायां व्याख्यायां "राजप्रश्नीयसूत्रम्" सम्पूर्णम्

अनुरागी होने के कारण यह सम्यक्त्व से सुशोभित है. । भुवनैकनाथ देवाधि-देव तीर्थंकर के ऊपर, एवं-तीर्थङ्कर प्रतिपादित धर्म के ऊपर श्रद्धाशील श्रावक-एवं-श्राविकाएं हरएक घर में यहां हैं। इन सबों का आचार-विचार जैन-मर्यादा के अनुरूप है दूसरों के लिये ये-इस विषय में सर्वथा अनुकरनीय हैं। इनका स्वभाव मृदु है. यहां के श्रावको काचित्त गुरु की धर्मभक्ति में सदा प्रेमयुक्त बना रहता है. इन्ही सब कारणों से ये समदृष्टि हैं॥

श्री जैनाचार्य—जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री घासीलालजी महाराजकृत
राजप्रश्नीयसूत्र की 'सुबोधिनी' व्याख्या समाप्त ॥
॥ राजप्रश्नीयसूत्र समाप्त ॥

છે ભુવનૈકનાથ-દેવાધિદેવ તીર્થંકર પર અને તીર્થંકર પ્રતિપાદિત ધર્મ પર શ્રદ્ધાશીલ શ્રાવક અને શ્રાવિકાઓ અહી દરેકેદરેક ઘરમા નિવાસ કરે છે આ સર્વના આચાર-વિચારો જૈન મર્યાદાનુરૂપ છે બીજાઓના માટે એઓ આ બાબતમા સપૂર્ણપણે અનુ-કરણીય છે એમનો સ્વભાવ મૃદુ છે અહીના શ્રાવકોનુ ચિત્ત ગુરુની ધર્મભક્તિમા સદા પ્રેમયુક્ત બની રહે છે આ બધા કારણોથી એ બધા સમદૃષ્ટિ છે "

શ્રી જૈનાચાર્ય-જૈનધર્મદિવાકર-પૂજ્યશ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજકૃત
રાજપ્રશ્નીયસૂત્રની સુબોધિની વ્યાખ્યા સમાપ્ત

परुद्वैशाखो इति गतवर्षवैशाखे इत्यर्थः